तेम छपाववी के लोकोने तेना रू६०) सुधी थतो खर्च अने मुश्केली बचे. आ हेतुं पारपाडवाने सने १८७५ ना नवंबर आखरमां वडताळना धर्मवल्लभानंद ब्रह्मचारीने जणाव्यो.तेमणे ते संबंधी हा कह्युं, पण ते शरू करतां प्रथम तेमने जणाववुं, एवुं तेमणे मने कह्युं हतुं. आ पछी अमदावादना पण विद्वान साधु अने ब्रह्मचारीने जणावतां तेओनी पण इच्छा जणाइ.आ उपरथी ते काम में चालुं कीधुं, पण पाछळथी वडताळ तरफथी अने अमदावदाद ते वहार नहि पाडतां थएलो खर्च लेइ बंध करवा मने जुदी-जूदी वखत जणाव्युं. परंतु ते बाबत मने महारा उपरना निश्चयथी दूरस्त नहि लागवे मे माहारु काम शरु कीधुं. बंने तरफथी बंध कराववानां आग्रह माटे हुं धारुं छुं के वडताल वाळाना मनमां आ काम अमदावादमां थाय छे तेथी अमदावादवाळा पोतानां नवां वधारेलां दाखल करशे. तेम अमदावाद वाळाना मनमां ए वडताळथी मेळवेली प्रत छापे छे तेथी अमारां दाखल नहि थाय तेथी वचमांत्रण वखत बंध पाडवाथी काम घणुं धीमुं चाल्युं आखरे माहारा समजवा प्रमाणे गोंडळवाळो कोइ छपावे छे एम जणायुं. तेथी महारी साथे दाब पेच थाय छे एवुं मने जणागथी मे आ बाबत जलदीथी जाहेर खबरो वहार पाडी. आ उपरथी अमदावाद वाळाना मनमां अमारी प्रतमांना अगियार नहि आवे,ए भयथी तेमणे अत्रेना एक चमनलाल शेठना नामथी वहार पडाव्यां. आथी महारा मनमां घणोज संतोष थयो के जे महाराजो, एक हजार कोपी. वहार पाडवा देता नहोता, तेना बदलामां त्रण हजार वहार पडी के जेथी महारो संकल्प तेमनाथी सिद्ध थयो.

आ ग्रंथ पहेलेथी छेले सुधी सघळाओने वांचवानी भलामण करतां एटलुं जणाववानी जरूर छे के तेमां पाछला वखतनी उतावळथी कोइपण जगोए कांइ पण दोष रहेलो होय तो तेने माटे ग्रहस्थो दरगुजर करी सुधारी लेशे. तथा ग्रंथनो हेतुं अने मतलब समजशे. प्रथम पथो केवी रीते उत्पन्न थाय छे,पाछळथी तेमां केवी जातनो फेरफार करी लोकोमां इश्वरी दावो बतावाय छे.अने तेमां केवो चमत्कार अने विचारवा लायकनी विना उमेराय छे, ए सघळुं सुज्ञ

श्री कृष्णायनमो नमः ॥ पातुंधर्ममधर्ममुत्खानयितुंश्रीभक्तिधर्मागताजातायोत्तरकोशलेषु दययासर्वेश्वरेशायच॥ तृप्तिंवाक्यसुधारसैर्विदधतेनैजानांमुहुस्तस्मैश्रीहरयेनमोस्तुसहजानंदायसद्रूपिणे॥१॥ज्ञानेनधर्मेणयुतांविरक्त्यामाहात्म्यबोधेनचयोनिजस्य॥ प्रवर्त्तयामासभुविस्वभक्तिंसश्रीहरिर्नोस्तुमतिप्रदाता ॥२॥अज्ञानसंज्ञगहनांधकारंनिजाश्रितस्वांतगुहागतंयः॥अपारहरज्ज्ञानदिवाकरःश्रीधर्मांगजन्माजयतिप्रभुःसः॥३॥प्रोक्तानियानीहवचोमृतानिश्रीस्वामिनातेननिजाश्रितेभ्यः तेषांलिखामःकतिचित्तदयितुष्टयेयथाबुद्धियथाश्रुतंच॥ ४॥तत्रादौश्रीहरेस्तस्यजन्मादिचरितंशुभम् कथयामःसमासेनतद्दियानंददायकम्॥५॥ श्रीगोलोकना मध्यने विषे भगवाननुं अक्षर धाम छे ते केवुं छे, तो कोटि कोटि सुर्य, चंद्र ने अग्नि ते सरखुं प्रकाशमान छे ने दिव्य छे ने अत्यंत श्वेत छे ने सच्चिदानंद रुप छे अने जेने ब्रह्मपुर कहे छे, अमृतधाम कहे छे, परम पद कहे छे, अनंत अपार कहे छे, ब्रह्म कहे छे, चिदाकाश कहे छे, एवुं जे ए अक्षर धाम तेने विषे श्रीकृष्णभगवान जे ते सदाय विराजमान छे. ते केवा छे तो जेने पुरुषोत्तम कहे छे वासुदेव कहे छे, नारायण कहे छे, परमात्मा कहेछे, ब्रह्म कहे छे, परब्रह्म कहे छे, ईश्वर कहे छे, परमेश्वर कहे छे, विष्णु कहे छे, अने वळी ते भगवान केवा छे तो क्षर अक्षर

वच. धकि परछे, सर्वज्ञछे, सर्व कर्त्ता छे, सर्वना नियंता छे, सर्वना अंतर्यामि छे, सर्व कारणन
कारण छे, निर्गुण छे, स्वप्रकाश छे, स्वतंत्र छे. अने ब्रह्म रूप एवा जे अनंत कोटि मुक्त
तेमने उपासना करवा योग्य छे अने अनंत कोटि ब्रह्मांडनि जे उत्पाति, स्थिति ने प्रलय ते
रूपछे लिला जेनि एवाछे अने प्रकृति, पुरुष, काल, प्रधान पुरुष ने महतत्वादिक ए जे पोतानी
शक्तियो तेना प्रेरक छे. ने अनंत कोटि ब्रह्मांडना राजाधिराज छे ने सदा किशोर
मुर्त्ति छे ने कोटि कोटि कंदर्प सरखा सुंदर छे ने नविन मेघ सरखो श्याम छे वर्ण जेनो
एवा छे अने अमुल्य ने दिव्य एवा जे नानां प्रकारनां वस्त्र ने आभुषण तेणे युक्त छे अने
कांनने विषे मकराकार कुंडल धरी रह्या छे ने मस्तकने विषे नाना प्रकारना रत्ने जडित ए
वो जे मुगट तेने धरी रह्या छे अने शरद रुतुनुं जे कमल तेनि पांखडि सरखां अणियालां छे
नेत्र कमल जेनां एवा छे अने रूडुं एवुं जे सुगंधिमान चंदन तेणे करिने चरच्यां छे अंग जेनां
एवा छे. अने मधुरे स्वरे करिने वेणुने वजाडे छे अने राधिकाजि ने लक्ष्मीजि तेणे पुज्याछे
अने मुर्त्तिमान एवां जे सुदर्शनादिक आयुध तथा नंद सुनंदने सुदामादिक जे असंख्य पा
र्षद तेमणे सेव्याछे. अने कोटि कोटि सुर्यने चंद्र सरखा प्रकाशे युक्त छे मुर्त्ति जेनि एवाछे.
अने अनंत कोटि एवा जे कल्याणकारि गुण तेणे युक्त छे. अने धर्म ज्ञान ने वैराग्यादिकजे

ऐश्वर्य तथा आणिमादिक जे सिद्धियों तेमणे सेव्यां छे चरण कमल,जेनां एवा छे. अने मुर्ति
मान एवा जे चार वेद तेमणे स्तुतिने कर्यां छे अने वासुदेवादिक जे चतुर्व्यूह तथा केशवा
दिक जे चोविस मुर्त्तियो तथा वाराहादिक अवतार ए सर्वना धरनारा छे एवा जे श्री कृष्ण
पुरुषोत्तम भगवान तें जे ते आजे पोतानुं समग्र ऐश्वर्य तेणे युक्त थका प्रथवीने विषे एकांतिक
धर्मने प्रवर्तावनाने अर्थेने पोताना एकांतिक भक्त जे धर्म भक्ति ने मरिच्यादिक ऋषि तेमनि रक्षा
करवाने अर्थे ने तेमने सुख आपवाने अर्थे ने अनेक जीवनां कल्याण करवाने अर्थे ने अधर्मनो उछेद
करवाने अर्थे कोशल देशने विषे प्रगट थाता हवा.हवे ए भगवान जेवी रीत्ये प्रगट थया छे ते संक्षेप क
रिने कहिये छइये. एक समे मरिच्यादिक ऋषि जे ते बदरिकाश्रमने विषे श्रीनरनारायण भगवाननां
दर्शन करवा सारु आवता हवा ते वातने सांभळिने धर्म देव पण पोतानि स्त्री जे मुर्त्ति तेणे सहितथका
श्री नरनारायणनां दर्शन करवा आव्या. पछे ते ऋषिनि सभाने विषे उद्धवे सहित बेठा एवा
जे श्री नरनारायण ऋषि तेनु दर्शन करिने सभाने विषे बसता हवा. अने मरिच्यादिक ऋषिये
श्रीनारायण ऋषि आगल्य प्रथम कही हति जे भरतखंडना वृत्तांतनि वार्त्ता तेने श्री नाराण
ऋषिना मुखारविंद थकि एकाग्रहाचित्त थेने धर्मदेव जे ते सांभळता हता तथा ते ऋषिनें ऊध

व ते पण ते वार्त्तांने एकाग्रहचित्त थेने सांभळता हता.ते समयमां कैलास पर्वत थकि दुर्वासा ऋ
षि जे ते श्री नारायण ऋषिने दर्शने आव्या. तेनुं कोईथि सनमान थयुं नहि माटे ते दुर्वासा
ऋषि तो ए धर्मादिक सर्वने श्राप देता हवा जे मारा अपमानना करनारा जे तमे सर्व ते भ
रतखंडने विषे मनुष्यपणाने पामो ने त्यां असुर थकि अपमानने ने कष्टने पामो. एवा श्राप
सांभलीने धर्मदेवे घणाक प्रकारना विनयेजुक्त वचने करीने शांति पमाडया एवा जे दुर्वासा
ऋषि ते बोल्या जे तमे सर्व श्री नारायण ऋषिनि वात सांभळवाने विषे आशक्त हता माटे म
ने न देख्यो ने मारु सनमान न थयुं एनि मने खबर नहोती ते सारु में तमने श्राप दिधो
पण ते मारो श्राप तो निवारण नहि थाय, पण ते श्राप भेळो हुं तमने अनुग्रह करूं.
जे हे धर्मदेव तमे ने आ तमारी स्त्री मुर्त्ति ते ब्राह्मणना कुलने विषे मनुष्य देह धरशो. ने त्यां
आ नारायणऋषि तमारा पुत्र थाशे. ने तमने ने आ ऋषियोने मारा शाप थकि मुकावशे ने
असुरना कष्ट थकि तमारि सर्वनी रक्षा करशे. एम कहिने दुर्वासाऋषि तो पाछा कैलास
पर्वतमां गया. पछे श्री नारायण ऋषि जे ते धर्मादिक सर्व प्रत्य बोलता हवा जे अपराध वि
ना जे आ श्राप तमने थयो तेने जो हुं टाळवाने इच्छुं तो हुं समर्थ छुं ते टळि जाय पण हमणां

भरतखंडने विषे कलिजुगना बलने पामिने अधर्म ने असुर ते बहु वृद्धिने पाम्याछे. तेमना ना-
शने अर्थे मारि इछाये करिनेज ए शाप थयो छे ते में अंगीकार कर्यो छे माटे हे धर्म
हुं तमारो पुत्र थैने ते असुरनो ने अधर्मनो नाश करीश ने तमारि सर्वेनी रक्षा करिश ने
प्रथविने विषे एकांतिक धर्मने प्रवरताविश, माटे तमे कांइ चिंता राखशोमा ने प्रथविने विषे सर्वे
मनुष्य देहने धारो. एवां वचन सांभळिने श्रीनारायण ऋषिने नमस्कार करीने धर्मादिक सर्वे
जे ते मनुष्य देह धरवाने अर्थे प्रथवि मध्ये जाता हवा. हवे धर्मने मुर्त्ति जेवि रिते प्रगट थयां
छे ते कहियें छैये, जे कोशल देशने विषे रकहट नामे पुर छे तेमां सरवरिया ब्राह्मण शाम
वेदि पांडे बालशर्मा नामे हता ते थकि भागवति नामे जे तेनि पत्नि तेने विषे धर्मदेव जे ते सं-
वत १७९६ सतरसोने छनुंना कार्त्तिक शुदि ११ एकादशीने दिवस मध्यान पछे प्रगट थाता
हवा अने पिता जे ते विधिये करिने तेमना जातक कर्मादिक संस्कारने करता हवा. ने बारमे
दिवसे देवशर्मा एवुं नाम धरता हवा. अने ते कोशल देशने विषेज छपिया नामे गाममां त्रवा
डि कृष्णशर्मा नामे ब्राह्मण ते थकि भवानि नामे जे तेनी पत्नि तेने विषे मुर्त्ति जे ते संवत
१७९८ सतरसोने अठाणुंना कार्त्तिक शुदि १५ पुन्यमने दिवस सायंकाले प्रगट थातां

श्री कृष्णभगवाननि अतिशे भक्ति करवा लाग्या. मा
हवां. ते पछे दिवसे दिवसे मोटां थयां ने श्री कृष्णभगवाननि अतिशे भक्ति करवा लाग्या. मा
टे भक्ति एवा नामने पांमतां हवां. पछे ए भक्तिनो पिता जे कृष्णशर्मा ते जे ते पोतानि पुत्री जे
भक्ति तेनो धर्मना अवतार जे देवशर्मा ते साथे यथा विधि विवाह करता हवा. ने ए जे पोताना
जमाइ तेने पोताना गाममां पोताने घेर राखता हवा. पछे ते देवशर्मा जे ते भक्ति जे पोतानी प-
त्नी तेणे सहित थका गृहस्था श्रमना जे धर्म तेने आश्रिने श्रीकृष्ण भगवाननि भक्ति करता
हवा अने पोते धर्मने विषे अति दृढपणे वर्त्या. तेने जोइने सर्वे लोक जे ते धर्म एवे नामे क
हिनेज बोलावता हवा. पछे ए धर्म भक्तिने असुर थकि अतिशे कष्ट थयुं तेना निवारणने अर्थे
ते धर्मभक्ति जे ते वृंद्रावनमां जइने मरिच्यादिक ऋषिये युक्त थकां श्रीकृष्णभगवाननि आ-
राधना करतां हवां. तेणे करिने ते भगवान एमनि उपर प्रसन्न थया ने पोताना अक्षर धा
ममां जेवा पोते सदाविराजमान छे तेवुं पोतानुं दर्शन आपिने धर्मभक्ति प्रत्ये बोलता हवा जे हे
धर्म भक्ति तमने कष्टना देनारा जे असुर तेमने पुर्वे में कृष्णावतारने विषे मार्या हता तेथी मारा
उपर एमने वेर छे, माटे तमने मारा जाणीने पिडे छे. ते असुरना नाशने अर्थे हुं जे ते नारा
यण ऋषि रूपे तम थकि प्रगट थइने हरिकृष्ण नामे विख्यात थइश ने तमारी ने ऋषिनी

असुरना कष्ट थाक रक्षा करिश ने तमने दुर्वासाना शाप थकी मुकाविश ने असुरनो ने अ धर्मनो उछेद करिश ने प्रथविने विषे एकांतिक धर्मने प्रवरताविश. एम कहिने श्रीकृष्ण भगवान जे ते अंतर्ध्यान थइ गया ने धर्मना रुदय कमलने विषे विराजमान थया.पछे ते धर्मभक्ति जे ते अति आनंदने पामिने त्यांथि पाछां पोताने गाम आविने श्रीकृष्ण भगवाननि भक्तिने करतां हवां. अने एवि रिते ए धर्मने भगवान प्रसन्न थया माटे सर्वे जन जे ते तेमने हरिप्रसादनामे करिने बोलावतां हवां. अने पछे केटलाक मास गया केडे ते हरिप्रसादजि थकी भक्तिने विशे श्रीकृष्णभगवान जे ते संवत १८३७ ना चैत्र शुदी ९ मीनी रात्री दस वडी थइ त्यारे प्रगट थाता हवा. ते समयमां हरिप्रसादजीना वरने विशे मोटो ओछव थतो हवो अने इंद्रादिक देव जे ते जय जय शब्दने करता थका, ने दुंदभीने वजाडता थका, पुष्पनो वरसाद करता हवा. अने अपछराउ जे ते नृत्य करती हवी ने गांधर्व जे ते गान करता हवा. अने मुनी जे ते आसीरवाद देता हवा अने देवताने साधुनां जे मन ते अती प्रसंन थातां हवां अने असूरनां जे मन ते तत्काल त्रासने पामतां हवां, अने ते गाममां रेहेनारी स्त्रीयुं ते मंगल गाती हवी अने बाल रूप एवा जे हरी तेने आसीस देती हवीयुं, अने ते समयने विशे मंद सुगंधअने

वच.

शीतल एवा जे वायु ते वाता हवा अने ताराना गणे सहीत आकाश जे ते निरमळ थतो हवो, ते वार पछी ते हरिप्रसादजी जे ते पोताना पुत्रनुं जातक कर्म ते ब्राह्मण पासे यथा विधी करावीने ब्राह्मणने घणांक प्रकारनां दान आपता हवा. पछे जन्मेथी छठा दीवसने विशे कोटरा आदीक बाल ग्रह जे ते बाल स्वरुप एवा जे भगवान तेने मारवा सारु आव्यां तेमने ते भगवान जे ते पोतानी द्रष्टी मात्रे करीने बाळीने भगावी देता हवा. पछे भगवान सवात्रण महिना थया त्यारे मारकंड ऋषी जे ते ब्राह्मणने वेशे ते हरिप्रसादजीने घेर आवता हवा. त्यारे हरिप्रसादजी जे ते ते ऋषीनुं अतिशे सनमान करीने तेमने ज्योतिशी जाणीने केहेता हवा, जे तमे अमारा पुत्रनुं नाम करण करो. पछे ते ऋषी जे ते राजी थईने नाम करण करता थका बोल्या, जे हरिप्रसादजी आ तमारा पुत्र जे ते तमारी सर्वे आपदाने हरशे ने करक राशीने विषे एनो जन्म छे माटे एनुं हरी एवुं नाम थाशे, अने वळी आ जे तमारा पुत्र तेना देहनो कृष्ण वरण छे तथा पोताना आश्रीत जननां जे मन तेमने पोतानी मुरतीने विशे ताणी लेशे, तथा चैत्र मासमां जनम छे माटे कृष्ण एवे नामे विख्यात थाशे. अने ए बे नाम नोखां नोखा छे तो पण ए बे भेगां मळीने हरीकृष्ण एवुं त्रीजुं नाम पण थशे. अने आ तमारा पुत्र जेते त्याग

ज्ञान तप धर्म ने योग ए पांच गुंणे करीने तो शीवजी जेवा थाशे. माटे निलकंठ एवे नाम
करीने लोकने विषे प्रसिद्ध थशे. अने आ जे तमारा पुत्र तेना हाथने विशे पद्मनुं चिन्ह
छे तथा पगने विषे वज्र,उर्द्धरेखा ने कमल तेनां चिन्ह छे ते माटे आ तमारा पुत्र जे ते ल-
क्षावधी मनुष्यना नियंता थाशे. अने आ तमारा पुत्र जे ते कल्याण कारी एवा अनंत गुणे
युक्त थाशे ने तमारी समग्र कष्ट थकी रक्षा करशे. एम कहिने विराम पाम्या एवा जे मा
र्कंडेय ऋषि तेने हरिप्रसादजी ते घणिक दक्षणा ने भारे भारे नवां वस्त्र ने आभूषण ते आप-
ता हवा. पछे ते ऋषि जे ते एक दिवस त्यां रहिने प्रयाग तिर्थनी जात्रा करवा सारु चा-
लि निसरता हवा. अने ते पछे ते हरिप्रसादजीने भक्ति माता जे ते पोताना पुत्रना गुणने
सांभळिने बहु प्रसन्न थातां हवां॥ पछे ते श्रीहरि जे ते पोतानी वाल लिलाये करीने पोतानां
मात पीताने ने संबंधि जनंनने बहु आनंद उपजावता थका वालचंद्रनी पेठे वृद्धिने पामता
हवा, अने ते पछे हरिप्रसादजि जे ते पोताना पुत्रने पांचमे महिने प्रथम प्रथवी उपर बेसार-
ता हवा अने छठा महिनाने विषे प्रथम अन्न जमवा शिखवता हवा. अने सातमे महिने कानने
विंधावता हवा. अने त्रिजुं वर्ष बेठुं तारे चौलसंस्कार जे गर्भना केश उताराववा ते करावताहवा.

अने एज दिवसे मायावि एवो जे कालीदत्तनामे असुर ते भगवानने मारवाने आव्यो, तेने भ-
गवाने पोतानी द्रष्टिये करीने मोह पमाड्यो ते व्रक्षने विषे अथडाई अथडाईने मरी जातो हवो
अने ते पछे हरिप्रसादजी जे ते असुरना उपद्रव थकि छपीया गामनो त्याग करीने पोताना
कुटंबे सहित थका अयोध्यापुरीमां निवास करीने रहेता हवा अने पछे हरिप्रसादजी जे ते पो-
ताना पुत्रने पांचमा वरसने विषे प्रथम अक्षर भणवा शिखवता हवा. अने आठमा वर्षने विषे
भारे भारे सामग्रियोने भेळी करीने पोताना पुत्रने यज्ञोपवित देता हवा, अने ते श्रीहरि जे ते
पोताना पिता थकि यज्ञोपवितने पामीने नैष्टिकब्रह्मचारिना धर्मने विषे रह्या थका वेदाध्ययनने क
रता हवा. अने पोताना पिता पासे वेद शास्त्र पुराण इतिहास धर्मशास्त्र सर्वे ग्रंथनुं पोते अ-
ध्ययन करीने तथा श्रवण करीने ते सर्वनुं जे रहस्य तेने यथार्थ जाणता हवा. अने ए सर्वमांथी
पोते च्यार सार काढता हवा, तेमांथी श्रीमद्भागवत् पुराण थकी तो पंचमस्कंध ने दशमस्कंध
ए सार काढ्यो.तथा स्कंदपुराण थकि वासुदेव माहात्म ए सार काढ्यो तथा इतिहास जे महाभा-
रत ते थकि भगवद्गिता विदुरनिति ने विष्णु सहस्त्रनाम ए सार काढ्यो तथा सर्वधर्मशास्त्र थकि
याज्ञवल्क्य स्मृति ए सार काढ्यो एवी रीते ए चार सार काढीने तेनो गुटको लखावीने पोतानी

पासे नित्ये राखता हवा॥ पछे ते श्री हरि जे ते जन्म थकि अगियार वरसना थया त्यारे पोतानी मा
ता जे भक्ति तेने धर्म ज्ञान ने वराग्य सहित एवि जे भक्ति तेनो उपदेश करीने दिव्यगतिने आपता हवा
ने दुर्वासाना शाप थकि मुकावता हवा, अने ते पछे केटलाक मास गया केडे ते श्री हरि जे ते पो
ताना पिता जे हरिप्रसादजी तेने पोताना स्वरूपनुं यथार्थ ज्ञान आपिने दिव्य गतिने पमाडता
हवा ने दुर्वासाना शाप थकी मुकावता हवा अने एवि रिये भक्ति धर्म जे ते दिव्य गतिने पा-
मीने पछे दिव्य देहे करिने निरंतर ते श्री हरिनी पासे रहेतां हवां. ते वार पछे ते श्री हरि
जे ते पोताना जे संबंधि तेनें पुछया विनाज नित्य स्नानने मिषे करीने तिव्र वैराग्यना वेग थ-
कि पोताना घरनो त्याग करिने पोते एकलाज उत्तर दिशाने विषे तप करवा सारु चालि
निसरता हवा. ते पोते केवा छे, तो बहिर्वासे सहित जे कौपिन तेने धारी रह्याछे, ने मृग च-
र्म धार्यू छे ने पलाशानो दंड धारयो छे, ने श्वेत एवुं जे यज्ञोपवित तेने धार्युं छे, ने कंठने
विषे तुलसीनि बे माळा धारिछे, ने चांदले सहित जे उर्ध्व पुंड्र तिलकनुं चिन्ह ते धार्युं छे,
ने मस्तक उपर जटाने धारी रह्याछे ने केडने विषे मुजानि मेखला धारिछे ने हाथने विषे ज
प माला, कमंडलुं, भिक्षा पात्र ने जल गरणुं एटलां वानांने धारि रह्याछे, ने शालंग्राम ने

 आळ मुकंदनो जे वटुवो तेने गळाने विषे धारी रह्या छे ने च्यार सारनो गुटको तेने खभा ने विषे धारी रह्या छे एवा वेशने धरता थका श्री निलकंठ ब्रह्मचारि जे ते सरज्यु नदिने उतरीने उत्तर दिशामां जाता हवा. ते चालते चालते केटलेक दिवसे करिने हिमाला पर्वतनी तलाटीमां जे एक महा मोटुं वन आव्युं तेने पामता हवा, पछे त्यांथी चाल्या ते केटलेक दिवसे करीने हिमालय पर्वतने पाम्या, ने ते पर्वतने विषे चालता थका केटलेक दिवसे करीने मुक्तनाथ प्रत्ये आवीने उग्र तप कर्युं ने ते तपे करीने सूर्यनारायणने प्रसन्न करता हवा, अने त्यां केटलाक मास रहीने पछे त्यांथी दक्षिण दिशामां चाल्या ते हिमाला पर्वतनी तलाटीमां एक महा घोर वन आव्युं तेने विषे वार मास सुधि विचरता हवा पछे श्री नीलकंठ ब्रह्मचारी जे ते ते वनने विषे वडना व्रक्ष तळे बेठा, ने तपने करता हवा जे गोपाल ज्योगी तेने देखता हवा, ने ते जोगी पासे राहिने अष्टांग जोगने शिखता थका एक वरस सुधि रह्या अने ते ज्योगीने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान आपीने सिद्ध गतिने पमाडता हवा. अने पछे त्यांथी उत्तर मुखे चाल्या एवा जे श्रीनिलकंठ ब्रह्मचारी ते जे ते आदिवाराह नामे जे तिर्थ तेने पाम्या. अने त्यांथी चाल्या ते बंगाळा देशने विषे सीरपर नामे जे [illegible]

तेने पामता हवा. अने ते सेहेरनो राजा सिद्धवलभ नामे महा धार्मिक हतो तेणे प्रार्थनाने कर्या एवा जे श्री नीलकंठ ब्रह्मचारि ते जे ते चोमासाना च्यार महिना सुधी त्यां रेहेता हवा. अने ते शेहेरने विषे कालि ने भैरव तेना उपासक ने सिद्धपणानुं छे अभिमान जेमने एवा जे असुर तेमना मदने हरता हवा, ने पोतानो सेवक जे गोपाळदास नामे साधु तेनि असुरना अभिचार थकि पोताने सामर्थ्ये करिने रक्षा करता हवा. अने वळि ते सेहेरने विषे वेद शास्त्र पुराणनो भणेलो एवो तैलंग देशनो कोईक ब्राह्मण हतो तेणे ते राजा थकि हस्ति आदिकनुं महादान लिधुं तेणे करिने ते ब्राह्मण गौरवर्ण हतो पण शाम वर्ण थइ गयो पछे ते ब्राह्मण पोताना पापनि शांतिने अर्थे श्री निलकंठ ब्रह्मचारिने शरणे आव्यो तेने पोताना सामर्थ्ये करिने ते पाप थकि मुकाव्यो त्यारे काळो मटिने प्रथमना जेवा गौर वर्ण थतो हवो. पछे त्यांथि चाल्या एवा जे श्री हरि ते जे ते कामाक्षि देवीने समीपे कोइक गाम हतुं तेने पाम्या ने ते गाममां महाकाळीनो उपासक एक ब्राह्मण हतो ते पोताना गाममां जे कोइ साधु तथा ब्राह्मण तिर्थवासी आवे तेने अभिचारे करिने जीतिने पोताना शिष्य करे एवो अभिमानि हतो. ते ब्राह्मण आविने श्री हरिनी उपर पोतानुं जंत्र मंत्र अभिचार सं-

वंधि ने घणुक सामर्थ्य तेने करतो हवो पण तेणे करिने पोते कांइ पराभव पाम्या नहि ने
पोताने सामार्थ्य करिने ते ब्राह्मणनो समग्र मद उतारिने पोताने आश्रित करता हवा. पछे
श्री हरि जे ते त्यांथि चाल्या थका नवलाखा पर्वतने पाम्या. जे नव लखा पर्वतने विषे नव ला-
ख सिद्धनां स्थानक छे ने नव लाख ठेकाणे अग्निनि ज्वाळा निसरे छे तथा पाणिना कुंडछे ते
पर्वतने विषे रह्या जे सिद्ध तेमने पोतानुं दर्शन आपिने ते पर्वतथि उत्तर्या ते बालवा कुंड ना-
मे जे तिर्थ तेने पामता हवा.अने त्यांथी चाल्या जे श्री हरि ते गंगा सागरना संगमने पामीने
ने त्यां स्नान करिने पछेते समुद्रनी खाडीने वाणमां बेसीने उतर्या ने कपिलाश्रमने पामता ह-
वा ने त्यां नित्य कपिलजीनां दर्शन करता थका एकमास सुधि रह्या. अने पछे त्यांथि चाल्या ते ज-
गन्नाथ पुरि प्रत्ये गया ने त्यां केटलाक मास निवास करिने प्रथवीना भार रूप पण वाजे घ-
णाक असुर तेमने परस्पर वैर करावीने जुद्धं करीने नाश करावि नाखता हवा. पछे श्री नि-
लकंठ ब्रह्मचारि जे ते त्यांथि महावनने विषे चालता थका मानसपुरने पाम्या ने ते पुरना सत्र-
धर्मा नामे राजा हता ते पोताना आश्रित थया ने ते राजा द्वारे असुरनो पराभव करावता हवा
अने त्यांथि चाल्या एवा जे श्री निलकंठ ब्रह्मचारि ते वेंकटाद्रिने पाम्या ने त्यांथि शिवकां-

सि ने विष्णु कांचिनें पाम्या. ने त्यांथि श्रीरंगमां जइने बे मास सुधि रेहता हवा, ने त्यां वैष्णव संघाथे संवाद करता थका तेमने विषे रह्यो जे दुराचार तेनो पोताने प्रतापे करिने त्याग करावता हवा. पछे त्यांथि चाल्या एवा जे श्री हरि ते सेतुबंध नामे जे तिर्थ तेने पामीने ने समुद्रने विषे स्नान करिने निते रामेश्वर महादेवनां दर्शन करता थका बे मास सुधि त्यां रेहेता हवा. अने पछे त्यांथि चाल्या ते सुंदरराज नामे जे विष्णु तेनां दर्शन करिने त्यांथि चालता थका मार्गने विषे एक घोर वन आव्युं. तेमां पांच दिवस सुधि चाल्या पण क्यांइ अन्न जळने न पाम्या. पछे छठे दिवसे मध्यान समे वनमां एक कुप आव्यो तेमांथी कमंडलुयें करीनें जळनें काढीने स्नान कर्यु ने पछे वडना व्रक्ष तळे बेसीनें पोतानो नित्य विधि करताथका शालंग्रामनी सेवा करवा लाग्या त्यारे ते शालंग्रामने पात्रमां मुकिने कमंडलुनि धारे करिने स्नान कराववा मंड्या ते जेटलुं पाणी रेडयुं तेटलुं शालंग्राम पि गया ते एम करतां करतां पांच सात कमंडलुं रेडयां तेने पि गया पछे जळ पीने त्रप्त थया जांणिने ते शालंग्रामनें चंदनादिके करिने पुजता हवा अने ए विचार करवा लाग्या जे शालग्रामने आटलि तरस लागी त्यारे भुख पण हशे खरि पण

पा.

वच.

आपाणि पासे कांइ नैवेद धरवानुं नथि माटे विष्णुने शुं जमाडिये एम विचार करे छे तेट-
लामां शिवजी ने पार्वति ते पोठिया उपर बेशीने कापडिने वेशे त्यां आविने प्रथमथिज उभां
हतां ते श्री नीलकंठ ब्रह्मचारिने एवी रीते शालग्रामनी पुजा करता जोइने तेने साथवोने मी
ठुं आपतां हवां. पछे ते साथवाने जळमां चोळीने ने विष्णुने नैवेद्य धरिने पोते जमता हवा अने
पछे त्यांथि चाल्या एवा जे श्री नीलकंठ ब्रह्मचारि ते जे ते भुतपुरिने पाम्या ने त्यां रहिने रा-
मानुज आचार्यनि प्रतिमा तेनुं दर्शन तथा पुजन करिने त्यांथि कुमारिका क्षेत्र प्रत्ये आव्या.
त्यांथि पद्मनाभ गया ने त्यांथि जनार्दन गया ने त्यांथी आदिकेशव नामे विष्णु तेनां दर्शन
करिने त्यांथि मलयाचल नामे जे कुलगिरि तेने पामता हवा. अने त्यां साक्षिगोपाळ नामे
जे विष्णु तेनां दर्शन करता थका पांच दिवस रहेता हवा.अने त्यांथि चाल्या एवा जे श्री नीलकंठ ब्र-
ह्मचारि ते पंडरपुर गया ने त्यां विठ्ठलनाथ नाम जे विष्णु तेनां दर्शन करता थका बे मास सुधि रहे-
ता हवा.पछे ते विठलनाथने भेटिने त्यांथि चाल्या ते दंडकारण्यने पाम्या ने ते दंडकारण्यनि प्रदक्षणा
करिने नासीकपुर प्रत्ये आव्या ने त्यां त्रंबकेश्वर महादेवनां दर्शन करीने तापि नदि प्रत्ये आव्या
ने त्यांथि चाल्या ते नर्मदा नदिने उतरीने महि नदिने पाम्या ने महि नदिने उतरीने तथा

साभरमति नदीने उतरीने ने भालदेशने ओलंघिने भीमनाथ आवता हवा, अने त्यांथी चाल्या एवा जे श्री नीलकंठ ब्रह्मचारि ते जे ते गोपनाथ नामे शिवजीनां दर्शन करीने पंच तीर्थ करता करता मांगरोल बंदरमां आवता हवा. एवी रीते तिर्थ यात्राने करता एवा जे श्री हरिकृष्ण भगवान ते जे ते जे जे तीर्थमां पोते गया ते ते तीर्थने विशे रह्यो जे अधर्म तेनो उच्छेद करता हवा अने एकांतिक धर्मनुं स्थापन करता हवा, अने ते तिर्थमां रेहेनारा जे जन तेमने पोतानां दर्शन आपिने तथा तेमनुं अन्न जलादिक ग्रहण करीने तेमने संसारना बंधन थाकी छोडता हवा, अने पछे „त्यांथी चाल्या एवा जे श्री नीलकंठ ब्रह्मचारि ते जे ते संवत १८५६ अढारसोने छपनना श्रावण वदी ६ छठने दिवसे लोजपुरमां आवता हवा. अने ते लोजपुरमां उद्धवना अवतार एवा जे श्री रामानंद स्वामी तेना शिष्य जे मुक्तानंद स्वामी आदिक साधु तेमने देखता हवा. ने तेमने साधु लक्षणे जुक्त एवा जे श्रीकृष्ण भगवानना भक्त जाणीने ते भेळा पोते रेता हवा. अने केटलाक मास त्यां रहिने पछे त्यांथी ते साधु भेळा चाल्या, ते गीरनार पर्वतनी छायामां जे पिपलाणुं गांम तेमां रह्या जे नरसई मेहेता नामे ब्राह्मण तेना घरने विषे विराजमान एवा जे श्रीरामानंद स्वामी तेनां दर्शन संवत १८५६ अढारसोने छपन

ना जेए वदी १२ द्वादशीने दिवसे करता हवा. ते स्वामी केवाछे तो गौर ने पुष्ट छे मुर्त्ति जेनि एवा छे, ने स्वेत वस्त्र पेर्याछे, ने नैष्टिक ब्रह्मचारिना वेशने धरि रह्याछे, एवा जे स्वामी तेने साष्टांग नमस्कार करिने ने मळीने स्वामी पासे बेसता हवा. पछे ते स्वामी जे ते ते श्री नीलकंठ ब्रह्मचारिने जोइने बहुं आनंद पामता हवा ने तेमनुं जे सर्व वृत्तांत तेने पुछता हवा. पछे ते श्री नीलकंठ ब्रह्मचारि जे ते पोतानुं जन्म स्थान, कुळ, माता, पिता, गोत्र ने वेद, प्रवर गुरु, इष्टदेव ए सर्वने जेम छे तेम कहेता हवा तथा पोतानो जे वैराग्य तथा पोते जेम स्वजनने त्याग कर्यो, तथा पोते जेम वनमां निवास करीने रह्या, तथा पोते जेम नाना प्रकारे तपस्चर्या करी, तथा पोते जेम अष्टांग योग साध्यो, तथा पोते जेम तिर्थ जात्रा करी, तथा ते तिर्थमां रहेनारा जे पाखंडि गुरु तेनो पोते जेम पराजय कर्यो, ए आदिक जे सर्व पोतानुं वृतांत तेने अनुक्रमे करीने विस्तारे सहित कहेता हवा. त्यारे ते वार्त्ताने सांभळीने स्वामी जे ते अतिशे प्रसन्न थया ने श्री नीलकंठ ब्रह्मचारि प्रत्ये बोल्या जे हे ब्रह्मचारि तमे तो अमाराछो केम जे तमारा पिता जे धर्म ते प्रथम प्रयाग क्षेत्रने विषे अमथाकिज भागवति दिक्षाने पाम्या हता ने अमारि आज्ञाये करिने मुमुक्षु जनने धर्म सहित श्री कृष्ण भगवाननि भक्तिनो उपदेश

करता थका कोसल देशमां रह्या हता,ते धर्मना तमे पुत्रछो ने. गुणे करीने तो तमारा पिता थकि पण अधिक छो. एवि रितनां जे स्वामीनां वचन तेने सांभळीने श्री नीलकंठ ब्रह्मचारि जे ते अतिशे प्रसन थया थका ते स्वामी पासे रहेता हवा. पछे संवत १८५७ अढारसोने सतावनना कार्तिक शुद ११ एकादशीने दिवसे ते स्वामी थकि भागवति दिक्षानुं ग्रहण करता हवा.त्यारे ते स्वामीए सहजानंद एवुं पोतानुं नाम धर्युं,तथा बिजुं नारायण मुनी एवुं नाम धर्युं. पछे पोते अतिशे प्रितिये करिने ते स्वामीने सेवता हवा. पछे ते स्वामी जे ते सर्वे साधु गुणे संपन्न ने अति. समर्थ एवा जे नारायण मुनि तेने जोइने ने पोतानि जे धर्मधुर ते नारायण मुनिने सोंपिने पोते संवत १८५८ अढारसोने अठावनना मागसर शुदि १३ तेरसने दिवसे देह त्याग करीने पाछा बद्रिकाश्रमने विषे जाता हवा, ने दुर्वासाना शाप थकी मुकावता हवा.पछे श्री सहजानंद स्वामी जे ते ते पोताना गुरुनी जे देह क्रिया तेने यथा विधिये करी ने धर्मधुरने उपाडि लेता हवा.ने श्री रामानंद स्वामीना आश्रित जे साधु ब्रह्मचारिने ग्रहस्थ हता तेमनी शास्त्रना उपदेशे करीने संभावना करता हवा अने तेमने पोतानो अलौकिक प्रताप देखाडीने पोताने विषे तेमना चितने ताणि लेता हवा. तेवार पछे स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज जे ते पोताना शि-

ष्य जे त्यागी, साधु तथा ब्रह्मचारि तथा केटलाक ग्रहस्थ सत्संगी तेमणे विंटाणा थका सोरठ, हालार, कच्छ, झालावाड, काठियावाड, भाल, गुजरात, ए आदिक जे सर्व देश तेमने विषे पोताना प्रतापने विस्तारता थका ने धर्म ज्ञान ने वैराग्ये जुक्त जे भक्ति तेने प्रवरतावता थका ने अधर्म नो उच्छेद करता थका ने अधर्मि एवा जे पाखंडि असुरांश गुरु तेमनो पराभव करता थका विचरता हवा. अने श्रीजिमहाराज जे ते जे जे देशने विषे विचर्या ते ते देशना जे जन ते श्रीजिमहाराजना अलौकिक ऐश्वर्यने जोईने घणाक आश्रित थाता हवा ने श्रीजिमहाराजनुं प्रगट प्रमाण करता हवा. पछे श्रीजिमहाराज जे ते तेमना उच्छाहने अर्थे ने तेमनी बुद्धिनी द्रढताने अर्थे पोतानुं जे नाना प्रकारनुं ऐश्वर्य ते समाधिये करिने देखाडता हवा. तेमां केटलाक मनुष्यने तो गोलोकने मध्ये जे अक्षरधाम धाम तेने विषे लक्ष्मी राधिकाने श्रीदामादिक पार्षदे सहित श्रीकृष्ण रूपे पोतानुं दर्शन देता हवा, अने केटलाकने तो वैकुंठलोकने विषे लक्ष्मीने नंदसुनंदादिक पार्षदे सहित विष्णु रूपे पोतानुं दर्शन देता हवा, अने केटलाकने तो श्वेतद्विपने विषे निरन्नमुक्ते सहित महापुरुष रूपे पोतानुं दर्शन देता हवा, अने केटलाकने तो अव्याकृत धामने विषे लक्ष्मी आदिक शक्तियोने पार्षदे सहित भुमापुरुष रूपे पोतानुं दर्शन देता हवा,

अने केटलाकने तो बदरिकाश्रमने विषे मुनीये सहित नरनारायण रूपे पोतानुं दर्शन देता हवा, अने केटलाकने तो क्षीर समुद्रने विषे लक्ष्मीने शेषनागे सहित योगेश्वर रूपे पोतानुं दर्शन देता हवा, अने केटलाकने तो सूर्यना मंडळने विषे हिरण्यमय पुरुष रूपे पोतानुं दर्शने देता हवा, अने केटलाकने तो अग्नि मंडळने विषे जे यज्ञपुरुष रूपे पोतानुं दर्शन देता हवा, अने केटलाकने तो प्रणवना जे नाद तेने ततकाळ संभळावता हवा, अने केटलाकने तो कोटि कोटि सूर्य सरखुं जे पोतानुं तेज तेने देखाडता हवा, अने केटलाकने तो जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति थकि पर ने सच्चिदानंद छे लक्षण जेनुं, द्रष्टा छे नाम जेनुं एवुं जे ब्रह्म ते रूपे पोतानुं दर्शन देता हवा, अने केटलाकने तो ब्रह्मांडना आधार ने पुरुषसुक्तने विषे कह्या एवा जे विराटपुरुप ते रूपे पोतानुं दर्शन देता हवा, अने केटलाकने तो भूगोळ ने खगोळने विषे रह्यां जे देवतानां स्थानक ने ऐश्वर्य तेने देखाडता हवा, अने केटलाकने तो आधारादिक जे छचक्र तेने विषे रह्या एवा जे गणेश आदिक देवता तेमने प्रथक प्रथक देखाडता हवा. अने क्यारेक तो साए सा गाउने छेटे रह्या एवा जे पोताना भक्त तेमने प्रत्यक्ष प्रमाण पोतानुं दर्शन देता हवा, अने क्यारेक तो छेटे रह्या एवा जे पोताना भक्त तेमणे पोताना घरने विषे श्रीजीमहाराजनी प्रतिमाने

आगळ धर्युं जे नैवेद्य तेने पोते पोताना भक्तने विस्मय पमाडता थका जमता हवा, अने क्यारेक तो देह त्यागने करता एवा जे पोताना भक्तजन तेमने पोताना धाम प्रत्ये लेई जावाने ईच्छता थका त्यां पोते आवीने ते भक्तना गामने विषे रह्या एवा जे बीजा भक्त अथवा अभक्त तेमने पण पोतानुं साक्षात दर्शन देता हवा, एवी रीत्ये मुमुक्षु नहि एवा जे जन तेमने पोताना अलौकीक ऐश्वर्यने देखाडता हवा एवा जे श्रीसहजानंदजी माहाराज तेने जोईने अति विस्मयने पाम्या एवा जे हजारो मनुष्य ते पोतपोताना मतनो ने गुरुनो त्याग करीने ने श्रीजीमहाराजनो अन्यन्य आश्रय करीने प्रगट प्रमाण भजन करता हवा. पछे वणाक जे मतवादि ते श्रीजीमहाराज संगाथ विवाद करवा आव्या, पण वादे करीने श्रीजीमहाराजने जितवाने काजे कोई समर्थ न थया, पछे ते सर्वे मतवादि जे ते श्रीजीमहाराजनो अलौकिक ऐश्वर्य प्रताप देखिने ने नमस्कार करीने बोल्या जे हे महाराज तमे तो परमेश्वरछो माटे अमारा जे जे इष्टदेवछे तेनां दर्शन अमने कृपा करीने करावो, एवि रीते जे तेमनुं प्रार्थना वचन तेने सांभळिने ते सर्वने वेसारिने ने पोताने प्रतापे करिने तेमने ततकाळ समाधि करावता हवा, पछे ते सर्वे जे ते श्रीजीमहाराजने दर्शन मात्रे करिने खेचाइ गया छे नाडि

प्राण जेमना एवा थका पोत पोताना हृदयने विषे पोत पोताना इष्टदेव रूप श्रीजीमहाराजने देखता हवा; तेमां जे वल्लभकुलने आश्रित एवा वैष्णव हता तथा नीमानंदि हता तथा माध्वि संप्रदायना हता ए त्रण तो गोपिना गणे विटाणा ने वृंदावनने विषे रह्या ने वाळलिलाये करीने मनोहर मुर्त्ति एवा जे श्री कृष्ण भगवान ते रूपे देखता हवा, अने जे रामानुज संप्रदायना हता ते तो नंद सुनंद विष्वकसेन ने गरूडादिक पार्षदे सहित लक्ष्मीनाराण रूपे देखता हवा. अने जे रामानंदि हता ते तो सीता लक्ष्मणने हनुमाने जुक्त थका दिव्य सिंहासन उपर बेठा एवा जे श्री रामचंद्रजी ते रूपे देखता हवा. अने जे शंकराचार्यना मत वाळा हता ते तो ब्रह्म ज्योति रूपे देखता हवा, अने जे शैवि हता ते तो पार्वतिने प्रथम गणे सहित जे शिवजि ते रूपे देखता हवा, अने जे सूर्यना उपासक हता ते तो सुर्यना मंडळने विषे रह्या जे हिरण्यमयपुरुष ते रूपे देखता हवा. अने जे गणपतिना उपासक हता ते तो महागणपति रूपे देखता हवा अने जे देविना उपासक हता ते तो देवि रूपे देखता हवा. अने जे जैन हता ते तो तिर्थंकर रूपे देखता हवा, अने जे यवन हता ते तो पेगंबर रूपे देखता हवा. एवी रीते समाधिये करीने पोत पोताना इष्टदेव रूपे श्रीजी महाराजने जोइने ने सर्वना कारण जाणीने ने पोत पोताना मत

नो त्याग करीने श्रीजी महाराजनो द्रढ आश्रय करता हवा ने प्रगट प्रमाण भजन करता हवा.
एवि रीते श्रीसहजानंदजि महाराज जे ते पोताना प्रतापे करीने जीवनु जे मुळ अज्ञान तेनो नाश करता
थका प्रथवीने विपे नाश पाम्यो एवो जे एकांतिक धर्म तेनुं रुडे प्रकारे स्थापन करता हवा.अने वलि
धनाढय एवा जे पोताना भक्त गृहस्थ सत्संगी ते पासे घणांक अन्नछत्र करावता हवा,तथा हिंसाये रहि
त एवा जे विष्णु याग महारुद्रने अतिरुद्रादिक यज्ञ तेने करावता हवा, अने ते यज्ञने विपे हजारो
ब्राह्मणने मीष्टअन्ने करीने तृप्त करावता हवा,अने ते ब्राह्मणने बहु प्रकारना दान देवाडता हवा.
अने साधु, ब्राह्मण ने देवता तेमनु जे पुजन तथा भोजन करीने तृप्ती तेने वारंवार करता हवा.
तथा अधर्म अने पाखंड तेनो वारंवार उच्छेद करता हवा. अने श्रीजिमहाराज पोते ज्यां
ज्यां विचरथा त्यां त्यां रह्या जे पोताना भक्त जन तेमनी आगळ वर्णाश्रमना धर्म तथा आ-
त्मज्ञान तथा वैराग्य तथा पोताना स्वरूपनुं ज्ञान तथा पोताना महात्म सहित भ-
क्ति एमना जे बहु प्रकारना भेद तेमने विस्तारे करीने यथार्थपणे कहेता हवा. एवी रीते
नीत्य प्रत्ये पोताना भक्तजनने आनंद पमाडता एवा जे श्रीजीमहाराज ते जे ते श्रीगढडा नग-
रने विपे पोताना भक्त एवा जे अभय नामे राजा ने तेनी पूत्रीयो ने तेनो पूत्र ए सर्वेनी भक्तिने

वश थइने एमने घेर पोते निवास करीने रेहेता हवा.अने त्यां रह्या थका जन्माअष्टमी, रामनवमी, प्रबोधनि एकादशी, हुतासणी ने अन्नकोट ए आदिक जे उच्छवना दिवस तेने विषे भारे भारे सामग्रियो मगावीने मोटा मोटा उच्छव करावता हवा, अने ते उच्छवने विषे परमहंस तथा ब्रह्मचारि तथा देश देशना हरिभक्त सत्संगी ते श्रीजिमहाराजनां दर्शन करवाने अर्थे वारंवार आवता हवा अने नानां प्रकारनां वस्त्र आभुषण,चंदन, पुष्प ए आदिक जे पुजानी सामग्रियो तेमणे करिने श्रीजीमहाराजने पुजता हवा. अने ते उछवने विषे श्रीजीमहाराज ते नाना प्रकारनी भोजन सामग्रियो करावीने हजारो साधुने तथा ब्राह्मणोने घणीक प्रकारे वारंवार तृप्त करता हवा.

श्री भक्ति धर्मना पुत्र एवा जे श्री सहजानंद स्वामी महाराज तेनि मुर्त्तिनां जेचिन्हते प्रथम लखिये छैये. श्रीजीमाहाराजना बे चरणारविंदना तळांमां उर्द्धरेखा छे ते केवि छे तो अंगुठानी पासेनी जे आंगळीयुं तेनि बेय कोरा निकळि छे, ने पानिने बेय कोरा निकळी छे अने जमणा पगना अंगुठाना थडमा उर्द्ध रेखाने मळतुं जवनुं चिन्हछे.

अने ते जमणा पगना तळामां उर्द्ध रेषाना बेय कोरे, कमळ, अंकुश, ध्वज, अष्टकोण, वज्र स्वस्तिक, जंफुफळएमनां चिन्ह छे, अने जमणा पगना अंगुठाना नपमां एक उभि राति रेखानुं चिन्ह छे ने एज अंगुठाने बाहेर ने पडखे एक तिल छे अने ए अंगुठानी पासेनी जे आंगळि तेनुं जे अंगुठानी कोरनुं पडखुं तेमां एक तिल छे, अने ए अंगुठानि पासेनी जे आंगळी तेनुं जे अंगुठानी कोरनुं पडखुं तेमां एक तिल छे. अने जमणा पगनी छेलि आंगळीना बाहेरना पडखामां नखनी पासे एक तिलछे, अने डाबी पगना उर्द्ध रेखानी डाबिकोरे श्याम एवां बे चिन्ह पासे पासेछे, अनेवळी ए उर्द्ध रेखानें मळतुज फणाना थडमां एक व्योमनुं चिन्हछे अने ए डाबा पगना तळामां उर्द्ध रेखानेबे कोरे धनुप, कळश, मच्छ, त्रिकोण. गोपद, अर्धचंद्र, ए मनां चिन्ह छे. अने बे पगनां तळां रक्त छे, ने बे पगना अंगुठाने आंगळियुना जे नख ते रक्त छे ने उपडता छे ने तेजस्वि छे. अने बे पगना अंगुठाने आंगळियुंनि उपर झिणांझिणां ने कोमळ एवां रोमनां चिन्ह छे, अने बे पगना अंगुठाने तेनी पासेनी बे आंगळियुं ते उपर चाखडीना घसारानां चिन्ह छे, अने बे पगनी जे बाहेरनी घुटियुंने तेथी हेठे आसनना घसारानां चिन्ह छे. अने जमणा पगनी घुटीथी पांच तसु उंचो नळीने उपर एक नानो तील

छे अने ए पगना साथलने बाहेरलि कोरे एक मोटुं चिन्ह छे. अने डाबा पगनी घुटिथी पांच तसु उंचो नळिने उपर एक मोटो तिल छे.ने तेथी उपर पासे एक नानो तिल छे अने ए पगना ढिचणने बाहरलें पडखे एक चिन्ह छे. अने काटि भागने विषे बे कोरे धोतियुं पेरथाना घसारानां श्याम चिन्ह छे, अने सदा शितळ एवुं जे उदर ते उपर त्रिवलि पडछे अने डुंडी ने गोळ एवी जे नाभि तेनी बेय कोरे तिल छे, तेमां जमणी कोरे तो नाभिथी जराक छेटे छे. अने जमणी कुखमां एक मोटो तिल छे ने तेनी पासे बिजो नानो तिल छे अने नाभिथी उपर बे तसुने छेटे त्रण्य तिल छे,तेमां बे नळिना उपर एक एक छे ने एक वच्ये छे अने तवचल्या तिलथी बे तसु उपर एक तिल छे. अने डाबे पडखे कुखथी उंचे ने वगलथी हेठे मोटा च्यार तिलनी एक उभी हारय छे, ने तेनी पासे बाहेरलि कोरे एक बिजा नाना च्यार तिलनी उभि हारय छे, अने हृदयने विषे रोमनुं श्रीवच्छ चिन्ह छे, अने छातिने वच्ये अर्ध चंद्रने आकारे पांच तसु पोळुं ने जराक रातुं एवुं एक मोटुं चिन्ह छे ते जमणीकोरे कांइक विशेष चडतुं छे, अने ए चिन्हने वच्ये जराक डाबि कोरे एक मोटो तिल छे अने ए तिलथी डाबि कोरे बे आंगळने छेटे एक तिल छे ने तेथी डाबि कोरे बे तसुने छेटे डाबा

स्तनथी उपर एक तिल छे अने बे स्तनथी उपर बे छापनां चिन्ह छे. अने जमणि भुजानि पासे माहिलि कोरे उभी ओळये च्यार तिल छे अने जमणि भुजाना मुळथी त्रण तसु हेठुं एक छापनुं चिन्ह छे ने ते छापना चिन्हने पडखे बहारलि कोरे नाना च्यार तिल छे, अने जमणि कुणिथी हेठो ने कांडाथी उंचा बे तिल छे, अने जमणा हाथनी टचली आंगळीना मुळथी उपर अरधा आंगळने छेटे एक नांनो तिल छे, अने डाबी भुजाना मुळथी त्रण तसु हेठुं एक छापनुं चिन्ह छे अने डाबी कुणिथि बे तसु हेठो हाथने उपल्ये भागे एक तिल छे. अने डाबा हाथना अंगुठा पासनी जे आंगळी तथा वच्यलि आंगळी ए बेनी वचे एक तिल छे अने ए अंगुठा पासनि आंगळीना नखनी पासे मांहिलि कोरे ए कनांनो तिल छे अने डाबा हाथना पोंचा उपर एक तिल छे,अने बे हाथना जे नख ते रक्त छे ने उमडता छे अने तेजस्विछे ने ते नखनां जे अग्र भाग ते अति तिक्षण छे अने बे हाथनां जे तळां ते रक्तछे ने ते तलामां जे रेषाउ ते थोडि थोडि श्याम जणाय छे, अने बे हाथे क्षीना मुळमांथि उपर आठ तसु उंचा बे छापनां चिन्ह छे, अने बे कुणी श्याम छे अने कंठना षाडानि वच्ये एक तिल छे ने ए तिळथी जराक छेटे एक नांनो तिल छे अने डाढियी हेठो

एक तिल छे, अने डाभा खभाथी बे आंगळ हेठो वासामां एक रोमे सहित एक मोटो ति-
ल छे ने ए तिलथी हेठे एक तिल छे ने वली तेथी हेठे बीजो तिल छे, अने करोडानी
डाबीकोरे डोकथी बे तसु हेठो एक तिल छे अने जमणी खरपडी उपर एक नानो तिल
छे, अने करोडाथी जमणि कोरे वांसानी मध्ये च्यार तिल छे, अने नासिकानी पासे जम-
णि कोरे एक मोटो तिल छे, अने ए तिलथी, उंचो ने आंख्यना खुणाथि हेठो पासेज एक
नानो तिल छे अने बे नेत्रनी जे हेठली ने उपलि पांपण्युं तेथि उपर ने हेठे झिणि झिणि क-
रचलियुं पडे छे, अने नासिकाने उपर शिलिनां चाठांनां, झिणां झिणां चिन्ह छे. अने मुं-
खमां जमणि कोरे हेठलि जे प्रथमनि डाढ तेमां श्याम चिन्ह छे अने जिभ्या ते कमळना
पत्र सरखि रक्त छे. अने डाबा कानने मांहिलि कोरे श्याम बिंदुनां चिन्ह छे, अने विशाल
ने उपडतुं एवुं जे ललाट तेने विषे तिलकने आकारे उभी बे रेखा छे, अने वळि ललाटने
विषे जमणि कोरे केशथि हेठुं एक चिन्ह छे, अने जमणा कानने त्रुटि उपर एक नानो ति-
ल छे, अने ताळवानि उपर एक मोटो तिल छे अने शिखाथी आगल्य समीपे एक तिल
छे, अने शिखाथी पछवाडे जमणि कोरे त्रण्य तिल छे, अने ए विना बिजा पण झिणाझि-

णा तिल ते शरीरमां केटलाक छे अने श्रीजीमहाराजनी जे मुर्त्ति ते अतिशे रूपने सुंदरता
ने मधुरता तेणे जुक्त छे, अने ते मुर्त्ति पुष्ट छे ने अतिशे शोभायमान छे, अने ते मुर्त्तिना
दर्शनने करनारा जे भक्तजन तेमना मन ने नेत्रने हरी ले एवी ते मुर्त्ति छे, अने ते मुर्त्ति व-
नश्याम छे ने शांत स्वभावे जुक्त छे अने दुर्गपत्तनने विषे श्रीगोपिनाथजीनी मुर्त्ति जेटली उं.
चि छे तेटलिज श्रीजिमहाराजनी मुर्त्ति उंची छे, अने श्रीजीमहाराजनी मुर्त्तिनां जे कर
चरण आदिक सर्व अंग ते सामुद्रिक शास्त्रमां जेवां कह्यां तेवां छे, आवि रिथे श्रीजिमहा
राजनी मुर्त्तिनां जे चिन्ह ते पोतानि स्मृतिने अनुसारे लिख्यां छे,

---

हवे श्रीजिमहाराजनी जे स्वभाविक चेष्टा ते लिखिये छैये. श्रीजिमहाराज नित्य प्रत्ये
पाछली च्यार घडि अथवा त्रण घडि रात्रि रहे तारे उठिने दातण करवानो स्वभाव छे,
अने ते पछे स्नान करिने ने धोयेलुं जे कोरूं सुक्ष्म वस्त्र तेणे करिने शरिरने लोईने पछे उभा
थईने पेरयाना वस्त्रने बे साथल वच्चे मेळुं करीने तेने बे हाथे करीने निचोविने पछे साथलने
ने पगने लोईने पछे धोयेलुं जे सुक्ष्म धाटुंजे स्वेत वस्त्र तेने सारी पेठे तांणिने पेहेरे छे, अने श्वेत

वस्त्र पेरवानि छे रुचि जेने एवा जे श्रीजिमहाराज ते ते पछे विडुं धोयेलुं सुक्ष्म श्वेत वस्त्र ओढिने ने चाखडि उपर चढीने जमवा पधारे छे, अने पवित्र एवुं जे जमवा बेसवानुं स्थानक त्यां जईने आसन उपर बेसे छे, अने जमवा बेसे त्यारे ओढवाना वस्त्रने कानने पछवाडे राखीने ने कानने उघाडा राखीने जमवा बेसे छे, अने जमवा बेसे त्यारे डाबा पगनी पलांठी वाळीने ते उपर डाबा हाथनी हथेळि मुकीने ने जमणो पग उभो राखिने ने ते उपर जमणा हाथनी कुंणी राखीने जमे छे. अने जमतां जमतां वारंवार पाणी पिवानो स्वभाव छे, अने जमतां जमतां पोताने जे जम्यानि जणश सारि स्वादु जणाय ते बिजा कोईक श्रेष्ठ हरिभक्त पोताने मनगमता होय तेने आपिने पछे पोते जमे छे, अने जमता थका ओडकार खाईने पेट उपर हाथ फेरववानो स्वभाव छे, अने क्यारेक तो कोईक भक्तजनना उपर प्रसन्न थया थका पोतानी प्रसादीनो थाळ तेने आपे छे अथवा अपावे छे, अने साधुने पीरसवुं होय त्यारे डाबे खभे खेसने नांखीने ने ते खेसना छेडाने केडथ संगाथे ताणि बांधिने पिरसे छे अने पीरसे त्यारे लाडु जलेबी आदिक जे जम्यानि जणशुं तेनुं वारंवार नाम लेता थका पंक्तिमां वारंवार फरे छे, अने साधु हरिभक्तने जमाडवामां तथा पीरसवामां पोताने श्रद्धा आदरने प्रसन्न-

ता ते घणि छे अने श्रीजीमहाराज क्यारेक तो वरशारुतु तथा शरदरुतुने विषे दुर्गपत्तनने समिपे घेला नदीनुं निर्मळ जळ जांणिने साधु तथा सत्संगी सहित नहावा पधारे छे, अने ते नदीना जळने वखाणता थका ने पोताना भक्तजनने आनंद उपजावता थका ते भक्तजन भेळा बहु प्रकारे जळ क्रीडा करे छे अने जळमां डबकि मारे छे, त्यारे पोताना कांन नेत्रने नाक तेने बे हाथना अंगुठाने आंगलियें करीने दबावे छे तथा डपकि मारीने झाझिवार प-छि निकळे छे, त्यारे पोताना मुखारविंद उपर जमणा हाथने फेरवीने कोगळा करवा नो स्वभाव छे. अने क्यारेक तो नदीना प्रवाहने मध्ये उभा रह्या थका साधुनी पासे तालि वजाडिने किर्त्तन गवरावे छे, ने पोते पण ते भेळा तालि व-जाडता थका उत्छाह सहित किर्त्तन गायछे, अने जळमां स्नान करवा पेसे छे तथा स्नान करिने निसरे छे त्यारे पोताने प्रिय एवो कोइक भक्तजन बळवान होय तेना हाथने पोताना हाथे करिने झाले छे अने पोताने दर्शने करिने हरशे युक्तछे मुख जेमनां एवा जे पोताना भक्त जन तेमणे सहीत नदीना जळथी बाहेर निसरीने नदीना कांठाने विषे उभा रह्या थका प्रथमनि पेठे पेरेलां वस्त्रने नीचोविने ने शरिरने लोइने धोळो खेश सारी पेठे ताणीने पेरे

छे ने पछे धोलो फेंटो माथे वांधे छे अने माथे फेंटो बाधे छे त्यारे फेंटाना छेडानुं छोगलुं मुकीने वांधे छे तथा फेंटाना एक आंटानो पेच भ्रकुटीनी पांपण उपर लावीने वांधे छे,अने ते पछे धोळा खेसने डाबे खभे नांखीने ने ते खेसना छेडाने केडय संगाथे तांणि वांधीने पछे सुंदर भारे घोडि उपर अथवा घोडा उपर असवार थईने हजारो जे पोताना भक्तजन तेमणे च्यारे कोरे विटाणा थका ने पोताना दर्शनने करता जे भक्तजन तेमना नेत्रने आनंद उपजावता थका पोताने उतारे पधारे छे अने श्रीजीमहाराज पोते चाले छे त्यारे धोळि पछेडिने अथवा धोळा खेसने डाबा खभा उपर आडसोडे नांखीने जमणा हाथने हलावता थका चाले छें, अने क्यारेक तो रूमाले जुक्त जे जमणो हाथ तेने हलावता थका चाले छे. अने क्यारेक तो डाबा हाथने केडय उपर मुकिनेज जमणा हाथमां रूमाल लेईने ते जमणा हाथने हलावता हलावता चाले छे, अने श्रीजिमहाराजने सेहेजे उतावलुं चालवानो स्वभाव छे, अने पोते चाले छे त्यारे पोतानी केडे चालता जे भक्तजन ते दोडे त्यारे मांड मांड भेळे चालि सके एवि रिते उतावळा चाले छे, अने ज्यारे पोते चाखडि पेहेरीने चाले छे त्यारे चाखडिना चट चट शब्द थाय छे, अने क्यारेकतो पोते कांई कारजं करवाने तत्पर थया थ-

का उभा होय तथा धिरे धिरे चालता होय त्यारे पोताना जमणा हाथनी मुठी वाळीने पोताना जमणा साथळमां धिरे धिरे मारवानो स्वभाव छे, अने क्यारेक तो घणाक माणसनी भिडथ थाय छे ने रज उडे छे त्यारे पोतानी नासिका ने मुखारविंद तेने आडो रुमाल दे छे अने क्यारेक तो पोते ढोलिया उपर बेसे छे ने क्यारेक तो ओछाडे सहित गोदडुं पाथर्युं होय ते उपर बेसे छे. ने क्यारेकतो गादी उपर बेसे छे. ने क्यारेक तो चाकला उपर बेसे छे, ने क्यारेक तो ढोलिया उपर तकियो पड्यो होय ते उपर बेसे छे, अने बेसे त्यारे क्यारेक तो पलांठि वाळिने बेसे छे ने क्यारेक तो वस्त्रे करिने ढिंचणने बांधिने बेसे छे, अने ज्यारे ज्यारे बेसे त्यारे वहुधा तो नाकियानुं उठिगण करीने बेसे छे. अने क्यारेक तो पोते ढोलिया उपर अथवा आसन उपर बेठा थका तकियानुं उठिंगणने करीने ने पोताना पगने लांबा करीने ने पग उपर पगने मुकीने बेसवानो स्वभाव छे अने क्यारेक तो पोते बेठा थका डाबा चरणारविंदनी उर्ध्वरेखा उपर पोताना जमणा हाथनी आंगळीने उभी फेरवे छे, अने क्यारेक तो पोतानी जिभने एक कोरना दांत तळे दाबीने बेसवुं एवो सहज स्वभाव छे, अने क्यारेक तो पोते बेठा थका पोतानी डोकने बे पासे मरोडीने कडाका वगाडे छे, अने क्या-

रेक तो पोताना भक्तजननी पासे पोताना वांसाने दबावे छे त्यारे हइयानी तळे तकियो रा-खिने दबावे छे, अने श्रीजिमहाराज ज्यां ज्यां सेहेजे बेठा होय त्यारे तुलसीनी माळाने फेरवे छे, अने क्यारेक तो रमत्यनी पेठे ते माळाने बेवडी करीने बे बे मणका भेळा फेरवे छे, अने क्यारेक तो वार्त्ता केहेता थका ते माळाने भेळि करीने ने बे हाथना तळा वच्ये राखिने घसे छे, अने क्यारेक तो माळा न होय त्यारे पोताना हाथनी आंगळीना पर्वने गणे छे, अने क्यारेक तो नेत्र कमळने मिचिने ध्यान करता थका बेसे छे अने क्यारेक तो नेत्र कमळने उघाडां राखिने ध्यान करता थका बेसे छे. अने क्यारक तो जागे छे, अने क्यारेक तो पोतानी आगल्य साधु वाजिंत्र वजाडीने किर्त्तन गाता होय त्यारे पोते ध्यान करीने बेसे छे, अने क्यारेक तो चपटि वजाडता थका ते साधु भेळा गावा लागे छे, अने क्यारेक तो साधु ताळि वजाडीने किर्त्तन गाता होय ते भेळा पोते ताळी वजाडीने किर्त्तन गाय छे, अने क्यारेक तो पोतानी आगल्य वाजिंत्र वजाडीने साधु किर्त्तन गाता होय तथा पोतानी आगल्य कथा वंचाति होय तथा पोते पोताना भक्तजननी आगल्य वार्त्ता करता होय त्यारे खसीने तेमने समीपे जाय छे, अने कथा वंचावता होय त्यारे वारंवार हरे एवा शब्दनुं उच्चा-

रण करे छे, अने बिजी जे जे क्रिया करता होय तेने विषे पण ते कथाने भाने करीने क्यारेक तो अचानक हरे एवा शब्दनुं उचारण करे छे ने तेनी स्मृति थाय छे त्यारे पोता पासे जे भक्तजन बेठा होय तेमना सामुं जोईने मंद मंद हसे छे, अने क्यारेक तो पोते रा-जिपामां वार्त्ता करता होय अथवा कथा करावता होय अथवा किर्त्तन गवरावता होय अथवा कांइक विचारमां बेठा होय ने ते वच्यमां कोईक जम्यानुं पुछवा आवे अथवा कोईक पुजा करवा आवे अथवा हार चढाववा आवे तो ते उपर बहु कचवाई जाय छे. अने क्यारेक तो पोताना भक्तजननी सभामां बेठा थका धर्म ज्ञान वैराग्येजुक्त जे भक्ति ते संबंधी जे वार्त्ता ते पा-ताना भक्तजननी आगल्य करे छे, अने क्यारेक तो योग, शांख्य, पंचरात्र, वेदांत इत्यादिक जे शास्त्र तेना रहस्यनी वार्त्ता करे छे, अने क्यारेक तो पोताना भक्तजननी सभामां बेठा थ-का ते भक्तजननी आगल्य धर्मादिक संबंधि वार्त्ता करे छे त्यारे प्रथम पोताना बे भुज उंचा उपाडीने ताळि वजाडिने सर्वने छांना राखीने वार्त्ता करे छे, अने क्यारेकतो घणा भक्तजनना समुहनी मोटी सभा थई होय ने तेमनी आगल्य धर्मादिक संबंधि वार्त्ता करवी होय त्या-रे छेटेथी पण संभळाय तेने अर्थे पोते उभा थईने ने ताळि वजाडीने सर्वने छांना राखिने

वार्ता करे छे अने क्यारेक तो ते वार्ता करवाने विषे एकाग्रह चित करीने पोताने ओढ. वानुं वस्त्र खसी जाय तेनी पण सुरत रेहेती नथी एवो स्वभाव छे, अने क्यारेक तो पोताना भक्तजननी सभामां बेठा थका पोताना मुखारविंदने समीपे बेठा जे साधु तथा हरिभक्त तेमने पण परस्पर प्रश्न उत्तर करावे छे, ने तेमां कोई कठण प्रश्न पुछे ने तेनो उत्तर न आवडे तो सर्वेने आनंद उपजावता थका पोते उत्तर करे छे, अने क्यारेकतो ते वार्ता करता थका पुष्पना गुछने अथवा कोई मोटा पुष्पने बे हाथे करीने चोळी नांखे छे, अने क्यारेक तो ते वार्ता करता थका पोताना रुमालना छेडाने वळ देवो एवो सहज स्वभाव छे, अने क्यारेक उछवने विषे नाना प्रकारना देशथी आव्या जे पोताना भक्तजन तेमणे प्रितिये करीने करी जे मोटि पुजा तेनो अंगीकार करे छे, अने क्यारेक तो उछवने विषे पोतानी पुजा करवा सारु घणाक हरिभक्त भेला थईने आवे छे, त्यारे तेमणे चढाव्या जे पुष्पना हार तेने पोताना बे हाथे करीने ग्रहण करे छे, तथा चर्णारविंदे करीने ग्रहण करे छे तथा छडिये करीने ग्रहण करे छे, अने क्यारेक तो पोताना दर्शन मात्रे करीने पोताना भकजनने समाधि करावे छे, ने क्यारेक तो ते समाधिमांथी तत्काळ उठाडे छे, अने क्यारेक तो पोते

सभामां बेठा होय ने कोईक भक्तजनने पोतानी पासे तेडवो होय त्यारे नेत्र कमळनी सांने
करीने अथवा अंगुठा पासेनी जे आंगळी तेनी सांने करीने ते भक्तने बोलावी लहे, अने
क्यारेक तो मोगरा आदिक पुष्पना हार तथा लींबु आदिक जे फळ तेने शितळ जाणिने
पोतानी आंख्य उपर वारंवार अडाडे छे, अने क्यारेक तो पोते भगवत्कथा करावीने सांभळे
छे, अथवा पोते कथा करे छे,. अथवा पोते भगवद्वार्ता करे छे, अ
थवा किर्त्तन गवरावीने ते पोते गायछे अथवा मंदिर करावेछे अथवा साधु ब्राह्मणने जमाडे
छे इत्यादिक सत क्रिया कर्या विना क्यारेय नवरुं न रहेवुं एवो स्वभाव छे, अने पोते भक्ति
धर्म संबंधि जे जे कारज्यनो आरंभ करे छे तेने संपूर्ण करवामां पोताने शीघ्रपणुं वणुं छे.
अने छिंक खावि होय त्यारे प्रथमथी पोताना रुमालने खोलिने ते रुमालने मुखारविंद आ-
गल्य राखिने छेटे संभळाय एवि रिते उंचे स्वरे छिंक खायछे अने ज्यारे ज्यारे एवि छिं-
क खाय छे,त्यारे बे त्रण भेळि छिंक खायछे अने ज्यारे पोते बगासुं खायछे त्यारे हरि हरि
हरि एवा शब्दनुं उच्चारण करता थका पोताने हाथे करिने नेत्र कमळने बे त्रण्य वार चो-
ळे. अने निष्काम भक्त करि जे पोतानि सेवा तेने विषे छे, रुचि जेनि एवो पोतानो स्वभाव

...े, अने कांइक रमुजे करिने अतिशे हसेछे त्यारे हाथे करिने पोताना रुमालने, मुखारविंद आडो देइने हसे छे, अने क्यारेक तो देशांतर थकि पोताने समीपे आव्या जे साधु तथा पोताने प्रिये एवा भक्तजन तेमने जोइने प्रसन्न थया थका तत्काळ उठिने तेमने बथमां घालीने मळेछे अने क्यारेकतो उत्सवने विषे पोताने समीपे रहीने पछे पोतानी आज्ञाये करिने परदेशमां जाता जे साधु तेमने प्रसन्न थइने मळे छे अने क्यारेक तो पोताना भक्तजन उपर प्रसन्न थइने तेना मस्तक उपर पोताना बे हाथ मुकेछे, अने क्यारेकतो प्रसन्न थइने कोइक भक्तजनना हृदयने विशे चर्णाविंदनु धारण करे छे, अने क्यारेकतो पोतानी आज्ञाने ततकाळ पाळवाने इछतो थको तत्पर थयो जे कोइक भक्तजन तथा ते पोतानी आज्ञाने रुडि रिते पाळिने आव्यो जे कोइक भक्तजन तेने जोइने तेनी उपर प्रसन्न थया थका तेना हृदयने विषे पोतानां चर्णाविंद आपे छे. अने क्यारेकतो कोइक भक्तजन उपर प्रसन्न थइने तेने पोतानो प्रसादि पुष्पना हार आपे छे तथा तोरा बाजुबंध आपेछे तथा पोतानां वस्त्र आभुषण आपेछे.अने अतिशे उदार छे स्वभाव जेनो एवा जे श्रीजी महाराज ते पोताने अतिषे प्रियएवुं जे पदार्थ ते भारे मुल्यवान होय तो पण तेनो

देव नो मनमां संकल्प करता थका ततकाळ सदपात्रने देइदे छे पण वार लगाडता नथी ए वो स्वभाव छे, अने क्यारेक तो पोताना हाथ पगनी जे आंगळियु तेने मरडिने कडाका वगाडेछे, अने क्यारेकतो पोताने समीपे बेठा जे भक्तजन तेमनी पासे पोतानो हाथपगना आंगळीयु ने मरडावीने कडाका वगडावेछे, अने क्यारेक तो. कोइक प्राणिने दुखियो देखिने अथवा सांभळीने तत्काळ दयायेजुक्त थका राम राम राम एवि रिये बोलवानो स्वभाव छे, अने वळि क्यारेक तो हरकोई मनुष्यने दुखियो देखिने दयाये करीने पोताना चितमां खेदने पामता थका प्रसन्न थईने ते मनुष्यनुं दुखटळेएवी रिते अन्न वस्त्रादिक पदार्थे करीने उपकार करे छे, अने क्यारेक तो कोईकने कोई मारतुं होय तेने देखिने दयाये करीने तेने न देखि खमता थका तत्काळ सहाय करिने तेनुं निवारण करे छे, अने क्यारेक तो पोतानी आगळ कोइक साधुनुं अथवा कोईक हरिभक्तनुं कोईक घसातुं बोले तेने सांभळीने तेनी उपर पोते कचवाई जाय छे, अने तेनो अनादार करीने ठबको देछे. अने क्यारेक तो पोताना शरिरमां कांई कसर जेवुं होय त्यारे पोताना डाबा हाथनी आंगळीये करीने जमणा हाथनी नाडीने जुवे छे, अने पोते ज्यारे सभामांथी उठे छे, त्यारे जय सच्चिदानंद अथवा जय स्वा-

मीनारायण एम कहीने ने साधुने नमस्कार करीने उठवानो स्वभाव छे, अने ज्यारे पोते पंथ ने मार्गे घोडे चढिने चाले छे त्यारे क्यारेक तो लिलाये करीने घोडानी डोक उपर पोताना एक पगने लांबो नांखीने घोडाने चलावे छे. अने सुवे छे त्यारे प्रथम जागता थका हाथनी जे आंगळियुं ते तिलक करवानी पेठे भाळने विषे उभि फेरवे छे, अने सुवानुं होय त्यारे पोतानी माळाने मागीने जमणा हाथमां लेईने फेरवता थका सुवे छें, अने पोते पोढे छे त्यारे पोतानुं मुखारविंद उघाडुं राखिने पोढवानो स्वभाव छे, अने पोते भरनिंद्रामां सुता होय ने कोईक जराक अडी जाय तो तत्काळ फचकी जागी जाय छे ने कोण छे, एम तेने पुछेछे, आवी रीते श्रीजीमहाराजनी जे स्वभाविक चेष्टा ते पोतानी स्मृतिने अनुसार लखी छे ने बीजी पण केटलीक चेष्टा छे एवा जे श्रीजीमहाराज तेमणे गढडामां रह्या थका पोताना भक्तजनना संशय टाळवाने अर्थे स्वधर्म,आत्मज्ञान,वैराग्य,पोताना स्वरूपनुं ज्ञान ने पोताना माहात्मे सहित भक्ति ए पांच वार्त्ता संबंधी जे जे वचनामृत कह्यां छे, तथा त्यांथी बीजा गाममां जईने जे जे वचनामृत कह्यां छे तेमांथी केटलाक दिवसनां जे वचनामृत ते श्रीजीमहाराजना जे एकांतिक भक्त तेमनी प्रसन्नताने अर्थे पोतानी जे स्मृति ने बुद्धि तेने अनुसारे लखीयेछेये॥

वने नो मनमां संकल्प करता थका ततकाळ सदपात्रने देइदे छे पण वार लगाडता नथी ए वो स्वभाव छे, अने क्यारेक तो पोताना हाप पगनी जे आंगळियु तेने मरडिने कडाका वगा डेछे, अने क्यारेकतो पोताने समीपे बेठा जे भक्तजन तेमनी पासे पोताना हाथपगना आंगळीयु ने मरडावीने कडाका वगडावेछे, अने क्यारेक तो. कोइक प्राणिने दुखियो देखिने अथवा सांभ ळीने तत्काळ दयायेजुक्त थका राम राम राम एवि रिये बोलवानो स्वभाव छे, अने वळि क्यारेक तो हरकोई मनुष्यने दुखियो देखिने दयाये करीने पोताना चितमां खेदने पामता थका प्रसन्न थईने ते मनुष्यनुं दुखटळेएवी रिते अन्न वस्त्रादिक पदार्थे करीने उपकार करे छे, अने क्यारेक तो कोईकने कोई मारतुं होय तेने देखिने दयाये करीने तेने न देखि खमता थका तत्काळ सहाय करिने तेनुं निवारण करे छे, अने क्यारेक तो पोतानी आगळ कोइक साधुनुं अथवा कोईक हरिभक्तनुं कोईक घसातुं बोले तेने सांभळीने तेनी उपर पोते कचवाई जाय छे, अने तेनो अनादार करीने ठबको देछे. अने क्यारेक तो पोताना शरिरमां कांई कसर जेवुं होय त्यारे पोताना डाबा हाथनी आंगळीये करीने जमणा हाथनी नाडीने जुवे छे, अने पोते ज्यारे सभामांथी उठे छे, त्यारे जय सच्चिदानंद अथवा जय स्वा-

मीनारायण एम कहीने ने साधुने नमस्कार करीने उठवानो स्वभाव छे, अने ज्यारे पोते पथ ने मार्गे घोडे चढिने चाले छे त्यारे क्यारेक तो लिलाये करीने घोडानी डोक उपर पोताना एक पगने लांबो नांखीने घोडाने चलावे छे. अने सुवे छे त्यारे प्रथम जागता थका हाथनी जे आंगळियुं ते तिलक करवानी पेठे भाळने विषे उभि फेरवे छे, अने सुवानुं होय त्यारे पोतानी माळाने मागीने जमणा हाथमां लेईने फेरवता थका सुवे छे, अने पोते पोढे छे त्यारे पोतानुं मुखारविंद उघाडुं राखिने पोढवानो स्वभाव छे, अने पोते भरनिंद्रामां सुता होय ने कोईक जराक अडी जाय तो तत्काळ झबकी जागी जाय छे ने कोण छे, एम तेने पुछेछे, आवी रीते श्रीजीमहाराजनी जे स्वभाविक चेष्टा ते पोतानी स्मृतिने अनुसार लखी छे ने बीजी पण केटलीक चेष्टा छे एवा जे श्रीजीमहाराज तेमणे गढडामां रह्या थका पोताना भक्तजनना संशय टाळवाने अर्थे स्वधर्म,आत्मज्ञान,वैराग्य,पोताना स्वरूपनुं ज्ञान ने पोताना माहात्मे सहित भक्ति ए पांच वार्त्ता संबंधी जे जे वचनामृत कह्यां छे, तथा त्यांथी बीजा गाममां जईने जे जे वचनामृत कह्यां छे तेमांथी केटलाक दिवसनां जे वचनामृत ते श्रीजीमहाराजना जे एकांतिक भक्त तेमनी प्रसन्नताने अर्थे पोतानी जे स्मृति ने बुद्धि तेने अनुसारे लखीये छैये॥

देव.नो मनमां संकल्प करता थका ततकाळ सद्पात्रने दइदे छे पण वार लगाडता नथी ए वो स्वभाव छे, अने क्यारेक तो पोताना हाथ पगनां जे आंगळियु तेने मरडिने कडाका वगाडेछे, अने क्यारेकतो पोताने समीपे बेठा जे भक्तजन तेमनी पासे पोतानां हाथपगना आंगळीयुं ने मरडावीने कडाका वगडावेछे, अने क्यारेक तो कोइक प्राणिने दुखियो देखिने अथवा सांभळीने तत्काळ दयायेजुक्त थका राम राम राम एवि रिते बोलवानो स्वभाव छे, अने वळि क्यारेक तो हरकोई मनुष्यने दुखियो देखिने दयाये करीने पोताना चितमां खेदने पामता थका प्रसन्न थईने ते मनुष्यनुं दुखटळेएवी रिते अन्न वस्त्रादिक पदार्थे करीने उपकार करे छे, अने क्यारेक तो कोईकने कोई मारतुं होय तेने देखिने दयाये करीने तेने न देखि खमता थका तत्काळ सहाय करिने तेनुं निवारण करे छे, अने क्यारेक तो पोतानी आग-

टी प्राप्ति पण नथी, त्यार पछे हरिभक्त सेठ गोवर्धनभाइये श्रीजीमहाराज प्रत्ये प्रश्न पुछयुं जे जेने भगवाननी माया कहे छे तेनुं रूप शुं छे? पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे भगवाननो भक्त होय तेने भगवाननी मुर्त्तीनुं ध्यान करतां जे पदार्थ आडुं आवीने आवरण करे तेने माया कहिये. पछे मुक्तानंद स्वामिये प्रश्न पुछयुं जे भगवाननो भक्त ज्यारे पंचभुतना देहने मुकीने भगवानना धाममां जाय छे त्यारे ते केवा देहने पामे छे? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे धर्म कुळने आश्रीत एवो जे भगवाननो भक्त छे, ते भगवाननी इच्छाये करीने ब्रह्ममय देहने पामे छे.अने ज्यारे देहने मुकीने भगवानना धाम प्रत्ये जायछे त्यारे कोइक तो गरुड उपर बेसीने जाय छे, ने कोईकतो रथ उपर बसीने जाय छे, ने कोईकतो विमान उपर बेसीने जाय छे एवी रित्ये भगवानना भक्तभगवानना धाममां जाय छे ते योग समाधिवाळा छे ते प्रत्यक्ष देखेछे- पछे हरिभक्तठकर हरजिये श्रीजीमहाराजने पुछयुं जे केटलाक तो घणा दिवसथी सत्संग करेछेतो पण तेने जेवी पोताना देहने देहना संबंधीने विषे गाढ प्रिती छे तेवी सत्संगमां गाढ प्रिती नथी थाती तेनुं शुं कारण छे? पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे एने भगवाननुं महात्म संपूर्ण जाण्यामां आव्युं नथी अने जे साधुने संगे करीने भगवाननुं महात्म परिपूर्ण जाण्यामां

संवत १८५६ ना मागशर शुदि ४ चतुर्थिने दिवसे श्रीजीमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां साधुनी जायगाने विषे रात्रीने समे पधारया हता ने सर्वे स्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती. पछे श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयुं जे सर्वे साधनमा कियुं साधन कठण छे? त्यारे सर्वे ब्रह्मचारी,साधु,ग्रहस्थ तेमणे पोतानी समजण प्रमाणे उत्तर करयो पण थयो नही. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ल्यो अमे उत्तर करिये जे भगवानना स्वरूपमां मननी अखंड व्रत्ति राखवी तेथी कोई साधन कठण नथी.अने जे मनुष्यना मननी व्रत्तिभगवानना स्वरूपमां अखंड रहेछे तेने तेथी बिजी अधिक प्राप्ति शास्त्रमां कही नथी. कांजे भगवाननी मुर्त्ति छे ते तो चिंतामणी तुल्य छे जेम चिंतामणी कोईक पुरुषना हाथमां होय ते पुरुष जे जे पदार्थने चिंतवे ते ते प्राप्त थाय छे.तेम भगवाननी मूर्त्तिने विषे जेना मननी अखंड व्रत्तिरहे छे ते तो जिव, इश्वर,माया ने ब्रह्म एमना स्वरुपने जो जोवाने इच्छे तो तत्काल देखेछे तथा वैकुंठ, गोलोक, ब्रह्म मोहोल ए आदिक जे जे भगवाननां धाम छे, तेने पण देखे छे. माटे भगवानना स्वरूपमा अखंड व्रत्ति राखवी तेथी कोइ कठण साधन पण नथी ने तेथी कोइ मो-

टी प्राप्ति पण नथी, त्यार पछे हरिभक्त सेठ गोवर्धनभाइये श्रीजीमहाराज प्रत्ये प्रश्न पुछयुं जे जेने भगवाननी माया कहे छे तेनुं रूप शुं छे? पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे भगवाननो भक्त होय तेने भगवाननी मुर्त्तीनुं ध्यान करतां जे पदार्थ आडुं आवीने आवरण करे तेने माया कहिये. पछे मुक्तानंद स्वामिये प्रश्न पुछयुं जे भगवाननो भक्त ज्यारे पंचभुतना देहने मुकीने भगवानना धाममां जाय छे त्यारे ते केवा देहने पामे छे? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे धर्म कुळने आश्रीत एवो जे भगवाननो भक्त छे, ते भगवाननी इच्छाये करीने ब्रह्ममय देहने पामे छे.अने ज्यारे देहने मुकीने भगवानना धाम प्रत्ये जायछे त्यारे कोइक तो गरुड उपर बेसीने जाय छे, ने कोइकतो रथ उपर बसीने जाय छे, ने कोइकतो विमान उपर बेसीने जाय छे एवी रित्ये भगवानना भक्त भगवानना धाममां जाय छे ते योग समाधिवाळा छे ते प्रत्यक्ष देखेछे- पछे हरिभक्त ठकर हरजिये श्रीजीमहाराजने पुछयुं जे कोटलाक तो घणा दिवसथी सत्संग करेछे तो पण तेने जेवी पोताना देहने देहना संबंधीने विषे गाढ प्रिती छे तेवी सत्संगमां गाढ प्रिती नथी थाती तेनुं शुं कारण छे? पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे एने भगवाननुं महात्म संपुर्ण जाण्यामां आव्युं नथी अने जे साधुने संगे करीने भगवाननुं महात्म परिपूर्ण जाण्यामां

आवेछे ते साधु ज्यारे पोताना स्वभाव उपर वात करेछे,त्यारे ते स्वभावने मुकी शकतो नथी, ने ते वातना करनारा जे साधु तेनो अवगुण ले छे ते पापे करिने सत्संगमां गाढ प्रिती थाती नथी. कांजे अन्य स्थलने विपे जे पाप कर्या होय ते संतने संगे करीने जाय अने संतने विपे जेपाप करेछे ते पाप तो एक संतना अनुग्रह विना बीजा कोइ साधने करीने टळतां नथी. ते शास्त्रमां कह्युं छे जे,अन्यक्षेत्रे कृतंपाप तिर्थक्षेत्रे विनश्यति॥तीर्थक्षेत्रे कृतंपापं वज्रलेपो भविष्यति॥१॥तेमाटे संतनो अवगुण जो न ले तो एने सत्संगमां दृढ प्रिती थाय॥इतिवचनामृतं॥२॥

संवत १८७६ना मागशर शुदि ५ पंचमीने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मंधे दादा पाचरना दरबारमां रात्रीने समे विराजमान हता अने सर्वे स्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे मयाराम भटे श्रीजीमहाराज प्रत्ये प्रश्न पुछ्यो जे हे महाराज, उत्तम, मध्यम ने कनिष्ट ए त्रण प्रकारनो जे वैराग्य तेनांशांलक्षण छे ते कहो? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे उत्तम वैराग्य जेने होय ते परमेश्वरनी आज्ञाये करीने अथवा पोताना प्रारब्ध कर्म वशे करीने व्यवहारमां रहे पण ते व्यवहारमां जनक राजानि पेठे लेपाय नहि. अने शब्द, स्पर्श, रूप, र-

स ने गंध ए पंच प्रकारना जे उत्तम विपय ते पोताना प्रारब्ध अनुसारे प्राप्त थाय तेने भोगवे पण प्रितिये रहित उदास थको भोगवे अने ते विपय तेने लोपी शके नहि ने तेनो त्याग मोळो न पडे अने ते विपयने विपे निरंतर दोपने देखतो रहे ने विपयने शत्रु जेवा जाणे. अने संत सत्‌शास्त्र ने भगवाननी सेवा तेनो निरंतर संग राखे, अने देशकाळ संग आदिक जो कठण आवी पडे तो पण एनी जे एवी समजण ते मोळी पडे नहि तेने उत्तम वैराग्य वाळो कहीए. अने जेने मध्यम वैराग्य होय ते पण उत्तम एवा जे पंच प्रकारना विपय तेने भोगवे पण तेमां आशक्त न थाय ने जो देशकाळ संग कठण प्राप्त थाय ने विपयने विपे बंधाइ जाय ने वैराग्य मंद पडी जाय तेने मध्यम वैराग्य वाळो कहिये, अने जे कनिष्ट वैराग्य वाळो होय तेने सामान्य ने दोषे युक्त एवा पंच विपयो जो प्राप्त थाय ने तेने भोगवे तो तेमां न बंधाय अने जो सारा पंच विपय प्राप्त थाय ने तेने भोगवे तो तेमां बंधाइ जाय तेने मंद वैराग्य वाळो कहिये. इति वचनामृतं॥२॥

संवत १८७६ ना मागशर शुदि ६ छठने दिवसे श्रीजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां रात्रीने समे विराजमान हता अने सर्वे स्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती

पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेने भगवाननी मुर्ति अंतरमां अखंड देखाती होय तेने पण भ-
गवाने जेजे अवतारे करीने जे जे स्थानकने विषे जे जे लिला करी होय ते संभारी राखवी. ने
ब्रह्मचारि, साधु तथा सत्संगी तेने साथे हेत राखवुं ने ए सर्वेने संभारी राखवा ते आ सारु
जे कदापि देह मुक्या समे भगवानानि मुर्त्ति भुलि जवाय तो पण भगवाने जे स्थानकने विषे
लिला करि होय ते जो सांभरि आवे अथवा सत्संगी सांभरी आवे अथवा ब्रह्मचारी ने सा-
धु सांभरी आवे तो तेने जोगे करीने भगवाननी मुर्ति पण सांभरी आवे ने ते जीव मोटी पदवी
ने पामे ने तेनुं घणुं रुडुं थाय ते माटे अमे मोटा मोटा विष्णु याग करिये छैये तथा जन्माष्ट-
मीने एकादशी आदिक व्रतना वरसो वरस उछव करियेछैये ने तेमां ब्रह्मचारी साधु स-
त्संगीने भेळा करीये छैये. अने जो कोइक पापी जीव होयने तेने पण जो एमनी अंत काळे
स्मृति थइ आवे तो भगवानना धामनी प्राप्ति थाय. इति वचनामृतं. ३. संवत १८७६-
ना मागशर सुदी ७ सप्तमीने दिवस श्रीजिमहाराज श्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरबा-
रमां विराजमान हता अने सर्वे स्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आग-
ळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजि माहाराज बो-

ल्या जे भगवानना भक्तने परस्पर इर्षा न करवी, त्यारे आनंदानंद स्वामी बोल्या जे हे महाराज इर्षा तो रहेछे. त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे इर्षा करवी तो नारदजीना जेवी करवी, जेम एक समयने विषे नारदजीने तुंबरु ए बे वैकुंठने विषे लक्ष्मी नारणनां दर्शन करवा गया ते लक्ष्मीनारण आगळ तुंबरुए गांन कर्यु तेणे करीने लक्ष्मीजी तथा नारण ए बेय प्रसन्न थैने तुंबरुने पोतानां वस्त्र आभुषण आप्यां, त्यारे नारदजीने तुंबरुं उपर इर्षा आवि जे हुं तुंबरुना जेवी गांनविद्या शिखुं ने भगवानने प्रसन्न करुं पछे नारदजी गांन विद्या शिखता हवा ने भगवान आगळ गाता हवा. त्यारे भगवाने कह्युं जे तमने तुंबरुना जेवुं गातां नथी आवडतुं पछे वळी शिव उपर तप करीने शिव थकी वर पामीने गाम विद्या शिखीने भगवान आगळ करता हवा तोपण भगवान एनी गान विद्या उपर प्रसन्न न थया. एवी रीते सात मन्वंतर सुधी गान विद्या शीख्या ने भगवानआगळ गाया तो पण भगवान प्रसन्न न थया पछे तुंबरुं पासे गान विद्या शिख्या ने श्रीकृश्नभगवान आगळ द्वारीकामां गावता हवा: त्यारे श्री कृष्ण भगवान प्रसन्न थया ने पोतानां वस्त्र अलंकार नारदजीने आप्यां, त्यारे नारदजीये तुंबरुं साथे इर्षा मेलि. माटे इर्षा करवी तो एवि करवी जे जेनि उपर इर्षा होय तेना जेवा गुणने ग्रहण

करवा ने पोताना अवगुणने त्याग करवा ने तेवुं न थवाय ने जे इर्षाये करिने भगवानना भक्तनो द्रोह थाय तेवि इर्षानो तो भगवानना भक्तने सर्व प्रकारे त्याग करवो ॥इति वचनामृतम् ॥ ४॥

संवत १८७६ ना मागसर शुदि ८ अष्टमीने दिवस श्रीजीमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता अने सर्वे स्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे राधिकाये सहीत एवा जे श्रीकृष्ण भगवान तेनुं ध्यान करवुं, अने ते ध्यान करते मुर्त्ति हृदाने विषे न देखाय तोपण ध्यान करवुं पण कायर थइने ते ध्यानने मुकी देवुं नहि एवी रीतना आग्रहवाळा छे तेना उपर भगवाननी मोटी कृपा थायछे ने एनी भक्तिये करिने भगवान एने वश थइ जायछे, ॥इति वचनामृतम् ॥५॥

संवत १८७६ना मागशर शुदि ९ नवमीने दिवस श्रीजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां बिराजमान हता अने सर्वे स्वेत वस्त्र धारण करयां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा मराइने बेठी हती, पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे आ सत्संगमां जे विवेकिछे ते तो दिवसे दिवसे पोताने विषे अवगुणने,

देखेछे ने भगवानने भगवानना भक्तने विषे गुणने देखेछे ने भगवानने साधु पोताना हितने अर्थें कठण वचन कहेछे तेने पोताना हितकारी मानेछे ने दुख नथी लगाडतो ते दिवसे दिवसे सत्संगने विषे मोटपने पामेछे अने जे अविवेकी छे, ते तो जेम जेम सत्संग करेछे ने सत्संगनी वात सांभळेछे तेम तेम पोताने विषे गुण परठे छे, अने भगवानने संत एनो दोष देखाडीने एनी आगळ वात करेछे ते वातने माने करीने अवळी लेछे ने वात करनारानो अवगुण लेछे ते तो दिवसे दिवसे घटतो जायछे ने सत्संगमां प्रतिष्टा हिन थइ जायछे. माटे पोताने विषे जे गुणनुं मान तेनो त्याग करिने शुरविर थइने ने भगवान ने भगवानना संतने विषे विश्वास राखे तो एनो अविवेक टळी जायछे ने सत्संगमां मोटपने पामेछे. ॥इति वचनामृतं॥ ६ ॥

संवत १८७६ ना मागशर शुदि १० दशमीने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मधे दादा पाचरना दरबारमां विराजमान हता अने सर्वे स्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे शास्त्रमां ज्यां ज्यां अध्यात्मवार्त्ता आवेछे ते कोइने समजाति नथी ने भमी जवायछे. माटे ए अध्यात्मवार्ता जेमछे तेम यथार्थ पणे अमे कहिये छइये ते सर्वे सांभळो. जे स्थुल

सूक्ष्मने-कारण ए त्रण देहे जुक्त जे जीवने कहेवो ते ए जविनुं अन्वयपणुंछे ने ए त्रण देहथी प्रथक पणे सत्ता मात्र जे कहेवो ते जीवनुं व्यतिरेकपणुंछे तथा विराट सुत्रात्माने अव्याकृत ए त्रण शरिरे सहित जे इश्वरने कहेवा तेइश्वरनुं अन्वयपणुंछे. अने त्रण्य शरीरथी प्रथकने सत्ता मात्र पणे कहेवा ते इश्वरनुं व्यतिरेक पणुं छे. तथा माया ने मायाना कार्य जे अनंत कोटीब्रह्मांड तेने विषे व्यापकपणे जे अक्षर ब्रह्मने कहेवा ते एनुं अन्वयपणुंछे.अने ए सर्वथी व्यतिरेक सच्चिदानंदपणे जे अक्षर ब्रह्मने कहेवा ते एनुं व्यतिरेकपणुंछे, तथा अक्षर ब्रह्मने इश्वर ने जिव ने माया ने मायानां कार्य जे ब्रह्मांड एमने विषे जे श्री कृष्ण भगवानने अंतर्यामीपणे कहेवा ने नियंतापणे कहेवा ते ए भगवाननुं अन्वयपणुंछे अने ए सर्वथी प्रथकपणे करीने पोताना गोलोक धामने विषे जे ब्रह्म ज्योति तेने विषे रह्याछे एम जे कहेवुं ते ए भगवाननुं व्यतिरेकपणुंछे, अने ए पुरुषोतम भगवान ने अक्षर ब्रह्म ने माया ने इश्वर ने जिव ए जे पांच भेद ते अनादिछे, इति वचनामृतं ॥७॥

संवत १८७६ ना मागशर सुदी ११ एकादशीने दीवस श्रीजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता अने सर्व स्वेत वस्त्र धारण करयां हतां ने

पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे इंद्रियोनी जे क्रीयाछे तेने जो श्रीकृष्ण भगवानने तेना भक्तनी सेवाने विषे राखे तो अंतःकर्ण शुद्ध थायछे ने अनंत काळनां जे पाप जीवने वळग्यांछे तेनो नाश थई जायछे.अने इंद्रियोनीवृत्तियोने स्त्री आदिकना विषयमां प्रवर्त्तावे छे तो एनु अंतःकर्ण भ्रष्ट थई जायछे अने कल्याणना मार्ग थकि पडि जायछे, माटे शास्त्रमां जे रीते विषय भोगव्यानुं कह्युंछे तेवी रीते नियममां रहीने विषय भोगववा, पण शास्त्रनी मरजादाने उलंगन करीने भोगववा नहि. अने साधुंनो संग राखवोने कुसंगनो त्याग करवो अने ज्यारे ए कुसंगनो त्याग करीनेसाधुनो संग करेछे त्यारे एने देहने विषे जे अहंबुद्धिछे ते निवृत्ति पामेछे अने देहना संबंधिने विषे जे ममत्व बुद्धिछे ते नीवृति पामेछे ने भगवानने विषे असाधारण प्रिति थायछे ने ते भगवान विना अन्यने विषे वैराग्य थायछे इति वचनामृतं.॥८॥

संवत १८७६ ना मागशर सुदी १२ द्वादशिने दीवस श्रीजी महाराजश्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता अने सर्वे स्वेत वस्त्र धारण कर्यां हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, पछे श्री-

जी महाराज बोल्या जे श्री कृष्ण भगवाननो प्रत्यक्षपणे निश्चे कर्यो होय ने तेनां दर्शन करतो होय तो पण जे पोताने पूर्ण काम न माने ने अंतःकर्णमां न्युनता वर्ते जे गोलोक वैकुंठादिक धामने विषे जे आने आ भगवाननुं तेजोमय रूपछे ते मुने ज्यां सुधी देखाणुं नथी त्यां सुधी मारुं परिपूर्ण कल्याण थयुं नथी. एवुं अज्ञान होय तेना मुखथी भगवाननी वात पण न सांभळवी. अने जे प्रत्यक्ष भगवानने विषे द्रढ नीष्टा राखेछे ने तेने दर्शनेज पोताने परिपूर्ण मानेछे ने बिजु कांइ नथी इछतो तेने तो भगवान पोते बलातकारे पोताना धामने विषे जे पोतानां ऐश्वर्यछे ने पोतानी मुर्त्तियोछे तेने देखाडेछे. माटे जेने भगवानने विषे अनन्न्य निष्टा होय तेने प्रत्यक्ष भगवान विना बीजुं कांइ इछवुं नही इति वचनामृतम्॥९॥

संवत १८७६ ना मागशर सुदी १३ तेरशने दिवस श्रीजि महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता अने सर्व स्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगल परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे अमे वेंकटाद्रिथी सेतुबंधरामेश्वर जाता हता. त्यां एक सेवकराम नामे साधुहतो ते श्रीमद्भागवतादिक पुराणने भण्यो हतो. ते मार्गमा चालतां मांदो

पड्यो तेनी पासे रूपैया हजारनी सोना मोरु हती, पण चाकरीनो करनारो कोई नहीं माटे रोवा लागो पछे तेने अमे कह्युं जे कांई चिंता राखशोमां तमारी चाकरी अमे करशुं. पछे गामने बाहेर एक केळांनी फुलवाडी हती तेमां एक वडनो वृक्ष हतो ते वडना वृक्षने विषे हजार भुत रहेतां पण ते साधुतो चाली शके एवो रह्यो नहिने अतिशे मांदो थयो.ते उपर अमने अतिशे दया आवि पछे ते ठेकाणे अमे ते साधुने केळनांपत्र लाविने हाथ एक उंची पथारी करि आपी अने ते साधुने लोहीखंड पेट बेसणुं हतुं तेने अमे धोता ने चाकरी करता ने ते साधु पोताने जेटलुं जोइये तेटलुं अमारे पासे खांड,शाकर,घी,अन्न ते पोताना रूपैया आपीने मगावतो ते अमो लावीने रांधी खवरावता. ने अमो वस्तीमां जइने जमी आवता ने कोइक दिवस तो अमने वस्तीमां अन्न मळतुं नहीं त्यारे अमारे उपवास थातो, तो पण कोइ दिवस ते साधुए अमने एम कह्युं नहीं जे अम पास द्रव्य छे ते आपणे बेने काजे रसोइ करो ने तमे पण अम भेळा जमो,पछे एमे सेवा करते थके ते साधुं बे मासे कांइक साजो थयो पछे सेतुंबंधरामेश्वरने मार्गे चाल्यो त्यारे तेनो भार मण एक हतो ते अमारे पासे उपाड्यो ने पोते तो एक माळा लइने चालतो ने देहे पण साजो ने एक शेर घी जमीने

पचावे एवो समर्थ थयो तो पण भार अमारी पासे उपडावे ने पोते अमथो चाले ने अमारी प्रकृति तो एवी हती जे भार नाम तो एक रूमाल पण राखता नही. माटे, तेने साधु जाणीने अमे एनो मण एकनो भार उपाडी चालता. एवी रीते ते साधुनी अमे चाकरीकरीने साजो कर्यो पण ते साधुए अमने एक पैशा भार अन्न आप्युं नही. पछे अमे तेने कृतघ्नि जाणीने तेना संगनो त्याग कर्यो. एवी रीते जे मनुष्य कर्या कृतने नजाणे तेने कृतघ्नि जाणवो, अने कोइक मनुष्ये कांइक पाप कर्युं ने तेणे ते पापनुं यथा शास्त्र प्रायश्चित कर्युं ने वळी तेने ते पापे युक्त जे कहे तेने पण कृतघ्नि जेवो पापी जाणवो ॥इतिवचनामृतं॥२०॥

संवत १८७६ना मागशर शुदि १४ चौदशने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता अने सर्वे स्वेत वस्त्र धारण कर्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, पछे ब्रह्मानंद स्वामीए पुछयुं जे हे महाराज वासनानुं शुं रुप छे, त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे पूर्वे जे विषय भोगव्या होय ने दीठा होय ने सांभळ्या होय तेनी जे अंतःकरणने विषे इच्छा वर्ते तेने वासना कहीये, अने वळी जे विषय भोगव्यामां न आव्या होय तेनी जे अंतःकरणने विषे इच्छा

वर्तें तेने पण वासना कहीए.त्यारे मुक्तानंद स्वामीए पुछ्युं जे हे महाराज भगवानना एकांतिक भक्त केने कहीये, त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेने भगवान विना बीजी कोइ वासना न होय ने पोताने ब्रह्मरूप मानीने भगवाननी भक्ति करतो होय ते एकांतिक भक्त कहेवाय॥ इतिवचनामृतं॥ १२

संवत १८७६ ना मागशर शुदि १५ पुन्यमने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां बिराजमान हता अने सर्वे स्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे जगतनां कारण एवां जे पुरुष प्रकाति ने काळ ने महत्तत्वादिक चोविश तत्व एमना स्वरूपने ज्यारे ए जीव जाणे छे, त्यारे पोताने विषे रही जे अविद्या ने तेनां कार्य एवां जे चोविश तत्व तेना बंधन थकी मुकाय छे. त्यारे मुक्तानंद स्वामीए पुछ्युं जे हे महाराज एमनुं स्वरूप केम जाण्यामां आवे? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे एमनां स्वरूप तो, एमनां लक्षणने जाणवे करीने जणाय छे ते लक्षण कहीये छैये. जे प्रकातिना नियंता, ने प्रकाति थकी विजाती, ने अखंड, ने अनादि, ने अनंत, ने सत्य, ने स्वयंज्योती, ने सर्वज्ञ, ने दि-

ल्यविग्रह, ने समग्र आकार मात्रनी प्रवृत्तिना कारण, ने क्षेत्रज्ञ, एवा पुरुष छे. अने जे प्रकृति छे ते त्रिगुणात्मक छे, ने जड चिदात्मक छे, ने नित्य छे, ने निर्विशेष छे, ने महदादिक समग्र तत्वने जीव मात्र तेनुं क्षेत्र छे, ने भगवाननी शक्ति छे, अने गुणसाम्य, ने निर्विशेष,एवी जे माया तेनो जे क्षोभ करे छे तेने काळ कहीये. अने हवे महत्तत्वादिक तत्व तेनां लक्षण कहुं ते सांभळो. जे चित्तने ने महतत्वने अभेदपणे जाणवुं अने जे महत्तत्वने विषे सुक्ष्म रूपे करीने समग्र जगत रह्युं छे ने पोते नीर्विकारछे ने प्रकाशमानछे ने स्वच्छ छे ने शुद्ध सत्वमयछे ने शांतछे, अने हवे अहंकारनुं लक्षण कहीए छैये. जे अहंकार जे ते त्रिगुणात्मक छे अने भुत मात्राने इंद्रियोने अंतःकरण ने देवता ने प्राण ए सर्वनी उत्पातिनुं कारणछे ने एने विशे शांतपणुं छे ने घोरपणुंछे ने विमुंढपणुंछे. अने हवे मननुं लक्षण कहिये छैये. जे मन जे ते स्त्री आदिक पदार्थ जे समग्र कामना तेनी उत्पात्तिनुं क्षेत्र छे ने संकल्प विकल्प रूपछे अने समग्र इंद्रियोनुं नियंताछे. हवे बुद्धिने विषे पदार्थ मात्रनुं ज्ञान रह्युंछे अने समग्र इंद्रियोने विषे जे विशेष ज्ञानछे ते बुद्धि वर्तेछे अने जे बुद्धिने विषे संशय निश्चय निंद्रा ने समृति ए रह्यांछे अने श्रोत्रत्वक, चक्षु,रसना नेघ्राण;वाक पाणी,पाद,वायुने उप-

स्य ए ज दश इंद्रियो तेमनुं लक्षण तो एछे जे पोत पोताना विषयमां प्रवर्त्तवुं,हवे पंच मात्रानां लक्षण कहिये छैये. तेमां शब्दनुं लक्षण तो ए छे जे शब्द जे ते अर्थ मात्रनो आश्रय छे ने व्यवहार मात्रनो कारण छे अने बोलनारानी जे जातीने स्वरूप तेनो जणावनारोछे ने आकाशने विषे रहेवा पणुंछे ने आकाशनी मात्राछे, अने श्रोत्र इंद्रिये करीने ग्रहण करवामां आवेछे ए शब्दनुं लक्षणछे. हवे स्पर्शनुं लक्षण कहिये छये जे स्पर्श छे ते वायुनी तन मात्रा छे अने कोमळपणुं कठणपणुं शितलपणुं उष्णपणुं ने त्वचाये करीने ग्रहण करवापणुं ए स्पर्शनुं स्पर्श पणुंछे.हवे रुपनुं लक्षण कहिये छैये. जे पदार्थ मात्रना आकारने जणावी देवापणुं ने ते पदार्थने विषे गौणपणे रहेवापणुं अने ते पदार्थनी रचनाए करीने परिणाम पणुं अने तेज तत्वनु तन्मात्रपणुंने चक्षु इंद्रिये करिने ग्रहण करवापणुं ए रूपनुं रूपपणुंछे. हवे रसनुं लक्षण कहिये छैये.जेम धुरपणुं,तिखापणु,कसायलापणुं,कडवापणुं, खाटापणुं, खारापणुं ने जळनुं तन्मात्रापणु ने रसना इंद्रिये करीने ग्रहण करवापणुं ए रसनुं रसपणुंछे. हवे गंधनुं लक्षण कहिये छैये. जे सुगंधपणुं दुर्गंधपणुं ने पृथ्वीनुं तन्मात्रापणुं ने घ्राण इंद्रिये करिने ग्रहण करवापणुं ए गंधनुं गंध पणुं छे. हवे पृथ्वीनुं लक्षण कहिये.छैये जे सर्वे जीव मात्रानुं धारवा

पणुं ने लोक रूपे करीने स्थानकपणुं ने आकाशादिक जे चार भूत तेनुं विभाग करवापणुं ने समग्र भूत प्राणी मात्रना शरिरनुं प्रगट करवापणुं पृथ्वीनुं लक्षणछे, हवे जलनुं लक्षण कहिये छैये,जे प्रथीव्यादिक द्रव्यनुं पिंडी करण करवापणुं नेपदार्थने कोमळकरवापणु नेभीनुं करवापणुं नेत्रप्ति करवापणुं ने प्राणी मात्रने जीवाडवापणुं ने त्रषानी निवृत्ति पमाडवापणु ने तापने टाळवा पणुं ने बहु पणुं ए जलनुं लक्षण छे. हवे तेजनुं लक्षण कहिये छैये. जे प्रकाशपणुंने अनादिकने पचावि नांखवापणुं ने रसने ग्रहण करवापणु ने काष्टनुं जे हुतद्रव्यादिकनुं ग्रहण करवा पणुं ने टाढयने हरवापणुं ने शोषण करवापणु ने क्षुधाने तृषा ए तेजनुं लक्षण छे. हवे वायुनुं लक्षण कहिये छैये,जे वृक्षादिकने कंपाववापणुं ने तृणादिकने भेळा करवापणु ने शब्द, स्पर्श रूप, रस ने गंध ए जे पंच विषय तेने श्रोतादिक पंच इंद्रियो प्रत्ये पमाडवापणुं ने सर्वे इंद्रियोनुं आत्मापणुं ए वायुनुं लक्षण छे. हवे आकाशनुं लक्षण कहिये छैये जे समग्र जिव मात्रने अवकाश देवापणुं ने भूत प्राणी मात्रनो जे देहने मांहिलो व्यवहार ने देहने बाहेरनो व्यवहार तेनु कारणपणुं ने प्राण,इंद्रियो अंतःकरण ने जीव ए सर्वेनुं स्थानकपणुं ए आकाशनुं लक्षण छे.एवी रीते चोवीश तत्व, प्रकृतिरूप ने काळ एमनां जो लक्षण जाणे तो ए जीव

अज्ञान थकी मुकाय छे.अने ए जे सर्वे तेनी उत्पत्तिने जाणवी ते उत्पत्ति कहिये छैये जे पोता-
ना धामने विषे रह्या एवा जे श्रीकृष्ण भगवान ते अक्षर पुरुष रूपे करीने मायाने विषे गर्भने
धरता हवा. त्यारे ते माया थकी अनंत कोटि जे प्रधानने पुरुष ते थातां हवां, ते प्रधान पुरु-
ष केवा छे तो अनंत कोटि ब्रह्मांडनी उत्पत्तिनुं कारण छे. ते मध्ये एक ब्रह्मांडनी उत्पत्तिनुं
कारण जे प्रधान पुरुष तेने कहिये छैये, जे प्रथम पुरुषोत्तम एवा जे श्रीकृष्णभगवान ते पुरुष
रूपे करीने प्रधानने विषे गर्भने धरता हवा. पछे ते प्रधान थकी महत्त्व उत्पन्न थातुं हवुं, ने
महत्त्व थकि त्रण प्रकारनो अहंकार उत्पन्नथातो हवो, तेमां सात्त्विक अहंकार थकी मनने
इंद्रिना देवता उत्पन्न थाता हवा,अने राजस अहंकारथकी दश इंद्रियो बुद्धिने प्राण ए उत्प-
न्न थातां हवां अने तामस अहंकार थकी पंचभुतने पंचतन्मात्रा ए उपजतां हवां. एवी रीते ए
समग्र तत्त्व उपज्यां.पछे ते परमेश्वरनी इच्छाये प्रेर्यां थकां पोत पोताने अंशे करीने इश्वरने
जीवना देह ते विराट सूत्रात्मा ने आव्याकृतने जीवना देह ते स्थुलसुक्ष्मने कारण अने विराट
नामे जे इश्वरनी देह तेने द्विपरार्धकालपर्यंत आयुपछे.अने ते विराट पुरुषना एकदिवसने विषे
चौदमन्वंतर थाय छे अने जेवडो एनो दिवस छे तेवडीज रात्रीछे.अने ज्यां सुधी एनो दि-

त्स होय त्यां सुधी त्रिलोकिनी स्थिती रहेछे अने ज्यारे एनी रात्री पडेछे त्यारे त्रिलोकिनो नाश थायछे तेने निमित प्रलय कहिये. अने ज्यारे ते विराट पुरुषनो द्विपरार्द्ध काळ पुरो थाय छे त्यारे ए विराट देहनो सत्यादिक लोक सहित नाश थाय छे अने महदादिक जे चोविस तत्वने प्रधान प्रकृतिने पुरुष ए सर्वे महामायाने विषे लय पामछे तेने प्राकृत प्रलय कहिये. अने ए महा माया ते अक्षर ब्रह्मना प्रकाशने विषे लय पामेछे जेम दिवसने विषे रात्री लय पामेछे तेम लय पामेछे तेने आत्यंतिक प्रलय कहिये. अने देव दैत्यने मनुष्यादिकना जे देह तेनो जे क्षणाक्षण प्रत्ये नाश तेने नित्य प्रलय कहीये. एवी रीते जे विश्वनी उत्पत्ति स्थितिने प्रलय तेने जो जाणे तो जीवने संसारने विषे वैराग्य थाय ने भगवानने भक्ति थाय छे. अने ज्यारे ए सर्व ब्रह्मांडनो प्रलय थायछे त्यारे सर्वे जीव छे. ते तो मायाने विषे रेहे छे ने जे भगवानना भक्त छे ते तो भगवाननां धाममां जाय छे. त्यारे वळी मुक्तानंद स्वामीये पुछयुं जे ते भगवाननुं धाम केवुं छे? त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे ते भगवाननुं धाम तो सनातन छे नित्य छे अप्राकृत छे सच्चिदानंद छे अनंत छे ने अखंड छे. तेने द्रष्टांते करीने कहीये छैये. जेम पर्वतने वृक्षादिक सहितने मनु-

[illegible]

आकाशने विषे समग्र तारा ते सर्वे सूर्य होय पछे तेने तेजे करीने ते समग्र आकाशे सहित कांचनी पृथ्वी जेवी शोभे तेवी शोभाये युक्त भगवाननुं धाम छे एवुं जे भगवान धाम तेने भगवानना भक्त छे ते समाधिने विषे देखे छे ने देह मुक्या पछे ए तेजोमय जे भगवाननुं धाम तेने पामे छे ॥ इति वचनामृत ॥ १२

संवत १८७६ना मागशर वदी १ पडवाने दिवस रात्रीने समे श्रीगढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां श्रीवासुदेव नारायणना मंदरने समीपे लिंबडाना वृक्षनी हेठे ओटा उपर ढोलियो ढाळीने विराजमान हता अने रातो सुरवाळ पेर्यो हतो ने राती डगली पेहेरी हती ने माथे सोनेरी शेलुं बांध्युं हतुं ने कटीने विषे सोनेरी शेलुं बांध्युं हतुं, अने कंठने विषे मोतीनी माळाओ पेहेरी हती ने पावने विषे मोतीना तोरा लटकता मुक्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, पछे श्रीजी महाराजने नित्यानंद स्वामीये प्रश्न पुछ्युं जे देह देह प्रत्ये जीव एक छे के अनेक छे ने एक केशो तो वड पिंपरय आदिक जे वृक्ष छे तेनी डाळीओ कापीने बीजे ठेकाणे रोपे छे त्यारे तेवोने तेवोज वृक्ष थाय छे ए ते एक जीव बे प्रकारे थयो के बीजे जीवे प्रवेश कर्यो ने के-

वच- हेशो जे एतो एनो ए जीव छे ते जीव तो अखंड छे ने अच्युत छे ते कपाणो केम? त्यारे श्री
जीमहाराज बोल्या जे ल्यो एनो उत्तर करीये. जे श्री कृष्ण भगवान छे तेनी पुरुषने प्रकती
ए बे शक्तियो छे ते जगतनी उत्पत्ति स्थितिने प्रलय तेनुं कारण छे ते पुरुषने प्रकृति रूप जे
पोतानी बे शक्तियो तेनुं ग्रहण करीने पोते विराट रूपने धारता हवा ने ते विराट रूप जे ए
भगवान ते जे ते प्रथम ब्रह्म कल्पने विषे तो पोताना अंग थकी ब्रह्मादिक स्तंब पर्यंत समग्र
जीवने सृजता हवा, ने पद्म कल्पने विषे तो ए भगवान ब्रह्मा रूपे करीने मरीच्यादिकने सृ-
जता हवा, ने कल्पने दक्ष रूपे करीने देव दैत्य मनुष्यने पशु पक्षादिक समग्र स्थावर जंगम
जे जीव तेने सृजता हवा. एवा जे श्रीकृष्ण भगवान ते जे ते पुरुष प्रकती रूपे जे पोतानी
शक्ति तेणे सहीत थका जीव जीव प्रत्ये अंतर्यामी रूपे रह्याछे. ने जे जीवे जेवां कर्म कर्यां
छे ते जीवने तेवा देहने पमाडे छे, ने ते जीव छे तेणे पुर्वजन्मने विषे केटलांक कर्म तो सत्व
गुण प्रधानपणे करीने कर्यां छे, ने केटलांक कर्म तो तमोगुण प्रधानपणे करीने कर्यां छे,
ते कर्मने अनुसारे करीने ए जीवने भगवान जे ते उद्भीज जातिना जे देह ने जरायुज जातिना
जे देह ने स्वेद जातिना जे देहने अंडज जातिना जे देह तेने पमाडे छे. ने सुख दुख रूप जे

ते कर्मना फळ तेने पमाडे छे अने ते जीवना कर्मने अनुसारे करीने तेना देह थकी बीजा देहने सृजे छे, जेम कश्यप आदीक प्रजापतिना देह थकी अनेक जातीना देहने सृजता हवा. तेम एना ए भगवान अंतर्यामी रूपे करीने समग्र जीव जिव प्रत्ये रह्या थका जे देह थकी जेम उपज्यानी रिती होय तेम बीजा देहने उपजावे छे, पण जे जीव थकी बीजा देहने उपजावे छे, ते जीवज अनेक रूपे थाय एम नथी ए तो जे जीवने जेना देह थकी उपज्यानो कर्म संबंध प्राप्त थयो होय ते जीवने ते द्वाराये करीने उपजावे छे ॥ इति वचनामृतम् ॥ १३ ॥

सवंत १८७६ना मागशर वदि २ बीजने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदीर आगळ्य लींबडीना वृक्ष हेठे ढोलिया उपर दक्षिणादि मुखारविंदे विराजमान हता. अने माथे धोळी पाघ बांधी हती अने धोळो खेस पहेर्यो हतो, ने धोळी चादर ओढि हती, अने पीळा पुष्पनो तारो पाघमां विराजमान हतो ने ते गुच्छनी उपर गुलाबनां पुष्प विराजमान हतां ने कंठने विषे पीळा पुष्पना हार विराजमान हता अने जमणा हाथमां धोळुं जे सेवतीनुं पुष्प तेने फेरवता हता, अने पोतानी आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.पछे श्री

जी महाराजे मुनी प्रत्ये प्रश्न पुछयो जे एक हरीजन छे ते संसार तजीने नीसर्यो छे, ने अ-
ति तिव्र वैराग्य वाळोतो नथी अने देहे करीने तो वर्त्तमान जथार्थ पाळे छे अने मनमां थोडी
थोडी संसारनी वासना रही छे तेने विचार करीने खोटी करी नांखे छे एवो एक त्यागी भ-
क्त छे अने तेने भगवावाननो नीश्चे पण द्रढ छे. अने वळी बिजो ग्रहस्थ भक्तछे तेनेपण भग-
वाननो निश्चे द्रढ छे अने आज्ञाए करीने घरमां रह्यो छे ने संसार थकी उदास छे अने जे-
टली त्यागीनेजगतमां वासना छेतेटली ते गृहस्थनेपण वासना छेए बे जेभगवानना भक्तेमां कोण
श्रेष्ट छे? पछे मुक्तानंद स्वामी बोल्या जे ए त्यागी भक्त श्रेष्ट छे त्यारें श्रीजीमहाराज बोल्या जे
ओल्यो मुकाइने पोतानी मेळे भेख लेइने निसर्यो छे ते केइ रीते श्रेष्ट छे? ने गृहस्थ तो आ
ज्ञायें करीने घरमां रह्यो छे ते केइ रीते नुन्य छे? पछे श्रीजीमहाराजना प्रश्ननुं मुक्तानंद स्वा
मीये बहु प्रकारे समाधान कर्युं पण समाधान थयुं नही. पछे मुक्तानंद स्वामी बोल्या जे हे
महाराज तमे उत्तर करो, पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे त्यागी होय ने तेने सारी पेठे खावा
मळे अने जो काचि मतिवाळो होय तो पाछी संसारनी वासना हृदामां उदे थाय अथवा घ-
घणुं दुख पडे तो पण पाछी संसारनी वासना उदे थाय एवा त्यागी करतां तो गृहस्थ घणो

मारो केम जे गृहस्थ भक्तनेज्यारे दुःख पडे अथवा घणुं सुख आवी पडे त्यारे तेएम विचार रा-
खे जे रखे मारे आमांथी बंधन थाय एवुं जाणीने ते संसारमांथी उदास रहे माटे त्यागी तो
ते खरो जे जेणे संसार मुक्यो ने पाछी ते संसारनी वासना रहेज नही अने गृहस्थ तो वा-
सना वाळा त्यागी करतां घणो श्रेष्टछे. जो गृहस्थना धर्म सचवायतो पण गृहस्थना धर्मतो घणा कठछे
ने अनंत प्रकारनां सुखदुख आवी पडे त्यारे संतनी सेवामांथी ने धर्ममांथी मनने आडुंअवळुं डोलवा
दे नही अने एम समजे जे संतनो समागम मळ्यो छे ते तो मुने परमचिंतामणी अने कल्पवृ-
क्ष मळ्यो छे, ने धन दौलत दिकरा दिकरी एतो सर्व स्वप्न तुल्य छे अने साचो लाभ ते
संतनो समागम मळ्यो एज छे, एम समजे अने गमे तेवुं भारे दुख आवी पडे पण तेणे क-
रीने पाछो पडे नहीं एवो जे गृहस्थ ते अति श्रेष्ट छे, अने सौ करतां भगवानना भक्त थावुं ए
नगुं कठण छे, अने भगवानना भक्तनो समागम मळवो घणो दुर्लभ छे. एम कहीने ते उपर
श्रीजीमहाराजे भगवानने संतना महिमानां मुक्तानंद स्वामीनां किर्त्तन गवराव्यां पछे मुक्तानंद
स्वामीये प्रश्न पुछ्युं जे श्रुतिमां एम कह्युं छे जे अंते यामतिःसागतिः एवी रीते कह्युं छे जे
अंतकाळे भगवानने विषे मति रहे तो गति थाय अने न रहे तो न थाय एवो ए श्रुतिनो अ-

र्थ भासे छे, त्यारे जे भक्ति करी होय तेनो शो विशेष छे? पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेने
साक्षात भगवाननी प्राप्ति थइ छे, तेने अंतकाळे स्मृति रहे अथवा न रहे तो पण तेनुं अक-
ल्याण थाय नहीं तेनी तो भगवान रक्षा करे छे. अने जे भगवान थकी विमुख छे ते तो
बोलतां चालतां देह मुके छे तो पण तेनुं कल्याण थातुं नथी ने मरीने जमपुरीमां जाय छे,
ने केटलाक पापी कसाई होय ते बोलतां चालतां देह मुके छे अने भगवाननो भक्त होय ने
तेनो अकाळ मृत्यु थयो ते माटे शुं तेनुं अकल्याण थाशे ने पापीनुं शुं कल्याण थाशे? नहींज
थाय. त्यारे ए श्रुतिनो अर्थ एम करवो जे जेवी हमणां एनी मति छे, तेवी अंतकाळे गति
थाय छे, माटे ते जे भक्त छे तेनी मतिमां एम रह्युं छे जे मारूं कल्याणतो थइ रह्युं छे अ
ने जेने संतनी प्राप्ति नथी थई ने भगवानना रूपनी पण प्राप्ति नथी थई तेनी मतिमां तो एम
वरते छे जे हुं अज्ञानी छुं ने मारू कल्याण नहीं थाय. सो जेवी एनी मति छे तेवी एनी अं-
तकाळे गति थाय छे अने जे भगवानना दास थया छे तेने तो कांइ करवुं रह्युं नथी एना
दर्शने करीने तो बीजा जीवनुं कल्याण थाय तो एनुं कल्याण थाय एमां शुं केहेवुं. पण भ-
गवाननुं दासपणुं आववुं ए घणुं कठण छे केमजे भगवानना दास होय तेनां तो ए लक्षण छे

जे देहने मीथ्या जाणे ने पोताना आत्माने सत्य जाणे अने पोताना जे स्वामी तेने भोग्यागनां जे पदार्थ तेने पोते भोगववाने अर्थे इच्छे नहीं अने पोताना स्वामीनुं गमतुं मुकिने बीजुं आचरण करेज नहीं एवो होय ते हरीनो दास केहेवाय छे अने जे हरीनो दास होय ने देह रुपे वरते ते तो प्राकृत भक्त कहेवाय. ॥ इति वचना मृतम् ॥ २४ ॥

संवत १८७६ ना मागशर वदि त्रिजने दिवस श्रीजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता अने सर्वे स्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ सर्वे साधु तथा देश देशना हरीभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराजे एम वारता करी जे जेना हइयामां भगवाननी भक्ति होय तेने एवी वृति रेहे जे भगवान तथा संत मुने जे जे वचन कहेशे तेमज मारे करवुं छे एम तेना हैयामां हिमत रहे, अने आटलुं वचन मुधी मनाशे ने आटलुं नहि मनाय एवुं वचन तो भुले पण न कहे अने वळी भगवाननी मुर्ति ने हइयामां धारवी तेमां शुरविर पणुं रहे ने मुर्ति धारतां धारतां जो न धराय तो पण कायर न थाय ने नित्य नवी श्रद्धा राखे ने मुर्ति धारतां ज्यारे भुंडा घाट संकल्प थाय ने ते हठाव्या हठे नहीं तो भगवाननो मोटो महीमा समजीने पोताने पूर्ण काम मानीने ने

ते संकल्पने खोटो करतो रहे ने भगवानना स्वरूपने हइयामां धारतो रहेते धारतां धारता दश वरस थाय अथवा विस वरस थाय अथवा पचविस वरस थाय-अथवा सो वरस थाय तो पण कायर थइ ने भगवानना स्वरूपने धारवुं ते मुकि दे नही केम जे श्री कृष्ण भगवाने गीतामां कह्युं छे जे, अनेक जन्म संसिद्धस्ततोयातिपरांगतिम्, ते माटे एमने एम भगवानने धारतो रहे एवुं जेने वरततुं होय तेने एकांतिक भक्त कहीये॥इतिवचनामृतम्॥२५

संवत १८७६ना माग शर वदि चोथने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां विराजमान हता अने सर्वे स्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराजे एम वार्त्ता करी जे जे भगवाननो भक्तने सत असतना विवेक होय ते तो जे जे अवगुण पोतामां होय तेने जाणे ने विचारीने तेनो त्याग करी दे अने संतमां अथवा कोइ सत्संगीमां कांइक अवगुण पोताने भासतो होय तो तेनो त्याग करी दे ने तेना जे गुण तेनुंज ग्रहण करे अने परमेश्वरने विषे तो तेने कोइ अवगुण भासेज नहि. अने भगवानने संत ते जे जे वचन कहे तेने परम सत्य करीने माने पण ते वचनने विषे संशे करे नही अने संत

कहे जे तुं देह इंद्रि मन प्राणथी जुदो छुं ने सत्य छुं ने एनो जाणनारो छुं ने ए देहादिक सर्वे असत्य छे एम वचन कहे तेने सत्य मानीने ते सर्वेथी जुदो आत्मा रूपे वरते पण मनना घाट भेळो भळी जाय नहि. अने जेणे करीने पोताने बंधन थाय ने पोताना एकांतिक धर्ममां खोड आवे एवा जे पदार्थ तथा कुसंग तेने ओळखि राखे ने तेथी छेटल रहे तेना बंधनमां आवे नहि अने सवळो विचार होय तेने ग्रहण करे ने अवळो विचार होय तेनो त्याग करे एवि रीते ज्यारे वरततो होय त्यारे जाणिये जे तेने विवेक छे. ॥ इति वचनामृतं॥ १६ ॥

संवत १८७६ना मागशर वदी ५ पांचमने दिवसे श्रीजीमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बारणे ओरडो छे तेमां कथा वंचावता हता. अने धोळो खेस पेहेर्यो हतो तथा धोळी चादर ओढी हती तथा धोळो पाघ बांधी हती अने पिळा पुष्पनी माळा पेहेरी हती ने पिळा पुष्पनो तोरो पाघने विषे खोस्यो हतो अने अति प्रसन्न थका विराजमान हता. ते समयने विषे मुक्तानंद स्वामी तथा गोपाळानंद स्वामी आदिक साधुने तेडाव्या ने श्रीजीमहाराज ते सर्वे प्रत्ये बोल्या जे आपणा सत्संगमां थोडोक कुसंगनो भाग रह्यो जाय छे ते आज काढवो छे ने आ प्रकरण एवुं चलाववुं छे जे परमहंस तथा सांख्य जोगी तथा

कर्म जोगी सर्वे सत्संगमां प्रवर्ते. ते सत्संगमा कुसंग ते शुं छे. तो जे वातना करनारा हिम-त विनानी वात करे छे ते सत्संगमां कुसंगछे. ते केवी रीते वात करेछेतो एम कहे छे जे भग-वाननुं जे वचन तेने यथार्थ कोण पाळी शकेछे, ने वरतमान धर्म पण अथार्थ कोण पाळी शकेछे. माटे जेटलुं पळे-तेटलुं पाळीये, ने भगवान तो अधम उधारण छे ते कल्याण करशे. अने वळी एम वात करे छे जे भगवाननुं स्वरूप जे रुदयमां धारवुं. ते कांइ आपणुं धार्युं धरातुं नथी. एतो भगवान जेने दया करीने धरावे छे तेने धराय छे एवी रीतनी मोळी वातकरीने धर्मज्ञान, वैराग्य, भक्ति, इत्यादिक जे भगवाननी प्रसन्नतानां साधन तेमांथी बीजाने मोळा पाडेछे. माटे हवे आज दिनथी आपणा सत्संगमां कोइ पण एवी हिमत रहित वात करशो नहीं सदा हिमत सहित वात करजो, अने जे एवी हिमत रहित वात करे तेने तो नपुंसक जाणवो. अने एवी हिमत्य विनाभी वात जे दिवस थइ जाय तो ते दिवस उपवास करवो. इतिवचनामृतं॥ १७॥

संवत १८७६ ना मागसर शुदि ६ छठने दिवस रात्री पाछलो पोर एक वाकी हती त्यारे स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरवारमां आथमणे

वार ओरडानी ओशरी आगळ फळीमां ढोलीया उपर विराज्या हता ने सर्वे स्वेत वस्त्र धारण करयां हतां. पछे परमहंस तथा सत्संगीने तेडाव्या ने घणी वार सुधी तो पोते विच्यारी रह्या ने पछे बोल्या जे एक वात कहुं ते सांभळो एम कहीने श्रीजीमहाराज बोल्या जे मारा मनमां तो एम थाय छे जे वात न कहुं, पण तमे अमारा छो माटे जाणीये छैये जे कहीयेज. अने आ वात छे तेने समजीने तेज प्रमाणे वरते तेज मुक्त थायछे. ने ते विना तो चारे वेद, खट शास्त्र ने अढार पुराण ने भारतादिक इतिहास तेने भणवे करीने तथा तेना अर्थने जाणवे करीने अथवा तेने श्रवण करीने पण मुक्त थाय नहीं ते वात कहीये ते सांभळो. जे वाहार तो गमे तेटली उपाधी होय पण तेनो जो मनमां संकल्प न होय तो तेनो अमारे खरखरो नहीं, ने अंतरमां जो रंच जेटलो पदार्थनो घाट थाय तो तेनो त्याग करीये त्यारे नीरांत थाय एवो अमारो स्वभावछे. माटे अमे हृदयमां विचार कर्यो जे भगवानना भक्तना हृदयमां विक्षेप थायछे तेनुं कारण ते शुं छे? पछे मन बुद्धि चित्त अहंकार सामुं जोयुं त्यां तो ए अंतःकरण पण उद्वेगनुं कारण नथी. अंतःकरणमां तो भगवानना स्वरूपना निश्चेनुं बळ अथवा आत्मज्ञाननुं बळ तेने जोगे करीने अंतःकरणने गाफलता रहे छे जे भगवान मळ्या छे ते हवे कांइ करवुं

नथि एवुं गाफल पणुं रहे छे एटलोज अंतःकरणनो वांक छे. अने ज्ञाजो वांक तो पंचज्ञान इंद्रियोनो छे तेनी विगत कहिये छैये. जे ए जीव जे नाना प्रकारनां भोजन जेम छे ते भोजन मध्ये जूदा जूदा स्वाद छे अने जूदा जूदा गुण छे ते भोजनने ज्यारे जमे छे त्यारे ते गुण अंतःकरणमां तथा शरीरमां प्रवर्त्ते छे अने जो लीलागर भांग पिए ने ते प्रभुनो भक्त होय तोय पण लिलागर भांगने केफे करीने वर्तमाननी खबर रहे नही ने प्रभुना भजननी पण खबर रहे नही, तेम अनंत प्रकारना जे आहार तेना गुण पण लीलागर भांगनी पेठेज अनंत प्रकारना छे. तेनो गणतां पण पार आवे नहि. तेमज ए जीव श्रोत्रद्वारे अनंत प्रकारे शब्दने सांभळे छे, ते शब्दना पण अनंत प्रकारना गुण जूदा जूदा छे ते जेवो शब्द सांभळे छे तेवोज अंतःकरणमां गुण प्रवर्त्ते छे. जेम कोइक हत्यारो जीव होय अथवा कोइक पुरुष व्यभिचारी होय अथवा कोइक स्त्री व्यभिचारणी होय अथवा लोक ने वेदनी मरजादाने लोपीने वरततो एवो कोइक भ्रष्ट जीव होय तेमनी जे वात सांभळवी ते तो जेवी लिलागर भांग पीए अथवा दारु पीए एवी छे माटे ते वातना सांभळनाराना अंतःकरणने भ्रष्ट करी नांखे छे ने भगवाननुं भजन स्मरण तथा वर्तमान तेनी विस्मृती करावी नांखे छे. तेमज

त्वचाना स्पर्श पण अनंत प्रकारना छे ने तेना गुण पण जूदा जूदा अनंत प्रकारना छे तेमां पापी जीवनो जे स्पर्श तेज भांग दारूना जेवोछे माटे ते स्पर्शनो करनारो हरिभक्त होय तेनी पण सुध बुधने भुलाडी देछे. तेमज रूप पण अनंत प्रकारनां छे ने तेना गुण पण अनंत प्रकारनां जूदा जूदा छे, ते कोइक भ्रष्ट जीव होय ने तेनुं दर्शन थयुं होय तो जेम लीलागर भांग तथा दारू पीधे भुंडुं थाय तेमज ते पापीना दर्शनना करनारानुं पण भुंडुज थाय ने बुद्धि भ्रष्ट थइ जाय छे, तेमज गंध पण अनंत प्रकारना छे ने तेना गुण पण अनंत प्रकारना छे. ते जो पापी जीवना हाथनुं पुष्प अथवा चंदन तेनी जो सुगंधि लेतो जेम लीलागर पीधे बुद्धि भ्रष्ट थाय. तेमज बुद्धि भ्रष्ट थाय छे एवी रीते जेम भुंडाने जोगे करीने जिवनी बुद्धि भ्रष्ट थाय छे, तेमज परमेश्वर अथवा परमेश्वरना संत तेने जोगे करीने जिवनी बुद्धि सारी थायछे अने जिवनी बुद्धि भ्रष्ट होय तोपण भगवान ने संतना शब्दने सांभळवे करीने उत्तम थाय छे. तेमज एमने स्पर्शे करीने पण मति उत्तम थाय छे, अने वर्त्तमाननी आडे करीने मोटा संतनो स्पर्श न थाय तो तेना चर्णनी रज लेइने माथे चढावे तेणे करीने पवित्र थाय. अने तेमज मोटा संतने दर्शने करीने पण पवित्र थाय पण वर्त्तमान राखीने दर्शन करवां. तेमज ते

मोटानी प्रसादिछे तेने जमने करीने पण पवित्र थाय छे, तेमां पण वर्णाश्रमनी मरजादा पर-
मेश्वरे बांधी छे. ते मरजादाने राखीने प्रसादी लेवी ने जेने न खपे तेने साकरनी प्रसादि क-
रावीने प्रसादि लेवी. तेमज ते मोटा पुरुषने चढयुं एवुं जे पुष्प चंदन तेनी सुगंधी लिधे पण बुद्धि
निर्मळ थाय छे, ते माटे ए पंच विषयने समज्या विना जे भोगवशे ने सार असारनो विभाग
नही करे ने ते नारद सनकादिक जेवा हशे, तेनी पण बुद्धि भ्रष्ट थई जाशे त्यारे जे देहाभि
मानी होय ने तेनी बुद्धि भ्रष्ट थाय तेमां शुं केहेवुं ? ते सारु ए पंचे ईंद्रियोने जोग्य अजोग्य
विचारया विना जे मोकळी मेलशे तेनुं अंतःकरण भ्रष्ट थई जाशे अने पंच ईंद्रियो द्वारे जिव
जे अहार करे छे. ते अहार जो शुद्ध करशे तो अंतःकरण शुद्ध थाशे, अने अंतःकरण शु-
द्ध थाशे तो अखंड भगवाननी स्मृति रहेशे, अने जो पंचे ईंद्रियोना अहारमांथी एके ईंद्रीनो
आहार मलिन थाय छे तो अंतःकरण पण मलीन थइ जाय छे, माटे भगवानना
भक्तने भगवानना भजनने विषे जे कांइ विक्षेप थइ आवे छे. तेनुं कारण ते
पंच इंद्रियोनो विषयज छे पण अंतःकरण नथी अने आ जिव छे ते जेवी सोबत करे छे ते
वुं एवुं अंतःकरण थाय छे ते ज्यारे ए जिव विषयइ जिवनी सभामां बेठो होय अने ते जग्या

पण सुंदर सात माळनी हवेली होय ने ते हवेलीने विषे काचना तकता सुंदर जडया होय ने सुंदर बिछानां कर्यां होय ने तेमां नाना प्रकारना आभुषण तथा वस्त्रने पेरीने विषइजन बेठा होय अने दारुना शिसा लइने परस्पर पाता होय ने केटलाक तो दारुना शिसा भरेला पडया होय ने वेशाओ थेइ थेइकार करी रही होय ने नाना प्रकारनां वाजीत्र वाजतां होय ने ते सभामां जइने जे जन बेसे ते समे तेनुं अंतःकरण बीजी जातनुं थइ जाय छे अने त्रणनी फुपडी होय ने तेमां फाटेली गोदडी वाळा परमहंसनी सभा बेठी होय ने धर्म ज्ञान ने वैराग्य भक्ति सहवर्त्तमान भगवत वार्त्ता थाती होय ते सभामां जइने जे जन बेसे त्यारे ते समे तेनुं अंतःकरण बीजी रीतनुं थाय छे, माटे सत्संगने, ने कुसंगने जोगे करीने जेवुं अंतःकरण थाय छे तेने जो विचारीने जुवे तो जाण्यामां आवे छे अने गबरगंडने तो कांइ खबर पडती नथी. माटे आ वार्ता छे ते छेक मूर्खपणे पशुने पाडे वरततो होय तेने तो न समजाय अने जे कांइक विवेकी होय ने कांइक भगवाननो आश्रित होय तेने तो आ वार्त्ता तुरत समज्यामां आवे छे माटे परमहंस तथा सांख्य जोगी हरीजन तथा कर्म जोगी हरीजन ए सर्वेने कुपात्र माणसनी संगत करवी नही. अने सत्संग मोर तो गमे तेवो कुपात्र जिव होय तोय तेने नियम धरा

राविने सत्संगमां लेवो पण सतसंगमा आव्या पछी कुपात्र पणुं राखे तो बाइ अथवा भाइजे होय तेने सत्संग बार काढी मेलवो अने जो न काढे तो एमांथी भाकुं भुंडुं थाय. जेम जे आंगळीने सापे करडी होय अथवा किडीयारानो रोग थयो होय ने तेटलुं अंग जो कापी नांखे तो पंडे कुशळ रेहे ने तेनो लोभ करे तो भाजो बीगाड थाय. तेम जे कुपात्र जिव जणाय तेनो ततकाळ त्याग करज्यो अने आ अमारूं वचन छे ते भला थइने सर्वे जरुर राखशो, तो जाणे तमे अमारी सर्वे सेवा करी अने अमे पण तमने सर्वेने आश्रवाद देइशुं ने तमो उपर घणा प्रसन्न थाशुं. कांजे तमे अमारो दाखडो सफळ कर्यो. अने भगवाननुं धाम छे त्यां आपण सर्वे भेळा रहेशुं, अने जो एम नहीं रहोतो तमारे ने अमारे घणुंछेटुं थइ जाशे अने भूतनुं के ब्रह्मराक्षसनुं देह आवशे ने हेरान थाशो अने जे कांइ भगवाननी भक्ति करी हशे तेनुं फळतो रफळतां रफळतां कोईक काळे प्रगट थाशे त्यारे पण अमे वात करी ते प्रमाणे रहेशो त्यार पछी मुक्त थईने भगवानना धाममां जाशो. अने जो कोई अमारो वाद लेशो तो तेनुं जरूर भुंडुं थाशे कांजे अमारा हृदयमां तो नरनारायण प्रगट विराजे छे अने हुं तो अनादि मुक्तज हुं पण कोइने उपदशे करीने मुक्त नथी थयो अने मन, बुद्धि, चित्त ने अ-

हंकार तेमने तो हुं पकडी लेउछुं, जेम सिंह बकराने पकडे छे तेनी पेठे ए अंतःकरणने हुंपकडुं छुं अने बीजाने तो ए अंतःकरण देख्यामां पण आवतुं नथी, माटे अमारो वाद लइने जाणे जे उपाधीमां रहीने शुद्धपणे रहेशुं, तेतो नारद सनकादिक जेवो होय तेथी पण रहेवाय नहि तो बिजानी शी वार्ता केहेवी. अने अनंत मुक्त थइ गया ने अनंत थाशे तेमां उपाधीमां रहीने निर्लेप रहे एवो कोइए थयो नथी ने थाशे पण नहि अने हमणां पण कोइये नथी अने कोटी कल्प सुधि साधन करीने पण एवो थावाने कोइ समर्थ नथी माटे अमे कह्युं छे ते प्रमाणे रहेशो तो रुडुं थाशे. अने अमे जे कोइने हेत करीने बोलावीए छैये ते तो तेना जीवना रुडा सारु बोलावीये छैये अथवा कोइने हेत करीने सामुं जोइए छैये अथवा कोइ सारां भोजन करावे छे ने तेने जमीये छैये अथवा कोइ ढोलीओ बिछावी दे छे तेने उपर बेशिये छैये अथवा कोइ वस्त्र आभुषण तथा पुष्पना हार इत्यादिक जे जे पदार्थ लावे छे तेने अंगीकार करीये छैये ते तो तेना जीवना रुडा वास्ते अंगीकार करीये छैये पण अमारा सुखने वास्ते करता नथी ने जो अमारा सुखने वास्ते करता होइए तो अमने श्री रामानंद स्वामीना सम छे माटे एवुं विचारीने कोइ अमारो वाद करशो मां, ने पंच इंद्रिनो आहार छे तेने अतिशे

शुद्धपणे करीने राखजो,ए वचन अमारुं जरुर मानज्यो अने आ वात तो सर्वेने समजाय एवी सुगमछे,माटे सर्वना समज्यामां तुरत आवी जाशे ते सारु सत्संगमां अतीशे प्रवर्त्तावज्यो तेमां अमारो घणो राजीपो छे. एम वार्ता करीने जय सच्चिदानंद कहीने श्रीजीमहाराज पोताना उतारामां पधारता हवा. ॥ इति वचनामृतं ॥ १८ ॥

संवत १८७६ ना पोस शुदि १ पडवाने दिवस श्रीजीमहाराज संध्या समे श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजता हता, अने सर्व स्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती, पछे श्रीजीमहाज बोल्या जे आ सत्संगने विषे पोताना आत्यंतिक कल्याणने इछतो एवो जे भक्त जन तेने एकली आत्म नीष्टाये करीने पोतानुं आत्यंतिक कल्याण रुपे कारज सरतुं नथी तथा एकलो जे वैराग्य तेणे करीनेपण ते कारज सरतुं नथी,तथा एकलो जे स्वधर्म तेणे करीने पण ते कारज सरतुं नथी.ते माटे ए आत्मनीष्टा आदिक जे चारे गुण ते सिद्ध करवा.शा माटेतो ए चारे गुणने एक बीजानी अपेक्षाछे.हवे ए चारे गुणने एक बीजानी अपेक्षा छे,ते कहीए ते सांभळो जे आत्मनीष्टा तो होय पण जो श्रीहरीने विषे प्रिती नहोय, तो ते प्रितीये करीने थइने श्रीहरीनी प्रसन्न

ता तेणे करीने पामवा जोग एवुं मोटुं ऐश्वर्य जे मायाना गुणे करीने पराभव न पमाय एवुं मोटुं सामर्थ तेने ए भक्त नथी पामतो.अने श्रीहरीने विषे प्रिति तो होय.पण जो आत्मनीष्ट न होयतो देहाभिमानने जोगे करीने ते प्रीतिनी सिद्धि थाती नथी. अने श्रीहरीने विषे प्रितीने आत्मनीष्टा ए बेय होय पण जो द्रढ वैराग्य न होय तो माइक पंच विषयने विषे आशक्तिए करीने ते प्रीतीने आत्मनीष्टा तेनी सिद्धि थाती नथी. अने वैराग्य तो होय तो पण जो प्रितिने आत्मनीष्टा न होय तो श्रीहरीना स्वरूप संबंधी जे पर्मआनंद तेनी प्राप्ति थाती नथी अने स्वधर्म तो होय तो पण जो प्रीती आत्मनीष्टाने वैराग्य ए त्रण न होय तोभुलोक भुवर्लोकने ब्रह्माना भुवन पर्यंत जे स्वर्गलोक ते थकी बाहेर गती थाती नथी के तो ब्रह्मांडुंने भेदीने मायाना तम थकी पर एवुं जे श्रीहरीनुं अक्षरधाम तेनी प्राप्ति थाती नथी अने आत्मनीष्टा प्रीतिने वैराग्य ए त्रणे होय तो पण जो स्वधर्म न होय तो त्रणेनी सिद्धि थाती नथी. एवी रीते आत्मनिष्टा आदीक जे चारे गुण तेमने.एक बीजानी अपेक्षाछे ते माटे भगवानना एकांतिक भक्तना समागमे करीने जे भक्तने ए चारे गुण अति द्रढपणे वरते छे ते भक्तने सर्वे साधन संपुर्ण थयां ने एनेज एकांतिक भक्त जाणवो ते माटे जे भक्तने ए चार गुणमांथी जे गुणनी न्युनता

होय तो भगवानना एकांतिक भक्तनो सेवासमागम करीने ते न्युनताने टाळवी ॥ इति वचनामृतं ॥ १९ ॥

संवत १८७६ ना पोस शुदी २ बीजने दिवसे श्रीजीमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां उगमणे बारय ओरडानि ओशरीये गादी तकीया नंखावीने विराजमान हता ने धोळी पाघ माथे बांधी हती. ने ते पाघने विषे पिळा पुष्पना तोरा विराजमान हता अने कंठने विषे पिळा पुष्पनो हार विराजमान हतो, अने बे कांनने विषे धोळा ने पिळा पुष्पना गुछ विराजमान हता. अने धोळो चोफाळ ओढ्यो हतो. ने काळा छेडानो खेस पेर्यो हतो, ने कथा वंचावता हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशना देशना हरी जननी सभा भराइने बेठी हती. पछे स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज बोल्या जे सांभळो सर्वेने एक प्रश्न पुछिए छैये. त्यारे सर्वे हरीभक्ते हाथ जोडीने कह्युं जे पुछो. त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे अज्ञानिमां अतिशे अज्ञानी ते कोण छे. पछे तो सर्वे विचारी रह्या पण उत्तर करी शक्या नहि. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ल्यो अमे उत्तर करीये, त्यार सर्व राजी थैने कह्युं जे हे महाराज तमथी जथार्थ उत्तर थाशे माटे कहो, पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे

आ देहमां रहेनारो जे जीव छे ते रूपने जुवे छे ने कुरूपने जुवे छे तथा वाळ जोवनने वृद्धप-
णाने जुवे छे एवा अनंत पदार्थने जुवेछे पण जोनारो पोते पोताने जोतो नथी अने केवळ बाह्य
द्रष्टिए करीने पदार्थने जोया करे छे पण पोते पोताने नथी जोतो तेज अज्ञानिमां अतिशे
अज्ञानिछे.अने जेम नेत्रे करीने अनंत प्रकारना रूपना स्वादने ले छे तेमज श्रोत्रत्वक,रसना ने
घ्राण इत्यादिक सर्वे इंद्रियोये करीने विषय सुखने भोगवेछे ने जाणेछे पण पोते पोताना सुख-
ने भोगवतो नथी ने पोते पोताना रूपने जाणतो नथी एज सर्वे अज्ञानिमां अतिशे अज्ञानिछे ने
एज घेलामां अतिशे घेलो छे, अने एज मुर्खमां अतिशे मुर्ख छे, ने एज सर्व निचमां अति-
शे निच छे. त्यारे शुक मुनिये आ शंका करी जे पोतानुं स्वरूप जोवुं ते शुं पोताना हाथमांछे?
ने जो पोताना हाथमां होय तो जीव शिद अतिशे अज्ञानी रहे? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे
जेने सत्संग थयोछे तेने तो पोताना जीवात्मानुं दर्शन पोताना हाथमांज छे ने केदाडे एणे पो-
ताना स्वरूपने जोवानो आदर कर्यो ने न दिठो. अने ए जीव मायाने आधीन थको
परवश थइने तो स्वप्ने सुसुप्ति अवस्थामां अंतर द्रष्टि करीने जोयछे पण पोते पोताने जा-
णे कोइ दिवस पोताना स्वरूपने जोवाने अंतर द्रष्टि करतो नथी अने जे भगवानना प्रतापने वि-

चारीने अंतर द्रष्टि करेछे ते तो पोताना स्वरूपने अतिशो उज्वळ प्रकाश मान जुवे छेने ते प्र-
काशने मध्ये प्रत्यक्ष एवा जे पुरुषोत्तम भगवान तेनी मुर्त्तिने जुवे छे अने नारद सनकादिक जे-
वो सुखियो पण थायछे माटे हरिभक्तने तो जेटली कसर रहे छे,तेटली पोताने आळसे करी-
ने रहे छे. ॥इतिवचनामृतं॥२०॥

संवत १८७६ना पोस शुदि ३ त्रिजने दिवसे श्रीजीमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखा-
चरना दरबारमां सांजने समे उगमणे बार ओरडानी ओशरीए ढोलिया उपर विराजता हता
अने काळा छेडानो खेस पेर्यो हतो ने,धोळो चोफाळ ओढयो हतो ने धोळी पाघ माथे बां-
धी हती ने उगमणे मुखारविंदे विराजमान हता ने पोताने आगळ साधु झांझ पखाज लेइने
किर्त्तन गाता हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भ
राइने बेठी हती. पछे ते सर्वेने श्रीजी महाराजने छाना राख्या ने एम बोल्या जे सर्वे सांभळो
एक वार्त्ता करीए. एम कहीने झाझिवार सुधि तो नेत्र कमळने मिंचिने विचारी रह्या ने पछे
बोल्याजे जे हरिभक्तना मनमां भगवानने अति प्रसन्न करवानी इच्छा होय ते भगवानने प्र
सन्न करवानो तो ए उपाय छे जे पोत पोताना वर्णाश्रमनो जे धर्म.तेने विषेअचल निष्टा तथा

आत्मनिष्टानी अतिशे द्रढता तथा एक भगवान विना बिजा सर्वे पदार्थने विषे अरुचि त-
भगवानने विषे महात्मे सहित एवी निष्काम भक्ति ए चार साधने करीने भगवानी अति-
प्रसन्नता थाय छे.अने ए जे चार साधन तेने एकांतिक धर्म कहिये ने एवा एकांतिक धर्म -
ळा जे भक्त ते आ समामां आपणा सत्संगमां केटलाक छे. अने जे भगवाननो भक्त हो-
तेने खातां पितां, नातां धोतां, चालतां बेसतां सर्व क्रियाने विषे भगवाननी मुर्त्तिनुं चितवन
करवुं अने ज्यारे अंतरमां कांई विक्षेप होय तारे तो भगवाननुं चित्तवन करवुं ने भगवान-
मुर्त्ति सांमु जोइ रहेवुं अने अंतरमां संकल्प विकल्पनो विक्षेप थाय तो देह इंद्रियो अंतःकर-
ण देवता विषय ए सर्वेथी पोतानुं स्वरूप जूदुं समजवुं ने ज्यारे संकल्पनो विराम थाय ता-
भगवाननी मुर्तिनुं चितवन करवुं. अने आ देहने तो पोतानुं स्वरूप मांनवुं नही ने देहनां
संबंधी तेने पोतानां संबंधी मानवां नही. केम आ जीव छे ते चोराशि जातना देहेने
धारे आव्यो छे ने जेटली जगतमां स्त्रीयुं छे ते सर्वेने पेट जन्म लीधा छे तथा जगतमां
जेटली कुतरीयुं,जेटली मीनडियुं, जेटली वानरियुं ए आदिक जे जे चोराशीमां जीव छे ते
सर्वेने पेट केटलीक वार जन्म धरया छे, अने आ जगतमां जेटली जातनी स्त्रियुं छे त-

कोइ एणे स्त्रियुं नथी करि? सर्वेने पोतानी स्त्रीयुं करी छे.तेमज ए जीवे स्त्रिना देह धरी धरिने जगतमां जेटलो जातना पुरुष छे ते सर्वेने पोताना धणि करया छे.तेटला माटे जेम ए चोराशि लाख. जातना सगपणने हमणे मानता नथि तथा चोराशि लाख जातना देहने पोतानुं देह मानता नथि, तेमज आ देहने पोतानुं स्वरूप मानवुं नहि ने आ देहनां संबंधिने पोतानां संबंधी मांनवां नहि. केम जे चोराशि लाख जातना देह धरया तेनो संबंध रह्यो नही तो आ देहनो संबंध पण नहि रहे ते माटे देह गेहादिक सर्वे पदार्थने असत्य जाणिने तथा देह इंद्रियो अंत:करण तेथि जूदुं पोतानुं स्वरूप जाणिने तथा पोताना धर्ममां रहिने भगवाननि निष्काम भक्ति करवी.अने दिवसे दिवसे भगवाननुं अतिशे माहात्म जणाय तेने अर्थे साधुनो संग निरंतर राखवो अने जे आवी रीते नथी समजतो ने केवळ देहाभिमानीने प्राकृतमति वाळो छे ने ते जो सत्संगमां पडयोछे तो पण एने पशु जेवो जाणवो.अने आ सत्संगमां तो भगवाननो मोटो प्रताप छे तेणे करीने पशुनुं पण कल्याण थायछे तो मनुष्यनुं कल्याण थाय तेमां शुं आश्चर्य कहेवाय. पण एने खरे खरो भगवाननो एकांतिक भक्त न कहेवाय.एकांतिक भक्ततो जेनि प्रथम कह्युं एवि समजण होय तेनेज कहिये अने एवा जे एकांतिक भक्त ते दे-

हनो त्याग करीने ने सर्वे मायाना भावथी मुक्त थईने ने आंचि मार्गे करीने भगवानना अक्षर धामने पामे छे, ते अक्षरनां बे स्वरूप छे एक तो नीराकार, एक रस चैतन्यछे, तेने चिदाकाश कहिये ब्रह्म मोहोल कहिये, अने ए अक्षर बिजे रूपे करीने पुरुषोत्तम नारायणनी सेवामां रहे छे, अने ए अक्षर धामने पाम्यो जे भक्त ते पण अक्षरना साधर्मी पणाने पामे छे, ने भगवाननी अखंड सेवामां रहे छे, अने ए अक्षर धामने विषे श्री कृष्ण पुरुषोत्तम नारायण तो सदा विराजमान छे, अने अक्षर धामने विशे अक्षरना साधर्मपणाने पाम्या एवा अनंत कोटि मुक्त रह्या छे ते सर्वे पुरुषोत्तमना दास भावे वरते छे, ते पुरुषोत्तम नारायण ते सर्वेना स्वामी छे, अनंत कोटि ब्रह्मांडना राजाधिराज छे, माटे आपणा सत्संगी सर्वेने तो एम ज नीश्चे करवो जे आपणे पण ए अक्षर रूप जे मुक्त तेमनी पंक्तिमां भळवुं छे, ने ए अक्षर धाममां जईने अखंड भगवाननी सेवामां हजुर रेहेवुं छे पण नाशवंत ने तुच्छ एवुं जे मायीक सुख तेने इछवुं नथी, एमां कोई ठेकाणे लोभावुं नथी एवो दृढ नीश्चे राखीने निरंतर भगवाननी एकांतिक भक्ति करवी. अने भगवाननुं अतिशे माहात्म्य यथार्थ समाळीने भगवान विना बिजा जे स्त्री धनादिक सर्वे पदार्थ तेनी जे वासना तेने देह छतेज टाळी नाखवी. अने जो

भगवान विना बिजा पदार्थनी वासना रही गइ होय ने तेनो देह पडे ने तेने भगवानना धांममां जाते जो मार्गमां सिद्धियुं देखाय तो ते भगवानने मुकीने ते सिद्धियुंमां लोभाइ जाय तो तेने मोटुं विघ्न थाय. माटे सर्वं पदार्थनी वासना टाळीनें भगवानने भजवा॥ इतिवचना मृतम्॥ २१॥

संवत १८७६ ना पोश शुद ४ चोथने दीवस मध्यान समे श्रीजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओशरीये ढोलिया उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां ने पाघने विशे फुलनो तोरो खोस्यो हतो ने बे कान उपर पुष्पना गुछ धार्या हता ने कंठमां गुलदाउदीना पुष्पनो हार पेर्यो हतो ने उगमणे मुखारविंदे विराजता हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने परमहंश किर्तन गाता हता. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे सांभळो एक वात करीए त्यारे सर्वे परमहंस गाववुं राखीने वात सांभळवा तत्पर थया, पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे मृदंग, सारंगी, सरोदा, ताल इत्यादिक वाजिंत्र वजाडीने किर्तन गाववां तेने विषे जो भगवाननी स्मृति न रहेतो ए गायुं ते न गाया जेवुं छे ने भगवानने विसारीने तो जगतमां केटलाक जीव गाय छे तथा वाजीत्र वजाडे छे पण तेणे करीने तेना

मनमां शांति आवती नथी ते माटे भगवाननां किर्तन गाववां तथा नाम रटन करवुं तथा नाराय-
ण धुन्य करवी इत्यादिक जे जे करवुं ते भगवाननी मुर्त्तिने संभारीनेज करवुं. अने भजन क-
रवा बेसे त्यारे तो भगववानने विषे वृत्ति राखे ने ज्यारे भजनमांथी उठीने बीजी क्रियाने करे
त्यारे जो भगवानमां वृत्ति न राखे तो तेनी वृत्ति भजनमां बेसे त्यारे पण भगवानना स्वरूपमां
स्थिर थाय नहि माटे हालतां चालतां, खातां पीतां, सर्वे क्रियाने विषे भगवानना स्वरूपमां वृत्ति
राखवानो अभ्यास करवो तो तेने भजनमां बेसे त्यारे भगवानमां वृत्ति स्थिर थाय अने जेने भ
गवानमां वृत्ति रहेवा लागे तेने तो काम काज करते पण रेहे अने जेने गाफलइ होय तेने तो
भजनमां बेसे त्यारे पण भगवानमां वृत्ति ने रेहे ते माटे सावधान थइने भगवानना स्वरूपमां
वृत्ति राखवानो अभ्यास भगवानना भक्ते करवो एटली वात करीने श्रीजी महाराज बोल्या
जे हवे कित्तन गाओ. इतिवचनामृतं.॥२२॥

संवत १८७६ना पोस शुदी ५ पंचमी ने दिवस श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां
उगमणे बार ओरडानी ओशरीए ढोलीया उपर विराजमान हता अने श्रीजी महाराजे माथे धोळो
फेंटो बांध्यो हतो तथा धोळुं अंगरखुं पेहेर्युं हतुं. तथा धोळो सुरवाळ पेहेर्यो हतो तथा केडे कसुंबल

च. शोळुं वाध्युं हतुं ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे करुणा करीने परमहंसनी आगळ श्रीजीमहाराज वात करवा लाग्या जे वासुदेव माहात्म नामे जे ग्रंथ ते अमने अतिशे प्रिय छे केम जे भगवानना भक्ते भगवानने भज्यानी रीति ते सर्वे ए ग्रंथमां कही छे, अने भगवानना जे भक्त ते बे प्रकारना छे, तेमां एकने भगवाननो नीश्चे तो यथार्थ छे, पण ते देहात्म बुद्धि सो तो भगवाननुं भजन करे छे अने बीजो तो जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति ए त्रण अवस्था तथा स्थुळ सुक्ष्मनो कारण ए त्रण देह तेथी परने चैतन्य रुप एवुं पोताना स्वरूपने माने अने ते पोताना स्वरूपने विषे भगवाननी मुर्त्तिने धारीने भगवाननुं भजन करे पछे त्रण अवस्थाथी ने त्रण शरीरथी पर जे पोतानुं स्वरूप तेने अतिशे प्रकाशमान भाळे ने ते प्रकाशने विषे भगवाननी मुर्त्ति जेवी प्रगट प्रमाण छे तेवी अतिशे प्रकाशे जुक्त भासे एवी रीतनी स्थीतिवाळो होय अने एवी रीतनी स्थीती ज्यां सुधी थइ नथी त्यां सुधी भगवाननो भक्त छे, तो पण तेने माथे विघ्न छे, अने जो एवी स्थितीमां शिवजी नोता वरतता तो मोहनी स्वरूपमां मोह पाम्या अने एवी स्थितीमां ब्रह्मा नोता वरतता तो सरस्वतिने देखीने मोह पाम्या. अने एवी स्थितिमां नारदजी नोता वरतता तो परण्यानुं मन

थयुं, अने इंद्र तथा चंद्रादिक तेमने जो एवी स्थिती नोती तो कलंक लाग्यां अने भगवाननो भक्त होय पण जो एवी स्थितीने न पाम्यो होय तो भगवानने विषे पण प्राकृत भाव परठाई जाय छे, जेम राजा परीक्षित एवो भक्त नोतो तो रास क्रिडा सांभळीने श्रीकृष्ण भगवानने विषे संशे थयो अने शुकजी जो एवा भक्त हता तो तेने कोई जातनो संशे थयोज नही. अने जे एवो भक्त होय ते तो एम समजे जे मारे विषे कोई दोष अडी सके नही तथा ते दोश कांई बाध करी शके नही, तो जेने भजने करीने हुं आवो थयो, एवा जे भगवान तेने विषे तो कोई माइक दोष होयज केम! एम दृढपणे समजे छे, अने एवो जे ए भगवाननो भक्तछे, ते भगवाननी मुर्त्तिने विषे ज्यारे वृत्तिने राखे छे; त्यारे ते वृत्तिना बे विभाग थाय छे, तेमां एक वृत्ति तो भगवानना स्वरूपमां रहे छे ने बीजी तो जे भजननो करनारो तेमां रहेछे, ने भगवानना स्वरूपमां जे वृत्ति रहेछे, ते प्रेमे जुक्त रहेछे ने भजनना करनारामां जे वृत्ति रहे छे, ते तो विचारे जुक्त रहेछे. ने ते वृत्ति जे ते भजनना करनाराने विषे भगवानना भजन विना बिजा जे जे घाट संकल्प थाय छे, ते सर्वने खोटा करी नांखे छे, तथा ते भजनना करनारामां जे दोष ते सर्वने खोटा करी नांखे छे; एवी रीते तेनी वृत्ति भगवान-

मां अखंड रहे छे, अने घडीकतो एकाग्रचित्ते बेसीने भगवाननुं भजन करे ने घडकिमातो चाळा चुंथतो फरे तेने तो एवी स्थिति थाती नथी.जेम पाणीनो घडो भरीने एक ठेकाणे ढोळी आवीए पछे वळी बीजे दिवसे अथवा त्रिजे दिवसे ते ठेकाणे पाणीनो घडो ढोळीए तेणे करीने त्यां पाणीनो घडो भराय नहि,कां जे आगल्या दिवसनुं जळ आगल्ये दिवस सुकाइ जाय ने पाछल्या दिवसनुं पाछल्ये दिवस सुकाइ जाय अने जो आंगळी जेवी नानीज पाणीनी सेर आवती होय तो मोटो पाणीनो घडो भराइ जाय.तेम खातां पीतां,हालतां चालतां, शुभ क्रियाने विषे तथा अशुभ क्रियाने विषे सर्वे काळे भगवानमां अखंड वृत्ति राखवी. पछे एवी रीते भगवानमां अखंड वृत्ति राखतां राखतां एवी दृढ स्थिती थायछे. इतिवचनामृतं.॥ २३॥

संवत १८७६ ना पोस शुदी ६ छठने दिवस संध्या समे श्रीजीमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बारथ ओरडानी ओशरीये ढोलीया उपर विराजता हता, ने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो, ने धोळो खेस पेहेर्यो हतो, तथा गरम पोसनी राती डगली पेहेरी हती, ने धोळो चोफाळ ओढयो हतो, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरीभक्तनी सभा भराईने बेठी हती. पछे श्रीजीमहाराज परमहंस प्रत्ये बो-

ल्या जे,जे रीत्ये ज्ञाने करीने स्थिती थाय छे, ते कहीये छये. ते ज्ञान केवुं छे, तो प्रकृती पुरूपथी पर छे ने ए ज्ञानने विपे स्थिती थाय छे, त्यारे प्रकृती पुरूप ने प्रकृति पुरूपनुं जे कार्य ते कांईए नजरमां आवतुं नथी, ने एनुं नाम ज्ञान प्रलय कहेवाय छे, अने एवी स्थिती थाय छे तेने एक रस चैतन्य भासे छे, ने तेने विपे एक भगवाननी मुरतीज रेहे छे, पण बिजो कोई आकार रेहेतो नथी, अने क्यारेक तो ए प्रकाशमां भगवाननी मुर्त्ति पण देखाय नही एकलो प्रकाशज देखाय छे, ने क्यारेक तो प्रकाश पण देखाय ने भगवाननी मुर्त्ति पण देखाय एने ज्ञाने करीने स्थिती जाणवी. अने जेवी भगवाननी मुर्त्ति प्रगट देखाय छे, ते मुर्त्ति ने विपे अखंड वृत्ति रेहे तेणे करीने एवी स्थिति थाय छे, ने जेने जेवो भगवाननो महिमा समजाणो होय तेना हृदामां तेटलोज प्रकाश थाय छे, ने तेटलोज तेने प्रणवने नाद संभळायछे, ने जेटलो जेने भगवाननो निश्चे ने महिमा समजाय छे, तेने तेटला भुंडा घाटबंध थइ जाय छे, ने ज्यारे भगवाननो निश्चे यथार्थ थाय छे, ने यथार्थ महिमा समजाय छे, त्यारे तेने भुंडा घाट मात्र टळी जायछे, जेम लिंबुनी एक चीरय चुशी होय तो थोडा थोडा दांत अंबाय पण हळवा हळवा चणा चवाय खरा ने जो आखुं लिंबु चुश्युं होय तो चणा चवाय न-

हि, ने मगनो दाणो पराणे चवाय अने जो घणा दिवस चुदया होय तो रांधेलो भात पण चवाय नहि तेम भगवाननो निश्चे ने माहात्म्य रूपी जेने खटाई चडी होय तेनी च्यार अंतःकर्णने दश इंद्रियो रूप जे डाढयो ते सर्वे अंबाई जाय छे, त्यारे ए जीव मन रूप पोतानी डाढये करीने विषयना संकल्प रूपी चणाने चाववाने समर्थ थातो नथी, तेमज चित्त रूप पोतानी डाढये करीने विषयनुं चिंतवन करवा समर्थ थातो नथी, तेमज बुद्धि रूप पोतानी डाढये करीने विषयनो निश्चे करवा समर्थ थातो नथी, तेमज अहंकार रूप पोतानी डाढये करीने विषय संबंधी अभिमान करवा समर्थ थातो नथी, तेमज पंच ज्ञान इंद्रीयो ने पंच कर्म इंद्रियो रूप जे डाढयो छे, ते डाढये करीने ते ते इंद्रियोना विषय रूप जे चणा तेने चाववाने सामर्थ थातो नथी, अने जेने यथार्थ भगवाननो निश्चे न होय ने यथार्थ भगवाननो महिमा जणाणो न होय तेनां इंद्रियो तथा अंतःकर्ण ते पोतपोताना विषय थकि यथार्थपणे निवृति पामतां नथी, अने जे भगवाननुं स्वरूप छे, ते तो मायाने मायाना जे गुण ते थकी पर छे अने सर्वे विकार रहित छे, पण जीवना कल्याणने अर्थे मनुष्य जेवा भासे छे, ते भगवानने विषे जे अल्प मती वाळा छे, ते जेवा जेवा दोष कल्पे छे, ते भगवानने विषे तो एके दोष नथी . पण कल्पनारानी बु-

द्धिमांथी ए दोष कोई काळे टळवाना नहि, तेमां जे भगवानने कामी समजे छे, ते पोते अ-त्यंत कामी थइ जायछे, अने जे भगवानने क्रोधी समजेछे ते पोते अत्यंत क्रोधी थइ जायछे। ने जे भगवानने लोभी समजे छे ते पोते अत्यंत लोभी थइ जायछे; ने जे भगवानने इर्षावा-नसमजे छे ते पोते अत्यंत इर्षावान थइ जायछे, ए आदिक जे जे दोष भगवानने विषे कल्पे छे ते तो जेम सूर्य सामी धुळनी फांट भरीने नाखीये ते पोतानी आंख्यमां पडेछे तेम भगवानने विषे जे जातनो दोष कल्पेछे ते दोष पोताने दुख देछे अने जो पोतामां गमे तेवा भुंडा स्वभाव होय ने जो भगवानने अतिशे निर्दोष समजे तो पोते पण अतिशे निर्दोष थइ जायछे. पछे ब्रह्मानंद स्वामी ए पुछ्युं जे कोइ विषयमां पण पोतानी इंद्रियो तणाती न होय ने अंतःकरणमां पण खोटा घाट थाता न होय ने भगवाननो निश्चे पण यथार्थ छे तो पण अपूर्ण पणुं रहे छे ने अंतर सुनु रहे छे तेनु शुं कारण छे? त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे ए पण हरिभक्तमां मोटी खोट छे जे पोतानुं मन स्थिर थयुं छे ने भगवाननो निश्चे पण अतिशे दृढ छे तोय पण हैयामां अतिशे आनंद आवतो नथी जे हुं धन छुं ने हुं कृतार्थ थयो छुं ने आ संसारमां जे जीव छे ते काम, क्रोध, लोभ, मद, मत्छर आशा तृष्णा तेने विषे हेरान थाय छे अने त्रि-

विंधी तापमां रात्य दिवस बळे छे, ने मुने तो प्रगट पुरुषोत्तमे करूणा करीने पोतानुं स्वरुप ओळखाव्युं छे ने काम क्रोधादिक सर्वे विकारथी रहित कर्यो छे अने नारद सनकादिक जेवा संत तेना समागममां राख्यो छे माटे मारुं मोटुं भाग्य छे, एवो विचार नथी करतो ने आठे पोर अतिशे आनंदमां नथी वरततो ए मोटी खोट छे, जेम बाळकना हाथमां चिंतामणी दिधो होय तेने तेनुं माहात्म नथी, एटले तेनो तेने आनंद नथी, तेम भगवान पुरुषोत्तम मळ्या छे, ने तेना अंतरमां आठे पोर केफ रेहेतो नथी, जे मारुं पुर्णकामपणुं थयुंछे, एवुं नथी समजतो ए हरीना भक्तने मोटी खोड छे, अने ज्यारे कोई हरीभक्तनो दोष नजरमां आवे त्यारे एम समजवुं जे आनो स्वभाव तो सत्संगमां न वटे एवो छे तोय पण एने जो सत्संग मळ्योछे, ने जो जेवो तेवो छे तोय पण सत्संगमां पडयो छे, तो एनो पुर्वजन्मनो अथवा आ जन्मनो संस्कार भारे छे, तो आवो सत्संग मळ्यो छे एम समजीने तेनो पण अतिशे गुण लेवो एम वार्त्ता करीने श्रीजीमहाराज जय सच्चिदानंद कहिने पोताने उतारे पधारया ॥ इति वचनामृतं ॥ २४

संवत १८७६ना पोस शुदि ७ सप्तमिने दिवसे प्रभात समे श्रीजीमहाराज श्रीगढडा

मध्ये दादाखाचरना दरबारमां परमहंसनी जायगाने विषे पधार्या हता, ने धोळो खेस पेर्यो हतो, अने धोळो चोफाळ ओढयो हतो, ने धोळो फेंटो बांध्यो हतो. ने आथमणे परधारे उगमणुं मुखारविंद करीने विराजमान हता, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती. पछे श्रीजीमहाराज कृपा करीने बोल्या जे स्वधर्मे युक्त एवो जे भगवाननो भक्त तेना अंतरने विषे तो पोतानुं यथार्थ पूर्ण कामपणुं मनातुं नथी, ने ते पूर्णकामपणुं तो आत्मनिष्ठाने भगवानना माहात्म्यनुं ज्ञान तेणे करीनेज थाय छे, अने ए बेमां जेटली न्युनता रहेछे तेटली पूर्णकामपणामां न्युनता रहेछे, माटे ए बेवानां तो भगवानना भक्तने दृढपणे साधवां अने ए बेमां जेटली खामी रहे तेटली तो समाधिमां पण नडे छे, अने हमणां आमे एक हरिभक्तने समाधि करावी हती, तेने तेज अतिशे देखाणुं ते तेजने जोईने चिस पाडवा मांडी ने कह्युं जे हुं बळुंछुं माटे समाधि टाळाने पण आत्मज्ञाननुं जरूर काम पडे छे, अने पोतानुं स्वरूप आत्मा न जाणे ने देहने माने तो तेने घणी कच्यप रहि जाय छे. अने आमे ते हरीभक्तने समजाव्युं जे तारु स्वरूप तो आत्मा छे, देह नथी, ने आ लाडकीबाई नाम ने भाटनो देह [illegible] अभेद्य एवो जे आत्मा ते

तारुं स्वरुप छे, पछे अमे तेने समाधि करावीने कह्युं; जे गणपतीने स्थानके च्यार पांखडीनुं कमळ छे, त्यां जईने तारुं स्वरुप जो अने ज्यारे समाधिवाळो गणपतीने स्थानके जाय छे, त्यारे नाद संभळाय छे, ने प्रकाश देखाय छे ने तेथी पर ब्रह्माना स्थानकने विषे जाय छे. त्यारे तेथी नाद पण घणो संभळाय छे, ने प्रकाश पण तेथी अतिशे घणो देखाय छे. अने तेथी पर विष्णुने स्थानके जाय छे, त्यारे तेथी अतिषे नाद संभळाय छे ने तेथी तेज पण अतिशे देखाय छे, एवी रीते जेम जेम उचां उचां स्थानकने विषे जाय छे तेम तेम वधु नाद संभळाय छे ने वधु वधु प्रकाश देखाय छे, अने एवी रीते समाधीमां अतिशे तेज देखाय छे अने अतिशे नाद थाय छे ने कडाका अतिशे थाय छे ते:गमे तेवो धिरजवान होय तो पण कायरपणुं आवी जायछे. जो अर्जुन भगवानना अंश हता ने महाशुरवीर हता तोपण भगवाननुं विश्वरुप जोवाने समर्थ थया नहि.माटे एम बोल्या जे हे महाराज आ रुप जोवाने हुं समर्थ नथी माटे तमारुं जेवुं प्रथम रुप हतुं, तेवुं तमारुं दर्शन करावो एवी रीते एवा समर्थने पण समाधिने विषे ज्यारे ब्रह्मांड फाटी जाय एवा कडाका थाय छे, ने जेम समुद्र मरजादा मेले एवा तेजना समुह देखाय छे, त्यारे धिरज रेहेती नथी. ते सारु देह थकी पोतानुं स्वरुप जु-

छु समज्यु जोइय. अने एवी जे समाधि थाय छे, तेना वे भेद छे, एकतो प्राणायामे करीने प्राणनो निरोध थाय छे, ते भेळो चित्तनो पण निरोध थाय छे. अने बीजो प्रकार ए छे जे चित्तने निरोधे करीने प्राणनो निरोध थाय छे, ते चित्तनो निरोध क्यारे थाय छे तो ज्यारे सर्वे ठेकाणेथी वृत्ति तूटीने एक भगवानने विषे वृत्ति जोडाय ने ते भगवानने विषे वृत्ति क्यारे जोडाय तो ज्यारे सर्वे ठेकाणेथी वासना तूटिने एक भगवानना स्वरूपनी वासना थाय त्यारे ते वृत्ति कोईनी हठावी भगवानना स्वरूपमांथी पाछि हठे नाहि. जेम कोई कुवो होय ने ते उपर विश कोश फरता होय ने तेनो प्रवाह जुदो जुदो चालतो होय त्यारे ते प्रवाहमां जोर होय नहि. अने ते विशे कोशनो प्रवाह भेळो करीये तो नदीना जेवो अतिशे बळवान प्रवाह थाय ते कोईनो हठाव्यो हठे नहि. तेम जे निर्वासनिक थाय छे, त्यारे तेनुं चित छे ते भगवानना स्वरूपमां जोडाय छे. अने जेना चित्तमां संसारना सुखनी वासना होय तेने तो श्रोत्र ईंद्रि द्वारे अनंत जात्यना जे शब्द तेने विषे जुदि जुदि वृत्ति फेलाई जाय छे. तेमज त्वचा ईंद्रि द्वारे हजारु जात्यना जे स्पर्श तेने विषे जुदि जुदि वृत्ति फेलाइ जाय छे. तेमज नेत्र ईंद्रिनी वृत्ति ते हजारु जात्यनां जे रुप तेने विषे फेलाई जाय छे. तेमज रसना ईंद्रिनी वृत्ति

ते हजारू जात्यना जे रस तेमा फेलाइ जाय छे. तेमज नासिका ईंद्रिनी वृत्ति ते अनंत जा-
त्यना जे गंध तेमां फेलाइ जाय छे. तेमज कर्म ईंद्रियोनी वृत्तियुं पण पोतपोताना विषयने विषे
हजारू प्रकारे फेलाइ जाय छे. एवी रीते दशे ईंद्रियो द्वारे एनुं अंतःकरण छे ते हजारू
प्रकारे फेलाइ गयुं छे.ते ज्यारे चित्त ते भगवाननुंज चिंतवन करे अने मन ते भगवाननोज
वाट घडे अने बुद्धि ते भगवानना स्वरूपनोज निश्चे करे अने अहंकार ते हुं आत्मा छुं ने
भगवाननो भक्त छुं एवुंज अभिमान धरे त्यारे एनी एक वासना थई जाणवी. अने प्राणे क-
रीने जे चित्तनो निरोध थाय छे ते तो अष्टांग योगे करीने थाय छे.ते अष्टांग योग तो यम,
नीयम,आसन,प्राणायाम,प्रत्याहार,धारणा,ध्यान ने समाधि ए जे आठ अंग तेणे जुक्त छे,
ने ते अष्टांगयोग ते साधन रूप छे, ने एनुं फळ ते भगवानने विषे निर्विकल्प समाधि छे; ते
ज्यारे एवी निर्विकल्प समाधि थाय छे, त्यारे प्राणने निरोधे करीने चित्तनो निरोध थाय छे,
अने जो ए चित्त निर्वासनिक थईने भगवानने विषे जोडाय छे तो ते चित्तने निरोधे करीने
प्राणनो निरोध थाय छे, माटे जेम अष्टांग योग साधवे करीने चित्तनो निरोध थाय छे,
ने भगवानना स्वरूपने विषे जोडावे करीने चित्तनो निरोध थाय छे.माटे जे भक्तनी चित्तवृत्ति

भगवानना स्वरूपने विषे जोडावे करीने चित्तनो निरोध थाय छे, माटे जे भक्ताने चित वृत्ति भगवानना स्वरूपने विषे जोडाणी तेने अष्टांग योग वगर साधे सधाई रह्यो. माटे अमे कह्युं जे आत्मनीष्टाने भगवानना महात्मनुं ज्ञान ए बे साधन ते द्रढपणे राखवां. अने वर्त्तमान धर्म छे, ते तो भगवाननी आज्ञा छे ते जरूर राखवां. जेम ब्राह्मणनो धर्म छे, जे नावुंधोवुं ने पवित्रपणे रहेवुं ने कोई दिवस शूद्रना घरनुं पाणी पीयेज नहि. तेम सत्संगी होय तेने भगवाननी आज्ञामां फेर पाडवोज नहि केम जे ए भगवाननी आज्ञा पाळे तो तेनी उपर भगवान राजी थाय छे, अने भगवाननुं माहात्म, ज्ञान तथा वैराग्य सहित आत्मज्ञान ए त्रण्यनी अतिशे द्रढता राखवीने पोता ने विषे पूर्ण कामपणुं समजवुं जे हवे मारे कांइ न्युन्यता रहि नथी, एम समजीने निरंतर भगवाननी भक्ति करवी ने ते समजणने केफ करीने छकी पण जावुं नही अने पोताने अकृतार्थपणुं पण मानवुं नहि, अने जो ए अकृतार्थपणुं माने तो एने उपर जे एवी भगवाननी कृपा थई ते जाणे खारा पाटमां बिज वाव्युं ते उग्युंज नहि ने जो छाकी जाईने जेम तेम करवा लागे तो जाणे अग्निमां बिज नाख्युं ते बळी गयुं. माटे अमे कह्युं तेम जे समजे तेने कोई मकारनी न्युन्यता रहे नहि, एम कहिने श्रीजीमहाराज पोताना आसन

उपर पधार्या. ॥ इति वचनामृतम् ॥ २५ ॥

संवत १८७६ना पोस शुदि ११ एकादशीने दिवस बपोरने समे श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीये ढोलीया उपर विराजमान हता, ने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो तथा धोळो खेस पेर्यो हतो, तथा धोळो चोफाळ ओढ्यो हतो, तथा बे कानने उपर गुलदावदीनां मोटां मोटां बे पुष्प खोस्यां हतां, तथा पुष्पनो तोरो पाघने विषे खोस्यो हतो, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशना देशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती, ने परमहंस ताल पखाज लेईने किर्त्तन गावता हता. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे हवे किरतन बोलवां राखो ने अमे आ एक वात रूपी किरतन बोलीये ते सांभळो. पछे परमहंसे कह्युं जे हे महाराज बहु सारु तमो वात करो. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे भगवाननां रसीक किर्त्तन गातां गातां जो एक भगवानना स्वरूपमांज रस जणाय तो ठिक छे, ने जो भगवानना स्वरूप विना बीजे ठेकाणे रस जणाय ते तो एक मोटी खोडय छे, केम जे ए भक्तने जेम भगवानना शब्दमां हेत थाय छे ने ते शब्दमां रस जणाय छे. तेमज गीत वाजित्रना शब्दमां अथवा स्त्री आदिकना शब्दमां रस

जणाय छे ने हेत थाय छे माटे ए भक्तने अविवेकी जाणवो. अने भगवान अथवा भगवानना संत तेनां जे वचन तेने विषे जेवो रस जणाय छे तेवोज विषयना शब्दमां रस जणाय छे. एवी जे ए मुरखता तेनो त्याग करीने एक भगवानने शब्दे करीनेज सुख मानवुं न एवी जातनो जे रसीक भक्त छे ते खरो छे. अने जेम शब्द तेमज स्पर्श पण एक भगवाननोज इच्छे, अने अन्य स्पर्शने तो काळो नाग तथा वळतो अग्नि ते जेवो जाणे त्यारे ते रसीकभक्त साचो. तेमज रूप पण भगवाननुं जोईने परम आनंद पामे ने बीजा रूपने तो जेवो नर्कनो ढगलो तथा सडेल कुतरुं तेवुं जाणे ए रसीक भक्त साचो. तेमज रस पण भगवानना माहाप्रसादनो होय तेणे करीने परम आनंद पामे पण बीजा जे नानाप्रकारना रस तेने स्वादे करीने आनंदने न पामे ते रसीक भक्त साचो. तेमज भगवानने चड्यां एवां जे तुळशी, पुष्पना हार तथा नाना प्रकारनी सुगंधिये युक्त एवां अत्तर चंदनादिक तेनी सुगांधिने ग्रहण करीने परम आनंद पामे पण कोई अन्य वीषयी जीवे देहे अत्तर चंदनादिक चरच्यां होय अथवा पुष्पना हार पेर्या होय तेनी सुगंधने पामीने राजी नज थाय. एवी रीते जे विषय भगवान संबंधि होय तेने विषे अतिशे प्रीतिवान थाय अने जगत संबंधि जे पंच विषय तेने विषे

तिशो अभावे युक्त वरते ते रसिक भक्त साचो छे, अने रसीक भक्त थईने जेम भगवान संबं-
धी विषयने जोगे करीने आनंद पामे छे. तेमज अन्य संबंधी जे शब्द, स्पर्श, रूप, रसने
गंध तेने जोगे करीने जो आनंद पामे छे, तो ए खोटो रसीक भक्त छे, केम जे जेम भग-
वानने विषे आनंदने पाम्यो तेमज विषयने विषे पण आनंद पाम्यो माटे एवा रसीक पणाने ने
एवी उपासनाने खोटी करी नाखवी कां जे भगवान तो कांई खोटा नथी पण एनो भाव खोटो
छे, अने जेवां पदार्थने जाण्यां तेवाज भगवानने पण जाण्या माटे एनी भक्तीने एनुं रसीकपणुं
ते खोटुं कह्युं. हवे जेम स्थुल देहने जाग्रत अवस्थामां पंच विषयनो विवेक कह्यो तेमज सूक्ष्म
देहने स्वप्न अवस्थाने विषे सूक्ष्म पंच विषय छे, ते स्वप्नमां ज्यारे भगवाननी मुर्त्तिने देखीने
ते भगवानं संबंधी शब्द, स्पर्श, रूप, रस ने गंधे करीने जेवो आनंद पमाय तेवोने तेवोज जो
अन्य पंच विषयने देखीने स्वप्नामां आनंद पमाय तो ते भक्तनुं रसीकपणुं खोटुं छे अने स्व-
प्नामां केवळ भगवानने संबंधे करीने आनंद पामतो होय ने अन्य विषयने विषे उलटा अन-
गी पेठे अभाव रेहेतो होय तो ए रसीक भक्त साचो छे, अने ए मनमां जाणतो होय जे
भगवान स्वप्नामां देखाणा ते तो साचा छे, पण ए भक्तने तो जेवो भगवानमां प्रेम तेवो अन्य

विपयमां प्रेम छे, माटे एनी समजण खोटी छे, अने एक भगवानना स्वरूपमां लोभाई रेहे ने बीजा वीपयमां नज लोभाय ते समजण साची छे. अने ज्यारे केवळ भगवाननुंज चिंतवन रहे छे, त्यारे चिंतवन करतां करतां शुन्यभावने पांमी जाय छे, त्यारे ए भक्तने भगवाननी मुर्त्ति विना पिंड ब्रह्मांड कांई भासतुं नथी. पछे एवा शुन्यने विपे भगवाननी मुर्त्तिने जोतां जोतां प्रकाश थई आवे छे, ने ते प्रकाशमां भगवाननी मुर्त्ति देखाय छे, माटे एवी रीते केवळ भगवानना स्वरूपमां प्रिति होय ए पतिव्रतानी भक्ति छे, अने अमे पण ज्यारे तमे रसिक कित्तंन गाओ छो त्यारे आंख्युं मीचीने विचारीये छैये ते आवोज विचार करीये छैये. अने अमारो विचार थोडोज छे, पण भगवान विना ते विचारमां बीजुं कांइ टकि शकतुं नथी, अने भगवानना स्वरूपमांज रसीक प्रीतिछे,ने तेमां जो कांई विपय आडो आवे तो तेनुं माथुं उडी जाय एवो अमारो बळवान विचार छे. अने तमे जेम कित्तंन जोडो राख्युंछे, तेम अमे पण आ वात करी एटलुं ए कित्तंन जोडी राख्युं छे, ते तमो आगळ कह्युं.एम श्रीजी महाराजे पोतानुं मीश लेईने पोताना भक्तने अर्थे वात करी देखाडी. ॥ इति वचनामृतम् ॥ २६ ॥

तिशे अभावे युक्त वर्ते ते रसीक भक्त साचो छे, अने रसीक भक्त थईने जेम भगवान संबं-
धी विषयने जोगे करीने आनंद पामे छे. तेमज अन्य संबंधी जे शब्द, स्पर्श, रूप, रसने
गंध तेने जोगे करीने जो आनंद पामे छे, तो ए खोटो रसीक भक्त छे, केम जे जेम भग-
वानने विषे आनंदने पाम्यो तेमज विषयने विषे पण आनंद पाम्यो माटे एवा रसीक पणाने
एवी उपासनाने खोटी करी नाखवी कां जे भगवान तो कांई खोटा नथी पण एनो भाव खोटो
छे, अने जेवां पदार्थने जाण्यां तेवाज भगवानने पण जाण्या माटे एनी भक्तीने एनुं रसीकपणुं
ते खोटुं कह्युं. हवे जेम स्थुल देहने जाग्रत अवस्थामां पंच विषयनो विवेक कह्यो तेमज सूक्ष्म
देहने स्वप्न अवस्थाने विषे सूक्ष्म पंच विषय छे, ते स्वप्नमां ज्यारे भगवाननी मुर्त्तिने देखीने
ते भगवान संबंधी शब्द, स्पर्श, रूप, रस ने गंधे करीने जेवो आनंद पमाय तेवोने तेवोज जो
अन्य पंच विषयने देखीने स्वप्नामां आनंद पमाय तो ते भक्तनुं रसीकपणुं खोटुं छे अने स्व-
प्नामां केवळ भगवानने संबंधे करीने आनंद पामतो होय ने अन्य विषयने विषे उलटा अन-
नी पेठे अभाव रेहेतो होय तो ए रसीक भक्त साचो छे, अने ए मनमां जाणतो होय जे
भगवान स्वप्नामां देखाणा ते तो साचा छे, पण ए भक्तने तो जेवो भगवानमां प्रेम तेवो अन्य

विपयमां प्रेम छे, माटे एनी समजण खोटी छे, अने एक भगवानना स्वरूपमां लोभाई
ने बीजा वीपयमां नज लोभाय ते समजण साची छे. अने ज्यारे केवळ भगवाननुंज
वन रहे छे, त्यारे चिंतवन करतां करतां शुन्यभावने पांमी जाय छे, त्यारे ए भक्तने भग
नी मुर्त्ति विना पिंड ब्रह्मांड कांई भासतुं नथी. पछे एवा शुन्यने विपे भगवाननी मुर्त्तिने
जोतां प्रकाश थई आवे छे, ने ते प्रकाशमां भगवाननी मुर्त्ति देखाय छे, माटे एवी रीते
वळ भगवानना स्वरूपमां प्रिति होय ए पतिव्रतानी भक्ति छे, अने अमे पण ज्यारे तमे
कित्तन गाओ छो त्यारे आंख्युं मीचीने विचारीये छैये ते आवोज विचार करीये छैये.
अमारो विचार थोडोज छे, पण भगवान विना ते विचारमां बीजुं कांइ टकि शकतुं न.
अने भगवानना स्वरूपमांज रसीक प्रीतिछे,ने तेमां जो कांई विषय आडो आवे तो तेनुं
उडी जाय एवो अमारो बळवान विचार छे. अने तमे जेम कित्तन जोडी राख्युंछे, तेम
मे पण आ वात करी एटलुं ए कित्तन जोडी राख्युं छे, ते तमो आगळ कह्युं.एम श्री
महाराजे पोतानुं मीश लेईने पोताना भक्तने अर्थे वात करी देखाडी. ॥ इति वचन
तम ॥ २६ ॥

संवत १८७६ ना पोस शुदी १२ द्वादशीने दिवस श्रीजीमहाराज दिवस उग्या पेहेलां श्रीगढडो मध्ये दादाखाचरना दरबारमां परमहंसनी जायगाने विषे पधारया हता. अने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो, तथा धोळो चोफाळ ओढयो हतो, तथा खेस पेरयो हतो, ने ओटा उपर अथमणुं मुखारविंद राखीने विराजमान हता. ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंसनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजीमहाराज अर्ध घडी सुद्धि तो पोतानी नासीकाना अग्र सामुं जोई रह्या ने पछे बोल्या जे परमेश्वरने भजवानी तो सर्वने इच्छा छे, पण समजणमां फेर रहे छे, माटे जेनी आवी समजण होय तेना हृदामां भगवान सर्व प्रकारे निवास करीने रेहे छे. तेनी विगत जे जे एम समजतो होय जे आ पृथ्वी जेनी राखी स्थिर रही छे ने डोलावी डोले छे तथा आ तारा मंडळ जेनुं राख्युं अधर रह्युं छे, तथा जेना वरसाव्या मेघ वरसे छे, तथा जेनी आज्ञाये करीने सुर्य चंद्र उदे अस्तपणाने पामे छे, तथा चंद्रमानी कळा वधे घटे छे तथा पाळ्‌वीनानो समुद्र जेनी मरजादामां रहे छे,तथा जळना बिंदुमांथी मनुश उत्पन थाय छे, ने तेने हांथ पग नाक कान ए आदिक दश ईंद्रीयुं थई आवे छे, तथा आकाशने विशे अधर जळ राखी मेल्युं छे. ने तेमां गाजवीज थाय छे. एवा अनंत

...छे, ते सर्वे मुने मळ्या एवा जे भगवान तेनां कर्यां थाय छे एम समजे प
प्रगट प्रमाण जे भगवान ते विना बीजो कोइए आश्चर्यनो करनारो छे एम माने नहि.
अने पूर्वे जे जे अनंत प्रकारनां आश्चर्य थइ गयां छे तथा हमणे जे थाय छे तथा आ
गळ थाशे ते सर्वे मुने मळ्या एवा जे प्रत्यक्ष भगवान ते वतेज थाय छे एम समजे, अने
वळी पोते एम समजतो होय जे चाये कोइ मारि उपरथ धुळ नांखो चाये काइं गमे तेवुं अप
मान करो चाये कोइ हाथीये बेसारो चाये कोइ नाक कान कापीने गधेडे बेसारो तेमां मा-
समभाव छे तथा जेने रूपवान एवि जुवान स्त्री अथवा कुरूपवान स्त्री अथवा वृद्ध स्त्री तेने विषे
तुल्य भाव रहे छे तथा सुवर्णनो ढगलो होय तथा पथरनो ढगलो होय ते बेयने जे तुल्य जाणे
छे एवि जातना ज्ञान, भक्ति वैराग्यादिक जे अनंत शुभ गुण तेणे युक्त जे भक्त होय तेना हृदा-
मां भगवान निवास करे छे, पछे ते भक्त जे ते भगवानने प्रतापे करीने अनंत प्रकारना ऐश्व-
र्यने पामे छे, ने अनंत जिवना उद्धारने करे छे, अने एवि सामर्थि युक्त थको पण अन्य
जिवना मान अमानने सहन करे छे, ए पण मोटी सामर्थि छे, कांजे समर्थ थका जरणा
करवी ते कोयथी थाय नहि एवी रीते जरणा करे तेने अति मोटा जाणवा अने ए समर्थ

तो केवो छे, जे एना नेत्रमां भगवान जोनारा छे, ते माटे ब्रह्मांडमां जेटला जिव प्राणि छे, तेना नेत्रने प्रकाश करवाने ए समर्थ थाय छे, अने एना पगमां चालनारा भगवान छे, ते माटे ब्रह्मांडमां सर्वे जीवना पगने विषे चालवानी शक्तिने पोषण करवाने ए समर्थ थाय छे, एम ए संतनी सर्वे इंद्रियोमां भगवान रह्या छे, ते माटे ए संत तो ब्रह्मांडमां सर्वे जीवुंनी इंद्रियोने प्रकाश करवाने समर्थ थाय छे, माटे ए संत तो सर्वे जगतना आधार रुप छे, ते तुच्छ जिवनुं अपमान सहे ते एमनी अतिशे मोटयप छे. ने एवी रीतनी क्षमावाळा छे. तेज अति मोटा छे. अने जे आंख्युं काढिने पोताथी गरीब होय तेने बिवरावे छे, ने मनमां जाणे जे हुं मोटो थयो छूं पण ए मोटो नथी अथवा सांढाइ देखाडीने लोकने डरावे छे एवा जे जगतमां जिव छे, ते भगवानना भक्त नथी, ए तो मायाना जिव छे. अने जमपूरीना अधिकारी छे, एवानी जे मोटयप छे, ते संसारना मार्गमां छे. जेम संसारमां जेने घोडुं चढवा न होय तेथी जेने घोडुं होय ते मोटो अने एक घोडुं जेने होय तेथी जेने पांच घोडां होय ते मोटो एम जेम जेम अधिक संपति होय तेम संसार व्यहवारमां अति मोटो कहेवाय पण परमेश्वर भ-जनमां ए मोटो नथी. अने जेनी मति एवी होय जे आ स्त्री तो अतिशे रुपवान छे. अने आ

वस्त्र तो अतिशे सारुं छे, अने आ मेडी तो घणी सारी छे, अने आ तुंबडी तो अतिशे सारी छे ने आ पात्र तो अतिशे सारुं छे एवी रीतना जे ग्रहस्थ तथा भेख धारी ते सर्व तुच्छ बुद्धि वाळाछे. त्यारे तमे केशो जे एनुं कल्याण थाशे के नहि थाय तो कल्याण तो पामर जेवो सत्संगमां होय तेनुंए थाय छे, पण मोरे कही एवी जे संतता ते एमां कोइ द हाडे आवती नथी तथा पूर्वे कह्या एवा जे संत तेना जे गुण ते पण एवामां आवता नथी कां जे ए पात्र थयो नथी एम वात करीने जयसच्चिदानंद कहिने श्रीजी महाराज दादाखाचरना दरबारमां पोताने उतारे पधारया॥इति वचनामृतम्॥२७॥

संवत १८७६ ना पोस शुदि १४ चउदशने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना ओरडानी हारे जे ओरडो तेनी ओशरीये ढोलीया उपर विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधुने जमवानी पंक्ति थइ हती ते समे श्रीजी महाराज बोल्या जे जे सत्संगी सत्संगमांथी पाछो पडवानो होय तेने असद्वासनानी वृद्धि थाय छे ने तेने प्रथम तो दिवसे दिवसे सत्संगी मात्रनो अवगुण आवेछे ने पोताना हैयामां एम जाणे जे सर्व सत्संगी तो अण-

विराजमान हता, ने धोळो खेस पेर्यो हतो; ने धोळी चादर ओढ हता ने माथे धोळो फेटो बांध्यो हतो, ने धोळा पुष्पना हार पेर्या हता ने पाघने विषे धोळा पुष्पनो तोरो लटकतो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजिमाहाराज बोल्या जे प्रश्न पुछो, त्यारे गोपालानंद स्वामीये पुछ्युं जे धर्म ज्ञान वैराग्य सहित जे भक्ति तेनुं बळ वृद्धिने केम पामे? त्यारे श्रीजिमहाराज बोल्या जे एना उपाय चार छे, एक तो पवित्र देश, बीजो रुडो काळ, त्रिजो शुभ क्रिया अने चोथो सत पुरुषनो संग तेमां क्रियानुं समर्थपणुं तो थोडुं छे; ने देशकाळने संगनुं कारण विशेष छे, केम जे जो पवित्र देश होय, पवित्र काळ होय ने तम जेवा संतनो संग होय तो त्यां क्रिया रुडीज थाय. अने जो सिंध जेवो भुंडो देश होय तथा भुंडो काळ होय तथा पातर्युंने भडवा अथवा दारु मांसना भक्षण करनारा तेनो संग थाय तो क्रिया पण भुंडिज थाय. माटे पवित्र देशमां रहेवुं अने भुंडो काळ वर्त्ततो होय त्यांथी आगुं पाछुं खशि निसरवुं अने संग पण प्रभुना भक्तने पंच वर्त्तमाने युक्त एवा जे ब्रह्मवेत्ता साधु तेनो करवो, तो हरिभक्तने परमेश्वरनी जे भक्तिनुं बळ ते अतिशे वृद्धि पामे ए प्रश्ननो उत्तर छे. पछे मुक्तानंद स्वामीये पुछ्युं जे हे महा-

सगडु छे ने हुं समजुं छुं एम सर्वथी अधिक पोताने जाणे ने रात्री दिवस पोताना हैयामां मुझाया करे अने दिवसमां कोइ ठेकाणे सुखे करीने बेसे नहि ने रात्रीमां सुवे तो निद्रा पण आवे नही ने आवे तो क्यारे मटेज नहि ने अधबळेला काष्टनी पेठे धुंधवाया करे एवुं जेने वरते त्यारे तेने एम जाणीए जे ए सत्संगमांथी पडवानो थयो छे ने एवो होय ने ते जेटला दिवस सत्संगमां रहे तेटला दिवस पण तेना हइयामां कोइ दिवस सुख आवे नहि ने अंते पाछो पडी जायछे, अने सत्संगमां जेने वधारो थवानो होय तेने शूभ वासना वृद्धि पामेछे त्यारे तेने दिवसे दिवसे सत्संगी मात्रनो हैयामां गुणज आवे अने सर्व हरीभक्तने मोटा समजे ने पोताने न्युन समजे ने आठेपाहोर तेना हैयांमां सत्संगनो आनंद वरत्या करे एवां लक्षण ज्यारे होय त्यारे जाणीये जे शूभ वासना वृद्धि पामी छे ने ते जेम जेम वधु वधु सत्संग करेछे तेम तेम वधुं वधु समास थातो जायछे ने अतिशे मोटपने पामी जाय छे एवी रीते श्रीजी महाराज वात करी ने जयसच्चिदानंद कही ने पोताने आरुने पधार्या॥ इति वचनामृतं॥ २८॥

संवत १८७६ना पोसशुदी १५ पुन्यमने दिवस सांजने समे श्रीजी माहाराजश्री गढडा मध्ये दादखाचरना दरबारमां आथमणे बारय ओरडानी ओशरिये ढोलीया उपर

विराजमान हता, ने धोळो खेस पेर्यो हतो, ने धोळी चादर ओढि हती ने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो, ने धोळा पुष्पना हार पेर्या हता ने पाघने विषे धोळा- पुष्पनो तोरो लटकतो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजिमाहाराज बोल्या जे प्रश्न पछो, त्यारे गोपालानंद स्वामीये पुछ्युं जे धर्म ज्ञान वैराग्ये सहित जे भक्ति तेनुं बळ वृद्धिने केम पामे? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे एना उपाय चार छे, एक तो पवित्र देश, बीजो रुडो काळ, त्रिजो शुभ क्रिया अने चोथो सत पूरुषनो संग. तेमां क्रियानुं समर्थपणुं तो थोडुं छे, ने देशकाळने संगनुं कारण विशेष छे, केम जे जो पवित्र देश होय, पवित्र काळ होय ने तम जेवा संतनो संग होय तो त्यां क्रिया रुडीज थाय. अने जो सिंध जेवो भुंडो देश होय तथा भुंडो काळ होय तथा पातरयुंने भडवा अथवा दारु मांसना भक्षण करनारा तेनो संग थाय तो क्रिया पण भुंडिज थाय. माटे पवित्र देशमां रहेवुं अने भुंडो काळ वरततो होय त्यांथी आनुं पाछुं खसि निसरवुं अने संग पण प्रभूना भक्तने पंच वर्त्तमाने जुक्त एवा जे ब्रह्मवेत्ता साधु तेनो करवो, तो हरिभक्तने परमेश्वरनी जे भक्तिनुं बळ ते अतिशो वृद्धि पामे ए प्रश्ननो उत्तर छे. पछे मुक्तानंद स्वामीयें पुछ्युं जे हे महा-

राज कोइक हरिभक्त तेने प्रथम तो अंतर गोबरं सरखुं होय ने पछे तो अतिशे शुद्ध थइ जाय छे, ते एने कोइ पुर्वनो संस्कार छे तेणे करीने एम थयुं, के भगवाननी कृपाये करीने एम थयुं, के ए हरीभक्तने पुरूप प्रयत्ने करीने थयुं? पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे पूर्वने संस्कारे करीने जे सारु अथवा नरसुं थाय ते तो सर्व जगतना जांण्यामां आवे. जेम भरतजीने मृगलामां आसक्ति थइ एवे ठेकाणे प्रारब्ध लेवाय अथवा कोइ कंगाले होय ने तेने मोटुं राज्य मळे, एवी रीत्ये थाय ते तो सर्व जगतना जांण्यामां आवे त्यारे तेने तो प्रारब्ध जांणवुं पछे श्रीजीमहाराजे पोतानी वात करी जे अमे जे जे साधन करयां हतां तेने विषे कोइ रीते देह रहेज नहि ने तेमां पण देह रह्यो तेने प्रारब्ध कैये.ते शुं तो अमे श्री पुरूपोत्तम पुरीमां रहेता त्यारे केटलाक मास सुद्धि तो वायु भक्षण करीने रह्या तथा त्रण्य च्यार गाउना पहोळा पाटवाळी एक नदी हती तेने विषे एकवार शरीर तणातुं मेल्युं तथा सीयाळो, उनाळो ने चोमासु तेने विषे छाया विना एक कोपिनभर रहेता तथा झाडिने विषे वाघ हाथी तथा अरणापाडा तेनी भेळे फरतां एवां एवां अनंत विकट ठेकाणां तेने विषे फरया तोय पण कोइ रीते देह पडयो नहि त्यारे एवे ठेकाणे तो प्रारब्ध लेवुं;अने जेम सांदिपनी नामे ब्राह्मण तेनो पत्र

जे ते नर्कथी मुकाणो अने वळी जेम पांच वर्षना ध्रुवजिये भगवाननी स्तुती करवा मांडी त्यारे वेदादिक अर्थनी सेहेजे स्फुर्ति थइ एवी रीते अति शुद्ध भावे करीने प्रसन्न थया जे भगवान तेनी इच्छाये करीने तथा ते भगवानने वरदाने करीने अथवा अति शुद्ध भावे करीने प्रसन्न थया जे भगवानना एकांतिक साधु तेना वरदाने करीने जे रुडी बुद्धि थाय तेने भगवाननी कृपा जाणवी अने रुडा साधुनो संग करीने पोते पोताने विचारे करीने पोताने समास थाय तेने तो पुरुष प्रयत्न कहिये एम वार्त करीने जय सच्चिदानंद कहिने श्रीजीमहाराज हसता हसता पोताने आसने पधारया. ॥ इति वचनामृतम् ॥ २९ ॥

संवत १८७६ ना पोस शुदि १ पडवाने दिवस सांजना श्रीजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिरने हारे उत्तरादे बार ओरडो छे तेनि ओसरिये ढोलीया उपर विराजमान हता, ने धोळो खेस पेरयो हतो ने धोली चादर ओढी हती ने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने धोळा पुष्पनो हार पेहेरया हता ने बे काने विषे धोळा पुष्पना गुच्छ खोसा हता ने पाघने विषे धोळा पुष्पना तोरा लटकता हता ने धोळा पुष्पना बेरखा पेरया हता. ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी मंडळ तथा देश देशना

च. हरीभक्तनी सभा भराइने बेठी हतो ने मुनी मंडळ किर्तन बोलतो हतो, पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे हवे तो प्रश्न-उत्तर करो, त्यारे श्रीजी महाराज प्रत्ये दिनानाथ भटे पूछ्युं जे हे म हाराज कोइक समे तो हजारुं घाट थाय पण तेनो मनने विषे डंस बेसे नही अने कोइक स में तो अल्प घाट थाय तेनो मनने विषे डंस बेसे तेनुं कारण शुं छे? अने भगवानना भक्तने ए मनना घाटनी निवृति थयानो उपाय शो छे? त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे एनुं कारण तो गुण छे. ते ज्यारे तमो गुण प्रधान होय ने तेमां घाट थाय त्यारे सुषुप्ति सरखी अवस्था रहेती होय माटे तेमां घाटनो डंस बेसे नहीं, अने ज्यारे सत्वगुण वरततो होय त्यारे प्रकाश जेवुं वरते ने ते समे जे जे घाट थाय तेने विचारे करीने खोटा करी नांखे माटे ते घाटनो पण डंस बेसे नहि. अने ज्यारे रजोगुण वरते त्यारे जे घाट थाय ने तेनो मनने विषे डंस बेसे माटे डंस बेसे छे ने नथी बेसतो तेनुं कारण तो गुण अने बुद्धिवान होय तो आ वातने विचारीने जे समे घाट थाय ते समे ते घाट सामुं जुवे तो पोतामां जे गुण प्र धान वरततो होय तेने ओळखे अने घडि घडि पळपळमां सुक्ष्म घाट थायछे ते तो कोइना ओळख्यामां आवे नहि ने जय जेवा मोटा कल्पिराज होय ते आवा दिनमां बे त्रण चार

... आळस्यामा आवे अने जे गुणने प्रधानपणे ... थाय नहि अने तो ...
सामी द्रष्टि राखे अने सत्संगमां जे भगवाननी वार्त्ता थाय तेने धारया विचारया करे तो आ
सत्संगनो प्रताप पण एवो छे जे जे गुणना घाट थाता होय ते घाटनी तेने निवृति थइ जायछे ने
तेने निरुत्थान थइने अखंड परमेश्वरना स्वरुपनुं चितवन थाय छे, अने सत्संग विना ...
कोटि साधन करे पण तेने घाटनी ...
निष्कपटपणे ... सत्संग करे ने परमेश्वरनी वार्त्ताने धारे विचारे तो ए मलिन घाटनो नाश
थाय छे, माटे सत्संगनो प्रताप तो अतिशे मोटो छे, अने बिजां साधन छे, ते कोई सत्संग
तुल्य थाय नहि कांजे कोई शाधने करीने जे घाटनी निवृत्ति नथी थाति तेनी निवृत्ति सत्संगमां
थाय छे, ते कारण पणा माटे जेने रजोगुण संबंधी मलिन घाट टाळवा होय तेने मन कर्मन-
चने निष्कपटपणे सत्संग करवो तो सत्संगना प्रतापथी ए घाटनी निवृत्ति थइ जाशे. ॥
इति वचनामृतम् ॥ ३०

संवत १८७६ ना पोश वदि २ बिजने दिवस सांजने समे श्रीजिमहाराज श्रीगढडा
मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताने उतारे उगमणे बार ओरडानी ओशरिये गादि तकि-

... पातामां वाट थती होय

सोमां द्रष्टि राखे अने सत्संगमां जे भगवाननी वार्त्ता थाय तेने धारणा विचारणा करे तो सत्संगनो प्रताप पण एवो छे जे जे गुणना घाट थाता होय ते घाटनी तेने निवृति थइ जाय छे तेने निरुत्थान थइने अखंड परमेश्वरना स्वरूपनुं चितवन थाय छे, अने सत्संग विना तो कोटि साधन करे ... [illegible]

... जन्म थयो त्यांथी प्रथम तो एणे एक स्त्री मारी, त्यार पछी बगलो मार्‍यो वाछडो मार्‍यो, ने मधना पुडा उखेड्या तेणे करीने एने मधुसुदन कहे छे पण एणे कांइ म नामे दैत्य मार्‍यो नथी ने वर्णसंकर एवा जे पांडव तेणे पूज्यो तेणे करीने शुं ए भगवान यो? एवी रीते भगवानने भगवानेना भक्तनो अवगुण आसुरी बुद्धि वाळो शीशुपाळ ते लिधो पण भगवानना भक्त हता तेणे एवो अवगुण कांइ न लिधो माटे एवी जातनो जेने अवगुण आवे तेने आसुरी बुद्धि वाळो जाणवो, त्यारे फरीने ते हरिभक्ते पूछयुं जे हे महाराज मोटा जे प्रभुना भक्त होय तेनो तो अवगुण आवे नही पण जेवो तेवो हरिभक्त होय तेनो अवगुण तो आवे खरो, पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेम तमे समजो छो तेम नानप मोटाप नथी. मोटप तो प्रत्यक्ष भगवानना निश्चये करीने तथा ते भगवाननी आज्ञाने विषे वरतवे करीने छे.

च. ने ए बे वानां जेने न होय ने ते गमे तेवो व्यवहारे करीने मोटो होय तो पण ए नानोज छे, अने ए प्रथम कही एवी मोटाप तो आज आपणा सत्संगमां सर्वे हरिभक्तने विषे छे केम जे आज ए सर्वे हरिभक्त छे, ते एम समजे छे जे अक्षरातीत एवा जे पुरुषोत्तम ते अमने प्रत्यक्ष मळ्या छे ने अमे कृतार्थ थया छैये एम समजीने प्रत्यक्ष भगवाननी आज्ञामां रह्या थका ते भगवाननी भक्ति करे छे, माटे एवा जे हरिभक्त तेनो कांइक देह स्वभाव जोइने तेनो अवगुण लेवो नहि अने जेने अवगुण लीधानो स्वभाव होय तेनी तो आसुरी बुद्धि थइ जाय छे.

॥ इति वचनामृतम् ॥ ३१ ॥

संवत १८७६ ना पौस वदि ३ त्रिजने दिवस प्रभात समे श्रीगढडा मध्ये श्रीजिमहाराज दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बार ओरडानी ओशरीये ढोलीया उपर विराजमान हता. ने धोळो खेस पेर्यो हतो, ने माथे धोळी पाघ बांधी हती, ने धोळी चादर ओढी हती, ने ललाटने विषे केसरनी आडय करी हती, ने धोळा पुष्पनो हार पेर्यो हतो ने पाघने विषे धोळा पुष्पनो तोरो लटकतो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, ने कीर्त्तन गावता हता. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे

सांभळो एक प्रश्न करीये त्यारे मुनी तथा हरीभक्ते कह्युं जे हे महाराज, पुछो. पछे श्रीजी
महाराज घणीकवार सुधी विचारीने बोल्या जे आ संसारमां जे विपइ जीवहोय ते पंच विषय
विना रही शके नहि ते जेम ए विमुख जीवने पंच विषय छे, तेम हरीजनने पण पंच विषय
पण तेमां भेद छे ते भेद केम छे तो विपइ जीव तो भगवान विना अन्य जे ग्राम्य विषय तेने
भोगवे छे,ने भगवानना भक्त छे तेने तो भगवाननी कथा सांभळवी तेज श्रोत्रनो विषयछे अने
भगवानना चरणारविंदनो स्पर्श करवो अथवा संतना चरणनी रजनो स्पर्श करवो ते त्वचानो
विषय छे, ने भगवाननां अथवा संत तेनां दर्शन करवां ते नेत्रनो विषय छे, अने भगवाननो
प्रसाद लेवो तथा भगवानना गुण गावा ते जिभनो विषय छे, अने भगवानने चडयां एवां
पुष्पादिक तेनी सुगंधि लेवी ते घ्राणनो विषय छे, एवी रीते विमुखने हरीभक्तना विषयमां भेद
छे, अने एवी रीतना विषय विना तो हरीभक्ते पण रेवातुं नथी अने नारद सनकादिक जेवा
अनादी मुक्त छे, तेमणे पण एवा पांच विषय विना रहेवातुं नथी, ते समाधिमां घणा काळ
रहे छे पण ते समाधिमांथी नीकळीने भगवाननी कथा कितन श्रवणादिक विषयने भोगवे छे.
अने जेम पक्षी होय ते पोताना माळाने मुकीने चरवा निकळे छे ते चारो करीने रात्री सा

वच पोतपोताना माळामा जइने विराम करे छे, पण पोतपोताना स्थानकने कोइ दिवस भुलीने बी-
जाने स्थानके जतां नथी तेम भगवाननो भक्त छे, ते भगवाननी कथा किर्त्तन श्रवणादिक एवो
जे चारो तेने चरीने पोतानो माळो जे भगवाननुं स्वरूप तेमां जइने विराम करे छे. अने वळी
पशु पक्षी सर्वे जीव जेम पोतपोतानो चारो करीने पोतपोताने स्थानके जइने विराम करे छे,
तेम मनुष्य पण जे जे कारज होय तेने अर्थे देशविदेशे जाय छे पण पोताने घेर आवे छे,
त्यारे निरांत करीने बेसे छे. ए सर्वे दृष्टांत सिद्धांत कह्यां ते उपर तमे सर्वे हरिभक्तने आमे
प्रश्न पुछिये छैये जे जेम विमुख जीव ग्राम्य पंच विषयमां बंधाणा छे ने ते विषय विना पळ-
मात्र चालतुं नथी तेम तेम भगवाननी कथा वारतानुं जे श्रवणादिक ते रूपी जे विषय तेमां
दृढपणे बंधाइने एना विषय थया छो के नहि? अने वळी बीजुं प्रश्न पुछिये छैइये जे जेम
पक्षि चारो करीने पोताना माळामां आवे छे तेम तमे सर्वे भगवाननी कथा किर्त्तनादिक रु-
पियो चारो करीने पाछा भगवानना स्वरूप रूपी माळामां विराम करोछो के बिजे ज्यां त्यां
विराम करो छो? अने वळी जेम धणियातुं ढोर होय ते सीममां चरीने सांजे पोताने खिले
आवे छे ने जे हरायुं ढोर होय ते खिले आवे नहि ने जेनुं तेनुं खेतर खाइने ज्यां त्यां बेशी

रहे, पछे कोक धोका मुके कां वाघ आवे तो मारे तेम तमे ते धणियाता ढोरनी पेठे पोताने खिले आवो छो के हराया ढोरनी पेठें कोइनुं खेतर खाइने ज्यां त्यां बेसीने विराम करो छो? ए सर्वे प्रश्ननो उत्तर पोताना अंतरमां विचारीने मोटा मोटा हो ते करो. पछे मुनी तथा हरीभक्त सर्वे जुदा जुदा बोल्या जे हे महाराज भगवाननी कथा कित्तंनादिकना विषइ पण थया छैये, ने भगवाननी मुर्त्ति रुपी जे माळो तथा खिलो तेने मुकीने बिजे ठेकाणे रहेता पण नथी ते वारताने सांभळीने श्रीजीमहाराज घणुं प्रसन्न थया. अने वळी तेने ते दिवसे बपोर नमते श्रीजीमहाराज दादाखाचरना दरबार वच्ये लींमडा तळे ढोलीया उपर बिराजमानहता ने पोतांना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, पछे श्रीवासुदेवनारायणना मंदिर सनमुख विराजमान हता, ने मुनी कित्तंन बोलता हता. पछे श्रीजीमहराज बोल्या जे हवे तो प्रश्न उत्तर करो. पछे दिनानाथ भटें तथा ब्रह्मानंद स्वामीये पुछ्युं जें कोइ समे तो भगवानना भक्तना हृदामां आनंदथी भगवाननुं भजनस्मरण थाय छे ने भगवाननी मुर्त्तिनुं चितवन थाय छे अने कोइ समे तो अंतर डोळाइ जाय छे ने भजन स्मरणनुं सुखआवतुं नथी तेनुं शुं कारण छे? त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे एने भग-

वच. ाननी मूर्त्ति धार्यानी जुक्ति आवडती नथी, त्यारे मुक्तानंद स्वामीये पुछ्युं जे
केवी रीते जुक्ति जाणवी, त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे जुक्ति तो एम छे जे
अंतःकरणने विषे गुणनो प्रवेश थाय छे ते ज्यारे सत्वगुण वरततो होय त्यारे
अंतःकर्ण निर्मळ वरते ने भगवाननी मूर्त्तिनुं भजन स्मर्ण सुखे थाय ने ज्यारे रजोगुण वरते
त्यारे अंतःकरण डोळाइ जाय ने घाट संकल्प घणा थाय ने भजन स्मरण सुखे थाय नहि
अने ज्यारे तमोगुण वरते त्यारे तो अंतःकरण शुन्य वरते, माटे भजनना करनाराने गुण अ-
वगुण ओळखवा, ने जे समे सत्वगुण वरततो होय ते समे भगवाननी मूर्त्तिनुं ध्यान करवुं,
अने तमोगुण वरते त्यारे कशो घाट थाय नहि ने शून्य सरखुं वरते तेमां पणभगवाननुं ध्या-
न न करवुं,अने ज्यारे रजोगुण वर्त्ततो होय त्यारे घाट संकल्प घणा थाय माटे ते समे भग-
वानुं ध्यान करवुं नहि. ने ते समे तो एम जाणवुं जे हुं तो संकल्प थकी जुदो छुं ने आ-
त्मा छुं ने ए संकल्पनो जाणनारो छुं ने ते मारे विषे अंतरजामी रुपे पुरुषोत्तम भगवान स-
दा काळ विराजे छे, अने ज्यारे रजोगुणनो वेग मटी जाय त्यारे भगवाननी मूर्त्तिनुं ध्यान क-
रवुं अने रजोगुण वरततो होय त्यारे संकल्प घणा थाय ते संकल्पने तोडवे [illegible] नहि के.

म जे अंतःकरण तो जेवुं नानुं छोकरूं तथा वांदरूं तथा कुतरूं तथा बाळकनो रमाडनार तेवुं छे ने ए अंतःकरणनो एवो स्वभाव छे ते विनाप्रयोजन चाळां कर्यां करे, माटे जेने भगवाननुं ध्यान करवुं तेने अंतःकरणना घाटने मानवा पण नहि ने पोताने ने अंतःकरणने जुदुं मानवुं. अने पोताना आत्माने जुदो मानीने भगवाननुं भजन करवुं॥इतिवचनामृतम्॥

संवत १८७६ ना पोस शुदि ५ पंचमीने दिवस पाछलो पोर दिवस हतो त्यारे श्रीजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिरनी जोडे जे ओरडो तेनी ओसरिये उगमणे मुखारविंदे ढोलीया उपर विराजमान हता, ने धोळो खेस पेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती ने माथे कसबी रंगना छेडानो फेंटो बांध्यो हतो. ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरीभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ते समे मुक्तानंद स्वामीए प्रश्न पूछयो जे भगवानने प्रसन्न करवानां साधन अनंत प्रकारनां शास्त्रमां कह्यां छे पण ते मध्ये एवुं एक साधन कियुं बळवान छे जे समग्र साधन करे जेवा भगवान प्रसन्न थाय तेवा एक साधने करीने भगवान राजी थाय ते एवो एक उपाय कहो? त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे एकज साधने करीने भगवान राजी थाय ते कहीए ते सांभळो. जे

भगवाननो जेने इष्ट आशरो एज एक सर्व साधनमा मोटुं साधन छे तेणे करीने भगवान राजी थाय छे ने ते आशरो अति दृढ जोइये. जेने विषे कांइ पोल्य रहे नहि. ते आशरामां त्रण भेद छे, एक मूढपणे करीने भगवाननो निश्चे थाय छे. ते अति मूढ होय तेने ब्रह्मा जेवो होय ते निश्चेमां डोलावे तोय पण डोले नहि; अने बीजो प्रकार ए छे जे भगवानमां जे प्रीती, तेणे करीने भगवाननो दृढ आशरो थाय छे ते जेने दृढ प्रीति होय ते परमेश्वरने मुकिने बिजा पदार्थमां जोरावरी प्रीति करे तोय पण थाती नथी एवी रीते जेने दृढ प्रीति होय ते प्रीतिये करीने भगवाननो दृढ आशरो कहेवाय छे, अने त्रीजो प्रकार ए छे जे जेने बुद्धि विचाळा होय ते भगवाननुं सगुण निर्गुण पणुं तथा अन्वयव्यतिरेक पणुं तेने समजतो होय अने भगवाननी माया थकी जे जे सर्ग थयो छे तेने समजतो होय अने भगवानना जे प्रथीने विषे अवतार थाय छे तेनी रीतने समजतो होय अने जगतनी उत्पत्ति काळे भगवान जे प्रकारे अक्षर रूपे वरते तथा पुरुष प्रकृति रूपे वरते छे तथा विराट पुरुष रूपे वरते छे तथा ब्रह्मादिक प्रजापति रूपे वरते छे तथा जिवना कल्याणने अर्थे नारद सनकादिक रूपे वरते छे ए सर्व रीतने समजतो [illegible] निर्विकार समजतो होय एवी रीते जेनी द्र

प्रियोपोचताहोय ते बुद्धियें करीने भगवाननो द्रढ आशरोछे ते त्रिजानो टाळ्यो टळेनहि अने भगवान मनुष्य देहने ग्रहण करीने समर्थपणे अथवा असमर्थपणे वरतता होय तो तेने देखीने तेनी बुद्धिने विषे भ्रांति थाय नहि. एम कहिने पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे कहो तो तमने एक प्रश्न पुछुं, त्यारे मुक्तानंद स्वामी बोल्या जे पुछो महाराज. पछे एम पुछयुं जे अमे वर्ण्यां ते त्रण्ये अंग तेमां तमारुं कियुं अंग छे, अने ए त्रण्ये अंग भगवानना भक्तने मिश्रीत होय पण तेमां जे अंग प्रधान होय तेनुं ते अंग केहेवाय माटे सुढपणुं, प्रिति ने समजण ए त्रण्ये अंग तेमां तमारुं कियुं अंग छे? पछे मुक्तानंद स्वामी तथा ब्रह्मानंद स्वामी बोल्या अमारे तो समजणनुं अंग छे अने बीजा साधु पण जेने जे अंग हतां ते कह्यां ॥ इति वचनामृतम् ॥ ३३ ॥

संवत १८७६ ना पोस वदि ११ एकादशीने दिवस सवारमां श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां आथमणे बार ओरडानी ओसरीयें ढोलीया उपर दक्षणातुं मुखारविंद राखीने विराजमान हता अने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळो चोफाळ ओढ्यो हतो ने माथे धोळी पाघ बांधी हती ने फुलना हार पहेर्या हता ने पाघ

विषे पुष्पना तथा हिरना तोरा लटकता मुक्या हता ने बे कानमी उपर पुष्पना गुच्छ खोशा हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने मुनी वाजींत्र लइने किर्तन गाता हता, पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे कित्तंन राखीने प्रश्न उत्तर करो. पछे ब्रह्मानंद स्वामीये पुछयुं जे सर्व सुखना धामने सर्व थकी पर एवा जे परमेश्वर छे तेमां जिवनी वृत्ति चोटती नथी ने माइक एवा जे नाशवंत तुच्छ पदार्थ तेमां जीवनी वृत्ति चोटती जाय छे तेनुं शुं कारण छे? पछे तेनो उत्तर मुक्तानंद स्वामी करवा लाग्या पण थयो नहि. त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ए प्रश्ननो उत्तर सांभळो अमे करीये छैए जे जे दिवसथी परमेश्वरे आ जगतनी सृष्टि करी छे ते दिवसथी एवीज कळ चडावी मुकी छे, जे फरीने परमेश्वरने दाखडो करवो पडे नहि ने संसारनी जे वृद्धि करवी ते पोतानी मेळेज थया करे एवो फेर चडावो मुक्यो छे ते माटे सहेजे स्त्रीमां पुरुषने हेत थाय छे ने पुरुषमां स्त्रीने हेत थाय छे, ने ए स्त्रिथी उपजी जे प्रजा तेमां पण सहेजे हेत थाय छे, ने ए हेत रूपी भगवाननी मायाछे ते मायाना प्रवाहमां जे न वहे तेनी वृत्ति भगवानना स्वरूपमां रहे छे, माटे जे भगवानना भक्त होय ते माइक पदार्थने विषे दोष बुद्धि राखीने वैराग्यने पामे ने भ-

गवानने सर्व सुखमय जाणीने भगवानमां वृत्ति राखे. अने जो माइक पदार्थने विषे वैराग्य न राखे ने भगवानना स्वरूपथी जुदा पडे तो शिव ब्रह्माने नारदादिक ए जेवा समर्थ मुक्त होय ते पण माइक पदार्थमां तणाइ जाय छे, तेटला माटे भगवानने मुकीने माइक पदार्थनो संग करे तो जरूर तेमां जिवनी वृत्ति चोटी जाय ते सारू परमेश्वरना भक्तने परमेश्वर विना बिजे कोइ ठेकाणे प्रीती राखवी नहि. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे हवे मुक्तानंद स्वामीने प्रश्न करवानो वारो आव्यो ते प्रश्न करो. पछे श्री मुक्तानंद स्वामीए पुछयुं जे जीवने भगवाननी प्राप्ति थावी ते अति दुर्लभ छे अने भगवाननी प्राप्ति थइ त्यारे एथी बीजो मोटो लाभ पण नथी ने तेथी आनंद पण बीजो नथी ते एवा मोटा आनंदने मुकीने तुच्छ पदार्थ सारू केम क्लेशने पामे छे ए प्रश्न छे. त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ल्यो एनो उत्तर करीये. जे परमेश्वरना वचनने मुकिने ज्यारे आडो अवळो डोले छे, त्यारे क्लेशने पामे छे अने जो वचनने विषे रेहे छे तो जेवो भगवाननो आनंद छे तेवा आनंदमां रहे छे ने जेटलुं जे भगवाननुं वचन लोपे छे तेटलो तेने क्लेश थाय छे; माटे त्यागीने जे जे आज्ञा करी छे, ते प्रमाणे त्यागीने रेहेवुं ने ग्रहस्थने जे प्रमाणे आज्ञा करी छे, ते प्रमाणे ग्रहस्थने रेहेवुं ने तेमां जेटलो फेर पडे

छे तेटलो क्लेश थाय छे, अने त्यागी होय तेने अष्ट प्रकारे स्त्रीनो त्याग राखवो त्यारे तेनु ब्रह्मचर्य व्रत पूरु केवाय ने तेमांथी जेने जेटलो फेर पडे तेने तेटलो क्लेश थाय छे, अने ग्रहस्थने पण ब्रह्मचर्य कह्युं छे जे परस्त्रीनो त्याग राखवो तथा पोतानी स्त्रीनो पण व्रत्तने दिवस त्याग राखवो, ने ऋतु समेज स्त्रीनो संग करवो. ए आदिक जे जे त्यागीने ने ग्रहस्थने नियम कह्या छे, तेमां जेने जेटलो फेर पडे तेने तेटलो क्लेश थाय छे, अने भगवानथी जे विमुख जीव होय तेने जे सुख दुख आवे छे ते तो पोताने कर्मे करीने आवे छे ने जे भगवाननां भक्त होय तेने जेटलुं सुख दुख थाय छे, ते कर्मनुं पेरयुं थातुं नथी, भगवानना भक्तने तो जेटलुं दुख थाय छे, ते भगवाननी आज्ञा लोपवे करीने थाय छे, ने जेटलुं सुख थाय छे, ते भगवाननी आज्ञाने पाळवे करीने थाय छे॥ इति वचनामृतं ॥ ३४ ॥

संवत १८७६ ना पोस वदि १२ द्वादशीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजि महाराज श्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिर आगळ लिंबडाना झाड तळे ढोलीयां उपर उगमणे मुखारविंदे विराजता हता, अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनीनी सभा तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने

बेठा हता. पछे श्रीजीमहाराज मुनी प्रत्ये बोल्या जे तमे प्रश्न पुछो, का अमे पुछीये.त्यारे मु-नीए कह्युं जे हे महाराज तमे पुछो, पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे कोइ पुरुष छे तेमां थोडि बुद्धि छे तोपण पोताना कल्याणने अर्थे जे जतन करवुं तेमांथी पाछो पडतो नथी अने कोइ बिजो पुरुष छे, तेमां बुद्धि तो घणी छे अने मोटा मोटामां पण खोड काढे एवो छे, तोय पण ते कल्याणने अर्थे मार्गे चालतो नथी तेनुं शुं कारण छे? त्यारे मुनीये उत्तर करवा मांडयो पण श्रीजीमहाराजे आ शंका करी ते उत्तर न थयो पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ल्यो अमे उत्तर करीये.जे एमां बुद्धि तो झाझी छे पण एनी बुद्धि दुखीत छे, माटे ए कल्याणने मार्गे चाली शकतो नथी,जेम सुंदर भेंशनुं दुध होय,तेमां साकर घोळी होय ने तेमां सरपनी लाळ पडी एटले ए साकरने दुध हतुं ते झेर थयुं पछे तेने जे पिये तेना प्राण जाय,तेम बुद्धि तो झाझी छे पण एणे कोइ मोटा संतनो अथवा परमेश्वरनो अवगुण लीधो छे ते अवगुण रूप दोष एनी बुद्धिमां आव्यो छे ते सर्पनी लाळ सरखो छे माटे एतो कल्याणने मार्गे क्यांथी चाले पण जो कोइक एना मुखनी वात सांभळे तो ते सांभळनारनी बुद्धि पण सत्संगमांथी पाछि पडी जाय छे अने एवी दुखीत बुद्धि वाळो ज्यां ज्यां जन्म धरे त्यां त्यां भगवानने अ-

थवा भगवानना भक्तना द्रोहज करे, अने जेनी बुद्धि एवी रीते दुखीत न होय ने ते जो थोडीज होय तो पण पोतानाज कल्याणने अर्थे जतन करतो थको पाछो पडतो नथी त्यारे मुक्तानंद स्वामीए पुछयुं जे हे महाराज ए कोइ दिवस भगवानने सनमुख थाय के न थाय? त्यारे श्रीजी महाराजे कह्युं जे एतो कोइ काळे भगवान सनमुख थायज नहि. त्यारे वळी मुक्तानंद स्वामीये पुछयुं जे हे महाराज कोइ रीते एवी आसुरी बुद्धि न थाय तेनो जे उपाय होय ते कहो! त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे एक क्रोध, बीजुं मान, त्रीजी इर्षा, चोथुं कपट ए च्यार वानां परमेश्वर साथे तथा संत साथे राखे नहि तो कोइ दिवस एनी आसुरी बुद्धि थाय नहि अने ए च्यारवाना मांहेलुं एके जो राखे तो जेम जयविजय घणा डाह्या हता पण सनकादिक संघाथे मान करीने वैकुंठ लोकमांथी पडी गया ने आसुरी बुद्धि थइ तेम तेनी पण आसुरी बुद्धि थाय अने ज्यारे आसुरी बुद्धि थाय त्यारे भगवान तथा भगवानना भक्तना जे गुण होय ते दोष सरखा भासे छे ने ए ज्यां ज्यां जन्म धरे त्यां त्यां कांतो शिवनो गण थाय ने कांतो कोइ दैत्यनो राजा थाय ने वैर भावे परमेश्वरनुं भजन करे॥इति वचनामृतम्॥३५॥

संवत १८७६ना पोस वदि १३ तेरशने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडामध्ये दादा खाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिरनी आगळ लिंबडाना झाड हेठे ओटला उपर ढोलीयो ढळावीने विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठने विषे धोळा ने पीळा पुष्पना हार धारण कर्या हता अने बे कानने उपर धोळा पुष्पना गुच्छ खोश्या हता ने पाघने विषे पीळा पुष्पनो तोरो लटकतो हतो तथा कर्णिकारना राता पुष्पनुं छोगलुं मुक्युं हतुं अने जमणा हाथने विषे धोळा पुष्पनो दडो फेरवता हता एवी रीतनी शोभाने धारण करता ने पोताना भक्तजनने आनंद उपजावता थका विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे जेणे संसार मुक्यो ने त्यागीनो भेख लीधो अने तेने परमेश्वरना स्वरूप विना जे असत पदार्थमां प्रीति रेहेछे तेने केवो जाणवो तो जेवा मोटा शाहुकार माणसनी आगळ कंगाळ माणस होय तेवो जाणवो जेम कंगाळ माणस होय ने पेहेरवा वस्त्र न मळतुं होय ने उकरडामांथी दाणा विणी खातो होय ते पोते पोताने पापी समजे अने बीजा शाहुकार लोक पण तेने समजे जे आणे पाप कर्यां हशे माटे एने अन्न वस्त्र मळतुं नथी, तेम

जे त्यागी थइने सारां सारां वस्त्रादिक पदार्थ तेने भेळा करी राखेअने तेनी तृष्ना पण घणी राखे अने धर्म ज्ञान वैराग्य ने भक्ति तेने विषे प्रीतिये रहीत होय एवो जे त्यागी तेने तो जे मोटा एकांतिक साधुं छे ते कंगाळ माणसनी पेठे पापी जाणे छे तो केम जे जो ए पापी छे, तो एने धर्म ज्ञान वराग्य ने भक्ति तेने विषे प्रीति थाती नथी ने परमेश्वर विना बिजा पदार्थमां प्रीति थाय छे, अने त्यागी होय तेने तो कचरो ने कंचन ए बेयं बरोबर होय अने आ पदार्थ सारूं ने आ पदार्थ भुडुं एवी तो समजणज होय नहि अने भगवानने विषेज प्रीति होय तेज साचो त्यागी छे॥इति वचनामृतम्॥

संवत १८७६ ना पोस वदि १४ द्वादशीने दिवस श्रीजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिर आगळ लिंबडा तळे ढोलीया उपर आथमणे मुखारविंदे विराजमान हता. ने माथे धोळी पाघ विराजमान हती अने ते पाघमां पीळा पुष्पनो तोरो लटकतो हतो अने बे कान उपर, धोळा पुष्पना गुच्छ विराजमान हता अने कंठने विषे पीळां ने धोळां पुष्पनो हार विराजमान हतो, अने धोळी चादर ओढी हती अने धोळो खेस पेहेर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी

तथा देश देशना हरीभक्तजननी सभा भराइने बेठा हता, पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे जे अणसमजुं होय ने तेणे भेख लीधो होय तो पण तेने ज्यां ज्यां पोतानी जन्मभुमी होय तेने विषे हेत टळतुं नथी एम कहिने पछे पोताना साथळने विषे नानपणामां झाडनो खांपो लाग्यो हतो ते सौने देखाड्यो ने बोल्या जे आ चिन्हने ज्यारे अमे देखीये छैये त्यारे ते झाडने तळावडी सांभरी आवे छे माटे जन्मभुमी तथा पोताना सगा संबंधी तेने अंतरमांथी विसारी देवां ते घणुं कठण छे माटे जेने जेने जन्मभुमी तथा देहना संबंधि ते न सांभरतां होय ते बोलो ने जे लाजे करीने न बोले तेने आ नरनारायणना सम छे. पछे सर्वे मुनी जेम जेने वरततुं हतुं, तेम बोल्या. पछे ते सांभळीने श्रीजीमहाराज बोल्या जे ज्यारे पोताने आत्मा रुपे मानिये त्यारे ते आत्मानी जन्मभुमी कंइ ने ते आत्मानुं सगु कोण ने ते आत्मानी जात पण कई? अने जो सगपण लेवुं होय तो पुर्वे चोराशी लाख जातनां देह धर्यां छे, ते सर्वेनुं सगपण सरखुं जाणवुं ने ते सगानुं कल्याण इछवुं तो सर्वेनुं इछवुं अने आ मनुष्य देहमां आव्या सारे चोराशी लाख जातनां जे माबाप ते अज्ञाने करीने विसर्यां छे तेम आ मनुष्य शरिरनां जे माबाप छे तेमने ज्ञाने करीने विसारी देवां, अने अमारे तो

कोई सगां सबंधी साथे हेत नथी तथा अमारी सेवा करतो होय ने तेना हृदामां जो परमेश्वरनी भक्ति न होय तो ते उपर हेत करीये तोपण न थाय ने जो नारदजी जेवा गुणवान होय ने तेने भगवाननी भक्ति न होय तो ते अमने न गमे. अने जेना हृदामां भगवाननी भक्ति होय ने एम समजतो होय जे जेवा प्रगट भगवान प्रथ्वी उपर विराजे छे, अने जेवा ते भगवानना भक्त भगवाननी समीपे रहे छे, तेवाने तेवा ज्यारे आत्यंतिक प्रलय थाय छे त्यारे पण रेहेछे' अने आ भगवानने भगवानना भक्त ते सदा साकारज छे एम समझतो होय ने गमे तेवा वेदांतना ग्रंथ सांभळे पण भगवानने ने भगवानना भक्तने निराकार समजेज नही. अने एम जाणे जे भगवान विना बिजो कोइ जगतनो कर्त्ता छेज नहि. अने एम जाणे जे ए भगवान विना सुकु पानडुं पण फरवाने समर्थ नथी एवी जेने भगवानने विषे साकार पणानी दढ प्रति होय ने ते जेवो तेवो होय तोपण ए अमने गमेछे ने एने माथे काळ कर्म ने माया तेनो हुकम नथी अने जो एने दंड देवो होय तो भगवान पोते देछे पण बिजा कोइनो एने माथे हुकम नथी, अने एवी निष्टा न होय ने ते जो त्याग वैराग्ये जुक्त होय तोपण तेनो अमारा अंतरमां भाव आवे नाहि अने जेना हृदामां भगवाननी एवी निष्टा अचळ होय ने ते गमे तेटलां शास्त्र सां-

भळे अथवा गमे तेनो संग करे, तोपण पोताने जे भगवानना साकारपणानी निष्ठा छे, तेटले नाहि अने तेजना चित्र जेवा निराकार भगवानने कोई दिवस समजेज नहि, एवी निष्ठावाळो संत छे, तेना पगनी रजने तो अमे पण माथे चडावीये छैये. अने तेने दुखावता थका मनमां बिहिये छैये, अने तेना दर्शनने पण इच्छिये छैये, अने एवी निष्ठा विनानो जे जीव छे ते पोताना साधनने बळे करीने पोतानुं कल्याण इच्छे छे पण एवा परमेश्वरना प्रतापे करीने पोतानुं कल्याण इच्छता नथी, एवी जे जड मतीवाळा पुरुष छे, ते तो जेम नाव विनानो पोताना बांह बळे करीने समुद्र तरवा इच्छे तेवा मुरख छे, अने जे एवा भगवानने प्रतापे करीने पोतानुं कल्याण इच्छेछे ते तो जेम नावमां बेशीने समुद्र तरवाने इच्छे एवा डाह्या छे. अने एवा जे जे भगवानना स्वरुपना ज्ञानवाळा छे ते सर्वे, देहने मुकीने भगवानना धाममां चैतन्यनीज मुर्त्ति थइने भगवाननी हजुरमां रहे छे. अने एवी निष्ठा जेने न होय ने तेणे बिजां साधन जो कर्यां होय तो ते बिजा देवताना लोकमां रहे छे. अने एवा जथार्थ भगवानना भक्त छे, तेनुं दर्शन तो भगवानना दर्शन तुल्य छे अने एना दर्शन करीने अनंत पतित जीवनो उद्धार थाये छे एवा ए मोटा छे. एवी रीते वार्त्ता करीने श्रीजीमहाराजे कह्युं जे कीर्त्तन बोलो ॥इति

च वचनामृतम् ॥३७॥

संवत १८७६ ना महा शुदी १ पडवाने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां सांजने समे घोडशालनी ओशरीये गादलुं नखावीने विराजमान हता ने धोळो खेस पेर्यो हतो ने माथे राता छेडानो धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने दोरियानुं अंगरखुं पेहेर्युं हतुं ने धोळो चोफाळ ओढ्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ते समे श्रीजीमहाराज सर्वे हरिभक्त सामुं जोइने घणीवार विचारी रह्या ने पछे एम बोल्या जे सांभळो वात करीये छीये जे जे सत्संगी होय तेने ज्यांथी पोतानो सत्संग थयो होय त्यांथी पोताना मनने तपास करवो जे प्रथमना वरसमां मारुं मन आवुं हतुं अने आटली भगवाननी वासना हती ने आटली जगतनी हती एम वरसो वरसनो सरवाळो विचारया करवो अने पोताना मनमां जेटली जगतनी वासना बाकी रही गइ होय तेने थोडे थोडे निरंतर टाळवी अने एम विचारे नही ने बधी भेगी करे तो ते वासना एनी टळे नही जेम वणीकने घेर नामुं कर्युं होय ते जो महीना महीनानुं निरंतर चुकावी दये तो देतां कठण न पडे ने वरस महाडानुं भेगुं करीए तो आपवुं बहु कठण पडे तेम निरंतर विचा

र करवो अने मन छे ते जगतना वासनाये करीने वसाणुं छे जेम फुल करीने तल वसाय छे. ते माटे हवे मनने भगवानना जे चरीत्र तेनुं जे महिमा सहित नित्य स्मरण ते रूप फुलने विषे नामवुं अने भगवानना चरीत्र रूप जाळाने विषे मनने गुंचवी मेलवुं ने भगवानना घाट मः नमां करवा करवा एक शम्योने बीजो करवो बीजो शम्यो ने त्रीजो करवो ए मने एम मनने नवरं रहेवा देवुं नहि. ते पछे भुतनुं दृष्टांत विस्तारीने काहि देखाडयुं ने पछे श्रीजीमहाराज बो ल्यो जे एवी रीते भगवानना जे चरीत्र तथा वार्त्ता तथा दर्शन ते एक दिवसनां जो संभारवा मांडे तो तेनो पार न आवे तो सत्संग थयां तो दश पंदर वरस थयां होय तो एनो तो पार ज न आवे अने ते एवी रीते संभारवां जे आ गाममां आवी रीते माहाराज तथा परमहंसनी सभा थइ अने आवी रीते महाराजनी पुजा थइ ने आवी रीते वार्त्ता थइ इत्यादिक जे भगवानना चरीत्र तेने वारंवार संभारवां अने जे काफुं न समजतो होय तेने तो एम करवुं, एज श्रेष्ट उपाय छे ए जेवो बिजो नथी. त्यारे तमे केहेशो जे अन्न थोडुं खाइये तथा घणा उपवास करीये तो ते अमे केहेता नथी, एतो जेम जेना नियम कह्या छे, ते प्रमाणे साधारण पणे रेहेवुं अने करवानुं तो आ अमे तमने कह्युं छे. अने अमे तो एम मान्युं छे जे मन नि-

वच. ·क्षनिक जोइये अने देहे करीने गमे तेटली प्रवृति होय ने तेनुं मन जो शुद्ध छे तो तेनुं अ-
ति भुंडुं थाय नहि अने बाहेर लोकमां तो ते प्रवृतिवाळानुं भुंडा जेवुं जणाय अने जेने मनमां
वासना न होय, ने ते बाहेर रारी ठेठे निवृतिपरायण वरततोहोयतोतेनुं बाहेर लोकमां तो सारुं
जणाय पण तेना जिवनुं अति भुंडुं थाय केम जे मुवा टाणे तो जेवा मनमां संकल्प होय तेवा
स्फुरी आवे जेम भरतजीने अंतकाळमां मृगनुं बाळक स्फुरी आव्युं त्यारे ते मृगने आकारे
थइ गया ने प्रथम राज्य मेल्युं हतुं, ने रुषभदेव भगवान तो पोताना बाप हता, तोपण एम थयुं,
माटे मने करीने निर्वासनीक रेहेवुं ए अमारो मत छे अने जे उपवास करवा तेणे करीने देह
दुर्बळ थाय त्यारे मन दुर्बळ थाय तो खरुं पण ज्यारे देह पुष्ट थाय त्यारे वळी मन पुष्ट थाय
माटे देहे करीने त्याग ने मने करीने त्याग ए बे भेळा जोइए अने जेने मनमां भगवानना वा
ट थता होय ने जगतना वाट न थता होय, ते आपणा सत्संगमां मोटेरा छे, ने एवा जे न
होय ते नानेरो छे. अने ग्रहस्थ होय तेने पण देहे करीने व्यवहार करवो. ने मने करीने तो
त्यागीनी पेठेज निर्वासनीक रहेवुं ने भगवाननुं चिंतवन करवुं अने व्यवहार तो भगवानने वचने
करीने राखवो. अने मननो त्याग साचो न होय तो जनक जेवा राजा हता ते राज करता

न मन तो मोटा योगश्वरना जेवु हतु ते माटे मने करीने जे त्याग तेज ठिकछे.अने जे पोताना
मनमां भुंडा घाट थाता होय ते केहेवा पण जेम कुतरानुं मुख. कुतरो चाटे तथा सर्पने घेर-प-
रोणो साप मुख चाटीने वळीयो आप, तथा रांडोने पासे सुवासणी स्त्री जाय त्यारे ते. कने
जे आव्य बाइ हुं जेवी तुं पण था तेम पोतानी पेठे जेने भुंडा घाट थाता होय तेने आग
ळे घाट केहवो ते तो आ द्रष्टांत दिधां एमछे माटे घाट कोने कहेवो, तो जेना मनमां कोइ दि-
जगतनो भुंडो घाट न थातो होय एवो वळीयो होय तेनी आगळ केहवो अने एम घाट न थ-
एवा पण घणा होय तेमांथी पण एवाने घाट कहेवो जे ते घाटने सांभळीने ते. घाट उ-
वात करे ने ज्यां सुधी केहनाराना घाट टळी जाय त्यां सुधी वेसतो, उठतो, खातो, पीतो स
क्रियामां वात करया करे अने तेना घाट टाळ्यामां केवि चाह्यना होय तो जेम पोताना घ
ने टाळ्यानी चाह्यना होय, एवा आगळ घाट कहेवो. अने जेनी आगळ घाट कहीये ने ते. ऋ
वी रीते वात तो न करे ने पोते आळसुं होय तो शो समास थाय माटे एवी रीते पोताना म-
ना घाट कहीने ते घाटने टाळी नाखीने पोताना मनने विषे केवळ भगवानना घाट करया क-
वाने जगतना सुखथी निर्वासनीक रहेवुं, अने एकादशानो उपवास करवो तेनुं शुं लक्षण

तो दश इंद्रियोने अगीयारमुं मन तेमने पोत पोताना विषयमांथी काढी ने भगवानमां जो-
डावां तेने एकादशीनुं व्रत करयुं केहेवाय ने एवुं व्रत तो भगवानना भक्तने निरंतर करवुं. अने
जेनुं मन निर्वासनिक न होय ने देहे करीने तो व्रत तप करे तोपण तेनुं अतिशे सारु थतुं
नथी माटे जे भगवानना भक्त होय तेने पोतपोताना धर्ममां रहिने ने भगवाननुं माहात्म समजीने
पोताना मनने निर्वासनिक करवानो नित्ये अभ्यास राखवो एम वार्त्ता करी. अने वळी श्रीजी
महाराजे बिजी वार्त्ता करी जे साचो त्यागी केने कहिये? तो जे पदार्थनो त्याग करयो तेनो
पाछो कोइ दिवस मनमां संकल्प पण न थाय जेम विष्टानो त्याग करयो छे तेनो पाछो सं-
कल्प थतो नथी, तेम संकल्प ना थाय त्यां शुकजी प्रत्ये नारदजीनो कहेलो श्लोक छे जे.॥
त्यज धर्ममधर्मंच०॥ अने ए श्लोकनुं हारद ए छे जे एक आत्मा विना बिजां जे जे पदार्थ छे,
तेनो त्याग करीने केवळ आत्मापणे वरतवुं ने भगवाननी उपासना करवी तेने पुरो त्याग क-
हिये. अने जे ग्रहस्थ हरिभक्त होय ते तो जेम जनकराजाए कह्युं जे अमारी मीथिलानगरी
बळे तेम। मारु कांइ बळतुं नथी, त्यां श्लोक छे जे. ॥ मिथीलायां प्रदीप्तायां नमेदह्यति किंचन॥
एम समजे ने घरहमां रेहेतो होय ते ग्रहस्थ हरिभक्त खरो कहेवाय. अने एवी रीतनो जे

त्यागी न होय ने एवी रीतनो जे ग्रहस्थ न होय ते तो प्राकृत भक्त केहवाय. अने मोरे कह्यो एवो जे होय ते तो एकांतिक भक्त कहेवाय एवी रीत्ये वार्त्ता करी. पछे मोटा आत्मानंदस्वामीए श्रीजीमहाराजने प्रश्न पुछ्यो जे देह इंद्रियो तथा अंतःकरण तथा देवता तेथी जुदो जे जीवात्मा तेनुं रुप कइ रीते छे. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे थोडाकमां एनो उत्तर करीए छइये जे देहने इंद्रियादिकना स्वरूपनो जे वक्ता ते सर्वना स्वरूपने जुदु जुदु करीने ओताने समजावे छे ते जे समजावनारा वक्ता ते देहादिक सर्वना प्रमाणनो करनारो छे ने जाणनारो छे, ने ए सर्वेथी जुदो छे एनेज जिव कहिये, अने जे श्रोता छे ते देहादिकना रूपने जुदा जुदा समजे छे ने एनुं प्रमाण करे छे, एने जाणे छे ने ए सर्वेथी जुदो छे एनेज जीव कहिये एवी रीते जीवना स्वरूपने समजाववानी रीत छे एवी रात्ये वार्त्ता करी. ॥ इति वचनामृतम् ॥ ३८ ॥

संवत १८७६ना महा शुदि ३ ने दिवसे श्रीजीमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां श्रीवासुदेव नारायणना मंदिरनी आगळ लिंबडानावृक्ष हेठे ओटला उपर ढोलियो ढळावीने विराजमान हता. ने धोळो खेस पेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढि हती ने माथे

धोळी पाघ बांधी हती, ने पीळा पुष्पना तोरा पाघमां लटकता हता. ने कान उपर धोळाने पीळा पुष्पना गुछ खोस्या हता ने कंठमां पीळा पुष्पना हार पेर्या हता, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ सर्व मुनी तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजीमहाराजे एक वेदांती ब्राह्मण आव्यो हतो तेने प्रश्न पुछ्यो जे तमे एक ब्रह्मनु प्रतिपादन करोछो ने ते विना जे जीव ईश्वर मायाने जगत तथा वेद शास्त्रपुराण ते सर्वने मीथ्या कहोछो ए वात अमने समजाती नथी तथा मान्यामां आवती नथी माटे तमने पुछीए छइये तेनो उत्तर करो ते शास्त्र पुराण स्मृति इतिहास तेनी साख्ये करीने करो, पण कोईक कल्पित ग्रंथने वचने करीने करशो तो अमे तेने नहि मानिये. अने जो व्यासजिने वचने करीने करशो तो अमारा मान्यामां आवशे केम जे अमारे व्यासजीना वचनमां तो दृढ प्रीति छे, पछे ते वदांतिये घणीक प्रकारनी जुक्तियो लावीने उत्तर करवा मांडयो पण श्रीजी महाराजे तेमां आशंका करी माटे ते प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि, पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे सांभळो ए प्रश्ननो उत्तर अमे करीए छैये जे ए तो परमेश्वरने भजीने थया जे मुक्त तेनी स्थितीना भेद छे जेम मेरुं पर्वत उपर उभा जे पुरुष ते जे ते मेरु थकी ओरा जे सर्व पर्वत

तथा सर्वं वृक्ष आधारे जे पृथ्वीनुं तळ ते सर्वने प्रथक प्रथक पणे देखे छे तेम सविकल्प समाधिवाळा जे ज्ञानी मुक्त ते जे ते जिव, इश्वर, माया तथा एमनो आधार जे ब्रह्म ए सर्वने प्रथक प्रथकपणे देखे छे, अने वळी जेम लोकालोक पर्वत उपर उभा जे पुरुष ते जे ते लोकालोक पर्वतथी ओरा जे पर्वत तथा वृक्ष ते सर्वने एक पृथ्वी रूपे देखे छे, पण प्रथक प्रथक पणे नथी देखता तेम निर्विकल्प समाधिवाळा जे महामुक्त ते जे ते जीव इश्वरने माया तेने एक ब्रह्म रूपे करीने देखे छे पण प्रथक प्रथकपणे नथी देखता एवी रीते बे प्रकारनी स्थितीवाळा मुक्त छे जेवी स्थिती वाळा मुक्त छे तेवी स्थितीने जोगे करीने ए सर्वनुं सत्यपणुं कहेवाय छे ने असत्यपणुं कहेवाय छे अने सविकल्प स्थितीवाळानां वचन जेह शास्त्र पुराणादिकमां आवे छे ते ए सर्वने सत्य कहे छे ने निर्विकल्प स्थितीवाळानां जे वचन ते ए सर्वने असत्य कहे छे पण कांइ ए सर्व असत्य नथी ए तो एने निर्विकल्प स्थितीने बळे करीने देखाता नथी माटे असत्य कहे छे। अने वळी जेम सूर्यना रथमां जे बेठा होय तेने रात नथी पण जे पृथ्वी उपर रह्या छे तेने रात्री दिवस छे तेम निर्विकल्प स्थितीवाळाने मते ए सर्व छे नाहि पण बीजाने मते ए सर्व छे, अने आवी रीते ब्रह्म निरूपण करे तो शास्त्रना वचनमां पूर्वापर बाध न

आवे ने एम न करे तो पूर्वापर बाध आवे छे ते बाधने तो समजता न होय तथा एवी री तनी स्थितीने पण न पाम्या होय ने केवळ शास्त्रमांथी शिखिने वचन मात्रे करीने एक ब्रह्म पणानुं प्रतिपादन करता होय ने गुरु, शिष्य, जीव, ईश्वर, माया, जगत तथा वेद, पुराण ए सर्वने कल्पीत कहेता होय, ते तो मुर्ख छे ने अंते नारकी थाय छे. एम कहीने बोल्या जे आ अमे वार्त्ता करी तेमां तमने आ शंका थाती होय तो बोलो. त्यारे ते वेदांती ब्राह्मण बोल्यो जे हे महाराज, हे प्रभो, हे स्वामीन, तमे तो परमेश्वर छो, ने जगतना क ल्याणने अर्थे प्रगट थया छो ते तमे उत्तर कर्यो ते यथार्थ छे एमां आशंकानो माग नथी. एम कहीने अति प्रसन्न थयो ने पोतानो जे अणसमजण तेनो त्याग करीने श्रीजीमहाराजने आश्रित थयो. इति वचनामृतम् ॥ ३९ ॥

संवत १८७६ ना महा शुदी ४ चोथने दिवस प्रातःकाळे श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां श्रीवासुदेव नारायणना मंदिरनी आगळ लिंबडाना वृक्ष हेठे ढोलिया उपर विराजमान हता ने धोळो खेस पेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती अने माथे धोळी पाघ बांधी हती, ने पाघने विषे पीळा पुष्पनो तोरो लटकतो हतो ने कंठने विषे

पीळा पुष्पनो हार पेर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ सर्व मुनी तथा देश देशना हरीभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, पछे श्रीजीमहाराजने मुक्तानंद स्वामीये प्रश्न पुछयो जे हे महाराज सविकल्प समाधि ते केने कहिए ने निर्विकल्प समाधि केने कहिये? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेने भगवानना स्वरूपमां स्थिति थइ होय तेने अशुभ वासना तो न होय ने शुभ वासना रही होय जे हुं नारद सनकादिकने शुकजी ते जेवो थाउं अथवा नरनारायणना आश्रममां जइने ते आश्रमना मुनी भेळो रहीने तप करुं अथवा श्वेत द्वीपमां जइने तप करीने श्वेत मुक्त जेवो थाउं एवी रीतनो जेने विकल्प रहेतो होय तेने सविकल्प समाधिवाळो कहिये. अने जेने एवी रीतनो विकल्प न होय ने अक्षर ब्रह्मना सधर्मपणाए केवळ भगवाननी मुर्त्तिने पामीने विषे ज निमग्न रेहेतो होय तेने निर्विकल्पसमाधिवाळो कहिये. पछे वळी मुक्तानंद स्वामीये प्रश्न पुछयो जे हे महाराज भक्तिमां अने उपासनामां ते शो भेद छे? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे श्लोक श्रवणं कीर्त्तनं विष्णोः स्मरणं पाद सेवनं॥ अर्चनं वंदनं दास्यं सख्यमात्म निवेदनं॥ एवी रीते नव प्रकारे करीने जे भगवानने भजवा तेने भक्ति कहिये. अने उपासना तो तेने कहिये जे भगवानना स्वरूपने विषे सदा साकारपणानी दृढ निष्ठा होय ने पोते जेम भजननो करनारो ते ब्रह्मस्वरूप

था। तोपण ते निष्ठा जायज नहि ने गमेतेवा निराकार प्रतिपादनना ग्रंथने सांभळे तोपण भगवानना स्वरूपने सदा साकार समजे अने शास्त्रने विषे गमेतेवी वात आवे पण पोते भगवानने साकार स्वरूपनुंज प्रतिपादन करे पण पोतानी उपासनानुं खंडन थवा देज नहि एवी रीते जेनी दृढ समजण होय तेने उपासना वाळो कहीये ॥इति वचनामृतम् ॥ ४०॥

संवत १८७६ ना महासुदि ५ पंचमीने दिवस सांजने समे श्रीजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदीरने समीपे लींबडा तळे चोतरा उपर ढोलिये विराजमान हता ने सर्वे धोळां वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पीळा पुष्पना गुच्छा कान उपर धार्या हता, ने पाघने विषे पीळा पुष्पना तोरा लटकता मुक्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे प्रश्न उत्तर करो, पछे नृसिहानंद स्वामीये पूछयुं जे हे महाराज एकोहं बहु स्याम् ए जे श्रुति तेनो जे अर्थ तेने जगतमां जे केटलाक पंडीत तथा वेदांतिछे ते एम समजे छे जे प्रलयकाळने विषे जे एक भगवान हता तेज पोतानी इच्छाए करीने सृष्टिकाळे सर्वे जीव ईश्वर रूपे थया छे ते ए वार्त्ता तो मुर्ख होय तेना मान्यामां आवे अने अमारे तो तमारो आशरो छे एटले ए वात

थया ने अमे तो एम समजिये छीए जे भगवान तो अच्युत छे ते च्याविने जीव इश्वर रुपे थाय नहि, माटे ए श्रुतिनो जे अर्थ ते तो तमे कहो तो यथार्थ समजाय. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे ए श्रुतिनो अर्थ तो ए सर्व करे छे एम नथी एनो अर्थ तो बीजी रीते छे तेवेदंस्तुतिना गद्यमां कह्यो छेजे "स्वकृत विचित्रयो निपु विशानिवहेतुतया तरत मृतश्चकास्यनलवत्स्वकृतानुकृतिः॥एनो अर्थ एम छे जे पुरुषोत्तम भगवाने पोते करी एवी जे नाना प्रकारनी योनियुं तेमने विषे कारण पणे अंतर्यामी रुपे करीने प्रवेश करीने न्युनाधिक भावे प्रकाश करे छे तेनो विगति जे अक्षरातित एवा जे पुरुषोत्तम भगवान ते सृष्टि समयने विषे अक्षर सामी दृष्टि करे छे त्यारे ते अक्षरमांथी पुरुष प्रगट थइ आवे छे पछे ते पुरुषोत्तम जे ते अक्षरमां प्रवेश करीने पुरुपने विषे प्रवेश करेछे ने पुरुष रुपे थइने प्रकृतिने प्रेरे छे, एवी रीते जेम जेम पुरुषोत्तमनो प्रवेश थतो गयो तेम तेम सृष्टिनी प्रवृत्ति थइने पछे ते प्रकृति पुरुष थकि प्रधान पुरुष थया अने ते प्रधान पुरुष थकी महतत्त्व थयुं ने महतत्त्व थकी त्रण प्रकारनो अहंकार थयो ने अहंकार थकी भूत वीषयं इंद्रियो अंतःकरण ने देवता ते थया ने ते थकी विराट पुरुष थया ने तेनी नाभी कमळमांथी ब्रह्मा थयां ने ब्रह्मा थकी मरी-

च्यादिक प्रजापति थया ने ते थकी कश्यप प्रजापति थया ने ते थकी इंद्रादिक देवता थया ने दैत्य थया अने स्थावर जंगम सर्व सृष्टि थई अने पुरुपोत्तम भगवान जे ते ए सर्वमां कारण पणे अंतर्यामी रूपे प्रवेश करीने रह्या छे पण जेवा अक्षरमां छे, तेवी रीते पुरुप प्रकृतिमां नथी ने जेवा पुरुप प्रकृतिमां तेवा प्रधान पुरुपमां नथी ने जेवा प्रधान पुरुपमां छे तेवा महत्त्वादिक चोविश तत्त्वमां नथी ने जेवा चोविश तत्त्वमां छे तेवा विराट पुरुपमां नथी ने जेवा विराट पुरुपमां छे तेवा ब्रह्मामां नथी ने जेवा ब्रह्मामां छे तेवा मरिच्यादिकमां नथी ने जेवा मरिच्यादिकमां छे तेवा कश्यपमां नथी ने जेवा कश्यपमां छे तेवा इंद्रादिक देवतामां नथी, ने जेवा इंद्रादिक देवतामां छे तेवा मनुष्यमां नथी ने जेवा मनुष्यमां छे तेवा पशु पक्षीमां नथी. एवी रीते पुरुपोत्तम भगवान जे ते तारतम्यतायें सर्वमां कारणपणे अंतर्यामी रूपे करीने रह्या छे. जेम काष्टने विपे अग्नी रह्यो छे ते मोटा काष्टमां मोटो अग्नी रह्यो छे ने लांबा काष्टमां लांबो अग्नी रह्यो छे ने वांका काष्टमां वांको अग्नी रह्यो छे तेम ए पुरुपोत्तम भगवान छे, ते जे द्वारे जेटलुं कार्य कराववुं होय तेने विपे तेटली सामर्थ्ये जुक्त रेहे छे. अने अक्षर ने पुरुप प्रकृति आदे सर्वने विपे पुरुपोत्तम भगवान अंतर्यामी रूपे रह्या छे पण पात्रनी तारतम्यताये करीने सामर्थ्यमां तारतम्य

पणुं छे, एवी रीते एक पुरुषोत्तम भगवान छे ते अंतर्यामी रुपे करीने ए सर्वने विषे प्रवे. करीने रह्या छे, पण जीव इश्वरपणाने पोते पामीने बहु रुपे नथी थया एवी रीते ए श्रुति. अर्थ समजवो. ॥ इति वचनामृतम् ॥ ४२ ॥

संवत १८७६ना महा वदि ६ छठने दिवस श्रीजीमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादा. चरना दरबारमां श्रीवासुदेव नारायणना मंदिर आगळ लिंबडाना वृक्षनी हेठे ओटा उ. ढोलिया उपर आथमणे मुखारविंदे विराजमान हता अने माथे धोळी पाघ बांधी हती, ने धो. ळी चादर ओढी हती ने धोळो खेस पेर्यो हतो ने बे कानने उपर पीळा पुष्पना गुच्छ. राजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा. रा.ने बेठी हती. अने ते सभाने विषे कोइक वेदांती ब्राह्मण पण आवीने बेठा हता, तेने जोइ श्रीजी महाराज बोल्या जे वेदांत शास्त्रने जे जे भणे छे तथा सांभळे छे ते एम. हे छे जे विधीनिषेध तो मीथ्या छे, अने विधीनिषेधे करीने पमाय एवां जे स्वर्ग ने नर्क. पण मीथ्या छे अने तेने पामनारो जे शिष्य ते पण मीथ्या छे अने गुरु पण मीथ्या छे ने. ज्ञान समभर्यो छे ते सत्य छे एवी रीते जे कहे छे ते शुं समजीने कहेता हशे? अने.

वच,

वें वेदांतिना आचार्य जे शंकराचार्य तेमणे तो पोताना शिष्यने दंडकमंडलुं धारण कराव्यां अने एम कह्युं जे भगवदगीता ने विष्नुं शस्त्रनामनो पाठ करवो तथा विष्नुंनुं पुजन करवुं अने जेने झाझां चोमासां थयां होय तेनुं थोडा चोमासावाळाने वंदन करवुं अने सारा पवित्र ब्राह्मण होय तेना घरनीज भिक्षा करवी एवी रीते जे विधीनिषेधनुं प्रतिपादन करवुं ते शुं एमने यथार्थ ज्ञान नहि होय? अने जे हमणाना ज्ञानि थया तेमणे विधिनिषेधने खोटो करी नाख्यो ते शुं शंकराचार्य करतां एमोटा थया? माटे एतो एम जणाये छे जे एतो केवळ मुर्खाइमांथी बोले छे. अने विधी निषेध शास्त्रमां खोटा कह्या छे ते तो एम कह्या छे जेम कोइ मोटुं वहाण होय अने ते वहाण महासमुद्रने विषे एक वरस सुधी चाल्युं जाय छे तेने आगलो कांठो पण देख्यामां आवे नहि, अने पाछल्यो कांठो पण देख्यामां आवे नहि, अने ते कांठा उपर मोटा मोटा पर्वत ते पण देख्यामां आवे नहि तो झाडवां तथा मनुष्य ते तो क्यांथी देख्यामां आवे अने ज्यां देखे त्यां एकलुं जळ देखाय पण जळ विना बीजो कोइ आकार देख्यामां आवे नहि अने उंचुं जुवे तो मोटा मोटा समुद्रनी लेहेरयुं उठती होय माटे उंचुं पण जळ जणाय त्यारे ते वहाणने विषे बेठा एवा जे पुरूष ते एम कहे जे एकलुंज जळछे बिजुं कांइ नथी

ए सिद्धांतनु सिद्धांत ए छे जे जेने ब्रह्मस्वरूपने विषे निर्विकल्पस्थात थइ होय ते एम बोले जे एक ब्रह्मजछे अने ते विना बीजुं जे जीव,इश्वर,ने माया ए आदिक सर्वे ते मीथ्याछे अने तेना वचन शास्त्रमां लखाणां होय तेने सांभळीने पोताने तो एवी स्थिती न थइ होय तो पण विधिनिषेधने खोटा कहेछे अने स्त्रिनी सु श्रुखा करे ने छोकरांनी सु श्रुखा करे अने जेटलो संसारनो व्यवहार होयते सर्वेने तो साचो जाणीने सावधान थइने करे छे, अने शास्त्रे प्रतिपादन कर्या एवा जे विधिनिषेध तेने खोटा कहे छे एवा जे आ जगतने विषे ज्ञानना कथनारा छे तेने तो महा अधम जाणवा ने नास्तिक जाणवा अने शंकराचार्ये तो जीवना हैयामां नास्तिक पणुं आवी जाय तेनी बीके करीने "भजगोविंदं भजगोविंदं गोविंदंभज मुढ मते" ए आदिक घणांक विष्नुनां स्तोत्र कर्यां छे तथा शिवजी तथा गणपति तथा सूर्य ए आदि लैने जे घणाक देवता तेनां स्तोत्र कर्यांछे,जेने सांभळीने सर्वे देवता सत्य भासे एवो आशय जाणी शंकराचार्ये सर्वे देवतानां स्तोत्र कर्याछे. अने आज जे ज्ञानी थया ते तो सर्वेने खोटा करी नाखे छे ने वळी एम कहे छे जे ज्ञानी तो गमे तेवुं पाप करे तो पण कांइ अडतुं नथी ते मूर्खपणामांथी कहे छे, अने जेटला त्यागी परमहंस थया ते सर्वेने विषे जडभरत श्रेष्टछे

जडभरतनी वारता लखाणी छे अने जेटला पुराण मात्र तथा वेदांतना ग्रंथ ते सर्वेने विषे, एवा मोटा जे जडभरत ते पूर्व जन्ममां ऋषभदेव भगवानना पुत्र हता ने राजनो त्याग करीने वनमां गया हता तेने दयाये करीने पण जो मृग संघाथे प्रीति थइ तो तेनो दोष लाग्यो ने पोताने मृगनो जन्म लेवो पड्यो अने मृगनो सरखा चार पगने टुंकी पुंछडी ने माथे नानी सिंगडीयुं एवो आकार पोताने प्राप्त थयो, अने परमात्मा जे श्रीकृष्ण भगवान तेनी संघाथे व्रजनी गोपीयुये काम बुद्धिये करीने प्रिती करी तो पण सर्वे भगवाननी मायाने तरी गइयुं ने पोते गुणातित थइने निर्गुण एवुं जे भगवाननुं अक्षर धाम तेने पामीयुं. तेनुं कारण ए छे जे श्रीकृष्ण भगवान पोते साक्षात गुणातित पुरूषोत्तम दिव्य मूर्त्ति हता तो ते संघाथे गोपीयुंये जाणे अजाणे प्रीति करी तो पण ते गोपीयुं गुणातित थइयुं. अने भरतजियें दयाये करीने मृगलामां प्रीती करी तो पोते मृगलुं थया माटे गमे तेवा मोटा होय तेनुं पण कुसंगे करीने तो भुंडुज थाय छे अने गमे तेवा पापी जीव होय ने ते जो सत्यस्वरूप एवा जे भगवान तेनो प्रसंग करे तो परम पवित्र थइने अभय पदने पामे. अने जो श्री कृष्ण भगवान पोते गुणातित न होय तो एना भक्त जे गोपियुं ते गुणातितपणाने न पामत ने जो गुणातित पदने पामीयुं तो

श्रीकृष्ण भगवान गुणातित कैवल्य दिव्य मूर्त्तिज छे अने वेदांति केहे छे जे सर्वत्र ब्रह्मस भरभर्यो छे त्यारे जेम गोपीयुंये श्री कृष्ण भगवानने विषे प्रीति करी तेमज सर्वे स्त्रीयुं पोत पोताना धणीने विषे प्रीती करे छे तथा सर्वे पुरुष पोतानी स्त्रीयुंने विषे करे छे तो पण तेमने गोपीयुंना जेवी प्राप्ति थाती नथी तेमने तो घोर नरकनी प्राप्ति थाय छे माटे जे विधिनिषेध छे ते साचा छे पण खोटा नथी ने जे ए विधिनिषेधने खोटा कहेछे ते तो नारकी थाय छे एम वार्त्ता करीने श्रीजी महाराज जयसच्चिदानंद कहीने पोताने उतारे पधार्या॥ इति वचनामृतम् ॥ ४२ ॥

संवत १८७६ ना महा सुदी ७ सातमने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां उगमणे वार ओरडानी ओसरीये ढोलीया उपर सांजने समे विराजमान हता अने माथे धोळी पाघ बांधी हती, ने धोळी चादर ओढी हती ने धोळो खेस पेर्यो हतो ने पाघने विषे पीळा पुष्पना तोरा लटकता हता ने कंठने विषे पीळा पुष्पना हार पेर्या हता ने बे कानने उपर पिळा पुष्पना गुच्छ खोश्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. ते समे श्रीजीमहाराज सर्वे भक्त

वच. वान उपर करुणानी दृष्टिये करीने सर्वे सामुं जोइने बोल्या जे सर्वे सांभळो एक प्रश्न पुछीये छीये.जे श्रीमद्भागवत पुराणमां कह्युंछे जे जे भगवानना भक्त होय ते च्यार प्रकारनी मुक्तिने नथी इछता अने बीजा पण जे जे भगवानना मोटा भक्त छे ते एम कहे छे, जे भगवानना भक्त होय ते च्यार प्रकारनी मुक्तिने नथी इछता ते च्यार प्रकारनी मुक्ति ते शुं,तो एक तो भगवानना लोकमां रेहेवुं अने बीजुं भगवानना समीपे रेहेवुं,अने त्रीजुं भगवानना सरखुं रूप पांमवुं, अने चोथुं भगवानना सरखुं ऐश्वर्य पांमवुं. एवी रीते जे च्यार प्रकारनी मुक्तिछे, तेने तो भगवाननो भक्त नथी इछतो ने केवळ भगवाननी सेवाने इछेछे ते ए भक्त च्यार प्रकारनी मुक्तिने शा सारु नथी इछतो? ए प्रश्न छे तेनो उत्तर जेने जेवो आवडे तेवो ते करो. पछे सर्वे परमहंस उत्तर करवा लाग्या पण उत्तर थयो नहि त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ए प्रश्ननो उत्तर अमे करीये छीए जे जे भगवाननो भक्त थइने ए च्यार प्रकारनी मुक्तिनी इच्छा राखे तो ते सकाम भक्त केहेवाय ने ए चतुर्धा मुक्तिने न इच्छे ने केवळ भगवाननी सेवानेज इच्छे ते निष्काम भक्त केहेवाय ते श्रीमद्भागवतमां कह्यु छे जे.''सालोक्य सार्ष्टि सामीप्यसा रूप्यै कत्व मप्युतः॥दिनमानं ने ग्रहंति विनाम सेवनंजनाः नेछंति सेवयापूर्णाःसालो

श्यादि चतुष्टयं॥एनो अर्थ एछे जे जे भगवानना निष्काम भक्त छे ते सेवा जे भगवाननी परिचर्या करवी ते जो ए चतुर्धा मुक्तिमां न होय तो एने इच्छेज नहि ने एक सेवानेज इच्छे छे, अने एवा जे निष्काम भक्त तेमने भगवान पोतानी सेवामां राखे छे, ने ए भक्त नथी इच्छता तोपण बळात्कारे भगवान एने पोताना ऐश्वर्य सुखने पमाडे छे ते, कपिलदेव भगवाने कह्युंछे जे."अथो विभूति ममम्यावितामैश्वर्यमष्टांग मनु प्रवृतं॥श्रियंभागवतींस्पृहयातिचा भद्रांपरस्यमे तेश्नुवतेतु लोके".अने ए निष्काम भक्तनेज गीतामां भगवाने ज्ञानी कह्योछे,ने जे सकाम भक्त छे तेने अर्थार्थि कह्यो छे. माटे भगवानना भक्तने भगवाननी सेवा विना बीजुं कांइये न इच्छवुं, ने इच्छे तो एमां एटली काच्यप कहेवाय छे, अने जो काच्यप होय तो निष्काम एवा जे भगवानना एकांतिक भक्त तेनो समागम करीने ए काच्पने टाळवी. ॥ इति वचनामृतम्. ॥ ३८ ॥

संवत १८७६ना महा शुदि ८ आठमने दिवस श्रीजीमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेव नारायणना मंदिरनी आगळ लिमडाना वृक्ष हेठे ओटा उपर आथमणे मुखारविंदे सवारना पोरमां विराजमान हता, ने धोळो खेस पेर्यो हतो ने धोळी

चादर ओढि हती ने माथे धोळो फेंटो वाध्यो हतो ने ते फेंटाने एक आंटे करीने बोकानी वाळी हती ने ते पाव उपर धोळा पुष्पना हार विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराजे प्रश्न पुछयुं जे भगववानने विषे स्नेह होय तेनुं शुं रूप छे? पछे ब्रह्मानंद स्वामीये स्नेहनुं रूप करवा मांडयुं पण सामाधान न थयुं. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे तमने तो स्नेहनी दिशज जडी नहि अने तमे जे पिंडब्रह्मांडथी निस्नेह रेहेवुं तेने स्नेह कह्यो ए स्नेहनुं रूप नहि ए तो वैराग्यनुं रूप छे अने स्नेह तो एनुं नाम जे भगवाननी मुर्त्तिनी अखंड स्मृति रेहे एनु नाम स्नेह कहीए ने जे भक्तने परिपूर्ण भगवानने विषे स्नेह होय तेने एक भगवान विना बीजो संकल्पज न थाय. अने जे टलो भगवा विना बीजो घाट थाय छे तंटलो तेना स्नेहमां फेर छे अने जेने परिपूर्ण भगवान मां स्नेह होय ने तेने जो जाणेअजाणे भगवाननी मुर्त्ति विना बीजो कांइक घाट थाय, तो जेम पंचामृत भोजन जमतो होय तेमां कोइक कांकरा तथा धुळनो खोबो भरीने नाखे। ने जेवुं वसमुं लागे, अथवा कपाळमां बळबळतो डाम दे ने ते जेवो वसमो लागे तेवो भगवान विना बिजो घाट थाय ते वसमो लागे एवी रीते जेने वर्त्ततुं होय तेने भगवानने विषे प्रीति छे एम जाणवुं.

ते सर्वे पोतपोताना हृदामां तपाशी जूवो तो जेने जेवी प्रिति हशे तेने तेवी जणाइ आ

पछे ब्रह्मानंद स्वामीये पुछ्युं जे एवी दृढ प्रीति भगवानने विषे थाय तेनुं शुं साधन

पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे संत पुरुषनो जे प्रसंग एज परमे

विषे दृढ प्रीती थवानुं कारण छे. त्यारे सोमलो खाचर बोल्या जे एवो प्र

तो अतिशे करीये छइये, पण एवी दृढ प्रीति केम थती नथी? पछे श्रीजीमहाराज बोल्य

प्रसंग तो करो छो पण अरधो अमारो प्रसंग करो छो, ने अरधो जगतनो प्रसंग करो

ते माटे भगवानने विषे द्रढ प्रिति थाती नथी. पछे गाम वसोना विप्र वाला ध्रु तेणे प्रश्न पु

जे हे महाराज देहने देहना संबंधीने विषे अहंममत्व पणानो घाट थाय छे ते केम टळे?

श्रीजीमहाराज बोल्या जे एतो जीवने विपरीत भावना थइ छे, जे पोताने देहथी प्रथक जे

वात्मा ते रूपे नथी मानतो ने देह रूपे माने छे ने ए जिवात्माने विषे देह तो केवी रीते

ग्यो छे तो जेम कोइक पुरुष होय तेणे दरजीने घेर जइने डगलो शिवडावीने पेर्यो

ते एम माने जे दरजि ते मारो बाप छे ने दरजण ते मारी मा छे एम जे माने ते मुर्ख

हेवाय तेम आ जीवने आ, देह रुप जे डगलो ते, क्यारेक, तो ब्राह्मणने ब्राह्मणी थकी उ

थाय छे अने क्यारेक तो निच जातिमांथी उत्पन्न थाय छे तथा चोराशी लाख जात थकी देह उत्पन्न थाय छे ते देहने विषे पोतापणुं माने ने ते देहनां मावापने पोतानां मावाप माने ते मुर्ख केहेवाय ने तेने पशु जेवो जाणवो. अने चोराशी लाख जातमां जे पोतानी मावहेन दिकरीयुं ने स्त्रीयुं छे ते पतिव्रतानो धर्म एके पाळती नथी माटे जे एवा सगपणने साचुं माने छे तेने अहंम मत्वना घाट केम टळशे? अने आवी रितनी समजण विना जन्मभुमीनी जे देश वासना ते टळवी घणी कठण छे अने ज्यां सुधी देहने पोतानुं रूप माने छे त्यां सुधी एनी सर्व समजण व्रथा छे. अने ज्यां सुधी वर्णनुं के आश्रमनुं मन लइने फरे छे त्यां सुधी एने विषे साधुपणुं आवतुं नथी माटे देहने देहना सबंधिने विषे अहंममत्वनो त्याग करीने ने पोताना आत्माने ब्रह्म रूप मानीने सर्व वासनानो त्याग करीने स्वधर्ममां रह्यो थको जे भगवानने भजे छे ते साधु कहेवाय छे अने जेने एवुं साधुपणुं आव्युं तेने ने पुरूषोत्तम भगवानने कांइ छेटुं रेहेतुं नथी. अने बिजुं सर्व थाय पण एवी साधुता आववी तो घणी कठण छे ने एवो साधु तो हुं छुं जे मारे वर्णाश्रमनुं लेश मात्र पण मान नथी एवी रीते श्रीजीमराज बोल्या ते तो भक्तने शिक्षाने अर्थे छे एम जांणवुं ने पोते तो साक्षात पुरूषोत्तम नारायण छे. ॥ इति व-

संवत १८७६ना महा सुदि १० ने दिवस सांजने समे स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेव नारायणना मंदिर आगळ ओटला उपर दक्षिणादे मुखारविंदे विराजमान हता अने धोळी चादर ओढी हती ने धोळो खेस पेर्यो हतो ने माथे धोळी पाग बांधी हती, ने अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे गोपाळानंद स्वामीये पुछयुं जे हे महाराज केटलाक वेदांति एम कहेछे जे भगवानने आकार नथी अने तेवाज प्रतिपादननी श्रुतियुने भणे छे अने केटलाक जे नारदसनकादिक सरखा भगवानना भक्त छे ते तो भगवाननुं साकारपणुं प्रतिपादन करेछे ए बेमांथी कोण साचाछे? पेछे श्रीजी महाराज बोल्या जे जे भगवान पुरुषोत्तमछे ते तो सदाकारजछे ने महा तेजोमय मूर्त्तिछे अने सर्वत्र पुराण अंतर्यामीपणे करीने एवुं जे सच्चिदानंद ब्रह्मछे ते तो मूर्त्ति मान एवा जे पुरुषोत्तम भगवान तेनुं तेज छे, अने श्रुतीये पण एम कह्युंछे जे ते भगवान माया सांमुं जोता हवा अने ज्यारे जुवे त्यारे तेने शुं एकली आंख्यज होय? हाथ पग पण होय, माटे साकार रूपनुं प्रतिपादन थयुं. अने वळी जेम स-

मय जळ छे तेना जीव रूप जे वरुण ते पोताना लोकने विषे साकार छे, ने जळ निराकार केहवाय छे ने जेम अग्निनी जे ज्वाळा छे ते निराकार केहेवाय छे अने तेना देवता जे अग्नि ते अग्निलोकने विषे साकार छे, ने जेम समग्र तडको ते निराकार कहेवाय छे ने सूर्यना मंडळने विषे जे सूर्य देव छे ते साकार छे तेम सच्चिदानंद जे ब्रह्म छे ते निराकार छे अने पुरुषोत्तम जे भगवान ते साकार छे अने ए सर्वत्र पूर्ण एवुं जे सच्चिदानंद ब्रह्म ते पुरुषोत्तम भगवाननुं तेज छे. अने कोइ एम कहेशे जे श्रुतिमां एम कह्युं छे जे परमेश्वर तो कर चरणादिक रहित छे ने सर्वत्र पूर्ण छे तो ए जे श्रुतिये कर चरणादिकनो निषेध कर्यो छे तो ते मायिक कर चरणादिकनो निषेध कर्यो छे अने भगवाननो आकार छे ते तो दिव्य छे पण मायिक नथी. अने अंतर्यामीपणे करीने जीव इश्वरने विषे व्यापक एवुं जे पुरुषोत्तम भगवाननुं ब्रह्म रूप तेज ते निराकार छे तोपण जीव इश्वर सर्वेने तेमना कर्मने अनुसारे यथायोग्यपणे कर्मना फळने देवाने विषे नियंतापणुं छे ने साकारनी पेठे नियंता रूप क्रीयाने करेछे माटे ते तेजने पण साकार जेवुं जाणवुं एवी रीते भगवान पुरुषोत्तम तो सदा साकारज छे, पण निराकार नथी ने जे निराकार कहे छे ते तो समजता नथी. ॥ इति वचनामृतम् ॥ ४५॥

संवत १८७६ना मह्रा शुदी ११ एकादशीने दिवसें सांजनें समें श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेव नारायणना मंदिरनी समीपे ओटा उपर दक्षिणादे मुखारविंदे विराजमान हता ने धोळो खेस पेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती, ने माथे धोळी पाघ वांधी हती, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनींनी सभा तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, ते समे भट्ट माहेश्वर नामे वेदांति ब्राह्मण हतो तेणे श्रीजी महाराजने प्रश्न पुछयुं जे समाधीने विषे सर्वे लीन थायछे त्यारे आकाश केवी रीते लीन थायछे, पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे आकाशनुं रूप अमे रूडे प्रकारे करीये ते तमे सर्वे सावधान थइने सांभळो जे आकाश ते अवकाशने कहीए, अने जे जे पदार्थ रहे छे ते अवकाशमांज रहे छे अने ते पदार्थमां पण आकाश व्यापिने रहे छे ने एवुं कांइ पदार्थ नथी जे जेने विषे आकाश न होय केम जे प्रथ्वीनी एक रज अति झीणी होय तेने विषे पण आकाश छे ने ते एक रजनां कोटानकोटी कटका करीये तोपण तेने विषे आकाश छे माटे आकाशनी द्रष्टिये जोइये त्यारे प्रथ्वी आदिक च्यार भूत देखातां नथी एकलो आकाशज देखाय छे ते आकाश सर्वनो आधार छे. अने स्थुल सुक्ष्मने कारण ए जे त्रण्ण शरीर ते

वच आकाशने विषे छे अने आ ब्रह्मांड छे ते पण आकाशने विषे रह्युं छे, अने ब्रह्मांडनुं कारण जे प्रकृतिने पुरुष ते पण आकाशने विषे छे, एवो जे आकाश ते प्रकृति पुरुषने तेनुं कार्य जे पिंड ब्रह्मांड ए सर्वने मांही पण रह्यो छे ने सर्वनो आधार थइने बाहेर पण रह्यो छे एवो जे ए आकाश ते तो सुषुप्तिने विषे अथवा समाधिने विषे लीन थतो नथी. अने कोइ कहेशे जे आकाशादिक पंच भूत तो तमो गुणथी उपनां छे ते आकाश पुरुषने प्रकृतिनो आधार केम केहेवाय ने सर्वमां व्यापक केम केहेवाय तो, एनो उत्तर ए छे जे प्रकृतिमां जो अवकाश रूप आकाश न होय तो जेम वृक्षमांथी फळ पुष्पादिक बाहार निसरे छे ने जेम गायना पेटमांथी वाछडुं निसरे छे तेम प्रकृतिमांथी महतत्व नीसरे छे ते केम निसरे माटे प्रकृतिने विषे आकाश रह्यो छे अने महतत्वमांथी अहंकार नीसरे छे माटे महत्वमां आकाश रह्यो अने अंहकारमांथी त्रण गुण निसरे छे माटे अंहकारने विषे आकाश रह्यो छे, अने तमो गुणमांथी आकाश आदिक पंचभूत निसरे छे माटे तमोगुणने विषे पण आकाश रह्यो छे ने तमोगुणमांथी जे आकाश निसरे छे ते आकाश तो तमोगुणनुं कार्य छे ने विकारवान छे ने सर्वनो आधार जे आकाश छे ते निर्विकारि छे ने अनादि छे ने एवो सर्वाधार जे आकाश

छे ते आकाशने ब्रह्म कहीये चिदाकाश कहीये ने ए आकाशने विषे पुरुषने प्रकृति ते सं-
कोच अवस्थाने ने विकाश अवस्थाने पामे छे ते केवी रीते तो ज्यारे पुरुष प्रकृति सामुं जुवेछे
त्यारे जेम स्त्री पुरुष थकी संताननी उत्पत्ति थाय छे तेम पुरुष जे पोतेने प्रकृति रूप जे स्त्रि
ते थकी महतत्वादिक संतान उत्पन्न थाय छे एवी रीते जे ए प्रकृति ते चोवीस तत्व रूपे ने
पिंड ब्रह्मांड रूपे थाय छे ए प्रकृतिनी विकाश अवस्था छे, अने जेटलां प्रकृतिनां कार्य छे,
तेने विषे पुरुष पोतानी शक्तिये करीने व्यापक पण रहे छे, ते पुरुषनी विकाश अवस्था छे.
अने ज्यारे काळे करीने प्रकृतिनुं कार्य सर्व नाश पामी जाय छेअने प्रकृतिपण पुरुषना अंग-
मां लीन जेवी रेहेछे ए प्रकृतिनो संकोच अवस्था छेअने पुरुष पण प्रकृतिनां कार्य सर्व नाश
पांम्या त्यारे पोताने स्वरूपे रह्यो ए पुरुषनी संकोच अवस्था छे जेम काचबो छे ते ज्यारे पो
ते विकाशने पामे छे त्यारे पोतानां अंग सर्वे बाहेर काढे छे, अने ज्यारे संकोचने पामे छे,
त्यारे सर्वे पोतानां अंग ताणी लेछे ने रुंढमुंढ थइने रेहे छे तेम पुरुष प्रकृतिनी संकोच वि-
काश अवस्था छे. अने प्रकृतिने प्रकृतिना कार्यने विषे अन्वय व्यतिरेकपणुं पुरुषनुंजछे, पण
सर्वनो आधार एवो जे चिदाकाश तेनुं नथी केमजे जे सर्वाधार होय ते कोण थकी व्यतिरे

क होय तो ते सदा सर्वमां रह्योज होय अने आ ब्रह्मांड छे तेने च्यारे कोरे लोकालोक पर्वत छे ते गढनी पेठे रह्यो छे, ने ते लोकालोकनी बाहार ते अलोक छे, ने अलोकथी परसप्त आवरण छे ने तेथी पर एकलुं अंधारूं छे ने ते अंधाराथी पर प्रकाश छे ते प्रकाशने चिदाकाश कहीए तेमज उंचुं पण ब्रह्मलोक सुधी केहेवाय ने तेनी उपर सप्त आवरण छे, ने ते आवरणने पार अंधकार छे ने अंधकारने पार प्रकाश छे ते प्रकाशने चिदाकाश कहीए ने तेमज हेठे पण सप्तपाताळ सुधी केहेवाय ने तेथी हेठां सप्त आवरण छे, ने तेथी हेठुं अंधकार छे नें तेथी हेठो प्रकाश छे ते प्रकाशने चिदाकाश कहीये एवी रीते ब्रह्मांडनी च्यारे पासे चिदाकाश छे अने ब्रह्मांडनी मांही पण छे अने एवो जे ए सर्वाधार आकाश तेने आकारे जेनी द्रष्टि वरतती होय तेने दहर विद्या कहीये अने अक्षि विद्या आदिक घणीक प्रकारनी ब्रह्म विद्या कही छे ते मांहली ए पण एक ब्रह्म विद्या छे, अने ए चिदाकाश छे ते अति प्रकाशवान छे अने ते चिदाकाश अनादि छे ने तेनी उत्पत्ति विनाश नथी, अने जे आकाशनी उत्पत्ति ने विनाश कह्यो छे ते आकाश तो तमोगुणनुं कार्य छे ने अंधकार रूप छे तेनी लीनता थाय छे पण सर्वनो आधार एवो जे चिदाकाश तेनी तो लीनता थती नथी एवी रीते तमारा

प्रश्ननो उत्तर कर्यो हवे तेमां कोइने आशंका रही होय तो पुछो. पछे ते वेदांति ब्राह्मण तथा सर्वे हरिजन बोल्या जे हवे कोइने लेश मात्र संशय नथी॥ इति वचनामृतम्. ॥४६

संवत १८७६ना महा शुदि १२ द्वादशीने दिवस सवारना पोहोरमां स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ लिमडाना वृक्षनी हेठे ओटा मध्ये ढोलीया उपर बिराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरीभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजीमहाराज जमणे हाथे चपटी वगाडीने बोल्या जे सर्वे सावधान थइने सांभळो एक वात करीए छीये ने ते वात तो स्थुल छे पण शुद्धि सुरव्यद्इने सांभळशो तो समजाशे नहि तो नहि समजाय. पछे सर्वे हरीभक्ते कह्युं जे हे महाराज कहो, पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे परमेश्वरना भक्त होय तेमां कोइकने धर्म नीष्टा प्रधान होय ने कोइकने आत्मनिष्टा प्रधान न होय ने कोइकने वैराग्यनिष्टा प्रधान होय ने कोइकने भक्तिनिष्टा प्रधान होय अने गौणपणे तो ए सर्वे अंग सर्वे हरिभक्तमां होय छे हवे जेने धर्मनीष्टा प्रधान होय, ते तो अहिंसा ब्रह्मचर्यादिक रूप जे पोतानो वर्णाश्रम संबंधी सदाचार तेणे जुक्त थको निर्द-

भपणे करीने भगवानने भगवाननी भक्तनी सेवाचाकरी करवी तेने विषे प्रितिये करीने जुक्त र्त्तें अने भगवाननां मंदिर करवां तथा भगवानने अर्थे बागबगीचा करवा तेने विषे रुची वर्त्ते तथा भगवानने नानाप्रकारनां नैवद्य धरवां तेमां रुची वर्त्ते अने भगवानना मंदिरमां तथा संतनी जायगामां लिपवुं तथा वाळवुं तेने विषे रुची वर्त्ते अने भगवाननी श्रवण किर्त्तनादिक जे भक्ति तेने निर्दंभपणे करे अने ते धर्मनीष्टावाळा भक्तने भागवत धर्म जुक्त एवुं जे शास्त्र तेना श्रवण किर्त्तनादिकने विषे अतिशे रुचि वर्त्ते अने जेने आत्मनीष्ठा प्रधान होय तेतो त्रण देहने त्रण अवस्था तेथी परने सत्तारूप एवो जे पोतानो आत्मा ते रूपे निरंतर वर्त्ते अने पोताना इष्टदेव एवा जे प्रत्यक्ष श्रीकृष्ण परमात्मा तेने सर्वथी परने अति सुद्ध स्वरूपने सदा दिव्य साकार मुर्त्ति समजे अने ते पोतानो आत्मा तथा ते परमात्मा तेना सुद्धस्वरूपना प्रतिपादननी करनारी जे वार्ता तेने पोते करे ने बीजाथी सांभळे तथा तेवी रीतना शास्त्रमां प्रीतियेजुक्त वर्त्ते ने पोताने आत्मसत्तापणे वरतवुं तेमां विक्षेप आवे तो तेने सहन करी शके एवी प्रकृतिवळो होय अने जेने वैराग्यनिष्टा प्रधान होय तेने तो एक भगवाननी मूर्त्ति विना जे सर्वे मायीक पदार्थ मात्र तेने विषे निरंतर अरुचि वरते अने असत्स्वरूप जाणीने पोते मळ्या पेठे त्याग कर्यां

जे ग्रह कुटंबी आदिक पदार्थ तेने निरंतर विस्मृति वर्त्ते अने ते भक्त जे ते त्यागी एवा जे
भगवानना भक्त तेना समागमनेज करे ने भगवाननी भक्तिने करे ते पण पोताना त्यागमां वि-
रोध न आवे तेवी रीते करे अने त्याग छे प्रधानपणे जेमां एवी वार्त्ताने पोते करे अनेत्यागने
प्रतिपादन करनारुं जे शास्त्र तेने विषे रूचीवाळो होय अने पोताना त्यागने विषे विरोध कर-
नारा जे स्वादु भोजन ने सदृआदिक पंच विषय संबंधी मायीक पदार्थ मात्र तेने पामवाने विषे
अतिशे अरूची वरते. अने जेने भक्तिनिष्टा प्रधान होय तेने तो एक भगवानना स्वरूपने विषे
ज अतिशे दृढ प्रीति वर्त्ते ने ते भगवानना स्वरूपथी अन्य एवा जे मायीक पदार्थ तेने विषे
पोताना मननी वृत्तिने धारी शके नहि अने प्रेमे करीने भगवानने वस्त्र अलंकारनुं धारण करे
अने ते भक्तने भगवाननां जे मनुष्य चरीत्र तेना श्रवणने विषे अतिशे रूची वर्त्ते तथा भगवा
ननी मुर्त्तिना निरूपणने करनारुं जे शास्त्र तेने विषे अतिशे रूची वर्त्ते अने जे भक्तने भगवा-
नने विषे प्रेमने देखे ते भक्तने विषेज तेने प्रिति थाय ते विना तो पोताना पुत्रादिकने विषे
पण क्यारेय प्रिती न थाय अने ते भक्तने भगवान संबंधी क्रियाने विषेज नीरंतर
प्रवृत्ति होय, एवी रीते आच्यार निष्टावाळा भक्तनां लक्षणनी वार्त्ताने वि-

च

ने आ वार्त्ता छे ते तो दर्पण तु-
चारीने जेनुं जेवुं अंग होय तेवुं ते कहो ? अने आ वार्त्ता छे ते तो दर्पण तु-
ल्य छे ते जेने जेवुं अंग होय तेवुं तेने देखाडी आपे छे ने भगवानना भक्त होय ते तो अंग
विनाना होय नहि पण पोताना अंगने ओळखे नहि एटले पोताना अंगनी द्रढता थाय नहि
अने ज्यां सुधि पोताना अंगनी द्रढता न थइ होय त्यां सुधि जेवी वात थाय तेवुं तेनुं अंग
व्यभिचरी जाय माटे आ वार्त्ताने विचारीने पोत पोताना अंगनी द्रढता करो ने जेनुं जेवुं अंग होय ते
तेम बोलो, पछे हरिभक्त सर्वे जेवुं जेनुं अंग हतुं ते तेवी रीते बोल्या पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे
जेनुं एक सरखुं अंग होय ते उठी उभा थाओ, पछे जेनुं जेनुं एक सरखुं अंग हतुं ते उ-
भा थया. पछे श्रीजीमहाराजे ए सर्वेने पाछा बेसार्या. पछे नित्यानंद स्वामीये पुछ्युं जे
ए चारे अंगवाळाने पोत पोताना अंगमां कांइ गुण दोष छे के नहि? पछे श्रीजी महाराज
बोल्या जे गुण दोष छे ते कहिये ते सांभळो जे ए चारे अंगवाळा जे भक्त तेमनां ज आ
प्रथम लक्षण कह्यां ते प्रमाणे ए वर्त्ते ते तो एमने विषे गुण छे अने ए प्रमाणे जेने न वर्-
ताय एटलो एमने विषे दोष छे. पछे मुक्तानंद स्वामीये पुछ्युं जे ए चार निष्टावाळाने विषे
कोइक अधिक न्यून छे के ए चारे तुल्य छे? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे ज्यां सुधी ए-

क एक निष्टाने विषे वर्तता होय त्यां सुधी तो ए चारे सरखा छे अने ज्यारे ए चार निष्टा एकने विषे वर्ते त्यारे ते सर्व थकी अधिक छे अने ज्यारे ए च्यार निष्टा एकने विषे वरत्ते त्यारे तेने परमभागवत कहीये अने एनेज एकांतिक भक्त कहीये ॥इति वचनामृतम्. ॥ ४७ ॥

संवत १८७६ना महा सुदि १३ तेरसने दिवस स्वामी श्री सहानानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेव नारायणना मंदिर-आगळ लिंबडाना वृक्षनी हेठे ओटा मधे ढोल्लीया उपर आथमणे मुखारविंदे संध्यासमे विराजमान हता ने सर्व श्वेत वस्त्र पेरयां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ बे मशाल बळती हती अने श्री वासुदेव नारायणनी संध्या आरती तथा नारायण धुन्य थइ रही ते केडे श्रीजीमहाराज बोल्या जे सर्वे सावधान थइ ने सांभळो एक वार्त्ता करीयेछीये, त्यारे सर्वे मुनी तथा हरिभक्त बोल्या जे हे महाराज कहो. पछे श्रीजीमहाराज बोल्याजे जे भगवाननो भक्त होय तेने नित्य प्रत्ये भगवाननी पुजा करीने ने स्तुती करीने भगवान पासे एम मागवुं जे हे महाराज हे स्वामीन, हे कृपासींधो हे शरणां-

गत प्रतिपालक कुसंगी थकी मारी रक्षा करज्यो. ते कुसंगी च्यार प्रकारना छे. एक कुंडापंथी, बीजा शक्तिपंथी, त्रिजा वेदांति, चोथा नास्तिक ए च्यारे प्रकारना कुसंगी छे, तेमां जो कुंडापंथीनो संग थाय तो वर्त्तमानमांथी चुकावीने भ्रष्ट करे, अने जो शक्तिपंथीनो संग थाय तो दारु मांस खवरावीने स्वधर्म थकी भ्रष्ट करे, अने जो वेदांतिनो संग थाय तो भगवाननुं धाम तथा भगवाननो जे सदा दिव्य आकार तथा भगवानना अवतारनी मुर्त्तियुंना जे आकार ते सर्वेने खोटा करीने भगवाननी भक्ति ने उपासना ते थकी भ्रष्ट करे, अने जो नास्तिकनो संग थाय तो कर्मनेज साचां करीने परमेश्वर एवा जे श्रीकृष्ण भगवान तेने खोटा करी देखाडे ने अनादी सत शास्त्रना मार्ग थकी भ्रष्ट करे. माटे भगवाननी पासे मागवुं जे ए च्यारे प्रकारना माणसनो कोइ दिवस संग थाशो नहि. अने वळी एम प्रार्थना करवी जे महाराज काम, क्रोध, मोह, अहंकार, इर्षा, देहाभिमान ए आदिक जे अंतर शत्रु ते थकी रक्षा करज्यो ने नित्ये तमारा भक्तनो समागम देज्यो एवी रीते नीत्ये भगवाननी प्रार्थना करवी ने ए कुसंगी थकी ने अंतर शत्रु थकी नीरंतर डरता रहेवुं ॥ इति वचनामृतम्. ॥ ४८ ॥

संवत १८७६ना माहा शुदि १४ चौदशने दिवस संध्या समे स्वामी श्रीसहजानंद

त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेम अंधारुं घर होय, ने तेमां कोठी तथा थांभला रह्या होय तेने देखे छे, तोपण यथार्थ देख्या न कहेवाय तेम पुरुषोत्तम भगवानने विषे जडचिद प्रकृति रही छे, ने ए प्रकृतिने विषे पोते रह्या छे, तेने अनुमाने करीने जाणे छे, पण जो देख्यामां नथी आवतुं तो परीपूर्ण ज्ञानी न कहेवाय. अने जो एने एवी आंटी ठावकी छे, तो कांइक एने अलौकिकपणुं जणाणुं जोइए नहि तो जणाशे. अने निःसंदेह एवी आंटी छे, ने जणातुं नथी तो एम समजे जे ए भगवानने विषे तो सर्व छे पण मुने देखाडता नथी, एवीज एमनी इच्छा छे एम समजीने ते भगवाननी भक्ति करतो थको पोताने कृतार्थ माने छे; तोए परीपूर्ण ज्ञानी छे. माटे इंद्रियुं अंतःकरण ने अनुभव ए त्रणे प्रकारे करीने जे भगवानने यथार्थपणे जाणतो होय तेने ज्ञानी कहिए, ने तेवा ज्ञानीने भगवाने गीतामां श्रेष्ठपणे कह्यो छे॥ आर्त्तोजीज्ञासुरर्थार्थि ज्ञानीच भरतर्षभतेषां ज्ञानी नित्य युक्त एक भक्ति विंशीष्यते ॥ एवो जे ज्ञानी ते तो सदासाकारमुर्त्ति एवा जे प्रत्यक्ष भगवान तेने प्रकृति, पुरुष ने अक्षर ते थकी पर ने सर्वना कारण, सर्वना आधार जाणीने अनन्यपणे सेवे छे, एवी रीते ज समजवुं तेने ज्ञान कहिए. अने ए ज्ञाने करीने आत्यंतिक मोक्ष थाय छे, अने जे एम नथी समजता ने केवळ

शास्त्रे करीने अहंब्रह्मास्मी थइ बेसे छे ने कहे छे जे राम, कृष्णादिक तो ब्रह्मरूप एवो जे हुं ते मारी लेहेरी छे, एवा जे ब्रह्म कुदालआधुनीक वेदांति ते तो अति दुष्ट छे, ने महा पापी छे, अने मरीने नर्कमां पडे छे, ते कोइ दिवस एनो छुटको थातो नथी. ॥ इति वचनामृतम् ॥ ७ ॥ २१५ ॥

संवत १८७८ ना मागशर शुदि ५ पंचमीने दिवस रात्रीने समे श्रीजीमहाराज गाम श्री लोह्या मध्ये सूरा खाचरना दरबारमां विराजमान हता अने धोळो फेंटो मस्तके बांध्यो हतो ने धोळी छींटनी डगली पेहेरी हती. अने धोळो खेस पेहेर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी अगळ पर्महंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. ते समयने विषे श्रीजीमहाराजने मुक्तानंद स्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे जे भोळो होय तेने तो कोइक स्वभाव देखीने संतनो अवगुण आवे पण जे डाह्यो होय तेने संतनो अवगुण केम आवे छे? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे जे डाह्यो होय तेने पोतामां जे कोइ अजोग्य स्वभाव देख्यामा आव्यो ने तेनी उपर पोते अति दोषबुद्धि राखीने द्वेषे सहित ते स्वभावने टाळवानो दाखडो करतो होय अने ते स्वभाव उपर पोताने अति खार होय अने तेनो ते स्वभाव कोइ बिजा सं-

तमां देखाय त्यारे तेनो अभाव आवे छे अने जे मुखं होय ते तो पोताना स्वभावने टाळे नहि ने बिजा संतमां कांइक ते स्वभाव देखे तो तेनो अवगुण लेइ तेने मुखं कहिये. त्यार पछी श्रीजी माहाराजे नाना नाना पर्महंसने तेडावीने पोते प्रश्न शिखववा लाग्या ने पोते उत्तर करवा लाग्या.तेमां प्रथम तो पोते एम प्रश्न पुछ्यो जे काम,क्रोध ने लोभादिक शत्रूनो जे वेग तेनुं जे तिव्रपणुं ने मंद पणुं ते बाल्य, यौवन ने वृद्ध तेणे करीने छे; केइ रीते तो बाळपणामां मंदवेग होय अने यौवन अवस्थामां तिव्र वेग होय ने वळी पाछुं वृद्ध पणामां मंदपणुं थाय ए कामादिकनुं तिव्र-मंदपणुं छे ते तो जणाय छे, पण विचारे करीने एनुं मंदपणुं छे के नहि? त्यारे तेनो उत्तर पोते कर्यो जे विचारे करीने पण कामादिकनुं मंदपणुं छे. ते विचार केम करे तो बाळ अवस्थामां मंद पणुं छे ने योवन अवस्थामां तिव्र पणुं छे ने वृद्ध अवस्थामां पाछुं मंद पणुं छे. ते तो आहारे करीने छे, जे बाल्य अवस्थाने विषे पण आहार थोडो छे, माटे काम पण ओछो छे. ने वृद्ध अवस्थामां पण आहार ओछो होय एटले काम पण ओछो होय, अने योवन अवस्थामां आहारनी वृद्धि होय एटले कामनी पण वृद्धि होय, ते माटे जो यौवन अवस्थामां आहार ओछो करे ने देहे करीने शितोष्ण,वरसात,भुख तेनुं जाणीने सहन करे एवो जे विचार राखे.

अने मोटा साधुनो समागम राखे तो तेने यौवन अवस्थामां पण काम मंद पडी जाय. अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयो जे जीवने नाना प्रकारनां व्यसन पडे छे, कोइकने भांगनुं, अफिणनुं, दारुनुं, गांजानुं, इत्यादिक अनेक प्रकारनां पडे छे, ते व्यसन क्रियमाण छे के प्रारब्धे करीने छे. त्यारे तेनो उत्तर पण पोतेज कर्यो जे ए व्यसन तो करयां थाय छे, पण प्रारब्धे करीने नथी माटे जो व्यसनने टाळ्याने श्रद्धा सहित आग्रह करे ने सूरविरपणुं होय तो ते टळी जाय, पण श्रद्धा न होय ने फोशी होय तो ए स्वभाव टळे नहि. पछे वळी श्री जीमाहाराजे प्रश्न पुछयो जे केटलाक बाळकने तो वृद्धना सरखी प्रकृति होय छे ने केटलाकने तो अति चंचळ प्रकृति होय छे ते संगे करीने थाय छे के एना जिवमांज एवी प्रकृति रही छे. त्यारे तेनो उत्तर पण पोते कर्यो जे बहुधा तो संग करीनेज सारी नरशी प्रकृति थाय छे, ने केटलाकने तो पुर्व कर्मानुसारे पण थाय छे. ते पछे कपीलेश्वरानंद स्वामीए पुछयुं जे, हे महाराज पुर्वनो स्वभाव होय ते केम जाणवो ने हमणांनो स्वभाव होय ते केम जाणवो? त्या-श्रीजीमहाराजे तेनो उत्तर कर्यो जे जे स्वभाव हमणांनो होय ते तो जो रुडा संतने संग रही ने थोडोक तेने टाळ्यानो उपाय करे तो टळी जाय. जेम वंडी उपर त्रण उग्यां होय ते पांच

दहाडा मेघ न वरसे तो सुकाइ जाय तेम हमणाना जे स्वभाव ते तो थोडाक दिवसना टळी जाय छे, अने जे पूर्वनो स्वभाव होय तेने टाळ्यानो तो अति दाखडो करे त्यारे मांड मांड टळे; जेम धरतीमां द्रोनो छोड होय अथवा बोरडीनां झाड होय तेने तो खेडुं अग्नि लगाडो ने बाळी दे तो पण पाछो फुटी आवे, ने जो कोदाळी लेइने मुळमांथी खोदी नाखे तो जाय. तेम जे पूर्वनो स्वभाव होय तेने रुडा संतना समागममां रहीने अति प्रयासे करीने टाळे तो मांडमांड टळे. अने त्यार पछे वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछचो जे जेनां इंद्रियो चंचळ होय ते चंचळताने टाळ्याना प्रथक् प्रथक किया उपाय छे? त्यारे तेनो उत्तर पण पोतेज करचो जे चक्षु इंद्रिनी चंचळता टाळ्यानो ए उपाय छे, जे नाशीकाग्र द्रष्टी राखे ने आडुं अवळुं जुवे नहि, भणवुं होय तो भण्या करे तथा भजन स्मरण करचा करे अने जो एम करतां न्ही आदिक देखाइ जाय ने अजोग्य घाट न थयो होय तो पण नेत्रने उघाडां राखीने मेखोनमेखे रहित करीने ज्यां सुधी नेत्र सारी पेठे बळे ने आंसुं चाले त्यां सुधी घडी बे घडीपरजंत जोइ रहे त्यारे तेनी दृष्टी चंचळ होय तो पण वश थइ जाय छे. अने नासीका इंद्रि छे, ते कोइनुं शरीर अथवा मुख के वस्त्र ते गंधातुं होय, तेनो गंध ले त्यारे तेने न गमे त्यारे तेनो

एम विचार करे जे मारो देह पण उपरथी सारो छे, पण मांहितो रुधिर, मांस, हाडचक्रां छे तथा पेटमां मळ मुत्र आंतरडां छे, एम विचारे तो नासीकानी चंचळता टळे. अने कांननी चंचळता एम टळे जे कोइक रमुज थाती होय, अथवा भवाइ थाती होय तो तेने सांभळ्यामां हेत थाय ने भगवाननी कथा किर्त्तन, सांभळ्यामां निंद्रा आवे त्यारे उभा थावुं, ने निंद्रा आळसने टाळवुं. ने भगवाननी कथा सांभळ्यामां श्रद्धा राखवी ने हेत राखवुं तो कांन जिताय अने त्वचा ईंद्रिने एम जिते जे जाणी जाणीने टाढय, तडको, वरसात तेने खमवो, गोदडी होय ते उसीके मुकी राखवी ने सारी पेठे टाढय वाय त्यारे ओढवी तथा ज्यां त्यां पडी रेहेवुं, एम करीने त्वचाने बाळी नाखे एम करे तो त्वचा ईंद्रिनी चंचळता टळे. अने हाथनी चंचळता एम टळे जे ज्यारे हाथ नवरा होय त्यारे हाथमां माळा राखीने स्वासो स्वास भगवाननुं नाम लेइने ते माळा फेरववी पण उतावळी लहरके माळा न फेरववी, ने केटलाक एम कहे छे जे, मने करीने तो नाम वधु लेवाय ए वात खोटी छे, जेटलां जिभे लेवाय तेटलांज मने करीने लेवाय छे, एम करे तो हाथनी चंचळता टळे. अने पग चंचळ होय तो आसनने जिते तो पग जिताय. अने जि[illegible] चंचळ होय तो जेम किणी खस होय, के रातो

दादर होय तेने खजाळीए तो लोही निकळे त्यां सुधी खरज टळे नहि. अने जो न खजाळीए तो ते एमने एम वळी जाय,तेम शिश्न इंद्रिमां चेळ आवे तोपण तेने हाथे करीने अडेज नहि.अने जो शिश्नमां वायु भरातो होय तो आहार थोडो करे ने उपवास कर्या करे, ने देह बळहिन करी नाखे तो शिश्न जिताय. अने जिव्हा इंद्रिने जितवी होय तो जेवस्तु जीभने गमती होय, ते वस्तु न आपवी, अने अहार जुक्त करवो तो जीव्हानी चंचळता टळे. अने वाणी चंचळ होय तो एम टळे जे मुक्तानंद स्वामी जेवा वार्त्ता करता होय, तथा कथा वांचता होय, ने वचमां पोते डापण करीने बोलवुं नहि, अने जो वचमां बोलाइ जाय तो पचवीस माळा फेरववी तो वाणीनी चंचळता टळी जाय. अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे ए सर्व इंद्रियो छे तेमांथी एकने परीपक जीते तो सर्व इंद्रियो जीताय एवी एक कइ इंद्रि छे ? त्यारे तेनो उत्तर पण पोते कर्यो जे, एक जीव्हाने परीपक जिते तो बिजी सर्व इंद्रियो जिताय छे. त्यार पछे वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे जे पुरुषने अंतरमां काम व्याप्यो होय तेने बाहेरथी केम जाणीए जे एने काम व्याप्यो छे, अने एनुं जे अंग ते तो वस्त्रमां ढांक्युं होय छे. त्यारे तेनो उत्तर पण पोते कर्यो जे जेने काम व्यापे तेना नेत्र

आदिक जे सर्वे इंद्रियो ते चंचळ थाय त्यारे जाणवुं जे ए कामे व्याकुळ थयो छे. अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे जेनो चंचळ स्वभाव होय तेने शांत थावुं, अने जेनो शांत स्वभाव होय तेने चंचळ थावुं ते किया विचारे करीने थायछे? त्यारे तेनो उत्तर पण पोतेज कर्यो जे जे चंचळ होय ते एम विचारे जे हुं आत्माछुं, ब्रह्मछुं ने अलींग छुं ने आकाशनी पेठे स्थिरछुं एवे विचारे करीने उपशम अवस्थाने पामे तो चंचळ होय ते शांत थाय. अने जे शांतने चंचळ थावुं होय तेने तो भगवान ने भगवानना भक्तनुं माहात्म जाणवुं, ने महात्म जाणे त्यारे भगवाननी नव प्रकारे भक्ति करे, तथा भगवानना भक्तनी सेवा चाकरी करे तेणे करीने एनो चंचळ स्वभाव थाय छे. अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे, श्रीमद्भागवतादिक जे आठ सतशास्त्र तेमांथी कांइ त्याग करवा योग्य छे, के सर्वे ग्रहण करवा योग्य छे? त्यारे तेनो उत्तर पण पोतेज कर्यो जे ए सर्वे ग्रंथमां पण अनेक प्रकारनां प्रकरणछे, ते सर्वे प्रकरणे करीने भगवानने पाम्यों जे भक्त तेमनां अंग कह्यां छे, माटे ए सर्वे ग्रहण करया योग्यछे, पण सर्वे प्रकरणमांथी जे प्रकरण पोताना अंगमांथी मळतुं आवतुं होय तेने ग्रहण करवुं, ने विजानो त्याग करवो [illegible]

पण मारे अर्थे नथी अने वळी श्री-

जामहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे आ तमे सर्वे नाना छोकरा वेठा छो तेमांथी कोइकने तो आ सर्वे संत प्रमाण करेछे ने कोइकनुं तो नथी करता अने सर्वेनी अवस्था सरखीछे ने संग पण एक सरखो छे; अने भोजन, वस्त्र, उपासना, शास्त्र, उपदेश, मंत्र ते सर्वेने एक सरखो छे तो पण जे न्युनाधिकपणुं रही गयुं तेनुं शुं कारण छे? अने जे संत छे ते तो सम द्रष्टि वाळा छे, ने निरपक्ष छे ने धर्म वाळा छे, ते तो जें जेवो होय तेने तेमज कहे माटे एनो उत्तर कहो? पछे पोतेज एनो उत्तर कर्यो जे, जेनां संत वखाण करे छे तेने श्रद्धाछे माटे धर्म पाळ्याने विषे तेनो वधारोछे, ने तेने संतनी सेवा करवाने विषे तथा भगवाननी वात सांभळवाने विषे पण श्रद्धाछे ने संतनो विश्वासछे, माटे ए वधी गयो. अने जे आता समागममां रह्यो थको वध्यो नहि, ते श्रद्धा रहित छे एम जाणवुं. ॥इति वचनामृतम्॥८॥११६॥

संवत १८७८ ना मागशर शुदि ६ छठने दिवस श्रीजीमहाराज गाम श्री लोयां मध्ये सुरा खाचरना दरबारमां विराजमान हता ने धोळी छींटनी डगली पहेरी हती. तथा धोळो सुरवाळ पेहेर्यो हतो तथा धोळो फेंटो मस्तके बांध्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ पर्महंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने वेठी हती पछे श्रीजी महाराज बोल्या

जे सर्वे पर्महंस परस्पर प्रश्न उत्तर करो. त्यारे आत्मानंद स्वामीए अखंडानंद स्वामीने प्रश्न पुछो जे वैराग्य, ज्ञान, भक्ति ने धर्म ए चारने उपज्यानो हेतुं शुं छे? पछे तेनो उत्तर श्रीजी महाराजे कर्यो जे वैराग्य तो एम उपजे के जो काळनुं स्वरूप जाण्यामां आवे ते काळनुं स्वरूप ते शुं तो नित्य प्रलयने जाणे ने नैमीतिक प्रलयने जाणे ने प्राकृत प्रलयने जाणे ने आत्यंतिक प्रलयने जाणे तथा ब्रह्मादिक स्तंबपर्यंत सर्वे जीवना आयुष्यने जाणे ने एम जाणीने पिंडब्रह्मांड सर्वे पदार्थने काळनुं भक्षण समजे त्यारे वैराग्य उपजे. अने ज्ञानतो एम थाय जे जो बृहदारण्य छांदोग्य कठवल्ली आदिक जे उपनिषद तथा भगवद्गीता तथा वासुदेव महात्म तथा व्यास सूत्र इत्यादिक ग्रंथनुं सदगुरु थकी श्रवण करे तो ज्ञान उपजे. अने धर्म तो एम उपजे जे जो याज्ञवल्क्य स्मृति, मनुस्मृति, पराशर स्मृति शंख लिखितस्मृति इत्यादिक स्मृतिनुं श्रवण करे तो धर्म उपजे ने तेमां निष्ठा थाय. अने भक्ति एम उपजे जे जो भगवाननी जे विभूतियुं छे तेने जाणे ते केम जाणे तो खंडा खंड प्रत्ये भगवाननी मूर्त्तियुं जे रही छे तेनुं श्रवण करे तथा भगवानना गोलोक, वैकुंठ, ब्रह्मपुर, श्वेतद्विपादिक धाम छे तेने सांभळे तथा जगतनी उत्पत्ति स्थिति प्रलय रूप जे भगवाननी लीला तेने महात्मे सहित सांभळे "तथा राम

ष्णादिक जे भगवानना अवतार तेनी जे कथाउं तेने हेते सहित सांभळे तो भगवानने विषे भक्ति उपजे. अने ए चारमां जे धर्म छे ते तो कांची बुद्धि होय ने प्रथमज कर्म कांड रूप जे स्मृतियुं तेनुं श्रवण करे तो उपजे. अने ज्यारे धर्मने विषे दृढता थाय त्यारे पछे उपासना ग्रंथनुं श्रवण करे त्यारे एने ज्ञान, भक्ति, वैराग्य ए त्रणे उपजे एवी रीते ए चारने उपज्याना हेतुं छे. ॥इति वचनामृतम्॥९॥११७॥

संवत १८७८ ना मागशर शुदि ८ आंठमने दिवस श्रीजी महाराज गाम श्री लोया मध्ये सुरा खाचरना दरबारमां ढोलीया उपर प्रातःकाळने समे विराजमान हता ने धोळो छींटनी डगली पहेरी हती तथा धोळो सुरवाळ पहेर्यो हतो ने धोळो फेंटो मस्तक उपर बांध्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरि भक्तनी सभा भराइने बेठी हती ते समयमां नित्यानंद स्वामीए प्रश्न पुछयो जे आ जगतमां केटलाक मनुष्यने स्त्रीयादिक पदार्थमां एवुं हेत थाय छे जे तेनो विजोग थयो होय तो प्राणनो त्याग थइ जाय. अने केटलाकने स्त्रीयादिक पदार्थमां हेत छे पण साधारण छे, माटे तेना विजोगे करीने प्राण न थाय ए बे प्रकारना जिव छे ते जेम संसारमां हेते करीने जोडाय छे तेम ते हेत

वाळाने जो भगवान मळे तो तेमां पण एमज जोडाय जेम भगवाननो विजोग थाय तो प्राण-
जाय अने जेने संसारमां साधारण हेत छे ने तेने भगवान मळे तो भगवानमां पण साधारण हे-
त थाय ते ए त्रे प्रकारना जे मनुष्य तेने विषे कर्मे करीने एवो भेद छे के ए त्रे प्रकारना जीव
अनादिनाज छे. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे ए भेद जीवमां स्वभाविक नथी एतो कर्म करी
ने थाय छे, ते केवी रीते थाय छे तो ज्यारे जिव कर्म करे छे त्यारे जीवनी वृत्तिनो वेग त्रण
प्रकारे थाय छे. एक मंदवेग ने बिजो मध्यवेग ने त्रिजो तिव्रवेग तेमां जेवे वेगे वृति पदार्थ-
मां चोटे त्यारे तेने तेवी जातनुं कर्म लागे छे, ते कर्मे करीने स्नेहमां त्रण प्रकार छे, पछे
वळी नित्यानंद स्वामीए पुछयुं जे वृत्तिना वेगमां त्रण प्रकार थया, ते गुणे करीने थया के
कोइ बिजा हेतुए करीने थया. त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ए त्रण प्रकारना जे भेद त
गुणे करीने नथी, एतो जे पदार्थमां केवळ इंद्रियुं प्रवर्ते त्यारे मंदवेग थाय छे, अने ज्यारे
मने सहित इंद्रियुं पदार्थमां जायत्यारे मध्य वेग थाय छे, अने ज्यारे इंद्रियो मन ने जीव ए
त्रण भेगां थइने पदार्थमां प्रवर्तेछे, त्यारे ते वृतिनो तिव्रवेग थाय छे अने ते तिव्रवेग एक चक्षु
इंद्रिने विषे लाग्यो होय तो बिजी इंद्रियो तेने अनुवरात थैने सर्वे इंद्रियोमां लागे छे अवि-

रिसे जेजे इंद्रिमां मुख्यपणे तिव्रवेग लाग्योहोय, त्यारे बिजीइंद्रियेतेने अनुवरती थइ रहेछे अने ए जे तिव्रवेग ते रजोगुणी, सत्वगुणी ने तमोगुणी ए त्रणेने लागे छे, अने एक एक इं-द्रिमां तो सवेने तिव्र वेग होय छे, अने तदानुंसारे पदार्थमां हेत थाय छे. त्यारे वळी नित्या-नंद स्वामीए पुछ्युं जे एने भगवानमां केम तिव्र वेगे करीने हेत थातुं नथी. त्यारे श्रीजीमहा-राज बोल्या जे देशकाळ, क्रिया, संग, मंत्र, दिक्षा उपदेश ने देव, एटलाने योगे करीने शूभ अथवा अशूभ आचरण थाय छे,ते जो रूडा देशकाळ संगादिक प्राप्त थयां होय, तो भगवानने विषे पण तिव्रवेगे करीने स्नेह थाय छे, अने जो भुंडा देशादिकनो जोग थाय तो भगवान विना अन्य पदार्थमां प्रीती थाय छे. त्यारे चैतन्यानंद स्वामीए पुछ्युं जे, काळ वि-शम होय त्यारे केम करवुं ? पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ज्यारे.जे स्थळमां काळनुं विशम पणुं होय त्यारे ते ठेकाणेथी अन्य स्थळमां भागी जवुं, पण विशम काळमां रहेवुं नहि.ते का-ळसत्ययुग, द्वापर, कळी रूपे करीने बाहेर वर्त्ते छे, ने पोताना अंतरमां पण वर्ते छे. ते ज्यारे हैयामां कळी वर्ततो होय, त्यारे भगवाननी मूर्त्ति हैयामां धारवी नहि, बाहेर नेत्रने आगळ रवी. पछे मकानंद स्वामीए पुछ्युं जे जेना हृदयमां मंदवेग, मध्यवेग ने तिव्रवेग वर्त्ततो

होय ते केम जाणवो. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ज्यारे मंदवेग वर्त्ततो होय त्यारे नानी बाळकी तथा नव यौवनवाळी स्त्री तथा वृद्ध स्त्री ए त्रणेने देखीने सरखो भाव रहे केम जे त्यां एकली इंद्रियोनीज वृत्ति गइ छे, माटे तेमां मंदवेग छे अने ज्यारे इंद्रिये विषे मन भळे छे ने ए त्रण प्रकारनी स्त्रीने देखे छे त्यारे बाळकीने वृद्ध स्त्री तेनो तो भुंडो घाट नथी थातो अने जुवान स्त्रीने विषे भुंडो घाट थाय छे, ने विकारने पामी जाय छे. एने मध्यवेग जाणवो. अने ज्यारे इंद्रिये विषे मन ने जिव ए बेय भेळीने ए त्रणे प्रकारनी स्त्री देखे छे, त्यारे तो ए त्रणे प्रकारनी स्त्रीने विषे भुंडो घाट थाय छे ने विकारने पामे छे अने पोतानी मा बोन होय तो तेने देखीने पण विकारने पामे एने तिव्रवेग जाणवो. पछे ब्रह्मानंद स्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे ए त्रण प्रकारनी जे स्त्रियुं तेने देखे ने व्यक्ति जाणय तथा रूप कुरूप पण जाणे, अने विकार तो थाय नहि त्यारे तेने कियो वेग जाणवो. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे जे पदार्थने अत्यंत दुःख दाइ जाणीने मन न थयुं होय पछे ते मनने करीने ते पदार्थने विषे अत्यंत दोष जणाय छे ते दोषनो मनमां विचारे थइने जीवमां ते दोष प्रवेश करे छे: अने जिवथी पर जे साक्षी तेणे पण ते दोषनुं प्र-

माण कर्यु छे, तेणे करीने ए दोषनी अति दढता थइ छे, माटे पदार्थने विषे ज्यारे इंद्रिनी वृति थाय छे, त्यारे ते वृत्तिने। भेळे मन तथा जिव ए बेय आवे छे, पण जीवमां जे अतिशे दोषनी दढता छे ते दोषनी सेड मन इंद्रियुं ने विषे सोंसरी निसरे छे माटे ते पदार्थ यथार्थ देखाय ते जाण्यामां आवे, पण तेने विषे अत्यंत अभाव आवी जाय छे. जेम दुधमां साकर नुं पात्र भर्यु होय ने तेमां सर्प लाळ नाखी होय, ने तेने नांखतां दिठी होय पछे ते दुध जेवुं पूर्वे देखातुं हतुं तेवुंने तेवुंज देखाय, पण तेनो अति अभाव हैयामां वरते छे, केम जे एने एम जाण्युं छे जे एने पिये तो तत्काळ प्राण जाय; तेम जेने एम समजाणुं जे आ रुपवान स्त्री छे ते कल्याणना मार्गमां विरोधि छे, अने आलोक परलोकने विषे परमदुखदाइ छे ने स्त्रीनी प्राप्ति तो मुने सर्वे पशु आदिकना जन्मने विषे अनंत वारे थइ छे अने हजी जो परमेश्वरने नहि भजुं तो अनंत स्त्रीनी प्राप्ति थाशे, माटे ए वात दूर्लभ नथी. अने जे भगवान ने भगवानना संत तेनो संग ते तो महा दूर्लभ छे, अने ए दूर्लभ वस्तुनी प्राप्तिने विषे ए स्त्रीज परम विघ्न रूप छे, एवुं जाणीने जे हैयामां दोषनी दढता थइ छे तेणे करीने गमे तेवी रुपवान स्त्री स्नाइ जाय, तो पण विकार थाय नहि: अने वळी अविकार रह्यानुं बिजुं पण कारण छे,

जेम जनक विदेही जेवा जे मोटा भगवानना भक्त राजा हता, ते राज्यमां रह्या हता. ने रमणीक एवा जे शब्दादिक पंच विषय तेने भोगवता थका पण ज्ञाननी दृढताए करीने निर्विकारपणे रह्या.अने ए जनक जेवा ज्ञानीनी होय, ते एम विचारे जे हुं आत्मा छुं, शुद्ध छुं, चैतन्य छुं, निर्विकार छुं, सुखरूप छुं, अविनाशी छुं, अने स्त्रियादिक जे विषय छे ते तो दुःखरूप छे, ने तुच्छ छे ने जड छे, ने नाशवंत छे, एम विचारे ने केवळ पोताना आत्मस्वरूपनेज सुखरूप जाणे छे, अने शब्दादिक विषयमां जे सुख जेवुं जणाय छे, ने सारा जेवुं जणाय छे, ते आत्मावते जणाय छे; ने आत्मादेहमांथी निकळी जाय त्यारे सुखरूप होय ते भुंडुंथइ जाय छे. एवी रीते पोताना आत्माने विचारे अने आत्म थकी पर जे परमात्मा तेनो विचार करे जे आवुं जे माया थकी पर शुद्ध आत्मानुं ज्ञान तेने हुं पाम्यो. ते संतने प्रतापे पाम्यो छुं, अने ते संत परमेश्वरना भक्त छे, अने परमेश्वर ते तो सर्वात्मा छे, एवा जे ब्रह्म तेना पण आत्मा छे, अने अक्षरना पण आत्मा छे, अने अनंत कोटी जे मुक्त तेना पण आत्मा छे. एवा जे परब्रह्म परमात्मा नारायण तेनो हुं ब्रह्म रूप एवो दास छुं अने ते भगवाननो महिमा तो एम समजे जे.॥ द्युपतयएवनतेययुरंतमनंततया॥ इत्यादिक श्रुतिए भगवाननो महिमाअ-

तिशे प्रतिपादन कर्यो छे. एवी रीते पोताना स्वरूपनु तथा परब्रह्मना स्वरूपनुं जे ज्ञान छे, तेने गमे तेवा सुंदर विषय प्राप्त थाय पण तेणे करीने कांइ लेश मात्र पण तेनुं मन विकारने पामे नहि. अने अवश्य जे शब्दादिक विषय ग्रहण करयां जोइतां होय तेने ग्रहण करे पण ते विषयने आधिन थइ जाय नहि, स्वतंत्रपणे ग्रहण करे. जेम करोळीयो पोतानी लाळने विस्तारीने पाछो स्वतंत्रपणे गळवी घटे त्यारे गळी लेछे, तेम एवो जे ज्ञानी ते पोते पोतानी इंद्रियुंनी वृत्तिने विषमां पसारीने पाछो स्वतंत्र थको संकेली लेछे. अने एवो जे होय ते राज्यमां होय तोपण वनमां छे, अने वनमां होय तो पण तेने राज्य करतां वधतो आनंद छे. अने एवो जे ज्ञानी ते राज्यमां रह्यो होय, ने हजारो मनुष्य पोतानी आज्ञामां रहेता होय ने समृद्धिए जुक्त होय तेणे करीने पोताने कांइ न एम माने जे हुं बहु मोटो थइ गयो अने ते राज्यनो नाश थइ जाय ने हाथमां मृतिकानुं पात्र लइने घरोघर मागी खाय तेणे करीने एम न माने जे हुं तो हवे गरीब थइ गयो. केम जे ते पोताना केफमां महा अलमस्त रहे तथा तेणे पोताना स्वरूपनो तथा भगवानना स्वरूपनो महिमा जाण्यो छे, ते माटे एने सोनुं, कचरो, लोढुं, पाषाण ए सर्वने विशे सम बुद्धि वर्त्ते छे, तथा मान अपमानने विषे समबुद्धि वर्त्ते छे.

अने एवो जे ज्ञानी तेने कोइ पदार्थ बंधन करवा समर्थ नथी. केम जे एनी दृष्टी तो अति मोटी थइ गइ छे, ने मायीक सर्व पदार्थने तुच्छ जाण्या छे, जेम कोइक पुरुष प्रथम कंगाल होय ने पछे तेने राज्य मळे त्यारे तेनी दृष्टी मोटी थाय छे, ने प्रथम लाकडांना भारा वेचतो होय तथा बिजां तुच्छ तुच्छ काम करतो होय ते सर्व एने विसरी जाय ने मोटां मोटां राज्य संबंधि कारज करवा लागे तेम एवा ज्ञानीने सर्व पदार्थमात्र तुच्छ थइ जाय छे.ने एवा ज्ञानने विषे एनि विशाळ द्रष्टि थाय छे अने एवि रिते समजे छे ते सुखियो छे.तथा जे विश्वासी होय केतां एम समजतो होय जे आवा मोटा संत तथा भगवान जे वात कहे छे ते एमज समजे छे पण एमां कांइ संशय नथी.एम समजिने ते भगवान तथा संत जेम कहे तेम करवा लागे. ए बेजणज सुखिया छे ने ए विना जे बिजा छे ते सुखिया नथि.त्यां श्लोक छे जे॥यश्च मूढ तमोलोके यश्च-बुधे परंगतः॥तावुं भौ सुख मेधे ते क्लिश्यंत्यंतरितो जनः॥तथा भगवद्गीतामां कह्यु छे जे ॥विषया विनिवर्त्तंते निराहारस्य देहिनः॥रस वर्जं रसो प्यस्यपरम दृष्ट्वानिवर्त्तते॥एवि रिते जेनि अलोकिक द्रष्टि थाय छे तेने परमेश्वर विना सर्व पदार्थ तुच्छ थइ जाय छे अने आ बे श्लोक छे तेनो पण एक सरखो भाव छे.पछे मुक्तानंदस्वामिये श्रीजिमहाराजने कह्यु जे हे महाराज ह

वे तमे जे प्रश्न पुछता, हता ते पुछो. त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्याजे मायामां ते केवळ दुखछे के सूखपण कांइक छे?ए प्रश्न छे. पछे मुक्तानंद स्वामीये कह्युंजे मायातो केवल दुःखदाइछे पछे श्रीजिमहाराज बोल्याजे मायामांथी उपन्या एवाजे सत्व,रज ने तम ए त्रण्य गुण तेमां जे सत्वछे तेतो सूखरूप कहेवाय.छे तथा श्रीमद्भागवतमां कह्युंछेजे ॥सावंयद् ब्रह्म दर्शनं॥तथा सत्व गुणनी संपति ते ज्ञान. वैराग्य विवेक शमदमादिकछे.एवि जे माया ते कइ रिते दुःखरूपछे? अने वळी एकादश स्कंधमां कह्युंछे जे ॥ विद्याविद्येममतनूविद्धयुद्धवशारीरिणाम्॥ बंध मोक्ष करिआद्येमाययामेविनिर्मिते॥माटे मोक्षने करे एवि जे विद्या रूप मायां ते कइ रिते दुखदाइ छे?पछे ए प्रश्नने सांभळीने मुक्तानंदस्वामी आदिक सर्वे परम हंस बोल्याजे हे महाराज एनो उत्तर अमथी थाय नहि एनो उत्तर तो कृपा करीने तमेज करो. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेम यमराजानुं जे रूप ते पापी जीवने अति भयानक विकराळ जणाय छे तथा मोटा मोटा दांत ने मोटुं मुख भयानक देखाय छे, तथा काजळ जेवुं काळुं ने पर्वत जेवुं मोटुं ने काळ जेवुं भयानक एवुं दुःखरूप देखाय छे, अने पुण्यवाळा जे जीव तेने तो ते यमराजानुं रूप अतिशे सुखदाइ विष्णुं जेवुं जणाय छे. तेम मायाछे ते जे -भगवानथी विमुखछे तेने तो अति बंधन

आकातिनुं मनने विषे ध्यान करवुं, तो एने सद्य समाधि थाय, अने ते आकातिने विषे जो मन
दोषने कल्पे तो तेमां ब्रह्मनि भावना लाववी जे समग्र जगत ते ब्रह्म छे एम विचार करीनेते
संकल्पने खोटो करवो.एवी रीते जे सतशास्त्रमांथी अनुभवनुं ग्रहण करवुं ते असत पुरुषनी
समजण छे, अने एम समजवुं ए एना मननो अति दुष्ट भाव छे, अने एनुं फळ अंतकाळे
घोरतम नरक छे, ने संसृति छे: त्यारे वळी श्रीजीमहाराजने शुक मुनीए प्रश्न कर्यो जे ए
सतशास्त्र थकी सतपुरुष जे ते केवी समजणनुं ग्रहण करे छे ते कहो? त्यारे श्रीजीमहाराज
बोल्या जे ए सतशास्त्रने विषेज ए प्रश्ननो उत्तर कर्यो छे जे एक पुरुषोत्तम नारायण वि-
ना बिजा जे शिव ब्रह्मादिक देवता तेनुं ध्यान जे मोक्षने इच्छतो होय तेने करवुं नहि, अने
मनुषने विषे तथा देवताने विषे जे पुरुषोत्तम नारायणनी, राम, कृष्णादिक मुर्त्तियुं तेनुं ध्यान
करवुं, ने तेने विषे पण जे डाह्या छे ते जेते स्थानकमां राम, कृष्णादिक भगवानन्नी मनुष रूप
मुर्त्तियुं रहि छे; ते स्थानकने विषे वैकुंठ, गौलोक, श्वेतद्विप, ब्रह्मपुर ए लोकनी भावना करे
छे. अने ते लोकुने विषे रह्या जे पार्षद तेनी भावना राम कृष्णादिकना पार्शद जेहनुमान,उद्धवा-
दिक तेने विषे करे छे. अने कोटि कोटि सूर्य, चंद्रमा, अग्नि, तेना प्रकाश जेवी प्रकाशमांन

एवी जे ते लोकुने विषे रहि जे पुरुषोत्तम नारायणनी दिव्य मुर्त्तियुं तेनी भावना ते राम,क्रश्ना दिकने विषे करे छे. एवी रीते जे सतशास्त्र थकी समजणनुं ग्रहण करीने दिव्य भावे सहित मनुष रुप भगवाननी मूर्त्तिनुं ध्यान करे छे, तेने भगवानना अवतारनी जे मूर्त्तियुं तथा ते विना-ना जे अन्य आकार ते बेयने विषे समपणुं थायज नहि.अने भगवानना अवतारनी जे मुर्त्तियुं ते छे तो द्विभुज अने तेने विषे च्यार भुजानी भावना अष्ट भुजनी भावना काहिछे,ते पण भगवाननी मूर्त्तिनेते विनाना अन्य आकार ते बेमां जे अविवेकी पुरुषने समभाव थायछे;तेनी निवृत्तिने अर्थे काहि छे. अने जेवी भगवाननी मुर्त्ति पोताने मळी होय, तेनुं ध्यान करवुं. अने पूर्वे भगवानना अवतार थइ गया ते मुर्त्तिनुं ध्यान न करवुं.- अने पोताने भगवाननी-जे मुर्त्ति मळी होय, तेने विषेज पतिव्रतानी पेठे टेक राखवी. जेम पार्वतीए कह्युं छे जे॥कोटी जन्म लग रगड अमारी वरु शंभुके हुं रहुं कुंवारी ॥ एवी रीते पतिव्रतापणानी टेक ते पण भगवाननुं रुप ने अन्य जिवनुं रुप ते बेने विषे अविवेकी पुरुषने समभाव थाय छे, तेनी निवृत्तिने अर्थे कहि छे, के म जे पोताने मळी जे मुर्त्ति तेने मुकीने तेनांज पूर्वे परोक्ष अवतार थयाछे तेनुं जे ध्यान करे तो ते भगवान विना बिजा जे देव मनुष्यादिक आकार छे, तेनुं पण ध्यान करे माटे पतिवृताना

आकृतिनुं मनने विषे ध्यान करवुं, तो एने सद्य समाधि थाय, अने ते आकृतिने विषे जो मन दोषने कल्पे तो तेमां ब्रह्मनि भावना लाववी जे समग्र जगत ते ब्रह्म छे एम विचार करीनेते संकल्पने खोटो करवो.एवी रीते जे सतशास्त्रमांथी अनुभवनुं ग्रहण करवुं ते असत पुरूषनी समजण छे, अने एम समजवुं ए एना मननो अति दुष्ट भाव छे, अने एनुं फळ अंतकाळे घोरतम नरक छे, ने संसृति छे: त्यारे वळी श्रीजीमहाराजने शुक मुनीए प्रश्न कर्यो जे ए सतशास्त्र थकी सतपुरूप जे ते केवी समजणनुं ग्रहण करे छे ते कहो? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ए सतशास्त्रने विषेज,ए प्रश्ननो उत्तर कर्यो छे जे एक पुरूषोत्तम नारायण विना बिजा जे शिव ब्रह्मादिक देवता तेनुं ध्यान जे मोक्षने इच्छतो होय तेने करवुं नहि, अने मनुष्यने विषे तथा देवताने विषे जे पुरूषोत्तम नारायणनी, राम, कृष्णादिक मुर्त्तियुं तेनुं ध्यान करवुं, ने तेने विषे पण जे डाह्या छे ते जेते स्थानकमां राम, कृष्णादिक भगवाननी मनुष रूप मुर्त्तियुं रहि छे, ते स्थानकने विषे वैकुंठ, गौलोक, श्वेतद्विप, ब्रह्मपुर ए लोकनी भावना करे छे. अने ते लोकुने विषे रह्या जे पार्षद तेनी भावना राम कृष्णादिकना पार्षद जे हनुमान,उद्धवादिक तेने विषे करे छे. अने कोटि कोटि सूर्य, चंद्रमा, अग्नि, तेना प्रकाश जेवी प्रकाशमान

एवी जे ते लोकुने विपें रहि जे पुरुपोत्तम नारायणनी दिव्य मुर्त्तियुं तेनी भावना ते राम,कृष्णा दिकने विपे करे छे. एवी रीते जे सतशास्त्र थकी समजणनुं ग्रहण करीने दिव्य भावे सहित मनुप रूप भगवाननी मूर्त्तिनुं ध्यान करे छे, तेने भगवानना अवतारनी जे मूर्त्तियुं तथा ते विना- ना जे अन्य आकार ते बेयने विपे समपणुं थायज नाहि.अने भगवानना अवतारनी जे मुर्त्तियुं ते छे तो द्विभुज अने तेने विषे च्यार भुजानी भावना अष्ट भुजनी भावना काहिछे,ते पण भगवाननी मुर्त्तिनेते विनाना अन्य आकार ते बेमां जे अविवेकी पुरुपने समभाव थायछे;तेनी निवृत्तिने अर्थे काहि छे. अने जेवी भगवाननी मुर्त्ति पोताने मळी होय, तेनुं ध्यान करवुं. अने पूर्वे भगवानना अवतार थइ गया ने मुर्त्तिनुं ध्यान न करवुं. अने पोताने भगवाननी जे मुर्त्ति मळी होय, तेने विपेज पतिव्रतानी पेठे टेक राखवी. जेम पार्वतीए कह्युं छे जे॥कोटी जन्म लग रगड अमारी वरु शंभुके हुं रहुं कुंवारी ॥ एवी रीते पतिव्रतापणानी टेक ते पण भगवाननुं रूप ने अन्य जिवनुं रूप ते बेने विषे अविवेकी पुरुपने समभाव थाय छे, तेनी निवृत्तिने अर्थे कहि छे, केम जे पोताने मळी जे मुर्त्ति तेने मुकीने तेनांज पूर्वे परोक्ष अवतार थयाछे तेनुं जे ध्यान करे तो ते भगवान विना बिजा जे देव मनुष्यादिक आकार छे, तेनुं पण ध्यान करे माटे पतिवृताना

जवां टक कहा छे, पण भगवानना मुत्त्युन विप भेद नथी आवा रीत सत्य पुरुष ॥ समजण

छे माटे जे सत्य शास्त्रनुं श्रवण करवुं ते सत पुरुष थकीजकरवुं.पण असत्य पुरुष थकी सत शास्त्रनुं कोइ दिवस श्रवण करवुं नहि. ॥इति वचनामृतम्॥११॥११९॥

संचत १८७८ ना मागशर शुदि ९ नवमीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज गाम श्री लोंया मध्ये सूरा भक्तना दरबारमां रात्रीने समे विराजमान हता ने गरम पोसनी राती डगली पहेरी हती ने बीजां सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंद नी आगळ पर्महंस तथा देश येशना हरी भक्तनी समा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराजे प्रश्न कर्यो जे भगवाननो निश्चय बे प्रकारनो छे,एक सविकल्प ने बिजा निर्विकल्पने ते बे मां पण उत्तम, मध्यम ने कनिष्ट ए त्रण प्रकारना भेद छे ते बे मलीने छो भेद थया तेनां लक्षण प्रथक प्रथक करीने कहो?पछे तेनो उत्तर पर्महंस वते थयो नहि,त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे सविकल्प निश्चयमां कनिष्ट भेद तो ए जे भगवान जे ते अन्य मनुष्यनी बरोबर काम, क्रोध, लोभ, स्वाद, मान ए आदिकने विषे प्रवरते त्यां सुधि तो भगवाननो निश्चय रहे पण जो वधारो करे तो न रहे अने मध्यम भेद तो ए जे मनुष्य थकी बमणा कामादिकने विषे

अधिक प्रवर्ते त्यां सुधी पण निश्चय रहे. अने उत्तम भेद तो ए जे भगवान गमे तेवूं निच जातिनी पेठे आचरण करे तथा मद्यमांस परस्त्री, क्रोध, हिंसा, इत्यादिक गमे तेवुं आचरण करे, तो पण संशय थाय नाहि, केम जे ए भगवानने एम जाणे छे जे भगवान तो सर्वना कर्त्ता छे ने परमेश्वर छे ने सर्वना भोक्ता छे, माटे जे जे क्रिया प्रवर्ते छे ते अन्वयपणे नियंता रूपे करीने सर्वने विषे रह्या जे भगवान ते थकीज प्रवर्ते छे. तो ए तो कांइक थोडीक एवी निच जेवी क्रिया करी तेणे करीने एमने कांइ बांध नथी;केम जे एतो सर्वना कर्त्ता छे. एवी रीते भगवानने विषे सर्वेश्वर पणुं जाणे छे, माटे एने उत्तम सविकल्प वाळो भगवद्भक्त कहिये. अने हवे निर्विकल्पमां कनिष्ट भक्त कियो, तो भगवानने सर्व शूभ अशूभ क्रिया करता देखे तो पण एम समजे जे सर्व क्रियाने करे छे तो पण अकर्त्ता छे केम जे ए भगवान तो ब्रह्म रूप छे, ते ब्रह्म केवुं छे तो आकाशनी पेठे सर्वने विषे रह्युं छे ने सर्वनी क्रियाउं तेने विषेज थाय छ एवुं जे ब्रह्म पणुं भगवानने विषे जाणे. जेम रासपंचाध्यायिमां शुकजी प्रत्ये परिक्षित राजाये प्रश्न पुछयो जे धर्म रक्षक भगवाननो अवतार तेणे परदारानो संग केम कर्यो त्यारे तेनो उत्तर-शुकजिये कर्यो जे श्री कृष्ण तो अग्निनी पेठे तेजस्वी छे. ते जे जे शूभ अ-

शूभ क्रियाने करे छे ते सर्व भस्म थइ जाय छे. एवी रीते भगवानने निर्लेप एवा ब्रह्म रूप जा-
णे तेने कनिष्ट निर्विकल्प निश्चय वाळो कहिये. अने श्वेत द्विपने विषे रह्या जे खट उर्मिये र-
हित एवा जे निरन्न मुक्त छे ते जेवो पोते थइने वासुदेवनी उपासना करे छे, तेने मध्यम नि-
र्विकल्प निश्चय वाळो कहिये. अने अष्टावरणे जुक्त एवां जे कोटी कोटी ब्रह्मांड ते जे ते अ-
क्षरने विषे अणुंनी पेठे जणाय छे, एवुं जे पुरुषोत्तम नारायणनुं धाम रूप अक्षर ते रूपे पोते
रह्यो थको पुरुषोत्तमनी उपासना करेछे तेने उत्तम निर्विकल्प निश्चयवाळो कहिये.त्यारे चैतन्या-
नंद स्वामीए पुछयुं जे हे महाराज एवी रीते निश्चयनो भेद ते शाणे करीने थया छे?
पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे ज्यारे मुमुक्षु प्रथम गुरु पासे आवे त्या-
रे वक्ता जे गुरु तेने विषे देश, काळ, संग, दिक्षा, क्रिया, मंत्र, शास्त्रा-
दिकनुं जे शूभ अशूभ पणुं तथा पोतानी जे श्रद्धा तेनुं जे मंद तिक्षण पणुं तेणे करीने
एवा भेद पडी जाय छे.माटे सारा देशादिकने सेववा तथा वक्तापण सुधो शांत होय ने तेमां
कोइ दोष न होय ते समे ते थकी ज्ञान सांभळवुं. त्यारे वळी चैतन्यानंद स्वामीए पुछयुं जे
कदाचित कोइक जोगे करीने कनिष्ट निश्चय थयो होय तेने पाछो वळी उत्कृष्ट निश्चय थाय

केनाहि. त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे जो श्रोताने उत्कृष्ट श्रद्धा उपजे तथा रुडा देशादिक प्राप्त थाय तथा उत्कृष्ट ज्ञानवाळो वक्ता मळे तो सर्वोत्कृष्ट निश्चय थाय नहि; तो जन्मांतरे करीने उत्कृष्ट निश्चयने पामे. ॥इति वचनामृतम्॥१२॥१२०

संवत १८७८ ना मागसर वदि १० दशमीने दिवस प्रातःकाळने समे श्रीजी महाराज गाम श्री लोया मधे सुरा खाचरना दरबारमां ढोलीया उपर विराजमान हता अने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने बिजा धोळा फेंटानां छोगां बांध्यां हतां ने गरम पोसनी राती डगली पहेरी हती ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने चोफाळ ओढ्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंसनी सभा तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजीमहाराजे कह्युं जे मोटेरा परमहंस परस्पर प्रश्न उत्तर करो. त्यारे गोपाळानंद स्वामीए ब्रह्मानंद स्वामीने प्रश्न पुछ्यो जे केवो पुरुष होय, तेने देश, काळ, क्रिया संगादिके करीने पराभव न थाय ने केवो होय तेने थाय? अने सांभळ्यामां तो एम आवे छे जे ब्रह्माने पण सरस्वतिने देखिने मोह थयो ने शिवजीने पण मोहनिने दर्शने करिने मोह थयो माटे विचारिने उत्तर करो. केमजे एवा मोटाने पण देश, काळादिके करिने पराभव थ-

ल्याछे. पछे तेनो उत्तर ब्रह्मानंद स्वामीये करवामांडयो पण थयो नहि.त्यारे श्रीजीमहाराज बो-
ल्याजे एनो उतर एछे जे नाडि प्राण संकेलाइने निर्विकल्प स्थितिये करीने श्रीनारायणना चर्णा
विंदमां रह्यो होय तो तुच्छ जेवो जीव होय तेने पण देश काळ संगादिके करिने
पराभव न थाय.एविरिते ब्रह्मादिक रह्या होय तो तेने पण पराभव न थाय, अने एवी रीते
स्थिती न थई होय, ने देहमां वर्त्ततो होय तो बिजा जिवने पराभव थाय, ने एवा मोटा जे
ब्रह्मादिक तेने पण थाय अने एम न होय तो ॥ तत्सृष्टसृष्टसृष्टेपुकोन्वखंडितधीःपुमान ॥
ऋपि नारायण मृतेयोपिन्मप्पेहमायया॥ ए श्लोकनो ए अर्थ ठिक बेसे नहि, माटे एने विषे
रह्या थका तो एक नारायण ऋपिने पराभव न थाय, ने बिजो तो गमे एवो मोटो होय, ने जो
नारायणना चर्णाविंदने विषे निमग्न न रहे तो, तेने पराभव थाय अने जो निमग्न रहेतो न थाय.
एवा रीते अमे अमारा अंतरमां अचळ सिद्धांत करी राख्यो छे. अने ते भागवतमां कह्युंछे
जे. ॥एतदिशनमिशस्यप्रकृतिस्थो पितद्गुणैः॥ नयुज्यते सदात्मस्थैर्यथाबुद्धिःस्तदाश्रया॥तथा
भगवाने कह्युं छे जे ॥ दैविह्येपागुण मयीममसायादुरत्पया ॥ मामेवयेप्रपद्यंते मायामेतांतरं-
तिते ॥ एवी रीते मायाये करीने निर्लेपपणुं ते एक नारायणनेज छे, अथवा ते नारायणने नि-

विकल्पपणे पाम्यो होय तेने पण पराभव न थाय. अने सविकल्पपणे जो नारायणने पाम्यो होय, तो ते गमे तेवो मोटो होय तेने पण पराभव थाय. अने त्यार पछे नित्यानंद स्वामीए प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज ज्यांसुधी ए मुक्तने गुणनो संबंध छे त्यां सुधी तो तेने देशकाळादिके करीने विपर्य पणुं थाय अने नारायण छे ते तो गुणमां रह्या थका देशकाळादिके करीने पराभवने न पामे ए तो ठीक, पण ज्यारे ए सर्वे मुक्तने गुणनो संबंध नहोय ने निर्गुण पणे करीने अक्षर धामने विषे रह्या होय अने नारायण त्यां तेवी रीते रह्या होय तेवारे ए सर्वे चैतन्य मय छे ने निर्गुण छे ने ॥ममसाधर्म्यमागताः॥ एवी रीते नारायणना साधर्म्य पणाने पाम्या छे, एवा जे मुक्त अने नारायण तेने विषे केम भेद समजवो? त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे जेम चंद्रमा छे ने तारा छे तेमां भेद छे के नहि, जुवोने प्रकाशपणे करीने सरखा नथी अने बिंबमां पण घणो भेद छे, अने सर्वे औषधियुनुं पोषण ते पण चंद्रमा वतेज थाय, पण बिजे तारे न थाय अने रात्रीनो अंधकार ते पण चंद्रमाए करीने टळे, पण ताराए करीने टळे नहि, तेम नारायण तथा मुक्तमां भेद छे. अने वळी जेम राजा ने राजाना चाकर ते मनुष्य जातीये करीने सरखा छे पण राजानुं सामर्थ्य, ऐश्वर्य, रूप, लावन्यता,

ते सर्वोपरी छे. अने जे राजावते थाय ते चाकर वते थाय नहि,मूर्के एवडो मोटो होय तो प
ण न थाय. तेम पुरुषोत्तम नारायण ते सर्वना कर्त्ता छे, सर्वना कारण छे, सर्वना नियंता छे
अने अति रूपवान छे, अने तेजस्वी छे, अति समर्थ छे ने कर्तुं, मकर्तुं, अन्यथा कर्तुं, ते
जो पोतानी इच्छामां आवे तो ए अक्षरधामने विषे रह्या जे मुक्त ते सर्वने पोताना तेजने विषे
लीन करीने पोते एकज विराजमान रहे. अने जे अक्षरधामने विषे पोते रह्या छे, ते अक्षरने
पण लीन करीने पोते विराजमान रहे. अने सूके तो ए सर्व मुक्त तेमणे सेव्या थका तेमनी
भक्तिने अंगीकार करे ने ए सोता विराजमान रहे. अने जे अक्षर धामने विषे पोत रह्या छे
ते अक्षरने पण लीन करीने स्वराट थका एकलाज विराजमान रहे अने पोताने मनमां आवे तो ए
अक्षरधाम विना पण अनंत कोटि मुक्तने पोताने ऐश्वर्ये करीने धारवाने समर्थ छे. जेम पृथु
भगवाने पृथ्वीने कह्युं जे मारा धनुष थकी निसर्यां जे बाण तेणे करीने तुने मारी नाखीने हुं
जे ते मारा सामर्थ्ये करीने आ सर्व जगतने धारवाने समर्थ छुं, तेम नारायण पोताने ऐश्वर्ये
करीने सर्वोपरी वर्त्ते छे, ते एने ने बिजा अक्षरादिक मुक्तने, सरखा कहे छे. ते दुष्ट मतवा-
ळा जाणवा ने तेने अति पापी जाणवा, अने एनां दर्शन पण करवां नहि. ने एवी रीतनी सम-

जणवाळानां दर्शने करीएं तो पंच महा पाप जेवुं पाप थाय. अने ए नारायणने लेइने तो जेने विषे मोटयप कहिए तेने विषे संभवे. अने एने लेइने विभुं, ब्रह्मा, शिव, नारद, सनकादिक ए सर्वेने भगवान कहेवाय छे, अने उद्धवजीने विषे ए नारायणने लेइने उद्धवने भगवान कहेवाय. अने हमणां आ मुक्तानंद स्वामी जेवा संतने विषे ए नारायणने लेइने तो एमने पण भगवान जेवा कहेवाय. अने ए नारायणने लीधा विना तो अक्षरने पण भगवान न कहेवाय, तो बिजानी शि वार्त्ता केहेवी! ॥ अपरिमीताध्रुवास्तनुं भृतोयादिसर्वगताः ॥ ए वेद श्रृतिना गद्य नो पण एज अर्थ छे. अने जो एम न होय, तो आ आपण सर्व छइए, ते आ देह थकी नोखो जे आत्मा तेने ब्रह्मरूप जाणीए छीए. अने ज्ञान वैराग्यादिक साधने जुक्त छइए, तो पण ए नारायणने प्रसन करवाने अर्थे रात दिवस उजागरा करीए छीए,ने किर्त्तन नाम समर्पी ते ताळीयुं वजाडी वजाडीने हाथनी आंगळीयुं फाटी जाय एम करीए छीए, तथा कथा वार्त्ता रात दिवस करीए करावीए छीए. ते जो ए नारायण सरखा थइ जवातुं होय, तो एवडो दाखडो शुं करवा करीए माटे ए नारायण जेवा तो एक नारायणज छे, पण बिजो कोइ ए जेवो थतो नथी. अने ॥ एक मेवाद्वितीयं ब्रह्म ॥ ए श्रुतिनो पण एज अर्थ छे, जे

ए नारायण जेवा तो एक नारायणज छे, एम सर्वे शास्त्रनो सिद्धांत छे. एवी रीते भक्तजननी शिक्षाने अर्थे श्रीजीमहाराजे वार्त्ता करी ने पोते तो साक्षात पुरुषोत्तम नारायणछे॥ इतिव-चनामृतम् ॥ १३ ॥ १२१ ॥

संवत १८७८ ना मागशर वदि ११ एकादशीने दिवस श्रीजीमहाराज गाम श्री लोह्या मध्ये सूरा भक्तना दरबारमां ढोलीया उपर विराजमान हता, ने माथे धोळो फैंटो धारण कर्यो हतो. तथा धोळी चादर ओढी हती तथा धोळो खेस पेर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंसनी सभा तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजीमहाराज परमहंस प्रत्ये बोल्या जे मोटे आचार्य थइ गया छे तेनी पृथक पृथक रूची छे, तेमां शंकर स्वामीने अद्वैत ज्ञानांश प्रधान जणाय छे, तथा रामानुजनो ए मत छे, जे जिव, माया ने पुरुषोत्तम ए त्रणे नित्य छे, ने पुरुषोत्तम छे ते जिव मायाना नियंता छे, ने सर्वना कारण छे, ने पोताना अक्षर धामने विषे सदा दिव्य आकारे थका विराजमान छे ने सर्वे जे अवतार ते तेना छे, एवा जे पुरुषोत्तम नारायण तेनी उपासना जिवनेकरवी, एवी रीते रामानुजनी समजण जणाय छे. तथा वलभाचार्यने केवळ भक्ति उपर निष्ठा बहु जणाय

छे, अने ए सर्वे आचार्यें पोताना ग्रंथुमां प्रसंगे करीने बिजी वार्त्ताउं लखी छे. पण गमे तेवी रीते करीने अंत्ये पोतानी रुची उपर जाय एम तेमना ग्रंथुने विषे तेमनां वचन छे, तेणे करीने तेमनो अभिप्राय यथार्थ जाण्यामां आवे छे. तेम अमारी वार्त्ता सांभळीने तमने सर्वेने अमारी केवी रुची जणाय छे? ने जेम सोय केडे दोरो चाल्यो जाय छे, ने वळी जेम माळाना मणकाने विषे दोरो सुंसरो छे, तेम अमारी जे सर्व वार्त्ता तेमां शो अभिप्राय निरंतर सुंसरो चाल्यो आवे छे ते जेने जेम जणातो होय ते तेम कहो? त्यारे सर्व मोटेरा परमहंसे जेने जेम जणाणुं तमे कह्युं. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ल्यो अमे अमारो अभिप्राय तथा रुचि ते कहिए छीए.एकतो अमने ए गमे छे जे ऋषभदेव भगवान वासुदेव संघाथे एकात्मताने पाम्या हता, तोपण ज्यारे सिद्धियुं आवीने प्राप्त थइयुं त्यारे पोते भगवान हता तो पण बिजा त्यागीनी शिक्षाने अर्थे ते सिद्धियुंने ग्रहण न करता हवा. ते श्रीमद्भागवतमां कह्युं छे, जे, जोगी सिद्ध थयो होय ने पोतानुं मन वश थयुं होय, तो पण ते मननो विश्वास न करवो. ॥ त्यां श्लोक छे ॥ नकुर्यात्कर्हिचित्सख्यंमनसिह्यनवस्थिते॥ यद्विस्रंभाच्चिराच्चीर्णंयचस्कंदतपैश्वरं ॥ १ ॥ नित्यंददातिकामस्यच्छिद्रंतमनुयेऽरयेः॥ योगिनःकृतमैत्रस्यपत्युर्जायेवपुंश्चली ॥

२ ॥ एवी रीते जे मननो विश्वास न करे तेवो त्याग अमने गमेछे, तथा अमारा मनमां श्वे-
तद्विप तथा बद्रिकाश्रम जेवो गमे छे तेवा बिजा लोक गमता नथी ने एम मनमां रहे छे. जे,
श्वेतद्विपने विषे तथा बद्रिकाश्रमने विषे जाइने निरन्न पणे रह्या थका तप करीए ते बहुं सारुं
लागे पण बिजा लोकुंमां अनेक प्रकारना वैइभव भोगववा ते नथी गमता,तथा भगवानना जे घणाक
अवतार थयाछे तेने एम जाणीएछीए जे ए सर्वे अवतार नारायणनाछेतो पण ते अवतारमां ऋषभ
देवजी बहुं गमे,तथा तेथी उतरता कपीलजी तथा दतात्रेय ए त्रे सरखा जणाय छे अने ए त्र-
ण अवतार करतां कोटि घणुं श्री कृष्णने विषे अमारे हेत छे ने एम जाणीये छीए जे बि-
जा सर्वे अवतार करतां आ अवतार बहुं मोहोटो थयो ने बहुं समर्थ छे, अने एमां अवतार
अवतारी एवो भेद नथी जणातो. अने बीजा जे मच्छ कच्छादिक ते भगवाननाज अवतारछे,
पण तेमां अमारी अति रुची नथी. अने आवी रीते तो अमारे उपासना छे जे सर्वेथी पर ए
क मोटो तेजनो समुह छे, ते तेजनो समुह अधो, उर्ध्व तथा चारे कोरे प्रमाणे रहीत छे ने
अनंत छे ने ते तेजना समुहना मध्य भागने विषे एक मोटुं सिंहासन छे ने तेनी उपर दिव्य
मुर्त्ति एवा जे श्री नारायण पुरुषोत्तम भगवान ते विराजमान छे. ने ते सिंहासनने चारे कोरे

अनंत कोटी मुक्त बेठा थका ते नारायणनां दर्शन करे छे, एवा जे मुक्ते सहित श्री नारायण तेने अमे निरंतर देखीये छीये. अने ते भगवानने विषे तेजनुं अतिशे पणुंछे, तेणे करीने ज्यारे ए सभा सहित ते भगवाननां दर्शन नथी थातां, त्यारे अमने अतिशे कष्ट थाय छे. अने ते तेजनो समुह तो निरंतर देखाय छे तो पण एने विषे रूची नथी. अने भगवाननी मुर्त्तिनां दर्शने करीनेज अति सुख थाय छे. अमारे एवी रीते उपासना छे. अने ए भगवानने विषे भक्ति तो जेवी गोपियुंने हती तेवी गमे छे ते सारु अमे सौ माणसने जोता रहीए छीए, जे कोइक कामी स्त्री होय तेने पुरूषने विषे जेवुं हेत होय तथा कामी पुरूष ने स्त्रीने विषे जेवुं हेत होय तेने देखीने एम थाय, जे एवुं हेत आपणे भगवानमां होय तो ठीक तथा कोइकने पुत्रमां, धनमां बहुं हेत जणाये तेने देखीने एम थाय जे एवुं हेत आपणे भगवानमां होय तो ठीक तथा कोइ गातो होय तो तेने सांभळीने तेने पासे कोइ माणसने मोकलीए अथवा पंडे एनी पासे जाइए ने जाणीए जे ए बहुं ठीक करेछे. अने अमारे सुवाण तो एवा साथे थाय छे जे जेमां काम, क्रोध, लोभ, स्वाद, मान, इर्षा, दंभ, कपट, इत्यादिकदोष न होय ने धर्म शास्त्रमां कह्युं छे एवी रीते धर्म पाळतो होय, ने भगवानने भक्तिए जुक्त होय ते साथेज अमारे

बेठा उठयानी सुवाण थाय छे. अने एवो न होय, ने ते अमारे भेगो रहेतो होय तोपण तेनी साथे सुवाण थाय नहि तेनी तो उपेक्षा रहे छे. अने मोरे तो अमारे कामी उपर बहु अभाव रहेतो. अने हवे तो क्रोध, मान, इर्षा ए त्रणे जेमां होय ते उपर बहु अभाव रहे छे, कांजे कामी होय ते तो ग्रहस्थनी पेठे निर्मानी थैने सत्संगमां पडयो रहे छे. अने जेमां क्रोध, मान ने इर्षा, होय छे, ते तो सत्संगमांथी जरूर पाछा पडी जाता देखाय छे, माटे ए त्रणे उपर बहु खेद रहेछे, ते मान ते शुं तो जे मानी होय तेने पोताथी मोटो होय तेनी आगळ पण स्तब्धपणु रहे,पण तेनी आगळ हलको थइने तेनी सेवामां वरतय नहि. अने ए सर्व जे अमारो अभिप्राय ते थोडाकमां ल्यो कहिए जे जेवी रीते शंकर स्वामीए अद्वैत ब्रह्मनुं प्रतिपादन कर्युं छे. तेने विषे अमारे रूचि नथी. तथा रामानुज स्वामीए जेवी रीते क्षरअक्षर थकी पर जे पुरषोत्तम भगवान तेनुं निरूपण कर्युं छे ते पुरूषोत्तम भगवान विषे तो अमारे उपासना छे. तथा गोपियुना जेवी तो ए पुरूषोत्तम भगवानने विषे अमारे भक्ति छे. तथा शुकजीना जेवो तथा जड भरतना जेवो तो अमारे वैराग्य छे ने आत्मनिष्ठा छे एवी रीते अमारो अभिप्राय तथा रूची छे ते अमारी वार्त्ताये करीने तथा अमे मान्या जे, अमारा संप्रदायनां ग्रंथ तेणे

करीने जो पुर्वापर विचारीने जुवताज बुद्धवान होय तेना जाण्यामां आवे छे. एवी रीते पोताना भक्तजननी शिक्षाने अर्थे श्रीजीमहाराजे वार्त्ता करी.ने पोते तो साक्षात पुरूषोत्तम नारायणछे.
॥इति वचनामृतम् ॥ १४ ॥ १२२ ॥

संवत १८७८ ना मागशर वदि १३ तेरशने दिवसरात्रीने समे श्रीजीमहाराज गाम श्रीलोद्या मध्ये सूरा भक्तना दरबारमां विराजमान हता, अने धोळो फेंटो माथे बांध्यो हतो तथा बिजे धोळे फेंटे बोकानी वाळी हती, तथा गरमपोसनी राती डगली पेहेरी हती, तथा धोळो खेस पहेर्यों हतो ने धोळो चोफाळ ने धोळी पछेडी ते भेगां करीने ओढ्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ देश देशना हरीभक्तनी सभा तथा पर्महंसनी सभा भराइने वेठी हती. पछे श्रीजी महाराज कृपा करीने बोल्या जे आ जिव छे, ते अध्यात्म, अधिभूत ने अधिदैवपणे करीने सर्व देहमां नख शिखा पर्यंत व्यापीने रह्यो छे. अने, देवताने इंद्रियुं रूपे करीने जीवनुं भोक्तापणुं छे, पण देवता इंद्रियुंथी प्रथक पणे भोक्ता नथी. त्यारे नित्यानंद स्वामीए आशंका करी जे हे महाराज त्यारे एम कहेवाय छे जे जिव जे ते सामान्य पणे सर्व देहमां व्यापीने विशेष पणे हृदयाकाशमां रह्यो छे त्यारे सर्व ठेकाणे सरखुं जाणपणुं नथी

जणातुं तेनुं केम समजवुं? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे जेम सूर्य छे ते किरणे करीने सर्व पदार्थमां व्यापीने रह्योछे, पण आगळ जेवुं पदार्थ छे त्यां तेवो सूर्यनो प्रकाश जणाय छे. के म जे काचनी भुमी होय तथा स्वच्छ निर्मळ पाणी होय त्यां जेवी रीते सूर्यनो शुद्ध प्रकाश छे तेवी रीते पाणानी भुमी, रेतनी भुमी तथा डोहोळायलुं पाणी तेमां जणातो नथी. एवी रीते सूर्यना प्रकाशमां नुन्य अधिक पणुं जणाय छे, तेम ए जिव इंद्रियुं, अंतःकरण गोलोक ए सर्वने विषे समानपणे रह्यो छे पण इंद्रियोने विषे स्वच्छ पणुं छे माटे तेने विषे विशेषे प्रकाश जणाय छे जुवोने नेत्रमां जेवुं तेज जणाय छे, तेवुं नाक कानमां कोइ दिवस जणायछे? नथी जणातुं, अने चार अंतःकरणनुं अतिस्वछ पणुं छे तो त्यां जिवनो अधिक प्रकाश जणाय छे, अने बिजी इंद्रियोमां नुन्य जणाय छे पण जिवतो सर्व देहने विषे समान पणे रह्यो छे.त्यारें ब्रह्मानंद स्वामीये प्रश्न पुछ्यो जे ए जिवने केटलाक-तो तारा जेवो देखेछे, तथा दिवानी जोत जेवो देखे छे, तथा बपोरिया जेवो देखे छे ते केम समजवुं? त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे ए तो एम छे जे जेम जेने अक्षि विद्या छे तेने नेत्र द्वाराए जीवनुं दर्शन थाय छे ने तेने विषे भगवाननी मुर्त्तिने पण देखेछे;तेम जेने जे इंद्रि द्वारा

लक्ष थयो ते तेवो आत्माने देखे छे, जेम काचनुं पुतळुं मनुष्यने आकारे कर्युं होय तेने जे जे अवयव तथा मुवाळा तथा नाडियुं ते सर्व काचनां होय ने ते पुतळांनी मांहेली कोरे तेज भर्युं होय ते तेज देखाय, ते जेवो भुंगळीनो अवकाश होय ते प्रमाणे देखाय छे, पण समग्र नथी देखातुं. तेम ए जिवनुं स्वरूप जेणे जेवुं दिठुं छे ते तेवुं कहे छे, पण एनी निरावरण द्राष्टि नथी थइ, माटे तेने जेवो आत्मा छे तेवो नथी देखातो. अने ज्यारे तेनी निरावरण द्राष्टि थइ ने आत्माकारे थाय छे त्यारे इंद्रियुना गोलकना जे विभाग ते एनी द्राष्टिमां नथी आवता ने जेवो आत्मा छे तेवो जणाय छे. जेम आकाशनी द्राष्टिने पाम्यो होय तेनी द्राष्टिमां बिजां चार भुत नथी आवतां, तेम जेनी निरावरण दृष्टि थाय छे तेने गोलक, इंद्रियुं, देवता, अंतःकरण तेणे करीने जणाता जे जिवना प्रकाशना भेद ते द्राष्टिमां नथी आवता ने जेवो जिव छे तेवो यथार्थ जणायछे. अने भेद द्राष्टि वाळाने जेवो छे तेवो नथी जणातो. जेम कोइके गायनुं पुछडुं दिठुं, कोइके मुख दिठुं, खुर दिठुं, पेट दिठुं, स्तन दिठां, ते जेणे जे जे अंग दिठुं, ते गायनुंज दिठुं छे. पण जेवी गाय छे तेवी कोइये दिठी नथी. ने एक अंग दिठुं माटे गाय दिठी पण केहेवाय, तेम ए आत्माना प्रकाशनुं दर्शन जेटलुं

जेने इंद्रियुं द्वाराएं अथवा अंतःकरण द्वाराए थयुं तेटलो ते आत्म दर्शि कहेवाय, पण सम्यक् आत्म दर्शन एने कहेवाय नहि; माटे अमे तो ए जिवने विषे एवी रीते सामान्य विशेष पणुं कहिए छीये. त्यारे नित्यानंद स्वामीये प्रश्न पुछयो जे हे महाराज तमे जिवने तो निराकार कह्यो त्यारे ते जिवने विषे भगवान रह्या छे ते पण अलींगपणे रह्या छे के मुर्त्ति मान रह्या छे? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे भगवान तो इंद्रियुं, देवता अंतःकरण ने जिव ए सर्वना आश्रय पणे रह्या छे ते श्री कृष्ण भगवाने उद्धव भेळे गोपियुंने कहेवराव्युं छे ने इंद्रियुं, अंतःकरण, देवता ने जीव तेना आश्रय पणे करीने तमारी समीपे हुं रह्यो छुं, जेम पंच महाभूत ब्रह्मांडने विषे रह्यां छे ने तेनां तेज सर्वना देहमां रह्यां छे, तेम जे हुं आ मथुरामां रह्यो छुं ते तो जेम महाभूत विशेष पणे करीने ब्रह्मांडने विषे रह्यां छे तेम रह्यो छुं. ने जेम ए भूत जीवनां देहमां सामान्य पणे रह्यां छे तेम हुं तमारे पासे रह्यो छुं. अने जे हुं देखातो नथी. ते तो ते मारा चित्तनी वृत्तिनो मारे विषे निरोध थाय तेने अर्थे नथी देखातो, पण रह्यो तो मुर्त्तिमान छुं. त्यारे वळी नित्यानंद स्वामीये पुछयुं जे हे महाराज ए भगवान इंद्रियादिकना आश्रय पणे रहयाछे ते पुरुष रूपे करीने रह्या छे, के अक्षर रूपे रह्याछे के पोते स्वयं पुरुषोत्तम

पणे रह्या छे? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या-जे जीव, पुरुष, अक्षर ने पुरुषोत्तम ए सर्वेनुं तेज प्रकाश पणे तो सजाती छे, माटे एमना प्रकाशना भेद पाडवाने तो कांइ समर्थ छे नहि, ने भेद तो अतिशे छे पण ते भेदने देखवाने कोइ समर्थ नथी. अने जेने ए भगवान कृपा करे छे, तेणे करीने तेने प्रकाशमय एवो दिव्य देह बंधाय छे, ते एम जाणे छे, जे आ हुं छुं ने आ पुरुष छे, ने आ अक्षर छे, ने ए सर्वेथी विलक्षण एवा आ पुरुषोत्तम छे, एवी रीते ए सर्वेने प्रथकपणे देखे छे ने एमना प्रकाशने पण विलक्षणपणे देखेछे पण बिजा तो कोइ प्रथक देखवाने अर्थे समर्थ थाय नहि. माटे ए भगवान सुजे ए रूपे करीने रह्या छे पण पोते ज रह्या छे: अने वेदांत जे उपनीशद तथा योग, सांख्य, ए त्रण शास्त्र सनातन छे, ते ए श्रीकृष्ण परमात्मानुं ज वर्णन करेछे, ते ए त्रण शास्त्रना मत तेमने अमे प्रथक प्रथकपणे करीने कहिए ते सांभळो. तेमां जे सांख्यवाळा छे, ते तो चोविस तत्वने कहिने तथा पर पचाविसमा परमात्माने कहे छे, पण जिव इश्वरने प्रथकपणे नथी कहेता. तेनो ए अभिप्राय छे ने तत्वछे, ते जिव विनानां होय नहि. माटे तत्व भेळो तदात्मकपणे कह्यो ज जिव, तेने तत्व रूपज कहेछे, पण तत्व थकी प्रथक नथी कहेता. अने जेम जिवने चोविस तत्व रूप माने छे, तेम ब्रह्मांडाभिमानी जे इश्वर तेने पण

चोविसे तत्वरूप माने छे, एवी रीते जिव इश्वर ए बेयने तत्व रूप मानीने तत्व भेळेज एनेगणे छे पण तत्वथी नोखा नथी गणाता.ने पचविसमा परमात्माने कहे छे, ए सांख्यनो मत छे. पण एम न समजवुं जे जिव नथी. कांजे सांख्यवाळे खट संपती श्रवण मनन निदिध्यासनादिक साधन कह्यां छे, ते जिवनेज करवानां कह्यां छे, पछे ते साधने करीने विचारने पामे, ने विचारे करीने तत्व थकी पोते नोखो पडे ने पोताने ब्रह्मरूप माने ने परमात्माने भजे एवी रीते सांख्य मत छे, ते मोक्ष धर्ममां शुकजी प्रत्ये नारदजीए कह्युं छे जे ॥ त्यज धर्ममधर्मंचउभेसत्यानृते त्यज ॥ उभेसत्यानृतेत्यक्त्वायेनत्यज्यसितंत्यज ॥ एनो एम अर्थ छे, जे ज्यारे मुमुक्षु आत्म विचार करवा बेसे त्यारे तेने आडो जे धर्म रूप, अथवा अधर्मरूप, सत्यरूप, असत्यरूप, जे जे संकल्प आवे तेनो त्याग करीने जे विचारे करीने एने तजे छे ते विचारनो पण त्याग करीने ब्रह्मरूपे रहेवुं पण देहे करीने धर्मरूप नियमनो त्याग करवो कह्यो नथी. ए श्लोकनो ए अर्थ छे. अने योगवाळा छे ते चोविस तत्वने प्रथक गणे छे, ने जिव इश्वरने पचविसमा कहेछे ने परात्माने छविसमा कहे छे. अने विवेके करीने पचविसमाने तत्व थकि प्रथक समजे, ने तेने विषे पोतापणानी दृढता मानी ने चोविस तत्वनी जे वृत्तियु तेनो पिंड भाव करीने बळात्कारे

छविसमाने विषे राखे पण विषय सनमुख नावा दे नहि. ने एम समजे जे मारी वृत्ति भगवान ने मुकीने बिजे ठेकाणे जाशे. तो मुने संशृति थाशे माटे अति आग्रह करीने इंद्रियुं अंतः- रण ने वृत्तियुं तेने भगवानने विषे राखे अने जे सांख्य वाळो छे ते तो एम समजे जे मारे इं- द्रियो अंतःकरण नथी तो नाशे क्यां, माटे पोताने ब्रह्म रूप मानीने निर्भय रहे छे अने जे योग वाळो छे, ते तो डरतोज रहे छे, जेम कोइक पुरुषना हाथमां तेलनुं माथालगण भरेलुं पात्र होय, ने ते पुरुषने पगथियाने उपर उंचुं चढवुं होय, ने बे कोरेथी उघाडी तरवारवाळा पुरुष डारावचाने उभा रह्या होय ने ते तेल नेठवा देवुं न होय ने ते पुरुष जेवो भयने पामे तेमें योगवाळो विषय थकी बिने भगवानने विषे वृत्तियुंने राखे छे, ए योगनो मत छे. अने वेदांत जे उपनीषदनो मत ए छे जे सर्वना अतिशे मोटा कारण एवा जे पुरुषोत्तम नारायण ब्रह्म तेनुंज ग्रहण करीने बिजा सर्वने मिथ्या माने छे जेम आकाशनी दृष्टीने पाम्यो होय, ते बिजा तत्वने देखे नहि तेम ब्रह्मने जे देखतो होय, ते बिजा कोइने देखे नहि. एवी रीते वेदांतनो मत छे ॥ इतिवचनामृतम् ॥ १५ ॥ १२३ ॥

संवत १८७८ ना मागशर वदि १४ चौदशने दिवस संध्या आरती थया केडे

श्रीजीमहाराज गाम श्री लोयां मध्ये सूरा भक्तना दरबारमा ढोलीया उपर विराजमान हता;
ने धोळो खेस पेहेर्यो हतो तथा गरम पोसनी राती डगली पहेरी हती तथा माथे धोळ
बांधी हती, ने विजे धोळे फेंटे करीने बोकानी वाळी हती, ने पोताना मुखारविंदनी आग
परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजीमाहराज बोल्
सर्वे परमहंस परस्पर प्रश्न उत्तर करो. एम कहीने पोतेज प्रश्न पुछ्यो जे जेने वासना
नेथइ होय, ने जे वासना कुठित थइ गइ होय, ने जेने वासना निर्मुळ थइ गइ
तेनां शा लक्षण छे? पछे मुक्तानंद स्वामीय ए प्रश्ननो उत्तर करवा म
पण थयो नहि. त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे जेनी वासना कुठीत थइ
तेनी इंद्रियुंनी वृत्ति विषयमां चोटी जाय ते पाछी विचारे करीने पण निसरे
अने जेने कुठीत वासना थइ गइ होय तेनी वृत्ति विषयमां तत्काळ प्रवेश करे नहि. अ
दोचित वृत्ति विषयमां प्रवेश करी जाय ने ते वृत्तिने पाछी वाळे तो तरत पाछी वळ पण
यमां आशक्त थाय नहि. अने जेने वासना निर्मूळ थइ गइ होय तेने तो जाग्रतने विष
तिनी पेठे विषयनो अभाव वर्ते, ने सारा नरसा जे विषय ते श्रेय समानपणे जणाय,

गुणातितपणे वर्त्ते. त्यारे गोपाळानंद स्वामीए पुछ्युं जे, वासना कुंठीत तो होय, पण ते मूळमांथी टळी नथी जाती तेनुं शुं कारण छे ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे एनो उत्तर ए छे जे आत्मनिष्टा रूप एवुं जे ज्ञान तथा प्रकृतिनां कार्य एवां जे पदार्थ मात्र तेने विषे अनासक्ति रूप एवो जे वैराग्य तथा ब्रह्मचर्यादिक रूप जे धर्म तथा महात्मे सहित एवी जे भगवाननी भक्ति ए चारवानां जेमां संपूर्ण होय तेने वासना निर्मूळ थइ जाय छे, अने ए चारमां जेटली नुन्यता रहे छे, तेटली वासना निर्मूळ थाती नथी. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे हवे अमे प्रश्न पुछिये जे मुमुक्षुने भगवाननी प्राप्तिने अर्थे अनंत साधन करवानां कह्यां छे तेमां एक एवुं मोटुं कियुं साधन छे जे जेणे करीने सर्वे दोष टळी जाय ने तेमां सर्वे गुण आवे? त्यारे ए प्रश्ननो उत्तर परमहंसवते थयो नहि. पछे श्रीजीमहाराजे एनो उत्तर कर्यो जे भगवाननुं माहात्म जेम कपीलदेवजीए देवहुती प्रत्ये कह्युंछे जे ॥ मद्भयाद्वाति वातोयं सूर्यस्तपतिमद्भयात्॥ एवी रीते अनंत प्रकारना माहात्मे सहित एवी जे भगवाननी भक्ति ते जेने होय तेना दोष मात्र टळी जाय छे ने जेने ज्ञान, वैराग्य, धर्म, ए न होय तोपण ए सर्वे आवे छे. माटे ए साधन सर्वमां मोटुं छे. अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयो जे, जे कपटी होय ने

बुद्धिवाळो होय माटे पोताना कपटने जणावा दे नहि, तेनुं कपट केइ रीते कळाय ते कहो? ने
ारे एनो उत्तर ब्रह्मानंद स्वामीए कर्यो जे जेनी बेठक उठक ते जे सत्संगनो द्वेषी होय, ने
तनुं ने भगवाननुं वसातुं बोलतो होय ते पासे होय, तेणे करीने ते ओळखाय पण बीजी
ते तो न ओळखाय पछे ए उत्तरने श्रीजीमहाराजे मान्यो ने ते पछे ते बोल्या जे, एवाना
ग न करतो होय तो केम कळीए? त्यारे ब्रह्मानंद स्वामीए कह्युं जे कोइक देशकाळनुं वि-
ामपणुं आवे त्यारे एनुं कपट कळाइ जाय. त्यारे श्रीजीमहाराजे कह्युं ए ठीक उत्तर कर्यो.
अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे एवो कियो एक अवगुणछेजे जेणे करीने सर्वे गुण
मात्र ते दोष रूप थइ जाय ते कहो? त्यारे श्रीपात देवानंद स्वामी बोल्या जे भगवानना भक्तनो
जे द्रोह करे तेना जे सर्वे गुण ते दोषरूप थइ जाय छे. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ए
उत्तर पण खरो पण अमे तो एनो उत्तर बिजो धार्यो छे, जे सर्व गुणे संपन्न होय, ने जो
भगवानने अलिंग समजतो होय, पण मुर्त्तिमान न समजे ए मोटो दोष छे. एणे करीने एना
बिजा सर्वे गुण दोष रूप थइ जाय छे. अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे संतनो अ-
भाव शाणे करीने आवे छे ते कहो? पछे एनो उत्तर परमहंसे करवा मांड्यो पण थयो नहि,

त्यारे श्रीजीमहाराजे एनो उत्तर कर्यो जे जेने मान होय, तेने संतनो अभाव आवे केम जे जे मानी होय तेनो एवो स्वभाव होय जे, जे पोताने वखाणे तेमां सो अवगुण होय ते सर्वने पडया मुकीने तेमां एक गुण होय तेने वहु माने अने जे पोताने वखाणतो न होय तेमां सो गुण होय ते सर्वने पडया मुकीने तेमां कोइक जेवो तेवो एक अवगुण होय तेने वहु मानीने तेनो प्रथम तो मन तथा वचन तेणे करीने द्रोह करे ने पछे देहे करीने पण द्रोह करे. माटे ए मान रूप मोटो दोष छे, अने ते मान समजुमांज होय. ने भोळामां न होय एम जाणवुं नहि, भोळामां तो समजु करतांय झाझुं होय छे. पछे मुक्तानंद स्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे, हे महाराज ए मान केम टळे? त्यारे श्रीजीमाहाराज बोल्या जे जे भगवाननुं माहात्म अतिशे समजतो होय तेने मान न आवे. केम जे जुवोने उद्धवजी केवा डाह्या हता ने नितिशास्त्रमां कुशळ हता, ने देहे करीने राजा जेवा हता पण जो भगवाननुं महात्म समजता हता तो गोपियुंने विषे भगवाननो स्नेह जोइने तेने आगळ पोतानुं मान न रह्युं ने एम बोल्या जे, ए गोपियुनां चरणनी रज जेने अडती होय एवा जे व्रक्ष, लता, तृण, गुच्छ ते मांहेलो हुं कोइक थाउं. अने तुलसीदासजिए कह्युं छे जे ॥ तुलसी ज्याके मुखनसें भुलेइ निकसे राम। ताके पगकी पहे-

नियां मेरे पगकी चाम ॥ एम जेने भुले पण भगवाननुं नाम मुखथी निसरे तेने अर्थे पोताना शरिरना चर्मना जोडा कराये आगे तो जे भगवाननो भक्त होय ने भगवाननुं निरंतर नाम स्मरण, भजन किर्त्तन, वंदन, करतो होय ने जो भगवाननुं महात्म समजतो होय, तो तेने आगळ शुं मान रहे? नज रहे? माटे महात्म समजे त्यारे मान जाय छे, पण महात्म समज्या विना तो मान जातुं नथी ते सारु जेने मान टाळवुं होय तेने भगवाननुं ने संतनुं माहात्म समजवुं ॥ इति वचनामृतम् ॥ १६ ॥ २२४ ॥

संवत १८७८ ना मागशर वदि अमासने दिवस श्रीजी महाराज गाम श्री लोहा मध्ये सूरा भक्तना दरबारमां ढोलीया उपर विराजमान हता अने मस्तक उपर धोळी पाघ बांधी हती ने त्रिजे धोळे फेंटे करीने बोकानी वाळी हती. तथा गरम पोसनी राती डगली पेहेरी हती तथा धोळो खेस पहेर्यो हतो तथा चोफाळ ओढीने ते उपर पिळी रजाइ ओढी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनीनी सभा तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती एवी रीते श्रीजी महाराज प्रसन्न थका रात्रीने समे विराजमान हता. पछे श्रीजी महाराज पोतानी मेळे बोल्या जे जुवोने भगवाननी मायानुं बळ केवुं छे जेणे करीने विपरीत

पणुं घणुं थाय छे. केम जे प्रथम केवो सारो जणातो होय ने पछे अतिशे भुंडो थइ जाय छे, एम कहीने पछे वळी पर्महंस प्रत्ये बोल्या जे आज तो प्रश्न पुछो तो वार्त्ता करीए. त्यारे नित्यानंद स्वामीए पुछयुं जे हे महाराज प्रथम सारो होय ने स्तुति करतो होय ने तेनो ते पाछो निंदा करवा मांडे छे माटे सुजे एवो देश, काळ, क्रिया, संग विशम थाय तो पण सारोने सारोज रहे, पण कोइ रीते विपरीत मति थाय नहि, ते शेणे करीने थाय? त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे जेने देहनो अनादर होय ने दृढ आत्मनिष्ठा होय ने पंच विषयमां वैराग्य होय अने भगवाननो महात्मे सहित यथार्थ निश्चय होय एवाने सुजे एवुं देशकाळादिकनुं विशमपणुं थाय तो पण एनी मती अवळी थाय नहि. अने जे देहाभिमानी होय ने पंच विषयनो अतिशे अभाव न थयो होय तेने ज्यारे संत ए विषयनुं खंडन करे त्यारे ते संत मोटेरा होय, तेनो पण अभाव आवे ने भगवाननो पण अभाव आवे. अने भगवाननो यथार्थ निश्चय होय तो पण जो पंच विषयनो अत्यंत अभाव न थइ गयो होय ने तेनी आशक्ति होय ने ते विषयनुं मुक्तानंद स्वामी जेवा खंडन करे तो तेनुं माथुं शस्त्रे करीने मुकावीदे एवो द्रोह करे. पछे वळी नित्यानंद स्वामीए पुछयुं जे कोइकने देहाभिमान तथा पंच विषयनी आशक्ति होय तो पण

ते सत्संगमां नभ्यो जाय छे ते केम समजवुं. त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे एने ज्यासुधी
कोइ धक्को नथी लाग्यो त्यां सुधी नभ्यो जाय छे पण ज्यारे कोइक मोटा संत अथवा भग-
वान ते मानने खोदशे,तथा स्वाद,देहाभिमान,लोभ,काम,क्रोध एने खोदशे, त्यारे एने जरूर ते
संतनो अभाव आवशे त्यारे ए जरूर संतनो द्रोह करशे ने सत्संगमांथी विमुख थाशे.जेमसर्प लाळ नाखी
होय एवुं जे दुध साकर तेने जेणा पधुं होय ने ते जिवे छे तो पण ते घडी बेघडीमां,सांज सवारे, आज
काल जरूर मरनारो छे. तेम जे देहाभिमानी छे ते महिने, बे महिने,वरसे, बे वरसे,दस वरसे,
देह मुक्या समे देह मुकीने ज्यारे त्यारे पण ए जरूर संतनो अभाव लइने पडी जाशे. अने
जेने देहाभिमान न होय ने एम समजतो होय जे अंतःकरण इंद्रियोना प्रकाशकने जेणे करी
देह चाले हाले छे. एवी जे सत्ता रूप आत्मा ते हुं छुं. ते हुं धन स्त्रियादिक कोइ पदार्थ
करीने सुखी थाउं एवो नथी. ने ए पदार्थ न मळे तेणे करीने दुखी थाउं एवो नथी एम दृढ
समजण जेने होय तेने संत गमे तेवी रीते पंच विषयनुं खंडन करे तथा देहाभिमाननुं खंडन
करे तो पण ते संतनो अभाव कोइ रीते आवे नहि, ने तुच्छ पदार्थ सारू संत साथे वखेडो
थाय नहि, ने आंटी पण पडे नहि. पछे नित्यानंद स्वामीए पुछ्युं जे जेने पंच विषयनो अ-

भाव होय ते केम जणाय? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेने विषयनो अभाव होय, ते एम जणाय जे, ज्यारे कांइ सारु खावानुं आवे त्यारे तेने खाय पण जेम जेवुं तेवुं खातो होय, ने तेमां आनंद होय तेवो आनंद रहे नहि मुंझाइ जाय. अने लुगडां जेवां तेवां जाडां पहेरतो होय तेमां आनंद होय, तेवो झिणां लुगडां पहेरवां पडे तेमां आनंद न रहे ने मन मुंझाय. तेमज सारी पथारी होय अथवा कोइक मान दे इत्यादिक जे जे सारा पदार्थनो जोग थाय. त्यारे तेमां तेनुं मन मुंझाय पण तमां कोइ रीते आनंद पामेज नहि. त्यारे तेने एम जाणीए जे एने विषयने विषे अभाव छे. पछे मुक्तानंद स्वामीए प्रश्न पुछयो जे, हे महाराज ए पंच विषयनो अभाव केम थाय? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे विषयनो अभाव थयानुं मुख्य साधन तो परमेश्वरनुं माहात्म छे ने ते पछे आत्म निष्टा ने वैराग्य छे ते महात्म ते शुं? तो जे भगवानना बिके करीने इंद्र वरसे छे. सूर्य, अग्नि, चंद्रमा प्रकाश करे छे. पृथ्वी सर्वने धारी रही छे. समुद्र मर्यादा नथी लोपता, औषधियो रुतुने पामीने फळे छे, अने जे भगवान जगतनी उत्पत्ति स्थितिने प्रलयने करे छे, अने जेनी शक्ति काळ छे, माया छे, पुरुष छे, अक्षर छे एवी रीते जे भगवानने मोटपने समजतो होय, तेने जगतमां एवुं शुं पदार्थ छे? ते बंधन करे?

ते काम, लोभ, क्रोध, मान,इर्षा, स्वाद, 'सुक्ष्मवस्त्र, धन, स्त्रि तथा जे जे पंच विषय संबंधी
पदार्थ ते एने कोइ बंधन करे नहि.कांजे एणे तो सर्वनुं परिमाण करी राख्युं छे जे भगवा-
न ते आवा छे ने आवो ए भगवानना भजन, स्मरण, कथा, वार्त्ता ने विषे माल छे अने अ-
क्षर ते आवा छे ने आवुं ए अक्षर संबंधी सुख छे, तथा गोलोक, वैकुंठ, श्वेतद्विप संबंधी सु-
ख ते आवुं छे, तथा प्रकृति पुरुष संबंधि सुख ते आवुं छे,अने ब्रह्म लोक संबंधी सुख ते आ-
वुं छे, ने स्वर्गनुं सुख छे ते आवुं छे, तथा राज्यादिकनुं सुख ते आवुं छे.एवी रीत सर्वना सुख
नुं अनुमान करीने अने भगवानना सुखने सर्वथी अधिक मानीने जे भगवानने विषे जोडाणो
होय तेने एवो कियो पदार्थ छे ते भगवानना चरणारविंदथी पाडे? कोइ न पाडे. जेम पारसमणी
होय ते कोइक लोढाने अडीने तेनुं सोनुं थयुं, ते सोनुं पाछुं पारसमणीनु कर्युं पण लोढुं थाय
नाहि तेम एवुं जेणे भगवाननुं महात्म जाण्युं छे, ते भगवाननो पाडयो पण ते भगवानना चर-
णारविंदथी पडे नहि, तो शुं बिजे पदार्थे करीने ए पडे? न पडे? अने ए भगवानने भजता होय
एवा जे संत तेनुं पण बहु महात्म समजे जे एवा मोटा जे भगवान तेना साक्षात उपासक ए
संत छे, माटे ए बहु मोटा छे जेम उद्धव पोते केवा मोटा हता पण जो आवी रीते भगवाननुं

महात्म समजता हता तो पोताने कांइ डाहापणनुं मान न रह्युं. ने गोपियुंना चरणनी रजने पामवाने इच्छया, ने व्रक्षवेलीनो अवतार माग्यो. केम जे एवा मोटा भगवान जेना मार्गने वेदनी श्रुति खोळेछे.ते भगवानने विषे ए गोपियुंनी प्रिति अतिशे भाळी. तेम ए भगवानना संत होय तेने आगळ मान केम रहे, ने तेने नमाय केम नहि? तेनी आगळ तो दासानुं दास थइने रहेवाय, ने पांच पांच खासडां मारे, तो पण खमे ने एम समजे जे मारां मोटां भाग्य थयां, जे एवां संतनो हुं तिरस्कार सहुं छुं, नहि तो प्रारब्ध वश थइने बायडी, छोकरांना तिरस्कार सेहेवा पडत, तथा मा बापना तथा राजाना तिरस्कार सहेवा पडत. अने प्रारब्ध वश थइने डोडीनी भाजी खावी पडत तथा मोथ खावी पडत, ते करतां आ संतने संगे रहीने हुं निरस्वादी व्रत्तमान पाळुं छूं, ते मारां मोटां भाग्य छे. अने प्रारब्ध वश थइने जेवां तेवां वस्त्र तथा चिथरां पहेरवां पडत, ते करतां आ संतने संगे रहीने हुं गोदडी होढुं छे, ते ए मारां मोटां भाग्य छे. अने ते संतनी सभामां जाय छे, ने पोताने मान जडतुं नथी त्यारे ए संतनो अवगुण ले छे त्यारे ए संतनी मोटप जाण्यामां आवी नथी, नहि तो अवगुण लेत नहि. जेम मंबइनो गवर्नर साहेब खुरसी नांखीने बेठो होय ने तेनी सभामां कोइ गरीब माणस जाय ने

तेने खुरसी नें नाखी दे, ने आदर कोई न करे त्यारे. कांइ एने ते अंग्रेज उपर धोखो थाय छे, ने कांइ तेने गाळ दिधानुं मनमां थायछे? लेश मात्र पण थातुं नथी. आ माटे जे ए अंग्रेजनी मोटाइ जाणे छे जे ए तो मुलकनो पादशाह छे ने हुं तो कंगाल छुं एवुं जाणीने धोखो थाय नहि. तेम जो संतनी मोटाइ जाणी होय तो ते संत गमे तेवो तिरस्कार करे तो पण धोखो थाय नहि. ने जेटलो ले एटलो पोतानो अवगुण तो ले पण संतनो अवगुण तो कोइ रीते लेज नहि. माटे जेने भगवाननुं ने संतनुं महात्म समजाणुं छे तेनो पायो सत्संगमां अचळ छे अने जेने महात्म नथी समजाणुं तेनो विश्वास नहि ॥इतिवचनामृतम् ॥ १७॥१२५॥

संवत १८७८ ना पोस वदि १ पडवाने दिवस रात्रीने समे स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज गाम श्री लोया मध्ये सूरा भक्तना दरबारमां ढोलीया उपर विराजमान हता, अने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने बिजे धोळे फेंटे करीने बोकानी वाळी हती, तथा गरमपोसनी राती डगली पेहेरी हती, तथा ओफाळे सहित रजाइ ओढी हती तथा धोळो खेस पहेर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंसनी सभा तथा देश देशना

हरिभक्तनी सभा भराईने वैठी हती ते समयमां संध्या आरती तथा स्तुति पर्महंस करी रह्या पछे श्रीजी महाराजे कह्युं जे किर्त्तन गाओ. पछे वाजित्र वजाडीने मुक्तानंद स्वामी आदिक पर्महंसे किर्त्तन गायां.ने पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे हवे किर्त्तन राखो. हवेतो अमे वार्त्ता करशुं, ने अमे आ वात करीए तेमां जेने आ शंका उपजे ते पुछज्यो. एम कहीने बोल्या जे भगवाननो निश्चय थावो ते सउथी महा कठण छे, ने निश्चयनी वार्त्ता अति अटपटि छे, माटे कहेता बिक लागे छे, जे शुं जाणीये वात करीए नें तेमांथी कोईने अवळुं पडे; ने तेणे जे पोताना अंगनी दृढता करी होय ते अंग आ वाते करीने तुटी जाय तो ते मुळगेथी जाय ने ए वात कर्या विना पण चालतुं नथी: अने ए वात जो समजतां न आवडे तो दु:ख पण घणां आवे. अने आ वात समजे नहि त्यांहां लगण तेना निश्चयमां पण कान्यप वणी रहे छे, ते सारु वात करीये छीये.जे भगवाने वाराहनो देह धार्यो ते भुंडनुं रूप ते अति कुरूप कहेवाय. तथा मत्स्यावतार धार्यो त्यारे मांछलां जेवुंज रूप हतुं, तथा कच्छावतार धार्यो त्यारे काचबा जेवुंज रूप हतुं, तथा नृसिंहावतार धार्यो त्यारे वाघना जेवुं भयानक रूप हतुं, तथा वामन रूपना हाथ पग टुंका ने केड धिंगी ने शरीर धिंगु एवा टुंकडा हता. तथा व्यासावतार धार्यो

त्यारे ते व्यास काळा हता ने शरीरमां मुवाळा घणा हता ने शरीर गंधातु हतुं. इत्यादिकने भगवाने आकृतियुं धारण करी हती त्यारे तेने ते काळे जे जे मळ्या तेमणे तेवा तेवा रूपनुं ध्यान कर्युं छे, अने ते ध्याने करीने ते ते भगवानना रूपने पाम्या छे. तेमां जे वाराहने मळ्या ते शुं धामने विषे भगवानने वाराह रूपज देखे छे, अने मच्छजीने मळ्या ते शुं धामने विषे मच्छ रूपज देखे छे, अने कुर्मने मळ्या ते शुं धामने विषे कुर्म रूपज देखे छे, अने नृसिंहने मळ्या ते शुं धामने विषे नृसिंह रूपज देखे छे, अने हयग्रिवने मळ्या ते शुं धामने विषे घोडा रूपज देखे छे? अने जेणे वराहने पोते भावे भज्या ते शुं भुंडण थइ ने सखा भावे भज्या, ते शुं भुंड थयो? अने मच्छने पति भावे भज्या ते शुं मांछली थइने सखा भावे भज्या, ते शुं मांछलो थयो? ने कुर्मने पति भावे भज्या ते शुं काचवी थइ, ने सखा भावे भज्या ते शुं काचवो थयो? अने नृसिंहने पति भावे भज्या ते शुं शिहण थइने सखा भावे भज्या ते शुं वाघ थयो? ने हयग्रिवने पति भावे भज्या ते शुं घोडी थइ, ने सखा भावे भज्या ते शुं घोडो थयो? माटे जो भगवाननुं मूळ स्वरूप वाराहादिक जेवुंज होय तो तो ते अवतारना भोकुने तेना ध्याने करीने ते तदाकार पणुं थाय त्यारे तो कह्युं तेमज थयुं जोइए पण ए वात एम नथी, त्यारे तमे के

यो जे ते भगवाननुं केवुं रूप छे, तो कहिए छीए के भगवान तो सचिदानंद रूप छे, ने ते जोमय मुर्त्ति छे अने जेना एक एक रोमने विषे कोटि कोटि सूर्य जेवो प्रकाश छे, ने कोटि कामदेवने पण लज्या पमाडे एवा ते भगवान रूपाळा छे, अने अनंतकोटि ब्रह्मांडना पति छे राजा धिराज छे, सर्वना नियंता छे, सर्वना अंतर्यामी छे, अतिशे सुखरूप छे, ने जेना सुख नी आगळ अनंत रूपवान स्त्रीयु ने जोयानुं जे सुख ते तुच्छ थइ जाय छे, अने आ लोक परलोक संबंधी जे पंच विषयनां सुख ते भगवाननी मुर्त्तिना सुख आगळ तुच्छ थइ जाय छे एवुं भगवाननुं स्वरूप छे. ते स्वरूप सदा द्विभुज छे ने पोतानी इच्छाए करीने क्यारेक चतुर्भुज जणाय छे, अष्ट भुज पण जणाय छे, ने शहस्र भुज पण देखाय छे ने तेज भगवान मच्छ, कच्छ, वाराहादिक रूपने तथा राम कृष्णादिक रूपने कांइक कार्यने अर्थे धारण करे छे, पण जे ए पोतानुं मुळ रूप छे, तेने तजीने ए अवतारनुं धारण नथी करता तेज भगवान पोते अनंत ऐश्वर्यने अनंत शक्ति सोताज मच्छ कच्छादिक रूपने धारण करे छे, अने जे कार्यना मित्त जे देहनुं धारण करवुं होय ते कार्य थइ रहे छे. त्यारे ते देहनो त्याग पण करे छे, ते भागवतमां कह्युं छे ते ॥ ययाहरतभुवो भारंतांतनूविजहावजः ॥ कंटकंकंटकेनैवद्वयंचापीशितुः

सम् ॥ यथामत्स्यादिरूपाणीधत्तेजह्याद्यथानटः ॥ भूभारःक्षपितोयेनजहौतच्चकलेवरं ॥ जे जे देहे करीने भगवाने पृथ्वीनो भार उतारयो तथा जिवने देहाभिमान रूपी जे चैतन्यमां कांटो खुची रह्यो हतो तेने काढीने ते काढवाना कांटा रूप जे पोतानो देह तेने पण त्याग करयो अने राक्षसने मारवाने अर्थे भगवाने नृसिंह रूप धारयुं ने पछे ते कार्यने करीने पछे ते देहनो त्याग करवाने इच्छया पण ते नृसिंहने कोण मारे. पछे ते पोताना इच्छाए करीने काळरूप शिव ते सरभनुं रूप धारीने आव्या, ने नृसिंहने ने सरभने युद्ध थयुं. पछे बेय जणे देह मुक्यो. तेणे करीने शिवसरभेश्वर महादेव थया, ने नृसिंहजीए देह मुक्यो ते नारसिंहि शिला थइ॥ माटे चित्रामणमां ज्यां ज्यां मच्छ कुर्मादिक भगवानना अवतारनां चित्रामण करे छे, त्यां त्यां थोडोक मच्छ, कच्छादिकनो आकार करीने पछे ते उपर शंख, चक्र, गदा, पद्म वैजयंति माळा, पीतांबर, वस्त्र, किरिट, मुगट, श्रीवछनुं चिन्ह इत्यादिक चिन्हे सहित भगवाननी मुर्त्तिने लखे छे, तो जो भगवाननुं रूप अनादी एवुंज छे. अने श्रीकृष्ण भगवाने प्रथम जन्म समयमां वसुदेव देवकीने चतुर्भुज रूपे दर्शन दीधुं, ने अक्रुरने चतुर्भुज रूपे दर्शन जळने विषे दीधुं तथा रुकमणीने मुर्छा आवी त्यारे पण चतुर्भुज रूपे दर्शन दीधुं, अने अर्जुने पण

एम कह्युं जे ॥ तनैवरूपेणचतुर्भुजेनसहस्त्रबाहोभवविश्वमूर्त्ते ॥ माटे अर्जुन पण चतुर्भुज रूप देखाता, अने जादवास्थळी करीने पींपळानी हेठे श्री कृष्ण भगवान बेठा हता, ते समयमां उद्धवजीए तथा मैत्रेय ऋषिए भगवाननुं रूप पण चतुर्भुज शंख, चक्र, गदा, पद्म, पितांवर सहित दिठुं. अने श्रीकृष्ण भगवान तो शाम हता ने तेनुं रूप तो कोटी कामने लज्या पमाडे एवुं कह्युं छे माटे एवा मनुष्य जेवा जणाय छे तेने विषेज पूर्वे कह्यो एवो प्रकाश ने सुख ते सर्व रह्यां छे, ते जेने ध्यान,धारणा, समाधीनुं अंग होय तेने ए मुर्त्ति छे तेज कोटी कोटी सूर्यना प्रकाशे जुक्त देखाय छे,पण मशाल दिवानुं काम पडतुं नथी. अने एवो प्रकाश ए भगवानने विषे छे, ने ते नथी देखातो ते तो ए भगवाननी एवी इच्छा छे. अने ए भगवान इच्छे जे एवो प्रकाशवान हुं आ भक्तने देखाउं तो ते प्रकाशे जुक्त एवी एज मूर्त्तिने देखे छे. माटे जेने भगवाननो निश्चेय होय ते तो एम समजे जे गोलोक, वैकुंठ, श्वेतद्विप, ब्रह्मपुर, ए धामनां जेणे ऐश्वर्य, समृद्धि तथा पार्शद तेणे सहित भगवान छे. ने एमनी सेवाना करतल तो राधिकाजी, लक्ष्मीजी, आदिक छे. एवा परमभावे सहित भगवानने देखे छे.ने मुढ छे ते तो माणस जेवा देखे छे. ते श्रीकृष्ण भगवाने गीतामां कह्युं छे ॥ अवजानंतिमां मुढा मानुषीतनुं

मोश्रितं ॥ परभावमजानंतो ममभूते महेश्वरं ॥ माटे जे मुढ छे ते भगवानना एवा परमभावने जाण्या विना भगवानने विषे पोताना जेवा मनुष्य भावने परठे छे ते मनुष्यभाव ते शुं तो काम, क्रोध, लोभ, मोह,मद, मत्सर आशा, त्रश्ना, इत्यादिक अंतःकरणना भाव छे, तथा हाड, चाम, मलमुत्रादिक तथा जन्म, मरण, बाळ,योवन, वृद्ध ए सर्वे देहना भाव छे, इत्यादिक जे मनुष्य भाव ते सर्वे भावने भगवानने विषे परठे छे. माटे एवा भावनो परठनारो जे होय तेने भगवानना निश्चय जेवुं जणाय छे, तो पण तेनो निश्चय काचो छे, ने ए जरूर सत्संगमांथी पडशे. अने ए भगवान तो परम दिव्य मुर्त्ति छे ने भगवानने विषे तो ए मनुष्य भावना लेश नथी माटे ए भगवानमांथी मनुष्य भावने टाळीने देव भाव लाववो,पछे ब्रह्मादिकनो भाव लाववो,पछे प्रधान पुरूषनो भाव आवे छे,पछे प्रकृति पुरूषनो भाव आवे, पछे अक्षरनो भाव आवे, पछे अक्षरातित एवा पुरूषोत्तम तेनो भाव आवे छे, जेम व्रजना गोपने आश्चर्यरूप श्रीकृष्ण भगवानना चरीत्र देखीने प्रथम तो देव भाव आव्यो. पछे गर्गाचार्यना वचनने संभारीने नारायणनो भाव आव्यो पछे एम कह्युं जे तमे तो नारायण छो, माटे अमने तमारूं धाम देखाडो त्यारे अक्षर धाम देखाडयुं एवी रीते भगवानने विषे जेने दिव्यभाव छे, तेने पुरो निश्चय

जाणवो अने एम कहे छे, जे आने प्रथम भगवाननो निश्चय नोतो ने हवे थयो ते शुं ए प्रथम भगवानने नोता देखतो? देखतो तो हतो, पण मनुष्यभावे सहित देखतो हतो ने पछे ज्यारे निश्चय थयो त्यारे दिव्य भावे सहित दर्शन थयुं त्यारे ए निश्चय थयो जाणवो. अने ज्यारे भगवानने विपे एवो दिव्य भाव न समजे त्यारे एने वाते वाते धोखो थाय ने गुण अवगुण लीधा करे छे जे, आनी कोरनो पक्ष राखे छे ने अमारो पक्ष राखता नथी. तथा आने वधु बोलावे छे ने अमने नथी बोलावता, ने आने उपर वधु हेत छे, ने अमारी उपर नथी. एवी रीते गुण अवगुण परठ्या करे छे, तेणे करीने एनुं अंतर दिवसे दिवसे पाछुं पडीने अंत्ये ते विमुख थाय छे. माटे भगवानने विपे तो मनुष्य भाव नज परठवो अने भगवानना भक्तने विपे पण मनुष्य भाव न परठवो कांजे देहे करीने तो भगवानना भक्तमां कोइक आंधळो होय, लुलो होय, कोडीयो होय, बेरो होय, वृद्ध होय, कुरूप होय, ने ते ज्यारे देह मुके छे, त्यारे शुं भगवानना धाममां एवां आंधळां लुलांज रहे छे? नथी रहेतां. एतो सर्वे मनुष्यपणाना भाव छे तेने मुकीने दिव्यरूप थाय छे, ब्रह्मरूप थाय छे. माटे हरीना भक्तने विपे मनुष्यभाव न परठाय तो परमेश्वरने विपे केम परठाय! अने आजे वात छे ते सुजे तो आज समजो तो एटली

समजवी छे ने सुजेतो सो वर्षे करीने समजो तो पण एटली समजवी छे. अने आ वात समजीने एनी दढतानो गांठय पड्या विना छूटको नथी. माटे आ अमारी वात छे, ते सर्वे हरिभक्तने याद राखीने परस्पर करवी. ने ज्यारे कोइने अणसमजणे करीने धोखो थाय, त्यारे तेने आ वात करीने चेतावी देवो. अने आ जे अमारी वार्त्ता छे तेने नित्य प्रत्ये दिवसमां एकवार करवी एम अमारी आज्ञा छे. तेने भुलशोमां जरूर भुलशोमां एम कहीने श्रीजीमहाराज सर्वे हरिभक्तने जय स्वामीनारायण कहिने हसता थका पोताने उतारे पधार्या. एवीरीते श्रीजीमहाराजनी वार्त्ता सांभळीने सर्वे साधु तथा सर्वे हरिभक्त ते श्रीजीमहाराजने सर्वे अवतारना कारण अवतारी जाणीने दिव्य भावनी अतिशे दढता करता हवा. ॥ इति वचनामृतम् ॥ १२६ ॥ १८ ॥

इति लोया प्रकरण समाप्त.

संवत १८७८ ना फागण शुदि ४ चोथने दिवस श्रीजी महाराज गाम श्री पंचाला मध्ये झिणभाइना दरबारमां ओटा उपर ढोलीयो ढळावीने विराजमान हता ने मस्तक उपर धोळो फेंटो बांध्यो हतो तथा धोळो अंगरखो पहेर्यो हतो तथा धोळो खेस पहेर्यो हतो, तथा धोळी पछेडी ओढी हती; अने माथाना फेंटानो पेच जमणीकोरे छूटो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ पर्महंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. ते समयमां संध्या आरती थइ रही ते केडये श्रीजीमहाराज तकीया उपर विराजमान थइने बोल्याजे आ सर्वे मोटा पर्महंस तथा मोटा हरिभक्तने प्रश्न पुछीए छीए जे भगवानमां हेत होय तथा धर्ममां निष्ठा होय तो पण जो विचारने न पाम्यो होय तो अति सारा जे शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध ए पंच विषय ते जेते अतिशे भुंडा जे शब्दादिक पंच विषय ते सरखा थाय नहि. अथवा तेथी अतिशे उतरतां पण थाय नहि. माटे क्रिया विचारने पामे त्यारे अतिसारा जे पंच विषय ते अतिशे भुंडा जे पंच विषय ते सरखा थइ जाय अथवा ते करतां पण अतिशे भुंडा थइ जाय? ए प्रश्न सर्वे मोटेरा पर्महंसने तथा सर्वे मोटेरा हरिभक्तने अमे पुछीए छीए ते जेणे जेवे विचारे करीने ए सारा पंच विषय, ने भुंडा पंच विषय, जेवा जाण्या होय,

अथवा भुंडाथी पण अतिशे भुंडा जाण्या होय ते जे पोते पोतानो विचार ते कहो. पछे ते सर्वे पर्महंस तथा सर्वे हरिभक्ते पोतपोतानो विचार काहे देखाडयो. त्यार पछे श्रीजीमहाराज बो- ल्या.जे तमारो सर्वनो तो ए विचार सांभळ्यो. पण हवे अमे जे विचार कर्यो छे, ते कहिए छीए. जेम कोइकनो कागळ परदेशथी आव्यो होय, तेने वांचीने ते कागळना लखनाराना जेवी बुद्धि होय तेवी जणाइ आवे छे, तथा जेम पांच पांडव, द्रपदि, कुंताजी तथा रुकमणी सत्यभामा, जांबुवति, आदिक भगवाननी पटराणीयो तथा सांब जे भगवाननो पुत्र इत्यादिक भक्तनां रूप तथा वचन ते शास्त्रमां लख्यां छे ते शास्त्रने श्रवणे करीने तेमना रुपनुं प्रमाण ते दर्शन जेवुंज थाय छे, तथा तेमना वचने करीने तेमनी बुद्धिनुं प्रमाण थाय छे. तेम पुराण, भारतादिक ग्रंथे करीने एम सांभळ्यामां आवे छे जे भगवान जे ते आ जगतनी उत्पत्ति,स्थिति ने प्रलय तना कर्त्ता छे, ने सदा साकार छे अने जो साकार न होय तो तेने विषे कर्त्तापणुं कहेवाय नहि. अने जे अक्षरब्रह्म छे ते तो ए भगवानना अंगनो प्रकाश छे अथवा एने रह्यानुं धामछे, एवा दिव्यमुर्त्ति प्रकाशमय ने सुखरूप जे भगवान ते जे ते प्रलयकाळे मायामां कारण शरीरे सहित लीन हता जे जीव,तेमने उत्पत्तिकाळे बुद्धि, इंद्रियुं,मन, प्राण ते आपे

छे ते शाने अर्थे आपे छे? तो उत्तम, मध्यम ने कनिष्ट जे विषय तेना भोगने अर्थे ने मोक्षने अर्थे आपे छे. अने ए जीवुंने अर्थे भोगने भोगनां स्थानक ते भगवाने रच्यां छे.तेमां जे उत्तम पंच विषय करया छे, ते भुंडा पंच विषयना दुःखनी निवृत्तिने अर्थे कर्या छे.जेम कोइक भारे शाउकार होय ने रस्ताने बेयकोरे छायाने अर्थे झाड रोपावे छे,तथा पाणीनी परबे बंधावे छे, तथा सदा व्रत करावे छे, तथा धर्मशाळा करावे छे ते गरीब सारुं करावे छे. तेम ब्रह्मा, शिव ने इंद्रादिक देव छे, ते तो ए भगवाननी आगळ जेवा सडतालानां रांक होय ने पिपरनी टेटी वाफीने खाता होय ते जेवा गरीब छे. ते ब्रह्मादिक देव मनुष्यना सुखने अर्थे उत्तम एवा पंच विषय ते भगवाने रच्या छे ने जेम शाउकारे सदाव्रत धर्मशाळादिकमां सुख जेवां रांकने अर्थे रच्यां छे ते करतां ते शाउकारना घरमां सुख ते अतिशे उत्तम हशे एम जणाय छे. तेम ए भगवाने ब्रह्मादिकने अर्थे एवां सुख रच्यां छे तो पोताना धाममां तो ए करतां अति उत्तम सुख हशे एम बुद्धिवाळो होय तेने जाण्यामां आवे छे. माटे ए भगवानना धामना सुखनुं अतिशे पणुं बुद्धिवानने जाण्यामां आवे छे, तेणे करीने सारा विषय ते भुंडा थइ जाय छे.अने संसारमां जे पशु, मनुष्य, देवता, भूत इत्यादिक ज्यां ज्यां पंच

विषय संबंधि सुख जणाय छे ते धर्म सहित जे किंचित भगवाननो संबंध तेणे करीने छे, पण
पंडे भगवानमां जेवुं सुख छे, तेवुं कोइने विषे नथी. जेम आ मशाल बळे छे ते मशालने स-
मीपे जेवो प्रकाश छे तेवो थोडेक छेटे नथी. ने तेथी घणे छेटे तो मुळगो नथी. तेम विजे ठे-
काणे तो किंचित सुख छे ने संपूर्ण सुखतो भगवानना समीपमां रह्युं छे. अने जेटलुं भगवान
थी छेटे थवाय छे तेटला सुखमां नुन्यता थाय छे. माटे जे मुमुक्षुहोयते पोताना हृदयमां एम
विचारे जे जेटलुं मारे भगवानथी छेटुं थाशे तेटलुं दुःख थाशे ने महा दुखीयो थाइश. ने थो-
डेक भगवानने संबंधे करीने एवुं सुख थाय छे माटे मारे भगवाननो संबंध अतिशे राखवोछे.
ने हुं अति संबंध राखीश तो मारे उत्कृष्ट सुखनी प्राप्ति थाशे. एम विचारीने भगवानना सुख-
नो लोभ राखीने जेम भगवाननो संबंध अतिशे रहे तेम उपाय करे तेने बुद्धिवान कहिये. अने
पशुना सुखथी मनुष्यमां अधिक सुख छे, ने ते करतां राजानुं सुख अधिक छे, ने तेथी देवता
नुं सुख अधिक छे, ने तेथी इंद्रनुं अधिक छे, ने तेथी बृहस्पतिनुं, ने तेथी ब्रह्मानुं, ने तेथी वैकुंठ
लोकनुं, ने तेथी गोलोकनुं सुख ते अधिक छे, ने तेथी भगवानना अक्षरधामनुं सुख ते अति
अधिक छे. एवी रीते भगवानना सुखने अतिशे जाणीने विजां जे जे पंच विषयनां सुख तेने

विषे बुद्धिवानने तुच्छता थइ जाय छे. ने ते भगवानना सुख आगळ ब्रह्मादिकनुं सुख तो जेवुं भारे गृहस्थने बारणे कोइक रांक ठीकरुं लइने मागवा आव्यो होय तेना जेवुं छे. अने ए भगवानना धामनां सुखनो ज्यारे विचार करीए छीये त्यारे सर्वे जे बिजां सुख तेथी उदास थइने मनमां एम थाय छे जे आ देह मुकीने ए सुखने क्यारे पामीये! अने स्वभाविक पणे पंच विषयनुं ग्रहण करता होइए तेमां तो कांइक झाझो विचार थातो नथी, पण जो ते विषयमां कांइक सारप्य मनाय छे, त्यारे तुरत ए भगवानना सुखमां द्रष्टि पुगी जाय छे, ने मन अति उदासी थइ जाय छे.अने आजे सर्वे वात छे, ते जे बुद्धिवाळो होय तेने जाण्यामां आवे छे, माटे बुद्धिवाळा उपर अमारे हेत छे. केम जे अमे बुद्धिवाळा छीए तो एवी रीते अमारी द्रष्टि पुगे छे. माटे बुद्धिवाळो जे होय तेनी पण द्रष्टि पुगे खरी. अने आवी रीते अमारो विचार ते तमारा सर्वेना विचार करतां अमने अधिक जणाणो छे. ते सारुं आ अमारा विचारने अति दृढ पणेकरीने हइयामां सउ राखज्यो. अने आ विचार विनातो जो रमणीक पंच विषयमां वृत्ति चोटी होय तेने अति बळे करीने उखेडे त्यारे मांड मांड उखडे, अनेजो आ विचारने पाम्यो होय तो ते वृत्तिने खेंच्यामां लेश मात्र प्रयास पडे नहि.सेहेजेज विषय-

नी तुच्छता जणाइ जाय छे, अने आ जे वार्त्ता छे, ते जेने झाझी बुद्धि होय ने झाझा सुखना लोभने इच्छे तेने समजाय छे. जेम कोडी करतां पैशामां वधुं माल छे,ने तेथी रूपइयामा वधुं माल छे, ने तेथी सोनामोरमां वधुं माल छे, ने तेथी चिंतामणीमां वधुं माल छे. तेम ज्यां ज्यां पंचविषयनुं सुख छे. तेथी भगवानना धाममां भगवाननुं सुख अति अधिक छे. माटे जे बुद्धिवाळो होय ने जेनी द्रष्टि पुगे तेने आ विचार हृदयमां ठरे छे. अने आ विचार जेना हृदयमां द्रढ ठर्यो होय ने ते वनमां बेठो होय तो पोताने एम जाणे जे हुं अनंत माणस तथा राज्य समृद्धिये विटाणो छुं एम समजे, पण दुखियो न माने,अने इंद्रना लोकमां होय तो जाणे जे वनमां बेठो छुं, पण ते इंद्रना लोकना सुखे करीने सुखीयो न माने ने ते सुखने तुच्छ जाणे.तेसारुं आ विचारने राखीने एम सर्वे निश्चय राखज्यो जे हवे तो भगवानना धाममांज ठेठ पुगवुं छे पण वचमां कोइ ठेकाणे तुच्छ जे पंच विषय संबंधी सुख तेमां लोभावुं नथी,एवी रीते सउ द्रढ निश्चय राखज्यो. अने आतो जे अमारो सिद्धांत छे ते तमने सर्वेने कह्यो छे माटे द्रढ करीने राखज्यो. ॥इति वचनामृतम्॥१॥१२७॥

संवत १८७८ना फागण सुदी ७ सातम ने दिवस गाम श्री पंचाला मध्ये जिए भाइना दरवारमां ओटा उपर ढोलीयो ढाळ्यो हतो ते उपर श्रीजी मराहाज विराजमान हता, अने धोळो फेंटो मस्तक उपर बांध्यो हतो तथा धोळो खेस पहेर्यो हतो तथा धोळी पछेडी ओढी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ पर्महंस तथा देश देशना हरीभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजिमहाराज बोल्या जे मोक्षधर्मनु पुस्तक मगावो तो सांख्यना अध्यायनि तथा योगना अध्यायनि कथा करावियें. ए वचनने सांभळने पुस्तक मगाव्युं. पछे नित्यानंदस्वामीये कथा करवानो आरंभ कर्यो. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे योगवाळा छे ते पचवीसमां जिव इश्वरने कहेछे ने छवीसमा परमात्माने कहेछे अने सांख्य वाळा छे ते चोविस तत्वने अवांतर जिव इश्वरने कहिने पचविसमां परमात्माने कहेछे तेमां जे योग्यवाळाछे तेनो ए मत छे जे सुजे एवो आत्मा अनात्मानो विचार करो, साधन करो, पण प्रत्यक्ष भगवानना आश्रय विना मोक्ष न थाय. अने सांख्यवाळानो एम मतछे जे सर्वे देव मनुष्यादिकनी जे गतियो तेने जाणीने ने विषयने विषे वैराग्यने पामीने त्रण देह थकी पर एवो जे आत्मा तेने जाणे त्यारे मुक्त थाय. अने ए बे प्रकारना जे मत छे, तेने पोतपोतना मतमां जे दुपण छे तेना निवारणने अर्थे जुक्तिनु ग्र-

हण करवुं. तेमां योगमतमां ए दुषणछे जे जिवने पचविसमो कह्यो तथा इश्वरने पचविसमो क
ह्यो, जे जिवनो चोविस तत्वनो देह कह्यो ने इश्वरनो पण चोविस तत्वनो देह कह्यो, माटे ए
बेने विषे तुल्य भाव आवी जाय ने स्थुलने विराट ते तुल्य छे. तेथी सुक्ष्मने सुत्रात्मा ते तुल्य
छे,ने कारणने अव्याकृत ते तुल्य छे,तथा जाग्रत ने स्थिति अवस्था ते तुल्य छे,तथा स्वप्न ने
उत्पत्ति अवस्था ते तुल्य छे,तथा सुषुप्ति ने प्रलय अवस्था ते तुल्य छे,अने विश्वतैजस, ने प्राज्ञ
ने विष्नु, ने ब्रह्माने,शिव ते तुल्य छे. ए समजीने छाविसमाने भजेछे. एवी रीते जिव इश्वरने
विषे जे तुल्य भाव रूप दोष छे तेने टाळवाने अर्थे कोइक मोटा पासेथी जुक्ति शिखवी, जे इ-
श्वरना देहमां जे पंच भुत रह्यां छे तेनी महाभुत एवी संज्ञा छे, ने ते भुत सर्व जिवना देहुने
धारी रह्यां छे अने जिवना देहमां जे पंचभुत छे ते अल्प छे. ने बिजाने धारवाने समर्थ नथी
ने जिव छे ते अल्प छे, ने इश्वर छे ते सर्वज्ञ छे, एवी रीते जुक्ति शिखिने जिव इश्वरने
विषे समपणुं न समजवुं. अने जो एवी जुक्ति न शिख्यो होय ने कोइ प्रतिवादी प्रश्न पुछे तो
तेनो उत्तर करवो कठण पडे. ने समजण चुंथाइ जाय. अने कोइक प्रश्न करे ते तो जिव इ-
श्वरने विषे समपणुं रहेवा दे नहि. माटे जिव इश्वरने विषे समपणुं न आवे, एवी रीतनी जु-

कि शिखवी ने एवी रीतनां जे वचन तेने सांभळवां. अने सांख्य वाळाने ए दुषण छे जे,
चोविस तत्व कह्यां छे, ने पचाविसमा परमात्मा कह्या छे ने चोविस तत्वने मिथ्या कह्यां छे ने
परमात्माने सत्य कह्या छे, त्यारे ते परमात्माने पामे छे कोण? केम जे पामनारा जिवने त-
त्वथी भिन्न कह्यो नथी माटे ए जे दुषण छे तेने टाळवाने अर्थे मोटाउं थकी एम जुक्ति शिखवी.
जे ए चोविस तत्व कह्यां ते जिव विनानां होय नहि माटे ए तत्व भेळा जिव इश्वरने कह्या छे ते
जिव इश्वर ए तत्व थकी प्रथक छे,ने परमात्माने पामे छे.एवी रीतनी जुक्ति शिखवीने आ जुक्ति
न शिखि होय ने कोइ-प्रतिपक्षि प्रश्न पुछे तो संशय थाय जे तत्वतो मिथ्या छे.त्यारे ते परमा-
त्माने पाम्याने अर्थे ब्रह्मचर्यादिक धर्म कह्यो छे. तथा श्रवण मनन निदिध्यासादिक साधन
कह्यां छे ते शाने अर्थे कह्यां छे? माटे तत्वना तदात्मक पणाने पाम्या जे जिव इश्वर तेने त-
त्व रुपे करीने कह्या छे ते ए तत्व थकी अति विलक्षण छे, ते परमात्माने पामे छे, इत्यादि
क जे जुक्तियो तेने मोटा संत थकी सांख्यवाळाने शिखवी. अने योग वाळा जे छे ते प्रत्यक्ष
मुर्त्ति एवी जे मच्छ,कच्छ, वराह, नृसिंह, वामन, रामकृष्णादिक भगवानना अवतार तेने ध्या-
न करीने मोक्ष थाय एवी युक्तिनुं ग्रहण करे छे. अने जे सांख्यवाळा छे ते जे ते

॥यतोवाचोनिवर्त्तते अप्राप्यमनसासह॥ इत्यादिक श्रुति शास्त्रे करीने कह्युं जे भगवाननुं स्वरूप तेने अनुभवे करीने यथार्थ जाणे त्यारे मोक्ष थाय एवी बुध्धिनुं ग्रहण करे छे. अने ए बेय मत छे ते सारा छे ने मोटाए मान्या छे, अने ए बेयनुं यथार्थ जो आचरण जे करे तो ते परमगतीने पामे छे. अने ए बे मत छे तेमां साधन सरखां कह्यां छे, पण उपासनानी जे रीत ते सरखी नथी घणी प्रथक छे. एवी रीते वार्त्ता करीने श्रीजीमहाराज परमहंस प्रत्ये बोल्या जे हवे कीर्त्तन गावो: पछे मुक्तानंद स्वामी आदिक जे परमहंस ते वाजींत्र लेइने किर्त्तन गाववा लाग्या. ते पछे वळी श्रीजीमहाराज बोल्या जे हवे किर्त्तन राखो. अने सांख्य ने योग ए बेयनो सिद्धांत तमे किर्त्तन गायां त्यां सुधी अमे विचार्यो छे, ते कहिए ते सांभळो. जे योगवाळा छे तेने आत्यंतिक प्रलयने विषे जे अक्षरधाममां तेजोमय एवी दिव्यरूप भगवाननी मुर्त्ति रहे छे ते ध्यान करवा योग्य छे, ने तेथी ओरा जे प्रकृति पुरुष रूप भगवान ध्यान करवा योग्य छे ने तेथी ओरा प्रकृति पुरुषनां कार्य जे चोविसतत्वते रूप भगवान ध्यान करवा योग्य छे ने तेथी ओरा हिरणगर्भ ने तेथी ओरा चोविस तत्वथी उपनो जे विराट ते ते ध्यान करवा योग्य छे, ने तेथी ओरा ब्रह्मा, विश्नु, शिव, तथा प्रथवी ने विषे जे मच्छ,

कुर्म, नृसिंह, वाराहादिक भगवानना अवतार तथा शालग्रामादिक प्रतिमाउं ए सर्व ध्यान, करवा योग्य छे, एवुं योगवाळानुं तात्पर्य जणाणुं. पछे सांख्यनो विचार उपड्यो त्यारे तेणे ए आकर मात्रनुं निराकरण करी नांख्युं, ने एम जणाणुं जे ए सर्वना विचारनो करतल जेजीव छे ते जेवो शुद्ध कोइ नथी, माटे ए जीवनुं ध्यान करवुं ए ठीक छे एवो जे सांख्यनो विचार तेने टाळवाने अर्थे वळी योगनो विचार थयो जे ए परात्पर एवा पुरुषोत्तम भगवान तेनुं ए प्रकृती पुरुषादिक सर्वने विषे अन्वयपणुं छे, माटे ए सर्व भगवानज छे ने दिव्य रूप छे ने सत्यछे ने ध्येय छे ने ए वातने दृढ करवाने अर्थे श्रुती छे जे ॥ सर्वंखल्विदं ब्रह्मनेहना नास्ति किंचन ॥ तथा इदंहिविश्व भगवानिवेतरोय तो जगस्थान निरोध संभवा ॥ एवी रीतनो योग मार्ग छे तेने विषे प्रवर्त्यो जे मुमुक्षु तेने कोइ विघ्न नथी. शा माटे जे ए मार्ग स्थूल छे नेएने विषे प्रत्यक्ष मुर्त्ति भगवाननुं आलंबन छे ते सारु जेवो तेवो होय ते पण ए मार्गे करीने निर्विघ्न थको मोक्षने पामे छे, पण ए मार्गमां एक दोष छे, जे ए सर्वथी पर जे पुरुषोत्तम भगवान तेने अने ए प्रकृति पुरुषादिक ने अंश अंशिभाव आवी जाय छे. जे भगवानना अंश प्रकृती पुरुष छे, ने तेना अंश हिरण्यगर्भ, विराटादिक छे. एवी रीते समजाय तो मोटो दोष आवे.

कांजे भगवान अच्युत छे, निरंश छे, निर्विकार छे; अखंड छे तेने विषे च्युत भाव आवेछे अने अंश अंशी भाव आवे छे माटे एवो दोश आववा देवो नहि. अने एम समजवुं जे ए भगवान जेवातो भगवानज छे, ने बिना जे प्रकृती पुरुषादिक छे, ते तो एना भक्त छे, ने एनुं ध्यान करे छे माटे ए भगवान रूप छे. जेम कोइ मोटा संत होय ने ते भगवाननुं ध्यान करता होय ने तेने भगवानरूप जाणे छे तेम ए प्रकृति पुरुषादिक पण भगवान रूप छे, अने ए सर्वथी पर जे पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण तेज वासुदेव, शंकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध रूपे थाय छे तथा रामकृष्णादिकनुं ग्रहण करे छे. ते ध्यान करवा योग्य छे एम समजे तो ए योग मार्ग ते अतिशे निर्विघ्न छे, ने श्रेष्ट छे. अने सांख्यवाळाछे तेमां ए दोष छे जे ए सांख्यवाळा होय, ते एम कहे छे जे अंतःकरणे करीने तथा ईंद्रिए करीने जे जे ग्रहण करवामां आवेछे ते सर्वे मीथ्या छे, ने अनुभवे करीने जे ग्रहण करवामां आवे छे ते सत्य छे, एवी रीते आकार मात्र ने मिथ्या करे छे. ते भेळे जीवना कल्याणने अर्थे प्रगट थया जे भगवान तेना रूपने पण मिथ्या करे छे, तथा अनिरुद्ध, प्रद्युम्न, संकर्षण, एमना रूपने पण मिथ्या करे छे, ने निर्गुण एवा जे वासुदेव तेनुंज ग्रहण करे छे एवो ए मोटो दोष छे, माटे ए सांख्यवाळा एम समजे

तो ठीक जे सांख्य विचारनुं ग्रहण करीने प्रकृती पुरुषथी जे जे उपन्युं तेने मिथ्या करीने पोताना आत्माने सर्वथी प्रथक शुद्ध ब्रह्म रूप मानीने ते पछे जिवना कल्याणने अर्थे प्रगट थया जे भगवान तेना रूपने सत्य जाणीने तेनुं ध्यान करवुं. एवी रीते ए बे प्रकारना जे विचार छे ते कोइक अम जेवा मोटा पासेथी शिखे त्यारे आवडे नहि. तो शास्त्रने भणे सांभळे पण आवडे नहि. अने छे तो एम जे प्रथम सांयख्य विचारे करीने जे ब्रह्म रूप थयो होय तेने अर्थे योगनो उपदेश छे ते कह्युं छे ॥ ब्रह्मभूतःप्रसन्नात्मानशोचतिनकांक्षति॥ समःसर्वेषुभूतेषुमद्भक्तिं लभतेपरां ॥ तथा ॥ आत्मारामाश्चमुनयोनिर्ग्रंथाअप्युरुक्रमे॥ कुर्वंत्यहैतुकींभक्तिमित्थंभूतगुणो हरिः ॥ परिनिष्ठितोपिनैर्गुण्यउत्तमश्लोकलिलया ॥ गृहीतचेताराजर्षेआख्यानंयदधीतवान् ॥ एवी रीते सांख्य वाळाने योगनी अपेक्षा छे कांजे ए सांख्य वाळे विचार करीने पोताना आत्माथी व्यतिरेक जे जे कांइ पंच इंद्रियुंने चार अंतःकरणे करीने भोगववामां आवे, एवा विषय भोगवे छे तेने अति तुच्छ जाण्या छे माटे ए कोइ पदार्थने विषे आश्रय पामे नहि तथा बंधाय नहि अने एनी पासे कोइ आवीने एम कहे जे आ पदार्थ तो बहुं रुडुं छे त्यारे तेने एम विचारे जे गमे तेवुं सारुं हशे पण इंद्रियो अंतःकरणे करीने ग्रहण करवामां आवे एवुं

हशे ने इंद्रियो अंतःकरणना ग्रहणमां जे आवे ते तो असत्य छे, नाशवंत छे एवी ए सांख्य वाळाने दृढ समजण रहे छे, ने पोताना आत्माने शुद्ध जाणे छे एवो जे सांख्य वाळो तेने योग्य मार्गे करीने भगवाननी जे उपासना, ध्यान, भक्ति ते करवां अने एम न करे तो एने विषे अति न्युनता कहेवाय छे. एवी रीते सांख्य शास्त्र तथा योगशास्त्र तेनो जे सनातन सिद्धांत छे ते अमे यथार्थ विचारीने कह्यो छे. अने जे आधुनिक योगवाळा ने सांख्यवाळा छे, तेमणे तो ए बेय मार्गने बगाडी नांख्या छे. जे योगवाळा छे, ते आकारनुं स्थापन करवा जाय छे त्यारे बिजा जिवना आकार तथा ब्रह्मा, विष्नु, शिवना आकार तथा राम कृष्णादिक अवतारना आकार ते सर्वने तुल्य पणे जाणे छे, अने सांख्यवाळा छे ते आकारनुं खंडन करे छे ते भेळे तिर्थ, व्रत, प्रतिमा, यम, नियम, ब्रह्मचर्यादिक धर्म, ब्रह्मा, विष्नु, शिव तथा राम कृष्णादिक अवतार ए सर्वनुं खंडन करे छे, माटे आधुनीक जे सांख्यवाळा ने योगवाळा ते बेय मार्गने मुकीने कुमार्गे चाल्या छे ते नारकी थाय छे. ॥ इति वचनामृतम् ॥ २ ॥ १२८ ॥

संवत १८७८ ना फागण शुदि ८ अष्टमीने दिवस श्रीजीमहाराज गाम श्रीपंचाळा मध्ये झिणाभाइना दरबारमां ढोलीया उपर विराजमान हता, अने धोळो फेंटो माथे बांध्यो

हतो, धोळो खेस पेर्यो हतो तथा धोळी पछेडी ओढी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंसनी सभा भराइने बेठा हता ॥ पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे सर्वे परमहंस मांहो-मांहि प्रश्न उत्तर करो. त्यारे मुनी बावे ब्रह्मानंद स्वामीने प्रश्न पुछ्यो जे, आवो सत्संगनो ने भगवाननो जोग मळ्यो छे ने बिजा विकार सर्वे टळी गया छे तथा सत्संगनो खप छे, तोपण मान इर्षा केम रही जाय छे? पछे एनो उत्तर ब्रह्मानंद स्वामीए करवा मांडयो पण थयो नहि. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे एवो जे छे तेमां बुद्धि नथी अने जे बुद्धिवाळो छे ते तो पोतामां जेटला अवगुण होय तेने जाणे तथा जेटला गुण होय तेने पण जाणे अने बिजामां जे गुण तथा अवगुण होय तेने पण जाणे. अने जे बुद्धिवाळो न होय ते तो पोतामां गुणज जाणे पण अवगुण होय तेने तो जाणे नहि. ने पोताने सनकादिक जेवो मोटो जाणे ने बिजा मोटा होय तेने पण पोताथि उतरता जाणे अने जे बुद्धिवाळो होय ते पोताना अवगुणने जाणतो होय जे मुजमां आटलो अवगुण छे. पछे तेनि उपर चाड राखिने ते अवगुणने टाळि नांखे तथा ते अवगुणने टाळवानि बिजा संत वार्त्ता करता होय तेने हितकर मानिने ग्रहण करे एवो होय तेने मान इर्षादिक कोइ अवगुण रहे नहि अने कोइकमां मोटी बुद्धि जणाति होय ने ते जो पोताना अवगुणने

चोजालि ज-
ने विचारता होय तो तेनी व्यवहारीक बुद्धि जाणवी ने ते-बुद्धि उपरांथ तो बहु
णाय पण एने बुद्धवाळो न कहेवाय तेनेतो आंते मुर्ख जाणवो. ने एनि ए बुद्धि पोताना मोक्ष
ना काममां आवे नहि अने थोडिक बुद्धि होय ने जो पोतामां अवगुण होय तेने जाणिने तेन
टाळ्यानो उपाय करेतो एनि थोडि बुद्धिपण मोक्षने उपयोगी थायछे एनेज बुद्धिवाळो कहिये.
अने ने पोतामां कोइवार अवगुण परठे नहि ने गुणज परठे तेने मुर्ख कहिये, ने पोतामां अ-
वगुण परठे तेने बुद्धिवाळो कहिये. पछे श्रीजी महाराजे आज्ञा करिजे कित्तन गाओ.॥सखि
आज मोहन दिठारे शेरिये आवतारे॥ ए कित्तन परमहंसगाववा लाग्या. त्यारे वळी श्रीजिम
हाराज बोल्या जे हवे कित्तन राखो अने आकित्तन गायां तेमां हेत बहु छे. ते हेतनो अमे
विचार करयो जे हेत मोटी वात छे ने हेते करिने भगवानने भजवा ए ठिकाछे पण सारिपेठे
विचारिने जोयुं त्यारे एम जणाणुं जे हेतछे ते भगवानिनि मायाछे केमजे स्त्रीयो परस्पर बोल-
ती होय,जोती होय, स्पर्श करती होय तेमां बीजि रितनुं हेतछे. अने पुरूष होय अने परस्पर
बोले जुवे स्पर्श करे तेमांपण बीजीरितनुं हेतछे अने पुरूष ने ते स्त्रीने जोतोहोय ने आलिंग
न करतो होय तेनेविशे जेवुं हेत थायछे ने ते स्त्रीमां पुरूषनुं मन आकर्षण थइजायछे तेवुं पु

रूप पुरूषमां नथी थातुं, तेथी स्त्रि होय ने पुरुषने जोती होय, आलिंगन करती होय, इत्या-
दिक पुरूषना संबंधे करीने स्त्रीने हेत जेवुं पुरूषमां थाय छे, ने तेनुं मन पुरूषमां समग्र पणे खें-
चाइ जाय छे. तेवुं स्त्रीने स्त्रीमां नथी थातुं, माटे जे थकी जगतनो प्रवाह छे, ने जिवने सं-
सृतिने बंधननी करनारी छे एवी जे भगवाननी माया तेज हेत रूप छे. पछे एम विचार थयो
जे शब्द, स्पर्श, रूप, रस ने गंध ए जे पंच विषय छे ते बिजे ठेकाणेथी मिथ्या करीने एक
भगवानमांज आत्यंतिक सुख जाणीने जोडया होय तो तो ठीक छे, ते माया नथी. पछे व-
ळी तेमां पण विचार थयो जे ए पण ठिक नहि, कांजे भगवानना रूप करतां अधिक रूप,
अधिक स्पर्श, अधिक रस अधिक गंध, अधिक शब्द ते बिजाने विषे जणाय तो भगवानने
मुकीने तेने विषे हेत थइ जाय. जेम सोळ हजारने एकसो ने श्री कृष्ण भगवाननी स्त्रियुं हती
ते जन्मांतरे अप्सराउं हती तेमणे ब्रह्मा पासे वर माग्यो जे हे महाराज अमे देव दैतने मनुष्य
ए सर्वनो स्पर्श कर्यो छे. पण जे नारायण पुरूष छे, तेनो पति भावे स्पर्श नथी कर्यो, माटे
एवी कृपा करो जे ए अमारा पति थाय. पछे ब्रह्माये कह्युं जे तमे तप करो तमारा पति ना-
रण थाशे. त्यारे तेमणे घणुं तप कर्युं. पछे तेमनी उपर अष्टावक्र ऋषी तथा नारद मुनी ते

पण प्रसन्न थया ने वर आप्यो, जे तमारा पति नारायण थाशे. एवी रीते जन्मांतरे घणुं तप करीनें श्रीकृष्ण भगवानने पामी हती.पण जो भगवान करतां सांबने विषे अधिक रूप दिठु तो तेमां मोह पामी गइयुं.माटे जेनी एकमतिरहेती नहोयतेने पंच इंद्रियुंना विषय सुख संबंधे करीने भगवानमांप्रिति करवीते ठिक नाहि. ने जेनी मती एकनी एक स्तर्क पणे रह्या करे तेने तो ठिक छे. अने जेने बुद्धि होय तेने भगवानमां हेत केम करवुं, तो जे चोवीस तत्व छे, ते थकी पोताना जीवने प्रथक जाणवो ने ते जिवने विषे खुति रही जे पंच ईंद्रियोनी वृत्तियुं तेने उपाडी नांखीने ईंद्रियुंनी वृत्ति विना जिव सत्तापणे रह्या थका निर्गुणपणे करीने जेटलुं भगवानमां हेत थाय तेटलुं करवुं. ते निर्गुणपणुं ते शुं जे दश ईंद्रियुं ते रजोगुणनी संपतिछे, अने अंतःकरण ने देवता ते सत्वगुणनी संपतीछे, अने पंच भूत ने पंच विषय ते तमोगुणनी संपती छे तेवी त्रण गुणनी संपतीयुंने त्रण गुण तेने प्रथकमांनीने केवळ जिव सत्ताए करीने रहे तेने निर्गुण कहिये. एवो निर्गुण थइने भगवानमां हेत करवुं ते कह्युं छे जे ॥ नैर्गुणस्थावरमंतेस्मगुणानुं कथने हरेः ॥ तथा ॥ परि निष्टितोपिनैर्गुण्ये उत्तम श्लोक लीलया ॥ गृहितचेताराजर्षेआख्यानंयदाधितवान् ॥ अने एवी रीतना जे ज्ञानी छे ते क्षेत्र ने क्षेत्रज्ञना रूपने जाणीने पोते क्षेत्रज्ञरूपे

... भगवानमां प्रीत करे छे, ते क्षेत्र तो शुं तो स्थुल, सुक्ष्म, ने कारण ए त्रण देह तथा जाग्रत स्वप्न ने सुषुप्ती ए त्रण अवस्था ए सर्व क्षेत्र छे ने ते क्षेत्रने पोताना आत्माथी प्रथक जाणे छे जे ए मारे विषे कोइ दिवस होय नहि हुं तो एनो जाणनारो छूं ने अति शुद्ध छूं, अलिंग छूं, चैतन्य छूं, अने ए क्षेत्र तो अति मलिन छे, जडछे, नाशवंत छे, एम दृढपणे समजीने एम सर्वथा वैराग्यने पामीने स्वधर्म सहित जे भगवानने विषे भक्ति करवी तेने एकांतिकनी भक्ति कहिए. अने एने ज्ञानी कहिए, अने जे ए ज्ञानी ते सर्वथी श्रेष्ठ छे. ते भगवाने कह्युं छे जे ॥ तेषांज्ञानी नित्ययुक्त एक भक्तिर्विशिष्यते ॥ उदाराःसर्वएवैते ज्ञानी त्वात्मैवमेमतम् ॥ एम समजीने इंद्रियो, अंतःकरण, विषय, ए सर्वनां जे मूळ ते जिवमांथी उखेडी नाखीने भगवानने विषे हेत करवुं एज ठिक छे. अने ज्यां सुधी एनां मूळ उखाडी नाख्यां न होय त्यां सुधी ए इंद्रियो अंतःकरणे करीने भगवाननां दर्शन, स्पर्शनादिक रूप जे काम ते लेवुं पण एने पोताना हेतु न मानवां,वैरी मानवां,ने एनो गुण न लेवो जे ए भगवाननी भक्तिने विषे उपगार करे छे. केमजे नेत्रे करीने भगवाननां दर्शन थाय छे, श्रवणे करीने भगवाननी कथा संभळाय छे, त्वचाए करीने भगवाननो स्पर्श थाय-छे, नाशीकाए-करीने भगवाननी

माळा ने तुळशीनो सुगंध लेवाय छे; ने मुखे करीने भगवाननां कथा कित्तंन कहेवाय छे,तेथी
जिव्हाए करीने भगवाननो प्रसादीनो रस लेवाय छे, इत्यादिक भगवाननी भक्ति
ने विषे उपयोगी छे एम समजिने एनो गुण न लेवो एनो विश्वास न करवो, एने तो वेरिज
जांणवां; कांजे शुं जांणिये ए भगवानना दर्शन स्पर्शनादिके करीने सुख मानता थका स्त्रिया
दिकना दर्शन स्पर्शनादिके करीने सुख मनावी देतो भुंडुं थाय. माटे ए पंच इंद्रियुं रूप शत्रू
ने केदमां राखीने भगवाननी भक्ति रूप काम लेवुं. जेम कोई राजाये पोताना शत्रूने पकड्यो
होय तेने बेडिमां बांधी राखीने काम करावे पण छूटो मेले नहि, ने विश्वास पण करे नहि.
अने जो तेने छूटो मेले ने विश्वास करे तो ते राजाने ते वेरि निश्चे मारे. तेम जो इंद्रियो रूप
वेरिनो विश्वास करे ने छूटा मुके ने केदमां न राखे तो एने निश्चे भगवानना मार्ग थकी पाडे
नांखे छे,माटे एनो विश्वास न करवो. अने वळी जेम अंगरेज कोइक गुनगारने पकडेछे,त्यारे
तेने पांजरामां उभो राखीने पुछेछे पण छूटो मुकतो नथी. ने तेनो विश्वास करतो नथी तेम ए
इंद्रियो अंतःकरणने पंच वर्त्तमानना नियम रूप जे पांजरु तथा वेडी तमां राखीने भगवाननी
भक्ति करावबी पण एने विषे गुण न लेवो शत्रु भावज राखवो. अने जो एमने भक्तिमां उपयो-

गी माने;- ने हेतु माने ने एनो गुण लेतो भगवानना दर्शन स्पर्शनादिकने विषे सुख मनावते थके नो स्त्रीयादिकने विषे कांइ सुख मनावी दे तो एनुं कर्युं कारव्युं सर्वे व्यर्थ थइ जाय. जेम जाजो दारुनो ढगलो होय ने तेमां एक आग्नीनो तणखो पड्यो होय तो ते दारु सर्वे भस्म थई जायछे, तेम एनुं कांइ ठेकाणुं रहेतुं नथी.माटे केवळ आत्मारूप थये थके जे भगवानने विषे हेत थाय ते ठीक छे. पण अमारो सिद्धांत छे एवी रीते जे भगवानमां हेत करेछे ते अमने गमेछे. अने एम पण विचार करवो जे भगवानमां जेवुं सुखछे तेवुं बिजे नथी, अने जेवो भगवानना स्पर्श छे तेवो बिजे नथी, अने जेवो भगवानमां सुगंध छे तेवो बिजे नथी, अने भगवानना श्रवणमां जेवुं सुख छे तेवुं बिजे नथी, अने जेवो भगवानमां रस छे तेवो बिजे नथी, एम ए इंद्रियो अंतःकरणने लोभ देखाडीने बिजा विषयथी पाछां वाळवां ए पण समजण ठीक छे. त्यारे स्वयंप्रकाशानंद स्वामीये प्रश्न पुछ्यो जे हे महाराज आ जे सर्वे विचार ते किया स्थानके रहीने करवो? त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे पोताना हृदयने विषे एम विचार करे जे स्थुल देह, सुक्ष्म देह, कारण देह, ए हुं नहि. ने जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, ए त्रण अवस्था हुं नहि ने पंच ज्ञान इंद्रियो ने पंच कर्म इंद्रियो ने चार अंतःकरण ने एमना देवता ए सर्वे हुं नहि.हुं तो ए सर्वथी

प्रथक छुं, चैतन्य छुं ने भगवाननो भक्त छुं ने इंद्रियो अंतःकरण काइक चाळा करे तो एने कहेवुं जे केम सारे ते एक भगवाननुं रूप जोवुं छे के त्रिजानुं पण जोवुं छे? ने केवळ भगवाननो शब्द साभळवो छे तथा गंध लेवो छे के त्रिजानो पण शब्द सांभळवो छे. ने गंध लेवो छे? अने जो भगवान विना विषयमां तुं जाइश तो तारे मारे शुं छे, भाइ तुं कोण ने हुं कोण, तारे मारे लेवुं देवुं नथी, तमे करशो ते तमे भोगवशो. एम इंद्रियो अंतःकरणने काहिने पछे भगवाननी प्रार्थना करवी. जे हे महाराज हे स्वामीन्, हे भक्तवत्सल, हे दयानिधि आ इंद्रियो अंतःकरणनो वांक छे. ने हुं तो एथी नोखो छुं, ने एतो मारो शत्रु छे. माटे ए थकी मारी रक्षा करज्यो. एम निरंतर प्रार्थना कर्यां करवी ने पोताने क्षेत्रज्ञ, चैतन्य ब्रह्म रूप मानीने भगवानने विषे हेते भक्ति करवी. ॥इति वचनामृतम्॥ ३॥१२९॥

संवत १८७८ ना फागण वदि ३ त्रिजने दिवस श्रीजी महाराज गाम श्री पंचाला मध्ये झिणाभाइना दरबारमां ओटा उपर ढोलीयो ढळावीने विराजमान हता अने धोळो फेंटो मस्तक उपर बांध्यो हतो तथा धोळो खेस पहेर्यो हतो, तथा झीणी धोळी पछेडी ओढी हती, ने हस्त कमळने विषे तुळसीनी माळा फेरवता हता. अने पोताना मुखारविंदनी

आगळ पर्महंसनी सभा तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे सर्व पर्महंस परस्पर प्रश्न उत्तर करो.त्यारे मुनी वावे ब्रह्मानंद स्वामीने प्रश्न पुछयो जे प्रथम तो भगवाननो निश्चय होय ने भजन स्मर्ण करतो होय ने पछे भगवान-नां मनुष्य चरित्र देखीने ते निश्चयमां संषय थइ जाय छे तेनुं शुं कारण छे? पछे ए प्रश्ननो उत्तर ब्रह्मानंद स्वामी करवा लाग्या पण थयो नहि. त्यारे श्रिजी महाराज जाजीवार सुधी विचारी रह्या ने पछे बोल्या जे ए प्रश्नोनो उत्तर अमे करीये छीए. जे वेद, पूराण महाभारत स्मृतियुं,इत्यादिक जे शास्त्र तेने विषे भगवाननुं सनातन अनादि दिव्य एवुं जे मूळ रूप पोताना अक्षर धाममां रह्युं छे ते कह्युं छे. ते भगवान केवा छे तो आ चक्षु इंद्रिये करीने दिठामां आवे छे जे यतकिंचित रूप ते जेवा नथी. अने श्रवणे करीने सांभळ्यामां आवे छे जे, कांइ शब्द मात्र ते जेवो ए भगवाननो शब्द नथी. अने त्वचाए करीने स्पर्शमां आवे छे, जे स्पर्श ते जेवो एनो स्पर्श नथी, अने नासीकाए करीने सुंघ्यामां आवे छे जे, सुगंध ते जेवो एनो सुगंध नथी, अने जिव्हाए करीने वर्णन कर्यामां आवे एवा पण ए भगवान नथी. अने मनना संकल्पमां आवे एवा नथी, तथा चितना चितवनमां आवे एवा नथी, तथा बुद्धिना नि-

वच

श्वयमां आवे एवा नथी, तथा अहंकारे करीने अहंपणुं धराय एवा नथी, जे ए भगवानने हुं
हुं ने ए मारा छे. एवी रीते इंद्रियो, अंतःकरणने, अगोचर ए भगवान रह्या छे, अने ए
भगवाननुं जेवुं रूप छे तेवुं आ ब्रह्मांडमां ब्रह्मादिक स्तंबपर्यंत कोइनुं रूप नथी, जे जेनी एने
उपमा देइए. तथा एना जेवो शब्द छे, तेवो बिजो आ ब्रह्मांमडमां कोइनो शब्द नथी, जे जे
नी एने उपमा देइए. अने ए भगवानने जेवो सुगंध छे, तेवो आ ब्रह्मांडमां कोइनो सुगंध न-
थी जे जेनी एने उपमा देइए.तथा ए भगवानने जेवो स्पर्श छे, तेवो आ ब्रह्मांडमां कोइनो
स्पर्श नथी जे जेनी एने उपमा देइए तथा ए भगवानमां जेवो रस छे, तेवो आ ब्रह्मांडमां को-
इनो रस नथी, जे जेनी एने उपमा देइए.अने ए भगवाननुं जेवुं धामछे,तेवुं स्थानक आ ब्रह्मा-
डमां कोइ नथी, जे जेनी एने उपमा देइए. ते समाद्विप ने नवखंडमां जे जे स्थानक छे, तथा
मेरु उपर घणीक शोभाए जुक्त ब्रह्मादिकनां स्थाकनक छे, तथा लोकालोकचलने विषे घणांक
स्थानक छे, तथा इंद्र, वरुण, कुबेर, शिव, ब्रह्मानां जे स्थानक छे, तथा त्रिडां पण घणांक
स्थानक छे, ए सर्वे मांहेलुं एवुं एके स्थानक नथी जे जेनी भगवानना धामने उपमा थाय.अने
ए भंगवनना धामने विषे रह्या जे भगवानना भक्त छे तेने जेवुं सुख छे, तेवुं आं ब्रह्मांडमां कोइ

सुख छे नहि, जे जेनी एने उपमा देइए. अने ए भगवाननो जेवो आकारछे,तेवो आ ब्रह्मांडमां कोइनो आकार नथी,जेनी एने उपमा देइए.केम जे आ ब्रह्मांडमां जेटला पुरुष प्रकृति थकी उत्पन्न थया जे आकार ते सर्वे मायीक छे, अने भगवान छे ते दिव्य छे ने अमाइक छे. ए बेयने विषे अतिशे विलक्षणपणुं छे ते सारु एने ने एने सादृश्यपणुं केम थाय!जेम मनुष्यने कहिए जे आ माणस भेंश जेवो छे, सर्प जेवो छे, चरकलो जेवो छे, गधेडा जेवो छे, कुतरा जेवो छे, कागडा जेवो छे, हाथी जेवो छे, एवी उपमा मनुष्यने संभवे नहि. केम जे मनुष्य थकी ए बिजा जे सर्वे ते वीजाती छे. अने मनुष्य मनुष्यमां पण अतिशे सादृश्यपणुं नथी, जेनी उपमा एम देइए जे आ ते आ जेवोज छे. अने जो ते ते जेवोज होय तो तेनी ओळखाण केम थाय! माटे मनुष्य मनुष्यस जाति छे, तेने विषे पण सादृश पणुं असंय छे नहि. जुवोने आ भगो मूळो बे सरखा कहेवाय छे पण झाझा दिवस भेगा रहीये तो ओळखाइ जाय जे आ भेगोछे ने आ मूळोछे. माटे जो विलक्षणता न होय तो ओळखाय केम ? माटे मनुष्य मनुष्यमां पण अति सादृश्यपणुं नथि तो मायीक अमायीकने विषे सादृश्यपणुं केम आवे!जे जेनी उपमा भगवानने देइये तथा भगवानना धामने दे

इए. कांजे ए भगवान छे ते इंद्रियो अंतःकरणने अगोचर छे, एम सर्व शास्त्रमां कह्युं छे.
जे ए भगवान ज्यारे जिवने पोतानुं दर्शन देवाने नइछे, त्यारे तो आवीरिते दिव्य रूप अगो-
चर थका पोताना अक्षर धामने विषे रह्याछे,अने ए भगवानमाहाराजा धिराज छे.ने दिव्य रूप
एवीं जे असंख्य समृद्धि तथा असंख्य पार्षद तेणे युक्त अने अनंत कोटि ब्रह्मांडना पतिछे. जे
म आलोकमां कोइक मोटो चक्रवर्ति राजा होय तेनुं सूर्यना उदय अस्त सुधि राज्य होय अ
ने तेज राजा पोताना तपने बळे करीने देवतानां जेवां ऐश्वर्यने पाम्यो होय,तो स्वर्ग मृत्युने पा-
ताल ए त्रिलोकिना राज्यने करतो होय,जेम अर्जुन हता ते एने ए देहे करिने स्वर्गने विषे इं-
द्रासनने उपर केटलाक वरस सुधि रह्या, तथा नहुष राजा पण इंद्र थयो हतो. एवो जे प्रता-
पी चक्रवर्त्ति राजा तेने घेर जेटलां गाम छे तेनी गणती थाय नहि एतो असंख्य छे, तथा
गाम गामना पटेल तेनी पण गणती नथी. अने ते गाम गामना असंख्य पटेल्ल ते एना दरबा-
रमां अरज करवा आवता होय, अने ते राजाना धन, माल, स्थानक,समृद्धि ते पण गणतीमां आवे
नहि. तेम ए भगवान असंख्य कोटी ब्रह्मांड रूप गाम तेना राजा धिराजछे अने ए ब्रह्मांड रू-
प जे गाम तेना मुख्य पटेल तो ब्रह्मा, विष्णु ने शिव छे. जेम एक गाममां एक पटेल मोटो

होय तेने ते गामनी सर्वे प्रजा ते आवीने नमे; ने आज्ञामां रहे, ने ते पटेल राजाने नमे, तेम ब्रह्मांड ब्रह्मांड प्रत्ये ब्रह्मा, विष्णु शिव छे ते मोटेरा छे, ने बिजा जे ब्रह्मांडमां देव, दैत्य, मनुष्य, ऋषी, प्रजापति ते एने भजे छे ने आज्ञामां रहेछे. ने ए ब्रह्मा विष्णु शिव ते भगवान पुरुषोत्तमने भजेछे ने आज्ञामां वरते छे ते ए ब्रह्मांड ब्रह्मांडना जे ब्रह्मा विष्णु ने शिवते ए भगवाननी प्रार्थना करेछे जे हे महाराज कृपा करीने तमे अमारा ब्रह्मांडमां पधारो. जेम कोइ गामनो पटेल होय ते चक्रवर्त्ति राजा आगळ जइने प्रार्थना करे जे हे महाराज हुं गरीबछुं तेम मारे घेर पधारो हुंथी जेवी तमारी चाकरी बनी आवशे तेवी करीश.तेम ब्रह्मा विष्णु शि ते एभगवाननी प्रार्थना करेछे जे हे महाराज तमे अमने दया करी दर्शन द्यो ने अमारा ब्रह्मांडमां पधारो. त्यारे ए जे भगवान ते ब्रह्मांडमां देहनुं धारण करेछे ते ज्यां जेवुं कार्य त्यां तेवा देहनुधारण करे छे ने ते रीतेज वरते छे. जो देवमां देहनुं धारण करे छे तो देवना जेवी चेष्टा करेछे. तथा पशुना देहनुं धारण करे छे, त्यारे ते पशुनी पेठेज वरते छे. जेम वराह रूप भगवाने थयुं त्यारे सुंघीने पृथ्वीने खोळी काढी, तथा हयग्रीव रूपे थया त्यारे घोडानी पेठे फुंफाडा मारवा मांडया, तथा मच्छ कच्छादिक जळजंतुनो देह धारण कर्यो त्यारे जळमांज फर्या पण

प्रथवीमां न फर्या. तथा नृसिंह रूपे थया त्यारे सिंहनी पेठेज वरत्या पण मनुष्यना जेवी चेष्टा न करी. अने ए भगवान मनुष्यना देहने धारण करे छे त्यारे मनुष्यना जेवीज क्रिया करे छे. ते ज्यारे सत्युग होय त्यारे मनुष्यने लाख वरसनी आवरदा होय त्यारे ए भगवान पण लाख वरसज देह राखे. अने सतयुगना माणस मनोवांछित भोगने भोगवे त्यारे ए भगवान पण तेमज भोगने भोगवे, पण अधिकपणे न वरते. अने त्रेतायुगमां देह धारण करे त्यारे माणसने दश हजार वरसनी आवरदा होय त्यारे भगवान पण तेटला वरस देह राखे. ने द्वापरयुगमां हजार वरसनी आवरदा होय ने दश हजार हाथीनुं बळ माणसमां होय छे त्यारे भगवाननुं पण एटलुं बळने एटली आवरदा होय छे. अने कलीमां देह धारण करे त्यारे कली प्रमाणे आयुंष्य ने बळ तेनुं भगवान धारण करे छे. अने जेम बाळक गर्भमां आवे ने ते गर्भ वृद्धिने पामे पछे जन्मे छे. ने बाळ, यौवन, वृद्ध अवस्था थाय छे ने मृत्युने पामे छे तेमज भगवान पण एवीज मनुष्यनी चेष्टा करे छे. अने जेम मनुष्यमा काम, क्रोध, लोभ, स्वाद, मान, स्नेह, मद, मच्छर, इर्षा, द्वेश, राग,मोह, सुख, दुःख, भय, निर्भय, सूरविरता, कायरता, भुख, तरश, आशा, तृष्णा, निंद्रा; पक्षपात, पारकुं, पोतानुं. त्याग, वैराग्य, इत्यादिक स्वभाव छे.

तेम तेवाज ए सर्वे स्वभाव मनुष्य देहने भगवान धारे त्यारे तेमां जणाय छे. ते ए मनुष्य स्वरूप पण भगवाननुं सर्वे शास्त्रमां वर्णन कर्युं छे. अने मूळ जे दिव्य रूप छे तेनुं पण वर्णन कर्युं छे, ते ए बेय रूपनुं जेणे यथार्थ श्रवण मनन करीने दृढ निश्चय कर्यो होय तेने तो कोइ रीते संशय थाय नहि. अने जेने आवी रीतनी समजणमां कसर होय तेने भगवानमां संशय थाय छे. अने एज दिव्य रूप एवा भगवान मनुष्यना देहनुं धारण करे छे, त्यारे मनुष्यना जेवा स्वभावे जुक्त वर्तता होय पण जे बुद्धिवान होय तेने एम जणाय खरुं जे एमां काम छे ते बिजा मनुष्यना जेवो नथी, तथा क्रोध, लोभ, स्वाद, मान, इत्यादिक मनुष्यना स्वभाव ते ए भगवानमां छे, पण बिजा माणस जेवातो नथी, एमां कांइक दिव्यभाव छे.ते बुद्धिवानना जाण्यामां आवे छे तेणे करिने भगवनपणानो निश्चय करे छे.जेम शंकराचार्ये शृंगाररसनि वार्त्ता जाण्याने अर्थे राजाना देहमां प्रवेश कर्यो हतो त्यारे ते राजाना जेवा सर्वे शृंगारादिक भावने देहने चेष्टा ते हति. पण ते राजानि राणि बुद्धिवाळि हति,तेणे एम जाण्युं जे मारा धणिमां आवो चमत्कार नोतो, माटे आ देहने विशे कोइक बिजे जीवे प्रवेश कर्यो छे. तेम मनुष्यरूप एवा जे ते भगवान तेने विशे दिव्यभाव ज-

णायं छे तेणे करिने भगवानपणानो निश्चय थाय छे. त्यारे तमे कहेशो जे कांइक दिव्यभाव
जाण्यामां अव्यो तेणे करिने मनुष्यने भगवान पणानो निश्चय थयो त्यारे घणो दिव्यभाव जणावे
तो तो बहु माणसने निश्चयथाय,तो एनुं तो एम छे जे आ सूर्य छे तेने सर्व शास्त्रमां कह्याछे
जे नारायणछे ने ते ए सूर्य सर्व मनुष्यने दृष्टि गोचर पण छे ने नित्ये एनुं दर्शन मनुष्य मात्र
करे छे,तोपण एने दर्शनेकरिने मनुष्यने पोतानाकल्याणनो निश्चय नथि थातो जे मारुं कल्या
ण थयुं. अने मनुष्यपणे रह्या जे,राम कृष्णादिक अवतार तथा नारद, शुकादिक संत तेनां
दर्शने करीने मनुष्यने एम निश्चय थाय छे जे मारु कल्याण निश्चे थयुं ने हुं कृतार्थ थयो छुं.
ने ते भगवानने संत तेमां कांइ प्रकाश छे नहि, दिवो करीए त्यारे तेनां दर्शनथाय छे. तोपण
एवो'कल्याणनो निश्चेय थाय छे. तेथी अग्नि छे ते पण साक्षात भगवानछे कांजे भगवाने कह्युं
छे ॥ अहंवैश्वानरोभूत्वाप्राणीनां देहमाश्रितः ॥ प्राणापानसमायुक्तःपंचाम्यन्नंचतुर्विधं ॥एवो
जे अग्नि तेनां पण सर्वने दर्शन छे. पण मनुष्यने कल्याणनो निश्चय थातो नथी, अने भग-
वान ने संतने दर्शने करीने थाय छे तेनुं शुं कारण छे जे मनुष्यने ने सूर्य अग्निने विजातीपणुं
छे माटे एने दर्शन करीने कल्याणनो निश्चे नथि थातो, कांजे ए अग्निनो स्पर्श करे तो व-

वच. ळी मरे तथा सूर्यछे तेने कुंताजीये दुर्वासाना आपेल मंत्रे करिने तेडया त्यारे ते सूर्य कुंताजी पासे आव्या ते मनुष्य रूपे जेवां कुंताजी हतां तवाज सूर्य थइने आव्या त्यारे तेना अंगसंगनुं सुख आव्युं ने कर्ण रूप गर्भ रह्यो. पण जेवा सूर्य प्रकाशवान छे, तेवा प्रकाश सोता आव्या होत तो कुंताजी बळी मरत ने स्पर्शनुं सुख पण न आवत तथा सत्राजित यादव पासे सूर्य आवतां ते पण माणस जेवा यइने आवता. अने ज्यारे ए सूर्य कुंताजी पासे तथा सत्राजीत पासे आव्या त्यारे शुं? आकाशमां नोता. आकाशमां पण हता, ने बिजे रूपे एना एज सूर्य कुंताजीने सत्राजीत पासे आव्या. अने जेवो सूर्यनो प्रकाश छे ते सर्व एमां छेखरो पण तेनो संकोच करिने माणस जेवा थइने आव्या छे, तेम ए जे भगवान छे ते पोते पोताना दिव्य भाव सोताज जीवने जो दर्शन आपे तो मनुष्यने ठिक न पडे, ने एम जाणे जे आते शुं भुत हशे के शुं हशे? माटे ए भगवान पोताना ऐश्वर्यनो सकोच करीने मनुष्य जेवाज थइने दर्शन आपे छे, ने पोते पोताना धाममां पण विराजमान छे, त्यारे ते मनुष्यने दर्शनमां स्पर्शमां तथा नव प्रकारनी भक्ति करवामां आवे छे. अने जो भगवान मनुष्य जेवा न थाय, ने दिव्यभावे वर्त्ते तो मनुष्यने पोतामां हेत-थाय नहि ने सुवाण्य न पडे. शा माटे तो मनुष्य मनुष्यने विपे

हेत थाय छ ने सुवाण्य थाय छे, पण पशुने ने मनुष्यने हेत सुवाण्य थाती नथी, अने पशुपशुने परस्पर हेतने सुवाण थाय छे केम जे सजाती सजातीमां हेत थाय छे, पण विजातीमां थाय नहि. तेम भगवान पोताना दिव्यभावनो संकोच करीने पोताना भक्तने पोतामां हेत थाय ते सारू माणस जेवा थइने भगवान आवे छे. पण दिव्यभाव जणावता नथी. ने दिव्यभाव जणावे तो विजातापणुं थाय. माटे भक्तने पोतामां हेतने सुवाण्य थाय नहि. ते सारू मनुष्य रूप ए भगवान थाय छे, त्यारे पोतानो दिव्यभाव छे तेने छपावी राखवो तेउपरज पोतानी दृष्टी रहे छे, अने छपावते छपावते कदाचित पोते कांइक कारजमां उतांवळा थइ जाय छे, त्यारे दिव्यभाव जणाइ आवे छे, ने क्यारेक पोते पोतानी इच्छाए करीने पण पोताना कोइ भक्तने जणावे छे. जेम श्रीकृष्ण भगवान भिस्मने मारवाने उतावळा थया त्यारे मनुष्य भाव भुली गया, ने पोतामां दिव्य भाव आव्यो तेणे करीने पोताना भारने पृथ्वी सहन करवा समर्थ न थइ. तथा अर्जुनने दिव्यभाव देखाड्यो, ते पोतानी इच्छाए देखाड्यो, पण ते दिव्य भावे करीने अर्जुनने सुख न थयुं ने बहु व्याकुळ थइ गया. पछे श्रीकृष्ण भगवाने पोतानुं मनुष्यपणे दर्शन अर्जुनने आप्युं त्यारे अर्जुनने सुख थयुं त्यारे कह्युं जे ॥दृष्ट्वेदंमानुषंरूपंतवसौम्यंजनार्दन ॥

इदानिमस्मीसंवृत:सचेता:प्रकृतिंगत: ॥ माटे मनुष्यपणे करीने भगवान वरते तोज जिवने सानुकुळ पडे नहि तो न पडे ते सारु ए भगवान मनुष्यपणे वरते छे. त्यारे जे आवी रीते नथी, समजतो तेने मनुष्य भाव देखीने अवळुं पडे छे. अने जो ए भगवान दिव्यभावेज वरतेतो मन वाणीने अगोचर होय ते जिवना जाण्यामां आवे नहि. माटे ए बे प्रकारे भगवानने शास्त्रमां कया छे. एवी रिते जेणे यथार्थ जाण्या होय तेने संशय न थाय अने जो एम न समजे तो संशय जरुर थाय. अने जे एम कहेछे जे, में भगवानने जाण्या छे ने मुने निश्चेछे ने जो ते आ वातने समज्यो नथि तो तेनो निश्चे काचो छे. जेम कोइक पुरुष श्लोक शिख्यो होय, तथा किर्त्तन शिख्यो होय, ने तेने पुछीये जे तुने आ श्लोक तथा किर्त्तन आवडयां त्यारे कहे जे आवडयां ने कंठथी मुखवडे कही देखाडे. पण पछे थोडाक दिवस थाय त्यारे ते श्लोक किर्त्तनने भुली जाय. त्यारे ए ते शुंजे एने ज्यारे ए शिख्यो हतो त्यारेज एने एटलो आवडयो नोतो. केम जे श्रवण मनने करीने एनो द्रढ अध्यास थइने एना जीवमां ए श्लोक किर्त्तन चोटी नोतो गयो अने कोइक वातनो बालकपणामांज एवो अध्यास थयो होय छे तो ए जवान थाय, वृद्ध थाय तोपणते वातनुं ज्यारे काम पडे त्यारे सांभरी आवेछे, तेम एणे भगवाननो

निश्चे करयो हतो त्यारेज एना निश्चयमां कसर रही गइ हती, अने जो कसर न रही गइ होत. ने आवी रीते प्रथमथीज श्रवण करिने तेनुं मनन करीने तेनो द्रढ अभ्यास एना जित्रमां थयो होत तो एने कोइ दिवस संशय थात नहि.॥इति वचनामृतम्॥४॥२३०॥

संवत १८७८ ना फागण वीद ८ अष्टमी ने दिवस श्रीजी महाराज गाम श्री पंचाला मध्ये झिणाभाइना दरबारमां ओटाने विपे ढोलीया उपर विराजमान हता अने धोळो खेस पहेर्यो हतो, अने गरम पोसनी राती डगली पहेरी हती. ने मस्तक उपर धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती ने पोताना मुखारविंदनी आगळ पर्महंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ॥ पछे स्वयंप्रकाशानंद स्वामीये प्रश्न पुछयुं जे किये ठेकाणे मान सारुंछे, ने किये ठेकाणे सारुं नथी, ने किये ठेकाणे निर्मानीपणुं सारुं छे, ने किये ठेकाणे सारुं नथी? पछे श्रीजी महाराज बोल्यां जे जो सत्संगनो द्रोहि होय ने परमेश्वरनुं ने मोटा संतनुं घसातुं बोलतो होय तेनी आगळ तो मान राखवुं तेज सारुं छे. अने ते घसातुं बोले त्यारे तेने तिखाबांण जेवुं वचन मारवुं पण विमुखनी आगळ निर्मानी थावुं नहि तेज रुडुं छे. अन भगवानने भगवानना संतनी आगळ तो जे मान राखवुं ते सारुं नथी ने ते-

नी आगळ तो मानने मुकीने दासानुदास थइने निर्मानीपणे वरतवुं तेज रुडुं छे. ॥इति व
ना मृतम् ॥५॥१-३१॥

संवत १८७८ना फागण वदी ९ नवमीने दिवस रात्रीने समे श्रीजी महारा
गामं श्री. पंचाला मध्ये झिणाभाइना दरबारमां ओटा उपर ढोलीयो ढळावीने विराजम
हता, ने मस्तक उपर धोळो फेंटो बांध्यो हतो अने धोळे अंगरखे सहित गरम पोसनी र-
ती डगली पहेरी हती अने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी पछेडी ओढी हती ने पोता-
मुखारविंदनी आगळ पर्महंस तथा देश देशना हरीभक्तनी सभा भराइने बेठी हती पछे श्रीज
महाराज बोल्या जे अमे कांकीवार सुधी विचार कर्यो ने सर्व शास्त्रमां नजर फेरवीने जो
सारे एम जणाणुं जे श्री कृष्ण जेवो अवतार सर्व शक्तिये जुक्त बिजो कोइ नथी थयो. के-
जे बिजा जे सर्व पोतानी अनंत मूर्त्तियुं भिन्न भिन्न पणे रही छे, ते सर्वनो भाव श्री कृष्ण भ-
गवाने पोताने विषे देखाड्यो. केवी रीते तो प्रथम पोते देवकी थकी जन्मया त्यारे शंख, चक्र
गदा, पद्म,धारीने चतुर्भुज रूपे दर्शन दिधुं तेणे करीने लक्ष्मी पति जे वैकुंठनाथ तेनो भाव पो-
तामां जणाव्यो. तथा माता जसोदाने पोताना मुखमां विश्वरूप देखाडयुं तेणे करीने सहस्र

शिर्पा पणे करीने अनिरुद्ध पणुं पोताभा जणाव्युं, तथा अक्रूरने जमुंनाना धरामां दर्शन दिधां, तेणे करीने शेपशायी पणुं जणाव्युं तथा अर्जुनने रणसंग्राममां विश्वरूप देखाडयुं जे ॥ पश्यमेपार्थरूपाणीशतशोथसहस्त्रशः ॥ एवी रीते अनंत ब्रह्मांड देखाडीने पुरुपोत्तम पणुं जणाव्युं. तथा पोते श्री कृष्णे कहुं जे ॥ यस्मातक्षरमतितोहमक्षरादपिचोतमः ॥ अतोस्मिलोकेवेदेचप्रथितःपुरुपोत्तमः ॥ एवी रीते पोते पोतानुं पुरुपोत्तम पणुं जणाव्युं, तथागोलोक वासी ने राधीका सहित श्री कृष्ण ते तो पोतेज हता. अने ब्राह्मणना बाळकने लेवा गया, त्यारे अर्जुनने पोतानुं भुमा पुरुष रूपे दर्शन कराव्युं. तथा श्वेतद्वीप वासुदेव तेणे तो पोतेज ए अवतार धार्यो हतो. तथा नरनारायण तो समग्र भारतने विपे तथा भागवतमां ए श्री कृष्णनेज कह्या छे, ते माटे ए श्री कृष्णना अवतारने विपे तो भिन्न भिन्न पणे रहीने जे ए भगवाननी मूर्त्तियुं तथा शक्तियुं ऐश्वर्य ते समग्र छे. माटे ए अवतार ते बहु मोटो थयो छे अने बिजी मूर्त्तिने विपे थोडुं ऐश्वर्य छे. ने एने विपे संपूर्ण ऐश्वर्य छे, माटे कृष्ण अवतार जेवो कोइ अवतार नथी. अने ए अवतार सर्वोपरी वर्त्ते छे. अने बिजा अवतारे करीने थोडी शक्ति जणवी छे ने आ अवतारे करीने संपूर्ण ऐश्वर्य शक्तियुं जणवी. माटे आ अवतार सर्वोत्कर्षपणे वर्ते छे, ए-

वी रीते जेनी प्रत्यक्ष श्री कृष्णना स्वरूपमां अचळ मति होय ने ए मति कोइ दिवस व्यभिचारने न पामती होय ने तेनी वर्ते कोइ कुसंगे करीने कदाचित्त कांइ अवळुं सवळुं वर्ताइ गयुं होय तो पण ते कल्याणना मार्गमांथी पडे नहि, एनुं कल्याणज थाय, माटे तमे सर्वे हरिभक्त छो. ते पण एवी रीते जो उपासनानी द्रढता भगवानने विषे राखशो तो कदाचित्त कांइक अवळुं वर्ताइ जाशे तो पण अंते कल्याण थाशे. एवी रीतनी वार्त्ताने सांभळीने सर्वे साधु तथा हरि भक्त ते श्रीजी महाराजने विषे सर्वे कारण पणुं जाणीने उपासनानी द्रढता करता हवा. इति वचनामृतम्॥ ६॥ १२२ ॥

संवत १८७८ ना फागण वदी ११ एकादशीने दिवस छघडी दिवस चढते श्रीजीमहाराज गाम श्री पंचाला मध्ये झिणाभाइना दरबारमां ओटा उपर ढोलीया ढळावीने विराजमान हता ने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो, तथा गरमपोसनी राती डगली पेहेरी हती तथा धोळो खेस पेहेर्यो हतो तथा धोळी झिणी पछेडी ओढी हती, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ पर्महंसनी सभा तथा देश देशना हरीभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. अने श्रीजीमहाराज नित्यानंद स्वामी पासे श्रीमद्भागवतना प्रथम स्कंधनी कथा करावता हता तेमां

॥ जन्माद्यस्य० ॥ ए श्लोक प्रथम आव्यो तेनो अर्थ करयो. त्यारे ॥ यत्रत्रिसर्गोमृषा ॥ एवुं जे ए श्लोकनुं पद तेनो अर्थ पोते श्रीजीमहाराज करवा लाग्या जे मायाना त्रण गुणनो सर्ग जे पंच भूत इंद्रियो, अंतःकरणने देवता ते भगवानना स्वरूपने विषे त्रिकाळमां छेज नहि: एम समजे तथा ए श्लोकनुं पद जे ॥ धाम्नास्वेनसदानिरस्तकुहकं ॥ कहेतां धाम जे पोतानुं स्वरूप तेणे करीनें टाळ्युं छे ए मायाना संकट रूप कपट जेणे एवुं भगवाननुं परम सत्य स्वरूप छे ते आत्यंतिक प्रलयने अंत्ये अक्षरधामने विषे जेवुं भगवाननुं स्वरूप अनंत ऐश्वर्य तेजे युक्त छे, तेवुं ने तेवुंज प्रत्यक्ष मनुष्य स्वरूप भगवानने विषे जाणवुं, तेणे तत्वे करीने भगवानने जाण्या कहेवाय, अने एज प्रत्यक्ष भगवानने मुढ जिव छे. ते मायीक द्रष्टिये करीने जुवे छे, त्यारे पोता जेवा मनुष्य देखे छे, ने जेम पोते जन्म्यो होय, बाळक थाय, जवान थाय, वृद्ध थाय, ने मरी जाय, तेमज भगवानने पण जाणे छे, अने ज्यारे भगवानना एकांतिक साधुना वचनने विषे विश्वास लावीने निष्कपट भावे करीने भगवानना चरण कमळने भजे छे, त्यारे एनी मायीक द्रष्टि मटे छे, ते पछे एनी ए जे भगवाननी मूर्त्ति तेने परम चैतन्य सतचित आनंदमय जाणे छे. ते पण भागवतमां कह्युं छे जे ॥ सवेदधातुःपदवींपरस्यदुरंतवीर्य

सारथांगपाणेः ॥ योमाययासंततयानुवृत्याभजेतत्पादसरोजगंधम् ॥ अने ए भगवानने विषे जे
वाळक जवान वृद्धपणुं देखाय छे तथा जन्म मरणपणुं देखाय छे तेतो एनी योग्य मायाये क-
रीने देखाय छे, पण वस्तुगत्ये तो भगवान जेवा छे तेवाने तेवाज छे. जेम नट विद्यावाळो होय
ते शस्त्र बांधिने आकाशमां इंद्रना शत्रु जे असुरना जोधा ते साथे वाढवा जाय पछे कटका
थैने हेठो पडे ने तेपछे ते कटकाने भेगा करिने ते नटनी स्त्री वळिमरे, पछे थोडिकवारे ते नट
पाछो आकाशमांथि हथियार बांधिने जवो हतो तेवोने तेवोज आवे ने राजापासे मोज मागे
ने कहे जे मारि स्त्री लावो एविरितनि जे नटनी माया तापण कोइने कळ्यामां आवति नथी
तो भगवाननि जोगमाया कळ्यामां केमआवे. अनेजे नटनि मायाने जाणतो होय तेतो एम जांणे
जे ए नटमर्यो पण नथि ने वळ्यो पण नथि जेवोछे तेवोनि तेवोजछे ते भगवानना स्वरूपने जे
तत्वे करिने समजतो होय तेतो भगवानने अखंड अविनाशि जेवाछे तेवाज समजे. जेम श्रीकृ-
ष्णभगवाने देह मुक्यो त्यारे ए भगवाननि पलीयुं जे रुक्मणि आदिक हतियुं ते ए भगवानना
देहने लेईने वळीमरियुं त्यारे अज्ञानी हता तेणे एम जांण्युं जे हवे एना सम थैगया ने जे ज्ञा
नी हता तेणे एम जाण्युं जे आहिंथि अंतरध्यान थैने विजे ठेकाणे जणांणा छे

एम भगवांनने अखंड समजे ते पोते श्रीकृष्णे कह्युं, जे अवज्ञांनंतिमां— मूढामानुं पीतनुंमाश्रीतं परंमभावमजांनतोममभुतंमहेश्वरं माटे मुर्ख होय ते जो भगवानने साकार समजे तो केवळ मनुष्य जेवा समजे ने जो निराकार समजेतो विजा आकारने जेम मायीक जांणे तेम भगवानना आकारने पण मायीक जांणे ने अरूप एवुं भगवाननुं स्वरूप कल्पे माटे ए वे प्रकारनुं मुर्खनेतो अवळुं पडेछे अने जो भगवांनने आकार न होयतो ज्यारे अत्यंतिक प्रलय हता त्यारे श्रुतिये एम कह्युं छे जे सएक्षत कहेतां ते भगवान जेते जोता हवा त्यारे जोयुं तो ए भगवाननुं नेत्र आदिक अवयवं सहित साकार एवुं जे दिव्यस्वरूप हतुज अने वळी एम पण कह्युं छे जे पुरूपेणात्मभूतेनावीर्यमाधत्तावीर्यवान एवि रीते पुरूप रूप थइने पुरूशोतम तेणे मायाने विशे वीर्यने धारण कर्युं त्यारे ए भगवान प्रथमज साकार हता अने ए जे पुरूपोत्तम नारायण ते कांइक राज्यने अर्थे पुरुप रूपे थाय छे त्यारे ए पुरुप छे ते पुरूपोतमना प्रकाशमां लीन थइ जाय छे. ने पुरुषोत्तमज रहे छे तेमज माया रूपे थाय छ. त्यारे मायापणुं पण पुरूपोत्तमना तेजमां लीन थइ जाय छे, ने ते रूपे भगवानज रहे छे, अने पछे ए भगवान महत्व रूपे थाय छे, ने तेमज महत्वमांथी थयां जे विजां तत्व ते रूपे थाय छे, अने पछे तत्वनुं

कार्य ने विराट ते रूपे थाय छे, तथा ते विराट पुरुषथी थया जे ब्रह्मादिक ते रूपे थाय छे, तथा नारद सनकादिक रूपे थाय छे. एवी रीते अनेक प्रकारना कारजने अर्थे जेने जेने विषे एक पुरुषोत्तमनो प्रवेश थाय छे तेने तेने पोताना प्रकाशे करीने लीन करी नांखीने पोतेज ते रूपे करीने सर्वोत्कर्षपणे विराजमान थका रहे छे, अने जेने विषे ते विराजमान रहे छे. तेना प्रकाशने पोते ढांकीने पोतानो प्रकाश प्रगट करे छे, जेम अग्नि लोढाने विषे आवे छे, त्यारे लोढानो जे शितळ गुण ने काळो वर्ण तेने टाळीने पोते पोताना गुणने प्रकाश करे छे. तथा जेम सूर्य उदय थाय छे, त्यारे तेना प्रकाशमां सर्व तारा, चंद्रमादिकनां तेज लीन थइ जाय छे, ने एक सूर्यनोज प्रकाश रहे छे. तेम ए भगवान जेने जेने विषे आवे छे, त्यारे तेना तेजनो पराभव करीने पोताना प्रकाशने अधिकपणे जणावे छे अने जे कारजने अर्थे पोते जेमां प्रवेश कर्यो हतो. ते कारज करी रह्या केडे तेमांथी पोते नोखा निसरी जाय छे, त्यारे ते पंडे जेवा होय तेवा रहे छे ने तेमां जे अधिक दैवत जणातुं हतुं, ते तो पुरुषोत्तमनुं हतुं एम जाणवुं. एवी रीते सर्वना कारण ने सदा दिव्य साकार एवा जे प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम नारायण तेनी मूर्त्तिने विषे साकार रसनी पेठे त्याग भाग समजवो नहि, ने जेवी मुर्त्ति दिठी होय तेनुंज ध्या

न, उपासना भक्ति करवी पण तेथी कांइ पृथक न समजवुं अने ते भगवानमां जे स्वभाव ज-णाय छे ते तो नटनी मायानी पेठे समजवो, ने जेने आवी रीते सममजे तेने ते भगवानने विषे कोइ रीते मोह थातो नथी. अने आ वार्त्ता छे ते केने समज्यामां आवे छे तो जेने एवी दृढ प्रतिति होय जे आत्यंतिक प्रलय थाय छे. त्यारे पण भगवानने भगवानना भक्त ते दिव्य सा कार रूपे करीने अक्षर धामने विषे दिव्य भोगने भोगवता थका रहे छे, अने ते भगवाननुं रूप ने भगवानना भक्तनां रूप ते अनंत सूर्य चंद्रना प्रकाश सरखा प्रकाशे जुक्त छे, एवी जाणनी जेने दृढ मति होय तेज आ वार्त्ताने समजी सके अने एवा तेजोमय दिव्य मुर्त्ति जे भगवान ते जीवना कल्याणने अर्थे ने पोतानुं विषे नव प्रकारनी भक्ति जीवुंने करवाने अर्थे कृपा करीने पोतानी जे सर्व शक्तियुं, ऐश्वर्य, पार्षद तेणे सहित थकाज मनुष्य जेवा थाय छे. त्यारे पण जे एवा मर्मना जाणनारा छे ते ए भगवाननुं स्वरूप-अक्षर धामने विषे जेवुं रह्युं छे तेवुंज प-थवीने विषे जे भगवाननुं मनुष्य स्वरूप रह्युं छे तेने समजे छे पण ते स्वरूपने विषे ने आ स्वरू पनेविषेलेशमात्रफेरसमजतानथी.अनेआवीरीतेजेणेभगवानने जाण्यातेणे तत्वेकरीनेभगवानने जाण्या कहेवायनेतेने मायानी निवृत्तियइ कहेवायनेएमजाणेतेनेज्ञानी भक्तकहिए,ने तेनेएकांतिक भक्तकहिं

ए. अने आवी रीते जेने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरुपनी दढ उपासना होय ने ते भगवानना स्वरुपमां कोइ दिवस माइकपणानो संशय ने थातो होय ने तेने कदाचित कोइ कुसंगने जोगे वरीन अथवा प्रारब्ध कर्मने जोगेकरीने कांइ अवळुं वरताइ जाय तोपण तेनुं कल्याण थाय. अने जो आवी रीते भगवानने जाण्यामां जेने संशय होय ने ते जो उर्द्ध रहेता नैष्टिकब्रह्मचारी होयनेमहात्यागीहोय,तो पण तेनुंकल्याणथावुंअतिकठणछे.अनेजेणेप्रथमएवोदढनिश्चयकर्यो होय,जेज्यारेआत्यंतिकप्रलय थायछे,तेनेअंतेपणभगवानसाकारछेएवीदढग्रंथिहृदयमांपडीहोयने पछे जो तेने तेजोमयआलिंगपणुंजेशास्त्रमां कह्युं होयतेनुंश्रवण थाय तथा एवीवार्त्ता कोइक थकी सांभळे तो पण तेने संशय थाय नहिं, केम जे एतो एम समज्यो छे जे भगवान तो सदा साकारज छे, पण निराकार नथी. अने तेज भगवान रामकृष्णादिक मूर्त्तियुंने धारण करे छे एवी रीते जेनी दढपणे समजण होय तेनी परिपक्व निष्टा जाणवी. एवी रीते श्रीजी महाराजे पोताना भक्तजननी शिक्षाने अर्थे पोताना स्वरुपनी जे अन्यन्य निष्टा ते संबंधी वार्त्ता करी तेने सांभळीने सर्वे पर्महंस तथा हरिभक्त ते श्रीजी महाराजना स्वरुपनीज एवी रीते विशेषे दढता करता हवा॥इति वचनामृतम्॥७॥१३३॥

॥ इतिश्री पंचाळा प्रकरण ॥

॥ समाप्त ॥

संवत १८७८ ना जेष्ट सुदी १५ पुर्ण मासी ने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्रीगाम गढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां श्री वासुदेव-नारायणना मंदिरनी आगळ आथमणे बार ओरडानी ओसरीये विराजमान हता अने धोळो खेस पेहेर्यो हतोअने धोळी चादर ओढी हती, अने माथे धोळी पाघ बांधी हती. अने धोळा पुष्पनो हार पहेर्यो हतो अने पोताना मुखार्विदनी आगळ मुनी मंडळ तथा देश देशना हरीभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, अने पोतानी आगळ परमहंस झांझ मृदंग लेइने गावता हता. पछे श्रीजी महाराजे किर्त्तनीयाने कह्युं जे हमणां किर्त्तन राखो ने प्रश्न उत्तर करो. पछे मुक्तानंद स्वामीये हाथ जोडीने नमस्कार करीने श्रीजी महाराजने प्रश्न पुछयुं जे, हे महाराज मोहनुं शुं रूप छे. अने मोहनी निवृति थयानो शो उपाय छे. पछे श्रीजी महाराज थोडीकवार विचारीने पछे बोल्या जे मोहनुं रूप तो मनने विषे भ्रांति जेवुं थइ जाय एज जणाय छे, अने ज्यारे पुरुषना हृदयमां मोह वृधि पामे छे त्यारे मनमां विभ्रांति विशेष थाय छे. पछे आ करवा जोग्य, अने आ न करवा जोग्य एवो विवेक करतो नथी, ने ते मोह थयानुं कारण तो आजज अमे विचार्युं छे, जे आज अरध रात हती त्यारे अमारे निंद्रा उडी गइ हती. पछे अमे उत्तरादि

दिशा सामु मुख करीनें सुता हता पछे ध्रुनों तारो दिठो त्यारे एम विचार थयो जे आतो उ-
त्तर ध्रुछे. पण शास्त्रमां दक्षिण ध्रु कयो छे ते कयां हशे. पछे अमे दक्षिण ध्रु जोयो त्यारे ते
पण दिठो अने जेम कुवा उपर पाणी सिंचवानो फालको होय तेवी रिते बेधृने वच्चे मोटो फा-
लको दिठो ने ते फालकाना मेरनां बे ठेवां ते बे कोरे ध्रुने अडिरियां छे, जेम लाकडानो थं-
भ होय ने तेमां लोढानी आरुं खुंचीने रही होय तेमछे अने ने फालका अपर जेम सुतरनी फे-
व्य वींटी होय ने ते फालका संगाथे जेम पितलनी फुदडियुं जडियुं होय तेम सर्वे ताराने दे-
वताने नव ग्रहादीक तेनां जे स्थानक ते फालका संगाथे जडांणां छे, ते सर्वेने जोयां ने पछे सू-
र्यने चंद्र तेनो उदय ने अस्त ते एकज ठेकाणेथी थायछे ते पण जोयो. पछे अंतर द्रष्टि क-
रीने जोयुं त्यारे जेटलुं ध्रु आदी देने ब्रह्मांडमां छे तेटलुं सर्व पिंडमां पण दीठुं. पछे आ दे-
हने विषे जे क्षेत्रज्ञ छे तेने पण दिठो; पछे ते क्षेत्रज्ञमां पुरूषोत्तम भगवान रह्या छे, तेने पण
दिठा ते भगवानने जोइने भगवानना स्वरूपने विषे अतिशें वृति जोडाइ गइ. पछे समाधीमांथी
कोइ प्रकारें निकळाणुं नहीं पछे तो कोइक भक्तजने आवीने अमारी स्तुति बहु करी तेनी द-
याये करीने अमारे पाछुं देहमां अवाणुं. पछे अमारा हृदयमां विचार थयो ने अमारे ने स-

माधीमांथी निसराणुं ते तो दयाये करीने निसराणुं पण बिजाने समाधीमांथी निसरातुं हशे, तेनुं शुं कारण हशे? पछे अमने एम जणाणुं जे एने कोइ विषयमां आशक्ति रहे छे, तेणे करीने पाछुं निकळाय छे. अने मोहनुं जे कारण ते पण पंच विषयज छे, ते विषय पण उत्तम, मध्यम ने कनिष्ट ए त्रण प्रकारनाछे तेमां ज्यारे उत्तम विषयनी प्राप्ति थाय अने तेमांथी कोइ अंतराय करनारो आवे, त्यारे पछे ते उपर क्रोध थाय छे. पछे क्रोध थकी मोह थाय छे. अने सामान्य पणे तो श्रोत्रने ने शब्दने सदा संबंध छे, अने त्वचाने ने स्पर्श ने सदा संबंध छे. एवी रीते पंच ज्ञान इंद्रियो ने पंच विषयनो संबंध छे. माटे जे पदार्थने सामान्य पणे जोयुं होय ने ते पदार्थमांथी वृतिने तोडीने भगवानना स्वरूपमां राखवी होय तो तेमां कांइ दाखडो पडे नहि. सहेजेज ते रुप विषयमांथी वृत्ति त्रुटीने भगवानना स्वरूपमां रहे. अने जो स्त्रियादिकनुं अतिशे रमणीक रूप दिठामां आवी गयुं होय ने तेमां वृत्ति जोडाणी होय ने पछे जो भगवानना स्वरूपमां वृत्ति राखवा जाय तो रहे नहि; अने चित्त पण एक ठेकाणे रहे नहि. माटे ज्यां सुधी रमणीक पंच विषयमां चित्त लोभाय छे त्यां सुधी मोह टळे नहि. अने ज्यारे एने गमतो विषय होय ने तेमां चित्त तणाणुं होय ने संत तथा गुरु तथा पो

ताना इष्ट देव जे भगवान ते जो निषेध करे तो ते उपर रिस चडे अने तेनो द्रोह थाय, प... तेनुं वचन मनाय नाहि. एवुं जेना अंतरमां वर्त्ततुं होय तेने मोह कहिये. ते भगवाने गीतामां क... हुं छे जे ॥विषयान्ध्यायत॥पुंसःसंगस्तेषूपजायते ॥संगात्संजायतेकामः कामात्क्रोधोभिजायते॥ क्रोधाद्भवतिसंमोहःसंमोहात्स्मृतिविभ्रमः॥स्मृति भ्रंशाद्बुद्धिनाशोबुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥माटे आ व... चन जे श्री कृष्ण भगवाने कह्यांछे, ते परम सिद्धांत छे. जे ज्यारे शब्दादिक कोइ विषयमां चित्त लोभाणुं त्यारे गमे तेवो बुद्धिवान होय पण तेनी बुद्धिनुं कांइ ठेकाणुं रहे नाहि. ने पशु जेवो थइ जाय छे.माटे मोहने उदय थयानुं कारण ते विषयमां आशक्ति तेज छे. अने जेने ए विषयमांथी चित्तने उखेडवुं होय तेने प्रथमनो आत्मनिष्ठा अति दृढ करी राखवी जे हुं आत्मा छुं पण देह ते हुं नहि. एक तो ए विचार दृढ करवो. अने बिजुं जे प्रकारे जगतनी उत्पत्ति स्थितिने प्रलय थाय छे. ते वारता पण सारी पेठे समजवी. अने त्रिजुं भगवानना स्वरूपनुं महात्म अतिशे समजवुं, ते एम विचारवुं जे पंच विषय छे ते तो भगवानना करया थयाछे, माटे भगवानमां तो एथी अति झाझुं सुख छे. शा माटे जे शब्द होय तेमां एकलुं शब्द संबंधी सुख होय पण बिजा जे चार विषय रह्या तेनुं सुख शब्दमां न होय. एवी रीते स्पर्शमां स्प-

र्शनुं ज सुख होय पण बीजुं न होय. तेमज रूपमां रूप संबंधीज सुख होय. तेमज रस ने गंध तेमां पण पोत पोता संबंधीज सुख होय पण एक विषयमां पंचविषयनुं सुख भेळुं न आवे. अने भगवाननुं जे स्वरूप छे तेमां तो सर्वे सुख भेळां रहयां छे ते एक दर्शन करे तो पण ते भक्त पूर्ण काम थइ जाय एवी रीते भगवानना स्पर्शादिक पण पोताना भक्तने पूर्ण काम करे छे. अने मायीक जे विषय संबंधी रूप छे ते तो सर्वे नाशवंत छे अने भगवान संबंधी रूप छे ते तो अखंड छे एवो जे भगवानना स्वरूपना माहात्मनो विचार ते पण अति दृढ करवो. ए जे त्रण विचार कह्या तेणे करीने विषयमांथी आशकी टळी जाय छे. अने ज्यारे विषयमांथी आशक्ति टळे त्यारे विषय सारा के नरसा तेनो भेद रहे नहीं. जेवी रूपवान स्त्री तेवीज कुरूपवान स्त्री भासे. अने तेवीज रीते पसु, पक्षी, लाकडां, छाणां, पथरा सुवर्ण ए सर्वेने तुल्यपणे जुवे पण सारु पदारथ देखीने तेमां मोह न पामे. एवी रीते पंच विषयने विषे वर्ते पण सारो के नरसो एवो बुद्धीने विषे भेद रहे नहीं. एवुं जेने वर्ते तेने निर्मोही कहीए. ते श्री कृष्ण भगवाने पण गीतामां कह्युं छे जे ॥समलोष्टाश्मकांचनः॥ एवां जेनां लक्षण होय तेणे भगवाननुं स्वरूप तत्वे करीने जाण्युं छे अने एनेज अनन्य भक्त कहीए. अने पतिवृतानुं अंग पण तेनुं

न नाणवुं. अने ज्ञानी पण तेनेज जाणवो अने भगवान पण तेनाज उपर राजी थाय छे, अने भगवानने एवो भक्त अतिशे वाहालो छे. ते भगवाने गितामां कह्युं छे जे ॥ प्रियोहिज्ञानिनोत्य र्थमहंसचममाप्रियः॥ माटे एवा जे प्रतिवृताना अंगवाळा भगवानना भक्त छे तेज भगवानने अतीशे वाहाला छे. अने ते पतिवृतानुं अंगडाह्यानेज आवे एम नथीजेने खप होय तेनेसौनेआवे. जेम आ संसारमां भोळी स्त्री होय ते पतीवृता होय अने डाही स्त्री होय ने ते व्यभिचारणीयुं होय, माटे डाह्या भोळाना कांइ मेळ नथी. एतो जेने कल्याणनो खप होय ते पतिवृतानुं अंग राखीने भगवाननी भक्ती करे छे. अने जे एवी रीते सारा नरसा विषयमां समान बुद्धि थाय ते तो जाणे जे एक दिवसेज एम करी लेउंनेनिर्मोही थावुं एम उतावळ ए काम थातुं नथी, एतो हळवे हळवे आदर राखे तेने थाय छे. जेम कुवाना कांठा उपर पथरो नांख्यो होय तेमां पाणी सिंचतां दोरडी नरम होय तो पण वर्णेकाळे करीने ते पाणामां कापा पाडे छे अने जोलेढानी सांकळे करीने सींचे तो पण उतावळो एवो कापो न पडे. माटे कल्याणने अर्थे जेने जतन करवुं तेने विषयमांथी आ शाक्ति टाळवी. एने विषे आकळा थइने अकळाइ जावुं नहि. एवी रीते गितामां पण कह्युं छे जे ॥ अनेक जन्म संसि-

उत्स्ततोयांतिपरांगातिं ॥ माटे एमँ विचारवुं जे. आ जन्मे जेटली विषयमांथी आशक्ति टळहो तेटली टाळवी छे, अने एम करतां जो कांइक रही गइ तो बिजे जन्मे करीने टाळवी छे, पण भगवानना भक्त छइए ते नरक चोराशीमां तो जावुं नथीं. एवी रीते भगवानना भक्तने हिमत राखीने धिरे धिरे मोहनुं मूळ उखाडयानो आदर राखवो. अने ज्यां सुधी सारा ने नरसा ए बे विषय तुल्य न जणाय त्यां सुधी ए भगवानना भक्त साधन दशामां कहेवाय, अने सारा नरसा विषय तुल्य भासे त्यारे ए भक्त सिद्ध दशाने पाम्यो जाणवो. अने ज्यारे विषयमांथी आशक्ति मुकीने सिद्ध दशाने पामेछे, त्यारे ए कतार्थ थयो जाणवो. अने वेद, शास्त्र पूराण, इतिहास, ए सर्वे ग्रंथुनो एज गलीतार्थ छे. आ जे अमे वात करीछे ते सर्वे शास्त्रनुं रहस्य छे, माटे आ वार्त्तानेसर्वे हरिभक्त दृढ करीने राखाजे॥ इति वचनामृतम्॥१॥१३४॥

संवत १८७८ना श्रावण सुदि ३ त्रिजने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराजश्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेव नारायणना मंदिर आगळ रेशमना चाकला उपर विराजमान हता. अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती; ने मुनी झांझ मृदंग लेइ

ने गावता हता.पछे श्रीजीमहाराजे कह्युं जे कित्तॅन राखो श्रमे वात करीए छीए. एम कहीने श्रीजीमहाराज बोल्यां जे जेने श्रात्यंतिक कल्याण पामवुं होय, ने नारद सनकादिक जेवा साधु थावुं होय तेने एम विचार करवो जे श्रा देह छे तना विषे जीव रह्यो छे, श्रने इंद्रियु श्रंतःकरण छे ते जीव साथे वळगी रह्यां छे, श्रने ए इंद्रियोने श्रंतःकरण छे ते बाहेर पण पंच विषयमां वळगी रह्यां छे, ते श्रज्ञाने करीने जिव, इंद्रियो श्रंतःकरणने पोतानुं रूप माने छे पण वस्तुगत्ये जिव, इंद्रियो श्रंतःकरणथी नोखो छे. श्रने पंच विषय छे ते श्रंतःकरणथ-की नोखा छे पण एतो विषयने श्रभ्यासे करीने श्रंतःकरणने विषे पंच विषयनी एकता जणा-य छे. श्रने विषयनी जे उत्पाति तेतो इंद्रियुं थकी थायछे पण श्रंतःकरणमांथी नथी थाती. जेम श्रतिशे तडको होय, श्रथवा टाढ होय, तेनो प्रथम बाहार इंद्रियुंने संबंध था-य छे, पछे इंद्रियुंद्वारे करीने शरीरने मांहिलीकोरे तेनो प्रवेश थाय छे पण एनी उत्पात्ति मांहिली कोरनी नथी. एतो वहारेथी उत्पन्न थइने मांहिलीकोरे प्रवेश करे छे. तेम पंच विषय छे ते प्रथम श्रंतःकरणमांथी उपजता नथी एतो प्रथम इंद्रियुंने वहार विषयनो संबं ध थाय छे ने पछे श्रंतःकरणमां प्रवेश करे छे. माटे जेम वाहार जेम गुंमडुं थयुं होय तेने

औषध चोपडे त्यारेज करार थाय पण केवळ वारता सांभळे करार थाय नाहि. अने जेम क्षुधा पीपासा लागी होय ते पाणी पिधेज निवृति थाय, पण अन्न जळनी वात करे निवृत्ति न थाय. तेम पंच विषय रूपी जे रोग छे, ते तो तेमुं ज्यारे औषध करीये त्यारेज निवृत्ति थाय. ते औषधनी रीत एम छे जे ज्यारे त्वचाने स्त्रियादिक विषयनो स्पर्श थाय छे,त्यारे त्वचाद्वारे थइने अंतःकरणमां तेनो प्रवेश थाय छे. अने अंतःकरणद्वारे थइने जिवमां प्रवेश करे छे. मूळ थकी विषयनी उत्पत्ति जिवमांथी पण नथी, अने अंतःकरणमांथी पण नथी. अने जे जे विषय अंतःकरणमांथी स्फुरता हशे, ते पण पूर्व जन्मने विषे बाहारथीज इंद्रियु द्वारे करीने आव्या छे. माटे विषय टाळ्यानुं एज औषध छे जे त्वचाए करीने स्त्रियादिक पदार्थनो स्पर्श तजवो,ने नेत्रे करीने तेनुं रूप न जोवुं,अने जिभ्याए करीने तेनी वात न करवी, अने काने करीने तेनी वात न सांभळवी, अने नाशीकाए करीने तेनो गंध न लेवो. एवी रीते पंच इंद्रियो द्वारे विषयनो त्याग दृढ राखे तो बाहारथी विषयनो प्रवाह मांहिलीकोरे प्रवेश करे नाहि. जेम कुवामां पाणीनी सेर आवती होय पछे तेने गोदडाना गाभा भरी ने बंध करे त्यारे ते कुवो गळाय. तेम बाह्य इंद्रियुंने नियममां राखवे करीने बाह्य विषयनो अंतःकरणमां प्रवेश

न थाय. अने जेम उदरमां रोग थयो होय ते तो उदरमां औषध जाय सारेज टळे. तेम प्रथमथी जे इंद्रि द्वारे करीने विषय अंतःकरणमां भराणा होय ते तो आत्मविचारे करीने टाळवा, ते आत्म विचार एम करवो जे हुं आत्मा छुं, ने मारे विषे इंद्रियो अंतःकरणनो संबंध नथी, एम दृढ विचार करीने चैतन्यन विषे भगवाननी मुर्त्ति धारीने अने पोताना आत्म सुख वते करीने पूर्ण रहेवुं. जेम कुवोजळे करीने पूर्ण भराणो होय सारे जे वाहेरथी पोतामां सेर्यु आवती होय तेने पोतानु पाणी ठेली राखे छे, पण मांहिली कोरे ते सेर्युना पाणीनो प्रवेश करवा दे नहि. अने जो उलेचाइने ठालो थाय तो सेर्युनुं पाणी बाहारथी मांहि आवे.एवी रीते आत्म सुखे करीने मांहिलीकोरे पूर्ण रहेवुं. अने बाहार पंच इंद्रियुंद्वारे विषयनो मार्ग बंध राखवो. एज कामादिकने जितानो द्रढ उपाय छे, पण ए विना एकला उपवासे करीने कामादिकनो जय थातो नथी. माटे आ विचार दृढ करीने राखजो.
॥इति वचनामृतम् ॥ २ ॥१३५॥

संवत १८७८ ना श्रावण शुदी ४ चोथने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिर आगळ चाक-

ळा उपर विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंद-
नी आगळ पर्महंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने पोतानी आग-
ळ पर्महंस झांझ मृदंग लेइने किर्त्तन गाता हता. पछे श्रीजी महाराज नेत्र कमळनि साने क-
रिने सौने छाना राखीने बोल्या जे मोटेरा मोटेरा पर्महंस ते आंगळ आवो वात करवी छे.
एम कहीने श्रीजी महाराज बोल्या जे, जे भगवानने भजता होय तेने मोटी पदवी पामवाना बे
उपाय छे अने पडयाना बे उपाय छे, ते कहीये छीए. जे एक तो रसिक मार्गे करीने भग-
वाननी भक्ति करवी अने बिजो आत्मज्ञान, ए बे मोक्ष पाम्याना पण मार्ग छे, अने पडया-
ना पण छे. तमां रसीक मार्गे तो हजारुंने लाखुं पडी गया छे. अने भगवानने तो कोइक पा
म्यो हशे. ने मोटा मोटा आचार्य थया तेणे पण रसिक मार्गे करीने भक्ति करावी छे पण ते-
मां बगाड घणाने थयो छे, ने सारु तो कोइकने थयुं छे. कांजे रसिकपणे करीने ज्यारे भ-
गवाननुं वर्णन करे त्यारे भगवान भेळुं राधिकाजी तथा लक्ष्मीजी तथा तेनी सखियुं तेनुं पण
वर्णन आवे. अने ज्यारे स्त्रियुंनुं वर्णन आवे त्यारे तो तेना अंगोअंगनुं वर्णन थाय, त्यारे व-
र्णनना करनारानुं मन निर्विकार केम रहे. अने ईंद्रियुंनो तो एज स्वभाव छे जे सारा विषय

होय ते उपरज प्रिति होय. अने राधीकाजीने लक्ष्मीजी तेना जेवुं त्रिलोकीमां कोइ स्त्रीनुं रूप होय नहि, अने एना जेवी कोइनी बोली पण मीठी न होय, अने एना देहनो सुगंध पण अतिशे होय माटे एवा रूपने देखीने अथवा सांभळीने किये प्रकारे मोह न थाय, ए तो थायज. अने लेश मात्र जो मन विकार पामे तो ते कल्याणना मार्गमांथी पड्यो. माटे रसिकनी रिते जे भगवानने भजे तेने ए मोटुं विघ्न छे. अने ब्रह्म ज्ञानमां तो आवी रीते अवळुं समजाय छे जेजेब्रह्मछेतेजप्रकृतिपुरुषरूपेथायछेअनेपछेतेजब्रह्मब्रह्माविष्णुरूपेथायछेनेपछेतेजब्रह्मस्थावर जंगमरूपेथायछे.अनेतेस्थावरजंगमरूपेजआकारतेने विषेरह्याजेजीवतेरूपेपणब्रह्मथायछे,एवीरीतेब्रह्मज्ञाननेअवळुं समजीने पछे समजनारो पोताना जीवने पण भगवान जाणेछे, त्यारेएमसमजनाराने उपासनानो भंग थयो. माटे ए पण भगवानना मार्ग थकी पड्यो. एवी रीते ब्रह्मज्ञानमां पण उपासनानुं खंडन थाय ए मोटुं विघ्न छे. कांजे समजी समजीने सर्वना कारण ने सर्वना स्वामी एवा जे भगवान तेनुंज खंडन थयुं. माटे एम समजनारो पण कल्याणना मार्ग थकी पड्यो जाणवो. अने ए बे मार्ग छे ते कल्याणना छे अने ए बेमां विघ्न पण अति मोटां छे, माटे जे कल्याणने इच्छतो होय तेने केम करवुं? ए प्रश्न छे तेनो उत्तर करो. पछे सर्वे परमहंस

विचारीने रह्या पण कोइथी उत्तर न थयो. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे एनो उत्तर तो ए छे जे जेम पोतानी माता होय अथवा बेहेन होय तथा दिकरी होय, ते घणी रूपवान होय तो पण तेने देखीने मनने विषे विकार थातो नथी. तेमज तेने साथे बोले छे, स्पर्श करे छे तोपण मनने विषे लेशमात्र विकार थातो नथी. एवी रीते भगवानना भक्त जे बाइयुं होय तेने विषे मा, बोन ने दिकरी तेनी बुद्धि रहेतो कोइ रीते विकार थाय नहि अने रसीक मार्गे करीने भगवानने भजिने अभयपदनेपामे अने ज्यारे एम न समजे अने कोइ मोटाभगवानना भक्तबाइयुं होय तेने देखीने अवळुं समजे त्यारे एने मोटो दोष लागे अने जे अन्य स्त्रीने देखवे करीने दोष लाग्यो होय ते तो भगवानना भक्तने दर्शने करीने टळे छे, अने भगवानना भक्तने जोइने जे दोष लाग्यो होय तेने टाळ्यानो उपाय शास्त्रमां कह्योज नथी. तेमज भगवाननो भक्त जे पुरुष होय तेने देखीने जे स्त्री अवळुं समजे तेने पण ए पाप थकी कोइ काळे छूटाय नहि॥ त्यां श्लोकः ॥अन्य क्षेत्रेकृतंपापंतिर्थक्षेत्रे विनश्यति॥ तिर्थक्षेत्रेकृतंपापंवज्रलेपोभविष्यति ॥१॥ ए श्लोकनो अर्थ एछे जे बिजे ठेकाणे पाप कर्युं होय, ते तो भगवान के भगवानना भक्त पासे गये छूटे. अने भगवान ने भगवानना भक्त पासे जइने जे पाप करे, तेतो तिर्थ क्षेत्रनुं पाप छे.

ते वअलेप थाय छे. माटे जेने रसीक मार्गे करीने भगवानने भजवा होय तेने तो जे रीते अमे वात करी तेवी रीते निर्दोष बुद्धि राखवी. हवे जे ब्रह्मज्ञाननो मार्ग छे तेमां तो एमसमजवुं जेजे ब्रह्मछेतेतोनिर्विकारछेनेनिरंशछेमाटेएविकारनेपामेनहिनेएनाअंशपणथायनहिअनेएब्रह्मने जेसर्वरूपे कहेछे तेनुंतो एमछे जेएब्रह्मजेतप्रकृतपुरूषआदिकसर्वेनाकारणछेनेआधारछे, नेसर्वेनेविषे अंतर्यामी शक्तिए करीने व्यापकछे,माटे जे कारण ने आधार ने व्यापक होय ते कारज थकी पृथक होय नहि. एम समजणने लइने ए ब्रह्मने शास्त्र जे ते सर्व रूपे कहे छे, पण ए ब्रह्मज विकार पामीने चराचर जिवरूपे थइगयाएम न समजवुं. अने ब्रह्म थकी परब्रह्म जे पुरूषोत्तम नारायण ते नोखा छे, ने ब्रह्मना पण कारण छे, ने आधार छे, ने प्रेरक छे एम समजीने पोताना जिवात्माने ए ब्रह्म संगाथे एकता करीने परब्रह्मनी स्वामी सेवक भावे उपासना करवी एवी रीते समजे त्यारे ब्रह्मज्ञान छे ते पण परम पदने पाम्यानो निर्विघ्न मार्ग छे॥इति वचनामृतम्॥३॥१३६॥

संवत १८७८ ना श्रावण सुदी ५ पंचमीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां आथमणे द्वार मेडीनी ओशरिये विराजमान

हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ पर्महंस तथा देश
देशना हरीभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, ने पर्महंस दुकड, सरोदा, सतार वजाडीने म-
लार रागनां किर्त्तन गाता हता. पछे श्रीजी महाराजे कह्युं छे किर्त्तन गाववां रहेवा द्यो.हवे तो
परमेश्वरनी वार्त्ता करीए. पछे पर्महंसे कह्युं जे सारुं महाराज. पछे श्रीजी महाराजे प्रश्न क
र्युं जे शास्त्रमां कह्या एवा जे धर्म पाळतो होय, अने भगवाननी भक्ति पण करतो होय ने तेने
एवो आपतकाळ आवे जे भक्ति राखवा जाय तो धर्म जाय ने धर्म राखवा जाय तो भक्ति
जाय त्यारे केने राखवो ने केनो त्याग करवो? पछे ब्रह्मानंद स्वामी बोल्या जे जो भगवान
भक्ति राख्ये राजी होय तो भक्ति राखवी, अने जो धर्म राख्ये राजी होय तो धर्म राखवो.
त्यारे श्रीजी महाराजे कह्युं जे जेने प्रगट भगवान मळ्या होय तेने तो जेम भगवान राजी होय
तेमज करवुंए ठिकछे,पण ज्यारे भगवाननुंपरोक्षपणुं होयत्यारे केम करवुं?पछेमुक्तानंद स्वामीएनो
उत्तर करवा लाग्या पण थयो नहि. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे ज्यारे भगवान परोक्ष होय
ने आपतकाळ पडे ने कांइ न रहे त्यारे तो भगवाननुं एक अखंड चितवन करवुं तो ए भगवान
ना मार्ग थकी पडे नहि.पछे वळी श्रीजी महाराजे प्रश्नपुछयुं जे जे भगवाननो महिमा अति ज्ञ

-मजतो होय तेणे करीने एम जाणे जे गमे तेटलां पाप कर्यां होय ने जो भगवाननुं एक नाम लीधुं होय तो सर्वे पाप बळीने भस्म थइ जाय एवुं महात्म समजतो होय तेने कइ रीये समजे त्यारे धर्ममांथी डगाय नही? पछे मुक्तानंदस्वामीये ए प्रश्ननो उत्तर करवा मांड्यो पण थयो नही. पछे श्रीजीमहाराज बोल्याजे जे भगवाननो महिमा अतिशे जाणतो होय तेने तो आवी रीते समजाय त्यारे धर्ममां रहेवाय जे म्हारे तो अखंड भगवाननुं चितवन करीने एकांतिक भक्त थावुं छे अने जो काम, क्रोध, लोभादीक, विकारने विशे म्हारी वृत्ति जाशे तो मारे भगवानना चितवनमां एटलो विक्षेप थाशे एम जाणीने कुमार्ग थकी अतिशे जड रहेतो रहे. अने अधर्मने विषे कोइ काळे प्रसंग नहि एवी रीते समजे तो भगवाननुं माहात्म अतिशे समजतो होय तोपण धर्ममांथी कोइ काळे पडे नहि, अने भगवाननुं जे अखंड चितवन थावुं ते कांइ थोडी वात नथि. भगवाननुं चितवन करतां करतां देह मुके तो ते अति मोटी पदवीने पामे छे. पछे ब्रह्मानंद स्वामीये पुछ्युं जे एम जाणीए छीए, तोपण अखंड चितवन रहेतुं नथी एनुं शुं कारण छे? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे एक तो अखंड चितवन थाय एवी श्रद्धा जोईए, अने ज्यारे एवी श्रद्धा न होय त्यारे तेटलुं माहात्म जाण्यामां पण ओछप छे अने ज्यारे माहात्म जा-

ण्यामां ओछ्यछे त्यारे भगवानना स्वरूपना निश्चेमां पण एटली ओछपछे, माटे जो भग वानना स्वरूपनु माहात्म तथा श्रद्धा होय तो अखंड चिंतवन थाय. ते माहात्म एम जाणवुं जे भगवान तो जेवा प्रकृति पुरुष थकी परछे तेवाने तेवाज प्रकृति पुरुषमां आव्या छे, तोपण प्रतापे जुक्त छे अने प्रकृति पुरुषनुं कारज जे ब्रह्मांड तेने विषे आव्या छे तोपण भगवान तेवाने तेवा प्रतापे जुक्त छे पण भगवाननी मुर्त्तिने विषे कोइ रीते मायानो लेश अडतो नथी. जेम अन्य धातुछे, ने सोनुं पण छे, तेने भेळां करीने पृथ्वीमां डाटे तो सोना विना अन्य धातु छे ते सर्वे घणेक काळे करीने धुळ भेळां धुळ थइ जाय छे. अने सोनुं होय तेतो जेम पृथ्वीमां रहे तेम वृद्धी पामे पण घटे नहि, तेम भगवान अने बीजा जे ब्रह्मादिक देव तथा तथा मुनी ते कांइ सरखा नथी, केम जे ज्यारे विषय रूपी धुळनो जोग थाय त्यारे भगवान विना बिजा गमे तेवा मोटा होय तोपण विषयमां एक रस थइ जाय. अने भगवान तो मनुष्य जेवा जणाता होय तोपण एनो माइक पदार्थ बाध करवा समर्थ थाय नहि अने गमे तेवा विषय होय तो तेमां कोइ दिवस लेपाय नहि. एवुं भगवाननुं अलौकिक सामर्थ्य छे, एम भगवाननुं महात्म जाणेतो तेने भगवाननुं अखंड चिंतवनथाय अने ज्यांसुधी विषयनो लीधोलेवाय

त्यांसूधी ए भक्तभगवाननो अलौकिक महिमा जाण्यो जनथी अने जो उद्धवजि हता तेने भगवाने एम कह्युंजे उद्धव हुं थकी अणुंमात्र नुन्य नथी ते शामाटे जे उवद्धजीये अलौकिक भगवाननुं महात्म जांण्युं हतुं ने पंच विषयना लोधालेवाणानोहोता अने जेने भगवानो महिमा समजायछे तेने राज्य होय अथवा भीखमागी खाय ते बेय सरखु वर्त्ते अने बाळक स्त्रीअने सोळ वरसनी स्त्री अने एशी वरसना स्त्री ते सर्वेमां सरखो भाव वर्त्ते अने जे संसारमां सारुं नरसुं पदार्थ होय ते सर्वेमां सरखी भावना रेहे पण सारापदार्थमां पतंगायानी पेठे अंजाइ जाय नहीं अने भगवानना बीजा कोइ पदार्थमां लोभायनहि. एक भगवाननी मुर्त्तिमांज लोभाय अने अे वि रिते जे वर्ततो होय ते भक्त गमेतेवा मोटा वीषय होय तेमां बंधाय नहि अने जो एवो मर्मन समजाणो होय तो फाटी लंगोटी तथा तुंबडी तेमांथी पण मनने उखेडवुं महा मुशकल छे, माटे आवी रीते भगवाननी मुर्त्तिनुं माहात्म जाण्या विना कोटी साधन करे तोपण भगवाननी मुर्त्तिनुं अखंड चिंतवन थातुं नथी अने जे भगवानना स्वरूपनो महिमा जाणे छे, तेनेज भगवाननुं अखंड चिंतवन थाय छे ॥ इति वचनामृतम् ॥

संवत १८७८ ना श्रावण वदि ७ सातमने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज

वच. श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदीर आगळ ओटा उपर चाकळो नंखावीने विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. अने मुनी ताल, मृदंग लेइने किर्त्तने गावता हता.पछे श्रीजी महाराज नेत्र कमलनी साने करीने ते किर्त्तन रखावीने बोल्या जे सर्वे सांभळो एक वात करीए छीए जे, जे भगवानना भक्त होय तेने एक पतिवृतानो धर्म राखवो, अने बीजुं सुरविरपणुं राखवुं. जेम पतिवृता स्त्रि होय तेने पोतानो पतिवृद्ध होय, तथा रोगी होय, तथा निर्धन होये, तथा कुरूप होय, पण पतिवृता स्त्रिनुं मन कोइ बीजा पुरूषना रुडा गुण देखीने डोलेज नहि. अने जो रांकनी स्त्री होय ने तेजो पतिवृता होयतो मोटो राजा होय तोपण तेने देखीने पतिवृतानुं मन चळे नही.एवी रीते भगवानना भक्तने पतिवृतानो धर्म भगवानने विषे राखवो अने पोताना पतिनुं कोइ वसातुं बोले ते ठेकाणे कायर थइने गळी जावुं नही, अतीशो सुरावीर थइने जवाप देवो, पण पाछी पलावनी छायामां भगवानना भक्तने दबावनुं नही. एवी रीते सुरविरपणुं राखवुं. अने लोकमां एम कहे छे जे साधुने तो समदृष्टी जोइए पण ए शास्त्रनो मतनथी केम जे नारदसनकादिक ने धुप्रहलादादिक

तेमण भगवाननो ने भगवानना भक्तनो पक्ष राख्यो छे पण विमुखनो पक्ष कोणे राख्यो नथी. अने जे विमुखनो पक्ष राखतो हशे ते आ जन्मे अथवा बीजे जन्मे जातो जरूर विमुख थाशे.माटे जे भगवानना भक्त होय तेने जरूर भगवद्भिनो पक्षराख्योजोइएअने विमुखनो पक्षत्यागी जोइए. आ अमारीवार्ता तेसर्वे अति दृढकरीने राखजो.॥इतिवचनामृतम्॥५॥१३८॥

संवत १८७८ ना श्रावण सुदी ८ अष्टमीने दीवसे स्वामी श्री सहजानंदजी माहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदीर आगळ वोदि उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ पर्महंस तथा देश देशना हरी भक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने पर्महंस ताल, मृदंग.लेइने कीर्त्तन गाता हता. पछे श्रीजिमहाराजे कह्युं जे कीर्त्तन राखो हवे भगवानी वार्त्ता करीए. पछे सर्वे मुनी हाथ जोडीने बेठा. पछे श्रीजी माहाराज बोल्या जे-आ संसारमां केटलाक पवन सरखा जीव होय ते एम के छे जे गंगाजीनुं पाणी ने बीजुं पाणी ए बे सरखां जणाय छे ने शालग्राम ने बीजा पहाणा ते सरखा जणाय छे ने तेमज तुलसी ने बिजां झाड ते सरखां जणाय छे ने ब्राह्मण ने शुद्र ते पण सरखाजणाय छे अने ठाकोर

जीनी प्रसादी अंन्न ने बीजुं अन्न ते बे सरखां जणाय छे एकादशीने दिवस भूख्या रह्या ने
बिजे दिवसे भूख्या रह्या ए बे सरखां जणायछे ने साधु ने असाधु बेय सरखां जणाय छे ते
माटे आ विधी नीषेधनो जे विभाग ते मोटा पुरूषे तेणे शा सारू शास्त्रमां कह्यो
हशे?एम दुष्टमतिवाळा जे जीव छे ते कहे छे. माटे सर्वे संतने अमे आ प्रश्न पुछीए छीए जे
ए विधी निषधनो विभाग मोटा परूषे शास्त्रमां कह्यो छे ते साचो छे के कल्पित छे? तेएप्रश्न
नो उतर नाना नाना पर्महंस होय ते करो पछे नाना पर्महंस हता ते बोल्या जे विधी-
निषेदनो भेद तो सत्य छे ने एम न होय तो स्वर्ग नर्क केने माथे केवाय. पछे
श्रीजी माहाराज बोल्या जे नाना छे पण सारा दिश उपर समज छे. एम
कहीने श्रीजीमहाराजे एनो उत्तर करवा मांडयो जे मोटा पुरूषे जे शास्त्रमां प्रतिपा-
दन कर्युं छे ते सर्वे सत्य छे. त्यां दृष्टांत छे जेम कोइक मोटोशाहुकार होय ने ते कोइनेहुंडी
लखी आपे त्यारे कागळमां तो एके रूपैयो जणातो नथी, पण रूपैया साचा छे. ते ज्यारे ए
हुंडी जे शाहुकारना उपर लखी होय तेने आपे त्यारे ए हुंडीमांथी रूपैयानो ढगलो थाय छे.
तेम मोटा पुरूषनी आज्ञाए करीने जे धर्म पाळे त्यारे हमणां तो कांइ विधिनिषेधमां विशेष

जणतुं नथी पण अंते मोटा पुरुषनी आज्ञाना पाळनारानुं कल्याण थाय छे. जेम हुंडीमांथी रूपैया निसरे छे तेम. अने जे समर्थ शाहुकारे हुंडी लखी होय अने तेनो विश्वास न करे तेने मुर्ख जाणवो. अने तेने शाहुकारना प्रतापनी खबरज नथी. तेम नारद, सनकादिक, व्यास वा ल्मीक इत्यादिक जे मोटा पुरुष तेना वचननो जेने विश्वास नथी ते नास्तीक जाणवो ने महा पापिष्ट जाणवो, अने वळी जे नास्तिक मतिवाळो होय तेने एम समजाय छे जे बिजा पाहाणामां ने ठाकोरजीनी मूर्त्तिमां शो फेर छे? सर्वे पहाणा एक सरखा छे. ने परणेल स्त्रीने न परणेल स्त्री तेमां शो फेर छे, सर्वे स्त्री सरखी छे, अने घरनी स्त्री ने मा बोन तेमां शो फेर छे, सर्वेनो सरखोज आकार छे. अने राम कृष्णादिक जे भगवाननी मुर्त्तियु ते पण सर्व मनुष्य जेवी छे. माटे अधिक नुन्य भावतो माणसे कल्पीने उभो कर्यो छे. पण शुं करीए माणस भेळुं रेहेवुं ते माणसनी हाये हा कहि जोइए. पण विधिनिषेधनो मार्ग छे ते खोटो छे. एम पापी एवा जे नास्तीक ते पोताना मनमां समजे छे, माटे जेनी आवी जातनी बोली सांभळीए तेने पापीष्ट जाणवो ने नास्तीक जाणवो. अने एने चंडाळ जाणीने एनो कोइ प्रकारे संग राखवो नहि. अने वळी श्रीजीमहाराजे बिजी वार्त्ता करी जे मनुष्यमात्रनुं चित्त केवुं छे तो जेम

मध होय अथवा गोळ, साकर, खांड, तेनुं गाट पाणी होय ते सरखुं छे. ते मधमां के गो
ळ, साकर, खांडना, पाणीमां माखी, कीडी, मंकाडो जे आवे ते चोटी रहे अने मनुष्य जो
हाथ अडाडे तो माणसनी आंगळीए पण चोटी जाय. तेम चितनो स्वभाव एवो छे जे जे पदा-
र्थ सांभरे ते ते पदार्थमां चोटी जाय छे ते जो पथरो तथा कचरो तथा कुतरानो मळ ए आ
दिक जे नकारीवस्तुहोयतेमां तो लेशमात्र सुख नथीतोपणए नकारी वस्तुमां पणचितवळगेछे,
अनेतेसांभरीआव्युंहोयतोतेनुंपणचितवन करेछे,एवोएनोवळगवानोस्वभावछेजेममोटुंकाचनुं दर्पण
होय तेमां मोटा साधु आवे तोतेनुं पण प्रतिबिंब देखाय तथा कुतरां, गधेडां चाडीलादिक जे
जे आव्यां होय तो तेनुं पण प्रतिबिंब तेमज देखाय. तेम चितने विषे अति निर्मळ पणुंछे तेजे
पदार्थ सांभरे ते देखाइ आवे. एमां सारा नरसानो कांइ मेळ नथी. माटे जे मुमुक्षु होय तेने
एम न विचारवुं जे मारे वैराग्य नथी ते माटे स्त्रियादिक पदार्थ मारा चितमां स्फुरे छे. ए जे
वैराग्यवान होय तेना चित्तमां पण जे समे जे पदार्थ आव्युं ते सहेज स्फुरी आवे छे माटे वैरा
ग्य, अवैराग्यनुं कांइ कारण नथी एतो चित्तनो स्वभावज एवो छे जे भलुं अथवा भुंडुं जे सां
भर्युं तेने चितवे अने ज्यारे जे पदार्थनुं चितवन करे त्यारे ते पदार्थ जेम दर्पणमां देखाय तेम

देखाइ आवे ते माटे एम जाणवुं जे हुं तो ए चित्त थकी जुदो छुं, अने हुंतो एनो जाणनारो आत्मा छुं. एम जाणीने चित्तना सारा भुंडा घाटे करीने ग्लानी पामवी नहि पोताने चित्त थकीजुदोजाणीनेभगवाननुंभजनकरवुं.अनेसदाय आनंदमांरहेवुं॥इतिवचनामृतम्॥ ६॥१३९॥

संवत १८७८ नां श्रावण शुदी ११ एकादशी ने दिवस रात्रीने समे स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिर आगळ विराजमान हता. अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. अने पोताना मुखा विंदनी आगळ पर्महंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे मुक्तानंद स्वामीए श्रीजी महाराजने प्रश्न पुछयो जे भगवानना भक्त होय तेना मनमां तो एम होय जे भगवानना भजनमां अंतराय करे एवो एके स्वभाव राखवो नथी. तोय पण अजोग्य स्वभाव र-ही जाय तेनुं शुं कारण छे? पछें श्रीजी महाराज बोल्या जे जेने वैराग्यनी दुर्बळता होय तेने टाळ्यानी श्रद्धा होय तोय स्वभाव टळे नहि, जेम दरिद्रि होय ते घणां सारां सारां भोजन ने सारां सारां वस्त्रने इच्छे पण ते क्यांथी मळे. तेम वैराग्य हिन होय तेना हृदयमां इच्छातो होय पण साधुताना गुण आववा घणा दूर्लभ छे. पछे वळी मुक्तानंद स्वामीए पुछयुं जे जेने

वैराग्य न होयं ते शो उपाय करे स्यारे विकार टळे? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे जे वैरा-
ग्य हिन होय ते तो कोइ मोटा संत होय तेनी अतिशे सेवा करे अने परमेश्वरनो आज्ञा
जेम कहे तेम मंडयो रहे. पछे परमेश्वर तेने कृपा दृष्टीए जुवे जे आ बिचारो वैराग्य र[illegible]
छे, तेने काम क्रोधादिक वहुं पिडे छे माटे एना ए सर्वे विकार टळो, तो तत्काळ टळी जाय!
अने साधने करीने तो वहु काळ मेहेनत करतां करतां आ जन्मे टळे, अथवा बिजे जन्मे
टळे.अनेतरतजेविकारमात्रटळेतेतोपरमेश्वरनीकृपायेकरीनेटळे.॥इतिवचनामृतम्॥ ७॥१४०॥

संवत१८७८नाश्रावण सुदि १२ द्वादशीने दिवस प्रातःकाळने समे स्वामी श्री सहजान-
दजी महाराजश्रीगढडा मध्येदादाखाचरनादरबारमांथी श्रीवासुदेव नारायणनामंदिरआग-
चाकळा उपर विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत.वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मु[illegible]
विंदनी आगळ पर्महंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने पर्महंस ता[illegible],
मृदंग लेइने किर्त्तन गाता हता. पछे श्रीजि महाराज संत प्रत्ये बोल्या जे एकादशीनुं व्रत [illegible]
रवुं तेनी तो एम विगति छे जे पुर्वे भगवान दश इंद्रियुंने अगीयारमुं मन तेने अंतर सन्मु-
ख करीने पोडया हता, ते समयमां नाडीजंघनो दिकरो जे मुरदानव ते जुद्ध करवा आव्यो

पछे भगवानना एकादश इंद्रियोना तेजमाथी एक कन्या उत्पन्न थइ त्यारे मुरदानव कन्या प्रत्ये बोल्यो जे तुं मुनें वर. पछे कन्या बोल्यां जे मारे तो एवी प्रतिज्ञा छे जे जे मुंने जुद्धमां जीते तेने हुं वरुं. पछे मुरदानवने, ने कंन्याने जुद्ध थयो त्यारे कन्याये मुरदानवनुं मस्तक ख-डगें करीने कापी नांख्युं. पछे भगवाने प्रसन्न थइने ते कन्याने कह्युं जे तुं वर माग्य, त्यारे ते कन्याये वर माग्यो जे मारा व्रतने दिवस कोइ अन्न न खाय. अने हुं तमारा एकादश इंद्रि-योना तेजमांथी प्रगट थइ. माटे मारुं नाम एकादशी छे अने हुं तपस्विनि छुं, माटे मारा व्रतने दिवस मन आदिक जे अगीयार इंद्रियो तेनो जे आहार ते कोइ करे नहि एवुं एकादशीनुं वचन सांभळीने भगवाने ते वर आप्यो एवी रीते पुराणनी कथा छे. अने वळी धर्म शास्त्रमां पण एम कह्युं छे जे एकादशीनुं व्रत करवुं ते दिवस काम, क्रोध, लोभादिक संबंधी भुंडा घाट मनमां थावा देवो नहि अने देहे करीने कांइ भुंडुं आचरण करवुं नहि एम शास्त्रमां वचन छे ते शास्त्र प्रमाणेज अमे पण कहिए छीए जे एकादशीने दिवस ढोर लांघण करवी नहि, अने एकादश इंद्रियोना आहारनो त्याग करे त्यारे ते एकादशी साची ने ते विना तो ढोर लांघण कहेवाय. अने जेम प्राणने अन्ननो आहार छे तेमज श्रोत्रने शब्दनो आहार

छे, अने त्वचाने स्पर्शनो आहार छे, ने नेत्रने रूपनो आहार छे, जीव्हाने रसनो आहार छे, ने नासीकाने गंधनो आहार छे, ने मनने संकल्प विकल्पनो आहार छे, एवी रीते अगीआरे इंद्रिना जुदाजुदा अहारछे ते सर्वे अहारनो त्यग करे तेनुं नाम एका दशी व्रत कहेवाय, पण अगीआरे इंद्रियो कुमार्गे दोडे अने पोतपोताना अन्नेन खाय ते एकादशिनुं व्रत शास्त्र प्रमाणे न कहेवाय, माटे अेकादशिनुं व्रत करवुं त्यारेतो अगीयारे इंद्रियोने आहारकरवा देवानहि एवुं व्रत पंदर दीवशमां एकवार आवेछेते खबरदारथइने करवुं तो तेने उपरभगवानप्रसन्नथायछे. पणतेविना जे ढोर लांघण तेणे करीने भगवान प्रसन्न थाता नथी. अने श्वेतद्विपमां जे निरन्नमुक्त कहेवायछे तेतो सदाय व्रत राखेछे क्यारेय पण एव्रतनो भंग थवा देतानथी माटे निरन्न कहेवायछे अने आपणे पण इच्छातो एम राखवा जे जेवा श्वेतद्विपमां निरन्नमुक्तछे तेवुंज थावुंछे, पण एवातमां हिमत हारवीनही एवीरीते जे हिमत राखीने जेवुं महेरे कह्युं तेवुं एकादशीनुं व्रतकरे अने भगवाननी कथा किर्त्तनादिकने करे ने सांभळे ने रात्रीये जागरण करे तो ते व्रत साचुं छे अने शास्त्रमां एनुंज नाम एकादशी कहिछे एटली वात करीने श्रीजीमहाराज मौन रह्या ने संते किर्त्तन गावामांडयां. पछे वळी श्रीजीमहाराज बोल्या

जे ज्यारे ब्रह्माये सृष्टि करी त्यारे सर्वे प्रजाने कह्युंजे तमो सर्वे यज्ञ करज्यो ने ते यज्ञे करीने तमारे सर्वे पुरुषार्थनी सिद्धिथाशे अने सृष्टिनी पण वृद्धिथाशे माटे यज्ञतो जरुर करज्यो पछे वेदमां वहुं प्रकारना जे यज्ञ हता ते सर्वे ब्रह्माए विधि सोता बताव्या. तेमां जे प्रवृति मार्ग वाळा हता तेनेतो राजसी तामसी एवा प्रवृति मार्गना जज्ञ बताव्या. अने जे निवृती मार्ग वाळा हता तेनेतो सात्विक यज्ञ बताव्या ते यज्ञ श्रीकृष्णभगवाने भगवद्गीतानेविशे पण कह्याछे माटे अपणेतो निवृति मार्ग वाळा छैये ते आपणेतो सात्विक यज्ञ करवा पण जेमां पशुमरतां होय एवा जे राजसी, तामसी, यज्ञ ते आपणे करवानहीं. ते सात्विक यज्ञनी रीत जे दश इंद्रियोने अगीआरमुं मन ए सर्वे जेजे विशयमां चोटे त्यांथी पाछां खेंचीने ब्रह्म अग्नीने विशे होमवां एनुंनाम योगयज्ञ कहेवाय. अने एवीरीते होमतां होमतां जेम यज्ञ करनाराने भगवानदर्शन आपेछे तेमज ए योगयज्ञना कनाराना अंतरने विशे पोतानुंस्वरूप जे ब्रह्म तेनेविशे परब्रह्म जे श्रीपुरुषोत्तम ते प्रगट थइ आवेछे ए योग यज्ञनुं फळछे. अने अंतर दृष्टिये करीने जे भगवानना भजने वर्त्तवुं ते ज्ञान यज्ञ कहेवायछे हवे कोइ एम पुछे जे अंतरदृष्टि ते शुं तो तेनो उत्तर ए छे जे वाहेर अथवा मांहीली कोरे भगवाननी मुर्त्ति सामी जे वृत्ति

करवी एज अंतर दृष्टी छे, अने ते विना तो अंतर दृष्टी करीने बेठो छे पण बाह्य दृष्टिज छे. माटे बाहेर भगवाननुं दर्शन तथा पुजन तथा भगवानना कथा किर्त्तन ए आदिक जे जे भगवान संबंधी क्रियाओ होय ते सर्व अंतर दृष्टी छे, अने सर्व ज्ञान यज्ञ थाय छे अने तेज भगवाननी मुर्त्ति अंतरमां धारीने तेनुं पुजन वंदनादिक जे जे करवुं ते पण अंतर दृष्टीछे ने ज्ञानयज्ञ छे. माटे सत्संगी मात्रने तो एवो अखंड ज्ञानयज्ञ थाय छे, समाधीतो कोइकने थाय छे, ने कोइकने नथी थाती तो ते परमेश्वरनी इच्छाए करीने एम रह्युं छे, अथवा कोइक ठेकाणे भक्तनी कचाइ वर्त्ते करीने रह्युं छे. अने कोइक मुरख लोक छे ते एम कहेछे जे गोपीकानां अंगनां किर्त्तन होय ते रहेवा द्यो, ने निर्गुण किर्त्तन होय ते गाओ. पछे जे उघाडा थइने फरतां होय तेने मुरख होय ते निर्गुण पुरुष कहे छे, पणजो उघाडा चाल्ये निर्गुण थवातुं होय तो कुतरां, गधेडां इतियादिक सर्व निर्गुण कहेवाय. आ माटे एतो मुर्खनी समजण छे, अने ज्ञानी भक्त होय ते तो एम जाणे जे भगवाननुं स्वरूप छे तेज निर्गुण छे, अने जेने जेने ते भगवाननो संबंध थयोछे ते सर्व निर्गुण मार्गवाळाछे अने जेने कथा किर्त्तनने विषे भगवानना स्वरूपनो संबंध छे ते सर्व निर्गुण कहेवाय. अने कथा, किर्त्तनने विषे भगवाननो संबंध न

होय ते माइक गुणे जुक्त छे, माटे सगुण कहेवाय. अने जो भगवाननी प्राप्ति न थइ होय ने ते उघाडां फरे तोपण निर्गुण न कहेवाय. अने जेने भगवाननी प्राप्ति थइ छे अने ग्रहस्थाश्रमी छे तो पण ते निर्गुण कहेवाय. अने त्यागी होय ते पण निर्गुण कहेवाय. माटे भगवानने पाम्या नो जे मार्ग छे तेज निर्गुण मार्गछे. अने ते जेजे भगवान संबंधी क्रिया करे ते सर्व निर्गुण छे अने जेने भगवाननो संबंध थयो छै तेना भाग्यनो पार आवे नहिं. अने ते भगवाननो संबंध एक जन्मने पुन्ये करीने थातो नथी. एतो श्रीकृष्ण भगवाने गीतामां कह्युं छे जे ॥ अनेकजन्म संसीद्धस्ततोयांतिपरांगति ॥ ए श्लोकनो ए अर्थ छे जे अनेक जन्मनुं सुकृत भेळुं थाय छे, तेणे करीने ज संसिद्ध थयो ते परमपदने पामे छे. ते परमपद ते शुं जे प्रत्यक्ष भगवाननी प्राप्ति तेजपरमपदछे.अनेवळीश्रीकृष्णभगवानेएमपणकह्युंछेजे॥ ममैवांशोजिवलोकेजिवभुतःसनातनःमनःपष्टानीद्रियाणिप्रकृतिस्थानकर्षति॥एश्लोकनो अर्थ ए छे जे आ संसारने विषे भगवाननो अंश जे जिवछे ते तो मने सहितजेपंचज्ञानइंद्रियोतेनेपंचविषयथकीखेंचीनेपोतानेवशराखेछे.अनेजेभगवानना अंश नथी, ते तो इंद्रियुंने खेंचीने ज्यां पोतानी इच्छा होय त्यां लेइ जाय छे, माटे आपण सर्वे इंद्रियुंना दोर्या दोरता नथी. तो जो भगवानना अंश छइए एवुं जाणीने अतिशे

आनंदमां रहीने भगवाननुं भजन करवुं. अने सर्वे इंद्रियुंनी वृत्तियुंने भगवानना स्वरूपमां होमवियुं. अने सदा ज्ञानयज्ञ कया करवो, अने राहितनुं कोइ रीते कल्याण थातुं नथी.यज्ञअने चार वेदमां सांख्य शास्त्र, योग्य शास्त्र, धर्म शास्त्र, अढार, पुराण, भारत, रामायण, ने नारद पंच रात्र ए आदिक सर्वे सतशास्त्रनुं एज सिद्धांत छे जे यज्ञराहितनुं कल्याण थातुं नथी माटे अमारी पण एज आज्ञा छे जे, सर्वे पर्महंस तथा सर्वे सत्संगी ज्ञानयज्ञ करता रहेज्यो.अने एमने एम ज्ञान यज्ञ करतां करतां ज्यारे पोतानुं स्वरूप जे ब्रह्म तेने विषे परब्रह्म भगवान साक्षातकार देखाय एज ज्ञानयज्ञनुं फळ छे. एवी रीतेज्ञान यज्ञ करतां करतां ज्यारे श्वेतद्विपमां निरन्न मुक्त छे एवुं थवाय त्यारे ज्ञान यज्ञना विभिनो अवधि-आवी रह्यो. अने ज्यां सुधि एवुं न थवाय त्यां सुधि एटलुं अधुरुं जाणवुं.अने निरन्नमुक्त जेवा थवानी अतिशे इच्छा राखवी पण श्रद्धा राहित थावुं नहि, अने पोताने विषे अपूर्ण पणुं मानवुं नहि. ने भगवाननी प्राप्ति थइ छे, तेणे करीने पोताने कृतार्थ मानीने ने सावधान थइने ज्ञान यज्ञ कर्या करवो. ॥इति वचनामृतम् ॥८॥१४२॥

संवत १८७८ ना श्रावण सुदी १४ चादश ने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महा

राज श्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिरनी आगळ
मशरुना चाकळा उपर विराजमान हता ने ते समे आनंदानंद स्वामीए पूजा करी हती ने रा
ता किनखापनो सुरवाळ पहेर्यो हतो तथा राती किनखापनी डगली पहेरीहती तथा मस्तक उ
पर सोनेरी फरता छेडानो कसुंबी रेटो बांध्यो हतो तथा कमरे जरकशी शेलुं बांध्युंहतुं तथा
गुळो आसमानी रंगनो रेटो खभा उपर नांख्यो हतो अने हाथे राखडीयुं बांधीयुं हतियुं अने
पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरीभक्तनीं सभा भराइने बेठी हती. पछे
मुकानंद स्वामीए कह्युंजे कित्तनबोलीये. पछे श्रीजीमहाराजेकह्युंजेल्यो परमेश्वरनीवार्त्ता करीए.
पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे ज्ञान मार्ग तो एवो समजवो जे कोइ रिते भगवानना स्वरूपनो
द्रोह थाय नहि. ने कोइक काळे भगवानना वचननो लोप थतो होय तो तेनी चिंता नाहि पण
भगवानना स्वरूपनो द्रोह थावा देवो नहिं, जो भगवाननुं वचन कांइक लोपाणुं होय तो ते भग
वाननी प्रार्थना करीने पण छूटको थाय पण भगवानना स्वरूपनो द्रोह कर्यो होय तो तेनो को-
इ रिते छूटको थाय नहि. माटे जे समजु होय तेने भगवानना वचनमां तो जेटलुं पोतानी सा-
मर्थी प्रमाणे रहेवाय तेटलुं अवश्य रेहेवुं पण भगवाननी मूर्त्तिनुं बळ अतिशे राखवुं. जे सर्वो-

परोने सदा दिव्य साकार मूर्त्तिने सर्व अवतारनुं अवतारी एवुं जे भगवाननुं स्वरूप छे तेने मु-
ने प्राप्त थयुं छे अने एम जाणतो होय ने तेथी जो कदाचित सत्संगथी बाहेर-निसरी जवाणुं
होय पण तेने भगवाननी मूर्त्तिमांथी हेत टळतुं नथी ने ते हमणां तो सत्संगथी बाहेर छे पण
देह मुकीने तो अंते भगवाननुं जे अक्षर धाम तेने विषे भगवानने समीपे जाशे. अने हमणे
सत्संगमां रहेतो हशे, अने शास्त्रना वचनमां पण रहेतो हशे, ने तेने जो भगवान स्वरूपनी नि
ष्ठा पाकी नहि होय तो ते ज्यारे देह मुकशे त्यारे कांतो ब्रह्माना लोकमां जाशे, ने कांतो को
इक बिजा देवताना लोकमां जाशे पण ते पूरुषोत्तम भगवानना धामने विषे नहि जाय ते मा
टे पोताने साक्षात मळ्युं जे भगवाननुं स्वरूप तेने सदा दिव्य साकार मूर्त्तिने सर्व अवतारनुं
कारण अवतारी एवुं जाणवुं ने जो एम न जाणे ने निराकार जाणे. ने बिजा अवतार जेवा जा
णे तो एना द्रोह कर्यो कहेवाय, अने जेम अर्जुन हता तेने तो भगवत स्वरूपनुं बळ हतुं अने
अने युधिष्टिर राजाने तो शास्त्रना वचननुं बळ हतुं. पछे ज्यारे भारते लडाइ थइ त्यारे श्री
कृष्ण भगवाने अर्जुनने कह्युं जे ॥ सर्वधर्मान्परित्यज्यमामेकंशरणंव्रज ॥ अहंत्वांसर्वपापेभ्योमोक्ष
यिष्यामीमाशुच ॥ १ ॥ ए श्लोकनो ए अर्थ छे जे, हे अर्जुन सर्व धर्मने तजीने तुं एक माराज

शरणने पाम्य. तो हुं तेने सर्व पाप थकी मुकावीश तुं कांइ शोक करीशमां. एवां वचनने मा-
नीने अर्जुन जे ते लडाइने विषे अनंत दोष थया तोपण लेशमात्र मनमां झांखा थया नहि अ
ने भगवानना आश्रयनुं बळ राखी रह्या. अने युधिष्ठिरे कांइ पाप कर्युं नहि तोपण शास्त्रना
वचननो विश्वास हतो, तेणे करीने एम जाण्युं जे मारूं कोइ काळे कल्याण नहि थाय.
पछे सर्वे ऋषिये समझाव्या तथा व्यासजीए समजाव्या तथा श्रीकृष्ण भगवाने पोते समजा
व्या, तोयपण शोक मुक्यो नही पछे श्रीकृष्ण भगवाने भीष्म पासे लइ जइने शास्त्र संबंधी
कथा संभळावी त्यारे कांइक विश्वास आव्यो तोयपण अर्जुन जेवा निःसंशय थयानही. माटे बु
द्धिमानने तो भगवत स्वरूपनुं बळ अतिशे राख्युजोइये. ए बळ जो लेशमात्र पण होय तो मो
टा भय थकी रक्षा करे ते पण श्री कृष्ण भगवाने कह्युंछे जे॥ स्वल्पमप्यस्यधर्मस्यत्रायेतमहतोभ
यात्॥ए श्लोकनो अर्थ एछे जे भगवतस्वरूपना बळनो लेशमात्र होय तेपण मोटा भयथकी र
क्षाने करेछे-जेम अर्जुने भारति लडाइकरी त्यारे तेनो विषे केटलीक जातना अधर्मरूपी मोटामोटा
भय आव्या पण ते भय थकी जे अर्जुननी रक्षा थइ ते भगवत स्वरूपना बळने प्रतापे थइ
माटे तेने संबंधी भगवत स्वरूपनुं बळ अधिक होय एव एकांती भक्त केवाय ने तेज पाको

सत्संगी केवाय अने श्रीमद्‌भगवतमां पण एज वात प्रधान छे जे श्रुतिस्मृतिना धर्मने कांइ तजाय तो तेनी चिंता नही, पण भगवानना आश्रय तजवो नही. अने कोइक एम जाणे जे आवी वात करीए तो धर्म खोटा थइ जाय, पण आ वार्त्ता कांइ धर्मने खोटा करया सारू नथी आतो एटला सारू छे जे देश काळ, क्रिया, संग, मंत्र, शास्त्र उपदेशने देवता एटलां वांना शुभने अशुभ ए बे प्रकारनां छे तेमांथी जो अशुभनो जोग थाय एने कांइक विघ्न पडे तोपण जो भगवानना स्वरूपमां निष्ठा पाकी होय तो ते कल्याणना मार्गमांथी कोइ काळे पडे नहि. अने जो भगवत स्वरूपनी निष्टामां काचप होय तो जे दिवस धर्ममांथी चळी जवाय ते दिवसे एम जाणे जे हुं नर्कमां पडी चुक्यो माटे जेने भगवत स्वरूपनुं बळ तेज पाको सत्संगी छे अने ए विना बिजा तो गुण बुद्धिवाळा कहेवाय. अने जेने भगवत स्वरूपनी निष्टापाकीहोय तेनेज शास्त्रमां पण एकांतिक भक्त कह्या छे. अने आ समामां जेवी सत्संगमां वार्त्ता थायछे तेने जो नारद सनकादिकने ब्रह्मादिक देवता सांभळे तो सांभळीने एम कहे जे आवी वार्त्ता कोइ काळे सांभळी पण नथी अने सांभळशुं पण नहि. आ वार्त्ता तो नभुतोनभविष्यति एवी छे. अने अतिशे झिणी वार्त्ता थाय छे तोपण अतिशे स्थुळ बुद्धिवाळा होय तेने पणसमजाय

छे एवी मुर्त्तिमान वार्त्ता थाय छे, माटे आ समे जेने सत्संगमां प्रतीति आवी छे तेना पुन्यनो पार आवे एम नथी एवुं जाणीने सत्संगी होय तेने पोताने विषे कृतार्थपणुं मान्युं जो इए. अने जेने भगवानने विषे अतिषे प्रीति होय तेने तो आ वार्त्ता समजाय अ- थवा न समजाय तो पण तेने तो कांइ करवुं रह्युं नथी, पण जेने परमेश्वरने विषे अ तिशे प्रीति तो न होय तेने तो जरूर भगवानना स्वरूपनो महीमा समज्यो जोइए माटे जे डाह्यो होय तेने तो आ वार्त्ता समजी विचारीने अति दृढ भगवाननो आशरो करवो एज म त अति सारमां सार छे॥ इति वचनामृतम्॥९॥१४२॥

संवत १८७८ ना श्रावण वदी ३ तृतियाने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी माहा राज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरवारमांथी घोडीए असवार थइने श्री लक्ष्मीवाडीए पधारया हता. पछे ते फुलवाडी मध्ये आंबाना वृक्षनी हेठे वेदी छे ते उपर उत्तरादु मुख क रीने विराजमान हता ने श्रीजी माहाराजे सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां तथा पोताना मु- खारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरि भक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी माहाराज बोल्या जे श्रीमद्भागवतमां साकारब्रह्मनुं प्रतिपादन छे पण जे वांचनारा

होय तेने जो परमेश्वरनी भक्ति न होय तो भगवाननुं स्वरूप श्री मद्भागवतमांथी पण निरा
कार समजाय छे. अने द्वतियस्कंधमां ज्यां आश्रयनुं रूप कर्युं छे त्यां पण भगवाननुं स्वरूप
भक्ती हिन होय तेने निराकार समजाय छे, पण भगवाननुं स्वरूप निराकार नथी.कांजे भग
वान थकीज सर्व स्थावरजंगम सृष्टी थाय छे ने जो भगवान निराकार होय तो ते थकी सा
कार सृष्टि केम थाय. जेम आकाश निराकार छे तो ते थकी जेवा पृथ्वी थकी घटादीक
आकार थाय छे तेवा थाता नथी तेम ब्रह्मादिक जे सृष्टी साकार छे तो तेना करनारा जे
परमेश्वर ते पण साकारज छे.अने भागवतमांअध्यात्म,अधिभुतने.अधिदैवएत्रणनो जे आधार
ते भगवाननुं स्वरूपछे एम कहुंछे. तेनी वात करीये ते सांभळी.अध्यात्मजेविराट रूपनां इद्रि
योने अधीभुत जे तेनां पंच महाभुत अने अधीदैव्य जे विराटनां इद्रियोना देवता ए सर्वे विरा
टने विषे आव्या,तोपण विराट उभा नथया. पछे वासुदेवभगवाने पुरुश रूपे थइने ज्यारेविराट
पुरुपने विशे प्रवेश कर्यो त्यारे विराट पुरुप उभाथया. तेभगवानविराटपुरुशनां जे अध्यात्म
अधिभुत ने अधिदैव तेने विशे तदात्मकपणे करीने वर्त्ते छे ने स्वरूपे तो विराट थकी न्या-
रा छे, ने तेनेज आश्रय करवा योग्य स्वरूप कह्युं छे, अने जेम अग्नि छे ते प्रकाश स्वरूपे

तो अरूप छे ने अग्नि पोते तो मुर्त्तिमान छे ते ज्यारे अग्निने अजिर्ण थयुं हतुं त्यारे मुर्त्तिमान अग्नि श्री कृष्ण भगवान ने अर्जुन पासे आव्यो हतो. पछे ज्यारे इंद्रनुं खांडव वन बाळवा गयो. त्यारे तेज अग्नि ज्वाळा रूप थइने समग्र वनमां व्याप्यो. तेमज पुरुषोत्तम भगवान छे ते ब्रह्म रूप जे पोतानी अंतर्यामी शक्ति तेणे करीने सर्वने विषे व्यापक छे. ने मुर्त्तिमान थकी सर्वथी जुदा छे. अने ब्रह्म छे ते तो पुरुषोत्तम भगवाननी किरण छे, नेपोते भगवान तो सदासाकार मुर्त्तिज छे. माटे जेने कल्याणने इच्छवुं .तेने तो भगवानने मुर्त्तिमान समजीने तेनो आश्रय दृढ राखवो. अने वात पण एवी करवी जे कोइने भगवाननो आश्रय होय ते टळे नहि.अने जेम स्त्रीना उदरमां गर्भ होय, पछे तेमांथी पुत्र रूप फळ उदय थायछे, तेम जेने भगवानना स्वरूपनो निश्चयरूप गर्भ होय तेने भगवाननुं जे अक्षर धाम ते रूप फळनी प्राप्ति थायछे. माटे एवो उपाय करवो जे जेणे करीने ए गर्भने विघ्न न थाय ने बिजाने पण एवी वात करवी, जेणे करीने भगवानना निश्चे रूप गर्भनो पात न थाय. पछे श्रीजीमहाराज वाडी थकी दादाखाचरना दरबारमां पधारया. अने उगमणे बारय. ओरडानी ओशरीए ढोलीया उपर विराजमान थया अने पोताना मुखारविंदनी आगळ पर्महंस तथा देशदेशना हरि-

भक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजीमहाराजे नाना पर्महंसनें बोलावीने परस्पर चरचा करावी. पछे अचितानंद स्वामीए प्रश्न पुछ्युं जे ज्ञान, वैराग्य ने भक्ति एत्रण ने विषे भगवानना स्वरूपमां प्रिति थयानुं विशेष कारण कोण छे? पछे ए प्रश्ननो उत्तर तो कोइथी थयो नहि. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ल्यो ए प्रश्ननो उत्तर अमे करीए जे ज्ञान, वैराग्य, भक्ति तेनुं रुप जूदुं जूदुं कहिये. जे जिव मात्रनो एवो स्वभाव छे जे सारु पदार्थ देखे त्यारे तेथी उतरतुं जे पदार्थ होय तेमांथी सहेजेज प्रिति टळी जाय छे माटे भगवाननुं जे अक्षरधाम छे ने तेने विषे जे सुख छे, तेनी आगळ जे अमाइक सुख छे ते तो नकल जेवुंछे. ने अचळ सुख तो भगवानना धामने विषेज छे. माटे परमेश्वरनी वातसांभळतां सांभळतां जो भगवान संबंधी सुख ओळखायतो जेटलुं माया थकी उत्तपन्न थयुं छे ते सर्वे तुच्छ जणाय. जेम त्रांबानो पैसो कोइक पुरुपना हाथमां होय तेने ज्यारे ते पैसा माटे सोनामोर कोइ आले त्यारे त्रांबानापैसामांथीहेत उतरी जाय छे. एवी रीते ज्यारे भगवान संबंधीसुखमां द्रष्टी पहोचे त्यारे जेटलुं माइक सुख छे ते सर्वथकी वैराग्य पामे छे,ने एक भगवाननी मूर्त्तिमांज हेतथाय छे ए वैराग्यनुं स्वरुप कह्युं छे.हवे ज्ञाननुं स्वरूप कहिये छिये. जे ज्ञान निरुपणने विषे [illegible]

छे. एक सांख्य शास्त्र, ने त्रिजुं योग शास्त्र. तेमां सांख्य शास्त्रनो मत ए छे जे जेम अ-
काश जे ते पृथ्वी,जल,तेज, वायु तेमां व्यापक छे अने अकाश विना एक अणुं पण कांइ
खाली नथी. तोपण पृथ्वी आदिकना जे विकार ते अकाशने अडताज नथी. तेम पुरुषोत्तम भ-
गवान छे तेने अकाशनी पेठे माइक विकार कोइ अडतोज नथि. ए वार्त्ता कृष्ण तापनी उप
निपदमां कहि छे. जे ज्यारे दूर्वासा ऋपि वंद्रावनने विपे आव्या त्यारे श्री कृष्ण भगवाने गो-
पियुंने कह्युं जे दुर्वासा भुख्या छे माटे सर्व थाळ लइने जाओ..पछे गोपियुंये पुछ्युं जे आडां
जमुनाजी छे ते केम उतराशे? त्यारे श्री कृष्ण भगवाने कह्युं जे जमुनाजीने तमे एम केहेजो
जे श्री कृष्ण सदा ब्रह्मचारी होय तो माग देजो. पछे गोपियुं हास्ति हस्ति जमुनाजीने कांठे
जइने एम कह्युं त्यारे जमुनांजीये तत्काळ माग दिधो. पछे गोपियुंये ऋपिने जमाड्या ते ऋ-
पि सर्वना थाल जमी गया, पछे गोपियुंये कह्युं जे अमे घेर केम करिने जइये आडां जमुनां
जि छे? त्यारे ते ऋपिये पुछ्युं जे आव्यां त्यारे केम करिने आव्यां हतां? पछे गोपियुंये कह्युं
जे श्री कृष्णे एम कह्युं हतुं जे अमे सदा बाळ ब्रह्मचारि होइये तो यमुनांजिने केहेजो जे मा
ग देजो.पछे जमुनाजिये माग दिधो ते तम पासे आव्यां छीए. ते वात सांभळीने ऋपि बोल्या

जेहवेजमुनांजिनेएम कहेजो जे दुर्वासासदाउपवासीहोयतो मागदेजो.पछेगोपियुं हास्तिहस्तिजइने ए
म कह्युं त्यारे जमुनाजियें तत्काल माग दिधो. त्यारे गोपियुं सर्व ए बे वात जोइने अतिशे आ
श्चर्य पामीयुं. माटे भगवाननुं स्वरूप तो एवुं आकाशनी पेठे निर्लेपछे,ने सर्व क्रीयायुनुं कर्त्ता थ
का भगवान अकर्त्ता छे, अने सर्वना संगी थका पण अत्यंत असंगी छे; एवी रितेसांख्य शा
स्त्र भगवानना स्वरूपने निर्लेपपणे करिने केहेछे एवूं समजनुं, ए सांख्यने मते ज्ञानछे. हवे योग
शास्त्रनो मत कहिये ते सांभळो? योगनो ए मत एम छे जे जेने भगवाननुं ध्यान करवुं होय
तेने प्रथम द्रष्टि स्थिर करवी ते द्रष्टि स्थिर करवा सारुं भगवाननी प्रतिमा अथवा बिजुं को
इ पदार्थ होय तेमां प्रथम द्रष्टिने ठेरावची. पछे एकने एक आकारने जोतां थकां द्रष्टि स्थिरथइ
जाय त्यारे ते भेळुं अंतःकरण पण स्थिरथायछे. ने ज्यारे अंतःकरण स्थिरथायत्यारे भगवान-
नी मूर्त्ति रुदामां धारवी. तेमां धारणा करनारा योगीने प्रयास न पडे, सुखे धराय छे. अ-
ने जो प्रथमथीज अभ्यास करीने अंतःकरणमां स्थिर न करे तो ज्यारे भगवाननुं ध्यान करे
त्यारे बिजां पण केटलांक टिखळ आडां आवीने उभां रहे. माटे योग शास्त्रनुं एज सिद्धांतछे
जे प्रथम अभ्यास करीने वृत्ति स्थिर करवी ने पछे भगवानसंघाथे जोडवी,एम जाणवुं ए यो-

ग शास्त्र संबंधी ज्ञान छे. एवी रीते ए बे शास्त्रने मते करीने जे समजण दृढ करवी तेनुं नाम ज्ञानछे.हवेभक्तिनीरीततोएमछे जेज्यारेसमुद्रमंथनकर्युं,त्यारे समुद्रमांथी लक्ष्मीजीनिसर्यां पछे लक्ष्मीजीये हाथमां वरमाळा लेइने विचार कर्यो जे वरवा योग्य कुण छे, तेने हुं वरु. पछे ज्यां तपासीने जोयुं त्यां तो जेमां रूप तेमां रुडा गुण नहि, ने जेमां कांइक गुण तेमां रूप नहि. एवी रीते घणांकने विषे मोटां मोटां कलंक दिठां, पछे देवता मात्र तथा दैत्य मात्र तेने कलंके करीने भर्या देखीने सर्व गुणे करीने संपूर्ण अने सर्व दोषे रहित ने सर्वसुखनां निधान एवा एक भगवाननेदिठात्यारेलक्ष्मीजीनेभगवाननेविषे दृढभक्तिथइपछे अतिप्रेमे करीने भगवानने वरमाळा पहेरावीने भगवानने वर्या. माटे एवा जे कल्याणकारी गुणने जे जाणवाने परमेश्वरनो दृढ आश्रय करवोतेनुंजनामभक्तिछे.ए वार्त्तासांभळीनेमुक्तानंदस्वामीएश्रीजीमहाराजनेपुछयुंजेहे महाराज ज्ञान,वैराग्यनेभक्ति एने मध्ये परमेश्वरने विषे प्रिति थवानुं केने विषे अधिक दैवत आव्युं ते समजाणुं नहि. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे भक्तिने विषे दैवत घणुं छे ने ज्ञान वैराग्यमां दैवततो छे पण भक्ति जेटलुं नथी. अने भक्तितो अति दूर्लभछे.ते भक्ति वाळानां लक्षण आवां होय छ जे, ज्यारे जिवुंना कल्याणने अर्थे भगवान मनुष्य जेवी मूर्ति धरीने पृथ्वीने विषे वि-

चरे छे. त्यारे भगवाननां केटलांक चरित्र तो दिव्य होय ने केटलां चारित्र तो माइक जेवां होय. ते ज्यारे भगवाने कृष्ण अवतार धार्यो त्यारे देवकी वसुदेवने चतुर्भुज दर्शन दिधुं तथा गोवर्धन तोळ्यो तथा काली नागने काढीने जमुनाजीनुं जळ निर्विख कर्युं तथा ब्रह्मानो मोह निवारण कर्यो तथा अक्रुरजीने जमुनांना जळने विषे दर्शन दिधुं तथा मल,हस्ति,कंसादिक दुष्टने मारीने सर्वे जादवनुं कष्टनीवारणकर्युं;तेमज रामावतारने विषे धनुष भाग्युं तथा रावणादिक दुष्टने मारीने सर्वे देवतानुं कष्ट निवारण कर्युं इत्यादिक जे पराक्रम ते भगवाननां दिव्य चरित्र कहेवाय.अने सीता हरण थयुं त्यारे रघुनाथजी रोता रोता घेला जेवा थइ गया तथा कृष्णावतारमां काळ जवननी आगळ भाग्या तथा जरासंधनी आगळ हार्या ने पोतानी राजधानी जे मथुरां तेने तजीने समुद्रना बेटमां जइने वश्या, इत्यादिक जे भगवाननां चारित्र प्राकृत जेवां जणायछे. माटे दिव्यचारित्र होय तेमांतो पापीहोय तेनेपण दिव्य पणुं जणाय, पण ज्यारे भगवान प्राकृत चरीत्र करे तेनेविशे पण जेने दिव्यपणुं जणाय त्यारे ते परमेस्वरनो भक्त साचो अने ते भगवानने गीतामां कह्युंछे जे॥ जन्मकर्मचमेदिव्यमेवंयोवेत्तितत्वत ः॥तस्मादेहंपुनर्जन्मनैतिमामेतिसार्जुन॥ २॥ ए श्लोकनो एम अर्थ छे जे हे अर्जुन मा

रां जन्मने कर्म ते दिव्यछे तेने जे दिव्य जाणे ते देहने मुकीने फरीने जन्मने नथीपामतो मु
नेज पामेछे. माटे जे भगवान दिव्य चारित्रकरे तेतभक्तनेअभक्तबेयनेदिव्य जणाय, पण ज्यारे भ
गवान मनुष्य जेवां प्राकृत चरीत्र करे, तोपण तेनेविशे जेने दिव्यपणुं जणाय, पण कोइरीते
भगवाननां चरीत्रमां अभावआवेनही एवी जेनी बुद्धिहोय तेने परमेश्वरनी भक्ती कहेवाय ने ए
वि भक्तिकरे तेज भक्तकहेवाय. अने एश्लोकमां कह्युंछे जे फळ आवभक्तनेथायछे.अने जेम गो
पियुं भगवानना भक्तहता तो कोइरीते भगवाननो अवगुण लीधोज नही. अने राजा परिक्षित
तेतो गोपियुंनी वात सांभळी एटलामांज भगवाननो अवगुण लीधो. पछे शुकजीये भगवाननुं
समर्थपणुं देखाडीने ते अवगुणने खोटो करीनांख्यो. माटे भगवान जेजे चारित्र करे ते सर्वेने
गोपियुंनी पेठे दिव्य जाणे, पण कोइ रीते प्राकृत जाणीने अभावतो आवेजनही एवि जे भक्ति
तेतो महा दूर्लभछे. अने एक बे जन्मे ने सुकृते करीने एवी भक्ति न आवे. एतो अनेक जन्मना
ज्यारे शूभसंस्कार भेळाथायछे त्यारे तेने गोपियुंनी सरखीभक्ति उदेथायछे ने एवीभक्तिछेतेज प
परम पदछे माटे आवारितिनी जे भक्तिते ज्ञान वैराग्य थकी अधिक छे. अने जेना हृदानेविशे
आवीरीतनी भक्ति होय तेने भगवानने विशे मितीमां शुं बाकीछे? कांइ बाकी नथी॥इति

संवत १८७८ ना श्रावणवादि ५ पंचमीने दिवसे स्वामी श्री सहजानंदजी माहाराज श्री गढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारयणना मंदीर आगळ लींबडाना वृक्ष हेठळ ढोलीया उपर वीराजमान हता, ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रिजीमहाराजबोल्या जे जेटला ग्रंथछे ते सर्वे ग्रंथुने सांभळीने केटलाक जे जिवछे ते ए ग्रंथुंने धर्म अर्थ ने कामपर जाणे छे. पछे एम जाणीने पोते पण धर्म अर्थने काम तेनेज अर्थे यज्ञव्रतादिक शूभ कर्म करेछे. पछे ते कर्मनुं फळ देव लोक, अथवा ब्रह्मलोक, अथवा मृत्यलोक, तेने विषे भोगवीने पछे त्यांथी पडेछे ने नर्क चोराशीमां जायछे. माटे ने जिवःधर्म, अर्थने काम तेने विषे प्रिति राखीने जे जे सुकृत करेछे ते सर्वे सात्विकी, राजसी ने तामसी थायछे ने ते कर्मनुं फळ, स्वर्ग मृत्युने पाताळ ए त्रण्य लोकमां रहिने भोगवाय छे, पण गुणातीतजे, भगवाननुं धाम तेने पामे नाहि. अने ज्यारे मोक्ष न थाय त्यारे जन्ममरण ने नर्कनुं दुःख ते मटे नहि. ने जो धर्म अर्थने काम संबंधी जे फळनी इच्छा त्याग करीने तेना ते शूभ कर्म जो भग

वाननी प्रसन्नताने अर्थे करे तो एज शूभ कर्मछे, तेज भक्तिरुप थइने कैवल्य मोक्षने अर्थे थायछे. त्यां श्लोक छे जे. ॥आमयोयेनभुतानांजायतेयश्चसुव्रतः॥ तदवह्यामयंद्रव्यंनपूनातिचिकित्पितः॥१॥एवंनृणाक्रियायोगाःसर्वेसंसृतिहेतवः॥तएवात्मविनाशायकल्पंतेकाल्पिताःपरे॥२॥ए श्लोकनो पूर्वे वात करि एज भाव छे. माटे ए वार्त्ताछे ते सुधि अटपटि छे. ते जो पूरि समजाणी न होय तो भगवानना भक्त होय तेनो पण सर्वे अज्ञानी जिवना सरखो देहनो व्यवहार जोइने ने भगवानना भक्तनो अवगुण ले, तेणे करिने अवगुणनो लेनारो नाशकि थायछे.ने भगवानना भक्तनी, ने विमुख जिवनी क्रियामां तो घणो फेरछे. केम जे विमुख जे जे क्रिया करेछे ते पोतानी इंद्रियोने लडाववाने अर्थे करेछे. ने भगवाननो भक्त जे जे क्रिया करेछे तेतो केवळ भगवानने भगवानना भक्त तेनी सेवाने अर्थे करेछे, माटे हरिजननी जेसर्वे क्रिया तेतो भक्ति रूपछे ने जे भक्तिछे तेतो नैष्कर्म जे ज्ञान ते रूपछे. माटे हरिजननी क्रियाछे तेतो सर्वे नैष्कर्म रूपछे. त्यां श्लोक भगवद्गितानोछे॥कर्मण्यकर्मयःपश्येदकर्मणीचकर्मयः॥सबुद्धिमान्मनुष्येषुसयुक्तःकृत्स्नकर्मकृत॥ए श्लोकनो एम अर्थ छे जे भगवाननो भक्त होय ते भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे जे जे कर्म करेछे, ते कर्मने विषे अकर्म जे ज्ञान तेनेज देखेछे ने विमुख होय ते निवृतिमार्ग प-

कडीने अकर्मपणे रेहेतो होय तोपण तेने कर्ममां बुडयो छे एम जे देखे छे. ते देखनारो सर्वे मनुष्यने विषे बुद्धिमान छे, ने ज्ञानी छे. माटे भगवाननी आज्ञाये करिने भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे भगवानना भक्त जे जे कर्म करेछे तेनो कोइ रिते अवगुण जो ले तो तेना रुदाने विषे कूटंबे सहित अधर्म आवीने निवास करे छे.॥इति वचनामृतम्॥१२॥१४४॥

संवत १८७८ ना श्रावण वदी ६ ने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बारय ओरडानी ओशरीए श्री वासुदेव नारायणना मंदीर आगळ विराजता हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ पर्महंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे एक वात करीए छीए ते सर्वे सांभळो. अने आजे वार्त्ता केहेशुं तेमां एकज साधन कल्याणने अर्थे केहेशुं ते एकने विषे सर्वे साधन आवी जाय एवुं बळवान कल्याणनुं साधन छे, ते कहिए छीए. जे देहने विषे जे जीव छे ते एम जाणे छे जे काम, क्रोधादिक भुंडी प्रकातियुं छे ते मारा जिव संघाथे जडाणी छे. एवी रीते कामादि जे जे प्रकृति जेने विषे मुख्य होय, ते प्रकृतिने योगे करीने पोताना जिवने कामी, क्रोधी, लोभी, इत्यादिक कुलक्षणे जुक्त माने

छे पण जिवने विषे तो ए एके कुलक्षण छे नहि. एतो जिवे मुर्खाइ करीने पोताने विषे मानी लीधा छे. माटे जेने पर्मपद पामवा इच्छनुं तेने कांइक पोताने विषे पुरुषातन राखवुं, पण छेक नादार थइने बेसवुं नहि. ने एम विचार करवो जे जेम आ देहमां चार अंतःकरण छे, दश इंद्रियुं छे, पंच प्राण छे. तेम हुं जिवात्माछुं. ते पण आ देहने विषे छुं ते ए सर्व थकी आधिक छुं ने सर्वनो नियंता छुं. पण एम न मानवुं जे हुंतो तुच्छछुं ने अंतःकरण, इंद्रियो तो बळवान छे. जेम कोइक राजा होय ने ते बुद्धिहिन होय पछे एना घरमां मनुष्य होय ते पण तेनुं वचन माने नहि. पछे ए वार्त्तानी ज्यारे गामना मनुष्यने खबर पडे त्यारे गाममां पण कोइ हुकम माने नहि, पछे देशमां मनुष्य ए वात सांभळे त्यारे देशनां मनुष्य पण कोइ एनो हुकम माने नहि. पछे ते राजा ग्लानी पामीने असमर्थ थइने बेसी रहे, अने कोइ उपर हुकम चाले नहि. तेम राजाने ठेकाणे जिव छे, अने घरना मनुष्यने ठेकाणेअंतःकरण छे, ने गामनां ने देशनां मनुष्यनेठेकाणे इंद्रियुं छे, ते ज्यारे ए जिव नादार थइने बेसे ने पछे अंतःकरण उपर हुकम करीने परमेश्वरसनमुख राखवाने इच्छे त्यारे अंतःकरण एनुं कह्युं करे नहि, ने इंद्रियुंने वश राखवाने इच्छे तो इंद्रियु पण एने वश रहे नहि. पछे ए जिव काया नगरने

विषे राजा छे तो पण रांकनी पेठे ओशियाळो थइ रहे छे. अने ज्यारे राजा नादार थाय त्यारे तेना नगरने विषे मनुष्य होय ते सांढ थइने वेसे छे; ने राजानुं लेश मात्र चालवा दे नहि. तेम आ जिवनी काया नगरने विषे पण जे कामादिक राजा नथी ते राजा थइने वेसे छे अने ए जिवनुं लेश मात्र चालवा देता नथी. माटे जेने कल्याणने इच्छवुं तेने एवुं नादार पणुं राखवुं नहि. ने जे प्रकारे पोतानी इंद्रियुंने अंतःकरण ते सर्वे पोतानां हुकममां वर्त्ते एवो उपाय करवो. जेम राजा होय ते राज नितिना ग्रंथ, भणीने पोताना राज्यमां पोतानो हुकम चलावे, पण रइयतनो दवाव्यो दवाय नहि. अने जो राज निति न जाणतो होय तो ते वस्ती हुकम न माने तेने मारवाज मांडे. पछे पोतानो देश होय ते उजड थइ जाय, अने कांतो कोइ हुकमज माने नहि, तेणे करीने पोते दुखीयो थको वर्त्ते. एवी रीते राज्य निति जाण्या विना वे वाते वगाड थाय छे. तेम जिव पण जो राज्य नितिने जाण्या विना काया नगरमां हुकम करवा जाय तो एमांथी सुख थाय नहि. पछे मुक्तानंद स्वामीए श्रीजी महाराजने पुछयुं जे कल्याणने इच्छे तेने केम राज निति भणवी. त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे राज्य निति एम भणवी जे प्रथम तो भगवाननुं महात्म सारी पेठे जाणवुं प-

छे भगवाननी मूर्त्तिनुं ध्यान करीने मनने वश करवुं, ने भगवाननी थका सांभळीने श्रोत्रने व-
श करवा पण ग्राम्य वार्त्ता होय ते सांभळवा देवा नहि. तेमज त्वचा ते भगवानने भगवानना
जन तेनो स्पर्श करे ने नेत्र ते परमेश्वरने तेना दास तेनुंज दर्शन करे ने रसना ते अखंड
भगवद्गुणनेज गाय ने भगवाननो प्रसाद होय तेनोज स्वाद ले ने नासीका ते भगवाननां प्रसा
दि जे पुष्पादिक तेनोज सुगंध ले पण, कुमार्गे कोइ इंद्रिने चालवा दे नहि एवी रीते जे वर्ते
तेना देहरुपी नगरने विषे हुकम कोइ फेरवे नहि. अने एवी रीते पुरुष प्रयत्ने जुक्त जे वर्त्ते ने
नादार पणानो सारी पेठे त्याग करे एज कल्याणने मार्गे चाल्यो, तेने स्वभाव जित्यानो अतिशे
मोटो उपाय छे. ने ए पुरुष प्रयत्न रूप जे उपाय छे, तेने सावधान थइने करे तो जेटलां क-
ल्याणने अर्थे साधन छे ते सर्वे पुरुष प्रयत्न रूपी साधनने विषे आवे छे माटे पुरुष प्रयत्नछे ते
जे कल्याणने अर्थे सर्वे साधन थकी मोटुं साधन छे. इति वचनामृतम्॥१२॥१४५॥

संवत १८७८ ना श्रावण वदी अमाव्यासाने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी माहा
राज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिरनी ओसरिये
चाकळा उपर विराजमान हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो तथा धोळी चादर ओढी हती ने म

स्तक उपर श्वेत पाघ बांधी हती. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराजे पोताना बे भुज उंचा उपाडीने सर्वने छाना राख्या, ने पछे पोताना मुखारविंदनी आगळ स्तुतिने करीने बेठा एवा जे संत ते प्रत्ये श्रीजी महाराज एम बोलता हवा जे, हे संतो जे मोटेरा मोटेराहोने वातमां समजता हो ते आगळ बेसो. ने आ एक वात करूंछुं ते सर्वे चित्त दइने सांभळज्यो. अने आ जे मारे वात करवी छे ते कांइ दंभे करीने नथी करवी, तथा माने करीने नथी करवी, तथा पोतानी मोटयप वधार्या सारूं नथी करवी. एतो एम जाणीये छीए जे आ सर्वे संत तथा हरीभक्त छे, ते मांथी ए वात कोइने समजाइ जाय तो तेना जिवनुं अति रूडुं थाय, ते सारूं करीये छीये. अने आ जे वात छे ते मारी दिठेल छे ने मारा अनुभवे करीने पण में सिद्ध करी छे अने सर्वे शास्त्रमां पण मळती आवे छे, ने ते ए वात सभामां कर्या जेवी नथी तो पण सभामां करीए छीए जे मारे सहज स्वभावे एम वर्ते छे जे आ संसारने विषे जे अति रूडो शब्द तथा अति रूडो स्पर्श तथा अति रूडो गंध तथा अति रूडो रस तथा अति रूडुं रूप ए जे पंच विषय तेमां हुं मारा मनने बांधवाने इच्छुं तो पण नथी बंधातुं, ने एमां अतिशे उदास रहे छे.

श्रने ए जे सारा पंच विषय तथा नरसा पंच विषय ते बेय सम वर्त्ते छे श्रने राजा तथा रंक ते पण समवर्त्ते छे. श्रने त्रिलोकनुं राज करवुं तथा ठिकरूं लेइने मागी खावुं ते पण सम वर्त्ते छे. श्रने हाथीने होदे बेसवुं तथा पग पाळा चालवुं ते पण समवर्त्ते छे, ने कोइक चंदन तथा पुष्प तथा सारां वस्त्र तथा घरेणां चढावे, तथा धुळ नांखे ते बेय समवर्त्ते छे, ने कोइक मान श्रापे तथा कोइक श्रपमान करे ते बे पण समवर्त्ते छे, तथा सोनुं, रुपुं, हिरो तथा कचरो ते बेय समवर्त्ते छे. श्रने श्रा हरिभक्त बहु मोहोटो छे,ने श्रा हरिभक्त नानो छे एम पण नथी जणातुं. बधाय हरिभक्त सरखा जणाय छे. श्रने मारा श्रंतःकरणने विषे श्रति तिव्र वैराग्य वर्त्ते छे तेनो पण भार नथी जणातो. जेम कोइके माथे पाणो उपाड्यो होय तथा रुपैया ने सोना मोरनी वांसळी केहेडे बांधी होय तेनो भार जणाय छे, तेम भार नथी जणातो ने मारे विषे स्वधर्म छे तेनो भार नथी जणातो तथा मारे विषे ज्ञान छे जे हुं ब्रह्म छुं तेनो पण भार नथी जणातो. श्रने श्राजेहुं उपरथकीकोइपदार्थनेवखाणुं छुं नेकोइकपदार्थने कुवखाणुंछुं,तेतोजाणीजाणीनेकरूंछुंश्रनजेजेपदार्थनेविषेइंद्रियुनीवृत्तिनेबळात्कारेजोडुंछुंतेमांडमांड ते पदार्थ सनमुख रेहेछे, श्रने ज्यारे ढीलि मेलुंछुं त्यारे ते तरत पाछी वळी श्रावेछे, जेमश्रा-

काशने विपे पथरो फगावीये ते ज्यां सुधि हाथने जोरे करीने ठेलाय त्यां सुधिजआकाशने विपे रहे ने पछे पाछो पृथ्वीने विपेआवीने पडेछे. अने जेम पूछलेल ढोर होय तेने माणस बळात्कारे करिने ज्यां सुधि उंचुं झालि राखे छे त्यां सुधि रहे ने ज्यारे मुकि दे त्यारे धब लेइने पडि जाय अने जेम कोइक पुरुष मूछ एटलो बळियो होय ने दांते आखी सोपारी भांगी नांखतो होय अने ते पुरुषने दश विश कागदी लिंबु चुसाव्यां होय पछे ते शेकेल चणा पण मांड मांड चावे तेम विषय सनमुख बळात्कारे वृतिने जोडीए छिए. तेमां मांड मांड जोडाय छे ते आजे एम मुने वर्त्ते छे तेनुं शुं कारण छे? तो मारी इंद्रियुंनी जे वृति छे ते पाछी वळीने सदा हृदाने विपे जे आकाश छे तेना विपे वर्त्ते छे अने ते हृदा आकाशने विपेअतिशे तेज देखाय छे. जेम चोमासाने विपे आकाशमां वादळां थइ रह्यां होय तेम मारा हृदाने विपे एकलुं तेज व्यापि रह्युंछे, अने ते ते तेजने विपे एक भगवाननी मूर्त्ति देखायछे. तेअति प्रकाशमय छे, ने ते मूर्त्ति घनशांम छे. तोपण अतिशे तेजे करिने श्याम नथि जणाती, अतिशे श्वेत जणाय छे ते मूर्त्ति द्विभुज छे, अने ते मूर्त्तिने बे चरण छे अने अतिशे मनोहर छे पण चार भुजा, के अष्टभुजा, के सहस्त्र भुजा, ते ए मूर्त्तिने नथी. ए मूर्त्ति तो अति सौम्य छे

अने मनुष्यना जेवि आकृति छे ने किशोर छे. ते ए मूर्त्ति कयारेक तो, ए तेजमां उभि दे-
खाय छे, ने क्यारेक बेठि देखाय छे, ने क्यारेक हरति फरति देखाय छे. ने ए मूर्त्तिने चा-
रे कोरे मूक्तना मंडल भराइने बेठाछे ने ते सर्वे मूक्तछे. ते एक नजरे ते भगवाननी मूर्त्ति सा
मु जोइ रह्या छे ते मूर्त्तिने अमे प्रगट प्रमाण हमणां पण देखीये छिये. अने सतसंगमां नो-
होता आव्या त्यारे पण देखता, अने माताना गर्भमां हता ते दिवस पण देखता. अने गर्भमां
आव्या मोरे पण देखता अने अमे बोलिये छिये ते पण त्यांज बेठा थका बोलिये छिये अने
तमे पण सर्वे त्यांज बेठाछो एम हूं देखुंछुं, पण आ गढडुं सेहेर के आ ओसरिए कांइ दे-
खातुं नथि. अने ज्यारे ए स्वरूप जेणे जाण्यामां आवे तेने जेम अमने कोइ विषय संबंधि सु-
खमां आसक्ति नथी तेम ते पूरुषने पण क्यांइ आसक्ति रेहेज नहि अने ते स्वरूपने तो त-
मे पण देखोछो, पण तमारा समजामां परिपूर्ण आवतुं नथी. अने ज्यारे ए वार्त्ता स-
मज्यामां आवशे त्यारे पंच विषय के काम क्रोधादीक स्वभाव ते जित्यामां प्रयास थाशे नहि.
सेहेजे जिताइ जाशे अने ए जे एक रसतेज छे, तेने आत्मा काहिए तथा ब्रह्म काहिए ने अ-
क्षरधाम काहिए अने ए प्रकाशने विषे जे भगवाननी मुर्त्ति छे तेने, आत्मानुं तत्व काहिए

तथा परब्रह्म कहिए तथा पुरुषोत्तम कहिए, तेज भगवान राम कृष्णादिक रूपे करीने पोतानी इच्छाए जिवनां कल्याणने अर्थे जुग जुगने विषे प्रगट थाय छे, ते भगवान लोकने विषे मनुष्य जेवा जणाय छे तोपण मनुष्य जेवा नथी. ने अक्षर धामना पति छे, ते श्रीकृष्ण भगवाने गीतामां कह्युं छे जे ॥ नतद्भासयतेसूर्योनशशांकोनपावकः ॥ यद्गत्वानंनिवर्त्ततेतद्धामपरमंमम॥ माटे श्रीकृष्ण भगवान मनुष्य जेवा जणाता हता तोपण अक्षरातित कैवल्य मुर्त्तिज छे. अने भगवान जे मनुष्य देहने धरे छे ते भगवाननी मुर्त्तिनुं जे ध्यान करे त्यारे ए ध्यानना करनाराने ए मुर्त्ति तेजोमय एवी अक्षरधामने विषे कैवल्य स्वरूपे भासे छे ने ध्यानना करनारानो जे जिव ते मायाने तरे छे, अने परमपदने पामे छे. माटे भगवान तो मनुष्य देह धारण करे छे, तोपण कैवल्य रूपेज छे. अने ते भगवान जे जग्यामां विराजता होय ते जग्या पण निर्गुण छे, अने ते भगवानना वस्त्र अलंकार तथा वाहन तथा परिचर्याना करनारा जे सेवक तथा खानपानादिक जे जे पदार्थ भगवानना संबंधने पामे छे ते सर्वे निर्गुण छे, एवी रीते जेणे भगवाननुं स्वरूप जाण्युं तेने अमारी पेठेज पंच विषयमां क्यांइ प्रीति रेहेती नथी ने ते स्वतंत्र थाय छे. अने ए अक्षारातित जे पुरुषोत्तम भगवान छे, तेज सर्वे अवतारनुं कारण

छे अने सर्वे अवतार पुरूपोत्तममाथी प्रगट थाय छे अने पाछा पुरूपोत्तमने विषे लिन थायछे
ते ज्यारे भगवान मूर्त्ति धरीने पाछा अंतरध्यान थाय छे त्यारे ते जे भगवाननी मूर्त्ति ते क्या-
रेक तो मनुप्यनी पेठे आ प्रथवीने विपे पडी रहे छे ते जेम श्रीकृष्णनी मूर्त्तिने खोळामांलेइने
रूक्मणीजि बळी मुवां तथा रूपभदेवनो देह ते दावानळने विपे बळी गयो एम पण थाय.अ-
ने क्यारेक तो हाड मांस सहित दिव्यभाव पामीने कांइ रहे नहि, अंतर्द्धान थइ जाय. अने
ज्यारे प्रगट थाय त्यारे पण क्यारेकतो स्त्रि थकी जन्म धरे ने क्यारेक तो पोतानी इच्छामां
आवे त्यां थकी प्रगट थइ आवे छे,.एम ए भगवानना जन्मने देह मुक्यानी रीती तो अलो-
किक छे अने ज्यारे एवुं भगवाननुं स्वरूप छे, तेने दृढ करीने समजशोत्यारेतमनेकोइप्रकारनुं
विघन कल्याणनामार्गनेविपे नहि थाय ने ए भगवानना स्वरूपनीदृढताविना तो गमेतेटलो त्याग
राखो ने गमेतेटला अपवास करो पण काइरीते खांमी भागशे नहीं अने तमे एम केशोजे
अमनेतो एस्वरूपनी तमे जेम कहोछो तेम दृढताछे तोपण प्राणइंद्रियो केम-लीन नथीथातां
तो एतो परमेश्वरनी इछाये एम रह्युंछे एम समजवुं. पण तेने कांइ करवुं रह्युंनथी एतो कृतार्थ
छे.अने एतो सर्वे साधनना अंतने पाम्योछे अने जो भगवानना स्वरूपनी आवीरीते दृढता होय

ने कदाचित जो निर्मान,निर्लोभ,नीष्काम,नीस्वाद ने नीस्नेह एमां कांइक थोडीघणी काचप र
होजाय तो तेनी कांइ चिंतानथी पण भगवानना स्वरूपमां जो कोइ. रीतनी समज्यमां कस
र रहेतो कोइरीते वांधो भागशे नही, माटे देह छे ते जे प्रकारे आवो रहस्य समजाय तेवोउपा
य करवो. अने आ वार्ता यथार्थ समजांणी होयने कोइक प्रारब्ध कर्मने वश थइने जोकोइक
निच उंच देहनी प्राप्तिथाय तोपण वृत्रासुरनी पेठे ज्ञान जाय नही तथा जेम भरत तजीने मृग
नो देह आव्यो तोपण पुर्वजन्मनुं ज्ञान टल्युं नही एवुं आ ज्ञाननुं अतीशे महात्मछे अने
नारद सनकादिकने ब्रह्मादिकदेवतेमनीसभामांपणनिरंतरआज वारताथायछे अने आवी भगवत
स्वरूप संबंधी जे वार्त्ता तेतो शास्त्रमांथी पोतानी मेळे समजायनहीअने सद्ग्रंथमां आवी वार
ता होय पण ज्यारे सत्पुरुष प्रगट थायछे त्यारे तेमना मुखथकी एजवात समज्यामां आवेछे
पण पोतानी बुद्धि वळे करीने सत् ग्रंथमांथी पण समजाती नथी. अने जेने आवी रीते यथा-
र्थ भगवाननुं स्वरूप समज्यामां आव्युं छे, तेने जो भूत, भविष्य ने वर्त्तमान ए त्रणे काळने
विषे दृष्टि पोहोंचति होय तो पण तेने ए वातनो कोइ गरव होय नहि अने कोइने वर के शा
प दे नहि, ने कोइ ठेकाणे वर के शाप दे पण खरा, ने कोइ ठेकाणे निरभे रहे, ने कोइ

ठेकाणे त्रिये पण खरा. पण तेणे करीने पोते कांइ हर्ष शोक मनमां लावे नहि. अने जेने भग-
वानना आ कह्या एवी रीते दृढ आश्रय होय ते जाणीने तो भुंडुं कर्म करेज नहि पण क
दाचित्त भुंडो देशकाळादिकने जोगे करीने जो कोइ अवळुं कर्म थइ जायतो पणतेदृढ आ-
श्रय वाळो कल्याणना मार्ग थकी पडी जाय नहि. माटे ए जे भगवाननो दृढ आश्रय छे एवो
निर्विघ्न मार्ग कोइ नथी, ए वात जेने समजाणी होय तेनो तो अति मोटो आशय होय जुवो
ने अमारे पर्महंस तथा सत्संगी समस्त पासेथी कांइ स्वार्थ साधवो नथी तो पण कोइने वा
लाविए छीये, कोइने वढिए छीए, कोइने काढी मुकीए छीए तेनुं एज प्रयोजन छे. जे कोइ
रीते आ वात सभळाय तो बहुं सारुथाय माटे आ वार्ता छे ते सर्वे दृढ करीने राखज्यो.
अने जे तेजनेविशे। मुर्तिछे तेज आ प्रत्यक्ष महाराज छे एम जांणज्यो ते ते एम न जणाय
तो एटलुंतो जरूर जांणज्यो जे अक्षर रुप तेज तेने विशे जे मुर्तिछे तेने महाराज देखछे
एम जांणशो तोपण तमारे मारेविशे हेत रहशे तेणेकरीने तमारु परम कल्यांणथाशे अने आ
वातने नीत्ये नविने नवी राखज्यो पण गाफलपणे करीने विसारी देशोमां आज छेतेविजकाल्य
नवि राखज्यो, अने तेविज देहना अंत थाय त्यां सुधी पण दिन दिन प्रत्ये नविने नविराखज्यो.

अने जे जे भगवाननी वात करो ते ते वातने विषे आ वातनुं बिज लावजो एम अमारी आज्ञा छे. अने आ वार्त्ता तो एवी जिवनदार छे जे देह रहे त्यां सुधी पण नित्य प्रत्ये करवी. अने देह मुकीने भागवति तेनुंए करीने पण आज वार्त्ता करवी छे ने आजे अमे तमने वात काहि ते सर्व शास्त्रनो सिद्धांत छे ने अनुभवमां पण एमज दृढ छे, अने अमे प्रत्यक्ष नजरे जोइने तमने आ वात कहिं छे, ने जो प्रत्यक्ष जोइने न कही होय तो अमने सर्व पर्महंसना सम छे. एवी रीते श्रीजी महाराजे पोताना भक्तजननी शिक्षाने अर्थे परोक्षपणे पोताना पुरुषोत्तमपणानी वार्त्ता करी तेने सांभळीने सर्वे साधु तथा हरी भक्त ते एमज मानता हवा जे, जे तेजने विषे मुर्त्ति कही तेज आ श्रीजीमहाराजप्रत्यक्षप्रमाण छे॥ इतिवचनामृतम्. ॥ १३ ॥ १४६ ॥

संवत १८७८ ना भादरवा शुदि १ प्रतिपदाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी माहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिरनी पासे उत्तरादे बारणे ओरडानी ओशरि उपर विराजमान हता ने श्वेत खेस पहेर्यो हतो श्वेत चादर ओढी हती ने मस्त उपर श्वेत फेंटो बांध्यो हतो ने ते फेंटा उपर राता कर्णिकारना पुष्पनुं छोगलुं विराजमान हतुं अने संदर कंकनो चांदलो

ने पो

ताना मुखारविंदनी आगळ मुनी मंडळ तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे मुक्तानंद स्वामीए पुछयुं जे भगवानना स्वरूपने विषे जे संत तदात्मक-पणाने पामे छे ते समाधिये करीने पामे छे के एनो कोइ बिजो पण उपाय छे? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे जेणे भगवाननुं स्वरूप जेवुं काल अमे कह्युं तेवुं यथार्थ जाण्युं होय ने तेमां कोइ जातनुं उत्थान रह्युं न होय. जेम आ लिंबडानुं वृक्ष छे ते एकवार जाणी लीधुं छे, पछे कोइ रीते मनमां संकल्प थातो नथी जे लिंबडो हशे के नहि होय. एवी रीते गमे तेनो संग थाय अने गमे तेवां शास्त्र सांभळे पण कोइ रीते करीने भगवानना स्वरूपनो निश्चय कर्यो होय तेमांथी मन डगमगे नहि. एवो जे निरुत्थान पणे भगवाननो निश्चय, एने अमे तदात्मक पणुं कहिए छीए अने एवुं जे तदात्मकपणुं ते भगवानना एकांतिक भक्तना प्रसंगे करीने थाय छे, पण केवळ समाधिये करीने नथी थातुं, ने एवुं जे ए तदात्मक पणुं तेने ज निर्विकल्प समाधि कहिए छीए, ने एवी जातनी जेने निर्विकल्प समाधि थइ होय ते संतनुं स्वरूप पण निर्गुण ब्रह्म छे. अने एवा अडग निश्चयवाळा जे संत ते निवृत्ति मार्गने विषे वर्त्ते अथवा प्रवृत्ति मार्गने विषे वर्त्ते तो पण एनुं निर्गुण रूप छे. जेम नारदसनकादिक ए सर्व निवृत्ति मार्गने विषे प्रवर्त्या, अने सप्त ऋषि

तथा जनकादिक राजा ए सर्वे प्रवृति मार्गने विषे प्रवर्त्या पण ए सर्वेने भगवानना निश्चए करी ने निर्गुण जाणवा, अने जे निवृति मार्गने विषे प्रवृत्या होयने जोभगवाननो निश्चय न होय तो तेने माइक गुणे करीने सगुण जाणवा. अने एम जाणवुं जे आ अतिशे त्यागी जणाय छे पण एने भगवाननो निश्चय नथी, माटे ए अज्ञानी छे ते जरूर नरकमां जाशे. अने जेने भगवाननो निश्चय छे ने जो तेमां कांइक थोडी घणी खोटय रही गइ हशे तो पण ते भुंडी गतिने नहि पामे.ते तो अंते जातो निर्गुण पणानेज पामशे. अने जेने भगवानना स्वरूपनो तो एवो निश्चय नथी ने ते मुधो त्यागी रहेतो होय ने काम, क्रोध, लोभादिकने टाळवामां सावधान वर्ततो होय तो पण एना टाळ्या कामादिक नहि टळे, अने ते अंते स्वराब थंइने नकरमांज जाशे. अने आवुं जे भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान ते जेने थयुं होय ने तेने थोडी बुद्धि होय तो पण एने मोटी बुद्धि वाळो जाणवो. अने आवुं भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान जेने न होय ने तेने जो झाझी बुद्धि होय तो पण तेने बुद्धिहिन जाणवो॥.॥इति वचनामृतम्॥१४॥१४७॥

संवत १८७८ ना भादरवा शुदि २ बिजने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदीरनी ओशरीए चा-

कळो नंखावोने विराजता हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजीमहाराजे सर्वे पर्महंसने प्रश्न पुछ्युं जे गमे तेवो कठण स्वभाव होय ने जो एक विचार करीए तो ते स्वभावनो नाश थइ जाय अने ए विचारने मुकीने बिजा हजारो विचार करे तोय पण ते भुंडा स्वभाव होय तेटळे नहि एवो ते कियो विचार छे, ते जेने जे समजातुं होय ते तेम कहो? पछे पर्महंसमां जेम जेने समजातुं हतुं तेम तेणे कह्युं पण जथार्थ कोइथी केहेवाणुं नहि. पछे श्रीजि महाराज बोल्या जे ल्यो अमे कहिये, जे जेम बाहेर कोइक पोतानो शत्रु होय, ते आपणुं कांइक काम थातुं होय तेने बगाडी दे, अथवा पोतानी बोन सामी गाळो दे, पछे तेनो जेम अतिशे अभाव आवे छे अने जे उपाये करीने तेनुं भुंडुं थाय ते उपाय कराय छे अथवा कोइक बिजो जे शत्रुनुं भुंडुं करे तोपण अतिशे राजी थवाय छे. तेम जे मोक्षने अर्थे जतन करता होय, ने तेमां जे काम, क्रोधादीक मांहेला शत्रु विघ्न करे तो तेनी उपर पण तेविज वैरबुद्धि थाय अने तेनो खटको क्यारे पण टळे नहि एवो विचार जेने हाथ आवे ते विचारे करीने शत्रु मात्रने टाळे! अने ज्यारे कोइक संत एकामादीक शत्रुनी निंदा करे, तथा

ते शत्रूने खोदे तेमां जेने मारे कह्यो एवो विचार होय तेने ते साधुनो अभाव आवे नहि; सामो ते साधुनो अतिशे गुण ले, ने एम जाणे जे आ साधु मारा शत्रूने मार्यानो उपाय करे छे माटे मारा परम हेतु छे. आवी जातनो विचार जेना हृदाने विषे प्राप्त थयो होय ते शत्रू मात्रनो नाश करी नांखे, अने कोइ भुंडो स्वभाव तेना हृदाने विषे रहि शके नहि. अने ए विना बिजा गमे तेटली वासना विचार करे पण कामादिक स्वभाव रूपी शत्रू नाश पामे नहि. माटे ए स्वभाव उपर जे शत्रूपणुं राखवूं एज सर्व विचारमां श्रेष्ट छे. पछे श्रीजि महाराजे वळी प्रश्न कर्युं जे धर्म, वैराग्य, आत्मज्ञान, ने महात्मेसहित परमेश्वरनी भक्ति, ए चार वानामांथी कोइ काळे पडे नहि, एवो जे होय तेने शे लक्षणे करिने ओळखवो? पछे सर्वे संत जने जेवूं समजाणुं तेमणे तेवुं कह्युं, पण ते कोइथी जथार्थ केहेवाणुं नहि; पछे श्रीजि महाराज बोल्या जे जेना बाळकपणामांथीज एवो स्वभाव होय, जे कोइनी छायामां तो दबायज नहि. अने ए ज्यां बेठा होय त्यां कोणेय हांसी मश्कारि थाय नहि, अने तेने कोणे हळवूं वेण पण केहेवाय नहि, एवां जेनां लक्षण होय ते कोइ दिवस धर्म, वैराग्य, ज्ञानने, भगवान्नी भक्ति तेमांथी पडे नहि. अने तेनो मानीना जेवो स्वभाव होय तोपण तेने कल्याणनो खप होय माटे ते सत्संगमां-

थि कोई प्रकारे जाय नहि.॥इति वचनामृतम्॥२५॥२४८॥
संवत १८७८ ना भादरवासुदि १० दशमीने दिवसे स्वामी श्री सहजानंद-
जी माहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमांथी श्री वासुदेव नारायणना मंदी-
र पासे पाट उपर विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. अ-
ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी मंडळ तथा देशो देशना हरिभक्तनी सभा भराईने
बेठी हती. पछे मुक्तानंद स्वामीए प्रश्नपुछयुं जे एक तो अर्जुननी पेठे स्वरुप निष्टा अने बिजी
युधिष्टर राजानी पेठे जे धर्मनी निष्टा ए बे निष्टा छे तेमांथी स्वरुपनी निष्टानुं बळ राखे तेने
धर्मनिष्टा मोळी पडी जाय छे. माटे एवो शो उपाय छे जे जेणे करीने ए बेमांथी एके निष्टा
मोळी न पडे? पछे श्रीजिमहाराज बोल्या जे पृथ्वीनो ने धर्मनो श्रीमद्भागवतना प्रथम स्कंधने
विषे संवाद छे तेमां एम कह्युं छे, जे सत्यशौचादिक जे कल्याणकारी एवा ओगणचाळीस
गुण तेणेयुक्त भगवाननुं स्वरुप छे, माटे सर्वे धर्म भगवाननी मूर्त्तिने आधारे रहे छे, ते सारुं
भगवानने धर्म धुरंधर कह्या छे. अने वळी श्रीमद्भागवतना प्रथम स्कंधने विषे शौनकादिक
ऋषिए सुतपुराणीने पुछयुंछे जे धर्मना बखतर रूप एवा जे श्री कृष्ण भगवान ते अंतरधानथया

पछे धर्म कोने शरणे रह्यो. माटे धर्म ते भगवाननी मुर्त्तिनेज आशरे रहे छे. ते सारुं जे भगवाननी मुर्त्तिने विषे निष्टा राखे छे तेने भगवाननुं स्वरूप हृदामां रहे एटले तेना हृदामां धर्म पण रहे. माटे जे स्वरूपनिष्टा राखे तेने धर्मनिष्टा सेहेजेज रहे. अने एकली धर्मनिष्ठा राखे तो स्वरूपनी निष्टा मोळी पडी जाय छे: ते कारणपणा माटे बुद्धिमान होय तेने स्वरूपनिष्टाज दृढ करीने राखवी तो ते भेळी धर्मनिष्टा पण दृढपणे रेहेशे. पछे मुक्तानंद स्वामीए बिजुं प्रश्न पुछ्युं जे, पंच विषय जिताय ते वैराग्ये करीने जिताय छे के कोइ बिजो उपाय छे ? पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे वैराग्य होय अथवा न होय पण जो परमेश्वरे कह्या एवा जे नियम तेने विषे खबरदार रहे तो पंच विषय जिताय छे. अने जो शब्द थकी वैराग्ये करीने वृति पाछी वाळे तो घणो प्रयास करे तोपण शब्द संभळाय खरो. अने कानने बिडी लेतो सेहेजे शब्द संभळाय नहि. तेमज अजोग्य पदार्थने त्वचाए करीने अडे नहि तो सेहेजे स्पर्श जिताय तेमज अजोग्य वस्तु होय तेने नेत्रे करीने जुवे नहि तो सेहेजे रूप जिताय. तेम जे जे स्वादु भोजन होय तेने मेळावी पाणी नाखीने जमे तथा जुक्त आहार करे एटले सेहेजेज रसना जिताय. तेमज अजोग्य गंध होय त्यां नाकने बिडी लेतो सेहेजे गंध जिताय. एवी रीते नियमे

करीने पंच विषय जिताय छे. अने जो नियममां न रहे तो, गमे तेवो वैराग्यवान होय तथा ज्ञानी होय पण तेनो ठार रहे नहि. माटे विषय जित्यानुं कारण तो परमेश्वरना बांधेला जे नियम तेज छे. तेमां पण मंद वैराग्य वाळाने तो नियममां रहेवुं एज उगर्याना उपाय छे. जेम मांदो होय ते करी पाळीने औषध खाय तोज निरोगी थाय. पछे अखंडानंद स्वामीए पुछ्युं जे मांदाने तो करीनो नियम होय जे आटला दिवसज करी राखवी, तेम कल्याणना सधननोपण कोइ नियम छे के नथी ? पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेने श्रद्धा मंद होय, तेने तो घणेक जन्मे करीने साधननी समाप्ति थायछे, ते भगवद्‌गीतामां कह्युं छे जे. ॥ अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो यातिपरांगतिम् ॥ ए श्लोकमां एम कह्युं छे जे अनेक जन्मे करीने संसिद्ध थयो जे जोगी ते जे परमपदने पामे छे ए मंद श्रद्धावाळानो पक्ष छे अने जेने बळवान श्रद्धा होय ते तो तत्काळ सिद्ध थाय छे ते पण गीतामां कह्युं छे ॥ श्रद्धावान् लभते ज्ञानंतत्परः संयतेंद्रियः ॥ ज्ञानंलब्धी परांशांतिमचिरेणाधिगच्छति ॥ १ ॥ ए श्लोकनो एम अर्थ छे जे नियममां छे इंद्रियो जेनाने श्रद्धावान होय तेने वेळी साधननी समाप्ति थाय छे. अने जेने मंद श्रद्धा होय, तेने तो अनेक जन्मे करीने साधननी समाप्ति थाय छे जेम कोइ पुरुष काशीए जातो होय,

ने ते आखा दिवशमां बे डगलां चालतो होय तेनेतो काशीये जतां बहु दीवश लागे अने जे
वीसवीस गाउ नित्य चालवामांडे तो ते अहिंथी काशीये थोडा दीवशमां पोचे, तेम जेने श्र-
द्धा बळवानछे तेतो हमणां तरत सत्संगी थयो होय तोपण अतीशे सरस थइजाय छे., अने
जेने श्रद्धा मंद होय तेतो घणाकाळ थयां सत्संगी थयोहोय पण लोचो पोचो रेह छे.
पछे श्रीगुरुचरणरतानंद स्वामीए पुछयुं जे ज्यारे मंद श्रद्धा वाळानुं अनेक जन्मे कल्याण
थाय त्यारे त्यां सुधी ते क्यां रहेतो-हशे? पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे सुंदर देव लोक होय
त्यां जाइने रहेछे अने ज्यारे भगवाननुं ध्यान करतो होय त्यारे ए भक्त भगवान सामुं जोतो
त्यारे भगवान पण ते भक्त सामुं जोता, पछे भगवाननुं ध्यान करतांथकां जेजेविषयनुंएणे चितवन
कर्युं हतुं अने जेजे विषयमां ए भक्तने हेत हतुं ते भगवाने सर्वे नजरे जोइने अने ए देह मुके
त्यारे एने जेवा भोग वहालाछे तेवा भोग जेलोकमांछे ते लोकमां एभक्तने पोचाडेछे अने काळ
ने एम आज्ञा करेछे जे ए भक्तना भोगने तुं खंडन करीशमां. माटे ते निरंतर देव लोकमां
रह्यो थको भोगने भोगवे छे. पछे मृत्यु लोकमां आवीने अनेक जन्मे करीने मोक्षने पामे छे.
पछे अखंडानंद स्वामीए बीजुं प्रश्न पुछयुं जे तिव्र श्रद्धावान-पुरुषनां-शां लक्षण छे? पछे श्री-

जी महाराज बोल्या जे जेने तिव्र श्रद्धा होय तेने ज्यारे भगवानने दर्शने आववुं होय, अथवा भगवत कथा वार्त्ता सांभळवी होय, तथा भगवाननी मानसी पुजा करवी होय इत्यादिक जे जे भगवान संबंधी क्रिया तेने कर्या सारुं स्नानादिक जे पोतानी देह क्रिया तेने अतिशे उतावळो थइने करे. अने कागळ लखीने अमे कोइक वर्त्तमान फेरव्युं होय तो तेने करवाने अर्थे पण आकळो थइ जाय. अने मोटुं माणस होय तो पण भगवानना दर्शन सारुं बाळकनी पेठे आकळाइ करवा मांडे,एवां जेनां लक्षण होय तेने तिव्रश्रद्धावान जाणवो. अने जे एवी श्रद्धा वाळो होय ते सर्व इंद्रियोने पण तत्काळ वश करे छे. अने जेने भगवानना मार्गमां मंद श्र-द्धा होय तेनी इंद्रियो विषय सनमुख अति तिक्षण पणे जुक होय, ते गमे तेटलो संताडवा जाय पण सउने जणाइ जाय जे आनी इंद्रियोनो विषय सनमुख तिक्षण वेग छे अने इंद्रि-योनुं रुप तो वायुना वेग जेवुं छे जेम वायुं देखाय नहि. पण वृक्षने हलावे तेणे करीने जणाय छे जे वायुं वाय छे. तेम इंद्रियोनी वृत्तियुं देखाती नथी पण विषय सनमुख दोडे ने सउने ज णाय छे. अने जो कपटे करीने ते ढांकवा जाय तो कपटी जाणीने तेनो सौने अतिशे अवगु-ण आवे छे. माटे जेनी इंद्रियोमां विषय भोगव्यानी तिक्षणता होय ते कोइ प्रकारे छानी रहे

नहि. पछे मुक्तानंद स्वामीए पुछ्युं जे विषय सनमुख इंद्रियोनी तिक्षणता तेने टाळ्यानो शो उपाय छे? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे इंद्रियोनी तिक्षणता तेने टाळ्यानो एज उपाय छे जे परमेश्वरे त्यागीना ने ग्रहस्थना जे नियम बांध्या छे, तेमां सर्वे इंद्रियोने मरडीने राखे तो सेहेजेज इंद्रियोनी तिक्षणता मटी जाय. अने श्रोत्रत्वक,चक्षु,रसना ने घ्राण ए पांचे इं-द्रियोने ज्यारे कुमार्गमां न जावा दे, त्यारे इंद्रियोना आहार शुद्ध थाय छे. ते केडे अंतःकरण पण शुद्ध थाय छे. माटे वैराग्यनुं वळ होय अथवा न होय तो पण जो इंद्रियो-ने वश करीने परमेश्वरना नियममां राखे तो जेम तिव्र वैराग्ये करीने विषय जिताय छे, ते थकी पण ते नियम वाळाने विशेषे विषय जिताय छे. माटे परमेश्वरना बांधेल जे नियम छे, तेनेज अति दृढ करीने राखवा. पछे वळी अखंडानंद स्वामीए पुछ्युं जे जेने मंद श्रद्धा होय तेने श्रद्धा वृद्धि केम पामे? पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे जो भगवाननुं महात्म जणाय तो मंद श्रद्धा होय ते पण वृद्धिने पामे. जेम पाणी पीवानुं वासण मृत्तिकानुं होय तेमां सेहेजेज प्रिती थाय नहि.अने ते पात्र जो सूवर्णनुं होय तो तेमां सेहेजेज प्रीति थाय, तेमज भगवाननुं तथा भगवाननी कथा किर्त्तनादिकनुं महात्म जणाय तो सहज स्वभावेज भगवानमां तथा कथा कि-

र्त्तनादिकमां श्रद्धा वृद्धि पामे छे. माटे जे प्रकारे भगवाननुं महात्म समजाय.ते उपाय करवो. ने जो ए उपाय करे तो श्रद्धा न होय तोपण श्रद्धा थाय छे अने जो मंद श्रद्धा होय तो तेवृ-द्धिने पामे छे. ॥ इति वचनामृतम् ॥ १६ ॥ १४९ ॥

संवंत १८७८ ना आसो वदि ११ एकादशीने दिवस रात्रीने समे स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरवारमां श्रीवासुदेव नारायणना मंदिरनेसमीपे ओरडानी ओशरीए सिंहासन उपर विराजमान हता. अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण करयां हतां, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ पर्महंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइनेबेठी हती, ने किर्त्तन गवातां हतां. पछे श्रीजमिहाराज बोल्या जे किर्त्तन गावां रहेवादो प्रश्न उत्तर करीए. पछे सर्वे मुनी बोल्या जे वणुं सारु माहाराज. पछे श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयुं जे भगवाननुं स्वरूप छे तेने कोइक भक्त तो मायानां चोविस तत्वे सहित समजे छे. अने कोइक भक्त तो मायाना तत्वे रहित केवळ चैतन्यमय भगवाननुं स्वरूप समजे छे ए बे प्रकारना भक्त तेमां केनी समजण ठिक छे ने केनी समजण ठिक नथी. पछे मुक्तानंद स्वामीए कह्युं जे जे भगवानने विषे माइक चोविस तत्व समजे एनी समजण्य ठिक नथी, अने भगवाननुं स्वरूपमा-

याना तत्वे करीने रहित केवळ चैतन्यमय समज तेनी समजण्य ठिक छे. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे सांख्यवाळे चोविस तत्व कह्यां छे ते सांख्यने मते त्रेविस तत्व ने चोविसमोक्षेत्रज्ञ जे जिव इश्वर रुप चैतन्य ते छे. ए रीते चोविस तत्व कह्यांछे. केम जे क्षेत्र नेक्षेत्रयज्ञ ने तो अन्यो अन्य आजयपणुं छे, ते क्षेत्रयज्ञ विना क्षेत्र कहेवाय नहि ने क्षेत्र विना क्षेत्रयज्ञ कहेवाय नहि ते माटे तत्व भेळाज जिव इश्वरने कह्या छे. अने भगवान छे ते तो क्षेत्र ने क्षेत्रयज्ञ ए बेयना आश्रय छे. माटे भगवान थकी माइक तत्व जदांकेम कहवाय.अनेजेमआकाश छे तेनेविषे चार तत्वरह्यांछेतोपण आकाशने कोइनो दोषअडतो नथी. तेमपरमेश्वरना स्वरूपने पण माइक तत्वनो एकेय दोष अडतो नाथि. एवुं जे भगवाननुं स्वरुप छे तेमां चोवीस तत्व कहिये तेमां शो बाध छे, अने तत्वे रहित केवुं तेमां शुनिर्बाधपणुं आवी गयुं, अमने तो एम जणाय छे. पछे दिनानाथ भट्टे पुछयुं जे, जेने भगवाननी मूर्त्तिनुं ध्यान करवुं होय तेने भगवाननुं स्वरूप तत्वे सहित समजवुं, के तत्वे रहित समजवुं. पछे श्रीजि महाराज बोल्या जे भगवानना स्वरूपने जे तत्वे सहित समजे छे ते पण पापी छे. अने जे तत्वे रहित भगवानना स्वरुपने समजे छे ते पण पापि छे. भगवानना स्वरूपमां तो भगवानना भक्त होय तेने तत्व छे के

नथी एवुं चुंथणुं करवुं गमेज नहि. भक्त होय तेतो एम जाणे जे भगवान ते भगवान एने विषे भाग त्याग कर्यानो माग नथी. ए भगवान तो अनंत ब्रह्मांडना आत्मा छे, अने जेने भगवानना स्वरूपमां कोइ रितनुं उत्थान नथि तेने निर्विकल्प स्थितिवाळो जाणवो. अने जेनी एवी एक मति होय तेने स्थितप्रज्ञ जाणवो अने जे पुरुषने भगवानने विषे एवी दृढ मतिछे तेने भगवान सर्व पाप थकि मुकावे छे. ते भगवाने भगवद्गीतामां अर्जुन प्रत्ये कह्युं छे जे ॥ सर्वधर्मान् परित्यज्यमामेकंशरणंव्रज॥अहंत्वांसर्वपापेभ्योमोक्षयिष्यामिमाशुच॥२॥ अने आ संसारमां पण एवी रितछे जे, जे थकी पोतानो मोटो स्वार्थ सरतो होय तेनो बुद्धिवान होय ते दोष ग्रहण करे नहि. जेम स्त्रि होय ते पोताना स्वार्थ सारु पतिनो दोष ग्रहण करती नथी. तेथी विजा ग्रहस्थ होय ते पोताना भाइ, भत्रीजा, दिकरा, इत्यादिक जे संबंधी तेने विषे जो पोतानो अतिशे स्वार्थ होय तो दोषनुं ग्रहण नथी करता. तेम भगवान थकी जेणे मोटो स्वार्थ जाण्यो होय, जे भगवान तो पाप थकी ने अज्ञान थकी मुकावीने पोताना भक्तने अभयपद आपेछे. एवो मोटो स्वार्थ जाण्यो होय तो कोइ रिते भगवाननो अवगुण आवेज नहि. जेम शुकजीये रास पंचाध्यायीनुं वर्णन कर्युं त्यारे राजा परिक्षितने संशय थयो जे भगवाने परस्त्रिनो संग केम

कर्यो? पण सुकाजिने लेशमात्र संशय थयो नहि. अने जे गोपियुं संगे भगवाने विहार कर्यो, ते गोपियुंने पण संशय न थयो जे भगवान होय तो आम केम करे?एवो कोइ रिते संशय थयो नहि. अने ज्यारे भगवान कुबज्याने घेर गया त्यारे उद्धवजीने भेळा तेडी गया हता तोपण उद्धवजीने कोइ रिते संशय थयो नहि.अने ज्यारे उद्धवजीने व्रजमां मोकल्यो त्यारे गोपियुंनी वाणी सांभळीने पणकोइरितेसंशयनथयोअनेसामुंगोपियुंनुंमहात्मअतिशेसमज्यामाटेजेनेभगवाननो अचळ आश्रय थयो होय ने ते अतिशे शास्त्रवेता होय अथवा भोळोज होय तेनी मती भमे नही. अने भगवानना जे दृढ भक्तहोय.तेनुं जे महात्मतेपण भगवाना भक्त होय तेज जाणे पछे शास्त्रवेता होय अथवा भोळो होय पण जेनी भगवानने विशे दृढ मति होय तेज भगवानना भक्तनुं महात्म जाणे? अने दृढ मतिवाळा भक्त होय तेने ओळखे खरा. अने तेविना जे जगतना विमुख जीव होय तेतो पंडित होय अथवा मुर्ख होय पणभगवानने विशे दृढ मति पणकरी शकेनही,अने जे दृढमति वाळा भक्त होय तेने ओळखे नही,अने हरिजननुं महात्म पण जाणे नही. माटे भगवाननो भक्तहोयते भगवाना भक्तने ओळखेअने महात्मपण तेजजाणे.जेम उद्धवजीए गोपियुंनुं अतिशे महात्म जाण्युं तेम गोपिये पण उद्धवजीनुं महात्म जाण्युं. अने पुषात्तम

भगवानछे ते सर्वे क्षेत्रज्ञना क्षेत्रज्ञ छे , तोपण निर्विकार छे. अने माया आदिक
जे विकारना पदार्थ तेनो विकार पुर्षोत्तमभगवानने अडतो नथी अने जे आत्मनिष्ट पुरुष छे
तेने पण स्थुल, सुक्ष्म ने कारणना विकार नथी अडता तो पुर्षोत्तम भगवानने न अडे एमां
शुं कहेवुं? भगवान तो निर्विकारी अने निर्लेप छे. एवी रीते जे भगवानना स्वरूपने समजे ते भ-
भगवानना भक्त स्थितप्रज्ञ जाणवा. जेम पोताना आत्माने विशे स्थित होय ते पण स्थितप्रज्ञ
कहेवाय छे तेम जेने भगवानना स्वरूपने विषे कोइ रीतनो घाट न होय अने जे भगवाननुं
समर्थ पणुं होय तो तेनुं पण गान करे तेमज असमर्थपणुं होय तेनुं पण गान करे अने जेम
भगवाननुं जोग्य चरीत्रहोय तेनुंगान करे तेमज जे अजोग्य जेवुं चरीत्र जणातुं होय तेनुं पण
गान करे पण भगवानने चरित्रने विषे जोग्य अजोग्य एवा घाट घडे नाहि एवो जे भगवाननो
भक्त होय तेने पुर्षोत्तमना स्वरूपने विषे स्थितप्रज्ञ जाणवो. अने जेने एवो पुरषोत्तमना स्वरूप
ने विषे दृढ निष्ठा थइ तेने एथी उपरांत बिजुं काइ समजवानुं रह्युं नथी.॥ इतिवचनामृतम्॥
॥ १७॥१५०॥

संवत १८७८ ना मागशर वदि ६ छठयने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी म-

माहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उताराने विषे गादी तकीया नंखावीने विराजमान हता, अने धोळो खेस पहेर्यो हतो अने धोळी चादर ओढी हती, ने ने ते उपर बुटादार रजाइ ओढी हती, अने मस्तक उपर धोळो फेंटो विरामान हतो, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ पर्महंस तथा देश देशना हरीभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. अने पोतानी आगळ मागजी दवे कथा करता हता. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, अमे तो सर्व प्रकारे विचारीने जोयुं जे आ संसारमां जेटलो कुसंग कहेवाय छे ते सर्व कुसंगथी अधिक कुसंग ते कियो छे? तो जेने परमेश्वरनी भक्ति नहि ने भगवान सर्वना स्वामी छे, भक्त वत्सल छे, पतित पावन छे, अधम उधारण छे एवो पण भगवाननो कोरनो जेना हइयामां विश्वास नहि ते. एवा तो आ संसारमां बे मत छे. एकतो नास्तिकनो ने बिजो वेदांतिनो ए बेय अति कुसंगछे, अने पंच महा पापे जक्त होय ने तेने जो भगवाननो विश्वास होयतो तेनो कोइ काळे छूटको थाय तथा बाळहत्या, गौहत्या, स्त्रिहत्या, आदिक जे मोटां पाप तेना करनारानो कोइ काळे छुटको थाय खरो पण ए मतनो जेने प्रतितीआवी तेनो कोइ काळे छूटकोथायनहि. शा माटे जे एनी समजण वेद शास्त्र ने पुराण ते थकी उंधि छे, तेमां नास्तीक तो एम स-

मजे छे जे- रामचंद्रजी नेश्रीकृष्ण भगवान एतो राजा हता. अने श्रीकृष्णे देहीत मारया, तथा पर स्त्रीना संग किधो माटे त्रिजा नरकमां पडया छे. एवी रीतें अधम उधारण ने पतित पावन एवा जे श्रीकृष्ण भगवान तेने विषे परमेश्वरनी बुद्धिज नथी. अने कर्म करीने पोतानुं कल्याण मान्युं छे ते ज्यारें कर्म करतां करतां केवळ ज्ञान प्रगटे त्यारे ते भगवान थाय.' एवी रीतें अनंत भगवान मान्या छे. पण अनादी परमेश्वर नास्तिकने मते कोइ नथी, के जेने भजने करीने जिव जन्मना बंधन थकी छूटे, माटे ए मत छे ते अति भुंडो छे. अने वेदांती छे ते तो एम समजे छे जे, ब्रह्म छे तेज जिवरूप थया छे ने जेम सूर्यनुं प्रतिबिंब छे, तेम ब्रह्म ते जिव रूपछे, माटे ज्यारे एम समजाय जे हुं ब्रह्म छूं त्यारे एने कांइ साधन करवुं रह्युं नहि. अने ज्यारे पोते परमेश्वर थया त्यारे हवे भजन पण कोइनुं करवूं रह्युं नहि. एम मानीने पछे पाप करतां पण बिये नहि. अने मनमां एम समजे जे आपण निर्गुण मार्गने पाम्या छिये माटे आपणे फरिने जन्म नहि धरवो पडे. पण मूर्खा वेदांति एटलो तपास करता नथि जे मायापर जे निर्गुण ब्रह्म तेने पण एनी समजण्ये करिने जन्म मरण ठेराणुं. केम जे ए मुर्खा एम केहे छे जे ब्रह्मछे तेज स्थावर जंगम रूप थया छे. त्यारे जे जिव होय तेने माथे तो जन्म म-

णै होय ते जन्म मर्ण ब्रह्मने माथे आव्युं. ने ए मुर्खतो एम. जाणेछे जे, अमे जन्म मर्णथी छूटशुं. पण एम विचारता नथी जे आपणे मते करिने ब्रह्मने माथे जन्म मरण साचुं थयुं त्यारे आपणे पण घणुं समजशुं तो पोताने ब्रह्मरूप मानशुं तोपण जन्म मर्ण नहि टळे. माटे एनेज मते करिने एणे मोक्ष मान्यो छे ते खोटो थइ जाय छे, तोपण कांइ तपासिने जोता नथी. अने जिभे तो एम बकेछे जे आपण तो ब्रह्म स्वरुप छिये ते केनुं भजन करिये, अने केने नमस्कार करिये? एम मानीने अतिशे अहंकारी थइ जाय छे. अने समज्यामां तो कांइ आव्युं नथि ने मूर्ख छे; माटे ज्ञानीनुं मान लइने बेठा छे पण एम विचारता नथी जे, पोताने मते करिनेज पोतानो मोक्ष खोटो थइ गयो. अने जे एनो संग करे तेने पण एवाने एवा मूर्ख करीने मुके छे. अने साचा ज्ञानी जे नारद सनकातीक शुकजि तेतो निरंतर भगवाननुं नाम, ध्यान, रटन, ने किर्त्तन, तेने करे छे. अने श्वेत द्विपने विपे जे निरन्न मुक्त छे, तेतो ब्रह्म रूप छे अने काळना पण काळछे, तोय पण परमेश्वरनुं ध्यान, नाम, मरटन, किर्त्तन, पुजन, अर्चनवंदनतेने कर्त्ता रहे छे. अने पोते अक्षर स्वरुप छे तो पण अक्षरातित जे पूरुषोत्तम भगवान तेना दास थइने वर्तेछे. अने बदारिकाश्रमने विपे जे उद्धव ने तनुंऋपि आदिक मुनी रह्या छे

ते पण तप करेछे, ने निरंतर भगवाननी भक्ति कर्या करेछे. अने ए वेदांती तो केवळ देहाभि मानि जिवछे, तोपण भगवाननुं ध्यान स्मर्ण, के वंदन कर्त्ता नथी. अने नारद सनकादिकने शुकाजि तेमनि जेवि सामर्थि छे ने जेवुं ज्ञान छे तथा श्वेत द्विपवासी जे निरन्न मुक्त तेने विषे जेवि सामर्थि छे ने जेवुं ज्ञान छे. तथा वदरिकाश्रमवासी जे ऋपि तेमां जेवि सामर्थि छे ने जेवुं ज्ञानछे तेना कोटिमा भागनी ए वेदांतिने विषे सामर्थि पण नथि ने ज्ञान पण नथि, तोपण परमेश्वरना सामावाडियाथइने बेठाछे, माटे ए पाका मूर्खछे. अने जेटला मूर्ख केहेवाय तेना राजा छे. अने एतो कोटि कोटि कल्प सुधी नर्कना कुंडमां पडशे; ने जमना मार खाशे, तोपण एमनो छूटको नहि थाय. अने एवा दूष्टनो जे संग तेनुं नाम कुसंग छे, ने जेम सत पुरुषनो जे संग तेथि कोइ मोटुं पून्य नथी तेम चांडाल जेवा जे वेदांति तेना संगथी कोइ मोटुं पाप नथी. माटे जेने कल्याणने इछवुं तेने नास्तिक तथा वेदांतिनो संग करवोज नहि. ॥ इति वचनामृतम् ॥२८॥१५२॥

संवत १८७९ ना मागसरवादि १४ चौदसने दिवसे स्वामी श्री सेहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पर्महंसने उतारे दिवस उग्या समे पधार्या ह

वच. तो, पछे त्यां आवीने गादि तकिया उपर उदास थइने बेठा ते कोइने बोलावे पण नहि. अने कोइ सामुं जुवे पण नहि. अने मस्तक उपर पीळो फेंटो बांध्यो हतो. ने ते छुटीने ढिलो थइ गयो तेने पण संभाळे नहि. एवी रीते एक घडी सुधी अतिशे उदाश थइने बेसी रह्या. अने नेत्रमांथी जळ पडवा लाग्युं. पछे श्रीजी महाराज परमहंस प्रत्ये बोल्या जे अमे वेदांत शास्त्रनुं श्रवण कर्युं ते श्रवण मात्रे करीनेज अमारा अंतरमां आ उद्वेग थइ आव्यो केम जे, जे वेदांत शास्त्रना श्रवणे करीने जिवनी बुद्धिमांथी भगवाननी उपासनानुं खंडन थइ आवे छे, अने हइयामां समभाव आवी जाय छे. एटले अन्य देवनी पण उपासना नाश थइ जाय छे: अने ते वेदांतिना वचनने जे सांभळे तेनी बुद्धि अतिशे भ्रष्ट थइ जाय छे. अने अने अमे तो कोइक प्रयोजन सारुं वेदांतिनी वात सांभळी हशे, तेणे करीने पण हवे अमारे शोक घणो थाय छे. एम कहीने श्रीजी महाराज सुधि उदाश थइ गया पछे घणी वार सुधी दलगीर थइने पछे पोताने हाथे नेत्रमांथी जळ लोइने एम बोल्या जे भगवद्गीता उपर जे रामानुज भाष्य छे तेनी कथा सांभळीने अमे आज रात्रीए सुता हता. पछे अमने स्वप्न थयुं जे अमे गौलोकमां गया त्यां भगवानना अनंत पार्षद दीठा तेमां केटलाक तो भगवाननी सेवामां

रह्या छे ते तो स्थिर सरखा जणाणा. अने केटलाक तो परमेश्वरनां कित्तंन गाय छे, ते कित्तंन पण मुकानंद स्वामी ने ब्रह्मानंद स्वामीनां गाय छे, अने ते कित्तंन गाता जाय अने डोलता जाय, जेम केफे करीने गांडा थया होय ने ते डोले ने गाय तेम कित्तंन गाय ने डोले. पछे अमे पण गावता हता, ते भेळा जाइने भळ्या, ने कित्तंन गाववा लाग्या ते गावतांगावतां एवो विचार थयो जे आवी जे परमेश्वरनी प्रेम भक्ति अने आवी जे परमेश्वरनी उपासना तेनो त्याग करीने जे ब्रह्म ज्ञानी थाय छे अने एम जाणे छे जे अमेज भगवान छीए ते महा दुष्ट छे. एम कहिने पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे, जे प्रकारे धर्म थकी तथा भगवाननी भक्ति थकी कोइ रीते पाछो न पडे, अने पोताना इष्ट देव जे श्री कृष्ण नारायण तेमांथी कोइ रीते बुद्धि डगे नहि एवो लावो एक कागळ लखीने देश देशना सत्संगी प्रत्ये मोकलीए. लिखावित स्वामी श्री सहजानंदजी महाराजना सर्व पर्मंहंस तथा सर्वे सत्संगी, बाइ, भाइ नारायण वांचजो. ने बिजुं अमारी आज्ञा एम छे जे, श्री कृष्ण नारायण एवा जे पुर्षोत्तम भगवान तेना जे अवतार ते धर्मना स्थापनने अर्थे तथा ब्रह्मचर्य, अहिंसादिक धर्म, आत्मनिष्ठा, वैराग्यने महात्मे सहित भक्ति ए चार गुण संपन्न एवा जे पोताना एकांतिक भक्त तेने दर्शन देवाने अ

थैं ने तेमनी रक्षा करवाने अर्थें तथा अधर्मनो उछेद करवाने अर्थें देव मनुष्यादिकने विषे था
य छे, ते अवतारने विषे पतिवृताना जेवी अनन्य पणे निष्टा राखवी. जेम सिताजीने श्री राम
चंद्रने विषे निर्दोषपणे निष्टा हता तेम निष्टा राखवी. अने एवा जे भगवान, तेनी हेते करीने
मानसी पुजा करवी, तथा देहे करीने नव प्रकारे भक्ति करवी, अने जो ए श्रीकृष्ण
नारायणना अवतार पृथ्वीने विषे प्रगट न होय तो तेनी जे प्रतिमा तेनी पुजा मने करीने
चंदन, तुळसी, आदिक सामग्रीवते करवी पण भगवान विना बिजा देवनी उपासना न कर-
वी. अने जो बिजा देवनी उपासना करीए तो तेमां मोटो दोष लागे छे, ने पतिवृतापणुं जा
य छे ने वेश्याना जेवी भक्ति थाय छे. माटे भगवानने विषे सिता रुक्मणीना जेवी भक्ति करवी,
अने ते भगवाननुंज ध्यान करवुं. अने ते विना बिजा कोइ देवनुं ध्यान न करवुं. बिजुं जे साधु
सिद्ध गतिने पाम्या होय, ने समाधिनिष्ट होय तेनुं पण ध्यान न करवुं अने सर्वेने पोतपोतानां
वर्णाश्रम धर्मने विषे दृढपणे वरतवुं. बिजुं आ जे अमारी आज्ञा छे तेने जे पुरुष दृढपणे पा-
ळशे तेने श्रीकृष्णनारायणने विषे नारदना जेवी दृढ भक्ति थाशे. अने आ अमारी आज्ञाने
जे स्त्री मानशे तेने श्रीकृष्ण नारायणने विषे लक्ष्मीजि तथा राधिकाजी आदिक जे गोपीयुं

तेना जेवी भक्ति थाशे, अने आ अमारा वचनने जे नहि माने तेनी भक्ति वेश्याना जेवी थाशे. संवत १८७८ ना मागशर वदि १४ चौदशने दिवस लख्यो छे एवी रीते कागळलखीने देशदेशना सत्संगी प्रत्ये मोकलाव्यो ॥ इति वचनामृतम् ॥ १९ ॥ १५२

संवत १८७९ ना पोस वदि १४ चौदशने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदीरनी आगळ विराजमान हता, अने धोळो खेस पेहेर्यो हतो ने धोळो चोफाळ ओढीने ते उपर छींटनी राजाइ ओढी हती ने मस्तक उपर श्वेत पाघ बांधी हती, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. अने पर्महंस ताळ मृदंग वजावीने किर्त्तन बोलता हता. पछे श्रीजीमहाराज पर्महंस प्रत्ये बोल्या जे आज तो अमारा उतारामां अमारी पासे रहेनारा जे सोमला खाचर आदि हरिभक्त तेमने अमे एक प्रश्न पुछ्युं छे तेनो सर्वे पर्महंस मळीने उत्तर करो पछे पर्महंसे कह्युं जे हे महाराज ए प्रश्न अमने संभळावो, पछे श्रीजिमहाराज बोल्या जे समाधिनिष्ट पुरुष थाय छे, तेने तो माया थकी परस्थिति थाय छे, अने भगवानना स्वरुपनो पण दृढ संबंध रहे छे. माटे ए समाधिनिष्टने तो ज्ञान शक्ति तथा देह,

इंद्रियोनीशक्तितेवृद्धिपामीनोइए.शामाटेजेमायाथकीजेचोविसतत्वकह्यांछे,ते जडचैतन्यरूपछेपण एकलांजडनकेहवायतेमएकलांचैतन्य पणनकेहवाय.अनेते तत्वमाशक्ति पणासरखीन केहेवायइंद्रि. युं थकी अंतःकरणमां जाण पणुं विषेश छे. अने अंतःकरण थकी इंद्रियुं, अंतःकरणनो द्रष्टा जे जिव तेमां ज्ञान विषेश छे. ते जिवने ज्यारे समाधि थाय छे, त्यारे इंद्रियुं अंतःकरणना द्रष्टा पणानो त्याग करीने माया पर जे ब्रह्म ते सरखो ए जिव चैतन्य थाय छे अने भगवानना स्वरूपनो संबंध रहे छे. ते समाधी वाळाने केटलाक एम समजे छे जे, जेने समाधी थाय छे तेने तो मोरे समजण हती तेटली पण रहेती नथी. माटे ए समाधिवाळाने ज्ञान तथा देह इंद्रियोनी शक्ति वृद्धि पामे छे के नथी पामती ए प्रश्न छे? पछे पर्महंसे जेवी जेनी बुद्धि पुगी तेवो उत्तर कर्यों. पण श्रीजी महाराजना ए प्रश्ननो उत्तर थयो नहि, पछे श्री जीमहाराज बोल्या जे ल्यो अमे उत्तर करीए. ए प्रश्ननो तो ए उत्तर छे जे साक्षी जे ब्रह्म ते तो मायामांथी उत्पन्न थयुं एवुं जे चोविस तत्वात्मक ब्रह्मांड तेने विषे प्रवेश करीने तेने चइतन्य मय करे छे. अने तेने सर्वे क्रिया करवानी सामर्थी आपे छे अने ते ब्रह्मनो तो एवो स्वभाव छे जे काष्ट तथा पाषाण जेनुं जड होय तेनें विषे प्रवेश करे त्यारे ते चाले हाले एवुं थइ

लाय छे ते ब्रह्म संघाथे समाधिये करीने तुल्य भाव ने पामे सारे ए जिव पण ब्रह्म रुप क-हेवाय छे ने तेने ज्ञाननी वृद्धि थाय छे. अने इंद्रियोनी शक्ति तो ज्यारे तप,ने निवृत्तिधर्म, ने वैराग्य तेणे जुक्त होय. तेने शुकजीना जेवी सिद्ध दशा प्राप्त थाय छे. अने जेने तप तथा नि-वृत्ति धर्म तथा वैराग्य तेनुं सामान्य पणुं होय अने धर्म अर्थ ने काम रुप जे प्रवृत्ति मार्ग तेने विषे रह्यो होय तेने तो समाधि थाय तोय पण एकलुं ज्ञानज वृद्धि पामे पण इंद्रियुनी शक्ति वृद्धि पामीने सिद्ध दशा न आवे. ने जेम जनक राजा ज्ञानी हता तेवो ज्ञानी थाय पण प्रवृ-त्ति मार्ग वाळाने नारद सनकादिक शुकजीना जेवी सिद्ध दशा न पमाय. अ-ने जे सिद्ध होय तेतो श्वेत द्विप आदिक जे भगवानना धाम तेने विषे एने एज शरिरे करिने जाय. अने लोक, अलोक, सर्व ठेकाणे एनी गति होय. अने प्रवृति मार्गवाळाने तो जनकनी पेठे केवळ ज्ञाननीज वृद्धि थाय छे पण ज्ञान घटतुं नथी. अने जेम श्रीकृष्णभगवाने गितामां कहुंतेमतो थायछे॥ त्यांश्लोकछे॥ यानिशासर्वभुतानांतस्यांजागर्त्तिसंयमी॥ यस्यांजाग्रतिभुतानिसा निशापश्यतोमुनेः॥१॥ एश्लोकनो अर्थए छेजे जेने विशे भुतप्राणीमात्र सुताछे तेनेविशे संयमी पुरुषजाग्याछे अने जेने विषे भूत प्राणी मात्र जाग्या छे तेनी कोरे संयमी पुरुष

सुता छे. माटे जे पुरुषनी अंतरात्मा सनमुख दृष्टि वर्तती होय तेने देहइंद्रियुं अंतःक-
नी कोरे सुन्य भाव वर्ते छे तेने देखीने-अणसमज होय ते एम जाणेजे समाधीवाळाने ज्ञान-
डुं थइ जायछे पछे रजोगुण तमोगुणमां तथा मलिन सत्व गुणमां रहिने आ प्रश्नो उत्तर
रवा जाय तेने एम सुजे जे समाधिवाळाने ज्ञान ओछुं थइ जायछे, पण एम नथी जाणतो
हुं देहाभिमानिछुं ते मुर्खाइमांथी कहुंछुं. माटे समाधिवाळो तो देह इंद्रियो अंतःकरणथी ह-
दो पाडिने वरते छे, तोपण ज्ञाननी वृद्धि थाय छे. अने पाछो इंद्रियुं अंतःकरणमां आवीने
रते, तोपण पोताने समाधिने विषे जे ज्ञान थयुं छे तेनो नाश थाय नहि. अने तप नीवृति ध-
मे, ने वैराग्य तेने ग्रहण करिने प्रवृति मार्गनो त्याग करे तो, जेम ज्ञान वृद्धि पाम्युं छे तेम इं-
द्रियुं अंतःकरणनी शक्तियुं पण वृद्धि पामे. अने नारद सनकादिक शुकजिना जेवो सिद्ध द-
तिने पण पामे.॥इति वचनामृतम् ॥२०॥१५३॥

संवत १८७९ ना फागण शुदि १५ पुनमने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महा-
ज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिर आगळ विरा-
मान हता. अने श्वेत खेस पेर्यो हतो ने श्वेत चादर-ओढी हती, तथा श्वेत पाघ मस्त-

उपर नांधि हति. अने श्रीजि महाराजना मुखारविंदनी आगळ प्रेमानंद स्वामी आदिक सर्वे प मंहंस विष्णुं पद वोल्ता हता. पछे श्रीजिमहाराज बोल्या जे किर्त्तन रेहेवा द्यो, ने सर्वे सुरत दइने सांभळो एक वार्त्ता करिये छिये जे, जेटला कल्याणने अर्थे व्यासजिये ग्रंथ कर्या छे. ते सर्वे सुरत राखीने अमे सांभळ्या, ते सर्वे शास्त्रमां सिद्धांत छे. अने जिवना कल्याणने अर्थे पण एटलिज वातछे जे, आ सर्वे जगत छे तेना करता हरता एक भगवान छे. अने ए सर्वे शास्त्रने विषे भगवाननां चरीत्र छे, कां भगवानना संतनां चरीत्र छे, अने वर्णाश्रमना धर्मनी जे वार्त्ता छे अने तेनुं फळ-जे धर्म, अर्थ ने काम छे तेणे करीने कांइक ल्याण थातुं नथी. अने केवळ वर्णाश्रमना धर्म वर्त्ते तो संसारमां ि र्त्तिन थाय ने देहे करीने सुखियो रहे एटलुंज फळ छे, अने कल्याणने अर्थे तो भगवानने करता हरता जाणवा एज-छे. अने जेवुं परोक्ष भगवानना राम कृष्णादिक अवतारनुं महात्म जाणे छे, तथा नारद सन कादिक, शुकजी, जडभरत, हनुमान, उद्धव, इत्यादीक जे परोक्ष साधु तेनुं जेवुं महात्मजाणे छे तेवुंज प्रत्यक्ष एवा जे भगवान तथा ते भगवानना भक्त साधु तेनुं महात्म समजे तेनेकल्याण ना मार्गमां कांइ समजवुं वाकी रह्युं नहि, ते आ वार्त्ता एकवार कह्ये समजो, आज समजो,

अथवा लाख वर्ष केडे समजो, पण ए वात समजेज छूटको छे. अने नारद, सनकादिक,शु-
कजी, ब्रह्मा, शिव, एमने पुछो तोपण डाह्या छे, ते अनेक वातनी जुक्ति लावीने प्रत्यक्ष भग-
वानने प्रत्यक्ष संत तेनेज कल्याणना दाता बतावे.अने जेवुं परोक्ष भगवानने परोक्ष संतनुं महा-
त्म छे तेवुंज प्रत्यक्ष भगवानने प्रत्यक्ष संतनुं महात्म बतावे. अने एटलो जेने दृढ निश्चय थयो
होय तेने सर्वे मुदो हाथ आव्यो अने कोइ काळे ते कल्याणना मार्ग थकी पडे नहि जेमब्रह्मा,
शिव, बृहस्पतिने पराशरादिक ते कामादिके करीने धर्म थकी पडया, तोपण प्रत्यक्ष भगवानने
प्रत्यक्ष संत तेनो परोक्षना जेवोज महात्मे जुक्त निश्चे हतो, तो कल्याणना मार्गमांथी पडया न-
हि. माटे सर्वे शास्त्रनुं रहस्य आ वार्त्ता छे. अने तेज दिवस सांजने समे स्वामी श्री सहजानं-
दजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमांथी गाडीए चढीने श्रीलक्ष्मीवाडीए
पधारया हता. ने त्यां आंबाना वृक्ष हेठे ओटा उपर ढोलीए विराजमान हता, अने श्वेतखेस
पहेर्यो हतो, ने श्वेत चादर ओढी हती ने श्वेत पाघ बांधी हती. अने ते पाघने विषे पीळा
पुष्पनो तोरो विराजमान हतो, अने कान उपर मोगराना गुच्छ विराजमान हता अने कंठने वि-
षे मोगराना पुष्पनो हार विराजमान हतो. अने पोतना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश

देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हति. पछे श्रीजि महाराज बोल्या जे सांभळो एक तम ने प्रश्नपूछिये? जे जिवने स्वप्न अवस्थाने विषे जे जे स्वप्नमां सृष्टि देखायछे अने ते स्वप्ननी सृष्टिना जे भोग तेने जिव भोगवे छे ते ए सृष्टि रूपे ते जिव पोते थाय छे के ए जिव पोताना संकल्पे करीने स्वप्नने विषे ए सृष्टिने सृजेछे? अने जेम जिवने छे तेमज सर्वे ब्रह्मादिक इश्वर छे तेने पण स्वप्न सृष्टि छे ते पोते ए सृष्टि रूपे थायछे, के पोते संकल्प करीने सृजे छे, के ए जिव इश्वर थकी पर जे परमेश्वर तेज स्वप्ननी सृष्टिने सृजी आपे छे ए प्रश्ननो उत्तर करो? पछे जेवी जेनी बुद्धि तेवुं तेणे कर्युं पण कोणे जथार्थ उत्तर थयो नहि. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे जिव तथा इश्वर एमांथी कोइ स्वप्न सृष्टिने सृजता नथी, अने पोते पण स्वप्ननी सृष्टि रूपे थाता नथी. ए तो ए जिव इश्वर थकी पर जे परमेश्वर कर्म फळ प्रदाता छे ते ए जिव इश्वरना कर्मना अनुसारे करीने ए स्वप्ननी सृष्टिने सृजे छे. अने ए स्वप्न सृष्टिने विषे जे अस्थिर पणुं छे ने भ्रांति पणुं छे ते तो देशने योगे करीने प्रवर्त्तेछे. केम जे कंठ देश छे ते एवोज छे जे ए स्थुलमां अनंत भास्यनी एवी सृष्टि देखाइ आवे; जेम काचनुं मंदिर होय तेमां एक दिशे दिवो कर्यो होय तो अनेक दिवा देखाइ आवे. तेम कंठ देशने योगे करीने ए संकल्प होय ते

अनंतरीतेदेखायछे.अनेजेज्ञानीहोयतेतोज्यांदेशनुंप्रधानपणुंहोयत्यांदेशनुंजसमजेअनेकाळनुं प्रधान पणुंहोयत्यांकाळनुंजसमजे.अने कर्मनुंप्रधानपणुंहोयत्यांकर्मनुंजसमुजेअनेपरमेश्वरनुंप्रधानपणुं होय त्यां परमेश्वरनुंज समजे.अने मुर्ख होयतेतो जेकोइक एक वात समजाइ गइ तेनेजमुख्य जाणे.जो काळनी वात समजाणी होय तो काळने मुख्य जाणे, अने कर्मनी वात समजाणी होय तो कर्मनेमुख्य जाणेअने मायानीवातसमजाणीहोयतोमायानेमुख्यजाणेपणज्यांजेनुं प्रधानपणुं तेने त्यां जूदुं मुर्खनेसमजतां न आवडे.अनेज्ञानी होयते तो जे ठेकाणेजेनुं प्रधानपणुं होय तेनुंज प्रधान पणुं ले.अने परमेश्वर छे ते तो देश, काळ,कर्म,माया, ए सर्वना प्रेरक छे. अने पोतानी इच्छाये करीने देश काळादिकनुं प्रधान पणुं रहेवा दे छे पण परमेश्वरने आधारेछे. जेम शिशुमार चक्र छे ते धृ मंडळने आधारे छे, अने जेम प्रजा सर्व राजाने आधारे छे. तेमां दिवान होय तथा वजिर होय तेनुं राजा चालवा दे तेटलुं चाले पण न चालवा दे त्यारे एक अणुं मात्र पण न चाले. तेम देश, काळ, कर्म, माया, तेनुं परमेश्वर चालवा दे तेटलुं चाले पण परमेश्वना गमता बहार अणुंमात्र पण न चाले.माटे सर्व कर्त्ता ते परमेश्वरज छे, एटली वार्त्ता करीनेश्रीजीमहाराजपाछा दरबारमां पधारता हवा. ॥इति वचनामृतम्॥२१॥१५४॥

संवत १८७९ ना फागण वदि १० दशमीने दिवस श्रीजी महाराज अर्ध रात्रीने समे जाग्या. ने श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदीरनी आगळ दाक्षिणादे मुखारविंदे ढोलीया उपर विराजमान थया हता, ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने ते समे साधु तथा हरिभकने तेडाव्या पछे पोताना मुखारविंदनी आगळ ते सर्वेनी सभा भराइने बेठी.त्यारे श्रीजी महाराज साधु प्रत्ये बोल्या जे एक वार्ता करीए ते सांभळो. जे जेम बे सेना होय ने ते परस्पर लडवाने तैयार थइ होयने बेयनां निशान सामसामां रोप्यां होय.पछेबेसूरविरना मनमां एम होय जे आपणुं निशानछे ते एना निशानने ठेकाणे मांडीए ने एनुं निशान लेइ लइये. पण एवो विचार नथी थातो जे एनां निशान लगी जाशुं-तेमां तो केटलाकनां माथां पडशे ने लोहीनी नदी चालशे तेनो एने भय नथी. कांजे सूरविर होय तेने मरवानी बीक होय नहि. अने जेकायरछे तेतो भाग्याना हजारो विचार करेछे. अने एम पण विचार करे छे जे आपणी फोज जिताशे तो कोइकनुं धन हथीयार हशे ते लुंटी लेशुं. अने ते बेय राजाना जे सूरवीरछे तेमने तो मरवानो पण भय नथी ने लुंटवानो पण लोभ नथी ने तेनुं निशान लेवुं ने पोतानी जित्य करवी एवोज एक संकल्प छे एवो दृष्टांत छे, ने

एनुं सिद्धांत तो ए छे जे निशानने ठेकाणे तो भगवाननुं धाम छे अने राजाना सूरविरने ठे-
काणे तो भगवानना दृढ भक्त छे, तेने तो आ संसारने विषे मान थाओ अथवा अपमान था
ओ, देहने सुख थाओ अथवा दुःख थाओ, शरीर रोगी रहो अथवा निरोगी रहो, देह जिवो, अथवा मरो,
पण एने कोइ जातनो हैयामां घाट नथी जे, आपणे आटलुं दुःख थाशे के आपणे आटलुं
सुख थाशे. ए बेमांथी कोइ जातनो हइयामां घाट नथी. ए भक्तजनना हइयामां तो एज दृढ
निश्चय छे जे आ देहे करीने भगवानना धाममां निवास करवो छे पण वचमां क्यांइ लोभावुं
नथी. अने कायरने ठेकाणे जे देहाभिमानी एवा भगवानना भक्त छे. तेने तो प्रभु भज्या-
मां हजारुं जातना घाट थाय छे जे, जो करडां वर्त्तमान थाशे तो नहि नभाय ने सुगम वर्त्त-
मान हशे तो नभाशे. अने वळी एवो पण विचार करे जे आवो उपाय करीए तो संसारमां
पण सुखिया थाइए. अने नभाशे तो हळवा हळवा सत्संगमां नभशुं, एवो भक्त होय ते कायर
ने ठेकाणे जाणवो. अने सूराविर जे भगवानना दृढ भक्त होय तेने तो पिंड ब्रह्मांड संबंधी
कोइ जातना घाट न थाय. पछे श्रीजी महाराजे पोतानां वृतांतनी वार्त्ता करवा मांडी जे अ-
मे अमदावादमां श्री नरनारायण देवनी प्रतिष्ठा करवा गया हता, त्यारे हजारुं माणसनो मेळो

भराणो हतो.पछे ज्यारेश्री नरनारायण देवीनी प्रतिष्ठा थइ रही अने अमदावादना ब्राह्मण चोराशी जमी रह्या. पछे अमे सावदा थइने चाली निसर्या ते जेतलपुरमां जइने रात रह्या, पछे त्यां जइने एवो विचार करवा मांड्यो जे जेटलां माणस देख्यां छे, ने जेटली प्रवृत्ति देखी छे तेने टाळी नांखवी.पछे तेने विसार्याने अर्थे हयाइमां अतिशे दुःख थयुं तेणे करीने सरीरे पण मांदा थइ गया.पछे त्यां थकी धोळके जइने रात रह्या. अने धोळकाना चाल्या ए ने ए विचारमां गाम कोठने पासे गणेश धोळकानी राण्युंमां जइने रात रह्या.तेए विचार एवो करवा मांड्यो जे देहनी स्मृत्ति न रही.-पछे विचारतां विचारतां सर्व प्रवृत्तिने विसारी मेलीने जेवा अमे कोकरीये तळाव उतर्या नोहोता ने मेळो पण भराणो नहोतो ने त्यारे कोइ जातनो घाट नहोतो तेवी रीते-सर्व घाट टाळी नांख्या. अने ज्यारे लोकीक घाट मटी गया, त्यारे अंतर दृष्टि रहेवा मांडी. पछे अलौकिक आश्चर्य देखावां मांड्यां. अने देवता संबंधी जे भोग छे ते देखावा मांड्या,ने अनंत प्रकारनां विमान, ने अनंत प्रकारनी अपछरा,ने अनंत प्रकारनां वस्त्र, ने अनंत प्रकारना अलंकार, ते जेम आहिं मृत्यु लोकने विषे छे तेमज त्यां देखावा ड्यांपण अमाराअंतरमांतोएकभगवानविना बिजुं कांइ गम्युंनहि ने जेम आहिंनापंचविषयतेअमने

तुच्छ भास्यानेतेमांअमारुंमनलोभाणुंनहि.तेमजदेवलोकब्रह्मलोक पर्यंतअमारुंमनक्यांइलोभाणुंनहि
तेने देखीने देवता सर्वे अमारां वखाण करवा मांडयां जे. तमे भगवानना एकांतिक भक्त खरा.
केम जे तमारुं मन भगवानने मुकीने क्यांइ लोभातुं नथी, पछे तेमनां वचन सांभळीने अमारा
हैयाने विषे हिमत आवी. पछे अमे मनने कह्युं जे ताहारुं जेवुं रूप छे तेवुं हुं जाणुं छुं
जो भगवान विना बिजा पदार्थनो घाट घडयो तो तारा भुका करी नाखीश. तेमज
बुद्धिने कह्युं जे भगवान विना त्रिजो जो निश्चय कर्यो तो तारी वात छे, तेमज चित्तने
कह्युं जे भगवान विना बिजुं चिंतवन कर्युं तो तारा पण भुका करी नाखीश, ते-
मज अंहकारने कह्युं जे भगवानना दासत्व पणा विना बिजुं अभिमान धर्युं तो तारो
नाश करी नाखीश. पछे तो अमारे जेम आ लोकना पदार्थनी अत्यंत विस्मृ-
ति थइ हती तेमज देवलोक, ब्रह्मलोकना पदार्थनी पण अत्यंत विस्मृति थइ गइ अने ए ज्यारे
सर्वे संकल्प टळी गया त्यारे संकल्पनो मंदवाड हतो ते पण टळी गयो. एवी रीते भगवाननो
भक्त होय तेने एम वर्त्तवुं. एम श्रीजीमहाराजे पोतानुं वृत्तांत भक्तजनना कल्याणने अर्थे कह्युं
ने पोते तो साक्षात श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम नारायण छे. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे वासुदेव

माहात्मने विषे एकांतिक भक्तना धर्म कह्या छे, जे एकांतिक भक्त होय ते पोतानुं रूप देहमाने नहि ने पोताने चैतन्य रूप माने. अने स्वधर्म, ज्ञान, वैराग्य तेणे सहित भगवाननी भक्ति करे ने एक भगवान विना बिजा कोइ पदार्थनी वासना राखे नहि. अने ज्यारे ए भगवानने भजीने आवो रीतनो साधु थयो त्यारे साधु थकी कांइ बिजी मोटी पदवी नथी. जेम राजा होय ने तेनी राणी होय ते जेटलामां राजानुं राज्य छे तेटलामां राणीनुं राज्य पण कहेवाय. अने जेवो राजानो हुकम चाले तेवोज राणीनो पण हुकम चाले. तेम भगवाननो जेवो प्रतापछे तेवो साधुनो पण प्रताप छे, माटे तुच्छ एवां जे संसारनां सुख ते साधुने इच्छवां नहि, कांजे ए साधु ज्यारे भगवानना धामने पामे छे. त्यारे अनंत कोटी ब्रह्मांडना पति जे ब्रह्मादिक इ-श्वर ते भगवानने अर्थे जेम अनंत प्रकारनी भेंठ, सामग्रीयुं लावे छे, तेम ए साधुने अर्थेपण लावे छे, ने भगवानने प्रतापे करीने ए साधु अलौकिक ऐश्वर्य सामर्थीने पामे छे, एवो मोटो विचार हैयामां राखीने एक भगवान विना बिजुं कांइ पण मनमां इच्छवुं नहि. अने जेम हाथमां चिंतामणी आवी त्यारे ते चिंतामणीनेज जतन करीने राखवी. केम जे जो हाथमां चिंतामणी छे, तो जे पदार्थने इच्छशे ते पदार्थने आपशे. तेम भगवानना भक्तने भगवाननी मूर्त्ति

रूपी चिंतामणीनें झाली राखवी पण तेने मुकवीज नहि, तो एने सर्वे वातनी सिद्धि थाशे. ॥
इति वचनामृतम् ॥ २२ ॥ १५५ ॥

संवत १८७२ ना ज्येष्ट शुदि ११ एकादशीनेदिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिरनीआगळ विराजमान हता. ने मस्तक उपर धोळी पाघ बांधि हति. अने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे, आज तो अमे मननुं रूप विचारी जोयुं, ते मन जिव थकी जुदुं न देखाणुं. मन तो जिवनुंज कोइक कारण छे पण जिव थकि जुदुं नथि. अने मननुं रूप तो एवुं देखाणुं जे जेम उनाळामां लुख होय, तथा जेम शियाळामां हिम होय तेवुं मननुं रूप देखाणुं. अने जेम माणसना देहमां लुक पेसे त्यारे ते माणस मरि जाय छे.तेम ए मन, इंद्रिद्वारे थइने ज्यारे विषय सनमुख जाय छे त्यारे ते विषय जो दुखदाइ होय तो मन तपिने उनाळानि लुक जेवुं थायछे, ने ते विषय जो सुख दायक होय तो तेने विषे मन शियाळाना हिम जेवुं थाय छे. ते ज्यारे दुखदाइ विषयने

भोगविने लुक सरखुं उंनु थइने जिवना हृदामां पेसेछे त्यारे जिवने अतिशे दुखियो करिने क ल्याणना मार्गथी पाडी नांखेछे, ए ते लुखलागीने मरे तेम जाणवुं. अने ज्यारे ए मन सुखदा इ विषयमां सुखने भोगवे त्यारे टाढुं हिम सरखुं थइने जिवना हृदामां पेसेछे, अने जिवने सु- खियो करिने कल्याणना मार्गथी पाडी नांखे छे, ए ते हिमळानो वा आवे ने मरे तेम जाणवुं. माटे जेनुं मन भुंडा विषयने देखिने तपे नहि. अने सारा विषयने देखीने टाढुं पण थाय नहि. एवी रिते जेनुं मन अविकारि रेहेतुं होय तेने पर्म भागवत संत-जाणवा. अने एवुं मन थावुं ए कांइ थोडी वात नथि, अने मननो तो केवो स्वभाव छे तो जेम बाळक होय ते सर्पने, अग्नि- ने तथा उघाडी तरवारने झालवा जाय ते जो झालवा न देइए तोपण दुखियो थाय. अने जो झालवा देइये तोपण दुखियो थाय. तेम जो मनने विषय भोगववा न देइये तोपण दुखियुं थाय. ने जो भोगववा देइये तोपण विमुख थइने अतिशे दुखियुं थाय. माटे जेनुं मन भगवान ने विषे आशक्त थयुंछे, ने विषयने जोगेकरिने टाढुं उंनुं थातुं नथि तेनेज साधु जाणवा.॥ इ वचनामृतम् ॥२३॥१५६॥

संवत १८७९ ना श्रावणसुदि ८ अष्टमिने दिवसे स्वामी श्री सहजानंदजी मा-

वच. हाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमांथी घोडीए चढीने श्रीलक्ष्मीवाडीए पधार्या हता. ने त्यां चोतरा उपर उत्तरादे मुखारविंदे विराजमान हता, अने श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने कंठने विषे मोगराना पुष्पनो हार पेहेर्यो हतो, ने पाघने विषे मोगराना पुष्पनो तोरो धारण कर्यो हतो, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंसनी तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे मुक्तानंद स्वामीए श्रीजि महाराजने प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज भगवानने विषे अचळ निष्टावाळो जे भक्त होय तेने कोइ जातनो विक्षेप आडो आवे के न आवे ? पछे श्रीजि महाराज बोल्या जे एक जोग निष्टा छे, ने बिजि सांख्य निष्टा छे, तेमां जोग निष्टावाळो जे भगवाननो भक्त ते भगवानना स्वरूपमां पोतानी अखंड वृत्ति राखे अने सांख्य निष्टावाळा जे भगवानना भक्त ते तो मनुष्यनां सुख तथा सिद्ध, चारण, विद्याधर, गंधर्व, देवता ए सर्वेनां जे सुख तेने समजी राखे तथा चौद लोकनी मांहिलो कोरे जे जे सुख छे ते सर्वेनुं प्रमाण करी राखे जे आ सुख ते आटलुंज छे. अने ए सुखनी केडे जे दुख रह्युं छे तेनुंपण प्रमाण करी राखे. पछे दुखे सोतां एवां जे ए सुख ते थकी वैराग्यने पामीने परमेश्वरने विषे जे दृढ प्रीति राखे एवी रीते सांख्यनिष्टावाळाने तो समजणनुं बळ होय. अने जोगनिष्टावा-

ळाने तो भगवानना स्वरूपमां अखंड वृति राखवी-तेनुंज बळ होय. पण कोइक विशम-देशकाळादिकने जोगे करीने कोइक विक्षेप आवे तो भगवानना स्वसपमां वृत्ति रेहेती होय तेकोइक विजे पण चोटी जाय. केम जे जोगनिष्टावाळाने समजणयनुं बळ थोडुं होय, माटे कांइक विघ्न थइ जाय खरूं, अने सांख्यनिष्टा ने जोगनिष्टा ए बेय जो एकने विषे होय तो पछे कांइ वांधोज न रहे. अने एवो जे भगवाननो भक्त होय तेतो भगवाननी मूर्त्ति विना विजा कोइ पदार्थमां लोभायज नहि अने एम समजे जे भगवाननुं जे अक्षर धामने ते धामने विषे रहि एवि जे भगवाननी मूर्त्तिने ते धामने विषे रह्या एवा जे भगवानना भक्त ते विना जे जे लोकछे, ने ते लोकने विषे रह्या एवा जे देव छे ने ते देवना वैभव छे ते सर्वे नाशवंत छे. एम जाणीने एक भगवानने विषेज दृढ प्रीति राखे छे माटे एवा भक्तने कोइ जातनो विक्षेप आवतो नथी.

॥ इति वचनामृतम् ॥२४॥१८५॥

संवत १८७९ ना श्रावण वदि ६ छठने छठने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां दाक्षिणादे बार ओरडानी ओसरीये ढोलीया उपर विराजमान हता, अ ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. ने पोताना मुखारविंदनी आगळ

मुनी तथा देश देशना हरी भकनी भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराजे सर्वे पर्महंसने क-
ह्युं जे सांभळो अमे एक प्रश्न पुछीए छीए. जे एक तो भगवाननो भक्त त्यागी छे ने देहे क-
रीने तो सर्वे वर्त्तमान दृढ राखे छे ने अंतरमां तो विषय भोगववानी वासना अतिशे तिखीछे
तोपण देहे करीने तो भ्रष्ट थातो नथी एवो तो त्यागी छे, अने बिजो भक्त छे ते तो ग्रहस्था-
श्रमीछेनेतेनेतोदेहेकरीनेधनस्त्रीनोप्रसंगछेनेअंतरमांतोसर्वप्रकारे निर्वासनीकछेएवेयजणाज्यारेदेहमु-
कशे त्यारे ए बेय शि गतिने पामशे? ए बेय ते सरखी गतिने पामशे के अधिक न्युन्य थाशे?
ए वचनो विकिए करीने जुदो जुदो उत्तर आपो. पछे गोपालानंद स्वामी बोल्या जे ए त्यागी
ज्यारे देह मुकशे त्यारे एने विषय भोगववानी अंतरमां तिखि वासना छे माटे एने तो भगवान
मृत्यलोकने विषे अथवा देवलोकने विषे मोटो ग्रहस्थ करशे अने अतिशे विषय भोग प्राप्त
थाशे. ते जेवा भगवद्गीतामां योग भ्रष्टने भोग कह्या छे तेवा भोगने देवलोकमां भोगवशे. अने
जे ग्रहस्थ हरिभक्त छे ते तो देह मुकशे त्यारे निर्वासनीक छे माटे भगवाननुं जे ब्रह्मपुर धाम
छे तेने पामशे ने भगवानना चरणारविंदमां निवास करीने रेहेशे. अने प्रथम कह्यो जे त्यागी ते
तो विषय भोगवीने ज्यारे तृप्त थाशे त्यारे ते विषय थकी वैराग्य पामीने ने मनमां पश्चातापक-

रीने भगवाननुं भजन करशे पछे निर्वासनीक थइने भगवानना धाममां जाशे. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ठिक कह्युं एनो उत्तर एज छे. पछे मुक्तानंद स्वामीए पुछ्युं जे एवी दृढवासना होय ने तेनी जेने टाळवानी इच्छा होय तो ते शो उपाय करे त्यारे टळे? पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेवं उका खाचरने संतनी सेवा करवानुं व्यसन पड्युंछे तेवी रीते भगवान तथा भगवानना संत तेनी सेवा करवानुं जेने व्यसन पडे ने ते विना एक क्षणमात्र पण रेहेवायनहि. तो एना अंतःकरणनी जे मलीन वासना ते सर्वे नाश पामी जाय छे. पछे स्वयंप्रकाशानंद स्वामीए पुछ्युं जे हे महाराज जेणे करीने भगवान अतिशे राजी थाय एवुं कियुं साधन छे? पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ज्यारे घरमां एक मण अन्न मळतुं होय ने त्यारे जेवी संतनी उपर प्रीति होय ने जेवुं दिनपणुं होयअने पछे तेने एक गामनुं राज आवे,अथवा पांच गामनुं राज आवे, अथवा पचास गामनुं राज आवे, अथवा सो गामनुं राज आवे, अथवा सर्व पृथ्विनुं राज आवे, तोपण संतनी आगळ जेवो कंगाल हतो ने दिन आधिन रेहेतो तेवोने ते वोज प्रितियें युक्त थको दिन आधिन रेहे; तेमज इंद्रलोक तथा ब्रह्मलोकनुं राज पामे, तो पण संतनि आगळ तेवोने तेवोज दिन आधिन रहे, अने जे त्यागी होय ने ते जेवो प्रथम गारि

व होय ने जेम सो संतनी टेहेल चाकरी करतो होय तेवीने तेवीज पोतामां भगवाननां जेवां ऐ-श्वर्य आवे तो पण करतो रहे पण साधुं साथे पितराइ दावो बांधेज नहि. ने बरोबरीयापणुं करेनाहिएवांजेनांलक्षणहोयतेनीउपरभगवानअतिशेप्रसन्न थायछे॥ इतिवचनामृतम्॥ २५ ॥ १५८॥

संवत १८७२ भादरवा सुदी ११ एकादशीने दिवस रात्रीने समे श्रीजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिरनी आगळ विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ पर्महंस तथा देश देशना हरीभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे,जे भगवाननो भक्त होय तेने तो भगवानने तथा भगवानना भक्तने जे न गमतुं होय ते नज करवुं. अने परमेश्वरने भज्यामां अंतराय करता होय ने ते पोतानां सगांवहालां होय तेनो पण त्याग करवो; अने भगवानने न गमे एवो कोइकपोतामां स्वभाव होय तो तेनो पण शत्रुनी पेठे त्याग करवो, पण भगवानथी जे विमुख होय तेनो पक्ष लेवो नहि. जेम भरतजियें पोतानी मातानो पक्ष न लीधो. अने भगवाननो भक्त होय तेने तो सौथी विशेष पोतामां अवगुणज भासे. अने जे बिजामां अवगुण जुवे, अने पोतामां गुण परठे ते तो सत्संगी छे, तो पण अरधो विमुख छे. अने

भगवानना भक्तने तो भगवाननी भक्ति करतां आत्मज्ञान तथा वैराग्य तथा धर्म ते जो अंतराय करता होय तो तेने पण पाछा पाडीने भगवाननी भक्तिनुं मुख्य पणुं राखवुं. अने जो भक्तिने विषे सहाय रूप थाता होय तो तो ठिक छे. एम समजे ते भगवाननो पुरो भक्त कहेवाय. अने जेने त्रिजाना अवगुण आव्या ने पोतामां गुण परठे ते तो गमे तेवो मोटो होय तो पण तेने कल्याणना मार्गमां विघ्न थाय छे. जेम राधीकाजी घणां मोटां हतां, अने भगवानने विषे प्रेम पण अतिशे हतो पण ज्यारे पोतामां गुण मान्यो अने श्री कृष्ण भगवानने विषे अवगुण मान्यो त्यारे पोताना प्रेममां तमोगुणनो भाग आव्यो. पछे श्री कृष्ण भगवान तथा श्रीदाम साथे वढवेड करी. पछे श्री दामानो शाप थयो, तेणे करीने गोलोकमांथी पडीने गुजरने घेर अवतार लीधो. अने भगवान विना अन्य पुरुष हतो तेने धणी कर्यो. एवा महा महोटां लांछनने पाम्यां. अने श्रीदामा हतो तेणे पण पोतामां गुण मान्यो. अने राधीकामां अवगुण परठ्यो, तो राधीकानो शाप पामीने दैत्य थावुं पडयुं अनेएधाममांथीतोपडवानी रीत नथी ने जे पडयोतेतोभगवाननीइच्छा एवीहती तोपणभगवानेएमजणाव्युंजेराधीकाजी जेवो महोटो होयने तेपोतामां गुण परठे ने भगवानना भक्तनो अवगुण ले तो ते पडी जाय, तो बिजानी शी गती. माटे

भगवानना भक्त होय तेने तो सर्वे सत्संगीनो गुणज लेवो ने पोतानो अवगुणज लेवो. एवी रिते समजतो होय ने थोडि बुद्धि होय तोपण तेनो सत्संग दिवसे दिवसे वृद्धि पामतो जाय. अने ते विनातो जाफि बुद्धि होय तोपण दिवस दिवस प्रत्ये सत्संगमांथी पाछो हठतो जाय. अने अंते जातां निश्चे विमुख थाय. अने वळी एवी रित तो सर्व ठेकाणे छे जे,जे चाकर होय अथवा शिष्य होय, तेने राजा होय, अथवा गुरु होय ते जेम वढीने केहेवा मांडे तेमां जे सवळुं लेतो जाय तो ते उपर राजा, तथा गुरुने अतिशे हेत थाय छे. अने जेने शिखामणनी वात कहे, ने अवळुं लेतो ते उपर हेत थातुं नथि. तेमज भगवाननी पण रित छेजे, जेने शिखामणनी वात केहे ने सवळुं ले तो ते उपर हेत थाय छे पण जे अवळुं ले ते उपर थातुं नथि.
॥इति वचनामृतम ॥२६॥१५९॥

संवत १८८० ना कार्त्तिक शुदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजि महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां दक्षणा दे बार ओरडानी ओसरिये विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हता. अने कंठने विषे गुलदावदिना धोळा ने पिळा पुष्पना हार विराजमान हता. अने पाघमां बे कोरे तोरा लटकता हता, अने पोताना

च.

मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनि सभा भराइने बेठि हैंति. पछे श्रीजि महाराजे मुक्तानंद स्वामीने प्रश्न पुछ्युं जे तमारे क्रोध थाय छे त्यारे शे निमिते थाय छे? अने केटलुं निमित्त होय त्यारे क्रोध थाय छे? अने अमारे तो एकथी लाख रुपैया सुधि बगाड करे तोपण पोता सारु तो क्रोध आवे नहि. अने ज्यारे धर्म लोप करे, अथवा बळीयो होय ते गरिबने पिडे, अथवा अन्यायनो पक्ष ले त्यारे तेनी उपर अमारे कोइकने अर्थे लगारेक क्रोधनी चटकी आवे छे, पण पोता सारुं लेशमात्र क्रोध आवतो नथि. अने कोइक सारु आवेछे ते पण क्षण मात्र नथि रहेतो, ने आंटि पण बंधाती नथि. तेम तमारे केइ रिते आवे छे? ने केइ रिते टळे छे? पछे मुक्तानंद स्वामीए कह्युं जे कोइ पदार्थने जोगे तथा कोइनी अवळाइ देखाय तेने जोगे करिने ते उपर क्रोध थाय पण तत्काळ समी जाय छे. पछे श्रीजि महाराज बोल्या जे एवूं तमारे विचारनुं बळ रहे छे ते शाने योगे रहे छे त्यारे. मुक्तानंद स्वामीये कह्युं जे एक तो भगवाननुं माहात्म्य विचारीने एम समजाय छे जे, जे रिते भगवानने कुराजीपो थाय ते स्वभाव राखवो नथी. ने बिजो शुकजीने जडभरत जेवा संतनो मार्ग जोइने एम विचार रहेछे जे साधुमां एवो अजोग्य स्वभाव न जोइए. पछे श्रीजी माहाराज बो

ल्या बे काम क्रोधादिकना जोरने हठावे एवो जे विचार ते तो गुण थकी पर छे. ते ए तमा
रा जीवमां रह्यो छे अने एवी रीते काम क्रोधादिक गुणने हठावे एवु जे जोर छे ते पूर्व ज
न्मनो संस्कार छे ने तमारु एटलुं तो अमने जणाय छे जे तमारे जे जेमायीक पदार्थनो जोग
थाय तेनी आंटीमां प्रथम तो आवी जवाय पण अंत्ये जातां एना बंधनमां रेवाय नही, बंधन
तोडीने निकळाय खरु. पछे मुक्तानंद स्वामीए पुछयुं जे प्रथम आ वरण थइ जाय एवी का
चप रहेछे ते शाने जोगे रेहेछे? त्यारे श्रीजी माहाराज बोल्या जे देशकालादिक जे आठ
छे तेमां जेवुं पूर्वना संस्कारमां जोर छे तेवुंज एक एकमां छे माटे ज्यारे एनो जोग थाय
त्यारे जरुर बंधन थाय छे अने पूर्वना संस्कारनुं जोर रहेवा देता नथी अने जो संस्कारमां
लख्युं एटलुंज सुकृत दुकृत थाय तो वेदशास्त्रने पुराण तेने विषे विधी निषेधना भेद कह्या
छेजे आ करवुं ने आ न करवुं ते सर्व खोटुं थइ जाय ते ए मोटाना करेला शास्त्र ते खोटां
थायज नही. अने जय विजय हता तेणे जो अजोग्य क्रिया करी तो जे ठेकाणे काल कर्मने
माया नथी एवुं जे भगवाननुं धाम त्यांथी पडी गया. अने जो नारदजीने राजी कर्या तो
प्रह्लादने देशकाळादिक अशुभ हता तो पण नडी शक्यानही. अने जो सनकादिकने कोपाय

मान करया तो देशकालादिक शुभ हता पण जय विजय पडी गया. माटे जेने कल्याणने इ
च्छवुं तेने तो जेम मोटा पुरूष राजी थाय तेम करवुं. अने ते मोटा पुरूष पण त्यारे राजी
थाय ज्यारे कोइ प्रकारे अंतरमां मलिन वासना न रहे अने जेने गरीब उपर क्रोधादिक
ना संकल्प थाता होय तो तेने मोटा उपर पण थाय अने पोताना इष्ट देव उपर पण क्रोधा
दिकनो मलिन घाट थाय.माटे जेने कल्याणने इच्छवुं तेने कोइ उपर मलिन घाट करवो नहि.
अने जो कोइ उपर मलीनघाट करे तो तेने भगवानना भक्त तथा भगवान उपर पण मलीन
घाट थइ जाय अने अमथी तो जो एक गरीब पण दुवाणो होय तो अमारा अंतरमां एवो
विचार आवे छे जे भगवान सर्व अंतरजामी छे ते एक ठाणे रहीने सर्वना अंतरने जाणे छे
माटे जेने अमे दुवो होय तेनाज अंतरमां बिराजता हशे तो अमे भगवाननो अपराध कर्यो
एम जाणे ने तेने पगे लागीए ने तेने कांइ जाइतुं होय ते आपीए पण जे प्रकारे राजी थाय
तेम करीए छीए अने वळी अमे विचारीने जोयुं जे जे अतिशे त्याग राखे अथवा दया रा
खे तथा भगवाननी भक्ती थाय नही त्यारे उपासनानो भंग थाय छे अने पूर्वे जे जे अतिशे
त्यागी थया छे तेना मार्गमां उपासनानो नाश थइ गयो छे माटे अमे एम विचारीने अरनी

उपासना रेहेवा सारु त्यागनो पक्ष मोळो करीने भगवानना मंदीर कराव्यां छे तेमां जो थोडोक त्याग-रहेशे तो पण उपासना रहेशे तो तेणे करीने घणाक जीवनुं कल्याण थाशे. अने जेने भगवाननी भक्ती करवी तेने तो डुडियानी पेठे दया राखे पण केम ठीक पडे? एने तो परमेश्वरने वास्ते पुष्प लाव्यां जोइए,तुळसी लाव्यां जोइए,भाजी तरकारी लावीजोइए, ठाकोरजीने वास्ते बाग बगीचा कराव्या जोइए,मंदीर कराव्यां जोइए, माटे जे अतिशे त्याग राखीने ने अतिशे दया राखीने मुठी वाळीने बेसी रहे तेणे भगवाननी भक्ती थाती नथी. अने ज्यारे भक्तिए रहित थाय त्यारे भगवाननीउपासनानोनाशथइ जाय एटलेपछवाडेथी अंध पंपरा चाले. ते सारु अमे मंदीर कराव्यां छे ते अखंड भगवाननी उपासना राख्या सारु कराव्यां छे. अने जे उपासक होय ते पोताना धर्ममांथी भ्रष्ट थायज नही माटे पोत पोताना धर्ममांरहीनेभगवाननीभक्ती उपासना करवी एप्रमाणे सिद्धांतछे॥इतिवचनामृत॥२७॥१६०॥

संवत १८८० ना फागण वदी २ द्वीतीयाने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताने उतारे वेदी उपर आथमणे मुखारविंदे विराजमान हता. नेधोळो खेस पेहेर्यो हतो अने धोळी चादर ओढी हती, अने मस्तक उपर

धोळी पाघ बांधि हति. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे दवे मागजिये कह्युं जे श्रीमद्भागवत जेवो कोइ ग्रंथ नथि. पछे श्रीजि महाराज बोल्या जे श्रीमद्भागवततो सारुं छे पण स्कंध पूराणने विषे श्री वासुदेव माहात्म छे ते जेवो कोइ ग्रंथ नथि. कांजे ए ग्रंथने विषे धर्मज्ञान, वैराग्य, ने भक्ति तथा अहिंसापणुं एमनुं अतिशे प्रतिपादन कर्युं छे. एम कहिने पछे श्रीजि महाराज एम बोल्या जे वालमिकि रामायणने विषे, अने हरिवंशने विशे अतिशे हिंसानुं प्रति पादन कर्युं छे अने रघुनाथजि पण क्षत्रीनी प्रकृतिये वरत्या छे. अने रघुनाथजिने विषे शरणांगतवत्सळपणुं तो खरुं. पण जे शरणागत होय ने ते जो जराक वांकमां आव्यो होय तो तेनो ततकाळ त्याग करी दे, जो सीताजीने माथे लगारेक लोकापवाद आव्यो तो, अति वहालां हतां पण ततकाळ त्याग करी दीधो. पछे मुक्तानंद स्वामीए कह्युं जे एवी तो रामानंद स्वामीनी प्रकृती हति. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, अमारी प्रकृति तो एवी नथी, अमारे तो परमेश्वरना भक्त उपर अतिशे दया वर्त्ते छे. अने पांडवुंने विषे पण अर्जुननी प्रकृति बहु दयाळुं हति, अने पुरुषमात्रने विषे तो रामचंद्रजी तथा अर्जुन एवो कोइ पुरुष नथी अने सीता

जीने द्रुपदी एवीयुं कोइ स्त्रियुं मात्रमां स्त्रियुं नथी. हवे अमे अमारी जे प्रकृति छे, ते कहिए छीए. अमारो दयाळुं स्वभाव छे तोपण जे हरिभक्तनो द्रोहि होय तेनो तो अमारे अभाव आवे छे. अने हरिभक्तनुं घसातुं जो कोइ बोल्यो होय अने जो हुं सांभळुं तो ते साथे हुं बोलवाने घणो इच्छुं पण बोलवानुं मनज थायज नहि. अने जे भगवानना भक्तनी सेवा चाकरी करे ते उपर तो अमारे अतिशे राजीपो थाय छे. अने मारी प्रकृति एम छे जे थोडीक वातमां कुराजी पण न थाउं अने थोडीक वातमां राजी पण न थाउं. ने ज्यारे जेमां राजी थयानो के कुराजी थयानो स्वभाव बहु दिवस सुधी जोउंछुं, त्यारे राजीपो ने कुराजीपो थाय छे, पण कोइना कह्या सांभळ्या थकी कोइने उपर राजीपो के कुराजीपो थातो नथी. अने जेटलो जेनो गुण मारा मनमां जणाइ जाय छे तेटलो तेनो गुण आवे छे. अने मारे तो एज अंग छे जे, जो भगवाननो खरे खरो भक्त होय तो हुं तो ते भगवानना भक्तनो पण भक्त छुं, अने जे हुं भगवानना भक्तनी भक्ति करूं छुं एज मारे विषे मोटो गुण छे. अने एटलो गुण जेमां न होय तो तेमां कोइ जातनी मोटप शोभे नहि अने भगवानना भक्तनो जेने जेने अभाव आव्यो छे, ते अतिशे मोटा हता, तोपण पोतानी पदवी थकी पडी गाय छे. अने जेनुं रूडु थाय छे तेपण

भगवानना भक्तनी सेवामांथीज थाय छे अने जेनुं भुंडुं थाय छे, ते पण भगवानना भक्तना द्रो-
हमांथीज थाय छे. अने वळी जिवने भगवानने राजी करयानो उपाय तो मनकर्मवचने भग-
वानना भक्तनी सेवा करवी एज छे, अने भगवानना भक्तनो द्रोह करवो एज
एज भगवानने कुराजी करवानो उपाय छे. माटे मारो तो एज सिद्धांत छे जे भगवाननो राजीपो
होय ने भगवानना भक्तनो संग होय तो भगवानथी अनंत वरस सुधि छेटे रहिये तोपणकांइ
मनमां शोक न थाय. अने भगवाननीपासेरहेता होइयेनेजोभगवाननो राजीपोनहोय तोतेने हुं सा-
रुं नथी जाणतो. अने सर्व शास्त्रनुं पण एज सार छे जे भगवाननो जेम राजीपो होय तेमज
करवुं. अने जेम भगवाननो राजीपो होय तेम जे न करे तेने भगवानना मार्ग थकी पड्यो जा-
णवो. अने जेने भगवान ने भगवानना भक्तनो संग छे ने जेना उपर भगवाननो राजीपो छे ने
ते जो मृत्य लोकमां छे तो पण भगवानना धाममांज छे. केम जे जे संतनी सेवा करे छे ने भ
गवानना गमतामांज छे ते भगवानने समीपे जाइनेज निवास करशे. अने जो भगवान-
ना धाममां छे ने भगवाननो राजीपो नथी ने भगवानना भक्त उपर इर्षा छे, तो ते
भक्त भगवानना धाममांथी पण जरुर हेठो पडशे. माटे अमारे तो भगवाननो राजी-

पो थया सारुं जन्मो जन्म भगवानना भक्तनी सेवा करवी छे, अने जेम अमारो निश्चय छे, तेमज तमारे पण निश्चय करवो. पछे मुक्तानंद स्वामी आदिक जे सर्वे हरिभक्त हता तेमणे हाथ जोडीने कह्युं जे हे महाराज अमारे पण एज निश्चय राखवो छे. एम कहीने सर्वे हरी भक्त विनतीए सहित श्रीजी महाराजने पगे लाग्या. पछे वळी श्रीजी महाराज बोल्या जे आ वार्त्ता जे अमे करी छे ते केवी छे तो वेद शास्त्र पूराण आदिक जे जे कल्याणने अर्थे पृथ्वीने विषे शब्द मात्र छे ते सर्वेनुं अमे श्रवण करीने तेनुं सार काढीने आ वार्त्ता करी छे ते परम रहस्य छे ने सारनुं पण सार छे. अने पूर्वे जे जे मोक्षने पामी गया छे ने हवे जे जे पामशे ने हमणां जे जे मोक्षने मार्गे चाल्या छे. ते सर्वेने आ वार्त्ता छे ते जिवन दोरी रूप छे

॥ इति वचनामृतम् ॥२८॥१५७॥

संवत १८८० ना फागणसुदि ८ अष्टमिने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी माहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उत्तरादे बार ओरडानी ओसरिये ढोलीया उपर विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथादेश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराजबोल्या

ने श्रीकृष्ण भगवानना स्वरूपने विषे ने भक्तनुं चित्त अति आशक्त थयुं होयतेनां आवां ल-
क्षण होय जे पोते मार्गे चालीने अतिशे थाकी रह्यो होय ने बेठा थावानी पण शरीरमां श-
क्ति न रही होय ने ते वासनामां कांइक भगवाननी वार्त्तानो प्रसंग निसरे तोजाणीए जे एके
गाउ पण चाल्योनथीएवोसावधान थइनेतेवार्त्तानेकरवामां, सांभळवामां अतिशे तत्पर थइ जाय
अथवा गमे तेवो रोगादिके करीनेपिडयानेपाम्योहोय अथवा गमेतेवुंअपमान थयुंहोय ने तेवामां जो
ए भगवाननी वार्त्ता सांभळे तो तत्काळ सर्व दुःख थकी रहित थइ जाय. अने वळी गमे ते
वो राज्य समृद्धिने पामीने अवराइ गयो एवो जणातो होय अने जे घडीए ए भगवाननी वा
र्त्ता सांभळे तो ते घडीए जाणीए एने कोइनो संगज नथी थयो. एवो थको ते भगवाननी वा
र्त्ता सांभळवामां सावधान थइ जाय. एवी जातनां जेने विषे लक्षण होय तेने ए भगवानने वि
षे आशक्ति थइ जाणवी. पछे मुक्तानंद स्वामीये पूछयुं जे ए भगवानने विषे एवी दृढ आश
क्ति शा थकि थायछे? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे कांतो पूर्व जन्मनो एवो अति बळीयो
संस्कार होय अथवा जे संतने भगवानने विषे एवि दृढआसक्तिहोय तेने सेवायेकरिने राजीक
रे ए बेये करिनेज भगवानने विषे एवि दृढ आसक्ति थायछे पण ए विना बिजो उपाय नथि

इति वचनामृतम् ॥ २९ ॥ १६२॥

संवत १८८० ना द्वितिय चैत्र शुदि ९ नवमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजि महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदीरनी ओसरिये गादी तकिया उपर विराजमान हता, ने श्वेत खेस पेर्यो हतो, ने श्वेत चादर ओढी हती, ने काळा छेडानी धोतली मस्तके बांधि हति, ने धोळा पुष्पनो हार पेर्यो हतो, ने धोळा पुष्पनो तोरो पाघमां लटकतो हतो. ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हति. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे श्रीमद्भागवत आदिक जे सत शास्त्र ते सत्य छे. ने ए शास्त्रमां जे कह्युं होय ते तेवीज रिते थायछे,पण बिजी रिते थातुं नथी. जुओने श्रीमद्भागवतमां सूवर्णने विषे कळीनो निवास कह्यो छे तो ते सुवर्ण अमने दिठुं पण गमतुं नथी. अने जेवुं बंधनकारी सुवर्ण छे तेवुंज बंधनकारी रूप पण छे. केम जे ज्यारे रूपवान स्त्री होय ने ते सभामां आवे त्यारे गमे तेवो धिरजवान होय तेनी पण द्रष्टि, तेना रूपने विषे तणाया विना रहे नहि. माटे सोनुं ने स्त्री ए बे अतिशे बंधनकारी छे. ने ए बे पदार्थनुं बंधन तो त्यारे न थाय, ज्यारे प्रकृति पुरुष थकि परणवुं. ने सुद्ध चैतन्य ब्रह्म तेनेज एक

सत्य जाणे ने ते ब्रह्मनेज पोतानुं स्वरूप माने, जे ते ब्रह्मरूप थइने परब्रह्म एवा जे श्री कृष्ण भगवान तेनुं भजन करे, अने ए ब्रह्म थकि ओरुं जे प्रकृतिने प्रकृतिनुं कारज मात्र तेने असत्य जाणे, ने नाशवंत जाणे ने तुच्छ समजे नें मायीक जे नाम रूप तेने विषे अतिशे दोप दृष्टी राखे ने ते सर्व नाम रूपने विषे अतिशे वैराग्यन पामे तेने सोनुंने स्त्री बंधन न करे अने बिजाने तो जरूर बंधन करे. ॥इति वचनामृतम् ॥३०॥१६३॥

संवत १८७०ना श्रावण सुदी ४ चोथ्यने दिवस श्रीजी महाराजश्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरवारमां पोताने उतारे वेदीका उपर गादी तकीया नखावीने विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने काळा छेडानी धोतली मस्तके बांधी हती, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ पर्महंस तथदेश देशना हरिभक्तनी सभा भराइनेबेठी हती. ने मागजीदवे पासे श्रीमदभागवतमां कपील गीतानी कथा वंचावता हता पछे कथानी समाप्ति थइरहीत्यारेश्रीजीमहाराजपर्महंसप्रत्येबोल्याजे,सर्वकारणनापणकारणने। अक्षरातीतने पुरुपोत्तम एवा जेवासुदेव भगवानते महा पुरुप रूपे करिने महामायांनेविषेवीर्यनेधरे छे ते पुरुपअक्षरात्मक छे मुक्तछे ने एने ब्रह्म कहेछे. अने ए पुरुपे मायामां वीर्य धर्युं त्यारे ते माया थकि परधान

पुरुष द्वाराये वैराज पुरुष उत्पन्न थया. त्यारे ए वैराज पुरुष ते, ते पुरुषना पुत्र केहेवाय. जेम आ जगतमां कोइक ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्यादिक जे प्राकृत माणस होय, ने तेनी स्त्रिमांथी तेनो दीकरो थाय,तेम ए वैराज पुरुष थाय छे. एवा जे वैराज पुरुष ते आ जीव जेवाज छे ने एनी क्रिया पण आ जीवना जेवीज छे ने ते वैराज पुरुष तेनी द्विपरार्धकालनी आवरदा छे अने आ जगतनी उत्पति प्रलय रूप एनी त्रण अवस्था छे,जेम आ जीवनी जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति ए त्रण अवस्था छे तेम. अने ए वैराज पुरुषना विराट, सुत्रात्मा, अव्याकृत ए त्रण देह छे ने ते देह अष्टावरणे जुक्त छे ने ते देह महतत्वादिक जे चोवीस तत्व ते द्वारे थयाछे ने ए विराटने विषे इंद्रियुं अंतःकरणने देवताए प्रवेश कर्यो ने एने उठाडवा मांड्युं ने विराट नो जीव पण मांहि हतो तोपण ए विराट उठ्या नही.ने ज्यारे क्षेत्रज्ञ एवा जे वासुदेव भगवान ते पुरुष रूपे करीने एमां आव्या त्यारे ए विराट देह उठ्युं ने ए वैराज पुरुष पोतानी क्रियाने विषे समर्थ थया.अने एज जे भगवान ते आ जीवने प्रकाशाने अर्थे सुषुप्ति रूप माया थकी पररह्या थका ए जीवने विषे साक्षी रूपेरह्याछे;तोपण जिवने देह, इंद्रियोने विषय तेनो संग घणो थयो छे माटे संग दोषे करीने ए जीव देहादिक रूप थइ गयो छे ते एना संगने

मुक्तीने ए जीव एम समजे जे मारू स्वरूप तो माया थकी मुक्तने पर एवुं जे ब्रह्म ते छे. एवी
रीते निरंतर मनन करतो छतो ए ब्रह्मनो संग करे तो ए ब्रह्मनो गुण ए जीवने
विषे आवे, पण एने आ वार्त्ता सांभळी होय तो पण निरंतर स्मृति रहे
ति नथी ए मोटो दोष छे. एवी रीते इश्वर जे वैराज पुरुषने आ जीव ए सर्वेना प्रकाश ते
पुरुष रूपे करीने पुरुषोत्तम एवा वासुदेव छे. अने ए वैराज पुरुष पण जिवनी पेठे बद्ध छे, ते
द्विपरार्द्ध सुधी पोतानी आवरदा भोगवे छे त्यां सुधी बद्ध वर्त्ते छे, ने एनो प्रलय थाय त्यारे
एने ए पुरुषनो संबंध साक्षात थायछे. केम जे एनो बाप जे पुरुष ते समर्थ छे. ते एनेएटलो
टाळवे छे अने वैराज पुरुषने मायानो संबंध रह्यो छे. माटे प्रलयने अंते पाछो मायामांथी
उपजे छे. अने आ जिव छे ते जेवो पोते बद्ध छे ने असमर्थ छे तेवी रीतेज एनो जेबापहोय,
ते पण बद्धने असमर्थ होय माटे ए बाप ते दिकरानो शो सहाय करे. माटे एने सुषुप्ती रूप
मायानो संबंध निरंतर रहेछे,टळतो नथी.एतो त्यारे टळे जे, ज्यारे पूर्वे कह्यो तेवी रीतेनिरंतर
पोताना प्रकाश जे ब्रह्म तेनो मनन द्वारा संग करे त्यारे टळे. अने वळी ए विराट पुरुष
पण संकर्षण, अनिरुद्ध, प्रद्युम्ननी उपासना करे छे. तेमां प्रलयरूप अवस्थाने विषे संकर्षणनी

उपासना करेछे, ने स्थितिरूप अवस्थाने विपे प्रद्युम्ननी उपासना करे छे ने उत्पातिरूप अवस्थाने विपे अनिरुद्धनी उपासना करे छे. अने ते संकर्षणादिक त्रण जे ते वासुदेव भगवाननो सगुण रूप छे ने ते उपासनाने बळे करीने ए वैराज पुरूप छे ते उत्पत्ति स्थितीने प्रलय रूप क्रियाने विपे सामर्थ्यने पामेछे. अने ज्यां सुधी ए त्रणनी उपासना करे छे त्यां सुधी एने उत्पति स्थिती प्रलय रूप जे मायानो संबंध ते टळतो नथी, ने ज्यारे ए निर्गुण एवा जे वासुदेव भगवान तेनी उपासना करेछे त्यारे ए वैराज पुरुष मायानो त्याग करीने ब्रह्मरूप थाय छे. जेम आ जीव छे ते ब्रह्मादिक देवरूप भगवाननी उपासना करे छे त्यारे धर्म अर्थ कामरूप फळने पामे छे.अने ज्यारे भगवानना अवतार जे रामकृष्णादिक तेनी उपासना करे त्यारे ब्रह्मरूप थाय ने एनी मुक्ति थाय.तेम ए विराट पुरूपने पण छे अने ए वैराज पुरुष द्वाराये अवतार थाय छे एम शास्त्रमां कह्युं छे ते तो एम समजवुं जे ए जे वासुदेव नारायण ते पुरूप रूपे करीने वैराज पुरूपने विपे आवीने विराजमान होय त्यारे अवतार कह्या छे. माटे ते अवतार तो सर्वे वासुदेव भगवानना ज छे. अने ए वासुदेव भगवान ज्यारे प्रतिलोमपणे ए वैराज पुरूप थकी नोखा पडी जाय, त्यारे ए केवळ वैराज पुरुष थकी अवतार संभवेज नहि.

माटे ए थकी अवतार तो एने विषे वासुदेव आव्या छे.ते सारु कह्याछे, अने एने विषे वासुदेव जे क्षेत्रज्ञ तेणे प्रवेश कर्यो नहोतो. त्यारे ए वैराज पुरुष पोतानी क्रिया करवी, तेने विषे पण समर्थ नहोता थया. अने पूर्वे जे पुरुष कह्या ते मायामां गर्भ धरे त्यारे प्रधान पुरुषद्वारा ये एक एवो जे वैराज पुरुष रुप दिकरो ते थाय, अने एज मायामांथी अनेक प्रधान पुरुष द्वाराये तिनां पण घणांक एवां वैराज पुरुषरूप ब्रह्मांड थायछे. अने ते पुरुष तो निरन्न छे ने मुक्त छे, ने ब्रह्म छे, ने मायाना कारण छे, ते मायाने विषे लोमपणे वर्त्ते छे, तो पण तेने मायानो बाध थातो नथी,ने मायाने विषे एने भोगनी इच्छानथी.एतो पोते ब्रह्म सुखे सुखिया छे ने पूर्ण काम छे, अने जे वैराज पुरुष इश्वर छे, ते मायाना भोगने भोगवीने प्रलय काळने विषे मायानो त्याग करे छे. ने जे जिव छे ते तो मायाना भोगने भोगवीने दुःखीओ थको मायामांज लीन थाय छे, त्यारे शुकमुनीए पुछयुं जे पुर्षोत्तम वासुदेव छे ते पुरुष रुपे करीने अनेक ब्रह्मांडनी उत्पत्ति स्थिति प्रलयना कर्त्ता छे माटे पुरुष रुपे करीनेज बहुधा शास्त्रमां पुर्षोत्तमने कह्या छे. त्यारे पुरुषमां ने वासुदेवमां केटलो भेद छे? त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे जेम आ जीवने विषे ने वैराज पुरुष इश्वरने विषे भेद छे ने वळी जेम इश्वरने विषे ने पु-

रूपने विषे भेद छे, तेम पुरूपने पुर्षोत्तम एवा जे वासुदेव भगवान तेने विषे एवो घणो भेद छे. पुर्षोत्तम वासुदेव तो सर्वना स्वामी छे, अने एवा अक्षरात्मक पुरुष ब्रह्मरूप घणाक छे. ते जे वासुदेवना चरणार्विंदनी उपासना करे छे, ने स्तुति करेछे. एवी रीते पुर्षोत्तम, पुरुष रुप, इश्वर ने जिव ने माया, ए पांच भेद अनादिछे, ते आवी रीते वार्त्ता अमे घणीकवार करीछे, पणएनुं मनन करीने सारी पेठे पोताना अंतरमां घड बेसारता नथी. एटले शास्त्रना ने शब्द सांभळी ने समजणमां ठरतो नथी. ने ठावकी वेड बेसारी होय तो एनी समजण कोइ दिवस ते शब्दने सांभळवे करीने फरे नाहि. माटे आ वार्त्ताने सारी पेठे विचारजो ने लखजो. एवी रीते आ वार्त्ता श्रीजी महाराजे करी ते लखी छे. ॥इतिवचनामृतम्॥३२॥१६४॥

संवत १८८० ना श्रावण शुदि ५ पंचमीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजि माहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना मरजारमां पोताने उतारे विराजमान हता, अने श्रीजी माहाराजे अंगने विषे सर्वे श्वेत वस्त्र पहेर्यां हतां. अने मस्तकने उपर काळा छेडानी धोतली बांधी हती अने कंठने विषे पुष्पना हार विराजमान हता. तथा कर्णने उपर पुष्पना गुच्छ विराजमान हता, तथा मस्तक उपर पुष्पना तोरा विराजमान हता अने पोताना मुखार्विंदनी

आगळ पर्महंस तथा देश देशना हरिभक्ते सभा भराइने बेठि हती. पछे श्रीजि महाराज स
वें हरिभक्त प्रत्ये बोलता हवा, जे आ संसारने विषे पोताना कुटंबिनो संबंध छे ते तो जेम थो
रनुं जाड होय, अथवा वडनुं, के पिपरनुं डाळ होय, ते एक ठेकाणथी कापिने बिजे ठेका-
णे रोपिये तो उगीने जाड थाय. अने आंबो, तथा लिंबडो होय, तेने एकवार काप्यो एटले
फरीने चोटे नहि. तेम कुटंबी विना बिजानो जे संबंध छे तेतो आंबाना जाडना जेवोछे, ते ए-
कवार काप्यो एटले फरिने चोटे नहि. अने कुटंबीनो संबंध छे, तेतो थोरना ने वडना जाड
जेवो छे ते कापी नांख्यो होय तोपण धरतीमां पड्यो पड्यो पण पालव्या विना रहे नहि. माटे
ए कुटंबीनो संबंधतो,त्यारे टळेजे ज्यारे स्थुल,सुक्ष्मने कारणए त्रणे देह थकी नोखो,एवो जे
आ देहने विषे जिवात्मा तेने पोतानुं रूप जाणीने तेने विषे भगवाननी मूर्त्तिने धारीने, ने जाति
वर्ण आश्रम तेना मानने मुकीने, ने केवळ भगवानना स्मर्णने विषे तत्पर थाय तो कुटंबीनो सं-
बंध चोखो टळे. ते विना बिजो उपायकोइ नथी.अने वळी जिवनुं जे कल्याण थाय,अने जिव
मायाने तरीने ब्रह्म स्वरूप थाय,तेनुं कारण तो पुरुषोत्तम एवा श्री वासुदेव भगवान तेना प्रत्य-
क्ष स्वरूपनुं ज्ञान, ध्यान, किर्त्तन, ने कथादिक एजछे ने एणे करीने ए जिव छे ते मायाने

तरे छे, अने अति मोटाइने पामे छे. अने भगवाननुं जे अक्षरा धाम तेने पामे छे. अने आत्मनिष्टा, वैराग्य, ने धर्म, तेतो ए भगवाननी भक्तिना सहाय रूप उपकरण छे, पण भगवाननी भक्ति विना एकलो वैराग्य, तथा आत्मनिष्टा तथा धर्म ते जिवने माया तरयानुं साधन नथी. अने जो अतिशे धर्म,आत्मनिष्टा, वैराग्य न होय ने एकली भगवाननी भक्ति होय तोपण ए जिवनुं कल्याण थाय ने मायाने तरे. एटलो धर्मादिक थकि भक्तिने विषे विशेष छे, तोपण धर्मादिक अंगनुं सहायपणुं होय तो ए भक्तिने विषे कोइ विघ्न थातुं नथि अने जो धर्मादिक अंगनुं सहायपणुं न होय तो विशमं देशकाळादिके करिने भक्तिने विषे विघ्न जरुर थायछे. ते माटे धर्मादिक अंगे सहित भक्ति करवी. अने एवी रिते भक्तिने करतो जे भक्त,तेने पण जो भुंडा देशकाळ क्रियाने संगछे, तेने विषे प्रवरताय तो भगवाननो भक्त होय तेनुं पण अंतर डोळाइ जाय ने तेनो स्वभावनो ठार नरहे. माटे भुंडो देश,भुंडो काळ,भुंडी क्रियाने भुंडो संगतेनो त्याग करिने रूडो देशकाळ,रूडो संग, रूडी क्रिया, तेने विषे सदा प्रवर्त्तवुं. पण भुंडा देशादिकनो संग करवोज नहि.॥इति वचनामृतम् ॥३२॥१६५॥

संवत १८८०ना श्रावण वदी १३ तेरशने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज

श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताने उतारे ढोलीया उपर गादी, तकियानखावीने
विराजमान हता, ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी
तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने वेठी हती. पछे श्रीजीमहाराज सर्वे संत तथा सर्वे
हरिभक्त प्रत्ये एम बोलता हवा जे, प्रथम अमे अमारा अंगनी वात कहिए. पछे तमे सर्वे
पोतपोतानो जे रीते मोक्ष मान्यो होय तथा अमे आवी रीते वर्त्तशुं, तो आ लोकमां ने पर-
लोकमां भगवान अम उपर राजी रहेशे एम जे मान्युं होय ते कहेज्यो. एम सर्वेने कहीनेपछे
श्रीजीमहाराजे पोताना अंगनी वात कहेवा मांडी, जे अमने तो जे पदार्थमां हेत जणाय, ते
तेनो त्याग करीए त्यारे सुख थाय. अने भगवानना भक्त विना जे मनुष्यमात्र अथवा पदार्थ
मात्र तेनी जो मनमां स्मृति थइ होय तो तेथी अतिशे छेटुं करीए त्यारे सुख थाय. अने जो
भगवाननो भक्त होय तो तेनो कोइ रीते करीने हइयामां अभावआवेज नहि. अने अमारे वग
र इच्छे पण पंच विषय छे, ते जोरावरीए आवीने प्राप्त थाय छे, तोपण तेने अमे इच्छता
नथी. अने पगे करीने ठेली नांखीए छीए, अने जे दिवस थकी अमे जनम्या छीए ते दिवस-
थी करीने आज दिवस पर्यंत कोइ दिवस जाग्रतमां अथवा स्वप्नमां द्रव्यनो के स्त्रीनो भुंडो

घाट थयो होय तो आ समग्र पर्महंसना सम छे. अने एवी रीते अमे सदाय निर्दोषपणे छ-इए. ने जे अमारे विषे दोष बुद्धि करशे, तो तेने जाग्रतमां तथा स्वप्नमां भुंडा घाट थाशे, ने तेनेदेह मुक्या समे बहु कष्ट थाशे. अने अमारा अंतरमां तो एक भगवानना स्वरूपनुंज चिंतवन रहे छे.अने उपरथीतो भगवानना भक्त होय तेना जीवनुं सारूं थाय ते सारू हळी मळीने रहिए छीए, अने जे दिवस अमारा हैयामां भगवान ने भगवानना भक्त विना बिजेक्यांइ हेत जणाशे, तो अमे एम मानशुं जे अमे अमारा स्थितीमांथी डग्या,पण अमनेऐवो निश्चे छे, जे अमे ए स्थितीमांथी डगीएज नहि, ए अमे अमारू अंग हतुं, ते कह्युं, हवे तमे सौ पोत-पोतानुं अंग होय ते कह्यो. पछे सर्वे संते तथा सर्वे हरीभक्ते जेवां जेमां अंग हतां तेवां कह्यांजे आलोकने विषे ने परलोकने विषे आवी रीतना अंगमां अमे रहीए तो अमारा उपर भगवान राजी रहे. एवी रीते कह्युं ते सर्वे हरिभक्तना अंगनी विकि जे कोणेक तो भगवान विना बिजे ठेकाणे वैराग्यनुं कह्युं, अने कोणेक आत्मनिष्टानुं कह्युं, ने कोणे भगवानने विषे प्रितिनुं कह्युं, ने कोणेक धर्ममां रहेवानुं कह्युं. एवी रीते बहु प्रकारे कह्युं. पण श्रीजीमहाराजे मनमां धारी राख्युं हतुं ते कोणे न कह्युं. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे एक निष्कामी वर्तमान दृढ होयते

तेने आ लोकमां तथा परलोकमां कोइ ठेकाणे भगवानथी छेटुं रहे नाहि. अने अमारे पण ते उपरथी कोइ दिवस हेत ओछुं थाय नाहि. अने अमे अहिंयां टक्या छइए, ते पण अहिंयांना हरिभक्तने अति निष्कामी वर्त्तमाननो दृढाव देखीने टक्या छइए. अने जेने निष्कामी वर्त्तमान दृढ होय तो ते थकी अमे हजार गाउ छेटे जाइए तो पण तेनी पासेज छइए. अने जेने निष्कामी वर्त्तमानमां काचप छे, ने ते जो अम पासे छे तोपण ते लाख गाउ छेटे छे, अने अमने निष्कामी भक्त होय तेनाज हाथनी करी सेवा गमे छे. माटे आ मुळजी ब्रह्मचारी छे, ते अतिशे दृढ निष्कामी छे, तो अमने एनी करेली सेवा अतिशे गमे छे, अने बिजो कोइ सेवाचाकरी करे तो ते एवी गमती नथी. अने अमे जेजे वार्ता करीए छैये तेने विषे पण निष्कामी वर्त्तमाननुंज अतिशे प्रति पादन थायछे अने अमे जे दिवस थकी प्रगट थया छैये ते दिवस थकी निष्कामी वर्त्तमाननेजं अतिशे दृढ करता आविए छैये, अने सभा बेठी होय त्यां कोइक स्त्री अथवा पुरुष तेने जोवामां फेर पडे त्यारे ए गमे तेटली जुक्ति करीने संताडे तोपण अमने जणाया विना रहेज नीह.त्यारे अमारो ते मनुष्य उपर अतिशे कु राजीपो थै जाय अने अमारुं मुख पण सामळु थइ जाय छे अने तेनुं दुखतो अतिशे लागेछे,पण मोवत जा

पोने जाणुं कहेवाय नहिं अने वळी साधु दावोछे माटे हइआमां समजी रहीएछीए, पणजोराजा ना जेवी रीत्य होयतो तेने मांथे झाझो दंड थाय. माटे सर्वे मोटा मोटा पर्महंस तथा मोटी मोटी बायुं तेने अमे मोरथीज कहि राख्युंछे जे सत्संगमां कोइ पुरुषने तथा कोइ स्त्रीने कदाचित. जो निष्कामी वर्त्तमानमां फेर पडेतो अमने संभळावशोमां, शामाटे जे ज्यारे अमे एवि वार्ता सांभळीए त्यारे, जेम वांझियाने घेर दिकरो आव्यो होय ने ते मरिजाय ने तेने जेवो शोक थाय, तेवो अमारे पण शोक थायछे, तथा मनमां एम विचार थइ जाय जे बधा सत्संगने मुकीने जाता रहीए. माटे जे निष्कामी वर्त्तमान राखे तेज अमने वाहालो छे, अने तेने ने अमारे आ लोक परलोकमां दृढ मेळापरहे छे.पछे हरजी ठकरे प्रश्न पुछयुं जे ए निष्कामी वर्त्तमान शो उपाए अतिशे दृढ थाय छे?पछे श्रीजी महाराज बोल्या एनो एक प्रकारनो उपाय नथी, एनो तो त्रण प्रकारनो उपाय छे. जेम हांकनारो, बळदिया, पइडां, धुंसरी, उध्य, मांचडो एवा घणाक सामाने करीने एक गाडुं कहेवाय छे, तेम निष्कामी वृत्त दृढ राखवानी पण घणीक सामग्री जोइए छे. तेमां पण त्रण उपाय छे. ते तो अतिशे मुख्य छे तेमां एक तो मनने वश करवुं, जे मनने विषे अखंड एवुं मनन करवुं जे

हुं आत्मा छुं, देह नथी ने भगवाननी कथा श्रवणादिक जे नवधा भक्ति तेने विषे मनने अ खंड जोडी मेलवुं, पण क्षणमात्र मनने नवरुं रहेवा देवुं नहि. जेम कोइक पुरुषने भूत वशथयो हतो ते ज्यारे काम न बतावे त्यारे तेने खावा तइयार थाय. तेम आ मन छे ते पण भूत जेवुं छे ते ज्यारे भगवद्भक्तिमां न राखे त्यारे अधर्मना घाट घडे त्यारे ए भूतनी पेठे जिवने खावा तइयार थयुं कहेवाय. माटे मनने अखंड भगवाननी कथा किर्त्तनादिकमां जोडी राखवुं एटले ए मन वश थयुं कहेवाय. अने बिजो उपाय ए छे जे प्राणने नियममां राखवो. ते जेम भगवाने गितामां कह्युं छे जे आहार, विहार जुक्त राखवो, पण अतिशे खाधानी लोलुपता न राखवी. एवी रीते वर्त्ते त्यारे प्राण नियममां थयो कहेवाय. अने प्राण नियममां न कर्यो होय-तो खाधानी बहुं मनमां तृष्णा रहे. पछे अनंत प्रकारना जे रस तेने विषे रसना इंद्रि छे ते दोडती फरे त्यारे बिजी इंद्रियुं वश करी होय ते पण सर्वे मोकली थइ जाय. माटे आहारने नियममां राखीने प्राणने नियममां करवो. अने त्रिजो उपाय ए छे जे आ सत्संगने विषे जेने जेने जे जे नियम कह्या छे, तेमां देहने राखीने देहने नियममां करवो. अने एवी रीते एत्रण उपायने जे दृढ राखे तेने निष्कामी वर्त्तमान अतिशे दृढ थायछे. अने एने विषे एम न जाणवुं जे

एवी रिते राखवुं घणुं कठण छे केम जे, जे साधुज होय तेने तो एम राखवुं कांइ कठण छे नहि. अने साधु होय तेतो काम, क्रोध, लोभादिक शत्रुनुं बळ होय तोपण भगवानने राजी करया सारुं तेनो त्याग करे त्यारेज ए पाको साधु केहेवाय. अने मनुष्य देहे करिने न थाय एवुं शुं छे? जे नित्ये अभ्यास राखीने करे ते थाय छे. जेम, कुवानां कांठा उपर महा कठण पथरो होय छे, तेने विषे नित्ये पाणीने शिंचवुं तेणे करिने नरम दोरडी छे ते पण कापा पाडे छे. तेम जे साधुज छे ने ते स्वभावने टाळवानो नित अभ्यास राखशे तो ते स्वभाव क्यां लगी रहेशे? एतो निश्चेज नाश पामशे. माटे जेने निष्काम वृत्त राखवुं होय तेने कह्या एवा जे त्रण उपाय ते दृढ करीने राखवा. ॥इतिवचनामृत॥ ३३॥ १६६॥

संवत १८८० ना द्वितिय भादरवा शुदि १ पडवाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजि महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरिये विराजमान हता, ने धोळुं धोतियुं पहेर्युं हतुं ने धोळी चादर ओढी हती, ने काळा छेडानी धोतली मस्तके बांधि हति, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ पर्महंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हति. ने पर्महंस दुकड, सरोदा लइने गावता हता. पछे श्रीजी महाराज

एम कहीने श्रीजी महाराज बो
बोल्या जे किर्त्तन राखो प्रश्न उत्तर करीए तो आळस मटे.
ल्या जे प्रथम एक प्रश्न पुछुं छुं, जे आ जिवने विषे मायाना कारन एवां जे इंद्रियो अंतःक
रण आदिक चोविस तत्व ते रह्यां छे ते तत्व जड छे के चैतन्य छे. पछे पर्महंसे कह्युं जे
ए तत्व चइतन्य तो खरां. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे ज्यारे ए तत्व चैतन्य छे त्यारे आ
शरीरने विषे जिव छे ते भेळां चोविस तत्व पण चोविस जिव थया त्यारे आ जिवनुं जे क-
ल्याण थाशे ते पण सर्वेने वहेचातुं भागे आवशे, ने जे पाप करशे ते पण सर्वेने वहेचातुं भागे
आवशे. त्यारे सुख दुःखनुं जे भोक्तापणुं ते एक जिवने विषेज नहि कहेवाय ने संचित प्रार-
ब्ध ने क्रियमाण ए त्रण प्रकारनां जे कर्म ते पण एक जिवने विषेज नहि कहेवाय.
ने नारदादिक जे पूर्वे मुक्त थयाछे तेमनो एक पोत पोतानो जिवज मुक्त थयोछे पण ते भेळा
चोविश तत्वना जीवतो मुक्त थया कह्या नथि. एवी रित्ये आशंका करीने तत्वने निर्जिव करि
देखाड्यां. पछे तेमां जेजे रिते पर्महंसेउत्तर कर्या तेने तेने आशंका करिने खोटा करि नांख्या
ते कोइ रीते पर्महंसथि उत्तर थयो नहि. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ल्यो एनो उत्तर
अमे करिये. जे आ जीवछे ते पोते विशेष सत्ताये करिने ह्रदयने विषे रह्योछे ने पोतानी सामा

न्य सत्ताये करिने देह इंद्रियो अंतःकरणमां तदात्मक पणे मळ्योछे तेणे करिने ए देहादिक चैतन्य जेवां जणायछे पण एतो जडजछे अने ज्यारे ए जीव भगवानना भक्त थइने भगवानना धाममां जायछे त्यारे जेड एवां जे तत्व ते पड्यां रहेछे. अने ए चोविस तत्वछे ते मायामांथि थयांछे माटे माया रूपछे ने जड छे ने देह इंद्रियोने अंतः करण रूपे जूदां जूदां जणायछे तेतो जेम एक पृथ्वी छे तेज त्वचा, मांस, मज्या, अस्थि, ने स्नायुं एवा पांच रूपे थइछे. ने काच रूपे पण करनारा नि किमते थइछे, तेम एक मायाछे ते परमेश्वरनी इच्छाये करीने ए देहादिक रूपे जूदे जूदे प्रकारे जणायछे. पछे शुकमुनिये पुछ्युं जे तत्वजड होय त्यारे तेमणे भगवाननी स्तुति केम करी ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ए तत्वने विषे कोइक मुक्तहता तेमणे प्रवेश करीने एक एक तत्वने देहे स्तुति करी. जेम पृथ्वीनो जिव हतो ते पृथ्वीना खोखामांथी निसरीने ब्रह्मा पासे गयो त्यारे कश्यप ऋषी हता, तेणे खाखोमां प्रवेश करीने तेने जिवाड्युं. पछे पृथ्वीए आवीने प्रार्थना करी जे मारुं देह पाछुं आपो, त्यारे कश्यपऋषि पृथ्वीना खोखामांथी निसरीने पृथ्वीनेपृथ्विनुंदेह पाछुंआप्युं तेणे करिनेपृथ्वीनुं काशयपी एवुं नाम पड्युं, तेम मायाने मायानुं कारज जे नाम रूप मात्र ते सर्वे जड द्रव्य छे; ने ते मायानो प्रकाशनारो जे पुरुष ते चै

तन्य द्रव्य छे, ते ए मायाने विषे प्रवेश करिने चैतन्य करेछे. अने परमेश्वर छे तेतो ए प्रकृति पुरुष बेय थकि न्यारा छे. ते परमेश्वरनो आ जिव ज्यारे आश्रय करेछे त्यारे ए मायाने मायानां कारजने तरीने ब्रह्मरूप थाय छे, ने भगवानना धामने पामेछे. पण ते विना बिजो जिवने मायना बंधन टळ्यानो उपाय नथि. ॥ इति वचनामृतम् ॥३४॥१६७॥

संवत १८८०भादरवा सुदि ११ एकादशीनेदिवस रात्री पाछली छ घडी रही त्यारे श्रीजी माहाराज सुता उठीने श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां जाग्नी खाट उपर ढोलीयो ढळावीने विराजमान हता, नेधोळो खेस पेहेर्यो हतो ने धोळी पछेडी ओढी हती, ने श्याम छेडानी धोतली मस्तके बांधी हती. पछे पर्महंस तथा हरीभक्तने तेडावीने ते प्रत्ये बोल्या जे आज तो अमने निंद्रा बहु आवी ते घणुं उठवानुं करयुं पण उठाय नहि, ने निंद्रामां अमे विचार घणो कर्यो छे. ने ते विचार करीने जे निधार कर्यो छे ते कहुं छुं,जे हुं रामानंद स्वामी पासे आव्या मोर प्रथम आत्माने साक्षात देखतो ने हमणे पण देखुं छुं. ते आत्मा सूर्यना जेवा प्रकाशे युक्त छे ने अमारां सर्व इंद्रियोनी क्रियाने विषे मुने आत्मानुं क्षणमात्र पण विस्मरण थातुं नथी, पण ए आत्मदर्शन थावुं बहु कठणछे. एवुं आत्मदर्शन

तो पूर्वना घणाक जन्मना सत संस्कारवाळो कोइक विरलो होय तेने थाय छे. ने बिजो तो ए आत्मानो विचार सो वरस पर्यंत करे तोपण आत्मानुं दर्शन थाय नहि. एतो क्यारे थाय, तो ज्यारे श्रीकृष्ण भगवाननी मुर्त्तिनुं ध्यान करे त्यारे ए आत्माने देखवो ए कांइ कठण नथी. अने भगवानना ध्यान विना केवळ आत्माने विचारे करीने आत्मा जणाय छे के देखाय छे, एवी तो आशा कोइने राखवी नहि. अने भगवाननी उपासना करवी ने भगवाननां चरित्र गावां, सांभळवां, ने भगवाननुं नाम स्मर्ण करवुं, ने पोतपोताना धर्ममां रहेवुं. एवी रीते पोताना जीवनुं कल्याण थाय ते कांइ कठण नथि, एतो जेम वहाणमां बेसीने समुद्र तरवो एवो सुगम मार्गछे. अने आत्मदर्शन करिने कल्याण करवुं तेतो जेम तुंबडां बांधिने समुद्र तरवो एवो कठण मार्गछे. अने अमे जे आत्मज्ञाननि वार्त्ता करिये छैये तेमांतो एटलुंज प्रयोजनछे जे, जो पोताना आत्माने देहथि जुदो माने तो देहने विषे प्रीति न रहे तथा देहना संबंधिने विषे हेत न रहे तथा भगवाननि भक्तिने विषे कोइ विघ्न न थाय एटलुंजप्रयोजनछे, पण केवळ एणे करिनेज कल्याण थाय एमतो मानतुंज नहि, अने वळी जगतमां एम वार्त्ताछे जे, मनहोय चंगा, तो कथरोटमां गंगा. ए वार्त्ता खोटीछे; एतो गमे तेवो समाधिनिष्ट होय अथवा वि-

चारवान होय, ने ते पण जो स्त्रियुंना प्रसंगमां रहेवा मांडे तो एनो धर्म कोइ रिते रहेज न-
हि.ने गमे तेवी धर्म वाळि स्त्री होय ने तेने जो पुरूषनो सहवास थाय तो तेनो पण धर्म रहेज
नहि अने एवी रीते स्त्री पुरूषने परस्पर सहवास थाय ने एनो धर्म रहे एवि तो आशाज रा
खवी नहि. ते आ वार्ता ते एमजछे पण एमां कांइ संशय राखवोनाहि.ते माटे धर्ममां वयारे
रहेवाय तो पर्महंस होय तथा ब्रह्मचारि होय ने ते जो पोताना ब्रह्मचर्यादिक नियम कह्याछे
तेमां रहेतो एने धर्ममां रहेवाय. अने स्त्री होय ने ते पण जो पोत पोताना नियम कहाछे तेमां
वर्ते तो तेने धर्ममां रहेवाय. अने विजा जे सत्संगी ग्रहस्थ होय ते पण जो पोत पोताना नि-
यम कह्याछे तेमां रहे ने जुवान अवस्था वाळी जे पोतानि माबोनने दिकरी ते भेळे पण एकां
तमां न बेसे ने तेनि सांमु द्रष्टि मांडीने न जुवे तो एने धर्ममां रहेवाय, एवि रीते धर्ममां रहेवुं.
तथा भगवानना स्वरूपनी उपासना करवी, तथा भगवानना अवतार चरित्रनुं श्रवण किर्त्तन क
रवुं, तथा भगवाननुं नाम स्मर्ण करवुं ए च्यारवानांज जीवना अतिशे कल्याणने अर्थेछे.
अने आ तमे सर्वेछो ते मुने भगवान जाणोछो ते अमे ज्यां ज्यां उत्सव समैया
कर्या होय ने जे ठेकाणे पर्महंस ब्रह्मचारी तथा हरीभक्त सत्संगी बाइ, भाइ सर्वे भेगां थ-

यां होय ने अमे कित्तंन गवराव्यां होय ने वार्त्ता करी होय ने अमारी पुजा थइ होय ए आ
दिक जे अमारां चारित्र लीला तेने कहेवां ने सांभळवांने तेनुं मनमां चितवन करवुं. अने जेने
एनुं चितवन अंतकाळे जो थइ आव्युं होय तो तेनो जिव भगवानना धामने जरुर पामे. माटे
एनां जे अमारां जे सर्वे चारित्र, क्रिया तथा नाम स्मर्ण ते कल्याण कारी छे. अने आवी रीते
अमे सरूपानंद स्वामीने वार्ता करी हती ते वार्ताने धारी त्यारे देहमां जे मंदवाडनुं घणुंक दु
ख हतुं ते सर्व निवृत्ति पामी गयुं ने परम शांति थइ. पण घणाय आत्माने देखता हता, तोय
पण तेणे करीने कांइ सिद्ध थइ नहि. अने वळी परोक्ष जे श्री कृष्ण रामचंद्रादिक भगवान
ना अवतार तेनां जे चारित्र ते ज्यां ज्यां कह्यां होय तेने पण सांभळवां ने गाववां- अने चार
वानांनी दृढता थाय तेने अर्थे अमे श्रीमद्‌भागवत आदिक आठ ग्रंथनुं अतिशे प्रतिपादन
कर्युं छे माटे ए ग्रंथने सांभळवा ने भणवा ने ए चारवानानीज वार्ता करवी. अने वळी भगवान
नी मूर्त्तिनी उपासना, ने भगवाननां चारित्र, ने भगवाननुं स्मर्ण ए त्रण वानां विना केवळ ध-
र्मे करीने कल्याण थावुं ते तो तुंबडां बांधिने समुद्र तरवो तेवुं कठण छे. अने भगवाननी मू-
र्त्तिनो आश्रय होय, ने भगवाननां चारित्रने गातो सांभळतो होय, ने भगवाननुं नाम स्मर्ण क

रतो होय ने जो तेमां धर्म न होय तो तेमांथे पाहोणा लेइने समुद्र तरवाने इच्छे एवो जाणवो ने तेने चांडाळ जेवो जाणवो. माटे ए चारवानांए करीनेज जीवनुं कल्याण जरूर थाय छे, पण ए विना बिजुं कोइ एवुं साधन नथी जे जेणे करीने कल्याण थाय. अने मुक्तानंद स्वामी आदिक साधुनां जे काव्य कित्तॅन ते गाववां ने सांभळवां तथा भगवानना अवतार चरीत्रेयुक्त एवां काव्य कित्तन बिजा कविनां होय, तो तेने पण गाववां ने सांभळवां. पण कबीर ने अखानां जे काव्य कित्तन होय तथा ए जेवां जेनां जेनां काव्य कित्तन होय तेने गाववां नहि, ने सांभळवां पण नहि. अने तमारे सर्वने मारे विषे विश्वास छे, ने हुं तमने जेवीतेवी अवळीवाते चडावी देउं तो जेम सर्वने कुवामां नांखीने उपरथी पहाणानी शीला ढांकें त्यारे तेने निकळवानी आशाज नहि, तेम तमे पण मारा वचनने विश्वास करीने अवळे मार्गे चढी जाशो तो एमां मारे शुं सारूं थाय? माटे आ वार्त्ता तमारा कल्याणनी छे ते में तमने हेते करीने कहीछे ते सारू तमो सर्वे हवे आवीन रीते समजीने दृढपणे वरतजो एम कहीने पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे जो तमे सर्वे आ अमे वार्त्ता करी एवी रीते वर्तवाने निश्चे करयो होय तो एक एक आवीने मारे पगे अडीने समस्ताओ ने एवी प्रतिज्ञा करो जे

अमारे दृढपणे एमज वरतवुं छे. पछे सर्वे पर्महंस तथा सर्वे सत्संगी राजिथका उठीने श्रीजी महाराजना चर्णा कमळनो स्पर्श करीने नमस्कार करीने पाछा बेठा. पछे सर्वे बाइयुंने पण एवी रीतें कह्युं त्यारे सर्वे बाइयुए पण छेटे उभा रहीने एम वर्तवानो निश्चे करीने सम खाधा. पछे श्रीजीमहाराज प्रसन्न थका पोताने उतारे पधार्या. ॥ इति वचनामृतम्॥ ३५॥ १५८ ॥

संवत १८८० ना भादरवा शुदि १५ पुनमने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी माहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बार ओरडानी ओशरीए ढोलीया उपर विराजमान हता. अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हता. ने पोताना मुखारविंदनी आगळ पर्महंस तथा देश देशना हरीभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी माहाराज बोल्या जे, प्रश्न उत्तर करो त्यारे मुक्तानंद स्वामीए प्रश्न पुछ्युं जे भगवानना स्वरुपमां अखंड वृत्ति रहे तेनो शो उपाय छे? पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे एनो उपाय तो चार प्रकारनो छे. तेमां एकतो जेना चित्तनो चोटवानो स्वभाव होय ते ज्यां चोटाडे त्यां चोटी जाय. ते जेम पुत्रकलत्रादिकमां चोटे छे तेम परमेश्वरमां पण चोटे माटे एकतो ए उपाय छे अने बिजो उपाय ए छे जे अतिशे सूरवीरपणुं जेना हैयामां होय, ने तेने जो भगवान विना बिजो घाट थाय, तो

पोते सूरवीर भक्त छे, माटे तेना हृदामां अतिशे विचार उपजे ते विचारे करीने घाटमात्रने टाळीने अखंड भगवानना स्वरूपमां वृत्ति राखे छे. अने त्रिजो उपाय ते भय छे ते जेना हृदाने विषे जन्म मृत्यु ने नरक चोराशो तेनी बिक अतिशे रेहेती होय ते बिके करीने भगवानना स्वरूपमां अखंड वृत्ति राखेछे. अने चोथो उपाय ते वैराग्यछे ते जे पुरुष वैराग्यवान होय ते सांख्य साङ्मने ज्ञाने करीने देह थकी पेताना आत्माने जूदो समजीने ते आत्मा विना बिजा सर्व मायीक पदार्थने असत्य जाणीने पछे ते आत्माने विषे परमात्माने धारीने तेनुं अखंड चिंतन करे अने ए चार उपाय विना तो जेना उपर भगवान कृपा करे तेनी तो वात न केहेवाय, पण ते विना बिजा तो अनंत उपर करे तोपण भगवानने विषे अखंड वृत्ति रहे नाहि अने भगवानने विषे अखंड वृति रेहेवी तेतो घणुं भारे काम छे. ते जेने अनेक जन्मना सुकृत उदे थयां होय तेने भगवानना स्वरूपमां अखंड वृत्ति रहेछे, ने बिजाने तो अखंडवृत्ति राखवी महा दूर्लभ छे. एवी रिते भगवानना स्वरूपमां अखंड वृत्ति राखवानी वात करी.ने पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे आ संसारने विषे माया माया कहेछे ते मायानुं रूप अमे जोइ लिधुंछे जे भगवान विना बिजे ठेकाणे जे हेत रहे छे तेज माया छे अने आ जिवने पोतानो जे देहने दे,

हनां सगां संबंधिने देहनुं भरण पोशण करनारा एटलांने विषे तो जेवुं पंचविषयमां जीवने अ
तिशे हेतछे,ते थकि पण विशेषे हेतछे. माटे जेने देहने देहना सगां संबंधिने देहना भरण पोषण
करनारा एमांथी स्नेह तुटयो ते पुरुष भगवाननी मायाने तरी रह्यो छे अने जे पुरुषने भगवान
विना बिजामांथी हेतु तुटे छे तेनेज भगवानने विषे हेत थाय छे, अने ज्यारे भगवानने विषे
हेत थयुं त्यारे तेनी भगवानमां अखंड वृत्ति रहे छे ने ज्यारे भगवानमां अखंड वृत्तिरही त्यारे
तेने बिजुं कांइ करवुं रह्युं नथी ते तो कृतार्थ थयो छे ॥इति वचनामृतम् ॥ ३६ ॥१६९॥

संवत १८८० ना भादरवा वदि १ पडवाने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज
श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बार ओरडानी ओसरिये विराजमान हता, ने
सर्व श्वेत वस्त्र धारण करयां हतां, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ पर्महंस तथा देश देशना
हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराजे प्रश्न पूछयुं जे गीतामां कह्युं छे, जे
ज्ञानी होय ते पण पोतानी प्रकृति सरखुं आचरण करे अने शास्त्रे कह्यो एवो जे निग्रह तेनुं
जोर चाले नहि. माटे ए स्वभाविक प्रकृति छे ते शे उपाये करीने टळे? पछे सर्व जे मुनी मं
डळ तेणे विचारी जोयुं पण श्रीजी महाराजना प्रश्ननो उत्तर थाय एम जणाणुं नहि? पछे श्री

जि बोल्या जे एनो उत्तर एम छे जे, ए स्वभाव मुकाव्या सारुं जे सत पुरुष उपदेश करता होय तेना वचनने विषे अतिशे विश्वास होय, अने उपदेश करनारानी उपर सांभळनाराने अतिषे प्रीति होय, अने उपदेसनो करनारो होय, ते गमे तेटलो दुखवीने कठण वचन कहे तो पण तेने हितकारीज मानतो जाय, तो स्वभावीक जे प्रकृति छे ते पण नाश थइ जाय, पण ए विना बिजो कोइ उपाय नथि. माटे जेने पोतानी प्रकृति टाळ्यानी इच्छा होय तेने परमेश्वर तथा सत पुरुष होय ते स्वभाव टाळ्या सारुं गमे तेटलो तिरस्कार करे, ने गमे तेवां कठण वचन कहे तोपण कोइ रीते दुखावुं नहि ने केहेनारानो गुणज लेवो. एवि रिते वर्त्ततां कोइ रीते न टळे एवी प्रकृति होय तोपण ते टळी जाय छे ॥ इति वचनामृतम् ॥३७॥१७०॥

संवत १८८० ना भादरवा वदि ६ छठने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजि महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे वार ओरडानि ओसरिये ढोलिया उपर गादि तकिया नखाविने विराजमान हता ने सर्वे श्वेतवस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनि आगळ पर्महंस तथा देश देशना हरि भक्तनि सभा भराइने बेठी हती. पछे श्री जी महाराज बोल्या जे संसारी जीवछे तेने तो कोइक धन देनारो मळे के दिकरो देनारो म

ळ तो त्यां तुरत प्रतीति आवे. अने भगवानना भक्त होय तेने तो जंत्र,मंत्र,नाटक, चेटकमां क्यांइ प्रतीति आवेज नहि. अने जे हरिभक्त होय ने जंत्र मंत्रमां प्रतीति करे ते सत्संगी होय ते पण अरधो विमुख जाणवो. अने जे साचा भगवानना भक्त होय ते घणा होय नहि.यथार्थ भगवानना भक्त तो कारियाणी गाममां भाचो भक्त हता ते सत्संग थया मोर मार्गीना पंथमां हता तोपण निष्कामी वर्त्तमानमां फेर पडयो नहि. अने पोते बाळ ब्रह्मचारी रह्या अने को-इक किमीयावाळा पोताने घेर आवीने उतरया हता. तेणे त्रांबामांथी रूपु करी देखाडयुं, ने पछे ए भक्तने कह्युं जे तमे सद्वृत्ति छो माटे तमने आ बुटी बतावीने रूपु करता शिखवुं पछे ए भक्ते लाकडी लइने तेने.गाम बहार काढी मुक्यो. अने तेने कह्युं जे, अमारे तो भगवान विना बिजा पदार्थनी इच्छा नथी, पछे ए भक्तने सत्संग थयो त्यारे भगवानना एकांतिक भक्त थया.माटे जे एकांतिक भक्त होय, तेने एकतो आत्मनिष्ठा होय ने बिजो वैराग्य होय, ने त्रिजो पोतानो धर्म दृढपणे होय, ने चोथी श्रीकृष्ण भगवानमां अत्यंत भक्ति होय, ने ते एकांतिक भक्त ज्यारे देह मुके त्यारे तेनो श्रीकृष्ण भगवानने विषे प्रवेश थाय छे अने जे एकांतिक न होय तेनो तो ब्रह्मादिकमां प्रवेश थाय छे, अथवा संकर्षणादिकने विषे प्रवेश थाय छे,

पण एकांतिक थया विना श्री कृष्ण वासुदेवमां प्रवेश थातो नथी. ते प्रवेश ते एम समजवोजे जेम आतिशे लोभी होय तेनो धनमां प्रवेश थाय छे. ने जेम आति कामी होय, तेनोमनगमती स्त्रीमां प्रवेश थाय छे. ने जेम घणीक दोलतवाळो होय ने ते वांझियो होय, ने तेने दिकरो आवे तेनो दिकरामां प्रवेश थाय छे. तेम एवी रीते जेनो जिव जे संघाथे बंधाणो होय, तेने विषे तेनो प्रवेश जाणवो. पण जेम जळमां जळ मळी जाय छे, ने अग्निमां अग्निने मळी जाय छे, तेम प्रवेश नथी थातो. एतो जेनो जेने विषे प्रवेश होय, तेने पोताना ना इष्ट विना बिजा कोइ पदार्थने विषे हेत उपजे नहि, ने एक तेनीज रटनालागी रहेने तेविना जिव ते महा दुखना दिवस भोगवीने जिवे पण सुखनथाय.॥इतिवचनामृतम्॥ ३८ ॥१७१॥

संवत १८८१ ना भादवा वदि १० दशमीने दिवस श्रीजिमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमांथी घोडीए चढीने श्री लक्ष्मी वाडीए पधारया हता. पछे त्यांओटा उपर ढोलियो ढळावीने ते विराजमान थया हता. ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण करयां हतां, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयो जे देश, काळ, क्रिया, संगादिके करीने पण जे पोतामां एवोगुण

होय जे जायज नहि एवो जेने स्वभाविक गुण होय ते कहो एम कहीने श्रीजीमहाराज बोल्या
जे ल्यो अमे अमारामां स्वभाविक गुण रह्या छे, ते कहीए जे एकतो अमारे एम वर्त्ते छे, जे
पंच प्रकारना विषय संबंधी जे जे पदार्थ तेनो देहे करीने सुजे एटलो जोग थाय तोपण तेनो
मनमां घाट न थाय तथा स्वप्नमां पण न आवे. अने बिजो एम जे बाहेरथी सुजे एटली प्रवृत्ति
मां रह्या होइये पण ज्यारेअंतरदृष्टीकरीनेपोतानाआत्मासामुंजोइयेतो काचबानाअंगनीपेठेसर्ववृत्ति
संकोचाइ ने आत्म स्वरूपने पामी जायने परम सुखरूपे वरतायअने त्रिजो एमजे चैतन्य रु
प तेजोमय एवुं जे भगवाननुं अक्षर धामछे तेमां सदा साकार मूर्त्ति एवा श्रीकृष्ण
वासुदेव विराजमानछे ने ते साकार थकाज सर्वना कर्त्ता छे, पण निराकार थकी तो कांइ
थातुं नथी. एवी रीते साकारनी दृढ प्रतीति छे, ने केटलाक वेदांतना ग्रंथ वंचाव्या ने सांभ-
ळ्या, तोपण ए प्रतीति टळी नहि. अने चोथो एमजे, जे कोइ बाइ भाइ होय ने तेनी कोरनुं
एम मारे जाण्यामां आवे जे, आतो उपरथी दंभे करीने भगवाननी भक्ति करेछे, पण ए सा-
चो भगवाननो भक्त नथी तो तेने देखीने मन राजी न थाय ने तेनी साथे सुवाण पण न थाय
ने जे खरेखरो भगवाननो भक्त होय तेने देखीनेज मन राजी थाय, ने तेनी साथेज सुवाण था

य, ए चार गुण अमारे विषे स्वाभाविकपणे रह्या छे ते कह्या, ने हवे तमे सर्वे कहो? पछे जे मोटेरा पर्महंस, तथा मोटेरा हरिभक्त हता, तेमणे जेमां जे गुण एवो हतो ते कही देखाड्यो. पछे श्रीजी महाराजबोल्या जे,जे मोटेरा होय तेने विषे निष्काम रूप धर्मछे ते अवश्य जोइये नेत्रिरीनातमांतो कांइ कचाचपहोयतोचालेपणएनीतो दृढताअतिशेजोइयेकेमजेएमोटेरोछेतेनी सार प्येसर्वनीसारप्यकहेवाय.एवीरीते वारताकरीनेपाछादादाखाचरनादरबारमांपधारीनेसंध्याआरति नारायण धुन्य करीने पछे सर्वे साधु तथा हरिजननी सभाथइ पछे श्रीजि महाराजे मोटेरा मोटेरा पर्महंसने पुछयुं जे अमे पंचमस्कंध तथा दशमस्कंधनुं अतिशे प्रतिपादन करयुंछे माटे एवे ग्रंथनुं जे रहस्य ते जेम तमने समजयामां आव्यु होय ते कहो. तारे मोटेरा सर्वे पर्महंसे पोत पोतानी समजण प्रमाणे जेम जणाणुं तेम कही देखाडयुं. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे ल्यो हवे अमे एवे ग्रंथनुं रहस्य कहिये जे रहस्य ते शुं तो गमे एवो शास्त्री होय, पुराणी होय अतिशे बुद्धिवाळो होय ते पण सांभळीने ते वार्त्तीने निश्चे सत्यमाने ने हा पाडे पण तेने कोइ रीते संशय न रहे जे ए वार्त्ता एम नहि होय एवी रीते जे कही देखाडवुं तेनुं नाम रहस्य कहेवाय. अने ए बे ग्रंथमां दशमस्कंधनुं तो ए रहस्यछे जे उपनीपद वेदांतने

श्रुति स्मृती तेमां जेने ब्रह्म कह्याछे, ज्योतिस्वरूपकह्याछे,तत्व कह्याछे,ने सुक्ष्म कह्याछे, ने निरंजन, क्षेत्रज्ञ सर्व कारण परब्रह्म पुरूषोत्तम वासुदेव विष्णु नारायण निर्गुण एवे नामे करी ने जेने परोक्ष पणे कह्याछे ते,ते आ प्रत्यक्ष वसुदेवना पुत्र श्रीकृष्ण वासुदेवछे,एवी रीते ज्यां ज्यां स्तुती भागछे त्यां त्यां एवा एवा स्तुतिना शब्दने लेइने प्रत्यक्ष श्रीकृष्न भगवाननेज कह्या छे,पण श्रीकृष्ण भगवानथि अधिक कांइ नथी कह्युं. तथा सर्वजगतनी उत्पत्ति स्थिति प्रलय ना कर्त्ता ते पण श्रीकृष्ण भगवानजछे एम कह्युंछे. अने पंचमस्कंधने विषे तो ए श्रीकृष्ण भगवाननुं महात्म कह्युंछे तथा ए श्रीकृष्ण भगवान जेते आ जगतनी स्थितिने अर्थे ने पोताना भक्तजनने सुख आपवाने अर्थे अनेक प्रकारनी मुर्त्तियुं धारीने खंड खंड प्रत्ये रह्याछे एम कह्युंछे अने पोते बांधि एवी जे मर्यादाउं तेने विषे जे रहे ते अतिशे मोटयपने पांमे ने जे न रहे ते मोटो होय तोपण पोतानी स्थिति थकी पडीजाय अने जे साधारण जिवहोय ने तेम-र्यादाने लोपे तो तेने अधोगति थायछे एम कह्युंछे.अनेएजजे श्रीकृष्णवासुदेव तेणेवसुदेवदेवकीने प्रत्यक्ष चतुर्भुज रुपे अद्भुत वाळक थका दर्शन दिधुं ए अनादी वासुदेव रुपछे अने एश्री-कृष्ण भगवान धर्म अर्थ कामने विषे वर्त्ताछे ते धर्म अर्थ काम सारु ने जे भगवाने चरित्र क

रयां तेनुं जे मान करे अथवा श्रवण करे ते सर्वे जीव सर्वे पापथकि मुकाइने पर्मपदने पामे छे अने ए वासुदेव भगवानना जन्म कर्म ने मुत्ति ए सर्वे दिव्य स्वरूप छे अने ए जे वासुदेव श्री कृष्ण तेज सर्वोपरी छे, एवी रीते ए बे ग्रंथनुं रहस्य छे. अने शुकजी जेवा ब्रह्म स्थितिने पाम्या होय तेने पण श्री कृष्ण परब्रह्मनी उपासना भावित करवी, ने दशममां कह्या जे श्री कृष्ण भगवाननां चारित्र ते शुकजी जेवाने पण गाववां ने सांभळवां, ते शुकजीए कह्युं छे जे ॥परिनिष्ठितोपिनैर्गुण्येउत्तमश्लोकलिलया॥ ग्रहीतचेताराजर्षेआख्यानं यदधीतवान्॥ अने एवा जे वासुदेव भगवान तेना आकारने विषे दृढ प्रतिति राखवी. अने जो भगवानना आकारने विषे दृढप्रतिति हशे ने कदाचित ए जिव कांइक पाप करशे तो पण एनो उद्धार थाशे. केम जे पाप करे तेनुं तो प्रायश्चित कह्युं छे,पण भगवानने जेनिराकारसमजे एतो पंच महा पाप करतां पण अति मोटुं पापछे.ए पापनुं कोइ प्रायश्चित नथी,अने भगवानने साकार जाणीने निष्ठा राखी होय ने कदाचित तेथी कांइक पाप थइ गयुं होय तो एनो शो भार छे ए पाप तो भगवानने प्रतापे करीने सर्वे बळी जाशे, ने एनो जिव भगवानने पामशे.माटे भगवानना आकारने विषे दृढ प्रतिति राखीने एवी दृढ उपासना करवी, एम अमे तेमने स

वैने कहीए छीए. ते आ वातोंने सर्वे दृढ करीने राखजो, एवी रीते श्रीजी महाराज सर्वेने शिक्षा वचन कहीने भोजन करवा सारूपधार्या॥इति वचनामृतम् ॥३९॥१७२॥

संवत १८८१ नां आसो सुदि ३ त्रिजने दिवस श्री सहजानंदजी माहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उताराने विषे विराजमान हता, पछे स्नान करीनेश्वेत वस्त्रनुं धारण करीने पोताना आसन उपर विराजमान थया ने ने पोतानुं देवार्चनादिक जे नित्य कर्म तेने करीने उत्तरादे मुखे श्री कृष्ण भगवानने सांष्टांग दंडवत प्रणाम करता हवा. ते प्रतिदिन जेटला दंडवत प्रमाण करता, तेथी ते दिवसे तो पोते एक दंडवत प्रणाम अधिक कर्या. तेने जोइने शुकमुनिये पुछ्युं जे हे महाराज आज तमेएकप्रणामअधिक केमकर्या? त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे नित्य प्रत्ये तो अमे श्री कृष्ण भगवानने नमस्कार करीने एम कहेता जे हे माहाराज आ देहादिकने विषे अहंममत्व होय तेने तमे टाळजो. अने आज तो अमने एवो विचार थयो जे भगवानना भक्तनो मने, वचने ने देहे करीने जे कांइक जाणे अजाणे द्रोह थइ आवे, ने तेणे करीने जेवुं आ जिवने दुःख थाय छे, तेवुं बिजे कोइक पापे करीने थातुं नथी. माटे जाणे, अजाणे, मने, वचने, देह करीने जे कांइ भगवानना

भक्तनो द्रोह बनी आव्यो होय तेनो दोषनिवारण कराव्या सारु एक प्रणाम अधिक कर्यो. अ
मे अमेतो एम जाण्युंछे जे भगवानना भक्तनो द्रोह करीने जेवुं आ जीवनुं भुंडुं थायछे ने ए जी
वने कष्ट थाय छे तेवुं कोइ पापे करीने नथी थातुं. अने भगवानना भक्तनी मने,वचने,देहे क
रीने जे सेवा बनी आवे ने तेणे करीने जेवुं आ जीवनुं रूडुं थायछे ने ए जीवने सुखथायछे,
तेवुं बिजे कोइ साधने करीने नथी थातुं. अने ए भगवानना भक्तनो जे द्रोह थाय छे; ते लो
भ, मान, इर्षा, ने क्रोध, ए चार करीने थाय छे अने भगवानना भक्तनुं जे सनमान थायछे,
ते जेमां ए चारवानो होय तेथी थायछे?माटे जेने आ देहे करीने परम सुखिया थातुंहोय,ने दे
ह मुक्या केडे परम सुखीया थातुं होय तेने भगवानना भक्तनो मने वचने देहे करीने द्रोह न क
रवो. अने जो भगवानना भक्तनो कांइक द्रोह थइ जाय तो तेनी वचने करीने प्रार्थना करवी
नमन करीने, देहे करीने, तेने दंडवत प्रणाम करवा. ने फरीने द्रोह न थाय एवी रीते वरत्या
नो आदर करवो पण एकवार द्रोह करीने दंडवत प्रणाम कर्या ने वळी फरी द्रोह करीने
दंडवत प्रणाम करवी एवी रीते वर्तवुं नहि. अने आ वार्ता दाहाडी सांभरती रहे ते सारु आ-
जथी सर्वे संत तथा सर्वे हरिभक्त मात्र एवो नियम राखजो जे भगवाननी पुजा करीने पोताना

नित्य नियमना जे दंडवत प्रणाम होय ते करवाने ते पछे बधा दिवसमां जे कांइ जाणे अजाणे मन,वचने, देहे करीने भगवानना भक्तनो द्रोह थयो होय, तेनुं निवारण कराववा सारु एक दंडवतप्रणामनित्ये करवो.एमअमारीआज्ञाछेतेनेसर्वेपाळज्यो.॥ इतिवचनामृतम् ॥४०॥१७३॥

संवत १८८२ ना कार्त्तिक वदि ११. एकादशीने दिवस. स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बार ओरडानी ओसरिये ढोलीया उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने पाघने विषे पीळापुष्पनातोरा खोस्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ पर्महंस तथा देश देशनाहरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराज कृपा करीने पोताना भक्तजनने उपदेश करता थका बोल्या जे जेने परमेश्वर भजवा होय, तेने भगवाननी अथवा भगवानना भक्तनी सेवा चाकरी मळे त्यारे पोतानुं मोटुं भाग्य मानीने ते सेवा करवी ते पण भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे ने कल्याणने अर्थे भक्तिये करिनेज करवी पण कोइक वखाणे ते सारु न करवी. अने जीवनो तो एवो स्वभावछे जे जेमां पोताने मान जडे तेज करवुं सारुंलागे पण मान वीना एकलि तो भगवाननि भक्ति करवी पण सारी लागे नहि. अने जेम स्वानहोय ते सुकाहाडकांनेएकांते

लेइ लाइने करडे पछे तेणे करीने पोतानुं मोढुं छोलायनेतेहाडयकुं लोहियाळुंथाय तेने चाटीने राजी थायछे पण मुर्ख एम नथी जांणतो जे माराज मोढानुं लोहिछे.तेमां हुं स्वाद मानुंछुं. तेम भगवाननो भक्त होय तोपण मानरुपी हाडयकाने मुकी शकतो नथी,अने जे जे साधन करेछे ते मानने वश थइने करेछे, पण केवळ भगवाननी भक्ति जाणीने भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे करतो नथी अने भगवाननी भक्ति करेछे, तेमां पण माननो स्वाद आवेछे त्यारे करेछे पण केवळ भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे नथी करतो. अने मान विना केवळ भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे भगवाननी भक्तितो रतनजी तथा मीयांजी जेवा कोइकज करता हशे पण सर्वेथी तो माननो स्वाद मुकी शकातो नथी. पछे ते उपर मुक्तानंद स्वामीए तुलसीदासनी साखी कही जे कनक तज्यो कामनी तज्यो तज्यो धातुको संग, तुलसी लघु भोजन करी जीवे मानके रंग. ए साखीने सांभळीने श्रीजी महाराज बोल्या जे जेवो जीवने मानमांथी स्वाद आवेछे तेवो तो कोइ पदार्थमांथी आवतो नथी. माटे मानने तजिने भगवानने भजे तेने तो सर्वे हरिभक्तमां अतिशे मोटो जाणवो. ॥ इतिवचनामृतम ॥ ४१ ॥ १७५ ॥

संवत १८८२ ना मागशर वदि १२ द्वादशिने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महा

राज श्री गढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानि ओसरिये विराजमान हता अने सर्वे श्वेतवस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे भगवदानंद स्वामीए श्रीजि महाराजने प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज भगवानना एक एक रोमने विषे अनंत कोटी ब्रह्मांड रह्यांछे ते केइ रीते रह्यांछे अने ब्रह्मांडमां किये ठेकांणे भगवानना अवतार थयाछे. पछे श्रीजि महाराज बोल्या जे पुरुषोत्तम भगवाननुं जे अक्षरधांम तेना बे भेदछे एक सगुण पणुं ने बिजुं निर्गुण पणुं अने पुरुषोत्तम नारायणछे तेने तो सगुणे न केहेवाय ने निर्गुणपणेन केहेवाय. नेसगुणनिर्गुण भेदतो अक्षरने विषेछे. ते अक्षर निर्गुण पणे तो अणुं थकी पण अति सुक्ष्म स्वरूपेछे. अने सगुण स्वरूप तो जेटलुं मोटुं पदार्थ केहेवाय ते थकी पण अतिशे मोटा छे. ते अक्षरना एक एकरोमने विषे अणुनी पेठे अनंत कोटी ब्रह्मांड रह्यांछे ते कांइ ब्रह्मांड अक्षरने विषे नांहा- नां थइ जातां नथी. एतो अष्टावरणे सहवर्त्तमान होय पण अक्षरनी अतिशे मोटप छे ते आ गळ ब्रह्मांड अतिशे नानां देखाय छे. जेम गिरनार पर्वत छे, ते मेरु आगळ अतिशे नानो देखाय अने लोकालोक पर्वतनी आगळ अतिशे नानो देखाय. तेम ब्रह्मांडतो आवडां ने

आवदां होय पण अक्षरनी अतिशे मोटप छे, तेनी आगळ अति नांहानां देखायछे माटे अणुं सरखां केहेवाय छे. अने अक्षर ब्रह्मतो जेम सूर्यनुं मंडळ छे तेम छे, ते सूर्य ज्यारे माथे आवे त्यारें सूर्यने जोगे करीने दशे दिशुं कळाय छे. तेम अक्षर धाम छे, अने ते अक्षरने उपर, हेठे ने चारे पडखे सर्वे दिशुमां ब्रह्मांडनी कोटियुं छे अने भगवान जे पुरुषोत्तम ते तो अक्षर धामने विषे सदाय विराजमान रहे छे ने ते सत्य संकल्प छे, ने अक्षरधामने विषे रह्या थकाज जे जे ब्रह्मांडमां जे जे रूप प्रकाशां जोइए, तेवा तेवा रूपने प्रकाश करे छे. जेम ए श्री कृष्ण भगवाने रास क्रिडा करी त्यारे पोते एक हता ते जेटली गोपांगनाउ हती तेटला रूपे थया. तेमज पुरुषोत्तम भगवान ब्रह्मांड ब्रह्मांड प्रत्ये जेवुं रूप प्रकाशुं जोइए त्यां तेवा रूपने अक्षर धाममां रह्या थका प्रकाशे छे. अने पोते तो सदाय अक्षर धाममां रहे छे अने ज्यां ए पुरुषोत्तमनी मूर्त्ति छे त्यांज अक्षर धामनुं मध्यछे॥ इतिवचनामृतम्॥ ४२ ॥ १७५ ॥

संवत १८८२ना पोस सुदी ४ चोथने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां ओजोधा वाशीने वेर गादी तकिया उपर विराजमान हता ने सर्वे श्वेतवस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश दे-

शना हरि भक्तने सभा भराइने बेठा हता. अने प्रेमानंद स्वामी सरोदा लइने किर्त्तन गावता हता. पछेश्रीजीमहाराज बोल्या जे ल्यो प्रश्न उत्तर करोए, एम कहीने श्रीजीमहाराजे पुछ्युं जे, जे भगवाननो भक्त गुणातीत होय ने केवळ सत्तारूपे वर्तेतो होय ने तेने विषे वैराग्य रूपजे सत्व गुण अने विषयमां प्रिती रूप जे रजोगुण, अने मुढपणा रूप जे तमोगुण, ए त्रणे गुणना भाव तो न होय, अने तेतो केवळ उथ्थाने रहित शुन्य समताने वरी रहे ने सुषुप्ती जेवी अवस्थावर्त्ते, एवीरितेसत्तारूपेरह्यो जे निर्गुणभक्ततेने भगवानने विषे प्रिति होय केनहोय ए प्रश्नछे? पछे मुक्तानंद स्वामीये कह्युं जे, जे सत्ता रूपे वर्त्ते तेने भगवानने विषे प्रीति तो होय. त्यारे श्रीजी महाराजे पुछ्युं जे सत्तारूपे रह्यो एवो जे भक्त तेने भगवानने विषे प्रीति छे ते आत्माने सजाती छे के विजाती छे? पछे मुकानंद स्वामीये कह्युं जे ए प्रीति तो आत्माने सजाती छे. . पछे श्रीजीमाहाराज बोल्या जे, माध्वाचार्य, निंबार्कने, वल्लभाचार्य एमणे आत्मारूपे रहीने, जे भगवानने विषे प्रीति करवी, ए प्रीतिने ब्रह्म स्वरूप कहीछे. माटे गुणातित थइने जे भगवानने विषे प्रिति करेछे एजब्रह्मनुं स्वरूपछेएममोटामोटाआचार्यनोसिद्धांतछे इतिवचनामृतम्॥ ६३॥१७६॥

संवत १८८२ ना पोष शुदि ८ अष्टमीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज

श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीये विराजमान ह
ता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश दे
शना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराजे मुक्तानंद स्वामीने पुछयुं
जे, ज्यारे कोइक हरिभक्तनो अवगुण आवे त्यारे मोरे जेटलां तेमां दोष सुजता होय एटलाने
तेटला सुजे के कांइ वधु सुजे? पछे मुक्तानंद स्वामी बोल्या जे अटकल तो एम जणायछे जे
मोरे सुजता एटलाने एटला सुजे छे. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे ए वातमां तमारी नजर
पडी नहि एटलाने एटला अवगुण समजता होय तो अवगुण आव्यो एम केम कहेवाय. माटे
एतो भुंडा देशकाळ, क्रिया, संग, आदिकने जोगे करीने बुधि पलटाइने बिजी रितनीज थइ
जायछे, तेणे करीने अवगुण वधु समजे छे. त्यारे एम जाणवुं जे बुद्धिने विषे भुंडा देश काळा
दिकनुं दुषण लाग्युं छे. अने अमे तो एम जाणीए छिये जे, जेने पूर्वे मोटा पुरूषनो संग ह-
शे, अथवा भगवाननुं दर्शन थयुं हशे तेने तो पोतानाज अवगुण भासे, पण बिजा हरिभक्तना
अवगुण भासेज नहि ने एवां जेनां लक्षण होय तेने दैवी जिव जाणवो. अने जे आसुरी जिव
होय तेने तो पोतामां एके अवगुण भासे नहि. अने बिजा जे हरिभक्त होय तेने विषेज केवळ

अवगुण भासे, एवी जेनी बुद्धि होय तेने आसुरी जिव जाणवो ने ते आसुरी जिव सत्संगीमां रह्यो होय अथवा संतना मंडळमां रह्यो होय पण जेवा काळने मिरावणने राहु हता ते सरखो रहेपण एने संतनो संग लागे नहि माटे पाको हरिभक्त होय तेने पोतानाज अवगुण सुजे पण बिजा हरिभक्तना दोषनतो देखेज नहि इतिवचनामृतम्॥४४॥१७१॥

संवत १८८२ ना पोस वदि १ पडवाने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराजश्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमण बार ओरडानी ओशरीए विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां, अने पोताना मुखार्विंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे, तमे सर्वे मुनी मंडळ तथा ब्रह्मचारी, तथा ग्रहस्थ, सत्संगी, तथा पाळा , तथा अयोध्यावासी, ए तमे सर्वे मारा केवाओछो ते जो हुं खटको राखीने तेमने वर्त्तावुं नहि. अने तमे कांइक गाफलपणे वरतो ते अम थकी देखाय नहि. माटे जे जे मारा केवाणाछो तेमां मारे एक तलमात्र कसर रहेवा देवी नथि. माटे तमे पण सुधा सावधान रहेज्यो जराय गाफलाइ राखशो तो तमारो पग टकशे नहि अने मारे तो जे तमे भगवानना भक्त छो तेना हदामां कोइ जातनी

वासना तथा कोइ जातनी अजोग्य स्वभाव ते रहेवादेवो नथी, अनेमायाना त्रणगुण, दशईद्रियुं, दशप्राण, चार अंतःकरण, पंचभूत, पंच विषय ने चौद ईद्रियोना देवता एमांथी कोइनो संग रहवा देवो नथि. ने ए सर्व माइक उपाधी थकी रहित सत्ता मात्र एवो जे आत्मा ते रुपे थइने भगवाननी भक्ति करो. एवा सर्वने करवा छे पण कोइ जातनो मायानो गुण रहेवा देवो नथि. अने आ जन्ममां सर्व कसर न टळी तो बदरीका श्रममां जइने तप करीने समग्र वासनावाळी भस्म करवी छे तथा श्वेत-द्वीपमां जइने निरन्न मुक्त भेळा तप करीने समग्र वासनावाळीने भस्म करी नांखवी छे पण भगवान विना बिजा कोइ पदार्थमां प्रीति रहे एवुं रहेवा देवुं नथि. माटे सर्व हरिभक्त, तथा सर्व मुनी-मंडळ सानधा न रेहेजो एटली वार्त्ता करीने श्रीजी महराज पोताना उतारामां पधार्या. पछे तेज दिवसे सायंकाळे वळी सभा करीने विराजमान थया पछे आरति थइ रही त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे सात्विक कर्म करीने देव लोकमां जायछे अने राजसी कर्म करीने मध्य लोकनी प्राप्ति थाय छे. ने तामसी कर्म करीने अधोगतीने पामे छे, तेमां कोइ एम आशंका करे जे राजसी कर्म करीने मनुष्य लोकनी प्राप्ती थाय छे त्यारे तो सर्व मनुष्यने सुख दुखसरखुंजोइए.

वच॰ना एना उत्तर एम छे. जे एकतो रजोगुण छे तेना देशकाळादिकने जोगे करीनेअनंतप्रकार
ना भेद थाय छे,माटे राजसी कर्मनो एक सरखो निरधार रेहेतो नथी.एतो जेवा देश,काळ,
संग ने क्रियानो जोग आवे तेवुं कर्म थाय छे, तेमां पण जे भगवानना भक्त संत अने भगवान
ना अवतार ते कुराजी थाय एवुं कांइक कर्म थै जाय तो आने आ देहे करीने मृत्य लोकमां
जमपुरिना जेवुं दुख भोगवे. अने भगवानने भगवानना भक्त राजी थाय एवुं कर्म करे तो आ-
ने आ देहे पर्म पद पांम्या जेवुं सुख भोगवे अने भगवानने भगवानना संतने कुराजी केर ने
तेणे जो स्वर्गमां गया जेवुं कर्म कर्युं होय, तोपण तेनो नाश थैजाय ने नर्कमां पडवुं पडे, अ
ने भगवानने भगवानना संत राजी थाय एवुं कर्म कर्युं होय ने तेने जो नर्कमां जावानुं प्रार-
ब्ध होय तोपण ते भुंडा कर्मनो नाश थै जाय ने पर्मपदने पामे. माटे जे समजु होय तेने तो
भगवानने भगवानना भक्त राजी थाय तेमज वर्त्तवुं अने पोताना संबंधि जे माणस तेने पण ए-
म उपदेश करवो जे भगवानने भगवानना संत जे जे प्रकारे आपणी उपर राजी थाय ने कृपा
करे तेमज आपणे वर्त्तवुं. अने भगवानने भगवानना संतने अग्निये ज्यारे राजी कर्या हशे त्या
रे अग्निने एवो प्रकाश प्राप्त थयोछे अने सुर्य चंद्रादिक जे प्रकाशमानछे, तेणे पण भगवानने

भगवानना संतने शूभ कर्म करिने राजी कर्या हशे तारे एवा प्रकाशने पाम्याछे अने देवलोक मर्त्य लोकने विपे जे जे मुखियाछे सर्व भगवानने भगवानना संतने राजी करया हशे ते प्रतापे करीने सुखियाछे. माटे जे पोताना आत्मानुं रुडुं थावानेइच्छे तेने तोसद्ग्रंथनेविपेकह्या जेसद्‌मतेनेविपेरहीनेभगवाननेभगवाननासंतराजीथायएजउपायकरवो.॥इतिवचनामृतम्॥ ४५॥ १७८

संवत १८८२ ना पोप वदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बार ओरडानी ओसरिये विराजमान हता ने सर्व श्वेतवस्त्र धारण करयां हतां ने पीळी छिंटनी रजाइ ओढि हति अने पोताना मुखारविंदनि आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हति ने झांझमृदंग लैने संत कित्तंन गावता हता. पछे कित्तंन गाइ रह्या त्यारे श्रीजि महाराज बोल्या जे आ संसारने विपे जे सतपुरुप होय तेने तो कोइक जीवने लौकिक पदार्थनी हाण वृद्धि थाती देखिने तेनी कोरनो हर्श शोक थाय नही. अने ज्यारे कोइकनुं मन भगवानना मार्गमांथी पाछुं पडे तारे खरखरो थायछे. कांजे थोडाक काळ जीववुं ने एनो परलोक बगडशे माटे ए एने मोटी हाण थायछे. अने भगवानना जे अवतार पृथ्वीने विपे थायछे ते धर्मना

स्थापनने अर्थे थायछे ते केवळ वर्णाश्रमना धर्म स्थापन करवाने अर्थे तो नथी थाता, जेमके वर्णाश्रमना धर्मनो नमाथि आदिक ने प्रवृति थयांना जे आचारछे ते पण स्थापन करेछे, माटे एटलामाटेज भगवानना अवतार नथी थाता. भगवानना अवतार तो पोताना एकांतिक भक्तना जे धर्म तेने प्रवर्त्ताववाने अर्थे थायछे अने वळी जे एकांतिक भक्तछे तेने देहे करीने मरडुं ए मर्ण नथी एनेतो एकांतिकना धर्ममांथि पडिजवाय एज मर्णछे, ते क्यारे भगवान के भगवानना संत तेनो हृदयामां अभाव आव्यो त्यारे ए भक्त एकांतिकना धर्ममांथी पडयो जाणवो.अने ते जो क्रोधे करीने पडयो होय तो तेने सर्पनो देह आव्यो जाणवो. अने कामे करीने पडयो होय तो ब्रह्मराक्षसनो अवतार आव्यो जाणवो. माटे जे एकांतिक धर्ममांथी पडिने एवा देहने पाम्याछे ने जो ते धर्मवाळा होय अथवा तपस्वि होय तोपण ते धर्म करीने तथा तपे करीने देवलोकमां जाय पण जेणे भगवाननोने भगवानना संतनो अभाव लिधो तेतो भगवानना धामने तो नज पांमे. अने वळी जे पंच महा पाप युक्त होय ने तेने जो भगवानने भगवानना संतने विषे अवगुण न आव्यो होय तो एनां पाप नाश थइ जाय ने एतो भगवानना धाममां निवास थाय माटे पंच महा पाप थकी पण भगवानने भगवानना भक्तनो

अवगुण लेवो ए मोटुं पापछे. ॥ इतिवचनामृतम् ॥ ४६ ॥ १७९ ॥

संवत १८८२ ना महा वदि १० दशमीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरियें विराजमान हता अने सर्व श्वेतवस्त्र धारण कर्यां हतां. अने पिळी छिंटनी रजाइ ओढी हती ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजि महाराज बोल्या जे जे संतनी पासे चार साधु रहेता होय तेने जो मन देइने माणसाइये राखतां आवडतुं होय तो तेनी पासे साधु राजीपे रहे. अने जेने साधुने राखतां आवडे नहि तेनी पासे साधु रहे पण नहीं अने जे साधुने मोक्षनो खप होय तेने तो जेम दुखवीने विषयनुं खंडन करीए तेम अती राजी थाय जेम आ मुक्तानंद स्वामीने क्षय रोग थयोछे ते दहिं,दुध,गळ्युं,चिकणुं कांइ खावा देतो नथी. ते जे समजुं होय तेने एम जणाय जे आ रोगे सारू सारू खावा पीवानुं सर्व खंडनकरी नांख्युं माटे आतो क्षयरोग रूपे जाणे कोइक मोटा संतनो समागम थयो होयने शुं एमभासेछे. शामाटे जे शिश्नने उदर एबेने विषे जे जीवने आसक्ति छे एज असत पुरूषपणुं छे, ते क्षय रोग ए बेय प्रकारनी खोटने काढे एवो छे,तेम ए

रागनी पेठे जे सत पुरुष होय,ते विपयनुं खंडन करता होय त्यारे जे मुमुक्षु होय तेने तेमां दुखाइ जावुं नहि. अने जे खाधा पीवानी लालचे के लुगडानी लालचे अथवा पोताने मन गमता पदार्थनी लालचे कोइ मोटेरा संत भेगो रहतो होय तेने तो साधुज न जाणवो. तेने तो लबाड जाणवो, ने कुतरा जेवो जाणवो. ने एवो मलीन आशयवाळो होय ते अंते जातो विमुख थाय. अने वळी संतने कोइ सारूं पदार्थ आपे तेमां जे इर्षा करे तथा जे पंच विपयनो लालचि होय ए बे तो पंच महा पापीथी पण अति भुंडा छे. माटे जे समजुं होय तेने संतना समागममां रहीने आवो मलीन आशय अंतरमां राख्यो न जोइए; केम जे आ सभातो जेवी बदरीकाश्रममां तथा श्वेतद्विपमां होय तेवी छे.तेमां बेसीने ज्यारे मलिन वासना न टळी त्यारे बिजुं टाळ्यानुं ठेकाणे क्यां मळशे? अने पंच विपय छे ते तो पूर्वे देव मनुष्यादिकने विषे अनंत देहे करीने आपणे जिवे भोगव्यां छे, तो पण हजी लगण ए विपयनी तृप्ति थइ नथी, तो हवे भगवानना भक्त थइने वर्ष, के बे वर्ष, के पांच वर्ष विपय भोगवीने पूर्ण थवाशे नहि. जेम पाताळ सुधी पृथ्वी फाटी होय, तेने पाणीए करीने भरवा मांडीए ते क्यारेय भराय नहि. तेम इंद्रियुं छे तेने क्यारेय विपय थकी तृप्ति थइ नथी ने थाशे पण नहि. माटे हवे तो विषयनी

आसक्ति ने त्याग करीने अने साधु जेम वढीने केहेतेम गुण लेवो, पण अवगुण लेवो नहि. ते मुक्तानंद स्वामीना किर्त्तनमां कह्युंछे, जे सुळी उपर शयन करावे तोय साधुने संग रहीए रे. माटे आवो अवसर पामीने तो अशूभ वासना टाळीनेज मरवुं पण अशूभ वासना सोतां मरवुं नहि. अने आ देहेमांथी निसरीने नारद सनकादीक शुकजी जेवा ब्रह्म रूप थइने भगवाननी भक्ति करवी छे, एवी वासना राखवी. ने एम करतां थकां जो ब्रह्मलोकमां के इंद्रलोकमां निवास थइ जाशे तोपण कांइ चिंता नथी. जेम झाडे फरवा गया ने पायखानामां माथाभर पडी गया तो नाह धोइने पवित्र थावुं पण एमां पडी न रेहेवुं. तेम शूभ वासना राखतां राखतां ब्रह्मलोकमां, के इंद्रलोकमां, जवाणु तो एम जाणवुं जे माथाभर नरकना खाडामां पडया छिये. एम जाणीने शूभ वासनाने बळे करीने ब्रह्मलोक, इंद्रलोकना भोगने त्याग करीने भगवानना धाममां पुगवुं, पण वचमां क्यांइ न रेहेवुं एम निश्चे राखवो. अने वळी जेम पोतानी सेवा ग्रहस्थ करेछे, अथवा त्यागी सेवा करेछे, तेम आपणे पण हरिभक्तनुं महात्म जाणवुं जोइये. जेम अमारी चाकरी मुळजी ब्रह्मचारी महात्म जाणीने करे छे तेम अमे पण ब्रह्मचारीनुंमहात्म जाणीए छिये.नेजेम आपणी ग्रहस्थ अन्न वस्त्रे करीने चाकरी

करेछे तेम आपणे पण एमनुं महात्म समजीने एमनी वातो चिते करीने चाकरी करवी एम अरसपरस माहात्म समजीने हरिभगतनी सोबत राखवी. ॥इति वचनामृतम्॥४७॥१८०॥

संवत १८८२ ना महा वदि १४ चौदशने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीये विराजमान हता. अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, अने तुळसीनी नवी स्वेत कंठियुं कंठने विषे धारण करी हती, ने पाघने विषे पिळा पुष्पनो तोरो विराजमान हतो. ने कंठने विषे पुष्पना हार धारण कर्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरीभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. ने साधु प्रेमानंद स्वामी भगवानना ध्यानना अंगनी गरबियुं जे ॥वंदु सहजानंद रस रूप, अनोपम सारनेरेलोल॥ए गावता हता, पछे ज्यारे गाइ रह्या त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे बहुं सारां किर्त्तन गायां. आ किर्त्तनने सांभळीने तो अमारा मनमां एम विचार थयो जे आवी रीते एने भगवाननी मूर्त्तिनुं चितवन छे माटे ए साधुने तो उठीने साष्टांगदडवत प्रणाम करीए. अने जेने आवी रीते अंतःकरणमां भगवाननुं चितवन थातुं होय ने एवी वासनाए युक्त जो देह मुके तो तेने फरीने गर्भ वासमां जावुं पडेज नहि. अने

एवी रीते भगवाननुं चितवन करतां जिवतो होय तो पण ए परम पदने पाम्योज छे. अने जेवा श्वेतद्वीपमां निरन्नमुक्त छे, तेवो ए पण निरन्नमुक्त थइ रह्योछे. अने देह किया तो जोग्य होय एटलीज सेहेजेज थाय छे. अने जेने भगवानना स्वरूपनुं एवी रीते चितवन थायछे ते तो कृतार्थ थयोछे तेने कांइ करवुं बाकी रह्युं नथी. अने जेने भगवान विना बिजा पदार्थनुं चितवन करते थके देह पडशे तेने कोटी कल्पे दुखनो अंत आवतो नथी. माटे आवो अवसर आव्यो छे तेने पामीने भगवान विना बिजा पदार्थनुं चितवन मुकीने एकभगवानना स्वरूपनुं ज चितवन करवुं. अने जो भगवानना स्वपनुं चितवन थइ न शके तोपण धर्म, ज्ञान, वैराग्यने भक्ति तेणे जुक्त एवा जे आ साधु तेने मध्ये पडी रेहेवुं.अनेअमारेपण एज अंतरमांवासनाछेजे आ देहने मुकशुं पछे कोइ रीतनो जन्म थावानुं निमीत तो नथी,पण अंतरमां एम विचारीए छीए जे जन्म धरयानुं कोइक कारण उत्पन्न करीने पण संतना मध्यमां जन्म धरवो, एमज इच्छीएछीए. अने जेने ए किर्त्तनमां कह्युं एवी रीतनुं चितवन थातुं होय, ते तो काळ, कर्मने मायाना पाश थकी मुकाणो छे. अने जेने घेर एवा पुरुषे जन्म धरयो, तेनां मावाप पण कृतार्थ थयां जाणवां. अने भगवान विना बिजा विषयनुं जे चितवन करे छे, ते तो अतिशे

भुल्यो जाणवो. अने स्त्रि-पुत्र ने धनादिक पदार्थ तो जे जे योनीमां जाय छे, ते सर्वमां मळे छे,पण आवा ब्रह्मवेत्ता संतनो संग ने श्रीवासुदेव भगवाननुं साक्षातकार दर्शन ने चितवन तेतो अतिशे दूर्लभ छे. माटे जेम विषइ जनने पंच विषयनुं चितवन अंतःकरणमां थया करे छे,तेम जेना अंतरमां अखंड भगवाननुं चितवन थया करे एथी उपरांत मनुष्य देहनो बिजोलाभनथी. अने एतो सर्व हरिभक्तमां मुखियो छे; अने ए भक्तने शब्द, स्पर्श, रूप, रस, ने गंध, ए पंच विषय होय तोपण भगवान संबंधीज होय ने तेना श्रवण ते अखंड भगवाननी कथा सांभळवाने इच्छे, ने त्वचा ते भगवाननो स्पर्श करवाने इच्छे,ने नेत्र ते भगवानने भगवानना संतनां दर्शन करवा इच्छे ने रसना ते भगवानना महा प्रसादना स्वादने इच्छे, अने नासीका ते भगवानने चडयां जे पुष्प, तुलसी, तेना सुगंधने इच्छे.पण परमेश्वर विना अन्य वस्तुने सुखदाइ-जाणेनहि.एवीरितेजेवर्त्तेतेभगवाननोएकांतिकभक्तकहेवाय।। इतिवचनामृतम् ।।४८।।१८२।।

संवत १८८२ ना फागण सुदि २ बिजने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदीरनी आगळ आथमणे बार मेडानी ओसरीये ढोल्लीया उपर विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां

स. मेडीनी ओसरि उपर रात्रीने विषे विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यांहतां, ने हतां; अने पाघमां धोळा पुष्पनो हार लटकतो मुक्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे प्रत्यक्ष भगवाननी जे मूर्त्ति ने बिजा जे मायीक आकार ए बेयने विषे तो घणो फेर छे, पण जे अज्ञानी छे ने अतिशे मुर्ख छे ते तो भगवानने ने मायीक आकारने सरखा जाणे छे. केम जे मायीक आकारना जे जोनाराछे ने मायीक आकारनाजे चिंतवन करनाराछे तेतो अनंत कोटि कल्प सुधी नरक चोराशीने विषे भमेछे अने भगवानना स्वरूपनां दर्शन करनाराछे ने भगवानना स्वरूपना चिंतवन करनारा छे ते तो काळ, कर्म ने माया ए सर्वना बंधन थकी छुटीने अभय पदने पामे छे. ने भगवानना पार्षद थाय छे माटे अमारे तो भगवाननी कथा के कित्तन के वार्ता के भगवाननुं ध्यान एमांथी कोइ काळे मनने तृप्ति थातीज नथी ने तमारे पण सर्वने एवी रीते वर्तवुं.॥इतिवचनामृतम्॥४९॥२८२॥

संवत १८८२ ना चैत्र वदि २ बिजने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी माहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेव नारायणना मंदीरनी आगळ आथमणे बार

पोताना मुखारविंदनी आगळ पर्महंस तथा देश देशनाहरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे आज तो अमारुं जे रहस्य छे ते तमने सर्वने अमारा जाणीने कहिए छीए जे, जेम नदियुं समुद्रने विषे लिन थाय छे, ने जेम पतंग ते अग्निने विषे बळी जाय छे ने जेम सुरो रणने विषे टुक टुक थइ जाय छे, तेम एक रस परीपूर्ण एवुं जे ब्रह्म स्वरूप तेने विषे अमे अमारा आत्माने लिन करी राख्यो छे, अने ते तेजोमय एवुं जे अक्षर ब्रह्म तेने विषे मूर्त्तिमान एवा जे पुरुषोत्तम भगवानने ते भगवानना जे भक्त ते संघाथे अखंड प्रिति जोडी राखी छे. अने ते विना कोइ पदार्थमां प्रिती नथी, एवुं अमारे अखंड वरते छे, अने उपरथी तो अमे अतिशे त्यागनो फुफवाडो जणावता नथी पण ज्यारे अमे अमारा अंतर सामुं जोइने बिजा हरिभक्तना अंतर सामुं जोइए छीए, त्यारे मोटा मोटा पर्महंस तथा मोटी मोटी सांख्य योगी बाइयुं ए सर्वने कांइके जगतनी कोरनो लोचो जणाय, पण अमारा अंतरने विषे तो क्यारेय स्वप्नामां पण जगतनी कोरनो घाट थातो नथी, अने भगवानने भगवानना भक्तनी भक्तिमांथी अमने पाडवाने अर्थे कोइ समर्थ नथी एम जणाय छे. अने जे दिवस भगवाननी प्राप्ति नोती थइ ते दिवस पण भगवाननी शक्ति जे काळ ते पण आ जिवनो नाशकरी

शक्यो नथी; अने कर्म पण नाश करी शक्यां नथी, अने माया पण पोताने विषे लीन करी शकी नथी ने हवेतो भगवान मळ्याछे माटे काळ कर्म मायानो शो भारछे; एम जाणीने एवी हिमत बांधीछे, जे हवेतो भगवान ने भगवानना भक्त विना कोइने विषे प्रिति राखवी नथी. अने जे अमारी सोबत राखशे तेना हृदामां पण कोइ जातनो लोचो रेहेवा दे-वो नथी. शामाटे जे जेने अमरा जेवो अंतरनो दृढाव होय ते साथेज अमारे ब-नेछे. अने जेना हृदामां जगतना सुखनी वासना होय ते संघाथे तेम अमे हेत करीएतो पण थाय नहिं, माटे जे निर्वासनिक भगवानना भक्त होय तेज अमने वालाछे ए अमरा अंतरनुं रह-स्य ते कह्युं, एवी रीते श्रीजीमहाराजे पोतना भक्त जननी शिक्षाने अर्थे वार्ता करी. ॥इति वचनामृतम्॥ ५० ॥१८३॥

संवत १८८२ ना चइत्र वदी ९ नवमीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां दक्षणादे बार ओरडानी ओशरीए ढोलिया उ-पर गादी तकिया नखावीने विराजमानहता ने पोताना मुखार्विंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनि सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजीमहाराजे पर्महंसने प्रश्न पुछ्युं जे-

कोइकसमामां तोजिव सुषुप्तिमां जायछे त्यारे अतिशे सुखथायछेअनेकोइकसमामां तो सुषुप्तिमां जाय छे तो पण उद्वेग मटतो नथी, तेनुं शुं कारण छे? ए प्रश्न छे. पछे मोटा मोटा संत हता तेमणे ए प्रश्ननुं समाधान करवा मांडयुं पण यथार्थ समाधान थयुं नहि. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे ए तो रजोगुणनुं बळ वृद्धि पामी जाय छे ते सुषुप्तिमां पण तमोगुण भेळो रजोगुणनो विक्षेप रहे छे माटे सुषुप्तिमांपण असुख रहे छे, माटे गुणनो संग ज्यां सुधि रहे त्यां सुधो कोइ जिव सुखियो रहे नहि, ने ज्यारे आत्म सत्ता रुपे रहे त्यारेज सुखियो रहे छे. पछे मुक्तानंद स्वामीए प्रश्न पुछयुं जे आत्म सत्ता रुपे रहे तेनां शां लक्षण छे? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे, शिव ब्रह्मा जेवा कोइ समर्थ कहेवाय नहि. एत्तो नारद जेवाना पण गुरु छे अने ए जेवाब्रह्म स्वरुपे वर्ते छे, तेवुं तो विज्ञाने वर्तवुं कठण छे तो पण देश, काळ, क्रिया, संग, मंत्र, शास्त्र, दिक्षा नेध्यान ए आठज्यो भुंडा थया तोतेने जोगेकरीने एशिव ब्रह्मा जेवाने पण अंतरमां अतिशे दुःख थयुं, माटे गमे तेवो निर्गुण होय ने आत्म सत्तारुपेरहेतो होय ने जो तेने भुंडा देशकाळादिकनो जोग थाय तो तेने जरुर अंतरमां दुख थाय, माटे मोटा पुरुषनी बांधेल जे मर्यादा तेने लोपीने कोइ सुखी थातो नथी. माटे जेटला त्यागी छे, तेनेतो

त्यागीना धर्म प्रमाणे वर्त्तवुं. अने जेटला ग्रहस्थ हरिभक्त छे तेमने ग्रहस्थना धर्म प्रमाणे वर्त्तवुं, अने जेटली बाइयुं हरिभक्त छे तेने बाइयुंना धर्म प्रमाणे वर्त्तवुं, अने जो ते थकी ओछुं वर्ते तो पण सुख न थाय. अने जो तेथकी अधकुं वरते तो पण सुख न थाय. श्या माटे जे परमेश्वरना कहेल जे धर्म ते प्रमाणेज ग्रंथमां लख्युं होय तेमां कोइ रीते बाध आवे एवुं न होय ने तेथी ओछुं अदकुं करवा जाय ते करनारो जरूर दुखी थाय. माटे सत पुरुषनी आज्ञा प्रमाणे जे रहेछे तेज रुडा देश काळादिकने विषे रह्योछे अने जे सत्य पुरुषनी आज्ञाथी बहार पडयो तेज एने भुंडा देशकाळादिकनो जोग थयोछे माटेसतपुरुषनी आज्ञाने विषे वर्त्तेछे तेज आत्मसत्ता रूपे वर्त्तेछे. ॥ इतिवचनामृतम ॥ ५२ ॥ २८४

संवत १८८२ ना चैत्रवदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमांथी घोडीएस्वार थइने श्री लक्ष्मीवाडीए पधारया हता. ने त्यां वेदीका उपर विराजमान थया हता, ने सर्वे श्वेतवस्त्र धारण करयां हतां, ने कंठने विषे पुष्पनो हार पेहेरयो हतो, ने पाघने विषे फुलनो तोरो विराजमान हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, अने

पोतानी आगळ मुनी झांझ मृदंग लइने किर्त्तन गावता हता. ते ज्यारे किर्त्तन गाइरह्यात्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ल्यो हवे वार्ता करीए ते सांभळो. जे आ संसारने विषे ग्रस्थाश्रमी ने सागी ए बेना मार्ग जूदा जूदाछे ते जे ग्रहस्थने शोभा होय ते सागीने दूषण रूप होय, ने जे सागीने शोभा होय ते ग्रहस्थने दूषणरूप होय, तेने बुद्धिमान होय ते जाणे पण बिजो जाणी शके नहि. माटे तेनी विक्ति कहिए छीए जे जे ग्रहस्थाश्रमी छे तेने धन दोलत हाथीघोडा, गाय, भेंश, गेडी, हवेली, स्त्री, छोकरां, भारे भारे वस्त्र आभुषण ए सर्वे पदार्थ शोभा रूपछे. अने एज जे सर्वे पदार्थ ते जे त्यागी होय तेने दोष रूपछे, अने सागी छे. तेने वन मां रेहेवुं, वस्त्र विना उघाडुं एक कोपीनभर रेहेवुं, माथामां टोपी घालवी, दाढी मूछ मुंडावी नंखाववां, भगवां वस्त्र राखवां, अने कोइ गाळ्युं दे, ने कोइ धुळ नांखे ते अपमानने सहन करवुं, एज सागीने परम शोभा रूपछे. अने ए सागीनी जे शोभा तेज ग्रहस्थने परम दोष रूप छे माटे आ संसारमांथी जे निसरयो ने सागी थयो तेने तो एम विचारवुं जे हुं क्रिया आश्रममां रह्योछुं एम बुद्धिमान होय तेने विचार करवो. पण मुरखनी पेठे विचारया विना कोइ चाले चढी जावुं नहि. अने जे समजु होय तेने कोइक वढीने कहे त्यारे सामो गुण ले.

अने जे मुरख होय तेने कोइक हितनी वात कहे त्यारे ते मुजाइ जाय. अने मुकंद ब्रह्मचारी तथा रतनजी ए बे मुजाता नथी तो एमनी साथे अमारे घणुं बनेछे. अने वळी जे श्रद्धाए सहित शेवा चाकरी करे ते अमने गमे. अने श्रद्धा विनानो कोइ जम्यानुं लावे तो ते जम्यानुं गमेनहि ने वस्त्र लावे तो ते वस्त्र ओढवुं गमे नही. अने पुजा लावे तो पुजा गमे नही, अने अधाये करी ते करे ते अतिशे गमे अने अधाये करीने भक्ती करतो होय ने बिजो कोइक तेमां भक्ति करवा आवे ने तेनी उपर इर्षा करे तो ते अमने न गमे, माटे अधाये सहित ने इर्षाये रहीत जे भक्ति करे ते अमने अतिशे गमेछे. ॥ इतिवचनामृतम ॥ ५२॥१८९

संवत १८८२ ना वैशाक सुदि ५ पंचमीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताने उतारे गादि तकिया उपर विराजमान हता ने सर्वे श्वेतवस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देशदेशना हरीभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजि महाराज बोल्या जे शास्त्रने विषे जे मोह कह्योछे ते मोहनुं ए रूपछे जे ज्यारे हदाने विपे मोहव्यापे त्यारे ए जीवने पोतानो अवगुण सुजेत नही. माटे पोतानो अवगुण न सुझे एज मोहनुं रूपछे. अने वळी जीवमात्रने पो-

ताना डापणनुं अतिशे मान होय पण एम विचारे नहि जे मुने मारा जीवनी खबर नथी जे आ शरीरमां जीव रह्योछे ते काळोछे,के गोरोछे,के लांबो छे,के टुंकोछे एनी कांइ खबर नथी,तो पण मोटा पुरुष होय अथवा भगवान होय तेने विषे पण खोट काढे अने एम समजे जे आ मोटा पुरुष छे अथवा भगवान छे पण आटलुं ठिक करता नथी एम खोट काढे छे.पण मुर्खो एम नथी जाणतो जे ए भगवानतो अनंत कोटी ब्रह्मांडने विषे रह्या एवा जे जीव इश्वर तेने जेम हाथेळीमां जळनुं टिंपुं होयने तेने देखे तेम देखे छे अने अनंत कोटी ब्रह्मांडना आधारछे ने लक्ष्मीना पतिछे अने अनंत कोटी ब्रह्मांडना करता हरताछे अने शेष सारदाने ब्रह्मादिक ते पण जेना महिमाना पारने पामता नथी, निगम पण जेना महिमाने नेती नेति कहेछे माटे एवाजे पर्मेश्वर तेनां चरित्रने विषे ने ते भगवाननी जे समजण तेने विषे जे दोष देखेछे तेने विमुखने अधर्मि जाणवो, अने सर्वे मुर्खनो राजा जाणवो अने भगवानने भगवानना भक्त तेनी तो अलौकिक समजण होय तेने देहाभिमानी जीव क्यांथि समजी शके. माटे पोतानी मुर्खाइए करीने भगवानने भगवानना जे भक्त तेनो अवगुण लेइने विमुख थइ-जायछे.अने ए भगवानना खरेखरा भक्त जे सतपुरुष होय तेतो अलौकिक दृष्टिये जु-

क्त नर्या करेछे. ॥इतिवचनामृतम ॥ ५३ ॥ १८६ ॥

संवत १८८२ ना जेष्ट शुदि ७ सप्तमीने ने दिवस त्रीजा पोरने समे स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमांथि घोडिये अस्वार थइने श्री लक्ष्मी वाडीये पधार्या हता त्यां वणीवार सुधि तो घोडी फेरवी. पछे ते वाडीने मध्ये वेदीका उपर विराजमान हता अने श्वेतवस्त्र धारण कर्यां हतां अने मस्तक उपर काळा छेडानी धोतली बांधी हती ने कंठने विषे मोगराना पुष्पनो हार विराजमान हतो ने पाघने विषे तोरो विराजमान हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ तथा देशदेशना हरी भक्तनी सभा भराइने बेठी हती, पछे श्रीजि महाराजे मुनी प्रत्ये प्रश्न पुछ्युं जे एकादस्कंधना बारमा अध्यायमां श्रीकृष्ण भगवाने उद्धव प्रत्यें कह्युंछे जे अष्टांगयोग, सांख्य, तप, त्याग, तिर्थ, वृत, यज्ञ ने दानादीक एणे करीनें हुं तेवो वश थातो नथी जेवो सत्संगे करीने वश थाउंछूं एम भगवाने कह्युंछे. माटे सर्व साधन करतां सत्संग आधिक थयो. ते जेने सर्व साधन थकि सत्संग आधिक जणातो होय ते पुरुषनां केवां लक्षण होय? पछे जेने जेवुं समजायुं तेवुं तेणे कह्युं पण जथार्थ उत्तर थयो नहि, पछें श्रीजी महाराज बोल्या जे जेने भगवानना संतने

विषेज आत्मबुद्धिछे. जेमकोइकराजा होय नेतेवांझियो होय. ने पछेतेने घडपणमां दिकरो आवे पछे ते छोकरो तेने गाळो दे,मुंछुं ताणे, तोपण अभाव आवे नहि. अने कोइकना छोकराने मारे तथा गाममां अनिति करी आवे तोपण कोइ रीते तेनो अवगुण आवेज नहि.आ माटे जे ए,राजाने पोताना दिकराने विषे आत्मबुद्धि थइ गइछे. एवी रीते जेने भगवानना भक्तने विषे आत्मबुद्धि थायछे तेणेज सर्व साधन थकी अधिक कल्याण कारी. सत्संगने जाण्योछे ए वार्त्ता भागवतमां कहिछे जे, ॥यस्यात्मबुद्धिकणपेत्रिधातुकेस्वधिःकलत्रादिषुभौमइज्यधीःयतीर्थबुद्धिः सलिलेनकर्हिचिज्जनेष्वभिज्ञेषुसएवगोखरः ॥ १ ॥ए श्लोकने विषे ए वार्त्ता यथार्थ कहीछे. ॥ इतिवचनामृतम् ॥ ५४ ॥ १८७ ॥

संवत १८८२ ना जेठ सुदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता. अने मस्तक उपर नवानगरनु सोनेरी कोरे युक्त श्वेत मोळीयुं बांधुं हतुं.अने श्वेत पछेडी ओढी हती.अने श्वेत खेसपेर्यो हतो.अने श्रीजि महाराजना मुखारविंदने आगळ मुनि;तथा देश देशना हरीभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. अने ते सभाने विषे

मुनी झांझ मृदंग लइने कित्तंन गावता हता. पछे ते मुनी कित्तंन भक्ति करी रह्या त्यारे श्री जि महाराज बोल्या जे, जेनुं आज जेवुं अंग होय तेवुं सत्संग थया मोर पण कांइक होय खरुं ते माटे आज तो सर्वे जेनु जेवुं अंग होय ते तेवुं कहो? तेमां प्रथम तो अमे अमारुं जेवुं अंग छे तेवी वार्त्ता कहिये छिये ते सांभळो? जे ज्यारे अमारे बाळ अवस्था हती, त्यारे पण देव मंदीर होय त्यां दर्शने जावूं, कथा वार्त्ता सांभळवी, साधुनो समागम करवो, तिर्थ करवा जावुं एवी वार्त्ता गमती. अने ज्यारे घर मुकीने निसर्यां त्यारे तो वस्त्र राखवुं पण गमतुं नहीं, अने वनमांज रहेवुं गमतुं. अने बिक तो लेशमात्र पण लागती नाहि. ने वनने विषे मोटा मोट सर्प, सिंह, हाथि, इत्यादिक अनंत जनावर दिठामां आव्यां पण कोइ प्रकारे हैयामां मरवानी बिकज लागती नहिं. एवी रीते महा वनने विषे सदा निर्भे रहेता. पछे तिर्थने विषे फरता फरता श्री रामानंद स्वामी पासे आव्या, अने पछे श्री रामानंद स्वामी ज्यारे अंतर ध्यान थया ते केडे सत्संगनुं रुडुं थावाने अर्थे कांइक बिक राखवा मांडी पण अंतरमां अखंड विचार एवो रहेछे. जेम मनुष्यने मुवा टाणे पथारी उपर सुवार्युं होय त्यारे ते मनुष्यमांथी सौने पोतामां स्वार्थनी वासना टळी जाय छे अने ते मरनाराने पण संसार थकी मन उदास

थइ जाय छे, तेमनुं जेम अमारे पोतानी कोरनुं अने बिजानी कोरनुं अंत अवस्था जेवुं सदा वर्ते छे. अने जेटलुं माइक पदार्थ छे ते सर्व नाशवंत ने तुच्छ सरखुं जणाया करेछे पण एम विक्ति नथी जणाती जे आ सारूं पदार्थ छे ने आ भुंडुं पदार्थ छे. जेटला माइक पदार्थछे ते तो सर्वे एक सरखा जणाय छे. जेम कागना मुवाळा छे तेमां सारी कियो ने नरसो कियो, ते तो सारो नरसो सउ एक पाडमां छे तेम माइक पदार्थ पण सर्वे सरखां छे. अने कांइक सारूं नरसुं जे कहिये छिये तेतो भगवानना भक्तने सारू लगाडवाने अर्थे काहिये जे आ सारं भोजन छे, आ सारूं वस्त्रछे, आ सारूं घरेणुं छे, आ सारूं घर छे; आ सारूं घोडुं छे, आ सारां पुष्प छे ते भक्तने सारूं लागे ते सारूं काहिये छिये. अने अमारी सर्वे क्रिया छे ते भगवानना भक्तने अर्थे छे पण पोताना सुखने अर्थे एकेय क्रिया नथी, अने भगवानना जे एकांतिक भक्त होय, तेनुं जे मन ते भगवानना स्वरूपनुंज चितवन करे अने वाणी ते भगवानना जशनेज गाय अने हाथ ते भगवान के भगवानना भक्तनी सेवा परिचर्यानेज करे अने कान ते अखंड भगवानना जसनेज सांभळे एम भगवानना भक्ति जाणीने जे जे क्रिया करीए छीए ते थाय छे पण ए भगवाननी भक्ति विना तो अमे सर्व पदार्थमांथी उदासी छी

ए. जेम कोइक मोटा राजा होय ने तेने एकज दिकरो होय, अने ते राजा साठ सीतेरे व-
र्षनो थाय, ने पछे तेनो दिकरो मरी जाय त्यारे ते राजानुं मन सर्व पदार्थमांथी उदास थइ
जाय. तेम अमारे पण खातां, पितां, घोडे चडतां, राजी कुराजीपणामां सर्व काळे मन उदासी
ज रहे छे. अने अंते अंतरमां एम विचार रहे छे जे, आपण तो देह थकी पृथक आत्मा
छीए पण देह जेवा नथी. अने वळी अंतरमां एम विचार रह्या करे छे जे, आत्माने विषे
रखे रजोगुण, तमोगुण आदिक कोइक मायानो भाग भळी जाय नहि, तेने घडीए घडीए
तपासता रहीए छीए. जेम साढा सोळवलुं कंचन होय ने तेने सोनीनी पेढीए लइ जाय अने
जो धणीनी लगारेक नजर चुके तो सोनी सोनुं काढी लइने तेमां रूपुं भेळी दे. तेम आ
हृदारूपी तो सोनीनी पेढी छे. अने तेमां मायारूपी सोनी छे, ते पोते बेठो थको संकल्प रूपी जे
हथोडो तेना अखंड टच टच टचका मारतो रहे छे अने जेम सोनीनां स्त्री छोकरां होय ते
पारसी करीने तेने हाथ आवे तो कांइक सोनुं चोरी जाय. तेम इंद्रियो अंतःकरण ए सर्व मा
या रूप जे सोनी तेनां स्त्री छोकरां छे, ते कंचन रूप जे चइतन्य तेने विषे त्रण गुण तथा
पंच विषयमां आसक्ति तथा देहाभिमान तथा काम, क्रोध लोभादिक ए रूप जे रूपुं तेने भे-

ळीने ज्ञान वैराग्यादिक गुण रूप जे सोनुं तेने काढी ले छे. अने जे सोनामांथी सोनुं काढी
रूपुं मेळवे तो ते सोनुं वारवळुं थइ जाय छे. अने पछे ते सोनाने तावीने पाछुं सोळवळुं क
तो थाय छे. तेम आ जिवने विषे रज,तम, आदिक जे रूपुं गळ्युंछे,तेने गाळीने काढी नाख
ने पछे कंचन रूप जे एक आत्मा तेज रहे, पण बिजो मायीक भेग कांइ रहे नहि. एवी री
तना विचारमां अमे रात दिवस मंडया छीए. एम अमारुं अंग छे ते कह्युं. हवे एवी रीते जे
जे अंग होय ते कहो पछे संत मंडळे एम कह्युं जे हे महाराज तमारे विषे तो माइकगुणनो
भेग होयज नहि तमे तो कैवल्य मूर्त्ति छो. पण एज सर्व तमे वात करी ते तो अमारा अंग
छे अने तमे कह्यो जे विचार ते अमारे सर्वने राख्यो जोइए. पछे श्रीजी महाराज जयसच्चिदा
नंद कहीने पोताना उताराने विषे पधार्या॥ ॥इति वचनामृतम्॥५५॥१८८॥

संवत १८८२ ना अशाड सुदि ५ पंचमीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज
श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरवारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरिये ढोलीया
उपर गादी तकिया बिछावीने विराजमान हता अने सर्वे श्वेतवस्त्र धारण कर्या हतां. ने पोता
ना मुखारविंदनि आगळ मुनी मंडळनी सभातथा देश देशनाहरिभक्तनी सभाभराइनेबेठी हती.

अने साधु, टुकड संरोदा लइने किर्त्तन बोलता हता, ते किर्त्तन भक्ति थइ रह्या पछे- श्रीजी
महाराज बोल्या जे आ किर्त्तन सांभळयामांथीतो अमारो आत्मा विचारमां जातो रह्यो. पछे
तेमां एम जणांणुं जे भगवानने विषे जे अतिशे प्रिति ए घणी मोटी वातछे. पछेतो गोपाळान
द स्वांमी आदिक जे भगवानने विषे प्रिति वाळा हरभिक्त सर्वे सांभरी आव्या, अने ए सर्वे
ना अंतःकरणने ए सर्वेना जीवने एमानी जे भगवानने विषे प्रिति ते सर्वे जोयामां आव्यां.पछे
अमे अमारा आत्माने पण तपासी जोयो त्यारे अमारे जेवी भगवानने विषे प्रितिजणाणी तेवी
बिजानी प्रिती जणाणी नहि. शा माटे.जे कांइक भुंडा देश काळादिकनो ज्यारे जोग थाय
छे त्यारे ए सर्वे मोटा छे तोपण कांइक एमनी बुद्धिने विषे फेर पडी जाय छे, त्यारे एम ज-
णाय जे अंते पायो काचो देखायछे, ते सारी पेठे जो कोइक भुंडा देशकाळादिक योग
थाय तो भगवानमां प्रिति छे तेनुं कांइ ठेकाणुं रहे नहि. माटे ए सर्वेने जोतां अमने अमारो
कोरनुं ठिक भासे छे जे गमे तेवा भुंडा देश काळादिकनो जोग थाय पण कोइ रीते अमारुं
अंतःकरण फरेनाहि.अने भगवानने विषे प्रिति तो तेनीज साची के जेने भगवान विना बिजाको
पदार्थने विषे प्रितिज नथाय,अने सर्वे सदग्रंथनुं पण एज रहस्य छे जे भगवान छे, एज परम सुख

दायक छे, ने पर्मसार वस्तु छे, ने ते प्रभु विना जे जे बिजां पदार्थ छे ते अतिशे तुच्छ छे, ने अति असार छे. अने जेने भगवान जेवी बिजा पदार्थमां पण प्रिति होय, तेनो तो घणोज पायो काचो छे. जेम कसुंबल वस्त्र होय ते घणुं सारु जणातुं होय पण ज्यारे जे उपर पाणी पडे ने पछे तेने तडकामां सुकाविए त्यारे सुधु नकारु थइ जाय ने धोळा वस्त्रजेवुं पण न रहे. तेम जेने पंच विषयमां प्रिति होय तेने ज्यारे कुसंगनो जोग थाय त्यारे कांइ ठेकाणुं रहे नहि, माटे जे भगवानना भक्त होय तेने तो भगवानने राजी कर्यां सारु पंच विषयनो अतिशे त्याग करचो जोइए. पण भगवानने विषे जे प्रिति तेमां विघ्न करे एवुं कोइ पदार्थवाहालुं राखवुं नहि ॥ इतिवचनामृतम् ॥ ५६ ॥ १८९ ॥

संवत १८८२ना असाड सुदि ६, छठने दिवस संध्या आर्तिने समे स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरनादरबारमांउगमणेद्वारओरडानी ओसरिये ढोलिया उपर विराजमान हता अने मस्तक उपर श्वेतपाघ पुष्पने तोरे विराजमान हती अने श्वेत चादर ओढी हती ने श्वेत खेस पेहेर्यो हतो अने श्रीजी महाराजना मुखार्विंद आगळ पर्महंस तथा देश देशना हरीक्तनी सभा भराइने वेठी हती. अने मशालनो प्रकाश

यों. अने सर्वे पृथ्वीनुं चक्रवर्त्ति राज्य हतुं ते राज्यनो पण त्याग कर्यो ने ते एम समज्या जे ए भगवानना सुख आगळ ए सोलाख स्त्रियुंनुं सुख ते शी गणतीमां? अने चक्रवर्त्ति राज्यनुं सुख ते शी गणतीमां? अने तेथी ईंद्रना लोकनुं, ने ब्रह्माना लोकनुं, सुखपण शीगणतीमां? अने एवा जे भगवान ते विना जे बिजा पदार्थने विषे प्रीति करे छे, ने तो अतिशे तुच्छ बुद्धि वाळा छे. जेम कुतरु होय ते सुका हाडकाने एकांते लेइ जइने करडे ने तेमां सुख माने छे तेम मूर्ख जिव छे ते दुखने विषे सुख मानीने तुच्छ पदार्थने विषे प्रितिने करे छे. अने जे भगवाननो भक्त कहेवातो होय ने तेने भगवान थकी बिजा पदार्थमां जो हेत वधुं होय ते तो केवळ मीनडीयो भक्त छे. अने जे जथार्थ भगवाननो भक्त होय तेने तो भगवानथी बिजुं कोइ पदार्थ अधिक होयज नहि. अने ज्ञान, वैराग्य, भक्ति ने धर्म, तेणेजुक्तएवो जेभगवाननोभक्तते तो एम जाणे जे जे शूरवीर होय ते लडवा समे शत्रू सनमुख चाले पण बिहे नहि. ते शूरवीर साचो. अने शूरवीर होय ने लडाइमां काम न आव्यो, ने गांठें धन होय ने तें खरच्या वावरवामां काम न आव्युं ते वृथा छे. तेम मुने भगवान मळ्या छे ते जे जिव मारो संग करे, तेनी आगळ हुं कल्याणनी वात न करुं त्यारे मारुं ज्ञान ते शा काममां आव्युं? एम विचारी

ने उपदेश कर्या निमित कांइक थोडी घणी उपाधी रहे तो पण परमेश्वरनी वात कर्यामां कायरपणुं राखे नहि. एम कहीने श्रीजी महाराजे तुळसीदासजीनां त्रण पद गवराव्यां. ते त्रण पदनां नाम एक तो ॥ज्याकी लगन राम सो नांहे॥ तथा बिजुं एहिकह्यो सुनुं वेद चहुं॥ तथा त्रिजुं ज्याकुं प्रियन राम वैदेहि॥ ए त्रण पद गवरावीने पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे जेवी रीते आ पदमां कह्युंछे तेवी रीते आपणे रहेवुं छे, ते करतां करतां जो कांइक अधरुं रह्युं अने एटलामां जो देह पडयो तो पण मरीने नर्क चाराशीमां जावुं नथी के कोइ भत मेत थावुं नथी, सुधो भुंडामां भुंडो देह आवशे तो पण इंद्रना जेवो के ब्रह्माना जेवो तो आवशे, पण एथी उतरतो तो नहि आवे, माटे निर्भे रहीने भगवाननुं भजन करवुं. एम कहीने श्रीजी महाराजने मुकुंद ब्रह्मचारी तेडवा आव्या ते भेळे जमवा पधार्या॥इति वचनामृतम्॥५७॥१९०

संवत १८८२ ना श्रावण सुदी ४ चोथने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उत्तरादे बार ओरडानी ओशरीए ढोलिया उपर गादी तकिया बिछावीने विराजमान हता अने श्रीजी महाराजे सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी मंडळ तथा देश देशदेशना हरिभक्तनी सभा

भराइने वेठी हती. पछे श्रीजी महाराजे प्रश्न पुछ्युं जे, जे जे आचारज थया छे. तेना संप्र-
दायनी पुष्टी घणाक काळ सुधी शेउपाये करीने रहेछे? पछे मुक्तानंद स्वामीए कह्युं जे, एक
तो संप्रदाय संबंधी ग्रंथ होय, अने बिजो शास्त्रे कह्यो एवो वर्णा श्रमनो धर्म होय, अने त्रि-
जो पोताना इष्टदेवने विपे अतिशे दृढता होय ए त्रणने जोगे करीने पोताना संप्रदायनी पुष्टी
रहेछे. पछे श्रीजी महाराजे ब्रह्मानंद तथा नित्यानंद स्वामीने पण पुछ्युं त्यारे एमणे पण एवी-
ज रीते कह्युं. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे, ल्यो ए प्रश्ननो उत्तर-अमे करीये. जे संप्रदाय-
नी पुष्टी तो एम थाय छे जे, जे संप्रदायना इष्टदेव होय तेनो जे हेतु माटे पृथ्वीने विपे जन्म थ-
यो होय, अने जन्म धरीने तेणे जे जे चरित्र कर्या होय, अने जे जे आचरण कर्या होय ते
आचरणने विपे धर्म पण सहेजेज आवी जाय अने ते इष्टदेवनो महीमा पण आवी जाय माटे
पोताना इष्टदेवना जे जन्मथी करीने देह मुकवा पर्यंत चरित्र तेणे करीने संप्रदायनी पुष्टी थाय
छे तेशास्त्रमां संस्कृत होय, अथवा भाषा होय, पण तेज ग्रंथ संप्रदायनी पुष्टी करे, पण ते विना
बिजो ग्रंथ पोताना संप्रदायनी पुष्टि न करे. जेम रामचंद्रना उपासक होय तेने वाल्मिकि रा-
मायणे करीनेज पोताता संप्रदायनी पुष्टि थाय. अने श्री कृष्ण भगवानना जे उपासक होय ते

ने दशम स्कंध, अने एकादश स्कंध ए बे जे भागवतना स्कंध तेणे करीनेज पोताना संप्रदायनी पुष्टी थाय. पण रामचंद्रना उपासक तथा श्री कृष्णना उपासक तेने वेदे करीने पोताना संप्रदायनी पुष्टी न थाय. माटे पोताना संप्रदायनी रीतनुं जे शास्त्र होय तेज पाछले दाहाडे पोताना संप्रदायने पुष्ट करेछे. एम कहीने श्रीजी महाराजे मुक्तानंद स्वामीने कह्युं जे तमे पण पोताना संप्रदाय संबंधी ने पोताना इष्टदेव संबंधी जे वाणी तथाशास्त्र ते देह पर्यंत कर्या करजो ने तमारो देह रहे त्यां सुधी तमने एज आज्ञा छे. पछे ए जे श्रीजी महाराजनुं वचन तेने मुक्तानंद स्वामीए अति आदर करीने माथे चडाव्युं. अने श्रीजी महाराजने बे हाथ जोडीने नमस्कार कर्यो. ॥इतिवचनामृतम्॥५८॥१९१॥

संवत १८८२ ना श्रावण सुदि १२ द्वादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेव नारायणना मंदीरनी ओसरिये ढोलिया उपर उगमणे मुखारविंदे विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजि महाराज बोल्या जे चार वेद, पुराण, इतिहास, ए सर्वमां एज वार्त्ता कांही छे जे भग

वानने भगवानना संत एज कल्याण कारी छे अने भगवानना जे साधुछे तेतो भव ब्रह्मादिकदे व थकी पण अधिक छे तेम भगवान के भगवानना संतनी ज्यारे प्राप्ति थइ त्यारे ए जीवने ए थी उपरांत बीजुं कोइ कल्यांण नथी,एज परम कल्यांण छे.अने भगवानना संतनी शवा तो ब हुं मोटा पुन्यवाळाने मळेछे, पण थोडा पुन्यवाळाने मळतो नथी. माटे भगवानना संत साथे तो एवुं हेत राखवुं. जेवुं हेत स्त्री उपर छे, के पुत्र उपर छे, के माबाप ने भाइ उपरछे, तेवुं हेत राखवुं तो ए हेते करीने जीव कृतार्थ थइ जाय छे. अने पोतानां जे स्त्री पुत्रादिक होय ते तो कुपात्र होय, ने कुलक्षणवाळा होय,तोपण कोइ रीते तेनो अवगुण ए जीवने आवतो नथी. अने जे भगवानना भक्त होय तेतो सर्वे रूडे गुणे करीने युक्त होय पण जो तेणे लगारेक कठण वचन कह्युं होय तो तेनी आंटी जीवे त्यां सुधी मुके नहि ऐवी जेनी वृतिछे, तेने तो जे जेवुं पोताना संबंधी उपर हेत छे तेवुं ते भगवानना भक्त उपर कहेवायज नहि त्यारे एनुं कल्याण पण थाय नहि. अने संतनो महिमा तो प्रथम कह्यो एवो मोटो छे ते संतनी ने भगवाननो प्राप्ति थइ छे तो पण कोइकने एम डगमगाट रहे छे जेमां सारूं कल्याण थाशे के नहि थाय तेनुं शुं कारण छे? तो ए जिवने पूर्व जन्मने विषे भगवान के भगवानना संतनी प्राप्ति

थइ नथी ने तेमनी शेवा पण तेणे करी नथी एनेतो आजन्ममांज नवो आदरछे ते आगल्या जन्ममां फळशे अने जेने पूर्व जन्ममां भगवाननी के भगवानना भक्तनी प्राप्ति थइ हशे तथा तेमनी सेवाकरीहशेतेनेतोआजन्ममां भगवान केभगवानना भक्तमांथी हेत मटेजनाहिअने निश्चेमा पण डगमगाटथाय नहि, अने काम क्रोध लोभ संबंधी घाटतो कदाचित रहे पण भगवाननो निश्चे तो कोइ रीते मटे नहि ते कोइकने वचनेकरीने न मटे एमां शुं केहेवुं!एनेतो जो पोतानुं मन डगमगाट करावे तो पण डगमगाट थाय नहि.अने तेनी दृढता जेवी नाथ भक्तनी छे, के जेवी विष्नुदासनी हती, के जेवी हिमराजसानी हती, के जेवी काशीदासनीछे, जेवी भायंचद शेठनी हती, के जेवी दामोदरने छे एवी दृढता होय त्यारे जाणवुंजे आ पूर्व जन्मनो भगवाननो भक्त छे॥इतिवचनामृतम॥५९॥१९२॥

संवत १८८२ ना श्रावण वदि ४ चोथने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे वार ओरडानी उगमणी ओशरीए ढोलिया उपर विराजमान हता, अने श्वेत पाघ मस्तक उपर बांधी हती, अने श्वेत पछेडी ओढी हती, अने श्वेत खेश पहेर्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश दे-

शना हरीभक्तनी सभा भरइने बेठी हती. पछे कह्युं - जे प्रश्न-उत्तर करो त्यारे मुक्तानंद स्वामीये प्रश्न पुछ्युं जे, हे महाराज आ संसारने विषे-केटलीक जातना विक्षेप आवे छे, तेमां केइ रीते भगवाननो भक्त समजे तो अंतरे सुख रहे? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे एनो उत्तर तो जेम अमने वर्ताय छे तेम कहिये. जे पोताना देहथी नोखो जे पोतानो आत्मा तेनुं जे निरंतर अनुसंधान तथा माइक एवा जे पदार्थ मात्र तेना नाशवंतपणानुं जे अनुसंधान तथा भगवानना माहात्म्य ज्ञाननुं जे अनुसंधान, ए त्रण्ये करीने कोइ विक्षेप आडो आवतो नथी. अने ज्यारे कोइ जातना विक्षेपनो जोग आवे त्यारे उपरथी तो चित्तनो धर्मछे ते विक्षेप जेवुं जणाय. पण ते विक्षेपनो पोताना चैतन्यमां तो डंस बेसतो नथी, ते केम जणाय जे ज्यारे सुइए छीए त्यारे वारल्यो जे विक्षेप ते कोइ दिवस स्वप्नमां देखातोज नथी अने जे चइतन्यमां विक्षेप पेठो होय ते तो त्रणे अवस्थामां जणायछे माटे स्वप्नमां कोइ रीते विक्षेप जणातो नथी ते थकी एम जाणीए छीए जे चइतन्यमां विक्षेप कोइ रीते वळगतो नथी. अने जे भगवानना भक्त होय ने तेने कोइक प्रकारना दुखनो विक्षेप थयो होय एतो सारी पेठे अंतरमां जणाय छे पण न जणाय एम नथी. अने एतो रघुनाथदास सरखो विमुख होय तेने तो न जणाय, ते

ज्यारे रामानंद स्वामीए देह मुक्यो ने सर्वे सत्संगी रोवा लाग्या, त्यारे पण रघुनाथदासने तो जराय शोक थयो नहि अने हस्तो जाय ने बिजाने आगळ वात करतो जाय। माटे भगवानना भक्तने दुख आवी पडे त्यारे तो जे चंडाळ ने विमुख होय तेने दुख न थाय, पण जे भगवाननो भक्त होय ते तो हरिभक्तने दुखे करीने जरूर दुखीयो थाय, अने जे भगवाननो भक्त होय तेने कोइक मारी नांखतो होय अथवा तेने कोइक दुख देतो होय तेने भगवाननो भक्त आडो जाइने जो मरे के घायल थाय तो शास्त्रमां एम कह्युंछे जे तेनां ब्रह्महत्यादिक जे पंच महा पाप ते सर्वे मटी जायछे एवो भगवानना भक्तनो पक्ष राख्यानो प्रतापछे. अने जे भगवानना भक्तनुं वचन बांणनी पेठे हइयामां वसमुं लागे अने तेनो वैरभावे आंटो पडी जाय ते जीवे त्यां सुधी टळे नही, एवो जे चांडाळ जेवो जीव होय ने धर्मे जुक्त होय, त्यागे जुक्त होय, तपे जुक्त होय, ते सर्वे वृथाछे, अने बिजां पण कोटीक साधन करे पण तेना जीवनुं कोइ काळे कल्याण थाय नही. अने आ संसारने विषे जेम कोइक स्त्री होय ते पोताना पती ...र ने बिजा पुरुष उपर सरखुं हेत राखे ते वेश्या सरखी बुद्धि केहवाय तेम आ संसारने ...नो पुरुष होय जे आपणे तो बधाय साधु सरखाछे, कोने सारो नरसो कहीये तो ते स

त्संगी केहेवातो होय, तोपण तेने विमुख जाणवो. अने जे पुरुष एम जाणे जे आपण कांइक अवळुं सवळुं बोलीये तो आपणो माणस अवगुण लेशे एवी रीतें पोतानी सारप्य राख्या सारु भगवाननुं के भगवानना भक्तनुं कोइक घसातुं बोले ने तेने सांभळी रहे,तो ते सत्संगी केहेवातो होय तोपण तेने विमुख जाणवो.अने जेवां पोतानां सगांवाळां होय अथवामावाप हो य तेनो पक्ष रहेछे तेवो भगवानना भक्तनो दृढ पक्ष राखवो अने भगवानना भक्त साथे कोइ रीतनो विक्षेप थाय तो जळमां लिटानी पेठे फेर एक थै जाय पण आंटि राखे नही तेज भ- गवाननो जथार्थ भक्त केहेवाय.एटली वार्त्ता करीने पछे श्रीजि महाराज एम बोल्या जे हुंतो दत्तात्रेय जडभरत नारद ने शुकजी ते सरखो दयावाळोछुं अने पूर्व देशमां एक समे नागडा वेरागीनीजमात्य मेळो हतो तेसर्वे वेरागीये कह्युं जे तांदलजानी लीली भाजी तोडो त्यारेमें क- हुं जे एमांतो जीवछे ते अमे नही तोडिये पछे एकजणे तरवार उघाडी करीने डारो करयो पण अमे लीलीभाजी न तोडी एवो अमारो दयावाळो जीवछे, तोपण जो कोइक भगवानना भक्तनेकुरदृष्टियेकरीनेजोतोहोयनेतेजोपोतानोसगो वालोहोयतोयपणजाणियेजेतेनी आंख्यफोडीनां खीए. अने हाथे करीने जो भगवानना भक्तने दुभे तो ते हाथने कापी नांखीए, एवो तेनो अ

भाव आवे छे, पण त्यां दया नथी रहेती. अने एवो जेने भगवाननो ने भगवानना भक्तनो प-
क्ष होय तेनेज भगवाननो पूरो भक्त कहेवाय.॥ इतिवचनामृतम् ॥ ६० ॥ १९३॥

संवत १८८२ना श्रावण वदि ७ सातमने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री
गढडा मध्ये दादाखाचरनादरबारमां आथमणे बार ओरडानी उगमणी ओसरिये ढोलीया
उपर विराजमान हता अने मस्तक उपर श्वेत शेलुं सोनेरी छेडानुं बांध्युं हतुं, अने एक
बिजुं श्वेत शेलुं ओढयुं हतुं अने खेस पेहेर्यो हतो अने श्वेत मोगराना फुलना हार पहेर्या हता,
अने पोताना मुखारविंदनी आगळ पर्महंस तथा देश देशनाहरिभक्तनी सभाभराइने बेठी हती.
पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे जेमां त्रणवातोहोयते पाको सत्संगी कहेवाय.तेत्रणवातों तेकीयां
कियां तो एक पोताने इष्टदेवे जे नियम धराव्या होय ते पोताना शिरसाटे दृढ करीने पाळे प
ण ए धर्मनो कोइ दिवस त्याग न करे. अने बिजो भगवानना स्वरूपनो जे निश्चय ते अ-
तिशे दृढ पणे होय पण तेमां कोइ संशय नाखे तो संशय पडे नहि, ने पोतानुं मन संशय
नांखे तो पण संशय पडे नहि, एवो भगवाननो अडग निश्चय होय अने बिजा पोताना इष्टदेव
ने भजता होय एवा जे सत्संगी वैष्णव तेनो पक्ष राखवो. ते जेम मा, बाप, दिकरी, दिकरा

तेनो पक्ष राखे छे, ने जेम पुत्र होय ते पोताना पितानो पक्ष राखे छे; ने जेम स्त्रि होय-ते पोताना पतिनो पक्ष राखे छे, तेम भगवानना भक्तनो पक्ष राखवो। ए त्रण जेमां परिपूर्ण होय ते पाको सत्संगी कहेवाय. अने हरिभक्तनी सभामां महोढा आगळ आवीने बेसतो होय, त्यारे बिजाने एम जणायजे ए मोटेरो सत्संगी छे पण मोटेरानी तो एम परीक्षा छे जे ग्रहस्थ होय ते तो पोतानुं जे सर्वस्व ते भगवान के भगवानना भक्तने अर्थे करी राखे, अने सत्संगने अर्थे माथुं देवुं होय तो दे. अने पोताना इष्टदेव आज्ञा करे जेतुं आघडीए पर्महंस था तो ते तत्काळ पर्महंस थाय.एवांजेनांलक्षणहोयतेहरिभक्तनो सभाने आगळबेसेअथवापांसेबेसे,पण तेने सर्वे हरिभक्तमां मोटेरो जाणवो. अने जे त्यागी होय ते ज्यारे देश परदेशमां जाय ने त्यां कनक कामनीनो जोग थाय तो पण तेमां फेर पडे नहि, अने पोताना ने जे नियम होय ते सर्वे दृढ करीने राखे ते सर्वे त्यागीमां मोटेरो कहेवाय. अने वळी जे कोइक संसारमां रजोगुणी मोटुं मनुष्य कहेवातुं होय ने ते ज्यारे सभामां आवे त्यारे तेने आदर करीने सर्वे सभाने मोढा आगळ बेसार्यो जोइए. ने ए व्यहवार छे ते ज्ञानी होय, त्यागी होय, तेने पण राख्यो जोइए.अनेजो न राखे तो एमांथी भुंडुं थायछे. जेम राजा परीक्षत ऋषीना आश्रमम।

गया त्यारे ऋषि समाधीमां हता ते राजानुं सनमान थयुं नहि.. पछे ते राजाने रीस चढी ते मरेल सर्प हतो ते ऋषिना गळामां नाख्यो. पछे ते ऋषिना पुत्रे शाप दीधो, तेणे करीने सात दिवसमां मृत्यु थयो. अने त्यारे ब्रह्मानी सभामां दक्षप्रजापती आव्या. त्यारे शिवजी उभा न थया अने वचने करीने पण दक्षनुं सनमानन थयुं. पछे दक्षने रीस चढी ते शिवनो यज्ञमांथी भाग काढी नाख्यो. पछे नंदीश्वरने भृगु ऋषी तेने सामसामा शाप थया, पछे ते पापमां सती दक्षना यज्ञमां बळी मुवां. अने विरभद्रे दक्षनुं माथुं कापीने अग्निमां होम्युं, अने दक्षनुं मुख बकरानुं थयुं. माटे ग्रहस्थ तथा त्यागी ए सौने ए रीत राखवी जे संसार व्यहवारे जे मोटुं माणस कहेवातुं होय, तेनुं सभामां कोइ रीते अपमान करवुं नहि. ने जो अपमान करे तो एमांथी जरूर दुख थाय अने भजन स्मर्णमां पण विक्षेप थाय. माटे आ वार्त्ता सत्संगी ग्रहस्थ सर्वे तथा त्यागी सर्वे दृढ करीने राखवी. ॥ इतिवचनामृतम् ॥ ६१॥१९४॥

संवत १८८३ ना मागशर वदि २ बिजने दिवस, स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां उत्तरादे द्वार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता. अने श्वेत पाघ मस्तक उपर बांधी हती तथा श्वेत चोफाळ ओढ्यो

हतो तथा श्वेत खेसे पेर्यो हतो. अने श्रीजि महाराजना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराजे पोताना भत्रीजा जे अयोध्याप्रसादजीने रघुवीरजीतेने बोलावीने कह्युं जे तमे अमने प्रश्न पुछो. पछे अयोध्याप्रसजीए प्रश्न पुछयुं जे, आ संसारने विषे ऐवो पुरुष होय जे आठो पहोर तो संसारनी विटपणामां रह्यो होय ने गमे एवुं जोग्य अजोग्य कर्म पण थइ जातुं होय, अने एक घडी के बेघडी भगवाननुं भजन करतो होय, त्यारे ते भजने करीने ते ए दिवस वधामां पाप कर्युं ते बळे केन बळे ए प्रश्न छे? पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे सारो दिवस प्रवृति मार्गमां रहीने गमेतेवी क्रिया करी होय, ने भगवाननुं भजन करवा बेसे ते समे भजनना करनारानां इंद्रियो, अंतःकरण ने जिव ए सर्वे एकाग्रह थइने जो भजनमां जोडाय, ते एवी रीते एक घडी केअडधी घडी पण जो भजनमां जोडाय तो समग्र पाप बळीने भस्म थइ जायछे. अने इंद्रियो अंतःकरणने जीवे एकाग्र थइने जो भगवानना भजनमां न जोडाय तो तेना भजन थकी तो घडी, के अधे घडीमां पाप न बळे, अने एनुं जे कल्याण तेतो भगवानने प्रतापे करीने थाय एनो एज उत्तर छे. पछे रघुविरजीए प्रश्न पुछयुं जे, हे महाराज आ जीवनो मोक्ष ते केम करे त्यारे

थाय छे? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे, जेने पोताना कल्याणनी इच्छाहोय तेने पोतानुं देहे, धन,धाम,कुटंब, परिवार, ए सर्वेने भगवाननी सेवामां जोडी देवांने भगवाननी सेवामां जे पदार्थ काम न आवे तो तेनो त्याग करी देवो. एवी रीते जे भगवान पारायण वर्त्ते ते ग्रहस्थाश्रमी होय, तोपण ते मरे त्यारे भगवानना धाममां नारद सनकादीकनी पंक्तिमां भळे, अने पर्म मोक्षने पामे एनो एज उतर छे. एवी रीते श्रीजी महाराज वार्त्ता करीने पछे पोतानी इच्छाये करीने बोलता हवा जे, अमे जे दिवसथी विचारीए छिये ते दिवसथी अमारी नजरमां एम आवेछे जे जीवना कल्याणने अर्थे त्रण अंगछे ते अति सुखदाइ छे. तेमां एक तो अतिशे आत्म निष्टा जे शुकजीनी पेठे आत्मारूपे थइने परमेश्वरनुं भजन करवुं अने त्रिजुं पतिवृतानुं जे अंग जे गोपियुंनी पेठे पतिभावे भगवाननुं भजन करवुं अने त्रिजुं दासपणानुं अंग ते हनुमानजी, तथा उद्धवजीनी पेठे दासभावे भगवाननुं भजन करवुं. ए त्रण अंग वीना कोइ रीते करीने जीवनुं कल्याण थातुं नथी. अने अमेतो ए त्रणे अंगने दृढ करी राखीए छीए.अने ए त्रणे अंगमांथी जेने एकेय अंग दृढपणे होय तो ते कृतार्थ थायछे. अने हवे ए त्रण अंगवाळानां जे लक्षण ते नोखां नोखां करीने कहिये छीए. तेमां आत्म निष्टावाळानुं तो ए लक्षण छे जे एक

कोरे तो आत्मा छे, अने एक कोरे तो देह, इंद्रियो, अंतःकरण, त्रण गुण पंच विषय ए आदिक जे मायानुं टोळुं ते छे, ने ए बेना मध्यने विषे जे विचार रहे ते विचार ज्ञान स्वरूपी छे, ते विचार जेम वायुए रहित स्थळने विषे दीवानी शिखा अतिशे स्थिर थइने रहे छे, तेम स्थिर थइने रहेछे. ने ते विचार देह, इंद्रियो ने अंतःकरण एमने आत्मा संघाथे एक थावा देतो नथी. अने ते विचार पण आत्मा संघाथे एक थातो नथी. अने ज्यारे ते विचारने जिव पामे छे, त्यारे ते जिवनी वृत्ति काशी सुधी लांबि होय ते वरताल जेटलामां आवे छे, अने पछे ते विचार ज्यारे दृढ थाय त्यारे वरताल्य थकी आ गढडा जेटलामां आवे छे, ने पछे आ गढडा जेटले लांबी वृत्ति होय ते संकेलाइने पोताना देह जेटलामां रहेछे,अने पछे देहमांथि वृत्ति थैने इंद्रियोना गोलोकमां रहेछे,ने पछे इंद्रियोना गोळक थकी इंद्रियोनी वृत्तिछे ते अंतःकर्ण सनमुख थइ जायछे ने पछे इंद्रियुंनी ने अंतःकर्णनी जे वृत्तिछे ते आत्माने विषे लिन थइ जायछे तारे ए जीवना वासना लिंगदेहनो नाश थयो कहेवायछे. अने ए विचारछे तेज्यारे आ जीव संगाथे मळेछे त्यारे ते जीवना हृदयने विषे प्रकाश थायछे अने पोताना आत्मानुं ब्रह्मरूपे दर्शन थायछे ने ते ब्रह्मने विषे परब्रह्म जे

नारायण तेनुं पण दर्शन थायछे अने ते दर्शनना करनाराने एम अनुभव थायछे जे हुं आत्
मुं अने मारे विषे जे परमात्माछे ते अखंड रह्याछे अने एवी रीतनी अखंड स्थिति रहे
आत्म निष्टानी अति उत्तम दशाछे. अने प्रतिवृतानुं जे अंगछे तेतो व्रजनी गोपियुंना जे
जोइये, जेम गोपियुंए जे दिवस थकी श्रीकृष्ण भगवानना चरणाविंदनो स्पर्श कर्यो ते दिव
थकी जेटलां संसारी संबंधी जे सुख ते सर्वे झेर जेवां थइ गयां. तेम जेने पतिवृताना अंगनी
भक्ती होय ते गमे तेवो इंद्र जेवो रूपाळो पुरूप होय तथा देवता जेवो होय तथा कोइक
राजा जेवो होय ने तेने ज्यारे देखे त्यारे जेम सडेल कुतराने देखे-अथवा विष्टाने देखे त्यारे
अतिशे ग्लानी पामीने दृष्टि पाछी खेंचोलेछे, तेम दृष्टि पाछी खेंचाइ जाय ते उत्तम पतीवृ-
तानी रीतीछे. ते माटे जेनी एक भगवावने विषेज पतिवावे करीने वृति जोडाणीछे तेनुं बिजा
कोइ पुरूपने देखिने मन राजी थाय नही. अने त्रिजुं जेने दासभावे भक्तीनुं अंगछे तेने पण
पोताना जे इष्ट देवछे तेनुं दर्पन गमे अने तेनीज वार्त्ता सांभळवी गमे ने पोताना इष्टदेवनोज
स्वभाव गमे, अने तेनीज पासे रेहेवुं गमे एवो प्रितिवान होय तोपण पोताना इष्टदेवनी सेवासारु
ने राजीपा सारु रात दिवस इच्छा करे जे, मुने मारा इष्टदेव कांइक आज्ञा करे तो हुं अ-

तिशे हर्षे करीने करुं. पछे पोताना इष्ट देवछे ते आज्ञा करे तो छेटे जाइने रहे तोपण राजी थको रहे पण कोइरीते अंतःकरणमां खेद पांमे नही. अने आज्ञाने विषेज पर्म आनंद माने ए दासत्व भक्तिनी उत्तम दशाछे. एवा दासत्व भक्तिवाळा तो आज गोपालानंद स्वामी छे, अने त्रिजा मुक्तानंद स्वामी छे. अने ए त्रणे अंगवाळा जे भगवानना भक्त तेमां उत्तम, मध्य म,नेकनीष्ट पक्षछे.अने एथी जे बहार रह्या तेतो केवळ पामर कैहेवाय.माटे ए त्रणमांथीएक अंग परिपूर्ण थाय, ने ते केडे देह मुके तेतो ठिकछे. अने ए त्रणमांथी एकेय अंग जेने परिपक न थयुं होय ने तेने जे मरवुं ते ठिक नथी ने ते तो पांच दहाडा वधु जीवे ने पोतानी अणसमजणने टाळीने ए त्रण अंगमांथी कोइक एक अंग दढ करीने मरे एज ठिक छे.अने वळी आ जिवनो तो एवो स्वभाव देखाय छे, जे ज्यारे ग्रहस्थाश्रममां होय त्यारेसंसरनोत्याग करवो गमे. अने ज्यारे त्याग करे त्यारे संसार संबंधी सुखना घाट थया करे, एवी रीते ए जिवनो अवळो स्वभाव जणाय छे, माटे जे भगवाननो दढ आश्रीत होय तेने तो एवा अवळा स्वभावनो त्याग करीने ने पोताना मननुं गमतुं सर्वे मुकीने भगवानने भजवाने भगवान विना बिजी सर्वे वासनाने टाळीने मरवुं तेज ठिक छे. अने जेने भगवानमां अतिशे प्रिति न होय,

तेने तो आत्मानिष्टाज विचारे करीने दढ करवी केम जे जे भगवानना भक्त होय, तेने कांता आत्मानिष्टा दढ जोइए ने कांतो भगवानने विषे अतिशे दढ प्रिति जोइए. अने ए बे अंगमां थी जेने एके अंगनी अतिशे दढता न होय तेने तो जे आ सत्संगना नियम छे, तेमां दढपणे करीने रेहेवुं तोज सत्संगी रहेवाय नहि तो सत्संग थकी बहार पडी जवाय. अने भगवानो जे भक्त होय तेने तो जे जे प्रकारनां दुःख आवे छे, ते दुःखना देनारा काळ, कर्म, माया, ए मांथी कोइ नथी ए तो पंडे भगवानज पोताना भक्तनी धिरज जोवाने अर्थे दुखने प्रेरे छे.अने पछे जेम कोइक पुरुष पडदामां रहीने जुवे तेम भक्तनी धिरजने भगवान भक्तना हृदयमां रही ने जोया करे छे, पण काळ, कर्म, मायानो शो भार छे, जे भगवानना भक्तने पिडी शके? तो भगवाननीज इच्छा छे एम जाणीने भगवाननो भक्त होय तेने मगन रेहेवुं. ए वार्त्ता सांभळी ने मुक्तानंद स्वामीए प्रश्न पुछयुं जे, हे महाराज ए त्रण जे अंग तमे कह्यां ते वात तो अति जीणी छे ने कठण छे ते कोइकना समज्यामां आवे ने कोइकनाज वर्त्तामांआवे पण सर्वेने न आवे. अने आ सत्संगमां तो लक्षावधि मनुष्य छे ते सर्वे ने तो आ वार्त्ता समजवी कठण छे माटे ते केम करे त्यारे तेनुं रुडुं थाय? पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ते तो ए त्रणअंगवाळा

मांहिलो जे हरिभक्त होय तेनो दासानुं दासथइने तेनी आज्ञामां रेहेतो ते कांइ न समजतो होय तोपण ए छती देहेज भगवानना पार्षद थइ रह्यो छे, ने कृतार्थ थइ रह्यो छे. अने आ संसारने विषे भगवानने भगवानना भक्तनो महिमा अतिशे मोटो छे, ते गमे तेवा पामरने पतीत जिवहोयपणभगवानकेभगवाननाभक्तनेआश्रीतथायतोतोजिवकृतार्थथइजायछे. एवोभगवाननेभगवाननाभक्तनो महिमाछे माटे जेने भगवानना भक्तनी शेवानीप्राप्तिथइ तेनेतो निधडक रहेवुं. अने आ त्रण अंगनी जे अमे वार्ता करी छे ते बहुधातो आ मुक्तानंद स्वामी सारु करी छे अने आ मुक्तानंद स्वामी उपर अमने घणुं हेत छे ने एमने शरीरे मंदवाडछे ते रखे कोइक वातनी समजणमां स्वामी रही जाय नहि एम जाणीने आ वार्ता करी छे. पछे मुक्तानंदस्वामीए कह्युंजेमहाराजमेंपणजाण्युंछेजे हुंसारुजआवार्ताकरोछे॥.॥इतिवचनामृतम्॥६२॥१९५॥

संवत १८८३ ना मागसर वदि २ बिजने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजीमाहाराजश्री-गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमांपोताना उताराने विषे विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ भजनानंदस्वामीश्रीमद्भागवतनापाठकरताहता ने पर्मेहंस तथादेश देशना हरीभक्तनी सभा भराइनेबेठीहती. पछे मुक्तानंद स्वामीए प्रश्न पुछ्यो

जे हे महाराज द्रष्टाने दृश्यना मध्यमां जे विचार रहे छे ते द्रष्टाने ने दृश्यने जूदां जूदां राखे छे एमां जिवनुं कल्याणपणुं कियुं जाणवुं,ने इंद्रियो अंतःकर्णनुं जाणपणुं कियुं जाणवुं? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे अमने तो एम जणाय छे जे जेनो जिव अतिशे बळ ने पाम्यो होय तेने तो अंतःकर्णनी वृत्तिंयु ते जिवनीज वृति छे ने तेना चार क्रियाये करीने चार विभाग जणायछे. अने तेअंतःकरणमांने इंद्रियोमां जाणपणुंछ ते जिवनुंजछे. ते इंद्रियो अंतःकरणने ज्यां घटित होय त्यां चालवा दे. ने ज्यां घटित न होय त्यां न चालवा दे. अने जेनो जीव अतिशे बळने पाम्यो होय तेने तो भुंडुं स्वप्न पण आवे नाहि. अने जेनो जिव निर्बळ होय तेने तो सांख्य मतने अनुसरीने एक द्रष्टा एवो जे पोतानो आत्मा ते आत्मापणे रहेवुं, पण इंद्रियो अंतःकर्ण भेळुं भळवुं, नहि तो एवी रीते सत्तारूपे रहेतां थकां एनो जीव बळने पामे छे. अने एथी पण बळ पामवान एक अतिशे मोटो उपाय छे. जे भगवान ने भगवानना जे संत तेने विषे जेने प्रिति होय, ने तेनी सेवाने विषे अतिशे श्रद्धा होय, ने भगवाननी नवधा भक्तिये जुक्त होय, तेना जिवने तो तत्काळ अतिशे बळ आवे छे. माटे जिवने बळ पामवाने अर्थे भगवानने भगवानना भक्तनी सेवा बरोबर बिजो कोइ उपाय नथी, अने

वळी अमे अमारा अंतरनी वार्ता कहीए जे, ज्यारे अमे अगनोतरानी शालमां मांदा थया हता, त्यारे कैलाश ने वैकुंठ ते देख्यामां आव्यां ने नंदीश्वरनी असवारीने गरुडनी असवारी पण अमे करी एम अमारा दीठामां आव्युं, पण ते सामर्थिमां अमने कांइ सारु लाग्युं नहि,पछे तो अमे केवळ सत्ता रुपे रहेवा मांड्युं त्यारे सर्व उपाधिनी शांतीथइ. पछे तेमां पण अमने एम विचार थयो जे सत्ता रुपे रेहेवुं तेथी पण भगवानने भगवानना भक्त भेळे देह धरीने रेहेवुं ए श्रेष्ठ छे. माटे अमने एम विक लागी जे रखे सत्तारूपे रहीए ने पाछो देह न धराय,माटे देह धरीने भगवानने भगवानना भक्तनी भेळे रहीए, ने तेने अर्थे जे सेवा बनी आवे एज आतिशे श्रेष्ट साधन छे. अने ज्यारे जीवने अंतसमो आवे छे त्यारे अनंत जातनी आधी ने व्याधी प्रगट थायछे. पछे भगवान के भगवानना संतनुं ज्यारे दर्शन थायछे त्यारे सर्व दुखनो नाश थइ जायछे, एवो भगवाननो ने भगवानना भक्तनो महिमा मोटोछे, अने भगवानना भक्त छे तेतो केवळ ब्रह्मनीज मूर्त्तियो छे. एने विषे तो मनुष्य भाव लाववोज नहि. अने जेम पोताना देह कुटांबियो होय छे, ने तेने तेना हेतने अर्थे आपण वढीने कहीए, ने आपणने ते वढीने कहे पण अंतरमां कोइने आंटी पडती नथी. तेम भगवानना भक्त संघाथे व

तेव्युं जोइए. अने जेने भगवान के भगवानना भक्त संगाथे आंटी पडी जाय छे, ते तो अमने दिठो पण गमतो नथी, नें ते उपरथी रिस पण कोइ दिवस उतरती नथी. अने आ संसार-मां पंच महा पापना करनारानो कोइ दिवस छुटको थाय पण भगवानना भक्तना द्रोहना करनारानो कोइ दिवस छुटको थातो नथी. माटे भगवानना भक्तनी जे सेवा करवी ते बरोबर कोइ पुन्य नथी, ने भगवानना भक्तनो द्रोह करवो ते बरोबर कोइ पाप पण नथी. माटे जेने पोताना जीवने बळवान करवो होय तो तेने तो भगवान के भगवानना भक्तने मन कर्म वचने शुद्ध भावे करीने सेववा. ॥ इतिवचनामृतम् ॥ ६३ ॥ १९६॥

संवत १८८३ ना पोस वदि ७ सातमने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां, श्री वासुदेव नारायणना मंदीरनी ओसरीए ढोलिया उपर गादी तकिया नखावीने उत्तरादे मुखारविंदे विराजमान हता. अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे स्वयंप्रकाशानंद स्वामीये प्रश्न पुछ्युं जे, हे महाराज भगवानना जे अवतार छे ते सर्वे सरखाज छे के तेमां अधिक न्युन भावछे. पछे श्रीजी

महाराज बोल्या जे अमे व्यासजीना करेल जे सर्वे ग्रंथ ते सांभळ्या, ने पछे पूर्वापर विचारीने जोयुं त्यारे तेमांथी अमने एम समजाणुं छे जे मच्छ, कच्छ, वराह, नृसिंहादिक जे भगवानना अवतार छे ते सर्वे अवतारना अवतारी ते श्रीकृष्ण भगवान छे, पण त्रिजा अवतारनी पेठे श्रीकृष्ण भगवान ते अवतार नथी एतो अवतारीज छे. एवा जे श्रीकृष्ण भगवान ते आपणा इष्टदेव छे. अने ते श्रीकृष्ण भगवाननां चरित्र श्रीमद्भागवत पुराणना दशम स्कंधने विषे संपूर्ण कह्यां छे. माटे आपणा उद्धव संप्रदायने विषे अमे दशम स्कंधने अतिशे प्रमाण कर्यो छे. अने त्रिजा जे सर्वे अवतार ते पण श्रीकृष्ण भगवाननाज छे माटे ए अवतारने ए अवतारना प्रतिपादन करनारा जे ग्रंथ ते सर्वेने आपणे मानवा पण विशेषे करीने तो श्रीकृष्ण भगवान ने तेना प्रतिपादन करनारा जे ग्रंथ तेनेज मानवा. पछे पुरुषोत्तम भट्टे प्रश्न पुछ्युं जे भगवान जिवना कल्याणने अर्थे आ जगतने सृजे ते विश्व न रच्युं होय ने मायाना उदरमां जिव होय तेनुं भगवान कल्याण करे तो शुं न थाय जे आटलो विश्व सृजवानो भगवान दाखडो करे छे ए प्रश्न छे? पछे श्रीजी माहाराज बोल्या जे, जे भगवान श्री कृष्ण पुरुषोत्तम छे ते तो राजाधिराज छे. अने अखंड मूर्त्ति छे. अने पोतानुं अक्षर धाम रूपी ने

तखत तेने विषे सदा विराजमान छे. अने ते अक्षरधामने आश्रित अनंत कोटि ब्रह्मांड रह्यां छे. ते जेम कोइ मोटो चक्रवर्ति राजा होय ने तेने असंख्य गामडां होय तेमांथी एक बे गाम उजड थयां होय अथवा वश्यां होय पण ते तो राजानी गणतीमां पण न होय. तेम श्री कृष्ण भगवान ते अनंतकोटी ब्रह्मांडना पति छे, ते ब्रह्मांडुनो कांइ एक सामटो प्रलय थातो नथी अने तेमांथी एकाद ब्रह्मांडनो प्रलय थाय तो भगवाननी पण गणतीमां नथी. अने ते श्री कृष्ण भगवानने देवकीजी थकी जे जन्म ते तो कथन मात्र छे अने ए श्री कृष्ण तो सदा अजन्मा छे. अने ते श्री कृष्ण भगवाननुं जे अक्षरधाम ते व्यतिरेक पणे तो प्रकृति पुरुष थकी पर छे, अने अन्वय पणे करीने तो सर्व ठेकाणे छे. जेम आकाश छे ते अन्वय पणे करीने तो सर्वत्र छे. अने व्यतिरेक पणे तो चार भुत थकी पर छे, तेम श्री कृष्ण भगवाननुं अक्षर धाम छे. अने ते धामने विषे भगवान अखंड विराजमान रहे छे. अने ते धाममां रह्या थका अनंत कोटी जे ब्रह्मांड छे, तेने विषे ज्यां जनेजेम दर्शन देवुं घटे त्यां तेने तेम दर्शन देछे. अने जे साथे बोलवुं घटे ते साथे बोलेछे. अने जेनो स्पर्शकरवोघटेतेनोस्पर्श करेछे. जेमकोइक सिद्ध पुरुष होय ते एक ठेकाणे बेठो थको हजारुं गाउनी वार्त्ताने सांभळे तेम भगवान पो-

तांना अक्षर धाममां रह्या थकां अनंत कोटी ब्रह्मांडने विषे ज्यां जेम जणावुं घटे त्यां तेमज जणायछे. अने पोते तो सदा पोतानो अक्षर धाममांजछे, अने एक ठेकाणे रह्या थकां जे अनंत ठेकाणे जणायछे ते तो पोतानी जोग कळाछे. जेम रासमंडळने विषे जेटली गोपियुं तेटलाज पोते थया. माटे एक ठेकाणे रह्या थका जे अनंत ठेकाणे देखावुं एज भगवाननुं योगकळाये करीने व्यापक पणुंछे, पण आकाशनि पेठे अरूप पणे करीने व्यापक नथी. अने जे भगवाननी योग मायायें करीने पंचास क्रोड जोजन जे पृथ्वीनुं मंडळछे ते प्रलय काळने विषे प्रमाणुं रूप थइ जायछे. अने ते पृथ्वी पाछी सृष्टी काळने विषे प्रमाणुंमांथी पंचासक्रोड जोजन थायछे. अने चोमासुं आवेछे तारे गाजविज ने मेघनी घटा थइ आवेछे ए आदीक सर्वे आश्चर्य ते भगवाननी योग मायाये करीने थायछे. एवा जे श्री कृष्ण भगवान ते मुमुक्षुने सर्वे प्रकारे भजन करवा योग्यछे. शा माटे जे बिजा अवतारने विषे तो एक के बे कळानो प्रकाश हायछे अने श्री कृष्ण भगवानने विषे तो सर्व कळाउछे. माटे ए श्री कृष्ण भगवान तो रसीक पणछे, ने त्यागी पणछे, ने ज्ञानी पण छे, ने राजा धिराज पण छे, ने कायर पणछे, ने सुर विर पणछे, ने अतिशे कृपाळु पणछे, ने योग कळाने विषे पण प्रवीणछे, ने अतीशे बळीया

पणाछे, ने अतीशे छळिया पणछे, माटे सर्वे कळाये संपन्न तो एक श्री कृष्ण भगवानजछे अने ते श्री कृष्ण भगवाननुं जे अक्षरधाम तेने आश्रित जे अनंत कोटी ब्रह्मांड ते पण सदाय रहेछे तेमांथी जे ब्रह्मांडनी सो वर्षनी आवरदा पुरी थाय ते ब्रह्मांडनो नाश थाय तेणे करी ने कांई सर्वे ब्रह्मांडनो नाश थतोनथी माटे प्रलय काळमां शासारू कल्याणकर्युं जोइयेसर्वे ब्रह्मांड वसेज छे. तो एवीरीते ए प्रश्ननुं समाधानछे. एवीरीते परोक्ष पणे पोताना पुरुशोतम पणानी वार्ता श्रीजीमहाराजे करी तेने सांभळीने सर्वे हरिभक्त एम जाणता हवा जे एज जे श्रीकृष्णपुरुशोतम तेजआमकीधर्मना पुत्र श्रीजीमहाराज छे ॥ इतिवचनामृतम ॥ ६४ ॥ १९७

संवत १८८३ ना पोस सुदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरनादरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिरनी समीपे ढोलिया उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशनाहरिभक्तनी सभाभराइने बेठी हती, पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, सांभळो भगवाननी वार्त्ता करीए. त्यारे ताळ पखाज लइने संत किर्त्तन गावता हता ते छाना रह्या. अने सर्वे हाथ जोडीने सांभळवा बेठा. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे जिवना कल्याणने

अर्थे भगवानना राम कृष्णादिक जे अवतार थाय छे तेने तो मायानुं कारज एवुं जे आ जगत तेमां कोइ ठेकाणे मोह थातो नथी, अने पोताना अलौकिक प्रतापे करीने निशंक वर्ते छे. अने पोताना भक्तजननी भक्तिने अंगीकार करवाने अर्थे पंच विषयने पण सारी पेठे भोगवेछे, तेने जोइने आ संसारने विषे जे अवरकडाबां मनुष्य छे ते परमेश्वरने विषे दोष परठे छे, अने एम जाणे जे आतो परमेश्वर कहेवाय छे तोपण एने आपणा करतां पण वधु संसारने विषे आसक्तिछे, एम जाणीने भगवानने पण पोता जेवा मनुष्य जाणे छे, पण भगवाननो जे अलौकीक महिमा तेने जाणता नथी एज भगवाननी माया छे. अनें ब्रह्मस्थितिने पाम्या एवा जे आत्मदर्शि साधु तेने पण आ संसारने विषे कोइ पदार्थ देखीने मोह थातो नथी. तो ब्रह्मथी पर परब्रह्म एवा जे श्रीकृष्ण भगवान तेने माया ने मायानां कारज थकी निर्लेप रहेवाय एमां ते शुं कहेवुं ? एतो रहेवायज. अने आत्मनिष्ठावाळा जे संत तेने आत्मनिष्ठा ने तिव्र वैराग्य ए बे होय तेणे करीने कोइ रीतनुं बंधन तो न थाय, पण जो तेने भगवानने विषे भक्ति न होय तो, जेम बहु प्रकारनां भोजन ने बहु प्रकारनां व्यंजन कर्यां होय ने तेमां जो एक लवण न होय तो ते सर्वे नकारां थइ जाय छे, तेम भगवाननी भक्ति विना एकलुं जे ब्रह्मज्ञानछे,

तथा वैराग्य छे.ते तो नकारूंज छे ने सदा अकल्याणकारीज छे एम जाणीने शुकदेवजी ब्रह्मस्वरूप थया हता,तोयपण श्रीमद्भागवतने भणता हवा. अने श्रीकृष्ण भगवानने विषे दृढ भक्तिने करता हवा. माटे आत्मनिष्ठा वाळाने जो भगवानने विषे भक्ति न होय, तो ए एने मोटुं दुषण छे, अने जेने भगवानने विषे भक्ति होय, तेने पण जो आत्म, निष्ठा ने वैराग्य न होय तो जेवी भगवानने विषे प्रीति होय तेवी बिजा पदार्थने विषे पण प्रीति थइ जाय माटे ए भक्ति मार्गवाळाने पण मोटुं दुषण छे, अने जे आवो परिपक्व भगवाननो भक्त तेणे तो भगवाननो जथार्थ महिमा जाण्यो छे, माटे तेने तो परमेश्वर विना बिजुं सर्व तुच्छ जणाणुं छे. ते सारुं कोइ पदार्थमां ते मोह पामतो नथी. माटे आत्मनिष्ठा, वैराग्य, ने भगवानने विषे भक्ति ए त्रणेय भेळां होय त्यारे कोइ जातनी खोट न कहेवाय. अने एवो जे होय तेतो भगवाननो ज्ञानीभक्त कहेवाय,एकांतिकभक्त केहवाय,अनन्यभक्त केहेवाय ॥इतिवचनामृतम्॥६५॥१९८॥

संवत १८८३ ना पोस वदि २ प्रतिपदाने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओशरीए ढोलिया उपर गादी तकिया बिछवावीने विराजमान हता, अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां. ने पिळा पुष्प

ना ने राती गुलदावदीना पुष्पना हार कंठने विषे विराजमान हता,ने पिळा पुष्पनो तोरो पाघ
ने विषे विराजमान हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि मंडळ तथा देश देशना ह-
रिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती,- अने पोतानी आगळ सरोदाने डुकड लइने संत मंडळ
विष्णु पद गावता हता. ते किर्त्तन भक्ति, थइ रह्या पछे, श्रीजि महाराज बोल्या जे, आजतो
अमारे मोटा मोटा संतने प्रश्न पुछवा छे; एम कहीने प्रथम आनंद स्वामीने पुछता हवा जे,
कोइक एवो पुरुष होय जे, तेने बुद्धि थोडी होय तोपण पोतामां जे दोष होय तेने देखे: अने
बिजा हरिभक्तमां दोष होय तेने न देखे. अने गुण होय तेनेज देखे. अने बिजो जे पुरुष छे
तेने तो बुद्धि घणी छे, तोपण पोताना अवगुणने देखतोज नथी. अने बिजा हरिभक्तने विषे गु
णनो त्याग करीने केवळ दोषज देखेछे, एनुं शुं कारण हशे? जे थोडी बुद्धिवाळो होय ते प
ण पोताना दोषने देखे छे, अने झाझी बुद्धिवाळो छे तेने, पोताना दोष सुझता नथी? ए प्रश्न
छे. पछे आनंद स्वामीये जेवो सुझ्यो तेवो उत्तर कर्यो; पण प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि.
पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे एनो उत्तर एम छे जे आ जन्म अथवा कोइ जन्मांतरने विषे
एणे कोइक मोटा भगवानना भक्तनो अपराध कर्यो छे ते पापे करीने एनी बुद्धि दोशे युक्तछे

वच

माटे एने हरिभक्तना दोश सुझे छे ने पोताना दोश सुझता नथी एज एनो उत्तर छे. एम क
हीने पछे श्रीजीमहाराज नित्यानंदस्वामीने प्रश्न पुछता हवा जे भगवानने पाम्यानुं एकज साध
न छे के घणाक साधने करीने भगवान पमाय छे? त्यारे तेने एम केशो जे ज्ञान वैराग्य भक्ति
ने धर्म ए चार साधने करीने पमाय छे ते ज्यारे ए साधने करीने भगवाननी प्राप्ति थाय छे
त्यारे एक भगवानना आश्रये करीनेज कल्याण थाय एवा अनन्य भावनो निर्धार रह्यो नहि.
पछे नित्यानंदस्वामीये बहु प्रकारे उत्तर कर्यो पण प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि. पछे श्रीजीमहा
राज बोल्या जे कल्याणतो एक भगवानना आश्रये करीनेज छे, पण भगवान छे ते अति सम
र्थ छे ने तेनी आज्ञाने ब्रह्मादिक समग्र देव पाळे छे तथा काळ मायादिक जे सर्वे ब्रह्मांड
ना कारण ते पण भगवानना भय थकी सावधान थइने भगवाननी आज्ञामां रहे छे. माटे भग
वाननो भक्त होय तेने ए भगवाननी आज्ञा छे ते दृढ करीने मानवी एज भगवानना भक्तनुं
लक्षण छे. ते सारुं साधन सर्वे अति दृढ करीने राखवां एटले एक भगवान वतेज कल्याण
छे, अने ए साधन छे. ते तो भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे छे एज ए प्रश्ननो उत्तर छे. पछे श्री
जी महाराज ब्रह्मानंद स्वामीने पुछता हवा जे आ देहने विषे जिव छे ते साकार छे के निरा

कार छे? पछे ब्रह्मानंद स्वामीए कह्युं जे जिव तो साकार छे. त्यारे श्रीजी महाराजे कह्युं जे
जो जिव साकार होय, तो ते चरणादिके जुक्त थयो त्यारे दशम स्कंधने विषे वेदस्तुतिना अ-
ध्यायमां एम कह्युं जे भगवान जे ते जिवना कल्याणने अर्थे ते जिवनी बुद्धि, इंद्रि, मन ने
प्राण तेने सृजता हवा. ते जो जिव साकारज होय तो तेने अर्थे बुद्धि, इंद्रि, मन, प्राण सृ-
जानुं शुं काम छे? माटे एवी रीतना शास्त्रना वचनने जोतां एमज निर्धार थाय छे जे जिव
ते स्वरुप भावे करीने तो सत्ता मात्र छे, ने चइन्य वस्तु छे ने अनादि अज्ञान रूप एवुं जे
कारण शरीर तेणे जुक्त छे ने जेम चमक पहाणहोय ते लोढाने ताणीने लोढा साथे चोटी र-
हे छे तेम ए जिवनो पण चोटवानो स्वभाव छे, ते माइक एवां स्थुल ने सुक्षम ए बे शरीरते
साथे चोटे छे, अने ए जिव अज्ञाने करिने ते शरिरने विषे पोता पणुं माने छे, पण वस्तु गते
तो ए जिव सरीर जेवो नथी. पछे ब्रह्मानंद स्वामीए कह्युं जे ज्यारे भगवाननी भक्तिये करीने
ए जिवना अज्ञानी नीवृत्ति थाय छे, त्यारे ए जिवने स्थुल, सुक्ष्म ने कारण ए माइक त्रण
देहनो संबंध रहेतो नथी, त्यारे ए जिव भगवानना धाममां जइने केवी रीतना आकारे जुक्त
थको रहे छे? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे ज्यारे ए जिवना अज्ञाननी निवृत्ति थाय छे त्या

रे एने माइक त्रण देहनो संग छुटी जाय छे, पण जिव केवळ चइतन्य सत्ता मात्र रहे छे, पछे ए जिवने भगवाननी भूमी आदिक जे आठ प्रकारनी प्रकृति ते थकी जुदी जे चइतन्य प्रकृति तेनुं भगवाननी इच्छाए करीने देह बंधाय छे, ने तेणे जुक्त थको भगवानना अक्षरधाम ने विषे रहे छे. एवी रीते ए प्रश्ननो उत्तर छे. पछे गोपाळानंद स्वामी ने श्रीजी महाराज पुछता हवा जे अष्टांग योगा सिद्धथाय छे, अथवा आत्म दर्शन थाय छे ते तो भगवान ने भगवानना संतनी कृपा थकी थाय छे. ते ए योगने आत्म दर्शन सिद्ध थावानुं कारण जे भगवानने भगवानना संत तेने विषे वृत्ति. गौण थइ जाय छे, अने अष्टांग योग्यने आत्म दर्शन एने विषे वधु लगनी थाय छे ते नुं शुं कारण हशे? पछे गोपाळानंद स्वामीये कह्युं जे, एने योगाभ्यास करते थके योग सिद्ध थाय छे, तेनुं कांइक मान आवे छे. तेणे करीने भगवाननी कोरे कांइक वृति गौण थइ जाय छे. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे, ज्यारे सिद्ध दशाने पामे त्यारे ए योगीछे ते ब्रह्म रूप थाय छे. ते ब्रह्ममां तो कोइ जातनुं मान होय नहि माटे ए उत्तर संभवे नहि. पछे गोपाळानंद स्वामी बोल्या जे, हे महाराज एतो कांइ समजातुं नथी. माटे तमे कृपा करीने कहो? पछे श्रीजी

च. महाराज बोल्या जे, एतो एम समजवुं जे ज्यारे पोतानी खोट काढवी होय तेने. मोटाउनां वचननी साख्य लइने काढवी, जेम कोइक व्यवहारीक काम होय, ने ते कामने अतिशे सिद्ध करवुं होय त्यारे सारां सारां माणसनी साहदी करवी. तेम आंही पण ए साहदी छे जे सुकदेवजी ब्रह्म स्वरूप थया हता, तोपण अति प्रीतिये करीने श्रीमद्भागवत भण्या, अने आज दिवस सुधी पण भगवाननी भक्तिनेज करेछे. अने शोनकादीक अठाशी हजार ऋषि ते ब्रह्म स्वरूप छे, तोपण सुत पूराणीना मुख थकी भगवाननी कथाने सांभळेछे. एवी जातना वचननी साख्य भक्तिनी दढताने अर्थे लेवी, अने जे खोट पोताना जाण्यामां न आवती होय तेनी कोरनी भगवानने आगळ प्रार्थना करवी जे, हे महाराज मुमां जे खोट होय ते कृपा करीने नाश करजो.. जेम कोइक पुरूषने माथे कलंक आव्युं होय, ने ते कलंक टाळ्यानो कोइ साहदी न होय त्यारे ते लोढानो गोळो रातोचोळ होय तेने उपाडीने पोतानुं कलंक टाळे छे, तेम जे दोष न ओळखातो होय त्यारे ते दोष टाळवाने अर्थे भगवाननी स्तुति करवी ए ते लोढानो गोळो झाल्या जेवी छे. एम करीने पोतानी खोटने टाळवी ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे ? पछे श्रीजी महाराज मुक्तानंद स्वामीने पुछता हवा जे, भगवानने जथार्थ जाण्या होय, ने भगवान

तो कांइ चमत्कार न देखाडता होय, ने बिजा जंत्र, मंत्रवाळा होय.तेतो पडछा देखाडता होय, तेने देखीने भगवाननो भक्त होय तेनुं मन भगवानमांथी कांइ डगे के न डगे? पछे मुक्तानंद स्वामीयेकह्युं जे,हे महाराज जेने भगवाननो जथार्थ निश्चे होय तेने तो भगवान विना बिजे क्यांइ प्रतिति आवेज नहिं. अने जो बिजे ठेकाणे प्रतिति आवे तो तेने भगवाननो निश्चेज नथि ए तो गुणबुद्धिवाळो हरिभक्त कहेवाय पण जथार्थ भगवाननो भक्त न कहेवाय. पछे श्रीजी महाराज बोल्याजे एनो उत्तर एज छे. पछे श्रीजीमहाराजे शुकमुनीने पुछ्युं जे भगवाननो भक्त होय ने ते भगवाने तथा भगवानना संत तेने साक्षातकार पम्यो तेने जिवतां शी प्राप्ति थाय छे, अने मुवा केडे शी प्राप्ती थाय छे? पछे शुकमुनी बोल्या जे हे महाराज एनो उत्तर तो तमे करशो त्यारे थशे. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेने भगवानने भगवानना संतनीप्राप्ति थइ छे. तेने जिवते तो भगवानर्ना कथा कित्तंन करतां थकांज दिवस ने रात्री विते छे, अने त्रण अवस्थाथी पर जे पोतानो जिवात्मा तेनुं ब्रह्मरूप साक्षात दर्शन थाय छे. अने भगवान विना अन्य पदार्थ मात्रने विषे वैराग्य थाय छे, अने अधर्मनो त्याग करीने धर्मने विषे रहेवाय छे. अने देह मुके त्यारे एवा भक्तने भगवान पोता जेवोज करे छे, जेम भगवाने ब्रह्माने

कह्युं छे जे, हे ब्रह्मा जेवो हुं छुं ने जेवो मारो महिमा छे, ने जेवा मारा गुण छे, कर्म छे, तेवुं मारा अनुग्रह थकी तुने विज्ञान थाओ, एवुं जे ब्रह्माने कह्युं छे. तेम जे पोताना अनन्य भक्त होय ते सर्वने भगवान एवी प्राप्ति करावे छे. अने जेम भगवान काळ, कर्म, माया थकी रहित छे. तेमज भगवानना भक्त पण काळ कर्म ने माया थकी रहित थाय छे, ने अखंड भगवाननी सेवाने विषे रहे छे. एवी देह मुक्या केडे प्राप्ति थाय छे; एज ए प्रश्ननो उत्तर छे.

॥ इति वचनामृतम् ॥ ६६ ॥ १९९ ॥

संवत १८८३ ना माहा वदि ३ तृतियाने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी माहाराजश्री वढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उताराने विषे गंगाजळिया कुवा पासे ओटा उपर ढोलियो ढळावीने गादी तकिया नंखावीने विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरी भक्तनी सभा भराइने बेठी हती. अने पोतानी आगळ साधु दुकड सरोदा लेइने विष्णुं पद गावता हवा. ते किर्त्तन भक्ति थइ रह्या पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे, अमे सर्वे संत प्रत्ये प्रश्न करीए छीए. जे भगवाननो भक्त होय

ते देह मुकीने ब्रह्मरूप थइने भगवानना धाममां जाय छे, पछे एमांने भगवानमां शो अं-तराय रहे छे, जेणे करीने स्वामी सेवकपणानो नातो रहे छे? केम जे ए भगवाननो भक्त छे ते पण जेवा भगवान स्वतंत्र छे, ने काळ, कर्म, माया, तेने आवर्णेकरीने रहितछेतेवोजथायछे, माटे एमां शो भेद रहे छे जेणे करीने स्वामी सेवक पणुं रहे छे ए प्रश्नछे? पछे पर्महंसे जेने जेवुं समजाणुं तेणे तेवो उत्तर कर्यो, पण श्रीजी महाराजना प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि. पछे सर्वे संते कह्युं जे हे महाराज तमारा प्रश्नो उत्तर.तो तमेज करशो त्यारेज थाशे. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे एनो उत्तर एम छे जे भगवाननो भक्त होय तेणे जेवा भगवानने जाण्या होय जे भगवान आटली सामार्थ्ये जुक्त छे, अने आटली शोभाये जुक्त छे, अने आने आवा सुख स्वरूप छे, एवी रीते ए भक्त जेटलो भगवाननो महिमा जाण्यो छे, अने जेवा प्रतापे जुक्त भगवानने जाण्या छे, ते भक्त ज्यारे देह मुकीने भगवानना धाममां जाय छे. त्यारे रूप तथा सामर्थि ते ए भक्तनी पण तेवीज थाय छे. तो पण भगवाननी सामर्थि अने भगवाननुं सुंदर पणुं इत्यादिक जे प्रताप ते ए भक्त ने भगवानने विषे, अतिशे जणाय छे. त्यारे ए भक्त एम जाणे छे. जे:में .जेटलो प्रताप जाण्यो हतो, ने सुंदर पणुं

जाण्युं हतुं, तेटलुं ऐश्वर्य ने तेटलुं सुंदर पणुं तो मुने पण भगवाने आप्युं छे, तो पण भगवानुं ऐश्वर्य ने सुंदरपणुं ते तो अतिशे अपार देखाय छे, माटे 'हुं' जेवा अनंतभगवानना साधर्म्यपणाने पाम्या छे, तो पण भगवान जेवा कोइ थावाने समर्थ थातो नथी. आ माटे जे भगवाननो महिमा, गुण, कर्म, जन्म, सामर्थ्य, तथा सुंदरता, सुखदायकपणुं; ए आदिक जे अनंत कल्याणकारी गुण तेना पारने शेष, सारदा, ब्रह्मादिक देवता, तथा चार वेद; ए पामता नथी; अने भगवान पोते पोताना महिमाना पारने पामता नथी. माटे भगवान तो सर्व सामर्थ्ये करीने अपार छे अने ए भगवानने भजीने अनंत कोटी वैष्णव भगवान सरखा थया छे, तोपण भगवानमांथी कोइ जातनो प्रताप अणुं जेटलो पण न्युन थयो नथी. जेम मिठा जळनो समुद्र भर्यो होय तेमांथी मनुष्य, पशु, पंखी, सर्व भावे तेटलुं जळ पिये तथा पात्र भरी ले तोपण ओछुं थातुं नथी. आ माटे जे ते समुद्र तो अगाध छे, तेमज भगवाननो महिमा पण अतिशे अपार छे. माटे कोइ रीते करीने वधे घटे एवो नथी. ते सारुं जे जे भगवानना भक्त ब्रह्मस्वरूप थया छे, तोपण भगवानना दृढ दास थइने भगवाननुं भजन करे छे, एवी रीते भगवानना भ-

क्त, भगवानना साधर्म्य पणाने पामे छे; तो पण स्वामीने सेवकपणुं रहे छे. ए प्रश्ननो उत्तर छे. ॥ इति वचनामृतम् ॥६७॥२००॥

इति गढडा प्रकरण समाप्त.

संवत १८८४ ना कार्तक सुदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री वरताल मध्ये श्री लक्ष्मीनारायणना मंदिरथी उत्तरादी कोरे गोमतीजीने कांठे आंबावाडीयामां सिंहासन उपर गादी तकिया नंखावीने विराजमान हता, ने धोळो सुरवाळ, ने धोळो अंखरखो पेहेर्यो हतो, अने गुढा रंगनो रेटो कमरे बांध्यो हतो, ने माथा उपर कसुंबल फेंटो सोनेरी तारना छेडावाळो बांध्यो हतो, ने खभे कसुंबळ फेंटो जरकसी छेडानो विराजमान हतो ने कंठने विशे गुलाबना पुष्पना हार विराजमान हता ने माथा उपर गुलाबना पुष्पना तोरा विराजमान हता ने भुजाउंने विशे गुलाबना गजरा ने बाजुबंध बांध्या हता. एवी शोभाने धरता थका उत्तरादे मुखारविंदे विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देशदेशना हरीभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे वडोदरावाळा शोभाराम शास्त्रीए श्रीजीमहाराजने प्रश्न पुछयुं जे, हे महाराज मुमुक्ष होय ते क्यारे निर्विकल्प साधीने

पामे त्यारे ते गुणतीत थाय ने भगवानना एकांत्तिक भक्त थाय, त्यारे जेने निर्विकल्प समाधी
ने थाय तेनी शी गती थाय?पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे प्राणनो निरोध थाय त्यारेज नि-
र्विकल्प समाधी थाय एम नथी. निर्विकल्प समाधीनी रीततो बीजी छे ते कहीये ते सांभळो.
जे श्रीमदभागवतमां कह्युं छेजे॥ अत्रसर्गोविसर्गश्चस्थानपोशणमूतयः॥ मन्वंतरेशानुकथानिरोधो
मुक्तिराश्रय॥ १॥ए श्लोकनो एम अर्थ छेजे विश्वना सर्ग विसर्गादिक जे नव लक्षण तेणे
करीने जाण्यामां आवे एवुं आश्रय रूप जे श्रीकृष्णभगवाननुं स्वरूप तेने विशे मुमुक्षुनी अच
ळ मती थइ, जेम आ आंब्रानु वृक्ष छे ते एकवार दृढ करीने जाण्युं, पछे काम व्यापे,
क्रोधव्यापे,लोभव्यापे,तोपण कोइ रीते आंबाने विशे भ्रांत्ति न थाय जे आंबानुं वृक्ष हशे के
नही होय,तेम जेने प्रत्यक्ष श्रीकृष्णभगवानना स्वरूपनो दृढनिश्चे थयो ने तेमां कोइ जातनो कु
तर्क न थाय, तो ते पुरुषनो प्राण लिन न थया होय तोपण निर्विकल्प समाधीछे ने प्राण लि
न थयो होय तोपण निर्विकल्प समधी छ. अने जेने ए भगवानना स्वरूमां संकल्प विकल्परहेता
होय जे ब्रह्मपुरने विशे केवुं भगवाननुं स्वरूप हशे,अने श्वेतद्वीपने वैकुंठनेविशे केवुं भगवाननुं
स्वरूप हशे अने ते स्वरूपनुं क्यारे दर्शन थाशे? एवी जातना संकल्प विकल्प कर्या करे पण

प्रगटभगवानमळ्यातेनेज सर्वनाकारणजाणीनेतेणेकरीनेजपोतानानेकृतार्थनमानेअ्रने एवाने जोदैव इच्छाएकरीने समाधी थाय तो पण संकल्प विकल्प मटे नहि.अ्रने समाधीमां जे जे देखाय ते थी नवुं नवुं जोवाने इच्छे पण मनना विकल्प मटे नहि. एवो होय तेने समाधिछे तो पण स-विकल्प छे, ने समाधी न होय तोय पण सविकल्प छे, माटे एवो होय ते गुणातित एकांतिक भक्त न केहेवाय. अ्रने जेने भगवानना स्वरूपनो दृढ निश्चय होय ने तेने समाधि छे,अ्रथवा न-थी तो पण तेने सदा निर्विकल्प समाधि छे. पछे दिनानाथ भटे प्रश्न पुछयुं जे मनना संकल्प विकल्प टाळवानो उपाय कहे, अ्रने जो मनने न जिती शके तो तेनी शी गति थाय? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे ज्यारे कौरव ने पांडवने जुद्ध करवानो प्रारंभ थयो त्यारे कौरवे ने पांडवे विचार कर्यो जे आ्रपणे एवे ठेकाणे जुद्ध करीए जे ते जुद्धमां जे कोइ मरे तो पण तेना जिवनुं रूडुं थाय एवुं विचारीने कुरूक्षेत्रने विषे युद्ध कर्युं, पछे जिताता तेनुं पण सारुं थयुं ने ए संग्राममां मराणा, तेने पण देवलोकनी प्राप्ति थइ ने राज्य थकी पण अ्रधिक सुख ने पाम्या. तेम जे मन साथे लढाइ आ्रदरे, अ्रने जो मनने जिते तो निर्विकल्प स्थितिने पामे, ने भगवाननो एकांतिक भक्त थाय अ्रने जो मन आ्रगळ हारे तो पण जोग भ्रष्ट थाय. ते। पछे

एक जन्मे,अथवा बे जन्मे,अथवा घणे जन्मे पण अंते जातो एकांतिक भक्त थाय, पण एने दाखडो कर्यो ते छुटी न पडे, माटे बुद्धिमान होय तेने तो पोताना कल्याणने अर्थे मन साथे जरूर वैर वांधवुं. पछे ए मनने जितशे तो पण सारुं छे, ने ए मनथी हारशे तो पण जोग भ्रष्ट थाशे तेमां अंते जातां सारुं छे, ते माटे जे कल्यणानें इच्छे तेने तो मन साथे जरूर वैर वांधवुं.॥ इतिवचनामृतम्॥२॥२०१

संवत १८८४ ना कार्तिक सुदि १३ तेरशने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री वरताल्य मध्ये श्री लक्ष्मी नारायणनामंदिरथी उत्तरादि दिशेगोमतिजीने काठे आंबाना वृक्षनी हेठे ढोलिया उपर विराजमान हता, अने पीळा तासतानो सुरवाळ पहेर्यो हतो. तथा राता किनखावनी डगली पहेरी हती तथा मस्तक उपर जरकशी छेडानी कसुंबल पाघ बांधी हती, तथा जर्कसी छेडानुं कसुंबल शेलुं स्वभे नाख्युं हतुं अने पाघने उपर चंपाना पुष्पना हारविराजमान हता ने कंठनेविषेधोळापुष्पनाहारविराजमानहता अनेपोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइनेबेठीहती.पछे श्रीजीमहाराज बोल्याजे कांइकप्रश्नउत्तरकरो.पछे गामबुवानापटेलकहानदासजीए हाथ जोडीनेपुछयुंजे हे महाराजभग

वान शो प्रकारे राजी थाय छे? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे, जो भगवाननो द्रोह न करीए तो भगवान राजी थाय त्यारे कहेशो जे द्रोह ते शुं? तो जे आ सर्व जगतना कर्त्ता हर्त्ता भगवान छे तेने कर्त्ता हर्त्ता न समजीए, ने विश्वना कर्त्ता हर्त्ता काळने जाणीए, अथवा मायाने जाणीए, अथवा कर्मने जाणीए, अथवा स्वभावने जाणीये, ए ते भगवाननो द्रोह छे. केम जे भगवान सर्वना कर्त्ता हर्त्ता छे. तेनो त्याग करीनें केवळ काळ, कर्म, स्वभाव ने माया तेने जगतना कर्ता हर्ता कहेछे, माटे ए भगवाननो अति द्रोह छे. त्यां द्रष्टांत. जेम तमे गामना पटलछो ते जे तमारी गाममां पटलाइ न रहेवा दे ते तमारो द्रोही कहेवाय. अने वळी जेम चक्रवर्त्ति राजा होय तेनो हुकम खोटो करीने जे राजा न होय तेनो हुकम चलावे तो ते पुरुष राजानो द्रोही कहेवाय. अने वळी जेम कोइक एवा कागळ लखी लखीने मोकले जे अमारो राजा छे. ते नाक, कान, विनानोछे. अथवा हाथ, पग, विनानो छे. एवी रीते ए राजानुं रूप संपूर्ण होय तेने खंडित करीने वर्णवे ते राजनो द्रोही कहेवाय. तेम भगवानछे ते कर चरणादिक समग्र अंगे करीने संपूर्ण छे, अने लेशमात्र पण कोइ अंगे विकल नथी, अने सदा मूर्त्तिमानज छे. तेने अकर्त्ता कहेवा, तथा अरूप कहेवा, ने भगवान विना बिजा जे का-

ळादिक तेने कर्त्ता कहेवा एज भगवाननो द्रोहछे. एवो जातनो जे भगवाननो द्रोह, तेने जे न करे तेणे संपूर्ण भगवाननी पुजा करी अने ते विना तो चंदन पुष्पादिके करीने पुजेछे, तोपण भगवाननो द्रोहीछे, माटे भगवानने जगतना कर्ता जाणे अने मूर्त्तिमान जाणे ते उपरज भगवान राजी थाय छे. अने वेदमां तो भगवाननुं स्वरूप बहु रीते वर्णवीने नारायणे पोते पोताने मुखे कह्युंछे, पण ते कोइना समजवामां आव्युं नहि. त्यारे सांख्य शास्त्रे करीने चोवीस तत्व कह्यां ने पचविशमुं भगवाननुं स्वरूप कह्युं. ते सांख्यना आचार्य जे कपील मुनी तेणे एम विचार्यु जे स्थुल, सुक्ष्म, ने कारण, तेने विषे जिव एकपणे करीने वर्ते छे. अने एथी न्यारो जीव रही सकतो नथी. ने इश्वर छे ते पण पोतानी उपाधी जे विराट सूत्रात्माने अव्याकृत तेने विषे एकपणे वर्ते छे, पण ते विना रही शकतो नथी. माटे सांख्य शास्त्रे जिवने ने इश्वरने चोवीस तत्व भेळाज गण्या छे अने पचवीशमा परमात्माने कह्याछे. अने जोग शास्त्रना आचार्य जे हिरण्यगर्भ ऋषी तेणे चोवीस तत्व कहीने पचीसमो जिवने कह्यो छे, तेम पचविसमो इश्वरने कह्यो छे. अने परमात्माने छवीशमा कह्या छे एवी रीते सांख्य शास्त्रने जोग शास्त्र तेणे भगवाननुं स्वरूप कह्युं तोपण साक्षातका

र भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान न थयुं. अनुमान प्रमाणे तो थयुं जे सांख्यनेमते चोविस तत्वथी पर छे ते वस्तु सत्य छे अने जोगने मते चोविस तत्वथी पर जिव इश्वर छे ने तेथी पर परमात्मा छे ते सत्य छे. एवी रीते परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञेय शास्त्रवते अनुमान प्रमाणे करीने ज्ञान थयुं पण ते भगवान काळा छे के पीळा छे, के लांबा छे,के टुंका छे के साकार छे, के निराकार छे, एवुं कांइ ज्ञान न थयुं.पछे पोते वासुदेव भगवाने पंच रात्र नामे तंत्र कर्यु तेने विषे एम प्रतिपादन कर्युं जे श्रीकृष्ण पुरूषोत्तम भगवान छे ते पोताना अक्षरधामने विषे सदा दिव्य साकार मुर्त्तिमान रह्या छे अने तेज भगवान जे ते श्वेतद्विपवासी जे अनंत निरंनमुक्त तेमनेपांच वखत पोतानुं दर्शन आपे छे तथा वैकुंठ लोकने विषे तेज भगवान चतुर्भुज मूर्ति थकालक्ष्मीजीए सहित छे ने ते शंख, चक्र,गदा, पद्मने धरी रह्या छे, तथा विष्वकसेनादीक जे पार्षद तेमणे सेव्याछे, अने एज भगवान पुजवा जोग भजवा जोग ने पामवा जोगछे,अने तेज भगवान राम कृष्णादिक अवतार धारण करे छे अने वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरूद्ध ए चतुर्व्यूह रूपे वर्त्त छे, एवी रीते साकार मूर्त्तिनुं प्रतिपादन कर्युं छे. पछे तेज पंच रात्र तंत्रने नारदजीए फरीने कर्युं त्यारे ते नारद पंच रात्र कहेवांणुं तेने विषे एवी रीते भगवानना स्वरूपनुं

प्रतिपादन कर्युं ने कोइ रीते संशे रह्यो नाहि. अने तेज रीते शिवजीए पाशुपत शास्त्र कर्युं.
तेने विशे पण अष्टभुज-चतुर्भुज, रूप करीने श्रीनारायणना स्वरूपनुंज वर्णन कर्युंछे ते माटे
श्रीमदभागवतमां कह्युछे जे ॥नारायणपरावेदादेवानारायणांगजा॥नारायणपरालोकानारायणपरा
मखाः॥नारायणपरोयोगानारायणपरंतपः॥नारयणपरंज्ञानंनारायणपरागतिः॥ तथा॥वासूदेव
परावेदाववासूदेवपरामखाः॥ वासुदेवपरायोगावसूदेवपराक्रियाः॥वासुदेवपरंज्ञानंवासूदेवपरंतपः॥
वासुदेवपरोधर्मोवासूदेवपरागतिः॥ एवीरीते ए पांच शास्त्रेकरीने श्रीकृष्णनारायण वासुदेवना स्व
रूपनुं जे प्रतिपादन कर्युं छे, अने ए पांच शास्त्र करीने जे भगवानना स्वरूने समजे तेज पुरो
ज्ञानी कहेवाय, जेम दुध छे तेने नेत्रे जुवे त्यारे धोळुं देखाय अने नाके सुंघे त्यारे सुघंधवान
जणाय अने आंगळीए करीने अडे त्यारे टाढुंहुंनुं जणाय अने जिव्हाए करीने
चाखे त्यारे स्वादुं जणाय.पण एक इंद्रिये करीने दुधना स्वरूपनुं संपूर्ण ज्ञान न थाय
अने सर्वे इंद्रिये करीने तपासी जुवे त्यारे संपूर्ण ज्ञान थाय छे. तेम वेदादिक पांच
शास्त्रे करीने भगवानना स्वरूपने समजे त्यारे संपूर्ण भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान थाय छे, ने ए
म जाणवुं तेने संपूर्ण ज्ञान कहिये. अने भगवान पण एम समजेजे राजी थायछे पण परमेश्व

रने राजी कर्यानो बिजो उपाय नथी. माटे एवी रीते समजे तो पूरो ज्ञानी कहेवाय, अने भगवान पण ते उपरज अतिशे राजी थाय छे, ॥इतिवचनामृतम्॥२॥२०२

संवत १८८४ना कार्त्तिक वदी ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजीमहाराजश्री वरताल मध्ये श्री लक्ष्मीनारायणना मंदीरमां सिंहासन उपर विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने कंठने विषे गुलाबना पुष्पना हार धारण करया हता अने मस्तकने विषे पाघमां तोरा विरामान हता; अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी मंडळसमस्त तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराने बेठी हती, पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, आपणा उद्धव संप्रदायने विषे ज्ञान, वैराग्य, धर्म ने भगवाननी भक्ति ए चार वानां जेमां होय, ते एकांतिक भक्त कहेवाय, अने आपणा सत्संगमां महोटो करवा जोग पण तेज छे ने ए चार संपूर्ण न होय ने एकज मूख्यपणे करीने होय तोपण ए त्रण जे बाकी रह्यां ते ते एकना पेटामां आवीजाय एवुं ए कीयुं ए च्यारेमां श्रेष्ठ छे? त्यारे गोपाळनंद स्वामीए तथा मुकानंद स्वामीए कह्युं जे हे महाराज एवो तो एक धर्म छे ते धर्म होयतो त्रणे वानां ते पुरुषमां आवे. त्यारे श्रीजीमहाराजे बोल्या जे धर्मतो केटलाक विमुख माणस होय तेमां पण होय माटे

तेने शुं सत्संगमां मोटो करवुं?पछे ए वात सांभळीने कोइथी उत्तर देवाणो नहि,पछेश्रीजीमहाराज बोल्या जे जो महात्मे सहित भगवाननी भक्ति होय ने आत्मनिष्ठा ने धर्म ने, वैराग्य, ए सामान्यपणे होय तो पण कोइ दिवस ए धर्ममांथी पडे नहि. केमजे जे भगवाननुं महात्म जाणतो होय ते तो एम विचारे जे भगवाननी आज्ञाने विषे ब्रह्मादिक समग्र देव रह्या छे; ते भगवाननी आज्ञा हुंथी केम लोपाय, एम जाणीने भगवानना नियममां निरंतर रहे. त्यारे शुकमुनीए पुछयुं जे ज्यारे एक महात्मे सहित भक्तिए करीने संपूर्ण थाय त्यारे एक भक्तिज केम न कहीने चार वानां शा सारुं कह्यां, पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे अतिशे महात्मे सहित भक्ति भगवानने विषे होय तो एक भक्तिने विषे ए त्रण आवी जाय. अने सामान्यभक्ति होय,तो एकमां त्रण न आवे माटे चारवानांए सहित जे भक्त ते जेमां होय; ते एकांतिक भक्त कहेवाय एम कह्युं छे. अने एवी असाधारण भक्ति तो पृथुराजाने हती-ते भगवाने वर देवाने कह्युं त्यारे भगवाननी कथा सांभळ्या सारु दश हजार कान माग्या पण बिजुं कांइ न माग्युं.अने जे गोपियुंने रास क्रिडामां न जावा दिधीयुं ते देह मुकीनेश्रीकृष्ण पासे गइयुं.एवी असाधारण भक्ति होय तो ज्ञानादिक त्रणे एक भक्तिमां आवी जाय. त्यारे ब्रह्मानंद स्वामीए पुछयुं जे;

एवी असाधारण भक्ति शे उपाए करीने आवे ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, मोटा पुरुष नी सेवा थकी आवे छे. ते मोटा पुरुष पण चार प्रकारना छे. एकतो दिवा जेवा, ने बिज मशाल जेवा, ने त्रिजा विजळी जेवा, ने चोथा वडवानल अग्नि जेवा, तेमां दिवा जेवा होय ते तो विषय रूपि वायुए करीने होलाइ जाय, ने मशाल जेवा होय ते पण तेथी अधिक विषय रूपी वायु लागे तो तेणे करीने होलाइ जाय, ने विजळी जेवा होय ते तो माया रूपी वरसात ने पाणीए करीने पण न होलाय. अने वडवानल अग्नि जेवा होय ते तो जेम वडवानल समुद्रमां रहे छे पण समुद्रना जळनो होलाव्यो होलातो नथी. अने समुद्रना जळने पीने मूळे द्वारे काढी नाखे छे ते पाणी मिठुं थाय छे, तेने मेघ लावीने संसारमां वृष्टि करे छे, तेणे करीने नाना प्रकारना रस थाय छे. तेम एवा जे मोटा पुरुष छे ते समुद्रना जळ जेवा खारा जिव होय तेने पण मीठा करी नाखे छे, एवी रीते ए चार प्रकारना जे मोटा पुरुष कह्या तेमां जे विजळीना अग्नि जेवा तथा समुद्रना अग्नि जेवा मोटा पुरुष छे, तेमनी सेवा जो पोताना धर्ममां रहिने मन, कर्म, वचने करे तो ते जिवना हृदामां महात्मे सहित भक्ति आवे छे. ने विजळीना अग्नि जेवा तो साधन दशावाळा भगवान

ना एकांतिक साधु छे, अने वडवानल अग्नि जेवा तो सिद्ध दशावाळा भगवानना पर्म एकांतिक साधु छे एम जाणवुं॥ इति वचनामृतम्॥ ३॥ २०३॥

संवत १८८४ ना मागशर सुदि १० दशमीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजीमाहाराज श्री वडताल मध्ये श्री लक्ष्मी नारायणना मंदिरमां विराजमान हता अने अंगने विषे सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरी भक्तनी सभा भराइने बेठी हाती. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे, प्रश्न उत्तर करो. त्यारे मुक्तानंद स्वामीए पुछयुं जे भक्ति मार्गने विषे प्रवर्त्यो एवो जे भगवाननो भक्त तेने एवुं एक साधन ते कियुं छे जे, एक साधनने कर्या थकी जेटलां कल्याणने अर्थे साधन छे ते सर्वे एक साधनने विषे आवी जाय छे? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे त्रिस लक्षणे जुक एवा संत तेनो जे संग ते,मन, कर्म, वचने करीने राखे तो जेटलां कल्याणने अर्थे साधन छे तटलां सर्वे ते संतना संगमां आवी जाय छे. एम उत्तर करीने पछे श्रीजी महाराज प्रश्न पुछता हवा जे, भगवाननो एकांतिक भक्त एवो जे जोगी होय ते सांख्य शास्त्रने योग्य शास्त्र ए बेयनो मत एक वासुदेव नारायणपर छे एम जाणे. माटे ते जोगी किये प्र-

कारे भगवानना स्वरूपमां वृति राखे अने केम पोताना मनने चलावे, ने ते मन भेळी केम मू-
र्त्ति राखे. अने ते केवी रीते अंतरमां वृति राखे. ने केवी रीते बारणे वृति राखे, अने निद्रा
रूपी लय, ने संकल्प विकल्परूपी विक्षेप, ते थकी केइ जोगनी कळाये करीने जुदो पडे एवो
त्तर करो? पछे मुक्तानंद स्वामीए, तथा गोपाळानंद स्वामीए जेवुं आवडयुं तेवुं कह्युं पण को
इ थकी उत्तर थयो नहि? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे, जेम जळनो फुवारो होय तेने जो-
गे करीने घुमरी खाइने जळ उंचुं उछळे छे तेम अंतःकरण रुपियो जे फुवारो तेने विषे जिव
नी वृति छे ते घुमरी खाइनें पंच इंद्रिरूप द्वारे उछळे छे. तेने जे जोगी होय ते बे प्रकारे
करीने, एक वृतिये करीने तो पोताना हृदयने विषे साक्षी रूपे रह्या, एवा जे श्री वासुदेव भ
गवान तेनुं चिंतवन करे, अने बिजी वृति छे तेने तो दृष्टीद्वारे करीने बहार राखे. अने ते वृ-
त्तिये करीने बाहार भगवाननुं चिंतवन करे ते पण नखशिखा पर्यंत समग्र मूर्त्तिनुंज भेळुंज
चिंतवन करे पण एक एक अंगनुं जूदुं जूदुं चिंतवन न करे. जेम मोटुं मंदिर होय तेने एक
सामटुं भेळुंज जुवे. तथा जेम मोटो पर्वत होय तेने एक सामटो भेळो ने भेळोज जुवे. एवी री
ते भगवानना स्वरूपने जुवे पण एकेकु अंग न जुवे. अने ते मूर्त्तिने ज्यारे पोतानी द्रष्टी आगळ

छेटे धारीने ते मूर्त्तिने पडखे विशुं कांइक पदार्थ देखाय तो ते मूर्त्ति छेटे धारीछे तेने ढुंक-
डी लावीने पोतानी नाशीकाना अग्रनी उपर ए मूर्त्तिने राखे एम करतां पण आसपास कांइ
क पदार्थ जणाय तो पोतानी भ्रकुटीना मध्यने विषे मूर्त्तिने धारे एम करतां जो आळस के
निद्रा जेवुं जणाय तो वळी मूर्त्तिने द्रष्टि आगळ छेटे धारे. पछे जेम छोकरां पतंगने उडाडे
छे,तेवी रीते मूर्त्तिरूपी पतंगने पोतानी वृतिरूपी जे दोरी तेणेकरीनेमूर्त्तिनेउंचीचडावेअनेवळीपा
छी हेठी लावे अने अडखेपडखे डोलावेएवी रीते जोग कळाये करीने ज्यारे सचेतथाय त्यारे
वळिपाछी मूर्त्तिने नासीकाने अग्रे धारे ने त्यांथी भ्रगुटीमां लावीने हृदाने विषे मूर्त्तिने उतारे.
अने अंतरने विषे साक्षिरूप जे मूर्त्ति अने बहारनी मूर्त्ति ए बेयने एक करे पछे अंतःकर्णनी
बे प्रकारे वृत्ति होय ते एक थइ जाय छे. एम करतां जो आळस के निद्रा जेवुं जणाय तो
वळी बे प्रकारे वृत्तिने करीने मूर्त्तिने बाहार लावे एवी रीतेज श्रोत्र, त्वक, रसना, ने घ्राण,ते
द्वारे पण जोगकळा साधे. अने तेमज मन, बुद्धि चित्त, ने अहंकार, ते द्वारे पण भगवाननी
मूर्त्तिने धारे. अने इंद्रियुं ने अंतःकर्ण ए सर्वने सांख्य विचारे करीने जुदां करीने एकला
चैतन्यने विषेज भगवाननी मूर्त्तिने धारे. अने ते भगवाननी मूर्त्तिने अंतरमां के बहार धारी हो

य अने ते समे कोइक व्यवहार संबंधी विक्षेप आडो आवे, तो ते विक्षेपनुं पण मूर्त्तिनेधारवा पणे करीनेज समाधान करे पण विक्षेपने विषे पण पोतानी जोग कळानो त्याग न करे ॥एवी रीतनी जोगकळाए जुक्त ए जोगी वर्ते छे॥ इति वचनामृतम् ॥४ ॥ २०४॥

संवत १८८४ ना मागशर वदि ४ चतुर्थीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री वरताल मध्ये श्री लक्ष्मी नारायणना मंदिरथी उत्तरदिशे गामतीजाने कांठे आंबाना वृक्षनी हेठे वेदी उपर ढोलियाने विषे उत्तराद मुखारविंदे विराजमान हता ने अति सुक्ष्म एवां श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठने विषे गुलाबना पुष्पना हार घणाक धारण कर्या हता, अने श्रवण उपर मोटा बे गुलाबना पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता अने पाघने विषे गुलाबना पुष्पना तोरा विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी मंडळ समग्र तथा देशदेशनाहरीभक्तनीसभाभराइनेबेठीहती.पछेश्रीजीमहाराज बोल्याजे वांकडां वांकडांप्रश्न करोजेजेणकरीनेसौनुंआळसउडीजायएमकहीनेपोतेआथमणीकोरेउसीकुंकरीने पडखा भरथया पछे मुक्तानंद स्वामीए प्रश्न पुछ्युं जे ॥ दैवीह्येषागुणमयीमममायादुरत्ययां ॥ मामेवयेप्रपद्यंते मायामेतांतरंतिते ॥ ए श्लोकमां श्रीकृष्ण भगवाने एम कह्युं जे जे पुरुष मुने पामे ते दुखे क-

रीने पण न तराय एवी जे मारी गुणमयीमाया तेने तरे छे, त्यारे जेने भगवाननी प्राप्ति थइ छे तेने भगवाननुं भजन करता थकां कांइक अंतरमां संकल्प विकल्पनो विक्षेप थइ आवे छे, तेने माया विना बिजुं कोण करतुं हशे ए प्रश्न छे?पछेश्रीजीमहाराज पोढया हता, ते बेठा थइने आति करूणाए भिन्ना कथा वोलता हवा के मायाना त्रण गुण छे, तेमां तमोगुणनातो पंच भुतने पंचमात्रा छे अने रजो गुणनादश इंद्रियोने बुद्धिप्राणछे अने सत्वगुणना मन ने इंद्रियो अंतःकर्णना देवताछे ते जेजे भक्त थइ गया छे ते सर्वेमां त्रणगुणनां कारज रूप जे भुत इंद्रियो अंतःकरण ने देवता ते सर्वे हतां माटे एनो एम उत्तर छे जे परमेश्वरने यथार्थ पणे करीने परमेश्वर जाण्या जे ए भगवानना स्वरूपने विशे कोइ प्रकारे माइक भाव नथी अने भगवान तो मायाने मायानुं कार्य जे त्रण गुण तेथकी परछे, एवो जेने भगवाननो दृढ निश्चे थयो ते भगवाननी मायाने तरी चुक्यो छे अने पोतामांतो मायाना गुणनुं कार्य जे भुत इंद्रियो अंतःकरण ने देवता ते पोतपोतानी क्रियाने विशे प्रवर्त्तेछे तोपण एमायाने तर्यो कहेवाय केमजे ए मायानुं कारज पोताने विशेतो होय पण पोताने भजन करवा जोग एवा जे प्रगट प्रमाण श्रीवासुदेवभगवान तेनेतो ए मायाना गुणथी पर समजे छे माटे एने पण माया

थी पेरज जाणनो अने ब्रह्मादिक देवने वशिष्ट, पराशर, विश्वामित्रादिक ऋषि ए सर्वेमां गुण नो प्रवेश जणाणो छे ते शास्त्रमां पण लख्युंछे, माटे ते शुं मुक्त न कहेवाय ने मायाने तर्या न कहेवाय? सर्वे मुक्त छे, ते सर्वे मायाने तर्या छे. अने एम जो उत्तर न करीए तो ए प्रश्न नुं समधान थाय नही एज उत्तर छे. पछे नीत्यानंद स्वामीये पुछयुं जे हे महाराज भगवानने आशरे जावुंते आशरानुं शुं रूप छे? पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे भगवाने गीतामां कह्युं छे जे सर्वधर्मान्परित्यज्यमामेकंशरणंव्रज॥ अहंत्वांसर्वपापेभ्योमोक्षयिष्यामीमासुच॥ ए श्लोकमां एम कह्युं छे जे बिना सर्वे धर्मनो परित्याग करीने मारे एकनेज शरणे आव्य तो हुं तुने सर्वे पाप थकी मुकावीश, तुं शोक मां कर. अने एवो जे भगवानमो दृढ आश्रय ते जेने होय तेने महा प्रळय जेवुं दुःख आवी पडे तो पण ते दुःख थकी रक्षानो करनारो भगवान विना बिजाने न जाणे. अने जे जे पोताने सुख जोइतुं होय ते पण भगवान थकीज इच्छे छे. पण प्रभु विना बिजाने सुख दायक न जाणे ने प्रभुनी जेम मरजी होय ते प्रमाणेज वर्ते एवो जे होय ते प्रभुनो शरणांगती जीव कहेवाय, ने तेज भगवाननो अनन्य भक्त कहेवाय, पछे नाजे भक्ते पुछयुं जे जेने परिपूर्ण भगवाननो आशरो न होय ने बोल्यामां तो नकी हरीभक्त

च. होय नें तेना जेवुंन निश्चयनुं बळ देखाडतो होय ते शी रीतें करीने कल्याणमां आवे? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे भगवानना भक्तनो सरस, नरस निश्चे होय ते तो भेळा रह्या थकी अने भेळो व्यवहार कर्या थकी जेवो होय तेवो कळाइ आवे छे. पछे जेने थोडो निश्चे होय ते कचवाइने सत्संगना भिडा मांथी माग दैने एकांत पकडीने जेवुं थाय तेवुं भजन करे पण हरी भक्तनी भिसणमां रहेवाय नहि, माटे भगवाननो आशरो उत्तम मध्यम ने कनीष्ट ए त्रण मकारनोछे. अने तेणे करीने भक्त पण त्रण प्रकारनाछे. पछे वळी नित्यानंद स्वामीये प्रश्न पुछयुं जे, ए कसर मटीने कनीष्ट होय ते आ जन्मने विषेज उत्तम भक्त थाय के न थाय? पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे जे भगवाननी मानसी पुजा करे तेमज जे उत्तम हरिभक्त होय तेनी पण भगवाननी प्रसादिये करीने भगवान भेळी मानसी पुजा करे, अने जेम भगवानने अर्थे थाळ करे तेम उत्तम जे भगवानना भक्त तेने अर्थे पण थाळ करीने तेने जमाडे अने जेम भगवानने अर्थे पांच रूपीयानुं खरच करे तेमज ते मोटा संतने अर्थे पण खरचकरे एवी रीते भगवान ने उत्तम लक्षण वाळाजे संत तेनी अती प्रेमे करीने सरखी सेवा करे तो ते कनिष्ट भक्त होयने ते बेजन्मे तथा चार जन्मे तथा दस जन्मे के सो जन्मे क

रीने उत्तम भक्त जेवो थानारो होय ते आने आ जन्मे करीने उत्तम भक्त थाय छे एवुं भगवान ने ते भगवानना भक्त तेनी सरखी शेवा कर्यानुं फळछे ॥इतिवचनामृतम्॥५॥२०५

संवत १८८४ ना मागसर वदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री वरताल्य मध्ये श्री लक्ष्मीनारायणना मंदिर आगळ मंच उपर विराजमान हता. ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठने विषे पुष्पनाहार धारण कर्यां हता ने पावने विषे तोरा लटकता हता. ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्ततनी सभा भराइने बेठी हती. पछे चिमनरावजीए प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज जिव ज्यारे प्रथम प्रलयकाळे कारण शरीरे जुक्त थका मायाने विषे लिन हता पछे सृष्टि समयने विषे ए जीवने स्थुळ सुक्ष्म देहनी प्राप्ति थै तथा देव,मनुष्य,पशु,पक्षि, आदिक रुप जेविचित्र पणुं थयुं ते कर्मे करीने थयुं अथवा भगवाननी इच्छाए करीने थयुं अने जो कर्मकरीने थयुं एम कहीए तो जैन मतनी सत्यता थाय अने जो भगवाननी इच्छाये करीने थयुं एम कहीए तो भगवानने विषे विशम पणुं ने निर्दय पणुं आवे माटे जेवी रीते होय तेवी रीते कृपा करीने कहो? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे ए प्रश्न तमने पुछतां आवडयुं नहि,

केमं जे कारण शरीर छे तेने विषे स्थुल, सुक्ष्म ए जे बे देह, ते बिज वृक्ष न्याये करीने र ह्यां छे, माटे एने कारण शरीर कहे छे, अने ते जे कारण शरीर छे, ते अविद्यात्मक छे, ने अनादी छे, ने संचीत कर्मे जुक्त छे, अने जेम बिजने, ने फोतराने नित्य संबंध छे, ने भुमीने ने गंधने जेम नित्य संबंध छे तेम जिवने ने कारण-शरीरने नित्य संबंध छे, अने जेम पृथ्वीने विषे बिज रह्यां छे, ते वर्षा काळे बळना जोगने पामीने उगी निसरे छे. तेम मायने विषे कारण शरीरे जुक्त थका रह्या एवा जे जिव, ते उत्पतिकाळने विषे फळ प्रदाता एवा जे परमेश्वर तेनी दृष्टिने पामीने पोतापोताना कर्म अनुसारे नाना प्रकारना देहने पामे छे. अने नास्तिक एवा जे जैन छे ते तो केवळ कर्मनेज कर्त्ता कहे छे. पण परमेश्वरने कर्म फळदाता नथी कहेता ते नास्तिकनो मत खोटो छे.माटे एकलुं काळनुंज बळ कोइ कहे ते पण प्रमाण नहि, ने एकलुं कर्मनुं बळ कोइ कहे, ते पण प्रमाण नहि, ने एकलुं परमेश्वरनी इच्छानुं बळ कोइ कहे ते पण प्रमाण नहि. एतो जे समे जेनुं प्रधानपणुं होय ते समे शास्त्रमां तेनुंज प्रधान पणुं कह्युं होय पण सर्व ठेकाणे एनुंए लेवुं नहि. केमे जे ज्यारे प्रथम आ विश्व रच्युं त्यारे प्रथमना जे सतयुग तेने विषे सर्वे मनुष्यनो संकल्प सत्य थाता अने सर्वे ब्राह्मणज हता. अने

मनमां संकल्प मात्रे करीने पुत्रनी उत्पत्ति थाती अने सौने घेर कल्प वृक्ष हतां अने जेटलः
नुष्य हतां ते सर्वे परमेश्वरनुंज भजन करतां अने ज्यारे त्रेतायुग आव्यो,त्यारे मनुष्यनासं
सत्य रह्यां नही. ज्यारे कल्प वृक्ष हेठे जाय त्यारे सत्य संकल्प थाय अने स्त्रीनो स्पर्श
त्यारे पुत्रनी उत्पत्ति थाय, अने ज्यारे द्वापर युग आव्यो तारे स्त्रीनो अंग संग करे तारे
त्रनी उत्पत्ति थाय.एवी रीते जे सतयुगनी त्रेतायुगनी रीत ते सर्वे सतयुग त्रेतायुगमां न हं
एतो प्रथम सत्ययुगने प्रथम त्रेतायुग हता तेमां हती. एवी रीते ज्यारे शूभ काळ बळवान
प्रवर्ते त्यारे जीवनां अशूभ कर्मना सामर्थ्यने न्युन करी नांखेछे. अनेज्यारे अतिशे दूर्भक्ष
आवे त्यारे सर्वे प्रजाने दुःख आवे अथवा भारे लडाइ थाय तारे लक्षावधी माणस एक
ळे मराइ जायछे त्यारे शुं बधायनुं एक भेळे शूभ कर्म खुटी गयुं.एतो अशूभ काळनीज
तिशे सामर्थीछे तेणे जीवना शूभ कर्मना बळने हठावी दिधुं माटे ज्यारे बळवान काळनो
प्रवर्ते त्यारे कर्मनोमेळरहे नही.कर्ममांसुखलख्युं होय ते दुःखथइजाय ने कर्ममां जीवितुंल
होय ते काळे करीने मरीजाय, एवी रीते ज्यारे बळवान काळनो वेग होय त्यारे काळे
रीनेज सर्व थाय छे, एम शास्त्रमां लख्युं होय.अने ज्यारे घणाक मनुष्य भगवानना एकां

भक्त थाय छे, त्यारे कळीयुगने विषे पण सत्युग थाय छे. ए ठेकाणे एकांतिक भक्तनां जे भगवाननी भक्ति संबंधि शूभ कर्म तेनुंज जोर शास्त्रमां कह्युं होय पण काळनुं जोर कह्युं न होय ते वार्तानें जाण्या विना नास्तिक मतवाळा छे, ते केवळ कर्मनेज सर्वे कर्ता कहे छे, पण एम नथी जाणता जे एतो भगवानना एकांतिक जे भक्त तेना कर्मनुं सामर्थ्य कह्युं छे, पण विमुख जिवना कर्मनुं सामर्थ्य कह्युं नथी. अने ज्यारे भगवान एवो संकल्प धारीने प्रगट थाय छे जे आ देहे करीने तो पात्र कुपात्र जे जे जिवने मारी मूर्त्तिनो जोग थाय ते सर्वनुं कल्याण करवुं छे त्यारे काळनुं ने कर्मनुं कांइ सामर्थ्य रहे नहि. त्यारे तो एकलुं परमेश्वरनुं सामर्थ्य रहे छे, ते ज्यारे भगवाने कृष्णावतार धार्यो त्यारे महापापणी जे पुतना तेणे भगवानने झेर पायुं तेने श्री कृष्ण भगवाने पोतानी माता जे जसोदाजी ते बरोबर गति आपी. अने बिजा पण महापापी दइत हता ते भगवानने मारवा आव्या हता, तेने पण श्री कृष्ण भगवान परमपद आपता हवा ने बिजा पण जे जे भावे करीने श्री कृष्ण भगवानना संबंधने पाम्या ते सर्वनुं कल्याण कर्युं. एमाटे ए ठेकाणे तो परमेश्वरनुं बळ अतिशे कह्युं छे पण काळनुं के कर्मनुं कांइ सामर्थ्य नथी. माटे ते ठेकाणे तेवुं जेवुं प्रकरण ते ठेकाणे तेवुं जाणवुं॥ इतिवचनामृतम्॥ ६॥ २०६॥

मध्ये श्री लक्ष्मीनारायणना मंदीरनी आगळ मंच उपर विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ पर्महंस तथा देशदेशना हरीभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. ने हरिभक्त परस्पर भगवद् वार्ता करता हता तेमां एवो प्रसंग निसर्यो जे दैवी ने आसुरी ए बे प्रकारना जिव छे तेमां दैवी जिव होय ते तो भगवानना भक्तज थाय ने आसुरी होय ते तो भगवानथी विमुखज रहे त्यारे चिमनरावजीए श्रीजी महाराजने प्रश्न पुछयुं जे हे महाराज आसुरी जिव होय ते कोइ प्रकारे दैवी थाय के न थाय? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे आसुरी जिवतो दैवी न थाय, एनुं तो त्रिजन आसुर छे. अने जो कोइक रीते करीने आसुरी जिव सत्संगमां आवी पड्यो तो पण असुरभावतोटळेनाहि पछे सत्संगमां रह्यो थको ज्यारे शरीरने मुके त्यारे ब्रह्मने विषे लिनथाय ने वळीपाछोनिकळेएम अनंतवार ब्रह्मांलिनथायनेपाछोनिसरे त्यारेएनोअसुरभाव.छेतेनाश पामेपणएविनातोअसुरभावनाशपामेनहि, पछेशोभाराम शास्त्रीये पुछयुं जे हेमहाराज भगवाननुंअनवयपणुं केमछे,नेव्यतिरेकपणुं केमछे? पछे श्रीजीमहाराज बोल्याय जे अन्व व्यतिरेकनी वार्त्ता तो एम छे जे भगवान अर्थाक मायाने

विषे अन्य थया छे ने अधीक पोताना धामने विषे व्यतिरेक रह्या छे एम नथी. एतो भगवाननुं स्वरूपज एवुं छे जे मायामां अन्वय थका पण व्यतिरेक छे पण भगवानने एम बिक नथी जे रखे हुं मायामां जाउने अशुद्ध थइ जाउ. भगवान तो मायाने विषे आव्या त्यारे माया पण अक्षर धाम रूप थइ जाय छे अने चोविश तत्वने विषे आवे तो चोविशे तत्व पण ब्रह्मरूप थइ जाय छे ते श्रीमद्भागवतमां कह्युं छे जे. ॥धाम्नास्वेनसदानिरस्त कुहकंसत्यंपरंधीमहि॥ इत्यादिक अनंत वचने करीने भगवानना स्वरूपनुं प्रतिपादनकर्युं छे. अने जेम वृक्षनुं बिज होय तेमां पण आकाश छे. पछे ए बिजमांथी वृक्ष थयुं, त्यारे ते वृक्षनांडाळ पानडां, फुल, ए सर्वने विषे आकाश अन्वय थयो पण ज्यारे वृक्षने कापे त्यारे वृक्ष कपाय ते भेळो आकाश कपाय नहि. अने वृक्षने बाळे त्यारे आकाश बळे नहि तेम भगवान पणमाया ने मायानुं कारज तेने विषे अन्वय थया थका पण आकाशनी पेठे व्यतिरेकज छे ए भगवानना स्वरूपनुं अन्वय व्यतिरेकपणुं छे ॥ इति वचनामृतम्॥ ७॥ २०७॥

संवत १८८४ ना पोस सुदि ४ चोथ्यने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजीमाहाराजश्री वडताल मध्ये श्री लक्ष्मी नारायणना मंदिरनी आगळ मंच उपर विराजमान हता. सर्वे श्वेत

वस्त्र धारण कर्या हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरीभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. अने मुनी दुकड सरोदा लइने किर्त्तन गावता हता, ते समे श्रीजी महाराजे अंतर दृष्टि करीने ध्यान मुद्राए जुक्त थइने थोडीकवारे दर्शन दिधां, ने पछे नेत्र-कमळने उघाडीने सर्वे सभा सनमुख जोइने बोल्या के हवे सर्वे सांभळो वात करीए छीए. जे आ नेत्रनी जे वृति ते अरुपा छे तोपण ते वृत्तिने आडुं कांइक स्थुल पदार्थ आवे त्यारे ते वृत्ति रोकाय छे माटे ए वृत्ति पण स्थुल छे ने पृथ्वी तत्व प्रधान छे ने ते वृत्तिने ज्यारे परमेश्वरनो भक्त परमेश्वरना स्वरूपमां राखे छे त्यारे ते वृत्ति प्रथम तो पातळी दोरडाना पेठे पीळी रहे छे. पछे ए करोळीयो ज्यारे तो आ थंभ उपर जाय ने ज्यारेक तो आ थंभ उपर जाय ने एक थंभने ठेकाणे भगवाननी मुर्त्ति छे, ने बिजा थंभने ठेकाणे पोतानुं अंतःकर्ण छे, ने लाळने ठेकाणे वृत्ति छे ते द्वारे करीने ध्याननो करनारो जे जोगी ते ज्यारेक तो भगवानना स्वरूप संघाथे संलग्न थइ रहे छे, ने ज्यारेकतो अंतःकर्णने विषे रहे छे ने ज्यारेकतो अंतःक

र्णने भगवान तेता मध्ये रहे छे, एम वर्त्तता थकां पृथ्वी तत्त्व प्रधान एवी जे पीळी वृत्ति ते ज्यारे जळ तत्त्व प्रधान थाय त्यारे श्वेत जणाय ने ज्यारे अग्नि तत्त्व प्रधान न थाय त्यारे रक्त जणाय, ने ज्यारे वायु तत्त्व प्रधान थायत्यारेनिळी जणाय, ने ज्यारे आकाशतत्त्व प्रधान थाय श्याम जणाय. पछे पंच भुतनुं प्रधानपणुं मटीने वृत्ति निर्गुण थाय, त्यारे अतिशे प्रकाशे जुक्त जणाय छे ने भगवानमां स्वरूपने आकारे थाय छे. माटे एवी रीते जे भगवाननास्वरूपमां वृत्ति राखतो होय, तेने अतिशे पवित्रपणे रेहेवुं. जेम देवने पुजवाने तत्पर थाय, ते देव सरखो पवित्र थइने जो देवनी पुजा करे त्यारे तेनीज पुजाने देव अंगीकार करे छे, तेम परमेश्वरने विषे वृत्ति राखतो होय तेने पण सांख्य शास्त्रनी रीतीए करीने स्थुल, सुक्ष्म, ने कारण ए त्रण देहथी पोतानुं स्वरुप न्यारुं जाणीने केवळ आत्मारूप थइने परमेश्वरना स्वरूपने विषे वृत्ति राखवी. पछे एम वृत्ति राखतां राखतां ज्यारे ए वृत्ति भगवानना स्वरूपमां लिन थइजाय एज ध्यान करनारा योगीने निंद्रा कहि छे; पण सुषुप्तिमां लिन थावुं एवी ए योगीने निंद्रा होय नहि. ॥ इति वचनामृतम् ॥८॥२०८॥

संवत १८८४ ना पोस सुदि ८ अष्टमीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज

श्री वरताल मध्ये श्री लक्ष्मी नारायणना मंदिरनी आमळ मंच उपर गादी तकिया बिछावी विराजमान हता. अने श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतांअने पोताना मुखारविंदनी आगळमुनी तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभाभराइने बेठो हती. पछेश्रीजीमहाराजे मुनी मंडळ समस्त प्रत्ये प्रश्न पुछ्युं जे; राजसी, तामसी, ने सात्विकी, ए त्रण प्रकारनुं जे मायीक सुख ते जे म त्रण अवस्थाने विषे जणाय छे. तेम निर्गुण एवुं जे भगवान संबंधी सुख ते केम जणाय छे. पछे ए प्रश्ननो उत्तर मुनी मंडळ समस्त मळीने करवा मांडयो पण एनुं समाधान थयुं नहि. पछे श्रीजी माहाराज बोल्या जे पृथ्वी आदिक चार भूत विनाने एकलोज आकाश होय, अने जेटला आकाशने विषे तारा छे तेटला चंद्रमा होय ने तेनो जेवो प्रकाश थाय तेवो चिदाकाशनो प्रकाश छे. अने ते चिदाकाशने मध्ये सदाय भगवान नी मूर्त्ति विराजमान छे ते मूर्त्तिने विषे ज्यारे समाधी थाय त्यारे क्षण मात्र भगवानना स्वरूप मां स्थिति थइ होय ते भजनना करनाराने एम जणाय जे हजार वर्ष परजंत में समाधीने विषे सुख भोगव्युं, एवी रीते भगवानना स्वरूप संबंधी जे निर्गुण सुख ते जणाय छे. अने जे मायीक सुख छे ते बहुंकाळभोगव्युंहोयतोपण अंतेक्षण जेवुंजणायछे माटेभगवानना स्वरुपसंबंधी

पीने भगवान तेना मध्ये रहे छे, एम वर्त्ततां थकां पृथ्वी तत्व प्रधान एवी जे पीळी वृत्ति तें ज्यारे जळ तत्व प्रधान थाय त्यारे श्वेत जणाय ने ज्यारे अग्नि तत्व प्रधान न थाय त्यारे रक्त जणाय, ने ज्यारे वायु तत्व प्रधान थायत्यारेनिली जणाय, ने ज्यारे आकाशतत्व प्रधान थाय श्याम जणाय. पछे पंच भुतनुं प्रधानपणुं मटीने वृत्ति निर्गुण थाय, त्यारे अतिशे प्रकाशे युक्त जणाय छे ने भगवानना स्वरूपने आकारे थाय छे, माटे एवी रीते जे भगवाननास्वरूपमां वृत्ति राखतो होय, तेने अतिशे पवित्रपणुं रेहेवुं जेम देवने पुजवाने तत्पर थाय, ते देव सरखो पवित्र थइने जो देवनी पुजा करे त्यारे तेनीज पुजाने देव अंगीकार करे छे, तेम परमेश्वरने विषे वृत्ति राखतो होय तेने पण सांख्य शास्त्रनी रीतीए करीने स्थुल, सुक्ष्म, ने कारण ए त्रण देहथी पोतानुं स्वरुप न्यारुं जाणीने केवळ आत्मारूप थइने परमेश्वरना स्वरूपने विषे वृत्ति राखवी. पछे एम वृत्ति राखतां राखतां ज्यारे ए वृत्ति भगवानना स्वरूपमां लिन थइजाय एज ध्यान करनारा योगीने निद्रा कहि छे; पण सुषुप्तिमां लिन थावुं एवी ए योगीने निद्रा होय नहि. ॥ इति वचनामृतम् ॥८॥२०८॥

संवत १८८४ ना पोस सुदि ८ अष्टमीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज

श्री वरताल मध्ये श्री लक्ष्मी नारायणना मंदिरनी आगळ मंच उपर गादी तकिया बिछावी विराजमान हता. अने श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतांअने पोताना मुखारविंदनी आगळमुनी तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभाभराइने बेठी हती. पछेश्रीजीमहाराजे मुनी मंडळ समस्त प्रत्ये प्रश्न पुछ्युं जे; राजसी, तामसी, ने सात्विकी, ए त्रण प्रकारनुं जे मायीक सुख ते जे म त्रण अवस्थाने विषे जणाय छे. तेम निर्गुण एवुं जे भगवान संबंधी सुख ते केम जणाय छे. पछे ए प्रश्ननो उत्तर मुनी मंडळ समस्त मळीने करवा मांड्यो पण एनुं समाधान थयुं नहि. पछे श्रीजी माहाराज बोल्या जे पृथ्वी आदिक चार भूत विनाने एकलोज आकाश होय, अने जेटला आकाशने विषे तारा छे तेटला चंद्रमा होय ने तेनो जेवो प्रकाश थाय तेवो चिदाकाशनो प्रकाश छे. अने ते चिदाकाशने मध्ये सदाय भगवान नी मूर्त्ति विराजमान छे ते मूर्त्तिने विषे ज्यारे समाधी थाय त्यारे क्षण मात्र भगवानना स्वरूप मां स्थिति थइ होय ते भजनना करनाराने एम जणाय जे हजार वर्ष पर्जंत मैं समाधीने विषे सुख भोगव्युं, एवी रीते भगवानना स्वरूप संबंधी जे निर्गुण सुख ते जणाय छे; अने जे मायिक सुख छे ते बहुकाळभोगव्युं होयतोपण अंतक्षण जेवुंजणायछे माटेभगवानना स्वरूपसंबंधी

तेनिर्गुणसुखछे तेअखंडअविनाशीछे,नेजेमाइक सुखछेतेनाशवंतछे. ॥इतिवचनामृतम्॥९॥

संवत १८८४ना पोस सुदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री वरताल मध्ये श्री लक्ष्मीनारायणना दरबारमां लिंबडाना वृक्ष हेठे पाट उपर गादी तकिया नंखावीने विराजमान हता अने अंगने विषे सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. ते समयमां गाम भादरणना कोइक पाटिदार आव्या तेणे श्रीजी महाराज प्रत्ये प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज जिवनुं कल्याण केम थाय? पछे श्रीजी महाराजे कह्युं जे आ पृथ्वीने विषे राजारुप ने साधुरूप ए बे प्रकारे भगवानना अवतार थाय छे, तेमां राजा रूप ज्यारे पृथ्वी उपर प्रगट थाय त्यारे तो ते ओगणचाळीश लक्षणे जुक्त अने ज्यारे साधुरूपे पृथ्वी उपर प्रगट थाय त्यारे तो त्रिश प्रकारने लक्षणे जुक्त होय अने जे राजारूपे भगवान होय ते तो चोसठ प्रकारनी कळाये जुक्त होय, तथा साम, दाम, भेद, दंड ए चार प्रकारना जे उपाय तेणे जुक्त होय तथा शृंगार आदिक जे नव रस तेणे जुक्त होय, अने ते भगवान ज्यारे साधुरूपे होय त्यारे तेमां ते लक्षण होय नहि, अने जे राजारूपे भगवान होय तेने जो आप-

काळ आव्यो होय तो मृगया करीने पण जिवे, अने चोर होय तेने गर्दनपण मारे, अने घरमां स्त्रियुं पण राखे, अने साधुरूपे भगवान होय ते तो अतिशे अहिंसापर वर्ते,तेनिव्यातृण ने पण तोडे नहि, अने काष्टनी तथा चित्रामणनी स्त्रीनो पण स्पर्श करे नहि, माटे साधुरूपे भगवाननी मूर्त्ति ने राजारूप जे भगवाननी मूर्त्ति ए बेनी रीती एक होय नहि. अने श्रीमद्भागवत ... स्कंधने विषे धर्मना संवादे करीने राजारूप जे श्री कृष्णादिक भगवानना अवतार तेनां ओगणचाळीस लक्षण कह्यांछे अने एकादश स्कंधने विषे श्रीकृष्ण भगवानने उद्धवना संवादे करीने साधु रूप जे दत्तात्रेय कपील आदिक भगवानना अवतार तेनां त्रीश लक्षण कह्यां छे. माटे जेने पोतानुं कल्याण इछवुं तेने तेते लक्षणे करीने तेभगवानने ओळखीने ते भगवानने शरण थावुं अने तेनो दृढ विश्वास राखवो ने तेनी आज्ञामां रहीने तेनी भक्ति करवी एज कल्याणनो उपायछे अने भगवान ज्यारे पृथ्वीने विषे प्रत्यक्ष न होय त्यारे ते भगवानना मळेला जे साधु तेनो आश्रय करवो तो ते थकी पण जीवनुं कल्याण थाय छे अने ज्यारे एवा साधु पण न होय त्यारे भगवाननी प्रतिमाने विषे दृढ प्रतिति राखवी ने स्वधर्ममां रहीने भक्ति करवी ते थकी पण जीवनुं कल्याण थायछे इति वचनामृतम् ॥२०॥२२०

संवत १८८४ना पोस सुदी १५पुनमनने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराजश्री वरताल्य मध्ये श्रीलक्ष्मीनारायणना दरबारमां लिंबडाना वृक्ष हेठे पाट उपर गादी तकिया नंखावीने विराजमान हतां अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठने विषे श्वेत पुष्पना हार पेर्या हता ने कर्णनी उपर पुष्पना गुच्छ खोस्या हता ने पाघने विषे पुष्पना तोरा लटकता हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी मंडळ समस्त तथा देश देशना हरि भक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराज बोल्याजे अमारोतो एवो स्वभाव छे जे एकतो भगवानने बीजा भगवानना भक्त, ने त्रीजा ब्राह्मण, ने चोथो कोइक गरीब मनुष्य, ए चारथकी अमे अतिशय बीहीए छीए जे रखे एमनो द्रोह थइ जाय नहि,ने एवातो बीजा कोइथी अमे बीता नथी, केमजे ए चार विना बीजानो कोइक द्रोह करे तोतेना देहनो नाश थाय पण जीव नाश पामे नहि, अने ए चारमांथी एकेनो जो द्रोह करे तो तेनो जीव पण नाश पामी जाय-छे. ए वातने सांभळीने मुक्तानंद स्वामीए प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज जीवतो अविनाशि कह्यो छे तेनो नाश ते केम जाणवो? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे पर्वतनुं के विजुं एवं ज जे कोइक जड देह आवे तेमां कोइ काळे जिवनुं कल्याण थाय नहि: एटले एना

जिवनो नाश थइ गयो एम जाणवुं.माटे जेने पोतानुं कल्याण इच्छवुं तेने ते चारमांथी कोइ नो द्रोह न करवो. अने वळी भगवान के भगवानना भक्त ते आगळ कोइ प्रकारे मान राखवुं नहि. केम जे मान छे ते तो क्रोध, मत्सर, इर्षा ने द्रोह एनो आधार छे. अने मानी होय तेनी भक्ति पण आसुरी केहेवाय, अने भगवानना भक्तने जो निवरावतो होय ने ते प्रभुनो भक्त होय तो पण तेने असुर जाणवो.माने अमारोए तो स्वभाव छे जे ब्राह्मणनो ने गरिबनो ने भगवानना भक्तनो कोइक द्रोह करे ते तो अमने दिठोज गमे नहि, अने आ लोकमां ने परलोकमां तेने ने अमारे सोंनत रहेवानी नथी. एटली वार्ता करीने पछे श्रीजी महाराजे बे पद गवराव्यां जे ॥मारा हरजी शुं हेत न दिसे तेने घेर सिद जइये॥एक तो ए अने बिजुं जे ॥मारा वालाजीशुं वालप दिसे तेनो संग केम तजाए॥ अने पछे ए बे पद शिख्यानी सत्संगी मात्रने आज्ञा करीने एम कह्युं जे ए बे पदमां वार्त्ता छे तेने नित्य गाइने संभारी राखवी.एम कहीने श्रीजी महाराज श्री लक्ष्मीनारायणना मंदिर आगळ एक मंच हतो, ते उपर आवीने विराजमान थया.पछे गोपाळानंद स्वामीए पुछयुं जे आ संसारने विषे जे पंडित छे ते शास्त्र पुराण सर्व वांचे छे पण तेने भगवाननो ने संतनो जेम छे तेम महिमा केम समजातो

नथी. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे शास्त्र पुराण वांचे छे तो खरा पण एने भगवाननो आ शरो नथी, माटे काम, क्रोध, लोभ, इर्ष्या, मत्सर तेणे एना जीवनेहरवीनांख्योछे, अने कामादिक जे शत्रू ते एने कोइ काळे माथु उगाडवा देता नथी. पछे ते पंडित पोतानी पेठेज भगवानने भगवानना संतने समजे जे जेम अमारा कामादिक शत्रू कोइ काळे निवृति पामता नथी तेम एना पण कामादिक शत्रूनी वृत्ति नाहि पामता होय एम भगवानने भगवानना संतने विषे दोष समजे माटे शास्त्र पुराण वांचे पण एने भगवान के भगवानना संतनुं जेम छे तेम जथारथ महात्म समजातुं नथी. पछे श्रीजी महाराजे दिनानाथ भट तथा मुनी मंडळ समस्त प्रत्ये प्रश्न पुछ्युं जे ब्रह्म स्वरूप पणएवा जे सत पुरूष ते तो त्रण शरीर ने त्रणी अवस्था ते थकी परवर्त्ता होय, अने चौउद इंद्रियोनी क्रिया ते पोताने विषे एक मानता न होय तेने अज्ञानी जिव छे ते आळखो शके नहि. अने ज्यारे एने मोटा पुरूषना सरखी स्थीति थाय त्यारे ए मोटा पुरूष जेम वर्ते छे, ते सत्य मनाय अने त्यां सुधी सत परूषनो महिमा एनेजजणाय त्यां सुधी ब्रह्मस्वरूपने विषे स्थिती पण न थाय, अने आत्माने विषे स्थिति थया विनासतपुरूषनो महिमा पण नजणाय माटे परस्पर विरोध आव्यो ते विरोध टळे ते उपाय कहो? पछे जे, जेनी

नजर पुगी तेणे तेवो उत्तर कर्यो, पण ए प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे ल्यो, अमे उत्तर करीए. एनो उत्तर तो ए छे जे पृथ्वीने विषे जे भगवाननो अवतार तेने मळेला जे संत ते संघाथे ज्यारे एने अतिशे प्रिति थाय त्यारे ए सत पुरुषने विषे एने कोइ प्रकारे दोष भासे नहि अने जेने जे संघाथे दृढ हेत होय तेने तेनो अवगुण कोइ प्रकारे आवेज नहि, अने तेनां वचन पण सत्यमनाय एवी रीते लौकिक मार्गमां पण रीती छे अने कल्याणना मार्गमां पण प्रिती छे माटे सतपुरुषने विषे दृढ प्रिती एज आत्मदर्शननुं साधन छे अने सत पुरुषनो महिमा जाण्यानुं पण एज साधन छे. अने परमेश्वरनुं साक्षात दर्शन थवानुं पण एज साधन छे. इतिवचनामृतम्॥ २१॥ २६१॥

संवत १८८४ ना पोस सुदि २ बिज ने दिवस श्री सहजानंदजी महाराज श्री वरताल मध्ये श्री लक्ष्मीनारायणना दरवाजमां लिंबडाना वृक्ष तळे पाट उपर गादी तकीए जुक ढोलीयो हतो ते उपर विराजमान हता अने श्वेत खेस पहेर्यो हतो ने मांहिली कोरे श्वेत पछेडीए जुक्त गुलाबि रंगनी शाल ओढी हती हती अने मस्तक उपर श्वेत पाघ बांधी हती अने कंठने विषे गुलाबना पुष्पनो हार पहेर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी

आगळ मुनी मंडळ तथा देशो देशनी हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, अने ते समे श्री जी महाराजे अंतरे दृष्टी करिने बहु वार सुधी विराजमान थया हता, पछे नेत्र कमळने उघाडीने सर्वे हरिभक्तनी सभा सामुं करुणा कटाक्षे करी जोइने श्रीजी महाराज बोल्या जे आजतो सर्वेने निश्चेनी वात करवी छे ते सर्वे सावधान थइने सांभळो, जे अनंत कोटि सूर्य, चंद्रमा ने अग्नि ते सरखुं प्रकाशमान एवुं जे अक्षरधाम तेने विषे श्री पुरुषोत्तम भगवान सदा दिव्य मूर्त्ति थका विराजमान छे अने तेज भगवान जिवना कल्याणने अर्थे पृथ्वीने विशे राम कृष्णादिक अवतारनुं धारण करे छे, त्यारे ते भगवानना स्वरूपनो जेने ससमागमे करीने दृढ निश्चे थाय छे तेनो जिव बिजना चंद्रमानी पेठे दिवसे दिवसे वृद्धिने पामतो जाय छे अने जेम चंद्रमाने विषे जेम जेम सूर्यनी कळा आवती जाय तेम तेनेचंद्रमावृद्धिनेपामतो जायछे ते ज्यारे पूर्णमासिआवेत्यारे संपूर्णचंद्रमाथायछे,तेमभगवाननोपरिपूर्णनिश्चय थया मोरतो ए जिव अमावास्याना चंद्रनी पेठे कळाए रहित खद्योत जेवो होय पछे जेम जेम परमेश्वरनो महिमाए सहित निश्चे पामे छे, तेम तेम वृद्धिने पामीने पुर्णमासीना चंद्र जेवो ए जीवात्मा थाय छे, पछे एने इंद्रियो के अंतःकरण निश्चेमांथी डगाववाने समर्थ नथी थतां, अने परमेश्वर गमे तेवां

चरित्र करे तो पण तेनो कोइ रीते भगवानने विषे दोष भासतोज नथी एवो जेने महिमाये स हित भगवाननो निश्चे होय ते भक्त निरभे थइ चुक्यो अने तेज भक्तने जो क्यारेक असत दे श, असत काळ, असतसंग ने असत शास्त्रादिकने जोगे करीने, अथवा देहाभिमाने करीने भगवानना चरीत्रने विषे संदेह थाय ने भगवाननो अभाव आवे तो ए जीव पूर्णमासीना चंद्र जेवो हतो पण पाछो अमांवास्याना चंद्र जेवो थइ जाय छे. माटे पोतामां जे कांइकथोडीघणी खोटय होय ते ए जीवने फाकि नडती नथी, पण परमेश्वरना चरीत्रमां कोइ रीते संदेह थाय अथवा परमेश्वरनो कोइ रीते अभाव आवे त्यारे ए जिव कल्याणना मार्गमांथी ततकाळ पडी जाय छे. जेम वृक्षनां मूळ कपाणां त्यारे तो वृक्ष एनी मेळेज सुकाइ जाय, तेम जेने भगवा- नने विषे कोइ रीते दोषबुद्धि थइ, ए जिव कोइ रीते विमुख थया विना रहे नहि, अने जेने निश्चेनुं अंग दुबळु होय ने ते सत्संगमां होय तोपण तेने एवा घाट थाय. जे शुं जाणीए मारुं ते कल्याण थाशे के नहि थाय. अने हुं ज्यारे मरीश त्यारे देवता थइश, के राजा थइश के भुत थइश. जेने भगवानना स्वरुपनो परीपुर्ण निश्चे न होय तेने ए घाट थाय. अने जेने परी- पूर्ण निश्चे होय, तेतो एम समजे जे मुने तो भगवान मळ्या ते दिवसथीज मारुं कल्याण थइ

चुक्युं छे, अने मारु दर्शन करशे के, मारी वार्त्ता सांभळशे, ते जिव पण सर्व पाप थकी मुकाइने परमपदने पामशे. माटे एवी रीते भगवाननो महिमा सहित निश्चे राखीनेपोतानेविषे कृतार्थपणुं मानवुं ए वार्ता सर्वे खबरदार थइने राखज्यो. पछे श्रीजीमहाराजे कह्युं जे ॥ धन्य वृंदावन वंसीवटनी छायारे, ज्यां हरी बेसता ॥ एम माहात्मनुं किर्त्तन गावो; पछे ते किर्त्तन गायुं, पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे एवी रीते श्रीकृष्ण भगवाने पण भागवतमां कह्युं छे जे ॥ अहोअमीदेववरामराचिंतंपादांबुजंतेसुमनःफलार्हणम् ॥ नमंत्युपादायशिखाभिरात्मनस्तमोपहत्यै तरुजन्मयत्कृतम् ॥ एम परमेश्वरना योगने पामीने वृक्षनो जन्म होय ते पण कृतार्थ थाय छे. माटे जे वृक्ष तळे भगवान बेठा होय ते वृक्षने पण परमपदनुं अधिकारी जाणवुं अने जेना हृदामां एवो भगवानना महिमा-सोतो दृढ निश्चे न होय तेने तो नपुंसक जेवो जाणवो, ते एने वचने करीने कोइ जिवनो उद्धार थवानो नाहि, जेम राजा होय ने नपुंसक होय ने तेनुं राज्य जातुं होय ने वंश जातो होय पछे ए थकी तेनी स्त्रीने पुत्र थाय नहि, अने सर्वे मलकमांथी पोता जेवा नपुंसकने तेडावीने ते स्त्रीने संगे राखे तो पण ते स्त्रीने पुत्र थाय नहि, तेम जेने भगवाननो महिमा सहित निश्चे नथी तो तेने मुखे गिता भागवत जेवा सत ग्रंथ सांभळे पण

तेणे करीने कोइनुं कल्याण नथी थातुं. अने वळी जेम दुधने साकर होय ने तेमां सर्पनी लाळ पडी पछे एने जे कोइ पीए तेना प्राण जाय, तेम महात्मे सहित जे भगवाननो निश्चे तेणे रहित एवो जे जिव तेना मुख थकी गिता भागवतने सांभळे तेणे करीने कोइनुं कल्याण थातुं नथी एमांथी तो मुळगुं भुंडुं थाय छे ॥इतिवचनामृतम्॥१२॥१२२॥

संवत १८८४ ना पोस वदि ७ सप्तमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री वरताल मध्ये श्रीलक्ष्मीनारायणना दरबारमां लिंबडाना वृक्षनी तळे पाट उपर गादी तकिया नंखावीने विराजमान हता अने अंगने विषे सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठने विषे श्वेत पुष्पना हार पेर्या हता अने हस्त कमळे करीने एक दाडमनुं फळ उछाळता हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती। अने श्रीजी महाराजने उपर सोनाने दंडाए सहित छत्र विराजमान हतुं एवी शोभाने धरता थका श्रीजी महाराज विराजमान हता ते समयमां गाम भादरणना पाटिदार श्रीजी महाराज पासे आव्या हता तेणे पुछयुं जे हे माहाराज आ समाधी ते केम थाती हशे पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे, जिवना कल्याणने अर्थे आ भरतखंडमां भगवान अवतार धरे छे.

ते भगवान ज्यारे राजा रूपे होय त्यारे तो ओगणचाळीस लक्षणे जुक्त होय, अने दतक-पिल जेवा साधु रूपे होय त्यारे तो त्रिश लक्षणे जुक्त होय. ते भगवाननी मूर्त्ति देखवामां तो मनुष्य सरखीज आवतां होय पण ए अतिशे अलोकिक मूर्त्ति छे, जेम पृथ्वीने विषे सर्व पथरा छे, तेम चमकपाण पण पथरो छे. पण चमकपाणमां सहेजे एवो चमत्कार रहोछे जे जेम चमकना पर्वत तेने समीपे वाहाण जाय त्यारे तेना खिला चमकना पाणा पासे तणाइ जाय छे, तेम भगवाननी जे मूर्त्ति राजा रूपे छे, ने साधुरूपे छे ते मूर्त्तिनुं ज्यारे जे जिव श्रद्धाए करीने दर्शन करे छे, तेना इंद्रियो भगवान सामा तणाइ जाय छे त्यारे समाधी थायछे जेम श्रीकृष्णभगवाननुं दर्शन करीने गोकुळ वासी सर्वने समाधी थइ हती ने भगवानने ते समधीमां पोतानुं धाम देखाडयुं हतुं तवी रीते जेजे समयमां भगवानना अवतार होय ते ते समयमां भगवाननी मुर्त्तिने विशे एवो चमत्कार जरूर होय. ते जे श्रद्धाये जुक्त भगवाननां दर्शन करे तेना इंद्रियु सर्व भगवान सामां तणाइ जाय अने तत्काळ समाधी थाय अने कोइक समयमां भगवानने घणाक जीवने पोताने सनमुख करवा होय त्यारेतो अभक्त जीव होय अथवा पशु होय तेने पण भगवानने जोइने समाधी थइ जायछे तो भगवानना भक्तने थाय ए

मां शुं आश्चय छे? पछे मुक्तानंद स्वामीये पुछ्युं जे ब्रह्म छे तेतो सर्वत्र व्यापक छे एम स
र्वे कहे छे ते जे व्यापक होय, तेने मुर्त्तिमांन केम कहेवाय ने जे मुर्त्तिमान होय तेने व्यापक
केम कहेवाय? ए प्रश्न छे पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ब्रह्मतो एक देशी छे पण सर्व देशी
नथी ने ते ब्रह्म ते श्रीकृष्ण भगवान छे ते एक देशी थका सर्व देशी छे. जेम कोइक पुरुषे
सूर्यनी उपासना करी होय पछे सूर्य तेने पोताना सरखीदृष्टि आपे त्यारे ते पुरुष ज्यांसुधी सू
र्यनी दृष्टि पोचती होय त्यांसुधी देखे अने वळी जेम सिद्ध दशा वाळो पुरुष होय ते
हजारु ने लाखुं गाउ उपर कोइक वात करतो होय तेने जेम पासे वार्ता करे ने सांभळे ते
म सांभळे छे तेमज लाखुं गाउ उपर कोइक वस्तु पडि होय तेने मनुष्यना जेवडा हाथ होय
तेणे करीने पण उपाडे तेमज श्रीकृष्णभगवान् एक ठेकाणे रह्या थका पोतानी इच्छाये करी
ने ज्यां दर्शन देवां होय त्यां दर्शन आपे छे, अने एक रूप थका अनंत रूपे भासे छे अने
सिद्ध होय तेमां पण दुर श्रवण, दुर दर्शन रूपे चमत्कार होय तो परमेश्वरमां होय तेमां
शुं आश्चर्य छे? अने भगवानने ग्रंथमां व्यापक कह्या छे ते तो मूर्त्तिमान छे तेज पोतानी सा-
मर्थीए करीने एक ठेकाणे रह्या थका सर्वने दर्शन आपे छे एम व्यापक कह्या छे, पण आ

काशनी पेठे अरूप थका व्यापक नथी भगवान तो सदा मुर्त्तिमानज छे; ते मुर्त्तिमानभग

अक्षरधाममां रह्या थकाज अनंत कोटी ब्रह्मांडमां भासे छे ॥ इतिवचनामृतम् ॥

संवत १८८४ना पोस वदि नवमीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज वरताल मध्ये श्री लक्ष्मीनारायणना मंदीर आगळ विराजमान हता अने सर्वे श्वेत धारण कर्यां हतां, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना भक्तनी सभा भराइने बेठी हती, पछे वडोदरावाळा बापु मोडीया राम श्रीजी महाराजने प्रश्न पुछयुं जे हेमहाराज जे कुपात्र जीव जणातो होय ते समाधि थइ जायछे, ते शुं कारण हशे? पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे धर्म शास्त्रने विषे वर्णाश्रमना धर्म कह्याछे ते थकी जे बाह्य वर्त्ततो होय तेने सर्वे लोक एम जाणे जे आ पात्रमाणस छे अने ते कुपात्रने भगवान के भगवानना संत तेनो जो हइयामां गुण आवे ने ए मोटुं पुन्य थायछे तेवर्णाश्रमना धर्म लोप्या हता तेनुं जे पाप लाग्युं हतुं ते सर्वे नाश थइ जायछे अने ते जीव अतीशे पवित्र थइ जायछे माटे एने भगवानना स्वरूपमां चित छे त्यारे समाधि थइ जायछे अने जे पुरुष धर्म शास्त्रे कह्या एवा जे वर्णाश्रमना धर्म ते

ळता होय त्यारे तेने सर्वे लोक धर्मवाळो जाणे, पण भगवानने भगवानना साधु तेनो द्रोह कर तो होय तोते सत पुरूपना द्रोहनुं एवुं पाप लागेछे जे वर्णाश्रमना धर्म पाळ्यानुं जे पुन्य तेने बाळीने भस्म करी नांखेछे, माटे सत पुरूपना द्रोहनो करनारो तेतो पंच महापापनो करनारा तेथी पण वधु पापी छे. शा माटे जे पंच महापाप कर्या होय तेतो सत पुरुषने आशरे जइने छुटायछे पण सत पुरूपनो द्रोह करे तेतेतो कोइ ठेकाणे छुटयानो उपाय नथी, केमजे अन्य ठेकाणे पाप कर्यु होयतेतो तिर्थमां जइने छुटाय छे अने तिर्थमां जइने पाप करे तेतो वज्रलेप थायछे माटे सतपुरूपनो आशरो करे त्यारे गमे तेवो पापी होय तो पण अतिशे पवित्र थइ जायछे ने तेने समाधि थइ जायछे अने सतपुरूपनो द्रोहि होय ने ते गमे तेवो धर्म वाळो ज-णातो होय तो पण महा पापीछे ने तेने कोइ काळे भगवाननुं दर्शन हृदाने विषे थायज नहीं माटे जेने विमुखजीव पापी जाणेछे ते पापी नथी अने जेने विमुख धर्मी जांणेछे ते धर्मि नथी. ॥ इति वचनामृतम ॥ १४ ॥ २१४ ॥

संवत १८८४ ना पोस वदी ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महा-राज श्री वरताल मध्ये श्री लक्ष्मीनारायणना मंदिर आगळ लिंबडाना वृक्ष हेठे मंच उपर

गादी तकिया बिछावीने विराजमान हता अने किनखापनो सुरवाळ ने डगली पेहेरां हतां अने मस्तक उपर मोटा सोनेरी छेडानुं भारे कसुंबल शेलुं बांध्युं हतुं अने मोटा मोटा सोनेरि छेडानुं कसुंबल शेलुं खभा उपर विराजमान हतुं अने मस्तक उपर सोनेरी छेडानुं छत्र विराजमान हतुं अने पोताना मुखारविंदनी आगल मुनी मंडळ समस्त तथा देश देशना हरी भक्तनी सभा भराइने बेठी हती. ते सभामां शोभाराम शास्त्रीए प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज दैवी ने आसुरी ए बे प्रकारना जिव छे, ते अनादीकाळना छे के कांइक जोगे करीने थाय छे? पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे दैवीने आसुरी ए बे प्रकारना जिव छे, ते प्रथम तो प्रलयकाळे मायाने विषे लिन थया हता, पछे ज्यारे जगतनो संग थाय छे, त्यारे ते बे प्रकारना जिव पोतपोताना भावे युक्त थका उपजे छे, अने केटलाक साधारण जीव छे. ते तो दैवीने आसुरीने संगे करीने दैवीने आसुरी थाय छे, अने केटलाक दैवीने आसुरी जिव छे. ते तो जेवांजेवां कर्म करता जाय छे, तेवा तेवा भावने पामता जाय छे, जेम जय विजय भगवानना पार्षद हता तेणे सत पुरुष एवा जे सनकादिक तेनो द्रोह कर्यो त्यारे असुर भावने पामी गया. अने प्रल्हादजी दैत्य हता तेणे नारदजीनो उपदेश ग्रहण कर्यो तो परम भागवत संत कहेवाणा माटे

मोटा पुरुषनो जे उपर कोप थाय, ते जिव आसुरी थइ जाय छे. अने जे उपर मोटा पुरुष राजी थाय ते जिव दैवी थइ जाय छे. पण त्रिजुं दैवी आसुरी थयानुं कारण नथी. माटे जेने पोतानुं कल्याण इच्छवुं होय तेने भगवान ने भगवानना भक्त तेनो कोइ रीते द्रोह करवो नहि. अने जे रीते भगवानने भगवानना भक्त राजी थाय तेम करवुं. ॥इतिवचनामृतम्॥ १५॥२१५॥

संवत १८८४ ना पोस वदि १३ तेरशने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री वरताल मध्ये श्री लक्ष्मीनारायणना दरबारमां लिंबडानावृक्ष हेठे मंच उपरगादी तकिया बिछावीने विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी मंडळ समस्त तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. ते सभामां वडोदराना शास्त्री बेठा हता. तेणे एम कह्युं जे हे महाराज तमे जो कोइक मोटा माणसने चमत्कार जणावो तो तेमांथी घणो समास थाय. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे मोटा माणस साथे अमारे फावुं बने नहि. शा माटे जे एने राज्यनो ने धननो मद होय, अने अमारे त्यागनो ने भक्तिनो मद होय, माटे कोइ केने नमी दे एवुं काम नथी. अने कोइक मोटा माणसने जो समाधी करावीए तो कोइक गरास आपे तेनो अमारा हैयामां लालच नथी, केम

जे गाम गरास तो सुखने अर्थे इच्छीए, तेअमारे तो नेत्र मींचीने भगवाननी मूर्त्तिनुं चितवन करीए तेमां जेवुं सुख छे तेवुं चौद लोकना राज्यने विषे पण नथी.अने जो भगवानना भजन जेवुं राज्यने विषे सुख होय तो स्वयंभुमनुं आदिक जे मोटा मोटा राजा ते सर्वे राज्य मुकीने वनमां तप करवा शा सारु जाय? अने भगवानना भजन जेवुं स्त्रीने विषे सुख होय तो चित्रकेतु राजा कोड स्त्रियुने शा सारु मुके? अने भगवानना भजनना सुख आगळ तो चौद लोकनुं जे सुख ते नर्क जेवुं कह्युं छे. माटे जे भगवानने सुखे सुखीयो थयो होय तेने तो ब्रह्मांडने विषे जे विषयनुं सुखछे ते नर्क तुल्य भासेछे. अने अमारे पण भगवानना भजननुं सुख तेजसुख जणायछे, बीजुं सर्वे दुःखरुप जणायछे. माटे परमेश्वरनुं भजन स्मरण करतां थकां जेने सेहेजे सतसंग थाय तेने करावीए छैये, पण कोइ वातनो अंतरमां आग्रह नथी. आग्रह तो केवळ भगवानना भजननो अने भगवानना भक्तनो सत्संग राख्यानोछे ए अमाराअंतरनोरहस्य अभिप्रायहतो तेअमे तमारेआगळकह्यो, इतिवचनामृतं.॥२६॥२१६॥

संवत १८८४ना पोस वदि अमासने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री वरताल मध्ये श्री लक्ष्मीनारायणने सनमुख हवेली उपर गादी तकिया नखावीने विराजमान

हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ सर्वे साधु तथा दे
श देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराजे प्रश्न पुछ्युं जे पंचज्ञान
इंद्रियाने पंचकर्म इंद्रियो छे ते पोतपोताना विषयने यथार्थ जाणे छे ते ज्ञानी तथा अज्ञानीने इं
द्रियो द्वारे एक सरखो व्यवहार छे पण ज्ञानी होय तेनां इंद्रियो अज्ञानी थकी बीजी रीते न
थी वर्त्तता, माटे ज्ञानीने जीतेंद्रिय कह्याछे ते केइ रीते जाणवा ए प्रश्न छे? पछे मुक्तानंद स्वा
मीए कह्युं जे निर्विकल्प समाधी थाय त्यारे जीतेंद्रिय थाय एम जणायछे, पछी श्रीजीमहाराज
बोल्या जे. निर्विकल्प समाधीवाळाने पण पंच विषय ग्रहण करवा, तेनो सौनी पेठे इंद्रियो
द्वारेज ग्रहण थाय छे माटे जितेंद्रियपणुं केम छे? पछे बहुं रीते करीने मुक्तानंद स्वामीए उत्त
र कर्यो पण समाधान थयुं नहि. पछे श्रीजी महाराजे कह्युं जे एनो उत्तर तो एम छे जे, श
ब्दादिक जे पंच विषय छे तेमां जे दोष रह्या छे तेने जाणे, अने भगवाननी मूर्ति छे तेमां जे
कल्याणकारी गुणछे तेने पण जाणे, अने मायिक जे पंच विषय तेने भोगववे करीने जिवने न
र्कना कुंडनी प्राप्ति थाय छे ने महा दुःख भोगववां पडे छे तेने पण जाणे, अने एम
जाणे त्यारे एने पंच विषयनो अतिशे अभाव आवे छे, ने एने विषे वैर बुद्धि थाय

छे. पछे जे साथे जेनो वेर थयुं तेने विषे कोइ रीते प्रीति थाय ते नहि एम समजीने ज्यारें पंच विषयनो मनमांथी जेने अतिशे अभाव थइ जाय ते जितेंद्रिय पुरुष कहेवा य. पछे भगवाननी श्रवण किर्त्तनादिक भक्तिये करीने पोतानुं जिवतव्य पुरु करे पण विमुख जिवनी पेठे पंच विषयमां आशक्त थाय नहि. एवो होय ते जितेंद्रिय केहेवाय. पछे श्रीजी माहाराजे त्रिजुं प्रश्न पुछ्युं जे एक त्यागी संत छे ते तो केवळ निवृत्ति मार्ग वाळा छे अने ते एम जाणेछे जे अमे आत्मा छिये पण देहने पोतानुं रूप मानता नथी, ने तेनो देहनी रीती तो ज ने उन्मतना जेवी होय, अने ते पुरुषने जात, वर्ण, आश्रम तेनुं अभिमान होय नहि, ने खावुं, ... वे ... ते सर्वे ... जेवुं होय, पण लोकमां मळतुं आवे तेवुं न होय, ने एवा जे होय तेने कोइनो संग पण रहे नहि, जेम वननुं मृगलुं होय तेनी पेठे उन्मत थको ए ... रहे ने कोइ रीतनुं बंधन पण थाय नहि. अने बिजा त्यागी संत छे ते तो निवृत्ति ... प्रवृत्तिमार्गमां वर्त्ते छे, अने जे प्रवृत्तिने जोगे करीने काम, क्रोध, लोभ, मोह, ... तृष्णा इत्यादिक दोष हदाने विषे प्रवर्ते तेवो क्रियाने विषे प्रवर्ते छे, त्यारे को

के न घटे?अने वळी ए प्रवृत्ति मार्गमां रेहेता थकां केइ रीते निर्विकार रहेवाय?अने तमे कहे
शो जे जो परमेश्वरनी आज्ञाए करीने ए प्रवृत्ति मार्गमां रहेतो बंधन न थाय ते उपर ए आ-
शंका छे जे परमेश्वरनी आज्ञाए करीने भांग पिए तो शुं गांडो न थाय?जरूर गांडो थाय.
माटे ए त्यागी केवी रीते प्रवृत्ति मार्गमां रहेतो बंधन न थाय ए प्रश्न छे? पछे नित्यानंद स्वा-
मीने शुक मुनीए एनुं समाधान करवा मांडयुं पण यथार्थ उत्तर थयो नहि. पछे श्रीजीमहारा
ज बोल्या जे,जे केवळ निवृत्ति धर्मवाळा त्यागी छे, ते उन्मतनी पेठे वर्त्तेछे ते तो केवळ आ
त्मनिष्टावाळा जाणवा. अने वळी जेनीवृत्ति धर्मवाळा त्यागी भगवाननी भक्तिए युक्तछे तेने तो
परमेश्वरे कह्या एवा जे नियम तेने विषे रहीने भगवानने भगवानना भक्त संबंधी जे प्रवृत्ति मा-
र्ग तेने विषे सावधान थइने जोडावुं, अने ए जे भगवानने भगवानना भक्तने अर्थे प्रवृत्तिमार्गमां
जोडावुं एनुं नामज भक्ति छे. अने एवी प्रवृत्तिवाळा जे त्यागी छे तेनी बरोबर निवृत्ति मार्ग
वाळो जे केवळ आत्मनिष्ट त्यागी ते थइ शकतो नथी. शा माटे जे आतो त्यागी छे,ने नि-
वृत्ति मार्गवाळाछेतो पणभगवानने भगवानना भक्तनी सेवाने अर्थे प्रवृत्तिमां वर्त्ते छे.अने एजेभगवाननोभ
क्त त्यागीछेतेनेतो परमेश्वरना नियममां रहीने प्रवृत्तिमार्गने विषे रहेवुं,पणपरमेश्वरना नियमथी अधिक

पणे वर्तनुं नही ने न्युन पण रहेनुं नही अने काम,क्रोध,लोभ,मोह,आशा,तृष्णा,स्वाद, ए आदीक जे विकार तेने त्याग करीने भगवानने भगवानना भक्तनी सेवाने अर्थे प्रवृती मार्गने विषे वर्त्तनुं तो एने कोइजातनुं बंधन थाय नही अने केवळ आत्मनिष्टावाळो जे त्यागी तेकरतां तो आ त्यागी अतिशे श्रेष्ठछे नेभगवाननी कृपानुं पात्रछे.॥इतिवचनामृतम॥१७॥२१७

संवत १८८४ ना माहाशुदि १ पडवाने दिवस श्रीजि महाराज श्री वरताल मध्ये संध्या आरती थया केडे श्री लक्ष्मी नारायणना मंडपमां गादी तकिया नंखावीने विराजमान थया हता ने सर्वे श्वेत वस्त्रनुं धारण करयुं हतुं ने पोतानी चारे कोरे मंडपने उपर तथा हेठे परमहंस सर्वे तथा देशदेशना हरिभक्त सर्वे बेठा हता, पछे श्रीजि महाराज बोल्या जे आ तमे सर्वे मोटा मोटा परमहंसछो तेमने अमें प्रश्न पुछियेछैये जे सत्संगी होय तेने अवश्य पणे शिशि वार्त्ता जाणि जोइये केमजे तेने कोइक पुछे अथवा पोताना मनमां कांइ तर्क थइ आवे त्यारे जो ए वार्त्ता जाणी ने होय तो तेनुं समाधान केम थाय?एम प्रश्न पुछीने पछे पोते ज बोल्या जे ल्यो एनो उत्तर अमेज करीए छीए जे एकतो आपणा उद्धव संप्रदायछे,तेनी रीते जाणी जोइए तथा बिजि गुरु परंपरा जाणी जोइए,ते केइ रीते तो उद्धव ते रामानंद

स्वामी रूपे हता ने रामानंदस्वामी श्रीरंगक्षेत्रने विषे समाधिमां साक्षात रामानुजाचार्य थकी वैश्नवी दिक्षाने पाम्या माटे रामानंद स्वामीना गुरु ते रामानुजाचार्य छे ने ते रामानंद स्वामीना शिष्य अमे छीए. एवी रीते गुरु परंपरा जाणवी. अने अमे अमारा धर्म कुळनुं स्थापन कर्युछे तेनी रीत जाणवी. अने त्रिजा अमारा संप्रदायमां अती प्रमाण रूप जे शास्त्रछे तेने जाणवां ते शास्त्रनां नाम वेद १व्यास सुत्र २ श्रीमद्भागवत पुराण३ अने महाभारतने विषे विष्णुं सहस्त्र नामछे ४ भगवद्गीता ५ विदुरनिती ६ अने स्कंध पुराणनाविष्णुंखंड मांहीलुं वासुदेव माहात्म ७ अने याज्ञवल्क्य स्मृति ८एजे आठ शास्त्र तेने जाणवां अने चोथा सर्वे सत्संगीना जे जे नियम छे तेने जाणवा अने पांचमा आपणा इष्टदेव जे श्रीकृष्णभगवान तेने जाणवा अने स्थानक शेषकने कार्य तेने भेदे करीने ते श्रीकृष्णभगवाननी मूर्तियुंनुं बहुपणुं छे तेने जाणवुं अने ते श्रीकृष्णभगवानना जे परोक्ष रूप ने प्रत्यक्ष रूप तेने जाणवां तेम परोक्षरूपतेकेइरीतेतोमायानातमथकीपर एवोजेगोलोकतेनमध्येजेअक्षरधामतेनेविषेश्रीकृष्णभगवानरह्याछेतेद्विभुजछे,नेकोटी कोटी सूर्य सरखा प्रकाशमान छे,ने शाम सुंदरछे, ने राधिकाजी ने लक्ष्मीजीए सहित छे,ने नंदने सुनंदने श्री दामादिक जे पार्षद तेमणे सेव्या छे, ने अनंत

कोटी ब्रह्मांडनी जे उत्पत्ति स्थितीने प्रलय तेना कर्त्ता छे, ने महाराजाधिराजपणे विराजमान छे,अने एवा जे ए भगवान ते चतुर्भुजरूपने धारे छे,अष्टभूज रूपने धारे छे, ने शस्त्र भुज रूप ने पण धारे छे,ने वासुदेव, संकर्षण, अनिरुद्ध ने प्रद्युम्न ए जे चतुर्व्युहने केशवादिक जे चोविशव्युह ए सर्वे रूपने धारेछे,तथा वाराह,नृसिंह,वामन,कपिल,हयग्रिव,ए आदिक जे अनेक अवतार तेने धारे छे,ने पोते तो सदा द्विभुज छे.अने उपनिषद तथा सांख्य शास्त्र ने योगशास्त्र तथा पंच रात्र एमने विषे एज स्वरूपनुं वर्णन कर्युंछे. एवी रीते परोक्षपणे भगवाननुं स्वरूप कह्युं. अने सर्वे जे आचार्य थया छे तेमां व्यासजी मोटा आचार्य छे ने ते व्यासजीजेवा तो शंकराचार्य न कहेवाय, रामानुजाचार्य न कहेवाय,मध्वाचार्य न कहेवाय,निंबार्क नकहेवाय विष्णुस्वामी न कहेवाय,वलभाचार्य न कहेवाय, केम जे ए आचार्यजो व्यासजीना वचनने अनुसरे तो ए आचार्यना वचननुं लोकमां प्रमाण थाय नहि तो न थाय. अने व्यासजीने तो बिजा कोइनी अपेक्षा नथी केम जे व्यासजी तो वेदना आचार्यछे ने पोते भगवानछे माटे आपणे तो व्यासजीना वचननेज अनुसरवुं. अने ते जे व्यासजी तेणे जीवना कल्याणने अर्थे वेदना विभाग कर्या ने सतर पुराण कर्यां ने महाभारत कर्युं तोपण ते व्यासजीना मनमां

एम थयुं जे जीवना कल्याणनों उपाय जेमछे तेम यथार्थ न कैहेवायो ने तेणे करीने पोताना
मनमां संतोष न थयो. ते पछे समग्र वेद, पुराण, इतिहास, पंचरात्र, योगशास्त्र, सांख्यशास्त्र,
तेनुं सार एवुं जे श्रीमद्भागवत पुराण तेने व्यासजी करता हवा. ते भागवतने विषे सर्व अव
तार करतां श्री कृष्ण भगवाननेज अधिक पणे कह्याछे. ने सर्व अवतारना धरनारा जेछे तेज
स्वयं श्री कृष्ण भगवानछे. अने ए श्री कृष्ण भगवाने उद्धव प्रत्ये गुण विभागना अध्यायमां
कह्युंछे जे हुं निर्गुणछुं, जे मारा संबंधने जे पामेछे ते पण निर्गुण थायछे, माटे कामभाव, द्वेष
भाव, भयभाव, संबंधभाव, स्नेहभाव, एमांथी जे जे भावे करीने ए श्री कृष्ण भगवानने जे जी
व आसरया ते निर्गुण थइ गया. माटे ए श्री कृष्ण गभवान ते निर्गुणछे एवी रीते व्यासजी
ये श्रीकृष्णभगवानने कह्याछेने ते व्यासजीयें एम सिद्धांत करयोछे जे सर्व अवतारना धरतल जे परमेश्वर तेज
स्वयं श्रीकृष्णभगवानछेने बिजा जे अवतार ते एनाछे. अने जो ए श्रीकृष्णभगवानने निर्गुण नही कहेने शुद्ध
सत्वात्मक कहेशे, तो तेने भागवतना पुर्वापरसंबंधनी खबरथज नथी ने तेने विषे मोटो बाध आ
वशे, केमजे गोपियुंए श्री कृष्णने भगवान न जाण्या ने काम भावे करीनेज ए श्रीकृष्णभगवान
ने भज्या, तेणे करीने ते गोपियुं निर्गुण थइ गइ. त्यारे ते श्री कृष्ण भगवानने शुद्ध सत्वात्म-

कं केम केहेवाय? माटे श्री कृष्ण भगवान तो निर्गुणज छे. तथा श्री कृष्ण भगवाने पोते अर्जुन प्रत्ये कह्युंछे जे।। जन्मकर्मचमेदिव्यमेवंयोवेत्तितत्वतः त्यक्त्वादेहंपुनर्जन्मनैतिमामेतिसोऽर्जुन।। अने ए श्री कृष्ण भगवाने पोताना जन्म समयमां वसुदेव देवकीने परमेश्वर पणानी प्रतितिने अर्थे जे चतुर्भुज रूप देखाडयुं तथा ब्रह्माने जे अनेक चतुर्भुज रूप देखाडयां तथा अक्रुरने जे शेसाइ रूप देखाडयुं तथा अर्जुनने विश्वरूप देखाडयुं, इत्यादीक रूपने भेदे करीने जे श्री कृष्ण भगवाननी उपासनाना भेद केहेवा तेतो योग्यछे, पण ए श्री कृष्ण भगवान व्रजने विषे बाळ मुकुंद कहेवाया, मुरली मनोहर केहेवाया, राधा कृष्ण कहेवाया, तथा वाछडां चार्यां गायो चारी, गोवर्द्धन पर्वत धार्यो, गोपीयुं साथे रास क्रीडा करी, तथा मथुरांपुरीमां आवीने कंसने मार्यो जादवने सुखिया कर्या, तथा सांदिपिनी ब्राह्मणने घेर विद्या भण्या, तथा तथा कुबज्या संघाथे विहार कर्यो, तथा द्वारिका पुरीमां वस्या, ने रुक्मीणी आदिक अष्ट पटराणीयुं ने परण्या, तथा सोळ हजार स्त्रीयुंने परण्या, तथा हस्तीनापुरमां रह्या, ने पांडवनी सर्व कष्ट थकी रक्षा करी, ने द्रौपतीनी लाज राखी, ने अर्जुनना सारथी थया, इत्यादिक स्थानकने भेदे करीने जे श्रीकृष्ण भगवाननी अनेक लीला छे तेणे करीने ए श्रीकृष्णभगवनना द्विभुज स्वरूपने वि

प उपासनानो भंद न करवो ने जे करशे ते वचन द्रोही गुरु द्रोहीछे. अने ए श्रीकृष्ण भगवाननां आचरण जे गोवाळियानुं उछिष्ट खाधुं तथा रास रमण कर्युं इत्यादिक अनेक प्रकारनां छे ते आचरण प्रमाणे श्रीकृष्णभगवानना भकने आचरण न करवुं. अने ए श्रीकृष्णभगवाने एकादश स्कंधमां तथा भगवद्गीतामां तथा वासुदेव महात्ममां जेम साधुनां लक्षण कह्यांछे तथा वर्णाश्रमना धर्म कह्याछे तथा पोतानी भकि करवानुंए कह्युंछे ते प्रमाणे वर्तवुं पण एश्रीकृष्णभगवानाना आचरण प्रमाणे आरचण न करवुं ने जे करशे ते विमुखछे अमारो सत्संगीनथी.अनेआपणाइष्टदेवएवाजेएश्रीकृष्ण भगवानतेनाआचरणप्रमाणेजेमन करवुंतेमजतमारो सर्वेनोआचार्यनेगुरुने उपदेशएवोजेहुंतेमारादेहनांजेआचर्णनेप्रमाणेपणतमारेन करवुं. अनेअमारा संप्रदायनेविषेजेमजेना धर्मकह्याछेते जेअमारांवचनते प्रमाणे तमारे सर्वेने रेहेवुं, पणअमारां आचरण प्रमाणे न रेहेवुं. आजे अमे वार्ता करी तेने सर्व पर्महंस तथा सर्व सत्संगी शिखी लेजो ने ए प्रमाणे समजीने एमज वरतजो ने बिजा आगळ पण एमज वार्ता करजो. एम कहीने श्रीजी महाराज भोजन करवा पधार्या एवी रीतनी वार्ताने सांभळीने सर्वे साधुने सत्संगी ते एम समजता हवा जे ए परोक्षजे श्री कृष्ण भगवाने कह्यां तेज आ भक्ति धर्मना पुत्र श्री

जीमहाराजछे,पणएथकीपरकोइनथीअनेएजआपणाइष्टदेवछेनेगुरुएजछे.इतिवचनामृतम्१८॥२१

संवत १८८४ना महा सुदि २ बिजने दिवस श्रीजी महराज सांजने समे श्री व- वरताल मध्ये श्रीलक्ष्मीनारायणना मंदिरमां उगमणी कोरनी रूप चोकी उपर गादी तकिय- नंखावीने विराजमान हता, ने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां अने पोताना मुखारविंद आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे ठाकोराजीनी संध्या आरती थइ रही त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे सांभळो भगवाननी वार्त्ता करिए छीए. आ जीवने ज्यारे भरतखंडने विषे मनुष्य देह आवेछे त्यारे भगवानना अवतार कां भगवान- साधु ए जरूर पृथ्वी उपर विचारता होय तेनी जो ए जीवने ओळखाण थाय तो ए जीव भ- वानमो भक्त थायछे. पछे ए भगवाननो भक्त थयो तेने भगवान विना बीजो कोइ पदार्थने वि- षे प्रीति राखवी घटे नाहि. शा माटे जे भगवानना धामनुं जे सुखछे तेनी आगळ माइक पं- विषयनुं सुखछे तेतो नर्क जेवुं छे, अने जे नर्कना किडा छे तेतो नर्कने विषे पर्म सुख माने पण जे मनुष्य होय तेतो ते नर्कने पर्म दुखदाइ जाणेछे.तेम जेने भगवाननी ओळखाण थइ तो भगवाननो पार्षद थयो ने तेने भगवाननो पार्षद मटीने विष्टाना किडानी पेठे माइक पंच

पयना सुखने इच्छवुं नहि. अने जे भगवाननो भक्त होय तेतो जे जे मनोर्थने करे तें सर्वें सत्य छे. माटे भगवान विना बिजा पदार्थने अण समजणे करीने जे इच्छे एत्र एने मोटो अविवेक छे ते सारु जे भगवाननो भक्त होय तेणे तो चौद लोकनां जे भोग सुखछे तेने काक विष्टा तुल्य जाणवां जोइए. अने मन कर्म वचने करीने भगवानने भगवानना भक्तने विषेज दढ प्रीति करी जोइए अने एम समज्युं जोइए जे जे भगवाननो भक्त होय ने तेने जो कदाचित भगवान विना बिजी वासना रही गइ होय. तो ते पण ईंद्र पदवी पामें कां ब्रह्म लोकने पामे पण प्राकृत जीवनी पेठे नर्क चोराशीमांतो जाय नहि.त्यारे जे यथार्थ भगवाननोभक्त होय तेनो जे महिमा ने तेनुं जेसुखतेतो वर्णव्यामांज केमआवे,माटेभगवाननोभक्तहोयतेनेतो भगवानमांजदढ प्रिति राखवी.इतिवचनामृतम्॥१९॥२१९

संवत १८८४ ना माहा सुदि ३ त्रिजने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री वरताल मध्ये श्री लक्ष्मीनारायणना दरबारमां लिंबडाना वृक्षनी हेठे वेदीका उपर गादी तकिया नंखावीने विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठने विषे चमेलीना पुष्पनो हार विराजमान हतो अने मस्तक उपर राती अतलसनुं छत्र विराजमानहतुं;

अने पोताना मुखारविंद आगळ मुनी तथा देश देशना हरीभक्तनी सभा भराइने बेठा हता. प
छे श्रीजी महाराजे परमहंसने प्रश्न पुछ्युं, जे रजो गुणमांथी कामनी उत्पति थायछे अने त
मो गुणमांथी क्रोध ने लोभनी उत्पति थायछे माटे ए कामा दिकनुं विघ्न न रहे एवुं एक सा
धन [illegible]युंछे पछे शुक मुनीये कह्युं जे ज्यारे निर्विकल्प समाधि थाय ने ज्यारे आत्म दर्शन
थाय त्यारेज एना ह्रदामांथी कामादिकनुं बीज बळी जाय. पछे श्रीजी महाराजे आशंका क
री जे शिव, ब्रह्मा, शृंगी रुषि, पराशद, नारद, एमने शुं निर्विकल्प समाधी नोती जे कर्मे
करीने ए सर्वे विक्षेपने पाम्या? माटे ए सर्वे निर्विकल्प समाधिवाळाजहता तोपण ईंद्रियोनीवृत्ति
क्षोभ थइ त्यारे कामादिके करीने विक्षेपने पाम्या माटे तमे कह्युं एवी रिते ए प्रश्ननो उत्तर
न थयो. अने जेम ज्ञानी निर्विकल्प समाधीने विषे जाय त्यारे निर्विकार रहे छे, तेमज अज्ञा
नी सुषुप्तिने विषे निर्विकार रहे छे. अने ज्यारे ईंद्रियोनी वृत्ति क्षोभ थाय छे त्यारे तो ज्ञानीने
अज्ञानी बेय कामादिके करीने विक्षेपने पामे छे, एमां तो ज्ञानी अज्ञानीनो कांइ विशेष ज-
णातोमाटेहवेबिजा परमहंस उत्तर करो. पछे तो गोपाळानंद स्वामी देवानंदस्वामीनित्यानंदस्वा-
मी, मुक्तानंद स्वामी, ए सर्वे मळीने जेवो जेने भास्यो तेणे उत्तर कर्यो? पण श्रीजी महारा-

जना प्रश्ननुं कोइथी समाधान थयुं नहि. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे जेम जनकविदेही हत ते प्रवृति मार्गमां हता तो पण निर्विकार हता अने ज्यारे जनकनी सभामां सुलभा नामे सन्यासीनी आवी, त्यारे जनकराजा सुलभा प्रत्ये बोल्या जे तुं मारा चित्तने मोह पमाडयानुं करे छे, पण मारा गुरु जे पंच शिख ऋषि तेनी कृपा थकी हुं सांख्य ने योग ए बे मतने अनुसर्यो छुं. माटे मारा अर्धा शरिरने चंदन चरचे अने अर्धुं शरीर तरवारे करीने कापे ए बेय मारे बरोबर छे. अने आ मारी मिथिला पूरी बळी जाय तो पण मारुं कांइ बळतुं नथी. एम हुं प्रवृत्तिमां रह्यों थको असंगी ने निर्विकार छुं. एवी रीते राजा जनके सुलभा प्रत्ये कह्युं अने शुकदेवजीना पण राजा जनक गुरु केहवाणा माटे ए प्रश्ननो ए उत्तर छे जे इंद्रियोनी वृत्ति अनुलोम पणे वर्तार्ते होय अने प्रवृति मार्गमां रह्यो होय, तो पण जो राजा जनकना पेठे जेना ह्रदामां समजणनी दृढता थइ होय, तो ते कोइ रीते विकारने पामे नहि अने जेने जेवुं जाण्युं जोइए तेवुं यथार्थ जाण्युं होय जे आते सार छे ने आते असार छे, पछे एक भगवाननी मूर्त्ति विना जेटलो माइक आकार छे ते सर्व अतिशे दुख दायक छे ने नाशवंत छे एम जाणे अने पोताने देह इंद्रियो, ने अंतःकर्ण ते थकी नोखो आत्मा रुपे जाणे

पछे एने एवुं कोइ पदार्थ नथी जे मोह पमाडवाने अर्थे समर्थ थाय. केम जे एतो सर्वे माइक आकारने तुच्छ करी जाणे छे. अने एवी रीते जेना अंतरमां समजणनी घेड बेठी होय ने तेनी इंद्रियो प्रवृत्ति मार्गने विषे सर्वे लोमपणे वर्तता होय, तो पण ते कामादिके करीने क्षोभने न पामे एवो जे हरिभक्त होय, ते त्यागी होय अथवा ग्रहस्थ होय पण तेना हृदामांथी कामादिकनुं बिज नाश पामी जाय छे. अने एवो होय तेज सर्वे हरिभक्तमां श्रेष्ट वैश्नव छे. माटे ग्रहि त्यागीनो कांइ मेळ नथी. जेनी समजण मोटी तेनेज सौथी मोटो हरीभक्त जाणवो. अने शिवब्रह्मादिकने विषे जे खोट केहेवाय छे तेनुं तो एम छे जे केटलाकने विषे तो आवी रीतनी समजणनी कसर छे ने केटलाकने विषे तो आवी समजण होय, तो पण भुंडा देश,काळ संग,क्रियादिकने जोगे करीने तेमने कामादिक विकार रूपखोट कहेवाणीछे.माटे आवीसमजण होय,तोपण कोइ प्रकारेकुसंगनोकरवोज नहि,एसिद्धांतवार्त्ताछे ॥इतिवचनामृतम्॥२०॥२२०॥

संवत १८८४ ना माहा वदी ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री अमदावाद मध्ये श्री नरनारायणना मंदिरमां आथमणे कोरे मुखारविंद करीने विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां ने कंठने विषे गुलाबना पुष्पना हार विरा

जमानहता ने काननी उपर गुलाबनापुष्पनागुच्छ विराजमान हतानेपाघनेविषेगुलाबनापुष्पनातोर विराजमानहताअनेपोतानामुखआगळसर्वसाधुतथा देशदेशनाहरिभक्तनीसभाभराइनेबेठ ते सभामा श्रीजी महाराज अंतर सामी द्रष्टि करीने विराजमान हता. पछे नेत्र कमळने उघा डिने सर्व सामुं जोयुं पछे एम बोल्या जे अमारे एक ध्यानना अंगनी वार्त्ता करवीछे,ते वात्त मोक्ष धर्मने विषे पण कहीछे, अने जे मोटा मोटा ए ध्याने करीने सिद्ध दशाने पाम्याछे ते पण अमे घणाक दिठाछे, ने अमारा पण अनुभवमां एम वर्त्तेछे जे अनंत प्रकारनां ध्यानछे, पण जे आ वात केहेवेछे तेनी बरोबर बिजुं कोइ ध्यान थाय नहीं,जेम कोइक चमत्कारि मंत्र होय अथवा चमत्कारी ओषधी होय तेमां स्वाभावीकज चमत्कार रह्योछे, तेम जे आ ध्यान अमारे केहेवुंछे ते ध्यानमां पण एवो स्वभावीक चमत्कारछे जे तत्काळ सिद्ध दशानेपामी जाय हवे ते वार्त्ता करीयेछैये जे ध्याननो करनारोछे तेने जमणा नेत्रमां सूर्यनुं ध्यान करवुं ने डाबा नेत्रमां चंद्रनुं ध्यान करवुं, एवी रिते ध्यान करतां करतां सूर्यने चंद्रमा जेवा आकाशमांछे तेवाने तेवाज देखावा मांडे त्यारे जमणुं नेत्रछे ते तपवा मांडे ने डाबुं नेत्रछे ते ठरवा मांडे त्यारे सूर्यनी धारणा डाबा नेत्रमां करवी ने चंद्रनी धारणा जमणा नेत्रमां करवी,एवी री

ते धारणा करीने पछे सूर्यने ने चंद्रने अंतर द्रष्टि करीने हृदाकाशमां जोया करवा,अने जो-
नारो जे पोतानो जिव तेना रूपने पण देखवुं, अने देखनारो जे जिवात्मा तेने विषे परमात्मा
नुं ध्यान करवुं, पछे तेनुं जे वासनालिंग देहछे ते जेम रेंटनो फाळको फरे तेम आकाशने वि
षे फरतुं जणायछे. एवी रीते ध्यान करतां थकां भगवाननुं जे विश्वरूपछे तेनुं दर्शन तेने था-
यछे, ने ते रूपने विषे चौदे लोकनी रचनाछे ते देखाइ आवेछे. अने ते स्वरूप अतिशे मोटुं
पण नथी देखातुं,जेम वटपत्रशाइ भगवान एक वडनापत्रमां नाना बाळक थइने पोढया हता.
अने तेज भगवानना उदरने विषे मार्कंडेय रूषीये समग्र ब्रह्मांड दिठुं,एवी रीते भगवाननुं ध्यान
करतां थकां जेटलां कांइ शास्त्रमां पदार्थ कह्यांछे ते सर्वे एनी द्रष्टिमां आवेछे. त्यारे एना
जिवात्माने विषे जे कांइक नास्तिकभाव रह्यो होय ते मटी जायछे. अने तेनो जीव
अती बळियो थाय छे, अने जे जे शास्त्रमां कह्युंछे ते सर्वे सत्यछे एवी एने दृढ प्रतिती
आवे छे अने अणिमादिक अष्टसिद्धियुं ते पण ए ध्यानना करनाराने आवीने हाजरथायछे.
अने ज्यां लगण सूर्यनीने चंद्रनी किरण पोचती होय त्यां लगी तेनी दृष्टी पोचे एवी अनंत
सिद्धियुं प्रगटे छे. पण परमेश्वरनो भक्त छे माटे कोइ सिद्धियुने ग्रहण करतो नथी, केवळ

परमेश्वरनुंज ध्यान करे छे. त्यारे ध्याननो करनारो नारद,सनकादिक,शुकजीना सरखो सिद्धदशाने पामे छे. माटे अनंत प्रकारनां ध्यान छे, पण तत्काळ सिद्ध दशाने पमाडे एवुं तो एज ध्यान छे. एटली वार्त्ता करीने रह्या. त्यारे मुक्तानंद स्वामीए पुछयुं जे एवुं आ यान ते अष्टांग योगने मार्गे करीने प्राणायाम करतो होय तेनेज सिद्ध थाय छे के बिजाने पण थाय छे?त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे प्राणायामवाळानो कांइ मेळ नथी एतो जो एवा ध्याननो अभ्यास करे ने ते परमेश्वरनो एकांतिक भक्त होय तो तेनेज ए ध्यान सिद्ध थायछे पणबिजा जिव थकी तो ए मार्गने विषे चलातुंज नथी माटे ए ध्यानना जे अधिकारी छे, तेने तो कह्युं एवुं जे ए ध्यान ते थकी बिजो तत्काळ सिद्ध थयानो उपाय नथी इतिवचनामृतम् ।१।२२२

संवत १८८४ना फागण सुदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री अमदावाद मध्ये श्री नरनारायणना मंदीर आगळ वेदिने विषे पाट उपर गादी तकिया नखावीने विराजमान हता अने धोळो खेस पेहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती. ने मस्तकने विषे गुलाबी रंगनो फेंटो बांध्यो हतो ने ते पाघने विषे गुलाबना पुष्पना तोरा झुकी रह्या हता ने कानने उपर गुलाबना बे गुछ खोश्या हता ने कंठने विषे गुलाबना पुष्पना

हारपेरया हता ने वे भुजने विपे गुलावना वाजु बांध्या हता ने वे हाथने विपे गुलचना गजरा पेहेरथा हता. एवी रीते सर्वे अंगमां गुलावना पुष्पे गरकाव थया हता अने पोतानामुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देशदेशना हरीभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछेश्रीजीमहाराजसर्वेपमंहंस प्रत्ये बोल्या जे एक प्रश्न पुछुछुं जे एक परमेश्वरनो भक्त ते तो जाग्रत, स्वप्न ने सुपुप्तितेथकी पर वर्त्ते छे ने मलीन रज, तम ने मलिन, सत्व तेनो त्याग करीने शूद्ध सत्वमय वर्त्ते छे, नेएवोथकोपरमेश्वरनेभजेछे. नेबिजोजेभकछेतेतोत्रिगुणात्मकवर्त्तेछे. नेपरमेश्वरने विपे तो अतिशे प्रीतिए जुक्त वर्ते छे. एबेभक्तमांकियोभक्तश्रेष्टछे? पछेसंतमंडळेतो एमकह्युंजेभगवानने विपे प्रिति वाळो श्रेष्ठ छे. त्यारेश्रीजीमहाराज बोल्या जे एकतो नाही धोही पवित्र थइने भगवाननी पुजा करे छे अने एकतो मळ मुत्रनो भर्यो थको भगवाननी पुजा करे छे, ए बेमां कीयो श्रेष्टछे? त्यारे मुनी मंडळे कह्युं जे पवित्र थइने भगवाननी पुजा करेतेश्रेष्टछे. त्यारेश्रीजीमहाराजबोल्या जे जे माइक उपाधिने तजीने भगवानने भजे छे तेनेतो तमे न्युन कहोछो नेजे माइक उपाधिए सहित थको परमेश्वरने विपे प्रितिवान छे तेने श्रेष्ट कहो छो ते केइ रीते श्रेष्ट छे? पछे एप्रश्न नं कोणगी समाधान न थयुं. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे गीतामां चार प्रकारना भक्त कह्या

छे तेमां ज्ञानीनेज भगवानने पोतानो आत्मा कह्योछे. माटे जे माइक उपाधिने तजीने ब्रह्मरूप थइने भगवानने भजे तेज भक्त श्रेष्ट छे. शा माटे जे नित्य प्रलय जे सुषुप्तिने निमित्त प्रलय जे ब्रह्मानी सुषुप्ति ने प्राकृत प्रलय जे प्रकृतिनुं कारज सर्वे प्रकृतिने विषे लीन थइ जाय अने आत्यंतिक प्रलय जे ज्ञान प्रलय तेमांतो प्रकृति पर्यंत सर्वे ब्रह्माना प्रकाशने विषे लीन थइ जाय छे. अने नित्य प्रलयमां जीवनी उपाधि लीन थायछे. अने निमित्त प्रलयमांइश्वरनी उपाधि लीन थइ जायछे. ने प्राकृति प्रलयमां पुरुषनी उपाधि सर्वे लीन थइ जायछे, पण ज्यारे सृष्टि सृजायछे त्यारे ए त्रणेने पोतें पोतानी उपाधि वळगे छे अने आत्यंतिक प्रलय जे ज्ञान प्रलय तेणे करीने जेणे माइक उपाधीनो त्याग कर्यो तेने तो पाछो कोइ काळे माइक उपाधी वळगती नथी. अने ए जो कोइक काळे देह धरे, तो जेम भगवान स्वतंत्र थको देह धरे छे तेम ते पण स्वतंत्र थको देह धरे छे. पण काळ, कर्म ने माया तेने आधिन थको देह नथी धरतो, माटे ब्रह्मरुप थइने परमेश्वरने भजे तेज श्रेष्टछे. अने आ वार्त्ताछे तेजे परमेश्वरना अनन्यभक्तछेअनेएकांतिकभक्तनांलक्षणेयुक्तछेतेनेज समजायछे ॥ इतिवचनामृतम॥ २ ॥ २२२

संवत १८८४ ना फागणवदी २ द्वितीयाने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजि महाराज

श्री अमदावाद मध्ये श्री नरनारायणना मंदिरने सनमुख ओटा उपर ढोलीयो ढळावीने ते उपर विराजमान हता ने मस्तक उपर गुलाबि रंगनी पाघ विराजमान हती ने ते पाघने विषे गुलाबना ने चमेलिना हार विराजमान हता तथा पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशनाहरिभक्तनिसभाभराइनेबेठीहती,पछेश्रीजिमहाराजेसमग्रमुनिमं डळप्रत्येप्रश्नपुछयुं जे जीव मात्र छे ते पंच विषयने आधारे जिवे छे. ते कांतो बाहार पंच विषयने भोगवतो होय, अने ज्यारे बाह्य पंच विषयनो जोग न होय त्यारे अंतःकर्णमां पंच विषयनुं चितवन कर्या करे पण ए जिव विषयना चितवन विना ने विषयने भोगव्या विना क्षण मात्र पण रहि शकतो नथी. अने जेम वडनुं वृक्ष छे तेनां जे मूळ ते वडने निलो राखे छे अने विजां सर्वे मूळ उखड़ी गयां होय ने जो एक वडवाइ पृथ्वीमां चोटी रही होय तो पण ए वडनुं वृक्ष निलुं रहे छे. एम उपर थकी कदाचित पंच विषयनो त्याग कर्यो छे पण अंतरमां पियनुं चितवन थायछे एज एने जन्म मर्णनुं हेतुछे.एवा जे पंच विषय ते परमेश्वरना भक्तने कइ रीते जन्म मरणना हेतु नथी,ए प्रश्नछे, पछे एनो उत्तर जेम समझायो तेम मुक्तानंद स्वामीयें कर्यो पण जथार्थ समाधान थयुं नही. पछे श्रीजि महाराज बोल्या जे ल्यो ए प्रश्ननो उत्तर अमे करीये,जे मा

यामय एवां जे त्रण शरीर तेनी भावनाये रहीत केवळ आत्म सत्तारूपे रहीनेजे भक्त परमेश्वरनी मुर्त्तियुंनुं चिंतवन करतो होय तेने भगवानना चिंतवनने बळे करीने ज्यारे उपशम अवस्था वर्त्ते त्यारे ए भक्तने उपशमने बळे करीने पंच विषय जन्म मर्णना हेतु न थाय. जेम महि जोवे के साभरमती जेवी नदी बे कांठामां वेहेती होय त्यारे हाथी घोडा वृक्ष सर्वे तणाइ जाय पण कोइ टरी शके नही. तेम उपशम वाळाने पण गमे तेवा रमणीक भोग इंद्रियोने गोचर थया होय पण, ज्यारे अंतर सनमुख दृष्टि करे त्यारे जेवा पूर्व जन्मने विषे देख्या होय ने ते आ जन्ममां विसरी जायछे तेवी तेनी विस्मृती थइ जायछे, एवी रीते जे भक्तने वर्त्तु होय ते उपशम केहेवाय. ते उपशमनो महिमा अती मोटोछे: अने जेम आ संसारने विषे अज्ञानी स्त्री पुरुष होय ने तेने परण्या मोर अतीशे प्रीती वरतती होय ने पछे तेने परणावीने ए त्रण रात ने त्रण दिवस सुधी उजागरीने पंथ कराव्यो होय ने पछे ए बेने भेळां कर्यां होय तो निद्राने मार्ये एक बिजाना रूपनुं के स्पर्शनु सुख भोगववाने समर्थ थाय नही, अने एक बिजाने आलिंगन करी रह्यां होय तोपण जेम काष्टने साम सामां बांधि मुक्यां होय तेम सुतां होय पण पंच विषयमां एके सुख आवे नही,ए जो अज्ञान काळे

मुमुक्षमां उपसमने पाम्यां छे तोपण कोइ जातनी विशयनी खबर रहेती नथी तो, जे ज्ञानी ने छे ने परमेश्वरना स्वरूने ध्याने कराने उपसम दशाने पाम्यो छे तेने पंच विशय केम बाध करे, नज करे. माटे जे उपसम दशाने पाम्यो तेने पंच विषय जन्म मरणना हेतु थाता नथी पछे नित्यानंद स्वामीये पुछ्युं जे उपसम दशा पाम्यानो तमे कह्यो जे आत्मा रूपे थइने भगवानना ध्यान करवा रूपउपाय, तेतो अती कठण छे, माटेए विना बीजो एनो सुगम उपाय ते कहो? पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे एकतो भगवाननुं अतीशे महात्म समजतो होय अने बीजुं भगवानने भगवानना भकनी शेवा चाकरी दरशन करवुं तेमां अतीशे वेगवान श्रद्धा वर्ततो एवा जे भगवानना भक तेने ऊपसम दशा आवे छे, पण अमने एम भासे छे जे जे सेवक मानी हशे तेतो कोइने नही गमतो होय अने मांनी सेवक पासे जे टहेल चाकरी करावी तेतो जेम काळ पडे त्यारे मोटा माणस पण कोदरा खाइने जीवे तेम मानी शेवकन पासे सेवा चाकरी करावावी ते पण एवी छे. अने धणिनो राजीपो तो जेवो निर्मानी सेवक उपर होय एवो मानी उपर न होय, माटे धणिनुं गमतुं करे तेज सेवक साचो. पछे शुकमुनीये पुछ्युं जे जेने विवेकने समजण न होय ते धणीने केम राजी करे? पछे श्रीजि महाराज बोल्या जे मू-

ळजी ब्रह्मचारीने रत्नजी ए अतिशे क्यां डाह्याछे पण कल्याणनो खप अतिशे माटे भगवा-
न जेम राजी थाय तेम एमने करतां आवडेछे खरुं,अने वळी आ समयमां तो अयोध्यावासी
बाइ भाइ सर्वे जेवा अमारा गमतामां वरतेछे तेवांतो परमहंस तथा सांख्ययोगी ने कर्मयो-
गी सत्संगी ते पण अमारा गमतामां नथी वरतता, केमजे अयोध्यावासीए तो अतिशे सत्सं
ग पारायण पोतानुं जीवतव्य कर्युंछे, माटे अयोध्यावासीनी पेठे भगवानने राजी करतां को-
इने आवडतुं नथी, अने ए अयोध्यावासी तो बहु विश्वासछे,माटे कोइक कपटी हशे तो ए
मने छेतरी जाशे,ते सारु एमने कोइक कामनो आदर करवो होय सारे मोटेरा परमहंस
तथा मोटेरा सत्संगी ग्रहस्थ तेमने पुछीने ते काम करवा देवुं, पण कोइक एक जणाने कहे
करवा देवुं नही. एवी रीते त्यागी तथा ग्रहस्थ सत्संगीने अयोध्या वासीनी खबर राखवी
एम अमारी आज्ञाछे. ॥ इतिवचनामृतम् ॥ ३ ॥ २२३ ॥

संवत१८८२मा फागणवदी तृतीयाने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजिमहाराज श्री अमदावादे
श्री नरनारायणना मंदिरमे सनमुखे वेदीकां उपरगादी तकिये जुक्त जडोलियोते उपर विराजमा
न हता अने धोळा पागनो पेहरी धोळा चेत्री गुलाबना फुलना हार पेहर्या हता अने तोरा जुकी रह्या हता अने

श्रवण उपरगुलाबनागुच्छखोस्याहतानेगुलाबनाञ्चगणितहारकंठनेविपेविराजमानहतानेबाजुबंधत्र्यो
हेगुलाबनाबांध्याहता, नेपोतानामुखारविंदनोञ्चगळमुनीतथादेशदेशनाहरिभक्तनीसभाभराइनेबेठी
हती॥ पछेश्रीजीमहाराजउद्धुमुनिमंडळतथाहरिभक्तप्रत्येएमबोल्याजेसर्वेसांभळोञ्चाजएकवातक-
रवीछेतेकहोएछीएजेभगवान शिवाछेतोजन्मधरतेथकेपणञ्चजन्माछे ॥ञ्चनेदेहनेमुकतेसतेपणञ्चजर
ञ्चमरछेञ्चनेनिरंजनछेतेकहेतांमायानाञ्चंजनथकीरहीतछेनेमूर्त्तिमानछे॥ ञ्चनेज्योतिस्वरूपछे ञ्चक्षर
रूपछेञ्चंतर्यामीछेनेञ्चनंतकोटिब्रह्मांडनाञ्चाधारछेञ्चनेमनुष्यदेहनुंजेधरवुंनेमुकवुंतेतोनटवानी पेठेइंद्र
जाळसरखुंछेञ्चनेञ्चनंतकोटीञ्चक्षरादिकमुक्तनानियंताछेनेसर्वनास्वामीएवाजेश्री नरनारायणतेजेते
प्रथमधर्मदेवनस्त्रीएवांजेमूर्त्तितेनेविषेप्रगटथइनेबद्रिकाश्रमनेविषेतपकरेछे॥ञ्चनेपछीतेश्रीनरनारा
यणजेतेमच्छकच्छवाराहञ्चवतारवामनाञ्चवताररामकृष्णादिकजेदेहतेनेग्रहणकरीने पोतानेदेहेकरी
नेञ्चन्यजीवुंनादेहनाञ्चभिमाननोत्यागकरावीनेञ्चनेब्रह्मञ्चभिमाननोग्रहणकरावीनेते पछेपोतानादेहने
ञ्चन्यजीवुंनादेहनेसमदेखाडेछेजेमकांटेकरीनेकांटानेकाढीनेबेकांटानोत्यागकरीएछीए,तेम भगवान
पोतानादेहनोनेञ्चन्यजीवुंनादेहनोतुल्यपणेत्यागकरेछेतेभारतनेविषेञ्चाख्यानछेजेनृसिंहजीनेज्यारेदेह
त्यागकर्यानीइच्छाथइत्यारेञ्चंतर्यामिरूपेकरीनेशिवनाहृदयनेविषेप्रेरीनेशिवगासेसरभनोदेहधराव्यो

अनेतेसरभनेनृसिंहजीनेमांहोमांहीयुद्धथयुंनेपछेनृसिंहजीएपोतानुंदेहमुकीदिधुंएवीरीतेदेहनो ग्रहण करेछेनेपछे देहनो त्यागकरे छे तेमजरूषभ देवेअग्निने विषे बळीने देहनो त्यागकर्यो अनेश्री कृष्ण भगवानना पगमां तिर लाग्यो ने देहनो त्याग कर्यो ते चरित्रने देखीने जे नास्तिक मतिवाळा छे ने अभक्त छे तेनी बुद्धि भ्रमाइ जाय छे. अने भगवानने विषे जन्म मृत्युनो आरोपणकरे छे अने तेनी मतीने विषे एमजणाय छे जे भगवानपणकर्मे करीने देह नेधरेछे.अनेकर्मेकरीनेदेहनेमुकेछेअनेनिष्कर्मकर्मनेकरशेत्यारेकर्मखपावीनेमुक्तथशेअनेजेआस्तिकबुद्धिवाळाछेअनेहरिभक्तछेतेएमजाणेछेजेनास्तिकनोसमजणछेतेतोजुठीछेनेभगवाननोदेहतो नित्यछे॥अनेबाळयौवनवृद्धनेमृत्युइत्यादिकजेदेहनागुणतेभगवाननीलीलाछेअनेजेकाळकर्मनेमाया ते तोभगवाननादेहनेविषेचेष्टाकरवानेअर्थेसमर्थथातानथीअनेएभगवाननादेहनेविषेपरीणामपणुं जणायछेतेतोएभगवाननीमायाएकरीनेजणायछे॥ अनेतेनेविषेजेभगवाननाभक्तछेतेमोहनथीपामताने जेअभक्तछेतेनीमतीभ्रमीजायछेजेमनटनाचरीत्रनेदेखीनेजगतनाजिवनीमतीभ्रमीजायछेअनेनटनीविद्यानोजाणतलतेनीमतीनथीभमतीतेमपुरुषोत्तमएवाजेश्रीनरनारायणतेअनेकदेहधरीनेनटनीपेठेवर्तीछेनेएश्रीनरनारायणतेजेतेसर्वेनेअवतारतेनाकारणछेनेतेश्रीनरनारायणनेविषेमरणभावजे-का

पडेछेतेनेअनेकदेहधरवापडेछेनेचोराशीनादुखनोनेजमपुरीनादुखनोपारआवतोनथीअनेजेश्रीनरनारा यणनेविषेअजरअमरपणुंसमजेछेतेकर्मथकीनेचोराशीथकीमुकाइजायछेमाटेआपणाउद्धवसंप्रदा यनासर्वेसत्संगीतथासाधुतेजेतेभगवाननीमूर्त्तियुंजेथइगइयुंनेहमणांछेअनेआगळस्थापशेतेनेविषेमरण भावकोइकरशोमांअनेवार्त्तासौलखीलेज्योएमकहीनेश्रीजीमहाराजेपोतानुंवर्त्तमानकाळनुं प्रगट पणुंजणाताहवा ॥इति वचनामृतम् ॥ ४ ॥ २२४॥

संवत१८८२नाफागणवदि४चतुर्थीनेदिवस स्वामीश्री सहजानंदजीमहाराजश्रीअमदा-वादमध्येश्रीनरनारायणनामंदिरनेविषेपोतानेपोढवानीमेडीनेविषेविराजमानहताअनेढोलियाउपरत कियानुंउठिगणदेइनेहतुनेसर्वेश्वेतवस्त्रधारणकर्यांहतांनेकंठनेविषेगुलाबनोमोटोहार विराजमान हतो ने मस्तकने विषे पुष्पना तोरा लटकता हता ने हस्तकमळने विषे तुळशीनी मा-ळाने फेरवता हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मोटा मोटा मुनी तथा देश देशनाहरिभक्तनीसभाभराइनेबेठीहतीतेसमेकुबेरसिंघछडीदारेश्रीजीमहाराजनेप्रश्नपुछयुं जे,हेम-हाराजश्रीपुरुषोत्तमएवाजेभगवान तेनुंअसाधारणलक्षण ते शुंछे?पछेश्रीजीमहाराजबोल्याजेजीव ना,प्राण,नाडी,तेनोसंकेलोकरवोतेतोसिद्धथायनहि,नेलाखुमाणसनियममांरह्याथकांवशथइ रहे

वच

तोत्रिलाकोइ जीवथीथायनहि; अनेअक्षरआदिकजे मुक्तः तेनेपणनियममांराखवानेसमर्थछेएअसा-
धारणलक्षणकह्युं पछेवळी कुबेरसिंहे विनंतिपूछयुं जे,हे महाराजअसंख्यकोटीब्रह्मांडछेने भग
वाननोअवतारतो आजब्रह्मांडमानेजांबुद्वीपनेभरतखंडनेविषेछे॥ अनेबीजाब्रह्मांडमांअसंख्यजीव-
छेतोतेनुंनों उधारभगवान्शीरीतेकरताहशेतेकहो॥पछेश्रीजीमहाराजबोल्याजेभगवानआ ब्रह्मांड
नेविषेनिरा जेछेतेजभगवानसर्वनास्वामीछे नेअनंतकोटीब्रह्मांडनेविषेअसंख्यजीवुंनाकल्याणने. अर्थे
ब्रह्मांडब्रह्मांडप्रत्येभगवानपोतेदेहनेधारणकरेछेतेतेनेशरणेंअसंख्यजीवथायछेतेणेकरीनेअक्षर धाम
मांश्रीपुरुषोत्तमनाचरणारविंदनेघणाकजीवपामेछेएनोएजउत्तरछे, पछेवळीकुबेरसिंघेपुछयुं जेहेमहा
राजभगवानननेजाणवावाळाजेमरसंगीतेनेशुंशुंतजवुंनेशुंशुंग्रहणकरवुंतेकहो॥ पछेश्रीजीमहाराज ए
मबोल्याआलोकिकआशाछेतेनोत्यागकरवोनेभगवाननीकोरनीआशानुग्रहणकरवुं, नेजोधनने विषे
आशाहोयतोआशाएमबांधवीजेभगवानताधाममांसोनानामोरुंनाढगलानेढगलाछेनेहिरारतनमाणेक
अमुलतेनापणढगलानेढगलाछेएसर्वेभगवाननेभजशुंतोपामशुंएमआशाबांधवीपणआहियांनीआशा
नबांधवीअनेजोकामीहोयतोएमविचारकरवोजेपरस्त्रीसामीखोटीनजरकरशुंतोनरकनाचोराशीमांजावुं
पडशेनेत्यांमहादुखथाशेनेविषयतोकुतरां,गधेडां,पणभोगवेछे,अनेमुनेतोप्रगटप्रमाणपुरुषोत्तम.भग

वानमळयाछेतेनोकुराशीथाशेतोमोटीखोटआवशेएमजाणिनेकामवामनानोत्यागकरवोअनेभगवान संबंधी सुखनुं ग्रहण करवुं. ने देहना संबंधीमांथी प्रिति होय तेनो त्याग करवो ने भगवानने भगवानना दास जे संत ते संगाथे प्रीति करवी ए ग्रहण करवु, ने देहने विषे अहंबुद्धिहोयतेनोत्यागकरिनेभगवाननादासपणानीबुद्धिनुंग्रहणकरवुं नेभगवानअथवासाधुतेपोताने कांइकरीतेवढयाहोयनेतिरस्कारकर्योहोयतोतेनोमनमांथीत्यागनकरवोनेपोतानभूल्यजाणवोनेभगव ननेसंततेनोगुणग्रहणकरवो एवीरीतेसर्वेसवळुं विचारवुंपणअवळुंतोकोइदिवसविचारवुंजनहीएनो एजउत्तरछे॥ पछेनळीकुबेरसिंगेप्रश्नपुछयुंजेहेमहाराजधर्मअर्थकामनेमोक्षएचारनुंरूपकहोपछेश्री जिमहाराजमंदमंदहसीनेएमबोल्याजेअर्थनुंरूपतोएजजेजेणेकरिनेधनभेळुं करवुंअथवामोक्षसंबंधि पोतानोअर्थसाधवोएपणअर्थनुंरूपछे॥ अनेधर्मनुंरूपतोएजजेतेधनधर्मनेअर्थे सत्संगमांजवावरे पण कुमारगेस्यारेयनवावरेएधर्मनुंरूपछे॥ अनेकामनुरूपतोएजछेजेएकपरणेलस्त्रीराखेनेतेनोपणऋतु का ळेसंगकरेअनेनिजिस्त्रीयुंजगतमांछेतेनेमाबोनादिकरितुल्यजाणिनेत्यागराखे॥ अनेमोक्षनुंरूपतो ए जजेसत्संगसंबंधिजेसर्वेवर्त्तमानखबडदाररराखेनेभगवाननोअचळनिश्चेयराखेएचारेनो एजउत्तरछे एमकहिनेश्रीजिमहाराजपछेपोढीजातादवा॥ इतिवचनामृतम॥ ५ ॥२२५॥

संवत १८८२ना फागणवदि ६ छठने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराजश्री अमदावाद मध्ये श्रीनरनारायणना मंदिरनेसन्मुख वेदिका उपर गादीतकियो तेणेयुक्त जे ढोलियो ते उपर विराजमान हता ने सर्वे श्वेतवस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठने विषे गुलाबना हार पेर्या हता ने पाघने विषे उकोरे चमेलिना पुष्पना तोरा झुकी रह्या हता ने बे कान उपर गुलाबना गुच्छ विराजमान हता ने गुलाबनो मोटो गुच्छ हस्तकमळमां लइने मुखारविंद उपर वारमवार फेरवता हता ने ते ताना मुखारविंदनि आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठि हति ॥ पछे संध्या आरती थइ रहि ते केडे कुबेरसिंघजीये श्रीजिमहाराज प्रत्ये प्रश्न पुछयुं जे हे महाराज जे भगवानने भगवान जाण्या तेनो निश्चे डगे नहि ते कहो ॥ पछे श्रीजिमहाराज बोल्या जे आ वात तो सौने सांभळवा योग्य छे माटे सर्वे सांभळो जे आ सत्संगने विषे भगवान विराजे छे ते ज भगवान मांथी चोविसे अवतार थया छे ने पोते तो अवतारी छे ने एज सर्वे जिवना अंतरजामी रूप छे ने एज अक्षरधामने विषे तेजोमय छे ने सदा साकार रूप छे ने अनंत ऐश्वर्य युक्त छे ने एज राजाधिराज अनंत ब्रह्मांडना छे ने अक्षरब्रह्मना पण कारण छे ते भगवान प्रगट थइने ऋषभदेवनी क्रियाने ग्रहण करे त्यारे जाणीए जे ऋषभदेव छे ने रामावतारनुं चारित्र करे त्यारे जाणीए जे रामचंद्रजी रूप भगवान छे ते श्रीकृष्ण अवतारनुं चारित्र तथा लिला आचरे त्यारे जाणीए जे श्रीकृष्ण छे एज प्रकारे चोविस अवतारमां जे जे अवतारनी क्रिया जाण्या

अमदावादना ३जा वचनामृतथी पछीनां जे वचनामृत चालता आवे छे ते वडतालनी प्रतमां नथी.

मांआनेत्यारेएमसमजवुंजेमोरेभगवानना जेटलाअवतारथयाछेतेसर्वेआमांथीथयाछे। ।अनेतेछेतेजआ
नछेएमसर्वअंगेसमजेत्यारेनिश्चेतेनोडगेनहिनेएमनसमजेतोकांइकडगमगाटथायखरोएनोएज उत्त
रछे.नेतमनेसर्वनेआजभगवानमळ्याछेतेतोसर्वनाकारणछेनेसर्वअवतारनाअवतारीछेनेअक्षरधामना
धामीछे ॥ अनेतेजश्रीनरनारायणरूपेथइनेधर्मथकीभक्तिनेविषेप्रगटथयाछेतेमाटेआ श्रीनर नारायण
नीमूर्त्ति अमेआतेआग्रहकरीनेअमारूपजाणीनेसर्वथीप्रथमआश्रीनगरने ।विषेपधराव्याछेएजब्रह्म
मोहलनानीवासीछे ॥ त्यारेवळीकुबेरसींहजीयेकह्युंजे ब्रह्ममोहोलकेवोछेतेनुंरूपकहो।अनेतेने।विषेजे
भगवाननाभक्तछेतेनुंरूप कहो ॥ पछेश्रीजीमहाराजबोल्याजेअक्षररूपजेब्रह्मछेतेजश्री पुरुषोत्तमना-
रायणनेरहेवासारुंमोहोलरूपथयोछेनेसर्वेअक्षरब्रह्मथकीभगवाननामोहलरूपजेअक्षरब्रह्म तेअनादि
छेतेब्रह्ममोहलनेविषेबहुप्रकारनामोहोलछेतेमोहोलुंनेबहुप्रकारनागोखछेनेबहुप्रकारनाझरोखांछे,ने
बहुप्रकारनी तेनेअगासीयोछे,नेतेनेविषेबहुवीचित्रपणुंछे,नेबहुप्रकारनाफुंवाराछे,ने बहुप्रकारनाबा-
गबगीचातेमांफुलपणअनंतजातनांछेनेतेजोमयछेनेअनंतछेनेएनेकोइधामनीउपमानदेवाय एवुंछे।।अ
नेगोलोकपणएनेजकहीएछीएअनंतअन्यधामनीविभुतियोतेथकीअसंख्यकोटीजातनीशोभानुंअधि
कपणुंछे ने अपारछे॥अनेतेनुंद्रष्टांतएमजेजेमवादळांनेचारदशामांजोइएत्यारेएमजणायछेजेढळ-

तुढळतुंपृथ्वीनेजाणीए अडयुंछे पणचालीचालीनेथाकीजाइएतोयपणपार आवेनाहिने वादळने उचुं जोइएतोपणजाणीएजेआरह्युंपणविचारीनेजुवेतोघणुंउचुंछे ने अपारछे ने तेनोजोपारलेवामांडेतो पारआवेनहिआवो ब्रह्ममोहोलमोटोछेतेमोहोलने विषेजेअसंख्यमुकरह्याछेतेआकारसहिततेजोम यछेनेसर्वभुतप्राणीमात्रनाअंतरजामीरूपछेनेतेसर्वेभगवाननीसेवामांनिरंतरततपरेछेछे॥ अनेतेजेधाम नाधणीछेअनेअक्षरादिकनास्वामीनेपरब्रह्मश्रीपुरुषोत्तमजेछे ते जआसरसंगनेविषेविराजमानछेने आवोजेनोनिश्चेछेतेजब्रह्ममोहोलनेपामेछे॥ इतिवचनामृतम् ॥६॥२२६॥

संवत१८८२नाफागणवदी ७सातमनेदिवसस्वामीश्रीसहजानंदजीमहाराज श्रीअमदावाद नग्रमध्येश्रीनरनारायणनामंदिरनेविषेदरवाजानामेडाउपरवामुदेवमाहात्म्यवंचावताहता ॥पछेत्यांथी उठीनेदरवाजापासेलिंबडानावृक्षतळेढोलियाउपरसंध्यासमेश्रीजीमहाराजविराजमानथयाहता नेम- स्तकउपरगुलाबीरंगनोपाघबांधीहतीनेगुलाबनातोराखोस्याहतानेगुलाबनाहारपेहेर्यानेगरकावथया हताने श्वेतपछेडीओढीहतीने श्वेतसुरवाळपेहेर्याहतोनेउगमणेमुखाविंदेनेराजमानहता नेपोतानामुखा- विंदनीआगळमुनोतथादेशदेशनाहरीभक्तनीसभाभराइनेबेठीहतीतेसमेदवेप्रागजीएपर्महंसप्रत्येप्र- श्नपुछयुंजेभगवाननेविषेमनव्यभिचारनेकोइकाळेनपामेतेकहो. त्यारेश्रीजीमहाराजबोल्याजेएनोउत्त

रतोअमेकरशुंएमकहिनेश्रीजीमहाराजबोल्याजेअमेगामपिपराणामांलाधाब्राह्मणनेघेररामानंदस्वा मीने एम पुछयुं हतुं जे तमे सनातन इश्वरछो के आधुनी इश्वर छो ? त्यारे रामानंद स्वामी तो बोल्याज नहि न उत्तर पण ने कर्यो ॥ त्यार पछे अमे अगनोतरा काळमां अमे मांदा थया हता त्यारे अमे क्षिरसागरने विषे शेषसय्याने विषे सेषसाइ नारायणसुताछेत्यांहांगयात्यारेत्यांमेंरामानंद स्वामीनेजोयाजेधोळीधोतीपहेरीहतीनेपछेडी ओढी हती ने एवा बिजापणघणाकशेषशाइनारायणनाचरणाविंदनेसमीपबेठातेमेंजोयात्यारेमें नाराय- णनेकह्युंजेआरामानंदस्वामीतेकोणछे॥ पछेनारायण कहेजेएतोब्रह्मवेत्ताछे ॥ पछेरामानंदस्वामीतो नारायणनाशरीरनेविषेलिनथयात्यारपछेअमेदेहनेविषेआव्यानेअमनेकळतरबहुथयुंतेपछेअमे अं- तर दृष्टिकरी त्यारे प्रणव नादने जोयो ते जोतां जोतां नंदीश्वर पोठीयोआव्यो ते उपरबेसीने कैलासमां अमे गयानेत्यांथी गरुडउपर बेशीने वैकुंठतथा ब्रह्म मोहोल्ने विषे जाताहतात्याग रुडपणउडीशक्योनाहिएटलेअमेएकलाजउडयातेसर्वथकीपरएवुंजेश्रीरुपोत्तमनुंधामतेमांगयात्यांप णहुंजपुरुषोत्तमछुंनेमाराविनाबिजोमोटोकोइदेख्योनाहिएटलेठेकाणेफर्यानेपछेअमेदेहनेविषेआव्या नेफेरअंतरमांजोयुंत्यारेएमजणाणुंजेसर्वब्रह्मांडनीउत्पत्तिस्थितिनेप्रलयतेनोपणकर्त्ताहुंजछुंनेमारे ते

जेकरीनेअनंतब्रह्मांडनाअसंख्यशिवअसंख्यब्रह्माअसंख्यविष्णुंअसंख्यकैलाशअसंख्यवैकुंठअने गोलोकब्रह्मपुरनेअसंख्यकरोडत्रिजीभामकाओएसर्वेतेजायमानछेनेवळिहुंकेवोछुं तोमारापगने अंगुठेकरीनेपृथ्वीनेडगावुंतोअशंख्यब्रह्मांडनीपृथ्वीडगवालागेनेमारेनेत्रेकरीनेसूर्यचंद्रमातारा आदिक जेतेजवानछेएवोजहुतेमारेविषेएमसमजीनेजोनिश्चेकरेतोभगवाननेविषेमनकोइकाळेविभिचारनेपामे नहि ने जे जे जिवमारेशरणेआव्याछेनेएमसमजशेतेनेसर्वेनेहुंसर्वोपरीएवुंजेधामछेतेनेविषेपगाडी-शनेसर्वेनेअंतरजामीजेवाकरीशनेब्रह्मांडनीउत्पत्यादिककरेएवाशरणांगतनेकरवाछे पणपछेसाम-र्थिपामीनेएमजाणेजेहुंजमोटोछुंएमजाणीनेकापिरूपएवाजे श्रीनरनारायणतेनेगणवाजनहिएवो अ-हंकारआववादेवोनहिनेएमजाणवुंजेश्रीनरनारायणनीकरुणाएकरीनेहुंमोटपनेपाम्योछुंएमसमजवुंने एम श्रीजीमहाराजेप्रश्ननोउत्तरकर्यो॥ इतिवचनामृतम ॥ ७ ॥२२७॥

संवत१८८२ना फागणवदी८अष्टमीनेदिवसस्वामीश्रीसहजानंदजिमहाराजश्रीअमदावादनगर मध्येश्रीनरनारायणनामांदिरनेविषेसंतनीपंक्तिमांलाडुफेरवताहता॥अनेसुंदरश्वेतरुमाल मस्तकउपर बांध्योहतोनेडाबाखभाउपरखेसनाखीनेकसिनकेडबांधीहतीनेकंठनेविषेगुलाबनो मोटोहार विराजमानहतोनेपछेलाडुफेरवताफेरवता श्रीजीमहाराजएमबोल्याजेसाधुसर्वेनेचाकरीजेपरमहं-

सनेमांहोमांहीप्रश्नउत्तरकरतांक्रोधउपजेतथावादविवादकरतांक्रोधउपजे तथा कांइकपदार्थ लेवा
देवामांक्रोधउपजेतथाकोइकनेशिक्षाकरताहोय ने क्रोधउपजेतथापोतानीशुश्रुषाने विषे रेहेतो
होय जे साधु तेने पक्षपात करीने क्रोध उपजे तथा अपमाने करीने क्रोध उपजे तथा
इर्षाए करीने क्रोध उपजे तथा आसन करवाने विषे क्रोध उपजे तथा भग
वाननीप्रसादिनेहचवानेविषेन्युनअधिकपणुंकरेनेक्रोधउपजे इत्यादिकजेजेक्रियानेविषेक्रोधउपजेतेमो
टासाधुनेउपजेअथवानानासाधुनेउपजेतोजेनीउपरक्रोधऊपजेतेने एकसाष्टांगदंडवतप्रणामकरवो ॥
अनेगदगदहृदयथैनेदिनतायेकरीनेरूडांरूडांवचनबोलीनेतेनेप्रसन्नकरवोएमअमारीआज्ञाछेअनेजो
कोइकउपरद्रोहनिबुद्धिनोसंकल्पथायतोनिष्कपटथैनेपोतानेमुखेतेसंकल्पकेवोजेहेमहाराजआनिमित्त
नोभुंडासंकल्पतमारीउपरथयोअनेतेसंकल्पनोजेदोषतेनीनिवृतिनेअर्थे तेनिप्रार्थनाकरवीनेजोगृह
स्थउपरक्रोधउपजेतोतेपरमहंसग्रहस्थनीवचनेकरीनेप्रार्थनाकरेअनेबेठेथकेनमस्कारकरेपणसाष्टांग
दंडवतनकरेअनेजेसांख्ययोगिबाइयुंतेनेजोपरस्परक्रोधउपजेतोवचनेकरीनेप्रारथनाकरवीनेबेठेथके
नमस्कारकरवो ॥ अनेजेसांख्ययोगिपुरूषतथापरमहंसतेनीताएकरीतछेअनेजेनी उपरक्रोधउपजेतेनी
आगळपोतानीमोटपमुकिनेतेनेविषेआपणास्वामीजेश्रीनरनारायणतेनाभक्तजाणिनेनमस्कारकरवोनेप्रा

थनाकरवीपणदेहद्रष्टिनराखवीजेहुंमोटोछुंनेउत्तमछुंनेआतोमोटोनथीनेनीचछेएवीरीते देहद्रष्टिनकर वीअनेवळीआपणाइष्टदेवजेश्रीनरनारायणतेक्रोधतथामानतेनेनथीराखतामाटे आपणाउद्धवसंप्रदाय नाजेहोयतेक्रोधतथामानतेनोत्यागकरजोवळीजेमेंक्रोधनुंप्रायश्चितकह्युंछेतेनेजेकरशेतेनेउपरश्री नरनारायणप्रसन्नथाशेनेतेनुंअंतःकरणशुद्धथाशेअनेतेनाकाम,क्रोध,मान,लोभ,इर्षा, मद, मत्सर तेसर्वेनोनाशथाशेजाशेअनेक्रोधउपनोनेजेआप्रायश्चितनहिकरेतेनेसर्पतुल्यजाणवोपण तेनेसाधुनजाणवो.
॥इतिवचनामृतम्॥ ८॥ २२८॥

संवत१८८२नाचैत्रसुदि२द्वितीयानेदिवसस्वामीश्रीसहजानंदजीमाहाराजश्रीअमदावादनगरथी गाजतेवाजतेचाल्यातेसांजेगामश्रीअडालीएपधायीनेउत्तरादिकोरेगामथीआंबावाडियामांउतर्या ने त्यां मंच उपर विराजमान थया ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां ने कंठने विषे सुंदर पुष्पना हार पहेर्या हता ने पाघने विषे पुष्पना तोरा लटकता हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने ते समे श्रीजीमहाराजेमु क्तानंदस्वामीतथाब्रह्मानंदस्वामीआदिकसाधुसर्वेप्रत्येएमबोल्याजेसांभळोएकवातकरवीछेजेकांइक प्रभुभजतांसमजणमांफेररहेछेतेनेखोटपण बहुआवेछे ने भगवानजेनेश्रीपुरुषोत्तमकहीएजेनेश्रीकृष्ण

करीए जेनेश्रीवासुदेवकहीएजेनेश्रीनरनारायणकहीएनेजेनेपरब्रह्मकहीएजेनेश्रीनारायणकहीएते-
नुंसुखजयारथंआवतुंनथी॥अनेएकांतिकभक्तथवातुंनथीमाटेआज्ञावोनेप्रजापत्यादिकओदिदैनेजेज
क्तनाअष्टातेजेतेवारमवारआष्टिमेळाउत्पन्नथायछेनेअंतेमायानेविषेजलीनथायछेपणश्रीपुरुषोत्तम भ
गवानतेनेसमीपेअक्षरधामनेविषेजाताजनथीतेशासारुंतेमनीसमजणमांभुलछेत्यारे सर्वमुनीवो-
ल्याजेहे महाराजएमनेविषेशीजातनीभुलछे ते कहो॥पछेश्रीजीमहाराजबोल्याजेल्योजेअमे एमनी
भुल कहीएतेसांभळो जेए तोपोतपोतानीजोक्रियातेनुंबळसमजेछेअनेभगवाननाआशरानुंनेभगवाननु
बळनथ.समजतानेविजुं अक्षरब्रह्मरूपपोतानेनथीमानतानेअक्षररूपथईनेभगवानजेश्रीपुरुषोत्तमना-
रायण तेनादासपणेनेनथीमानताएभुलछेअनेत्रिजुंजेए श्रीकृष्णादिकभगवाननाअनंतअवतारतेनेतोए
सर्वअंशा करीनेजाणेछेएजएमने विषेमोटीभुलछेअनेआब्रह्मांडनीउत्पत्तिकेमथातीहशे एकवार ए
जोइएतोखराएवोसंकल्पपोतानामनमांरह्योहतो ते. संकल्पनेजोइनेभगवानतेजेतेतेमनेब्रह्मांडनीउत्प-
तिकरवासारुंत्यांहां ते माथेजोडीदिधाछे ते ब्रह्मांडमांजेटलाजीवछेतेटलीवारब्रह्मांडनीउत्पत्तिसा
थेजोडाशेत्यारेतेनोछुटकोथाशे नें त्यारपछेतेसमजणनोत्यागकरीनेभगवाननासमीपपणानेपामशेते
सारुंभगवाननेजाण्यापछेभगवानविनाबिजुंकांइजाणवाइछवुंनहि॥अनेभगवाननेभजीने जेब्रह्मांडनी

उत्पत्तिनासामृथनेइच्छेतेभक्त सामृथ्यार्थींकहीएनेकनीष्ट कहीएअनेजेकेवळआत्मारूप थइनेभगवाननेभजेतेतोकैवल्यार्थीजाणवोनेतेभक्तनोमध्यमछे ॥ अनेनिजजेप्रत्यक्षपुरूषोत्तमभगवाननीमूर्ति तेनीनिरंतरअनन्यपणेकरीनेसेवानेविषेनिष्टाएतोभगवत निष्टार्थीजाणवो ने एभक्तअतिशेश्रेष्टछेने अति उत्तमछे माटे आपणेतो सर्वे प्रगट प्रमाण श्री नरनारायण तेनी निष्टावाळा छीए॥ इतिवचनामृतम ॥ १ ॥ २ २९ ॥

संवत १८८२ना चैत्रशुदी ३नेदिवस स्वामीश्रीसहजानंदजी महाराजगामश्रीजेतलपुरमध्येमोहोलनीजग्यामांआसोपालवनीहेठेढोलियोविछाव्योहतो ते उपरविराजमानहतानेसर्वेश्वेतवस्त्रधारणकरयांहतांने कंठनेविषेगुलदावदिनाहारपेरयाहतानेमस्तउपरश्वेतपाघतेडोलरियानातोरातेणेकरीनेव्याप्तहतीनेबे काननेउपरबेकर्णिकारनापुष्पखोश्यांहतांनेहस्तनेविषेसुंदरलिंबुनाफळनेफेरवताहतानेदहाडोचारघडिचढ्योहतोनेपोतानामुखारविंदनीआगळसंततथादेशदेशनाहरीभक्तनीसभाभराइनेबेठीहती ॥ पछेश्रीजिमहाराजेसर्वसभामध्येप्रश्न कर्युजेएकतोद्वैतमतछेनेएकअद्वैतमतछे तेबेमांथीमुमुक्षुहोयतेकोणमतनेग्रहणकरेतेकहो ॥ त्यारेपुरूषोत्तमभटबोल्याजेहेमहाराजमुमुक्षुहोयतेनेतो द्वैतमतनेग्रहणकरवो ॥ त्यारेश्रीजिमहाराजे आशंकाकरीजेद्वैतमततोजीवइश्वरनेमायातेज्यारेमायारहे

छेतारेजीवनोमोक्षकेमथायत्यारेपुरुषोत्तमभटबोल्याजेशुभकर्मकरतांकरतांमोक्षथाय त्यारेश्रीजिम
हाराजवळीआशंकाकरीजेनिवृत्तीनेप्रवृत्तीएबेप्रकारनांजेकर्मछे तेतोसुषुप्तिमांलिनथैजायछेनेतेसुषु
प्तितोकेविछेतोजेमलोकालोकपर्वतउल्लंघवाकोइसमर्थनथीतेमसुषुप्तीजेछेतेनेउल्लंघवानेजीवकोइसम
र्थथतोनथीतोजेआगळमाय्यावस्थाछेतेतोबहुमोटीछेतेतोकेमजीवथीउल्लंघायत्यारेसंतनेएमसमजवुंजे
ज्यारेसर्वेकर्मअनेमायातेनानाशकरनारामायाथीपरजेसाक्षातकारश्रीपुरुषोत्तमभगवाननामळेलसंत
तेनीजीवनेप्राप्तिज्यारेथायछेत्यारेतेसर्वेनेओलंघायछेशासारुंजेत्यांहांकर्मनातिगोतेजनथीएमकहीनेप
छेश्रीजिमहाराजमोहोल्लउपरभोजनकरवापधारया ॥ पछेभोजनकरिनेपांछाआसोपालवहेठेढोलिया
उपरविराजमानथयानेसर्वेसंतनेनेहरिजनने अमृतदृष्टिएजोताथकाश्रीजिमहाराजएमबोल्याजेप्रथम
तोआजीवनेकोइनमानतोहोयत्यारेएनिवृत्तिकेविहोय.अनेपछेज्यारेसोमनुष्यएनेमानेत्यारेएनोअहंका
र तेपणनोखोजातनोथायछेनेज्यारेहजारमनुष्यमानेतथालाखमनुष्यमानेतथाक्रोडमनुष्यमानेत्यारेए
नोअहंकारतेजुदिजातनोथायछे॥ अनेक्यारेकब्रह्माजेवोथायनेक्यारेकतोशिवजेवोथायनेक्यारेकतो
इंद्रजेवोथायत्यारेतेसवळाविचारवाळोएमजाणेजेमारीजेमोटप छेतेआवडेनथीत्यारेशावडेछेतो
आत्मावडेमोटपछेअनेबिजुसंतनासमागमेकरीनेमोटपछेत्यारेजुवोनेएवामोटाजेछेतेपणसंतनाचरण

नीरजनेइ छेत्यारे संतनेविषे शीमोटपछेतेकहीयेछीयेजे द्रव्यपदार्थेकरीनेकेराज्येकरीनेतो कांइ संतनेमोटपनथीपणसंतनेतोमोटपभगवाननी उपासनानेभक्तितेवडेछेने बि.संतनेआत्मानिष्ठाछे॥ अनेएमनजणागतोएआत्मानेएमानिश्चेकरवोजेप्रगटभगवानजेनेमळ्याहोयएवाजे संतनेविषेआत्मनिष्ठा राखीनेतेजपोतानुंस्वरूपमानवुंत्यारेकोइकआशंकाकरेजेत्यारेस्वामीसेवकपणुंकेमरहेतोत्यांहांद्रष्टांतछेजेगालवराजाहतोतेनेयज्ञकरवोहतोत्यारेएनेश्यामकरणघोडालाववाहतात्यारेतेश्यामकरणघोडातोवरुणनेघेरहतात्यारेत्यांहांतोपोताथीजवायनहीत्यारेगालवराजाएगरुडजीनेतेडाव्या त्यारेगरुडजीआव्याछेतेगरुडउपरबेसिनेघोडात्यांथीलैनेआव्यातारेशुंगरुडजिनेविषेथीगालवराजानेदासपणुंमाटिगयुंएतोनमटयुंतेमब्रह्मतानेविषेआममानवुंतेशासारुंजएनेआवरणभेदक्षानिगतिछेतेसारुंएनेविषेआत्मबुद्धिराखवीपछेएमकह्युंजेआवार्त्तासर्वेद्रढकरिनेराखजोनेआवार्त्तासर्वेनुंजीवनछे॥ इतिवचनामृतम् १ ॥ २३० ॥

संवत१८८२नाचैत्रसुदी२त्रीजनोदिवसस्वामीश्रीसहजानंदजीमहाराजगांमश्रीजेतलपुरमध्येसांजनेसमेश्रीराधाकृष्णनामंदिरनाचोकवचेढोलियोविछाव्योहतोनेतेनाउपरपोतेविराजमानहतानेसर्वेश्वेतवस्त्रभारणकर्यांहतांनेपाघनेविषेडोलरियानातोरालटकताहतानेश्वेतपछेडिओढिहती अने

श्वेतवेस पेर्योहतोने श्वेतस्मालहस्तकमळनेविषेधरीरह्याहतानेपोतानामुखारविंदनी आगळमुनितथा देशनाहरिभक्तनीसभाभराइनेबेठाहती ॥ पछेश्रीजीमहाराजप्रत्येब्रह्मानंदस्वामीयेएमप्रश्नपुछयुंजे,हेम हाराजजतीकेनकहीएनेतेयतीनुंलक्षणकहोपछेश्रीजीमहाराजबोल्याजेज्यारेलंकामांहनुमानजी जा नकिजिनेखबरकाढवागयात्यारेजानाकीजीनेखोळवांहतांतेसारुजेटलीस्त्रीयुंलंकामांहतीतेसर्वेनेजो- ताहवातेपछेमनोहरीनेहनुमानजीदेखताहवात्यारेपोतेएमजाण्युंजेआजानकीजीहशेत्यारेएममनमांवि- चारकर्यो जे जानकीजीनेभगवानरघुनाथजीनोविजोगछेतेणेकरीनेआवुंशरीरपुष्टहोयनहिने आवी निंद्रापणनहोयएवोमनमां विचारकरीनेहनुमानजीपाछावळीनिसर्यानेपछेपोतानेएवोमनमां संकल्प थयोजेहुंजतिछुंनेमेंआस्त्रीयुंसर्वेजोइयुंतेनोमुनेकांइबाधनाह ॥ पछेवळीएमविचारकर्योजेमतोरघुनाथ जिनी आज्ञाएकरीने जानकीजीनीखबरकाढवीछेतेसारुमेंस्त्रीयुंजोइयुंतेनोमारे शोबाध छे अने वळीमनमांएमविचारकर्योजेमारीवृत्तिमांनेमारीइंद्रियुंमांपणरघुनाथजीनीक्रिपाएकरीनेक्षोभ पणन थी उपज्योतेएवोहोयतेजतिकहेवाय ॥ अनेवळीज्यारेजानकीजीनुं हरणथयुंत्यारेरघुनाथजीने ल- क्षमणजीनेउज्यांसुग्रिवफटकाशिळाउपरबेठाहतात्यांगयात्यारे सुग्रीवनेजणाव्युंजे जानकीजीनुंहर णथयुंछेतेमाटेआंइआव्याछइए तेजोकांइतमनेखबरहोयतोकहो ॥ त्यारेसुग्रीवेकह्युंजेहेमहाराज

आकाशनेविषेहेरामहेरामएवोशब्दथातोहतोतेमेंसांभळ्योहतो. अनेनिछुंजेआचीरमांबांधीनेघरेणां पडतांमुक्यांहतांतेमारेपासेमेंराख्यांछे त्यारेरघुनाथजीए कह्युंजेतेलावोजोइए त्यारेतेघरेणांसुग्रीवे रघुनाथजीनेआप्यां॥ पछेरघुनाथजीयेलेइनेलक्ष्मणजीनेदेखाडयांतेप्रथमतोकाननांदेखाडयां पछी हाथनाबाजुबंधआदिकदेखाडयांतेलक्ष्मणजीए एनेओळख्यां ॥ अने त्यारपछेपगनांझांझर देखाडयांत्यारेलक्ष्मणजीयेकह्युंजेहेमहाराजआतोजानकीजीनांझांझरखरां ॥ त्यारेरघुनाथजीए कह्युंजेहेलक्ष्मणजीबिजांग्रहणांनओळख्यांनेझांझरकेमओळख्यां त्यारेलक्ष्मणजीए कह्युं जेहेमहाराजजानकीजीनुंस्वरूपतेमेंनथीदिठुं॥ अनेमांजेपगेलागवाजातो त्यारेझांझरदिठांहतां ते सारुमें ओळख्यांएवी रीते चौदवरससुधसिवामांरह्यापण दृष्टिए करीने जानकीजीनुं स्वरूप एक चर्णाविंद विना बिजुं दिठुंज नहि माटे एवी होय ते जाति जाणवो. एम कहीने श्रीजीमहाराज बोल्या जे आब्रह्मानंद स्वामी छे ते पण ते जेवाज छे, एम सर्वे सभासांभळतेछतेब्रह्मानंदस्वामीनीश्रीजीमहाराजेयतिपणानीबहुप्रसंसाकरीनेगामवाहारमहाराज पधार्यानेयज्ञथयाहतातेठेकाणेपरथारउपरढोलियोबिछाव्योहतोतेउपरपोतेविराजमानथयाअनेपोताना मुखारविंदनीआगळमुनीतथादेशदेशनाहरीभक्तुनीसभाभराइनेबेठीहती॥ पछेश्रीजीयेकह्युंजेकांइ–

कप्रश्नउत्तरकरो।त्यारेपटेलग्रासजीभाइएप्रश्नपुछयुंजेहेमहाराजग्राजीवनुंस्वरूपतेकेवुंछे॥त्यारेश्रीम
हाराजबोल्याजेजीवतेग्रछेद्यग्रभेद्यग्रविनाशीचैतन्यरूपग्रणुमात्रछेत्यारेतेजीवक्यांरहेछेतोहृदाका
शनेविषेरहेछेग्रनेविविधाक्रियानेत्यांरह्योथकोकरेछे॥ग्रनेरूपजोवुंहोयत्यारेनेत्रद्वाराएकरीनेजुवेछे.
ग्रनेशब्दसांभळवोहोयत्यारेकानद्वारेग्रावीनेसांभळेछे,नेनासिकाद्वारेसारोनरसोगंधलेछे,नेरसना
द्वारेरसलेछे,नेत्वचाद्वारेस्पर्शनुंसुखलेछे,मनद्वारेमननकरछे,नेचितद्वारेचितवनकरेछे, नेबुद्धिद्वारे
निश्चयकरेछेएमदशेइंद्रियुंद्वारेतथाचारग्रंतःकर्णद्वारेसर्वेविषयनुंग्रहणकरेछेनेनखथीतेशिखापर्यंत
शरीरमांव्यापीनेरह्योछे॥एवीरीतेजिवनुंस्वरूपछेग्रनेग्रापणेप्रगटपरमांणपुरूषोत्तमएवाजेश्रीनरना-
रायणतेनेप्रतापेकरीनेएजिवनेशरीरपेठेग्रोळख्योछेनेजाण्योछेएमकहीनेसौने राजीकरीनेजयसच्चि
दानंदकहीनेमोहोल्यमांपोढवापधारताहवा॥ इतिवचनामृतम्॥ २॥ २३१ ॥

संवत १८८२नाचैत्रसुदी४चतुर्थीनेदिवसस्वामीश्रीसहजानंदजीमहाराजगामश्रीजेतलपुर
मध्येपोतानारहेवानोजेमोहोलतेनीग्राथमणीकोरनीसमीपेजेफुलवाडीतेनेविषेसवारमांपधार्याहता ने
वाडीनेवचमांमोटुंग्रारसडीनुंवृक्षतेनीहेठेचोतराउपरगादितकियेसहितजेढोलियोतेउपरउगमणेमुखा
विंदेविराजमानहतानेसर्वेश्वेतवस्त्रधारणकर्याहतानेकंठनेविषेचंपानांतथाग्रारसडीनाहारतथागुल्दा-

वादिनाहारगोहेर्याहतानेपाघनेविषेचमेलीनेडोलरियानातोरालटकतामुक्याहताने बेश्रवणउपरहजारी पुष्पनागुच्छखोस्याहतानेहस्त कमळनेविषेदाढमतथालिंबुनाफळनेफेरवताहता ॥ अनेपोतानामुखारविंदनीआगळमुक्तानंदस्वामीतथाब्रह्मानंदस्वामी आदिकमुनीतथादेश देशनाहरिभक्तनी सभा भराइनेबेठीहती ॥ पछेश्रीजीमहाराजघडीवार सुधिविचारीनेएमबोल्याजेसर्वेसांभळोएकवार्ताकरीए–छीएजेंदुष्टवासनाराखवीतेथकी कांइएभुंडुंनथीनेदुष्टवासनावाळाजेभक्तछेनेतेअमारसमीपरहेछेपणतेसुखीयानथीरेताकांजेतेणेप्रभुभजतांपथमएमंमाग्युंहतुंजेहेभगवानसमिपराखजोपणदुष्टवासनानमुकितेसारुदुखीयाछेत्यारेमुक्तानंदस्वामीये कह्युंजेहेमहाराजदुष्टवासनाकेमटळेतेकहोत्यारेश्रीजीमहाराजबोल्याजेदुष्टवासनाटाळवानोतोएमउपायछेजेज्यारेवरतमानथीबाहेरसंकल्पथायतथाकोइहरीजननोतथासंतनोअभावनोसंकल्पथायत्यारेनरनारायणस्वामीनारायणएमवारंवारपो कारीने नामउचारणकरवुं ॥ अनेत्रिजुं महात्म्येसहितनेधर्मेसहितभगवाननीनवप्रकारनीभक्तिकर्याकरेत्यारे तेभगवानतेनाहृदामांवासकरीनेदुष्टवासनानेनासपमाडेछेजेमगजनेग्राहनामुखथी भगवानेछोडाव्योमाटे आटलीवातसमज्यातोसर्वेसमजाइरह्युं तेवानवळीकहीएछीएछीए जेएकतोपांचवर्त्तमानपाळवांने बिजुंपोतानुं स्वरूपसाक्षीमानवुं जेसंकल्पतथानानाप्रकारनाजेतरकतेथकीपरजेआत्मातेहुंछुंनेआ देह

मनेसहितहुं नथी. एमविचारीनेभगवानकोइनीसामुंजोइनेहस्ताहोयअथवा बोइनेबोलावताहोयने
त्रिजांगमतेवांचरित्रकरतेमांकोइदहाडेअभावनआवेएवीरीतनोनिश्चयराखवोएटलुं समझ्यातोसर्वे
समझ्याछो।।अने वळीकोइकएमजाणेछे जे मेंतोमहाराजनेबहुंभज्यानेघणीएसेवाकरीपणआपण
नेतोमहाराजबोलावतानथी नेबिजानेतोबहुंबोलावेछे त्यारेआपणेघेरबेठांबेठाप्रभुभजशुं एमअवगु
णलेछेत्यारेअमेपणएमधारिए जे ए जिवने ने अमारे शुं तोएजिवनुंठेकाणुं रहेजनहिपणअमे
तोकोइनोअवगुणलेतानथी नेअमारोस्वभावछेतेतोसदाएगुणग्राहकजछेने हवे ए भक्तने गुण
ग्राहण करवो ने अवगुणटाळवो तेनो उपाय कहीएछीए जे ए भक्तएमविचारे जे हुं सत
संगमोर केवोहतोनेकाळकर्मजन्ममरणचोराशीतेनो भुकाहतोतेमुनेसर्वथकीछोडावीने निरभेकि
धो ने रुडा गुण आपीने मोटो किधो माटे ते भगवाननोजे अभाव कहो केम लेवुं प्रभुनुं
गमतुं मुकीने ने पोतानुं गमतुं केम इच्छुं एम विचारीने अभाव न ले त्यारेजसु-
खीयोथायछेअने जेआदेहेकरीनेभगवाननुंगमतुंकरवुं एथीबिजीवातकांइमोटीनथीएजभक्तिछेनेएणे
करीनेभगवाननेपमायछे।। माटेमानइर्षातथाकामक्रोधलोभएआदिकएसर्वेकल्याणनाविरोधिछेतेसर्वे
नेत्यागकरवानेतेमांमानछेतेतोआतिभुडामांभुंडुंछेजुवोनाविजावृतमानमांकांइककाचपथोडीघणी होय

तोयसतसंगमांनभ्याजायछेपणमानवाळोतोनभिसकेज. माटेमोटेछेसंतोनिर्मानिआदिकवृतमानमांकोइ दिवसचुकपडवादेशोमांअतिकुशळरहेवुं. आदेहथकीपोतानुंस्वरूपजूदुजाणवुंअनेश्रीपुरूषोत्तमएवाजे नर नारायणतेमनीनिरंतरखटकेसहितभक्तिकरवीनेभगवाननीअखंडस्मृतियेसहितभजनकरवुं ॥ ते तोभगवाननाप्रगटदर्शननासुखतुल्यछेनेविजुआपणासत्संगमांशास्त्रभणतांआवडेतेणेकरीने मोटोनहिंयारेकोणमोटोतोजेचौदलोकपर्यंततृणसमानजाणेएविवेरागनिअवधियेजुक्तहोय.अने जेमदेहनेविषेआत्मबुधिछेतेमपरमात्माजेपुरूषोत्तमतेनास्वरूपनीद्रढतासाक्षातकारबोधेयुकहोयअने सुषुप्तिनेविषेजेमजकनीविस्मृतिछेएमजायतअवस्थानेविषेजकनीविस्मृतियेजुकवरतेएवोनेहोयते आपणा सत्संगमांमोटेरोछे॥ इतिवचनामृतम॥ ३ ॥ २३२

संवत१८८२नाचैत्रसुदी४चतुर्थिनेदिवसस्वामीश्रीसहजानंदजिमहाराजगामश्रीजेतलपुर मध्येमोहोलनेविषेदक्षणादागोखनेविषेगादि उपरतकियानुंउठिगणदइनेविराजमानहताने मस्तकउपरपुष्पनोखुंपतेणेजुक्तश्वेतपाघशोभतीहतीनेश्वेतपुष्पनीपछेडिओढिहतीनेकेशरेसहितजेचंदन तेणेकरीनेसर्वअंगचरच्यांहतांनेश्वेतहिरकोरिखेसपेरयोहतोनेकंठनेविषेगुलदावदिनाहारपेरयाहतानेपोतानामुखारविंदनिआगळमुनितथादेशदेशनाहरिभक्तनीसभाभराइनेबेठिहति॥ पछेश्रीजिमहाराजसर्व

सभामत्येएमबोल्याजेजीवनुंकल्याणतोएटलावडछेजेभगवानप्रत्यक्षनांदर्शननेतेनीअखंडस्मृतितेणेक
रीनेथायछे कांजेभागवतमां एमकहुंछेजेकंससिशुपाळदंतवक्र आदे देइनेजेनंदीक तेने अखंडभग
वाननीस्मृतिरहितेणेकरीनेकल्याणथयुंछेमाटेभगवाननीनिरंतरस्मृतिएजभक्तीछेत्यारेतमेकहेशोजेभग
वानतोमळ्याछेनेतेनीसमृतिपणनित्यछेतेनेवर्त्तमानपाळ्यानुं शुंप्रयोजनछेतो तेनुं तो एमछेजेएकतो
वर्त्तमानदृढ राखेछे नेए कतोवर्त्तमानमांनसरताछेतेबेमांफेर एटलोछेतेकहियेछीयेजेस्मृतितोबेयने
छेपणनियमधर्मेरहितछेतेतोपोतानुंकल्याणकरेनेबिजाजीवनुंकल्याणएथीथायनाहिनेएकांतिकभक्तप
ण ते नथायनेभगवाननुंनिर्गुणधाम तेनेनपामे नेजन्ममरण रहिततोथायनेतेथीसत्संगमांपणनवेसाय
अनेतमेजेवासंतजेधर्मेनियमेजुक्ततेनीतोवातजनोखीछेतेकहियेछीयेजेतमनेकोइकभावेकरीनेजमाडेतेने
कोटीयज्ञनुंपुन्यथायनेअंतेमोक्षनेपामेछेनेतमाराचरणनोकोइकस्पर्शकरशेतेनांकोटीजन्मनां पापना
शपामशे तमनेभावेकरीनेवस्त्रओढाडशेतेनुंपणपरमकल्यणथाशे॥ अनेतमेजेजेनदितळाव नेपगबो-
ळोछोतेतेसर्वेतिर्थरूपथायछेअनेतमेजेवृक्षतळेबेठाहोनेजेजेवृक्षनुंफळजम्याहोतेतेसर्वनुं रूडुंज थाय॥
अनेतमारांकोइकभावे करीनेदर्शनकरेछेनेकोइकतमनेनमस्कारकरेछेतेतेसर्वनापापनोक्षयथायछेनेव
ळीतमेजेनेभगवाननीवातकरोछोअनेकोइकनेनियमधर्मसंबंधिधरावोछोतेनेमोक्षथायछे इत्यादिक-

नेधर्मनियमपाळीतमजेवासंततेनीसर्वेक्रिया कल्याणकारीरूपछेशासारुंजेप्रत्यक्षश्रीनरनारायणऋषि
नोतमने दृढआशरोछे तेश्रीनारायणआपेतमारीसभामांनित्यविराजेछेतेसारुंएवेउवातनो एजएनो
उत्तरछे ॥ अनेवळीतमेकेशोजेभगवाननोदृढआशरोछे नेमाइकगुणछेतेकेमव्यापे छे तो ते काहि
ए तेखटऊर्मीरहितनेमाइकगुणेरहितसौनेकरवातेमांतोकांइवारनथीअनेअसंख्यजन्मानेस्मृतिथ-
इआवे नेअनंतब्रह्मांडनीक्रियानेजिवजुनेएवासर्वनेकरवातेमांतोकांइवारनहिपणअमारीइच्छाए के
रीनेएमतमनेराख्याछेने तमारासामृथनेरोधीराख्युं छे तेप्रत्यक्षभगवाननासुखनेअर्थेकरीनेछे वि
जुंएवाजेश्रीपुरुषोत्तमतेजेतेआजतमनेसर्वनेश्रीनरनारायणऋषिरूपथइनेमळ्याछे माटेनिरसंशयथइ
ने आनंदमांभजनकरजो ॥ ते समे एक पटेलीएश्रीजी महाराजने प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज
वेरभावेकरीने कल्याण थाय छे ते केम थायछे ते कहो ॥ पछे श्रीजी महारा
जबोल्याजे धृपदराजाहतोतेनेधृपदीजी जेपोतानीपुत्रीतेनेपरणाववांहतांतेसारुस्वयंवररच्योहतोत्यां
राजामात्रनेतेडाव्याहता ॥ अनेद्रोणाचार्यपणआव्याहताअनेपांडवपणआव्याहता पछेविद्यासर्वे
राजाएमलाने मच्छवेधवामांडयोपणकोइथीमच्छ नवेधाणो त्यारेयुधिष्टिरेकह्युंजे हुंमच्छवेधुं एम
कहिनेयुधिष्टिरेमुगता वांधीत्यारेद्रोणाचार्येकह्युंजेआसभादेखायछेत्यारेकह्युंनेदेखायछे ॥ अनेवळी

कह्युं जेतमारु शरीर देखायछे? त्यारे कह्युं जे देखायछे पछे द्रोणाचार्ये कह्युं जे तमे थी मच्छ नहि वेधाय एवी रीते चार भाइ थी मच्छ ने वेधाणो त्यार पछे अर्जुने उठीने धनुष्य लइने सुरत बांधी त्यारे द्रोणाचार्ये पुछयुं जे आ सभाने देखो छो त्यारे अर्जुने कह्युं जे सभा नथी देखतो ॥ अने मच्छ पण नथी देखतो अने मच्छ उपर पंखी छे तेने देखुं छुं त्यारे द्रोणाचार्ये कह्युं जे एना मांथा सामी सुरत राखो त्यारे अर्जुने सुरत बांधीने कह्युं जे पंखी नथी देखतो ने एकलुं मांथुं देखुं छुं त्यारे द्रोणाचार्ये कह्युं जे हवे वा करो त्यारे अर्जुने मच्छना मुस्तकने वेध तां हता एवी रीते ज्यारे वृत्ति एकाग्र थाय त्यारे देहभाव क्र्याण कारी छे जेम साधु पाळ तथा कंस एआदिकनो श्रीकृष्णना स्वरुपने विषे तदाकार वृत्ति थइ गइ हती त्यारे कल्याण थयुं एवी रीतना द्रोह जो ना आवडतो नार की थाय अने ते करतां भक्ति सुलभ छे अने द्रोह बुद्धि राखीने भजे तेनुं असुर एवुं नाम मटे नहि ने भक्त तो के हेवाय जनहीं माटे असुरनी रीत मोलीने जेने ध्रुव प्रह्लाद नारद सनकादिकनी पंक्तिमां भळवुं होय तेने तो भक्तिये करी ने भगवानने भजवा ते ज अति श्रेष्ठ छे ॥ इति वचनामृतम ॥ ४ ॥ २३३ ॥

संवत १८८२ ना चैत्र सुदी ५ पंचमीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज गाम श्री जेतलपुर मध्ये मोहोल नि दक्षिणादी कोरे जग्यानी ओसरीने विषे उत्तरादे मुखारविंद पाट उपर विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां अने मस्तक उपर झिणपोतीयां श्वेत पाघ धारि रह्या हता ने श्वेत झीणा चादरो

ढोहतीने श्वेतधोतीयुंपेहेर्युहतुंअनेपोतानामुखारविंदनीआगळमुनितथादेशदेशनाहरीभक्तनी सभाभराइनेबेठीहतीअनेरात्रेडोढपोरारात्रीतिहतीपछेश्रीजीमहाराजघडीएक विचारीनेबोल्याजेसर्वेसांभळोआजतोअमारेजेमछेतेमवातकरवीछेजेभगवानने भजवाएथीबिजीवातमोटीनथीकांजेभगवाननुंकर्युंसर्वेंजथायछेअनेआसमेंतोआसभानुंकर्युंपणथायछेअनेश्रीनरनारायणनेप्रतापेकरीनेअमारुंकर्युंपणथायछेतेत्योकाहए जे जेवोअमेमनमां घाटकरीएछीएतेवोआजक्तनेविषेप्रवर्तेछे ॥ अनेजेमधारीएछीएतेमपणथायछेखरुंजे आनेराजआवोतोतेनेराजपण आवेछेअनेआनुराजछेतेजाओतोतेनुं जायछेअनेधारीए जेआटलोवर्षातआंइथाओसांजरूर थायछे-अनेआंइनथाओत्यांनथीथातो ॥ अने वळीधारीएजेआनेधनप्राप्तन थाओतेनेथातुंनथीअनेआनेदिकरो- आवोतेनेदिकरोआवेछे अनेधारीएजे आनेदिकरो न आवोनेनेआवतोजनथीअनेआने तो-रोगथाओतोतेनेरोगपणथायछे॥ अनेआनेरोगनथाओतो तेनेरोगनथीथातोएवी रीते अमेधारीएछीए तेमथायछेखरुंत्यारेतमेकेहेशोजेसत्संगीनेसुखदुखथाय छे॥ अनेरोगादिकप्राप्त थायछे ने कांइकधन स्मृतिनी हाणथायछे अने मेहेनत करीनेमरी जायछेतोयपणएदरीद्रीनेमोरहेछेतोएनुंतोएमछेजे एने भगवानभज्यामांजेटलीकसरछे तेटली एनेसर्व क्रियाने विषे बरकत थाती नथी अने भगवानने तो एनुं सारुंज करवुंछेजे सुळि

नुंदुखहशे तेनेभगवानपोतानाआश्रीतजननुंकांटेकरीनेटाळताहशेअने. अमेतो एमजाणीएछीए जे सत्संगीनेतो एकविंछीनीपिडाथाती होयतोअमनेहजारगणीथाओ पणतेपिडाथी तेहरिभक्तरहित थाओअनेसुखीयारहोएमअमेरामनंदस्वामीआगळबोल्याहता माटेअमारीतो नजरएवीछेजे सर्वनुं सारुंथाय॥ अनेभगवानने विषे जीवनामननेराखवानो उपाय निरंतर करीए छिए शा सारुं जे हुंतो भुत भविष्य ने वर्त्तमान त्रणे काळने विषे सर्वे क्रियाने जाणुंछुं अने आंहि बेठा छतां पण सर्वने जाणीए छिए अने माताना उदरने विषे हता ते दाहाडे पण जाणता हता॥ अने उदरने विषे नोहोता आव्या तेदी पण जाणता हता केमजे अमे तो भगवान जे नारायण ऋषि ते छइए अने महा पापवाळो जीव हशे ने अमारे आशरे आवशे ने धर्म नियममां रेहेशे तेने अमेअंतकाळे एने दर्शन देइने भगवाननुं जे अक्षर धामतेनेविषेतेनेपमाडीएछीये हवेते अक्षरधामनापतिएवाजेपुरुषोतमजेतेप्रथमधर्मदेवथकीमुर्तिनामेजेदेवीजेनेभाक्तिकहियेतेनेविषेअनिरनारायणऋषिरूपप्रगटथइनेबदरीकाश्रमनेविषेतपनेकरताहवातेश्रीनरनारायणऋषिआकलियुगने विषे पाखंडिएवाजेमततेनुंखंडनकरवाअनेअधर्मनावंशनोनाशकरवानेधर्मनावंशनेपुष्टकरवा॥ अनेधर्मज्ञानवैराग्यतेणेसहितजेभक्तितेनेपृथ्वीनेविषेविस्तारवासारुश्रीधर्मदेवथकीभाक्तिनेविषेनारायणमुनीरूपप्र

गटथनेआसभानेविषेविराजेछेतेनाणजोएमकहिनेपोतानाजननेअतिमगनकरताहवा ॥ अनेवळीबो-
ल्याजेअमेगरेवारेश्रीनरनारायणदेवनुंमुख्यपणुंलावीयेछीएतेनुंताएजहारदछेजे श्रीकृष्णपुरुषोत्तम
अक्षरधामनाजेधामीश्रीनरनारायणतेजआसभामांनित्यविराजेछेतेसारुंमुख्यपणुंलावियेछीए॥ अने
तेसारुअमेअमारुंरूपजाणिनेलाखोरुपीयानुंखरचकरिनेशिखरबंधमंदिरश्रीअमदावादमांकरावीने
श्रीनरनारायणनीमूर्त्तियुंप्रथमपधरावीयुंछे अनेएश्रीनरनारायणतोअनंतकोटिब्रह्मांडनाराजाछेअने
तेमांपणआजेभरतखंडतेनातोविशेषेराजाछेअनेएजेश्रीनरनारायणतेनेमेलिनेआभरतखंडनामनुष्य
बिजादेवनेभजेछेतेतोजेमाव्यभिचारिणिस्त्रिहोयतेपोतानाधणिनेमेलिनेबिजाजारनेभजेछेतेमछे॥ अने
श्रीनरनारायणभरतखंडनाराजाछेतेश्रीमदभागवतमांसारपेठेकह्युंछेअने आगेआसंतसतीताजिवुंना
कल्याणनेअर्थेप्रगटथयाछीएतेमाटेतमेअमारुंजोवचनमानशोतोआगेजेधाममांथीआव्याछीएतेधाम
तमनेसर्वेनेतेडिजास्युंअनेतमेपणएमजाणशोजेअमारुंकल्याणथयुंअनेवळीअमाराछेहानिश्चेरातजो
नेकाहियेतेमकरशोतोतमनेमहाकष्टकोइकआविपडशेअथवामातदकाळिजेवुंपडेतेथकीपणरक्षाकर
शुं॥ अनेकोयेठगरानोआरोनथीएवोकष्टआवीपडशेतोयेपणरक्षाकरशुंजोअमाराआसत्संगनोध-
र्मबहुरीतेकरीनेपाळशोतोनेसत्संगराखशोतोअनेनैराखातोमहादुःखपामशोतेमांअमोरेलेणादेणा

नथी अमे तो आ समे कोये वातनुं काचुं राख्युं नथी। आ जोवोने आ गाममां केटलाकयज्ञ करया अने केटलाक वरस थया आंइ रहियेछीए॥ अमे जोवोने आतळावने विषे अमेसर्वसंत सहितहजारोवारनाह्याछइए अमेआजेतलपुरगामतेमांअमेघेरघेरसोसोवारफरया छइएनेघेरघेर भोजनकरयांछे॥ अनेआगामनीसीमनेगागते वृंदावनकरतांपणविशेष रमणीस्थळ कर्युंछेएमवात महाराज करेछेएटलामांतोआकाशमां एकमोटोतेजनोगोळोदेखाणो॥ अनेतेएकगोळाना त्रण गोळाथइगयाअनेमोहल उपरघडीकआकाशमांदेखाइनेअदृश्यथइगया त्यारेसर्वेएकह्युंजेहेमहा राजएशुंहतुं त्यारेमहाराजेकह्युंजे ब्रह्माविष्णुनेशिवएत्रणेदेव नित्येअमारेदर्शनेआवेछेपणआजतो वैमानेसहितहरीइच्छाएकरीनेदेखाणा ॥इतिवचनामृतम् ॥ ५ ॥ २३४ ॥

॥ इति जेतलपुर प्रकरण समाप्त ॥

संवत १८८२ ना वैशाखवदी ११ एकादशीने दिवस स्वामीश्रीसहजानंदजी महाराजगामश्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरवारमां श्री वासुदेव नारायणना फळियानीमांहिलि कोरे आथमणे वार ओरडानी उंची ओसरीए गादी तकीए जुक्त जे सुंदर रंगत ढोलियो ते उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण करयां हतां अने मस्तकने विषे जे मोटी

श्वेत पाघ, तेमां सुंदर मोगराना पुष्पनो तोरो विराजमान हतो अने कंठने विषे मोगराना पुष्पना हार विराजमान हता अने बे हाथने विषे ते पुष्पना गजरा विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराजे पर्महंसने पुछयुं जे परमेश्वरनाभक्तने भुंडा देश काळादिकनो जोग थाय तोय पण भगवाननी भक्तिमां विघ्न थाय नहि एवी शी समजण छे. पछे पर्महंसने जेवुं समजाणुं तेवुं कह्युं पण जथार्थ उत्तर थयो नहि. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे जे भगवानने भजे तेने एक तो दृढ वैराग्य जोइए; बिजी आत्म निष्टा जोइए, तेमां जो वैराग्य न होय तो ज्यारे मन गमतुं पदार्थ मळे त्यारे जेम भगवानमां प्रिति करे छे, तेम बिजा पदार्थमां पण भगवानना जेवी प्रिति थइ जाय॥ अने जो आत्मनिष्टा न होय तो ज्यारे देहमां सुख दुख आवे त्यारे एचुंथाइ जाय. पछे जेने सुखदाइ जाणे तेमां प्रिति करे अने जेने दुखदाइ जाणे ते साथे द्वेष करे, एवी रीते एनी भ्रष्ट बुद्धि थइ जाय. माटे भगवानना भक्तने आत्मनिष्टा ने वैराग्य ए बे य अतिशे दृढ जोइए शा सारुं जे वैराग्ये करीने तो भगवाननी मूर्त्ति विना बिजा माइक आकार मात्र खोटा थइ जाय छे अने आत्मनिष्टाए करीने माइक जे सुख ने दुख ते खोटां

थइ जाय छे. अने जेने वैराग्य ने आत्म निष्ठा न होय तेने तो निर्विकल्प समाधि थइ होय, तो पण ज्यां सुधी समाधीमां रहे त्यां सुधी सुख शांति रहे, अने ज्यारे समाधिमांथी बहार निसरे त्यारे नारायणदासनी पेठे सारा पदार्थने जोइने चाळा चुंथवा मांडे. अने जे भगवानना भक्त तेने तो भगवानने विषे ज्ञाननुं अंग होय ने कांतो हेतनुं अंग होय तेमां जेने ज्ञाननुं अंग होय तेतो भगवाननुं अतिशे महात्म समजे अने जेने हेतनुं अंग होय तेने तो भगवान विना अर्ध घडि पण चाले नही ते ज्ञानना अंगवाळा तो झिणोभाइ देवरामने प्रभाशंकर एछे, एविरीते जे हरी भक्त भगवाननुं महात्म जाणे तेने ज्ञानना अंगवाळा जाणवा अने जेवुं वृजनी गोपियुंने भगवानने विषे हेत हतुं तेवी रीतना जे हरी भक्त होय तेने हेतनुं अंग जाणवुं. अने जेने ज्ञाएनु अंग होय ते भगवानने अंतरजामी जाणे ने एम जाणे जे भगवान ते कोइनु कह्युं सांभळेजनही भगवानतोजेभक्तनुंजेवुंअंगहोय तेने तेवुं जाणीनेतेवीरीते कहेछे, पणकोइनी शीखा मणे करीने चालता नथीअने जे एम जाणे जे भगवानतो कोइकना शीखव्या थकाहुमां वांक नथी तो पण मुने कहेछे तेनेतो भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान नथी.अने आ संसारमां पण जेम ज्यनेजेसंघाथे स्वार्थ होय तेनो ते कोइ रीते अवगुण ले नहि शा माटे जे एने पोताना स्वार्थनुं

हेत छे,तोजेणे भगवान साथें जन्म मरणना भाय थकी छुटवानो स्वार्थ जाण्यो होय तेने को-
इ रीते भगवाननो एवगुण आवे नहि. अने जे एम जाणे जे भगवानतो कोइकना फेरव्या फ-
री जायछे,एम समजीने जे भगवाननो अवगुण ले तेने तो ज्ञाननुं अंग पण नथी अने हेत-
अंग पण नथी एवी रीते कहीने श्रीजी महाराजे जे मोटा मोटा पर्महंसनेकह्युंजे तमे तमारुं ए
बेमांथी जे. अंग होय ते कहो?पछे सर्वे पर्महंसे कह्युंजे अमारे ज्ञाननुं अंग छे.पछे श्रीजीम-
हाराज बोल्याजे जेने हेतनु अंग होयतेते पोताना जे प्रितम तेनेअर्थे जे न करवानुं होय ते प-
ण थाय केमजे आ संसारने विषे जे चोर होय तेने पोतानी स्त्री ने छोकरां तेने विषे हेतहो-
यछे ने ज्यारे चोरी करवा जाय त्यारे बिजां माणसने मारीने पोताना घरना माणसने द्रव्य
आपेछे, ने ए चोर घणो निरदइछे, पण पोताना कुटंबी उपर हेतछे तो ते संघाथें निरदइ
नथी थातो, तेम जेने भगवान के भगवानना भक्त संघाथे हेत होय तेने भगवान के भगवानना
भक्त उपरक्रोधकेइर्षा आवेज नहि अने अवगुण पण कोइ रीते आवेज नहि. एवं जेने हेत हो-
य तेने हेतनुं अंग कहीए. अने जेने ज्ञान के हेत ए बेमांथी एकेय अंग नथी तेने चाळ चुंथ-
णो कहिए, एटली वार्ता कहिने श्रीजी महाराज पोताना उतारामां पधार्या. पछे तेज दिवस

सांजने समे दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए गादी तकिया विछवेल ढोळीया उपर विराजमान थया हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठने विषे मोगराना पुष्पनो हार पेहेर्यो हतो, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. अने पोतानी आगळ साधु दुकड सरोदा बजावीने किर्तन गाता हता.ने किर्तन,भक्ति,ज्यारे करीरह्या त्यारे श्रीजी महाराजेएम आज्ञाकरीजे,अमारीलखेलीजेशिक्षापत्रीतेनोपाठअमाराआश्रितजेत्यागी,साधु,तथाब्रह्मचारी,तथाग्रहस्थबाइ,भाइसर्वेतेनेनित्येकरवो.अनेजेनेभणतांनआवडतुंहोयतेनेनित्येश्रवणकरवुं.अने जेने श्रवण करवानो जोग न आवे तेने नित्ये शिक्षापत्रीनी पुजा करवी एवी रीते अमे शिक्षापत्रीमांज लख्युं छे माटे ए त्रणमांथी जेने फेर पडे तेने एक उपवास करवो एम अमारी आज्ञा छे. एवी रीतनी जे श्रीजीमहाराजनी आज्ञा तेने पाळवानो नियम ए सर्वेए धार्यो जे, हे महाराज जेम तेम केहो छो तेम अमे सर्वे पाळशुं,तेने सांभळीने श्रीजीमहाराज अतिप्रसन्न थइने सर्वेसाधुने ब्रह्मचारीने मळताहवा अनेसर्वेसत्संगीनाह्रदयनेविषेपोतानांचरणारविंदआपताहवा॥इतिवचनामृतम्॥२॥२३५॥

संवत१८८२नाजेठसुदि ६ नेदिवससांजने समे स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री

गढडा मध्ये दादाखाचरनां दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदीरना फळीयाने विषे बाजोठ उपर विराजमान हता अने मस्तक उपर श्याम छेडानी धोळी पाघ बांधी हती अने श्वेत पछेडी ओढीहती अने श्वेत खेस पेहेर्यो हतो अने पाघने विषे मोगराना पुष्पनो तोरो खोस्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजीमाहाराजे प्रश्न पुछयुं जे जगतने नाशवंत देखे छे. अने देहने मुकीने चैतन्य जुदो थइ जाय छे तेने पण देखे छे. तोपण आ जीवने जगतनुं प्रधानपणुं हैयामांथी मटतुंनथी अने परमेश्वरने सर्व प्रकारे सुखना सिंधु जाणे छे, तोपण परमेश्वरमां जिवनुं चित्त चोटतुं नथी, तेम सत्संगपण तेना हृदामां मुख्य थातो नथी, अने धन, स्त्री आदिक जे संसारी पदार्थ तेमांथी प्रित्ति मटती नथी तेनुं शुं कारण हशे? पछे मुक्तानंद स्वामीए कह्युं जे जिवना हृदामां वैराग्य नथी तेणे करीने जगतनुं प्रधानपणुं मटतुं नथी नेभगवानमां प्रिति थाती नथी. पछे श्रीजीमाहाराज बोल्या जे वैराग्यनी न्युनता छे एतो वात साचिपण अमने तो एम भासे छे जे जेने सत्संग थातां थातां जेवुं अंग बंधाइ जाय छे तेवुंने तेवुंज सदाय रहेछे पण ते विना बीजुं थातुं नथी अने सत्संगेकरीने ते अंगनी पुष्टि तो थाय पण अंगतो तेनुंतेज छे, अने

 ज्यारे तेने जे अंग बंधाय छे त्यारे अंग बंधातां एनुं चित्त विभ्रांत जेवुं थइ जाय छे, जेम कामी होय तेनुं चित्त कामे करीने विभ्रांत थाय, ने जेम क्रोधी होय तेनुं चित्त क्रोधे करीने विभ्रांत थाय, ने जेम लोभी होय तेनुं चित्त लोभे करीने विभ्रांत थाय,तेम एनुं चित्त बंधातां विभ्रांत थइ जाय छे पछे ते विभ्रांतमां जेवुं अंग बंधाय छे तेवुं अंग रहे छे, माटे जे समजुं होय तेने पोतानुं जे अंग होय तेने ओळखी राख्युं जोइए ते ज्यारे काम क्रोधादिके करीने पोताने विक्षेप थातो होय त्यारे पोताना अंगनो विचार करे.तो ते कामादिक क्षिण पडी जाय, जेम कोइक ग्रहस्थ होय.तेने पोतानी माता, बेन अथवा दिकरी अति स्वरूपवान होय तेने जोइने जो भुंडो घाट थइ जाय तो पछे तेनी केवी दाळ थाय तेवी दाळ ज्यारे सत्संगविना बिजुं पदार्थ प्रधान थाय त्यारे थइ जोइए.अनेज्यारेएवी दाळअजोग्य पदार्थना संकल्पने देखीने न थाय तेना हृदामां तो सत्संग पण प्रधान न रहे. अने सर्व साधननुं फळ रूप तो आ सत्संग छे. ते श्री कृष्ण भगवाने उद्धव प्रत्ये एकादश स्कंधमां कह्युं छे जे अष्टांग जोग, तथा सांख्य विचार, तथा शास्त्र पठन तथा तप त्याग जगनने व्रतादिके करीने हुं तेवो वश थातो नथी जेवो सत्संग करीने वश थाउंछुं. मा-

वच: टे अमने तो एम भासे छे जे पूर्वजन्मनो संस्कार हशे ते पण सत पुरुपने जोगे क-
रीने थयो हशे अने आज पण जेने संस्कार थाय छे ते सत पुरुपनो जे संग प्राप्त थयो छे तो
पण जेने जेम छे तेम समजातुं नथी तेने अतिशे मंद बुद्धिवाळो जाणवो शा माटेजे जेवी श्वेत
द्विपमां सभा छे, ने जेवी गोलोक वैकुंठ लोकने विपे सभा छे, ने जेवी बदरीकाश्रमने विपे
सभा छे, तेथी पण हुं आ सत्संगीनी सभाने अधिक जाणुं छुं, अने सर्वे हरिभक्तने अतिशे
प्रकाशे युक्त देखुं छुं, एमां जो लगार पण मिथ्या कहेता हइए तो आ संत सभाना सम छे.
ते सम शा सारु खावा पडे छे जे सर्वेने एवुं अलौकिकपणुं समजातुं नथी अने देखवामां पण
आवतुं नथी ते सारु सम खावा पडे छे. अने ब्रह्मादिकने पण दुर्लभ एवो जे आ सत्संग
तेमां आवीने परमेश्वर विना जेने बीजा पदार्थमां हेत रहेछे तेनुं कारण एछे जे एजविने
परोक्षने विपे प्रतीति छे तेवी प्रत्यक्षने विपे दृढ पणे प्रतीति थती नथी. ते श्रुतिमां कह्युंछे जेने
विपरोक्ष देवने विपे जीवने प्रतीति छे.तेवीजो प्रत्यक्ष गुरु रूप हरीने विपे आवेतो जेटला अर्थप्र
स थानाना कह्याछे तेटला सर्वे अर्थ तेने प्राप्त थायछे अने ज्यारे आवो संत समागम प्राप्त थ
यो त्यारे देह मुकी ने जेने पामवा हता तेतो देह छतां मळ्याछे माटे जेने परमपद कहीए ,मो

पाम्योछे अने आ वार्त्ता जे कही ते जणाय छे तो जाडी
क्ष कहीए तेने छते देहज पाम्योछे अने आ वार्त्ता जे कही ते जणाय छे तो जाडी
जेवी, पण एतो अतिशे झिणं छे ते जे एवी रीते वरततो होय तेने एम समजा
य जे ए वार्त्ता अति झिणि छे ने बिजाने तो समज्यामां पण आवे नहि एवी अतिशे झिणी
वार्त्ता छे एम वार्त्ता करीने श्रीजी महाराज जयसच्चिदानंद कहीने पोताना उतारामां पधार्या.

॥इतिवचनामृतम्॥२॥२३६॥

संवत १८८२ ना असाड वदी १ पडवाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजीमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां पोताना उताराने विषे विराजमान हता, ने ते दि वस ठकर हरजीए पोताने घेर श्रीजीमहाराजनी पधरामणी करी त्यारे श्रीजीमहाराज त्यां पधार्या. पछे उगमणे बार ओरडानी ओशरीए ढोलिया उपर गादी तकिया बिछावीने श्रीजीमहाराजने विराजमान कर्या पछे हरजी ठकरे श्रीजीमहाराजनी केसर चंदनादिकेक रीने पुजा करी एवी रीते श्रीजीमहाराज पुर्व मुखारविंदे विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठने विषे मोगराना पुष्पना हार तथा बे भुजाने विषे ते पुष्पना गजरा तथा पाघने विषे ते पुष्पना तोरा ते अतिशे विराजमान हता, अने श्रीजी महाराजन

मुखारविंदनी आगळ मुनी मंडळ तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठा हता. ते समयमां श्रीजी महाराजे सर्वे संत मंडळने प्रश्न पुछयुं जे, हरिभक्तना हृदयने विषे दया ने स्नेह ए बे स्वाभाविक रह्यां होय त्यारे स्नेहनुं स्वरूप तो मध जेवुं छे ते ज्यां त्यां चोटे अने दयानो स्वभाव एवो छे जे ज्यां त्यां दया करे. त्यारे भरतजीए मृगला उपर दया करी त्यारे ते मृगनी पेठे जन्म लेवो पड्यो अने जे दयावान होय तेने जे उपर दया आवे ते संघाथे स्नेह थया विना रहे नहि. अने ए दयाने स्नेह तेने टाळ्यानो उपाय तो आत्मज्ञान ने वैराग्य ए बेज छे ते आत्मज्ञान एवुं छे जे जेमां कांई त्रिजुं पेसेज नहि अने वैराग्यनुं एवुं स्वरूप छे जे सर्वे नाम रूपने नाशवंत देखाडे माटे आत्मज्ञानने वैराग्य ए बेवते करीने दयाने स्नेहनो नाश थई जाय छे, अने स्थुल, सुक्ष्म ने कारणएआदिक सर्वे उपाधीनो पण नाश थई जाय छे. अने केवळ ब्रह्मसत्तामात्र रहे छे पछे एने भगवान तथा भगवानना भक्तने विषे दयाने स्नेह रहे छे के नथी रहेतो? ए प्रश्न छे. पछे मुक्तानंद स्वामी तथा शुकमुनी तथा नित्यानंद स्वामी एआदिकपरमहंसजेवोजेनी दृष्टी पुगी तेणे तेवो उत्तर कर्यो, पणश्रीजीमहाराजनाप्रश्ननुंयथार्थसमाधानथयुंनहि,पछेश्रीजीमहाराजबोल्या जेअमे उत्तरकरीएएनोतो

उत्तरएमछे जेज्ञानवैराग्ये करीनेत्रणशरीर,त्रणअवस्थानेत्रणगुणएसर्वमाइक उपाधीथकी चैतन्यजु
दो थै जायछे ने केवळ सत्तामात्र रहेछे,पण माइक उपाधिनो लेश पण रहेतो नथी त्यारे जे
म दिपकनो अग्नि ते कोडियुं तेलने वाट ए त्रणने जोगे करीने द्रष्टिमां आवे तथा ग्रहण कर्या
मां आवे पण ज्यारे ए त्रण प्रकारनी उपाधिनो संग छुटी जायछे त्यारे अग्नि कोइनी दृष्टि
मां पण न आवे नेग्रहण पण न थाय. ने उपाधिये जुक्त होय त्यारेज दृष्टिए आवे ने ग्रहणक
र्यामां आवे तेम ज्ञान ने वैराग्ये करीने सर्वे माइक उपाधी निवृत्ती पामेछे त्यारे ए जीवात्मा
ते केवळ ब्रह्मसत्तामात्र रहेछे ने ते मन वाणीने अगोचरछे ने कोई इंद्रिये करीने ग्रहण क
र्यामां आवतो नथी. पछे ते काळे तो एने जो शुद्ध संप्रदाये करीने भगवाननुं ज्ञान प्राप्त थयुं
होय ने भगवानने भगवानना भक्तनुं महात्म यथार्थ पणे समजाणुं होय तेने तो सर्वे माइक उ
पाधिनो संग टळिजाय ने पोतानो जीवात्मा पण ब्रह्मरूप थाय,तोपण भगवानने भगवानना भ-
क्तने विषे जे दयाने प्रीति ते निरंतर रहेछे. त्यां दृष्टांतछे जेम दिपकनी जोतछे तेने ज्यारे उ-
पाधिनो संग टळी जायछे त्यारे ए अग्नि कोइ इंद्रिये करीने ग्रहण न थाय एवो आकाश-
ने विषे रहेछे, तो पण ए अग्निने विषे सुंगधि तथा दुर्गंधिनो जे पास लाग्यो होय ते टळ-

तो नथी, तथा जेम वायुछे तेतो अग्नि थकी पण वधुं असंगीछे तो पण तेने सुगंधि तथा दुर्गंधिनो पाश लागेछे तेमज जीवात्माने ज्ञान वैराग्ये करीने माइक उपाधिनो संग टळी जायछे तो पण सत्संगनो पास लाग्योछे ते टळतो नथी अने ते ब्रह्मरूप थायछे, तो पण नारद सनकादिकने सुकजीनि पेठे भगवान तथा भगवानना भकने विषे अतिशे दयाने प्रीतिये जुक वर्त्तेछे, त्यां श्लोकः ॥परिनिष्ठितोपिनैर्गुण्येउत्तमश्लोकलीलया॥ गृहीतचेताराजर्षेआख्यानंयदधीतवान॥ २॥ तथा॥ निर्मनिष्णुजनप्रियः॥ तथा॥ आत्मारामाश्चमुनयो॥ तथा ॥अःयेणमुनयोराजन ॥तथा॥ गीतामांकह्युंछेजे॥ब्रह्मभूतःप्रसन्नात्मानशोचतिनकांक्षतिसमःसर्वेषुभूतेषुमदभक्तिलभते पराम॥ १॥ इत्यादिकघणाकश्लोके करीने प्रतिपादन कर्युंछे जे भगवानना भक्त होय ते ज्ञान वैराग्ये करीने माइक उपाधिने त्याग करीने ब्रह्मरूप थया होय तो पण भगवान तथा भगवानना भकने विषे दयाने प्रीति तेणे जुक होयछे, अने जे भगवाननो भक्त होय ने केवळ आत्म ज्ञान ने वैराग्ये करीने माइक उपाधिने टाळीनेसशास्त्र वरततो होय तेने तो साधन दशाने विषे भगवाननी उपासनाए रहित एवा जे केवळ आत्म ज्ञानी तेना संगरूप कुसंगनो पाश लाग्योछे माटे भगवानने भगवानना भक्तने विषे दया ने स्नेह थातो नथी जेम वायु रूपने ने अग्निने

दुर्योधनो पाश लागे छे तेमज एने ते कुसंगनो पाश लाग्यो छे ते कोई प्रकारे टळतो नथी जेम अश्वस्थामा ब्रह्मरूप थयो हतो, पण तेने कुसंगनो पाश लाग्यो हतो माटे श्री कृष्णभगवानने ते भगवानना भक्त जे पांडव तेने विषे दया ने स्नेह थयो नहि तेम केवळ जे आत्मज्ञानी छे ते ब्रह्मरूप थाय छे तो पण तेने कुसंगनो पाश जातो नथी, ने भगवान ने भगवानना भक्तमां दया स्नेह थाता नथी माटे भगवानना भक्तने तो मायिक उपाधिनो संग मटि जायछे तो-पण भगवान तथा भगवानना भक्त तेने विषे अतिशे दया ने प्रिति वृद्धिने पामे छे पण कोइ रीते दया तथा प्रिति टळती नथी, अखंड रहे छे एम वार्त्ता करीने श्रीजी महाराज जयसच्चिदानंद कहिने पोताने उतारे पधार्या॥इतिवचनामृतम्॥३॥२३७॥

संवत १८८३ ना श्रावण वदि ३ त्रितियाने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां पोताने उतारे मेडीनी ओसरी उपर गादितकिया बिछवाीने उत्तरादे मुखारविंदे विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरीभक्तनी सभा भराइने बेठी हती पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे भगवानना भक्त होय ने ते ज्ञान वैराग्ये जुक्त होय ने विचार

ने वळे करीने पोताने बंधन करे एवी जे माइक पदार्थमां प्रिति तेने टाळी नाखी होय तो प
ण ए भक्तने ज्यां सुधी निर्विकल्प समाधी थाय नहि, त्यां सुधी बाधिता नुंवृत्ति रहि जायछे.
तेणे करीने विचारमां एम रहे छे जे रखे मारे मा,बाप, स्त्री, छोकरा, द्रव्य कुटंब देह, गेह
एमने विषे प्रिति रही गइ होय नहि एम वितो रहे छे जेम कोइक सूरवीर पुरुष होय तेणे
पोतानां सर्व शत्रु मारी नाख्या होय तो पण ते मरेल शत्रु थकी पण क्यारेकबिही जायछेतथा
स्वप्नमां ते शत्रुने देखे त्यारे बिही जाय छे तेम ते ज्ञानी भक्त पण जे जे पदार्थ अंतरमांथी
जुठुं करी नाख्युं छे, ने तेमांथी प्रिति त्रोडी नाखी छे तो पण बांधिता नुंवृतिये करीने अंतर
मां माइक पदार्थना बंधन थकीबिक लागेछेअथवा धनकळत्रादिकपदार्थनी कोइकसमेस्मृतिथइ
आवेछेत्यारेमनमांबिही जवाय छे जे रखे मुने बंधन करे एवी रीतेजेपदार्थअंतरमांथीअसत्यक
री नांख्या ते पदार्थनी पाछी स्मृति थइ आवे तेने बाधीता नुंवृति कहीए, ते बाधीतानुं वृति
ज्यारे निर्विकल्प समाधी थाय त्यारे नाश थाय छे. ने ए पुरुषने खाधा पिधानी तथा दिवस
रात्रीनी तथा सुख दुखनी कशी खबर रहेती नथी अने ज्यारे निर्विकल्प समाधीमांथी बार-
णे निसरे ने सविकल्प समाधीमां वर्ते त्यारे तो बाधीता नुंवृति रहे खरी माटे ते हरिभक्तने ता

व आवे अथवा देह पडवानो समो थाय त्यारे बाधीता नुंवृतिने जोगे करीने भगवान विना बि
जा पदार्थनी पण क्यारेक स्मृति थइ आवे अने ते सभामां जे बोलाय ते पण वरह्या जेवुं
बोलायअनेओयबाप,ओयमा,एवांवचनपणबोलायात्यारेजेआबाधीतानुंवृतिनामर्मनेनसमजतोहोय
तेना हैयामां ते हरिभक्तनो अवगुण आवी जाय जे आ भगवाननो भक्त केहवातो हतो ने-
अंतकाळे आम केम वर लेछे एवोजे अवगुण लेवाय छे ते बाधिता नुंवृतिनो मर्म जाण्या वि-
ना लेवाय छे अने आ संसारमां केटलाक पापि मनुष्य होय तेने अंत समे बोलतां चालतां ख
बडदार थका देहने मुके छे अथवा कोइक शिपाइ ने रजबुत होय तेने शरीरमां घा वागे ए
टले खबडदार थका बोलता चालता मरी जायछे माटे भगवानथी विमुख होय ने ते खबड-
दार थको देह मुके तोपण ते शुं तेनुं कल्याण थाय छे, तेनो तो नर्कमांज निवास थायछे.अ
ने भगवाननो भक्त होय ते भगवाननुं नाम स्मर्ण करतो थको देह मुकेछे अथवा बाधीता नुंवृ-
तिने जोगे करीने बेशुद्ध थइने देह मुके तोपण ए भगवाननो भक्त भगवानना चर्णारविंदने पामे
छे. अने तेज दिवस संध्या समे श्रीजी महाराज पोताना उतारामां मेडीनी ओसरीए बिराजमा
न हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां,ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदे

वच.

शना हरिभकनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराजे मोटेरा पर्महंस प्रत्ये प्रश्न पुछयुं जे, आ देहने विषे जीव रह्यो ते एक ठेकाणे केवी रीते रह्यो छे, ने सर्व देहमां केवी रीते व्यापि रह्यो छे ते कहो? पछे जेने जेवुं भाव्युं तेणे तेवुं कह्युं. पण श्रीजी महाराजना प्रश्ननुं कोइये समाधान थयुं नहि. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे, जेम देहने विषे अन्नादिक रसनो विपछे तेम पंच महा भुतनो विकाररूप एवुंएकहृदयनेविषेमांसनुंचकछेतेने विषे जीव रह्योछेतेजेम चिथरानोकाकडोहोयतेनेतेलेपळाळीनेअग्निएसळगाव्योहोय तेम जीवछे ते ते मांसनाचक संघाथे वळगीने रह्यो छे अने वळी जेम लोढानो खिलो होय तेने विषे अग्नि व्यापी रह्यो होय तेम मांसना चकने विषे जिव जे ते विशेषताये करीने व्यापी रह्यो छे, अने सामान्य सत्ताए करीने बधा देहने विषे व्यापी रह्यो छे माटे जे जे ठेकाणे देहमां दुख थाय छे ते सर्व दुःख जिवनेज छे, पण देहना सुख दुख थकी ए जिव जुदो न कहेवाय. अने कोइक एम केहेशे जे जिवतो प्रकाशमान छे अने मांसनुं चक्र ने देहतो प्रकाशे रहित छे ते बेने एक; जिवमां मळ्या केम केहेवाय तो एनो उत्तर एम छे जे जेम तेल कोडीयुं ने वाटय तेना संबंध विना एकलो अग्निनो ज्योति आकाशने विषे अधर पधर रेहेतो नथी तेम पंच भूतना विकार रूप

ग.

एवुं जे मांसनुं चक्र तेना संबंध विना एकलो जिव रहेतो नथी; अने जेम कोडीया थकी तेल थकी ने वाट्य थकी अग्नि जुदो छे ते कोडियाने भांगवे करीने अग्निनो नाश थातो नथी, तेम मांसना चक्रने विषे ने देहने विषे जिव व्यापीने रह्यो छे तोपण देहने दुखे करीने जिव मरतो नथी अने देह भेळो सुख दुखने तो पामे खरो पण देहना जेवो ए जिवनो नाशवंत स्वभावनथी एवी रीते जिव अविनाशी छे ने प्रकाशरूप छे ने देहने विषे व्यापक छे अने जेम मंदीरनेविषे एक स्थलमां दिवो मुक्यो होय ते दिवाना अग्निनी ज्योति विशेषे करीने तो वाटयनेविषे व्यापी रही छे अने सामान्यपणे करीने तो बधा घरने विषे व्यापी रहि छे तेम जिवात्मा छे, ते पण विशेषे करीने तो पंचमहाभूतना विकार रूप जे मांसनुं चक्र तेने विषे व्यापीने रह्यो छे, अने सामान्यपणे करीने तो बधा देहमां व्यापीने रह्यो छे एवी रीते आ देहने विषे जिव रहे छे, अने ए जिवने विषे परमेश्वर पण साक्षिरूपे करीने रहे छे॥ इति वचनामृतम्॥ ४॥ २३८॥

संवत १८८३ना भादरवा सुदि ११ एकादशीने दिवस श्रीजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए गादी तकिया उपर विराजमान हता; अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने कंठने विषे मोगराना पुष्पना हार

पेहेर्या हता, अने पाथने विषे मोगराना पुष्पना तोरा विराजमान हता, ने हाथने विषे मोगराना पुष्पना गजरा विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी मंडळ तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ते समयमां श्रीजीमहाराजे कह्युं जे, कांइक प्रश्न पुछो. पछे मुक्तानंद स्वामीए पुछ्युं जे, हे महाराज भगवाननी जे भक्तिछे तेमां कोइरीतनुंविघ्न नथाय एवी ते केइ भक्तिछे? अने तेभक्तिमां कांइक विघ्नथायछे ते केइ जातनी भक्तीछे. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे तृतियस्कंधमां कपीलगीताने विषे माता देवहुतीए कपिल देवजी प्रत्ये कह्युंछे जे॥ यन्नामध्येश्रवणानुंकीर्त्तनात॥ एवे श्लोके करीने जेवुं भगवाननुं महात्म कह्युंछे तथा कपिलजीए माता देवहुती प्रत्ये पोतानुं माहात्म कह्युंछे जे॥ मदभयातवातिवातोयंसूर्यस्तपतिमद्भयात॥ एवी रीते महात्मे सहीत भगवाननी भक्ति होय तेमांतो कोइ जात्यनुं विघ्न आवे नही, अने महात्म जाण्या विना प्राकृत बुद्धिये करीने जो भक्ति करेतो तेमां विघ्न आवेछे पछे वळी मुक्तानंद स्वामीये पुछ्युं जे ए महात्मे जुक्त ए भक्ति आव्या नुं शुं साधनछे पछे श्रीजिमहारा बोल्या जे शुकसनकादीक जेवा जे मोटा पुरुष तेनी जे सेवा नेप्रसंग तेमांथी माहात्मे सहवर्त्तमान एवि जे भक्ति ते जीवना हृदामां उदे थायछे, पछे शुकमु-

निये पुछ्युं जे एक तो भगवाननो भक्त एवो होय जे तेने भगवाननो निश्चे परिपक्व होय ने काम, क्रोध, लोभ, मोहादिक जे विकार ते एके तेना हृदामां आवे नही अने बिजो भक्त होय तेने तो भगवाननो निश्चे परिपक्व होय पण काम,क्रोध,लोभ,मोहादिक विकारे करीने अंतरमां विक्षेप थातो होय एवे प्रकारना भक्त ज्यारे देहने मुके त्यारे एवेय भक्तने भगवानना धाममां सरखा सुखनि प्राप्ति थायछे, के अधिक न्युन सुखनी प्राप्ति थायछे? पछे श्रीजि महाराज बोल्या जे जे भगवानना भक्तने भगवाननो निश्चे पण परिपूर्ण होय ने काम, क्रोध, लोभादिके करीने विक्षेपने न पामतो होय ने अतिशे त्यागीने अति वैराग्यवानने अति आत्मनिष्ठा वाळो होय ने जो ते प्रत्यक्ष श्रीकृष्ण भगवाननी मुर्त्तिविना कांइक बिजुं इच्छे तो तेने न्युन सुखनि प्राप्ति थायछे, अने बिजो जे भक्तछे तेने पण भगवाननो निश्चे तो परिपुर्णछे तो पण हृदामां काम, क्रोध, लोभ, मोहादिकनो विक्षेप आवे त्यारे पोताना हृदामां दाझ थाय ने भगवान जे प्रत्यक्ष श्रीकृष्ण तेनी मुर्त्तिविना बिजा कोइ पदार्थने इच्छे नही तेने आत्म निष्टाने वैराग्य जो थोडो होय तो पण ए देह मुकिने भगवानना धाममां बहु मोटा सुखने पामेछे ए मा माटे जे प्रथम कह्यो जे भक्त ते उपरथी तो त्यागी ने निष्कामी जणायछे पण भगवाननी मुर्त्तिविना बि

जो आत्म दर्शनादिक प्राप्तिनी हृदामांइच्छाछे माटे ए सकाम भक्त केवाय तेने ए पर लोक ने विषे जरूर न्युन सुखनी प्राप्ति थाय छे. अने त्रिजो जे भक्त कह्यो ते उपरथी तो सकाम जेवो जणाय पण ए भक्त भगवानी मूर्त्ति विना अंतरमां बिजुं कांइ इच्छतो नथी अने भगवान नी मूर्त्ति विना बिजा सुखनी इच्छानो जो वाट थइ जाय त्यारेअतिशे मनमां दाझेछे. माटे ए निष्काम भक्त कहेवाय ते ज्यारे देहने मुके त्यारे बहुं मोहोटा सुखने पामे छे ने भगवानने पा पंद थायछेअनेश्रीकृष्ण भगवाननीमूर्त्तिनेविषेअतिशेजुकथायछे ॥इतिवचनामृतम्॥५२३९॥

संवत १८८३ ना भादरवा वदी ५ पंचमी ने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां पोताना उतारानें विषे विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजीमाहाराज सर्वे हरिभक्त उपर कृपा दृष्टि करीने बोलता हवा जे भगवानने भक्त होय ने भगवाननी कथा किर्त्तन श्रवण आदिक जे नवधा भक्ति तेने जो हरिभक्त उपरइपाए करीने करे तो ते भक्तिये करीने भगवान अतिशे राजी थाता नथी अने इर्षानो त्याग करीने केवळ पोताना कल्याणने अर्थे भक्ति करे पण लोकने

देखाडवा सारु न करे तो ते भक्तिए करीने भगवान प्रसन्न थाय छे माटे जेने भगवानने राजी करवा होय तेने तो लोक रिझाववाने अर्थे तथा कोइकनी इर्षाए करीने भक्ति न करवी, केवळ पोताना कल्याणने अर्थेज करवी. अने भगवाननी भक्ति करतां थकां कांइक पोताने अपराध थइ जाय, तेनो दोष बिजाने माथे धरवो नहि. अने जिव मात्रनो तो एवो स्वभाव छे, जे ज्यारे कांइक पोतानामां वांक आवे त्यारे एम बोले जे मुने बिजे कोइए भुलाव्यो त्यारे मारामां भूल पडी पण मारामां कांइ वाक नथी पण एम कहेनारो महा मूर्खो छे केम जे बिजो तो कोइ कहेशे जे तुं कुवामां पड, त्यारे एने कहेवे करीने शुं कुवामां पडवुं? माटे वांक तो अवळुं करे तेनोज छे ने बिजाने माथे दोष दे छे, तेमज इंद्रियो ने अंतःकरणनो वांक काढवो. ए पण जिवनी मुर्खाइ छे ने जिव ने मनतो परस्पर अति मित्रछे जेम दुधने ने पाणीने मित्राचार छे तेमज जिवने ने मनने मित्रता छे ते ज्यारे दूधने ने पाणीने भेळा करीने अग्नि उपर मुके त्यारे पाणी होय ते दूध नेतळेबमेनेपोतेबळेपण दुधने नबळवादे त्यारेदुधपणपाणीने उगारवाने सारु पोते उभराइने अग्निने होल्लावीनाखेछे एवीरीते बेयने परस्पर मित्राचार छे तेमज जीवने मनने परस्पर मित्राचार छे ते जे वात जीवने न गमती होय

वच

ते वातनो मनमां घाट थायज नहि ज्यारे कांइक जीवने गमतुं होय त्यारेज म
न जीवने समजावे अने जीव ज्यारे भगवाननुं ध्यान करतो होय त्यारे मन कहेशे जे भगवान
नो भक्त कोइक बाइ होय तेनुं पण भेळुंज ध्यान करवुं पछे तेना सर्व अंगनुं चिंतवन करावी
ने पछे जेम बीजी स्त्रीने विषे खोटो घाट घडे तेम तेने विषे पण खोटो घाट घडे त्यारे जो ए
भक्तनो जीव अतिशे निर्मळ होय तोतो मननुं कह्युं न मानेने अतिशे दाझ थाय तो मन एवीफ
रीने क्यारे घाट घडे नहि अने जो एनो जीव मलीन होय ने पापे जुक्त होय तो मन नुं कह्युं
माने त्यारे वळी मन एने भुंडा घाट करावी करावीने कल्याणना मार्गथी पाडी नांखे ते सारु
कल्याणना मार्गथी अवळी रीते अधर्मनी वार्ता पोतानुं मन कहे अथवा बीजुं कोइ माणस क
हेतो तेने संघाथे शुद्ध मुमुक्षु होय तेने अतिशे वैर थइ जाय छे. पछे पोतानुं मन अथवा बी-
जो माणस ते फरीने तेने ते वार्ता कहेवा आवे नहि अने मन छे, तेतो जीवनुं मित्रज छे ते जी
वने न गमे एवो घाट घडे नहि अने ज्यारे कांइ मनने अजोग्य घाट थइ जाय त्यारेतो जीव
ने मन उपर अतिशे रिस चढती होय तो फरीने मनमां एवो घाट थायज नहि.अने ज्यारे मन
ने सदाय अजोग्य घाट थया करता होय त्यारे एने पोताना जीवनोज वांक समजवो पण एक

...भक्ति करे तो तेने कोइ विमुख ला मननो वांक समजवो नहि एवी रीते समजीने भगवाननी भक्ति करे तो तेने कोइ विमुख ख जीवनो तथा पोताना मननो जे कुसंग ते लेश मात्र अडी शके नहि अने निर्विघ्न थको भगवाननुं भजन करशे॥इति वचनामृतम्॥ ६॥ २४०॥

संवत १८८३ना भादरवावदि ६ ने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उताराने विषे गादी तकिया उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां अने कंठने विषे मोगराना पुष्पना हार पहेर्या हता नेपाघनेविषेमोगरानापुष्पनातोराविराजमान हतानेपोतानामुखारविंदनीआगळमुनी तथादेश,देशना हरिभक्तनी सभाभराइने बेठीहती.पछेश्रीजीमहाराजसर्वेहरीभक्तप्रत्येबोल्याजेअमाराअंतरनोजे सिद्धांतछेतेकहिएछीयेजेजेने पोतानुं कल्याणइच्छवुंतेनेतो भगवानने भगवानना साधु एथी उपरांत बिजुं कांइ जगतमां सुखदाइ नथी. माटे जेम पोताना शरीरने विषे जीवने आत्मबुद्धिवर्तेछे तेवी भगवानने भगवानना संतने विषे आत्मबुद्धि राखवी जोइए. अने भगवानना भक्तनो पक्ष दृढ करीने राखवो जोइए. ने ते पक्ष राखतां थकां आबरू वधो, अथवा घटो, अथवा मान थाओ, के अपमान थाओ, अथवा देह जीवो, के मरो, पण कोइ रीते भगवानने भगवानना भ

तानो पक्ष मुकवो नहि,ने एमनो अभाव आववा देवो नहि. अने भगवानना भक्त जेवा देहने दे
हना सगां संबंधीने वहालां राखवां नहि. एवी रीते जे हरिभक्त वर्ते तेने अति बळवान एवा जे
काम, क्रोधादिक शत्रु ते पण पराभव. करी शकता नथी. अने जे भगवाननुं ब्रह्मपुर धामछे
तेने विषे भगवान सदाय साकार मुर्त्ति विराजमान रहेछे. अने भगवानना भक्त पण ए भगवा
नना धाममां मुर्त्ति मान थका भगवाननी सेवाने विषे रहेछे. ते भगवाननों जेने प्रत्यक्ष प्रमाण
दृढ आशरो होय तेने मनमां एवी विक न राखवी जेहुं रखे मरीने भुत,प्रेत, थाउं के रखे इं
द्रलोकनेज पामुं, के रखे ब्रह्मलोकनेज पामुं, एवी आशंका मनमां राखवी नहि. केमजे जे
एवो भगवाननो दृढ भक्त होय तेतो भगवानना धामनेज पामे पण वेचमां क्यांइ तेने भगवान रे
हेवा नहि. अने ए भक्तजन होय तेने पण पोतानुं जे मनछे ते परमेश्वरना चर्णारविंदने विषे दृढ
करीने राखवुं जेम वज्रनी पृथ्वी होय तेमां वज्रनी खिलीचोढी होय तेकोइ रीते उखडे नहि.तेम
भगवानना चर्णारविंदने विषे पोताना मनने दृढ राखवुं अने एवी रीते जे भगवानना चर्णारविंदने
विषे पोताना मनने राखे तेने मरीने भगवानना धाममां जावुं नथी एतो छते देहेज भगवानना
धामने पामी रह्यो छे एम वार्ता करीने जयसच्चिदानंद कहिने सर्वे सभाने उठवानी आज्ञा क

री॥ इतिवचनामृतम् ॥७॥२८१॥

संवत १८८३ना भादरवा वदि ९ नवमीने दिवस श्रीजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर गादी तकिया उं नखावीने विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां, ने कंठने विषे मोगराना पुष्पना हार विराजमान हता ने पाघने विषे मोगराना पुष्पना तोरा विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराजे मुनी मंडळने प्रश्न पुछयुं जे, भगवाननो भक्त होय तेने एवो कीयो उपाय छे, जे जेणे करीने सदा सुखी रहेवाय. पछे मोटा मोटा साधु हता तेणे जेवुं जेने समजाणुं तेणे तेवो उत्तर कर्यो, पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे एनो उत्तर एम छे जे जे भगवाननना भक्तने एकतो दृढ वैराग्य होय अने बीजो अतिशे दृढ स्वधर्म होय अने जेणे ए बे साधने करिने सर्वे इंद्रियो जितिने पोताने वश कर्यां होय अने जेने भगवानने भगवानना भक्तने विषे अतिशे प्रिति होय अने जेने भगवानने भगवानना भक्तनेविषे अतिशेमोत्रभाव वर्ततो होय अने जे कोइ दिवसभगवान के भगवानना भक्त थकि उदास थाय

नाहि एवांजे हरिभक्तनां लक्षण होय ते आ लोकने विषे तथा पर लोकने विषे सदा सुखियो रहेछे अने वैराग्यने स्वधर्म तेणे करीने जेणे पोतानां इंद्रियोने वश न कर्यां होय तो ते भगवान तथा भगवानना भक्तने संगे रह्यो थको पण दुखियो रहेछे शा माटे जे जेणे पोतानां इंद्रियो न जीत्यां होय तेने कोइ ठेकांणे सुख थाय नहि, अने भगवाननी भक्ति करतो तो होय तो पण ज्यारे इंद्रियो विषयमां तणाइ जाय त्यारे ते हरि भक्तना हृदामां अति दुख थायछे माटे सर्वे पोतानां इंद्रियोने जितिने वश करे तेज सदा सुखियो रहेछे, अने जेणे सर्वे इंद्रियोने जितिने वश कर्यां होय तेनेज वैराग्यवानने धर्म वाळो जाणवो पण जेनां इंद्रियो वश न थयां होय तेने वैराग्यवानने धर्म वाळो न जाणवो अने जे वैराग्यवानने. धर्मवाळो होय तेने तो सर्वे इंद्रियो नियममां होय अने ते सदा सुखियो होय. पछे मुक्तानंद स्वामीये पुछयुं जे हे महाराज भगवाननो भक्त होय तेने भगवाननी भक्तिमां कियुं अति मोटुं विघ्न छे? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे भगवानना भक्तने एज मोटुं विघ्न छे जे जे पोतामां दोष होय तेने देखे नाहि अने भगवानना भक्त थकी जेनुं मन नोखुं पड़ि जाय अने ते भगवानना भक्त थकि जेने वे परवाइ थइ जवाय एज एने अतिशे मोटुं विघ्न छे. ॥ इतिवचनामृतम् ॥८॥२४२॥

संवत १८८३ ना आसोसुदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमा आथमणे बारय ओरडानी ओसरिये विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना हार तथा गजरा विराजमान हता अने पाघ उपर पुष्पना तोरा झुकि रह्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरीभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराजे सर्वे हरिभक्तने कह्युं जे जे अमारा मोटा मोटा पर्महंसछे तेनी जेवी स्थितिछे ने समजण छे ते अमे तमने आइ भाइ सर्वेने कहीएछीए. तेनेसांभळीने पछे जेवि रीते तमे सर्वेवर्त्तता हो ने जेवि तमनेस्थिति होय तेवि रीते तमे कहि देखाडजो. एम कहीने श्रीजि महाराज बोल्या जे अमारा मुनि मंडळमां जे मोटा मोटा संतछे तेने एम वर्त्तछे जे पोताना हृदाने विषे जाण पणुंछे ते भगवानना धामनो दरवाजोछे ते दरवाजा उपर सर्वे संत उभाछे जेम राजाना चाकरछे ते राजाना घरने दरवाजे उभा रह्या थका कोइ चोर चकारने राजा पासे जावा देता नथी अने ते राजाना चाकरने एम हिमत रहेछे जे कोइ राजा पासे विघ्न करवा जाय तो तेना कटका करी नांखिये पण कोइ रिते राजा सुधि पुगवा देइये नहि एवी हिमते सहित ढाल तरवार बांधिने

उभा रहेछे तेम आ सर्व संतछे ते जाण पणारूप जे भगवानना धामनो दरवाजो त्यां उभा
रहेछे अने ए जाण पणा मांहि जे अक्षरधाम तेमां भगवानछे तेनां दर्शन करेछे,
अने ते भगवान भेळुं पोताना हृदाने विषे धन स्त्री आदिक जे माइक पदार्थ तेने पेसवा देता
नथी अने कोइ जोरे करीने माइक पदार्थ हृदामां पेसवा आवे तो तेनो नाश करी नांखेछे
पण कोइ रीते जे ठेकाणे भगवानने हृदामां धारयाछे ते ठेकाणे पेसवा देता नथी अने सुरवि
रनी पेठे सावधान थका उभा रहेछे अने हाण वृद्धि सुख दुख मान अपमान आदिक अनंत
प्रायनां विघ्न आवे तेणे करीने पोताना मुकामथी डगता नथी. त्यारे कोइक आशंका करे
जे त्यांथी डगता नथी त्यारे देहनी क्रिया जे खान पानादिक तेने केम करता हशे तो ते दृ-
ष्टांते करीने कहियेछीए जे जेम पाणियारी होयतेकुवा उपर जळ सिंचवाजायछेत्यारे कुवाना
कांठा उपर पग मुक्यो होय तेनि पण सुरत राखेछे जे रखे कुवामां पडि जाउं अने बिजी वृ
तिये करिने कुवामांथि पाणि सींचेछे वळी बिजुं दृष्टांत जेम कोइक पुरुष घोडे चडयो
होय त्यारे घोडाना पेंघडामां पग होय त्यां पण सुरत्य राखे अने घोडानि लगाम पकडी हो
य त्यां पण सुरत राखे अने दोडतां थकां वाटमां झाड आवे खाडो आवे पथरो आवे त्यां

पण सुरत राखे एवि रिते आ सर्वे साधुछे ते अंतर सनमुख द्राष्टि राखीने भगवाननी सेवामां पण रहेछे ने देहनि क्रिया पण करेछे ने पोतानी स्थितिमां थी डगता नथी एवी रीते श्रीजीमहाराजे मोटा मोटा जे संत तेनी स्थिति कही देखाडी ने पछे एम बोल्या जे तमारे सर्वेने पण एवी रीते अंतर सनमुख दृष्टि राखीने निरंतरभगवाननी सेवामां रहेवुं अने भगवान् विना बिजा पदार्थवहालां थावा देवां नहि. ए वातनी अतिशेसावधानी राखवी. अने जेम राजानो चाकर छे ते राजा पासे गाफल थइने उभो होय तोराजापासे चोर चकोर जइ पुगे त्यारे ए चाकरनी चाकरी खोटी थाय तेम हरिभक्तने पणभगवानविना बिजा पदार्थमां प्रिती थइ जाय तो जे ठेकाणे पोताना हदाने विषे जाणपणामां भगवान रह्या छे ते ठेकाणे धन स्त्री आदिक बिजा पदार्थ पण पेसी जाय त्यारे तेनी भक्ति खोटीथइजाय माटे पोतानी भक्तिने निर्विघ्न राखीने जो परमेश्वरना चरणारविंदनेपामवा इच्छे तेने जाणपणा रुप जे भगवानना धामनो दरवाजो तेने विषे सावधान थइने रहेवुं अने भगवान विना बिजां पदार्थ त्यां पेसवा देवां नहि,एवी रीते श्रीजीमहराजे पोताना सर्वे भक्तजनने शिक्षानां वचन कह्यां. ॥ इति वचनामृतम् ॥ ९ ॥ २४३ ॥

रेहेतुं होय तो तेना प्रमाणनो व्यासीना ग्रंथनो श्लोक तथा वेदनी श्रुति ते काहि संभळावो शा माटे जे व्यासजीथी बिजा कोइ मोटा आचार्य नथी अने बिजा तो जे जे आचार्य थया छे तेमणे व्यासजीना करेला ग्रंथ ते आशरीने पोत पोताना संप्रदाय चलाव्या छे माटे आदि आचार्य जे व्यासजी तेनां जे वचनतेसर्वे आचार्यना वचन करतां अति प्रमाण छे माटे व्यासजीनां वचन तथा वेदनी श्रुतिये करीने जे वृंदावन महाप्रलयमां नाश नथी थातुं एवुं जे प्रमाण ते काहि संभळावो तो अमारा संशयनी वृति थाय, अने जे जे आचार्य थया तेणे पद्म. पूराणना वचने करीने पोत पोतानो मत स्थापन कर्यो छे, ते पद्म पुराणमां क्षेपक श्लोक नाखी मार्वीने स्थापन कर्यो छे ते पोताना मतना होय ते माने पण बिजा कोइ माने नहि माटे श्रीमद्भागवत सरखा प्रासिद्ध पूराणनुं वचन काहि सभळावो तो अमारे प्रतिति आवे शा माटे जे व्यासजीए वेद, पूराण, इतिहास ए सर्वेनुं सार ग्रहण करीने श्रीमद्भागवत कर्युं छे माटे जेवुं भागवत प्रमाण एवा बिजां पुराण अतिशे प्रमाण नहि अने जेवी भगवद्गीता प्रमाण तेवुं तो समग्र भारत प्रमाण नहि माटे एवा बळवान शास्त्रनुं वचन काहि संभळावो तो अमने हा पडे-एवी रीतनां जे श्रीजी महाराजनां वचन तेने सांभळीने ते

ब्राह्मण एम बोल्या जे हे महाराज तमे जे प्रश्न कर्यु ते सत्य छे ने तमारा प्रश्ननो उत्तर क रवाने आ पृथ्वी उपर कोइ समर्थनथीअनेमारा मनने तोतमारास्वरूपनीदृढप्रतिति आवीछे तमे तोसर्वेआचार्यनाआचार्यछो ने इश्वरना इश्वर छो माटे मुनेतमारुंसिद्धांतहोयतेकृपाकरीनेकहो. पछे श्रीजी महाराजबोल्याजेवेद, पुराण, इतिहासनेस्मृतियोएसर्वेशास्त्रमांथीअमे सिद्धांत कर्यु छे जे जीव माया इश्वर ने परमेश्वर ए सर्वे अनादी छे अने माया छे ते तो पृथ्वीने ठेकाणे छे ने पृथ्वीमां रह्यां जे बिज तेने ठेकाणे जिव छे अने इश्वर तो मेघने ठेकाणे छे तेपरमेश्वरनी इच्छाए करीने पुरुषरूप जे इश्वर तेनो माया संघाथे संबंध थाय छे त्यारे जेम मेघना जळना संबंधे करीने पृथ्वीमां हतां जे बिज ते सर्वे उगीने आवे छे, तेम मायामांथी अनादिकाळना जिव हता ते उदे थइ आवे छे पण नवा जिव नथी थाता. माटे जेम इश्वर अनादीछे, तेममाया पण अनादि छे ने ते मायाने विषे रह्या जे जिव ते पण अनादी छे पण ए जिव परमेश्वरना अंश नथी, एतो अनादी जिवज छे ते ज्यारे परमेश्वरने शरणे जाय त्यारे भगवाननी मायाने तरे ने नारद सनकादिकनी पेठे ब्रह्म रूप थइने भगवानना धाममां जायछे ने भगवाननो पार्षद थाय छे एवी रीते अमारो सिद्धांत छे एवी रीतनां जे श्रीजी महाराजनां वचन

तेने सांभळीने ब्राह्मण पोताना वैष्णव पणाना माननो त्याग करीने श्रीजी महाराजनो समाश्रय करतो हतो अनेउद्धवसंप्रदायनीदिक्षानेग्रहणकरतोहवो॥ इतिवचनामृतम्॥ १०॥ २४४॥

संवत १८८४ना आषाड सुदि ३ तृतीयाने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथां देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे ल्यो आमे एक प्रश्न पुछीए छीए, जे इंद्रियोने मन बेने जित्यानुं एक साधन छे, के इंद्रियोनो जीत्यानुं जुदुं साधन छे, ने मनने जात्यानुं जुदुं साधन छे ए प्रश्न छे? पछे मोटा मोटा पर्महंस हता तेमणे जेवुं जेने भास्युं तेवुं तेणे कह्युं, पण श्रीजी महाराजना प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे एनो उत्तर तो एम छे जे वैराग्य, स्वधर्म, तपने, नियम, ए चार साधने करीने इंद्रियो जिताय छे, अने भगवाननी माहात्मे सहित जे नवधा भक्ति तेणे करीने मन जिताय छे. पछे मुक्तानंद स्वामीए पुछ्युं जे, जेवी निर्विकल्प समाधीने विषे भगवानना भक्तने शांति रहेछे तेवी ए समाधी विना पण शांति न रहे एवो शो उपाय छे? पछे श्री

जी महाराजे कह्युं जे, जेवी पोताना देहने विषे आत्मबुद्धि ने दृढप्रीति रहे छे तेवीज भगवान तथा भगवानना भक्तने विषे आत्मबुद्धि ने दृढ प्रीति रहे तो जेवी निर्विकल्प समाधीमां शांति रहेछे तेवी शांति ए समाधी विना पण सदाय रह्या करे एज एनो उत्तर छे? पछे श्रीजी महाराजे वळी परमहंस प्रत्ये प्रश्न पुछयुं जे गमे तेवा भुंडा देश काळादिक प्राप्त थायतो पण कोइ रीते कल्याणना मार्गमांथी पाछो पडेज नहि एवो जे हरी भक्त होय तेने केइ जातनी समजण होय जे जे समजणे करीने एवीरीतनी जे एनी दृढता आवे छे जे तेने कोइ रीतनुं विघ्न लागतुं नथी? पछे मोटा मोटा संत हता तेमां जेने जेवुं भास्युं तेवो तेणे उत्तर कर्यो पछे श्रीजीमहाराजना प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि.पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे एनो उत्तरतो एम छे जे जीवने जेवी देहने विषे आत्म बुद्धि छे एवी भगवान तथा भगवानना भक्तने विषे आत्म बुद्धि होय तो तेने कोइ रीतनुं विघ्न लागे नहि, ने गमे तेवा देश काळादिक भुंडा आवे तेणे करीने ए भगवानने भगवानना भक्त थकी विमुख थाय नहि. पछे वळी श्रीजी महाराजे परमहंस प्रत्ये प्रश्न पुछयो जे, जानकीजीने रामचंद्रजीए वनवास दिधो त्यारे जानकीजीए अतिशे विलाप करवा मांडयो त्यारे लक्ष्मणजी पण अतिशे दलगीर थया. पछे सिताजीते लक्ष्मणजी प्रत्ये

बोल्यां जे, हुं मारा दुख सारुं नथी रोती हुंतो रामचंद्रजीना दुख सारुं रोउंछुं. शा माटे जे रघुनाथजी अति कृपाळु ते लोकापवाद सारुं मुने वनमां मुकी पण हवे एम विचारता हशे जे सिताजीने में वगर वांके मनमां मुकी छे, एम जाणीने कृपाळु ते मनमां बहु दुख पामता हशे माटे रामचंद्रजीने केहेजो जे सिताजीने तो काइ दुख नथी. ने वाल्मिक ऋषीना आश्रममांज इने सुखे तमारुं भजन करशे, माटे तमे सिताने दुखे करीने कांइ दुख पामशोमां. एम सिताए लक्ष्मणजी संघाथे कही मोकल्युं पण कोइ रीते रामचंद्रजीनो अवगुण लीधो नहि. एवी रीते जो भगवाननो तथा भगवानना भक्तनो कोइ रीते अवगुण ले नहि. अने वैराग्यने धर्म ते तो सामान्यपणे होय एक हरिभक्त तो एवो छे. अने बिजो हरिभक्त छे तेने तो वैराग्यने धर्म तेतो अति आकरा छे पण सिताजीना जेवी समजण नथी, ए बे प्रकारना हरिभक्त छे. तेमां किया संघाथे अतिशे प्रीति राखीने सोबत करवी. पछे चैतन्यानंद स्वामीए कह्युं जे धर्म, ने वैराग्य, जो सामन्यपणे होय तोपण जेनी जानकीजीना जेवी समजण होय तेनोज अतिशे प्रीतिएकरीने समागम करवो. पण अतिशे वैराग्य ने धर्मवाळो होय, ने भगवानने भगवानना भक्तनो अवगुण लेतो होय तो तेनो संग करवो नहि. पछे श्रीजी महाराजे कह्युं जे ज-

थार्थ उत्तर थयो ॥इतिवचनामृतम्॥ ११ ॥ २४९ ॥

संवत १८८४ना असाड वदि ८ अष्टमीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उतारानी मेडीना गोखने विषे विराजमान हता, ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइनेबेठी हती.पछे श्रीजीमहाराज पोताना भक्तजनने शिक्षाकरवाने अर्थेवातीकरताहवा जे,जेने पोतानुंकल्याणइछवुं तेनेकोइप्रकारनुं मान राखवुंनहि जेहुंउंचा कुळमां जन्म पाम्यो छुं के हुं धनाढ्य छुं के हुं पंडित छुं एवुं कोइ प्रकारे मनमां मानराखवुंनहि अने गरीब सत्संगी होय तेनो पण दासानुंदास थइ रेहेवुं अने भगवान तथा भगवानना भक्तनो जेने अवगुण आव्यो होय ने ते सत्संगी कहेवातो होय तोपण तेने हडकाया श्वानजेवो जाणवो. जेम हडकाया श्वाननी जेने लाळ अडे तेने पण हडकवा हाले, तेम जेने भगवानने भगवानना भक्तनो अवगुण आव्यो होय ते साथे जे हेत राखे अथवा तेनी वात सांभळे तो ने हेतनो करनारो ने वातनो सांभळनारो पण विमुख सरखो थाय, अने जेम क्षय रोग थयो होय ते कोइ औषधे करीने मटेज नहि तेम जेने भगवान ने भगवानना भक्तनो अवगुण आ-

थो होय तेना हृदामांथी क्यारेय आसुरी मतिटळेनहि.अने अनंत ब्रह्महत्या करीहोय,ने अनंत बाळ हत्या करी होय, ने अनंत स्त्री हत्या करी होय, ने अनंत गौहत्या करीहोयने,अनंत गुरु स्त्रीनो संग कर्यो होय तेनो पण कोइ काळे छुटको थाय.ने शास्त्रमां ते पापछुटयाना उपाय पण कह्या छे, पण भगवान ने भगवानना भक्तना अवगुण लेवावाळाने कोइ शास्त्रमां ए पाप छुटयानो उपाय कह्यो नथी,अने फेर खाय अथवा समुद्रमां पडे अथवा पर्वतउपरथी पडे, अथवा कोइ राक्षस मळे ने खाइ जाय तो एकजवार मरवुं पडे अने जे भगवान ने भगवानना भक्तनो द्रोहि होय तेनो तो अनंत कोटी कल्प सुधी मरवुं पडे ने अवतरवुं पडे. अने वळी गमे तेवो शरिरमां रोग थयो होय तेणे करीने शरीर पडे अथवा कोइ शत्रु मळे ने शरिरनो नाश करी नाखे पण जिवनो नाश थातो नथी अने भगवानने भगवाना भक्तनो द्रोह करवाथी तो जिवनो पण नाश थइ जाय छे, त्यारे कोइ केहेशे जे जिवनो नाश केम थातो हशे त्यां दृष्टांत छे जेम हिजडो होय ते पुरुष पण न कहेवाय ने स्त्री पण न कहेवाय ए तो केवळ वृंढळ कहेवाय. तेम जे भगवानने भगवानना भक्तना द्रोहनो करनारो होय तेनो जिव पण एवो नकारो थइ जाय जे कोइ दिवस पोताना कल्याणना उपायने करीज शके नहि. माटे ए

नो जिव नाश थइ गयो जाणवो, एम जाणीने भगवानने भगवानना भक्तनो द्रोह करवोज नहि. अने वळी पोताना देहनां जे सगां संबंधी होय ने ते सत्संगी होय तोपण तेमां अतिशे हेत राखवुं नहि. जेम दुध साकर होय ने तेमां सर्पनी लाळ पडी होय ने तेनुं जे पानकरेतेनाप्राण जाय तेम पोताना देहनां सगां संबंधि होय ने ते हरी भक्त होय तो पण ते देहना संबंध रुप सर्पनी लाळ पडी छे माटे तेमां हेतना करनारानुं जरूर अ कल्याण थायछे एम जाणिने जेने पोतानुं कल्यण इच्छवुं होय तेने देहनां जे सगां संबंधि होय ते साथे हेत राखवुं नहि एम संसारमांथी निस्पृह थइने भगवानना चरणारविंदमां प्रिति राखवीने भगवाननुं भजन कर्या करवुं. आ जे अमे वात करी छे तेने जे अंतरमां राखो . तेने कोइ रीते कल्याणना मार्गमां विघ्न थायज नहि अने आजे ते वात करामात जेवी छे एम कहीने श्रीजीमहाराजे वार्त्तानी समाप्ति करी॥इति वचनामृतम्॥ १२॥ २४६ ॥

संवत१८८४ अशाड वदि ९ नवमी-ने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां अने कंठने विषे मोगराना पुष्पना हार पहेर्या हता

ने पाघने विषे मोगरा ना पुष्पना तोरा विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. ने आगळ मुनी मंडळ दुकड सरो दा लइने किर्त्तन गावता हता, पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे किर्त्तन राखो हवे भगवद्वार्ता करीए. एम कहीने श्रीजी माहाराजे मुनी मंडळ प्रत्ये प्रश्न पुछ्यो जे जिवनो देह छे ते तो पूर्व कर्मने आधिन छे तेनो एक निरधार रहेतो नथी ते क्यारेक साजो रहे अनेक्यारेक कर्माधिनपणे करीने मांदो थइ जाय ने क्यारेक स्वतंत्र वर्तता होय ने क्यारेक पराधिन पणे थइ जाय अने धार्युं होय ते ठेकाणे रहेवाय के नज रहेवाय अने क्यारेक हरिभक्तना मंडळमां रहेता होइए ने कर्म के काळने जोगे करीने नोखा पडी गया ने एकलाज रह्या जवाय त्यारे जे जे नियम राखवानी दृढता होय तेनो कांइ मेळ रहेज नहि. अथवा फरंगी जेवो कोइक राजा होय ने तेणे क्यांइक परवश राख्या अथवा पोताना मनने इंद्रियो ते अंगरेज जेवांज छे तेणेज परवश राख्या, त्यारे जे संतना मंडळमां रहेवुं ने सत्संगनी मर्यादा पाळवी तेनो कांइ मेळ रहेज नाहि. अने शास्त्रमां तो एम कह्युं छे जे धर्म, ज्ञान, वैराग्य ने भक्ति ए चार संपूर्ण होय त्यारे एकांतिकभक्त कहेवाय ने एकांतिकनी जे मुक्ति छे तेने पामे ने काळ कर्म ने

जोगे करीने देहनी व्यवस्था तो एकनी एक रहे एम जणातुं नथी. माटे भगवानना भक्तने केइ रीते एकांतिकपणुं रहे छे ए प्रश्न छे? पछे गोपाळानंद स्वामी, चैतन्यानंद स्वामी नित्यानंद स्वामी, मुक्तानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी, शुकमुनी, इत्यादिक मोटा मोटा साधु हता तेमणे जेवुं जेने जणाणुं तेवो उत्तर कर्यो? पण ए प्रश्ननुं समाधान न थयुं. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे,जेम अमारेभगवाननेविषेनिष्टारहेछे तेम अमे कहिए जे अमारे तो गमे तेवुं सुख दुख आवे तथा संपत विपत आवे तेमां एम रहे छे. जे एक तो भगवाननी अतिशे मोटप जाणीए छीए. तेणे करीने आ संसारमां मोटा मोटा राजानी स्मृद्धि ने राज लक्ष्मी तेने जोइने लेशमात्रम आ अंतरमां तेनो भार आवतो नथी अने एम समजीए छिए, जे आपणेतो भगवान थकी कांइए अधिक नथी ने आपणुं मन छे ते भगवानना चर्णार्विदमां चोटाडयुं छे. अने भगवान संघाथे एवी द्रढ प्रित करीछेजे ते प्रितिने काळ,कर्म,माय. एमांथी कोइए टाळवाने अर्थें समर्थ नथी अने पोतानुं मन प्रित टाळवाने करे तो पण भगवानमांथी ए प्रितिन टळे एवी रीतनो द्रढाव छे ते गमे तेवुं सुख दुख आवेछे तोय नथी टळतो. अने स्वभाविक मनमां एवी रूची रेहेछे जे शेहेर होय,के मेडी होय,के राज दरबार होय त्यांतो गमे नहि अने

वन होय पर्वत होय, नदी होय,फाड होय एकांत ठेकाणु होय त्यां अतिशे गमे छे ने एम जा-
णीए छीए जे एकांतमां बेशोने भगवाननुं ध्यान करीए तो सारु एवी-सदाय रुचि रहेछे.अने
ज्यारे अमने रामानंद स्वामीनुं दर्शन नहोतुं थयुं त्यारे मुक्तानंद स्वामी संघाथे अमे एमठराव
करी राख्यो हतो जे मुने रामानंद स्वामीनुं दर्शन करावो तो आपणे बे जण वनमां जइनेभ-
गवाननुं अखंड ध्यान-कर्या करशुं अने कोइ.दिवस वस्तिमां तो आवशुंज नहि. एम मननो
ठेराव हतो ते हमणां पण मन एवुं ने एवुंज वर्त्ते छे, अने भगवानने भगवा-
नना .जे भक्त तेमां तो .एवुं दृढ हेत छे, तेने काळ, कर्म, ने माया,
तेमांथी कोइए टाळवाने समर्थ नथी, ने पोतानुं मन टाळ्यानुं करे तोय पण हदामांथी टळे
नहि. एवी भगवानने. भगवानना भक्त संघाथे अतिशे प्रीति छे. अने अमे केटलीकवार सत्सं-
गमांथी जावाने अर्थे उदास थया छीए पण भगवानना भक्तनो समुह जोइने टक्या छीए ते को
इ रीते मुकीने जवातु नथी. अने जेने हुं भगवाननो भक्त न जाणुं ते ठेकाणे तो मुने राख्याना
कोटी उपाय करे तोय नज रेहेवाय अने गमे तेवी अमारी शुश्रुखा करे तोय अभक्त संघाथे
अमारे बने नहि. एवी रीते भगवानने भगवानना भक्त संघाथे अमे अमारा मनने अतिशे प्रिति

ए करीने जोडी राख्युं छे अने ते भगवान विना बिजुं कांइ पदार्थ वहालुं राख्युं नथीमाटे शा सारुं भगवानमां प्रिति नहि रहे? अने भगवाननी कथा किर्त्तनादिक करता होइए त्यारे तो ए वी मस्ताइ आवे छे जे जाणीए दिवाना थइ जवाशे अने जेटलो विवेक रहे छे ते तो कोइक भक्तजनना समासने अर्थे रहे छे पण मनमां तो एवीने एवीज खुमारी रहे छे अने उपरथी तो लोकने मळतो व्यवहार राखीए छीए. अने ते भगवान छे ते आ देहना प्रवर्तावनारा छे ते गमे तो देहने हाथीए बेसारी ने गमे तो बंधीखानामां नंखावो अने गमे. तो आ देहमां कोइक मोटो रोग प्रेरो पण कोइ दिवस भगवान आगळ एवी प्रार्थना करवी नथी जे हे महाराज आ मारुं दुख छे ते टाळो. शा माटे जे आपणे तो पोताना देहने भगवानना गमतामां वरतावनो छे ते जेम ए भगवाननुं गमतुं होय तेमज आपणे गमे छे पण भगवानना गमताथकी पोतानुं गमतुं लेश मात्र पण नोखुं राखवुं नथी अने आपणे ज्यारे तन मन धन भगवानने अर्पण कर्युं, त्यारे हवे भगवाननी इच्छा तेज आपणुं प्रारब्ध छे ते विना बिजुं कोइ प्रारब्ध नथी. माटे भगवाननी इच्छाये करीने गमे तेवुं सुख दुख आवे तेमां कोइ रीने अकळाइ जावुं नहि ने जेम भगवान राजी तेमज आपणे राजी रहेवुं अने एवी रीतनी जे भगवानने विषे दृढ

मिती तेणे जुक्त एवो जे भक्त तेमनां जे धर्म, ज्ञान, वैराग्य ने भक्ति तेनी रक्षाने तो ए भगवा न पोतेज करे छे अने क्यारेक देशकाळना विशमपणे करीने बाहेरथी तो ते धर्मादिकना भंग जेवुं जणाय पण ते भक्तना अंतरमां तो धर्मादिकनो भंग थातोज नथी एवी रीते श्रीजी महाराज पोताना उद्देशे करीने जे भगवानना अति दृढ भक्त होय तेने जे समजवुं घटे ने जे भगवानमां दृढ प्रीती करी जोइए ते सर्वे वार्त्ता करी देखाडता हवा. ॥ इति वचनामृतम् ॥१३॥२४७॥

संवत १८८४ ना अशाड वदी ११ एकादशी नेदिवस स्वामी श्री सहजानंदजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमा उगमणे बार ओरडानी ओसरिये विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने मस्तक उपर पाघमांपुष्पना तोरा फुकि रह्या हता ने कंठने विषे पुष्पनाहार पहेर्यां हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशनाहरीभक्तनीसभा भराइने बेठीहती. नेमुनीमंडळकिर्त्तनगावताहता पछेश्रीजीमहाराजे कह्युं जे किर्त्तन भक्ति समाप्ति करो ने प्रश्न उत्तर करीए.पछे मुक्तानंदस्वामीए हाथ जोडीने पुछ्युं जे हे महाराज परमेश्वर थकी तो बीजुं कांइ सार वस्तु नथी तो पण परमेश्वरमां ए जीवने के

म दढ मिति थाती नथी?ए प्रश्न छे. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे एने विवेक नथी जो विवेक होयतो एम विचार थाय जे माहारेतो ब्रह्मचर्य वृतछे तो पण स्त्रीना सुखनी तृष्णा हृदामां थी टळती नथी ते ए बहु खोटुं छे ने ते स्त्रीनुं सुख तो चोराशी लाख योनीमां ज्यां ज्यां जन्म धरया त्यां त्यां सर्वत्र प्राप्त थयुं छे ते पण मनुष्य देहथी अधिक प्राप्त थयुंछे केमजे ए जीव बकरो थयो हशे त्यारे हजार बकरीयोने पोते एकलो भोगवतो हशे अने ज्यारे घोडो के,पाडो,के सांढ,के बुढीयोवानरो इत्यादिक पशुना देहने पाम्यो हशे. त्यारे तेने विषे पोत पोतानी जातनी अतिशे रूपवानने जोबनवान एवी अनंत स्त्रीयो ते एक एकने मळी हशे, ने तेमां कांइ प्रारब्धनुं कारण नथी ने भगवाननी कृपानुं पण कारण नथी एतो सेहेज मळी हती ने वळी पण जो भगवाननुं भजन नहि करे तो जे जे योनीमां जाशे त्यां त्यां अनंत स्त्रीयो प्राप्त थाशे ने तेमां कोइ देवतानुं पण सेवन पुजन नहि कर्युं जोइए ने कोइ मंत्रनोपण जप नहि कर्यो जोइएएतो सेहेजेज ते स्त्रीयादिकना सुखने पामशे. अने आ जिवे केटलीकवार देवता थइने देवलोकनां पण सुख भोगव्यां छे ने केटलीकवार चक्रवृत्ति राजा थइने पृथ्वीमां पण अनंत सुख भोगव्यां छे, तोपण ए जिवने स्त्रियादि

क जे पदार्थ छे तेने भोगव्यानी तृष्णा टळती नथी ने स्त्रियादिकनुं जे सुख छे तेनुं अतिशे दुर्लभपणुं जाणे छे ने तेनुं अति माहात्म जाणीने तेमां प्रीति करे छे ते प्रीति कोइ रीते टाळी टळती नथी, ए पापे करीने परमेश्वरमां दृढ प्रिति थाती नथी. अने एवी मलीन वासना आ जिवने थाय छे ते अमे नजरे दिठिछे.ज्यारे अमे नांहाना हता त्यारे अयोध्यापुरीमां एक शिवनुं मंदिर हतुं तेमां जइने अने सुता त्यां एक कायथ नित्य शिवनुं पुजन करवाने आवता ते शिवनी पुजा करीने गाल वजाडीने शिव पासे एम वर मागतो जे हे महाराज हे शिवजीमुने कोइ दिवस मनुष्यनो अवतार देशोमां शा माटे जे मनुयष्य देहमां तो त्रांनु खाइखाइने मरी गया पण स्त्रिनुं सुख सारी पेठे भोगवातुं नथी माटे हे शिवजी मुनेतो जन्मोजन्म लंबकर्णनो अवतार देज्यो जे लाज मर्याद मुकीने सारी पेठे स्त्रिनुं सुख तो भोगवीए एम नित्य शिवजी पासे वर मागतो एवी रीते आ जीवना हृदामां पापरूप वासना थाय छे, माटे एने कोइ रीते परमेश्वरमां प्रीति थाती नथी. पछे मुक्तानंद स्वामीए वळी पुछ्युं जे, हे महाराज जेने एवो अतिशे अविवेक होय तेने तो भगवानमां प्रीति न थाय, पण जेने एम जणातुं होय जे भगवान सर्व सुखना निधिछे ने भगवान विना बिजा पदार्थ छे तेतो केवळ दुखदाइ ज छे, तोपण

तेने भगवानमां प्रीति नथी थाती तेनुं शुं कारण छे? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे, ए जीव ने पूर्व जन्मने विषे अथवा आ जन्मने विषे कोइक अतिशे जे भुंडा देशकाळ संग ने क्रिया तेनो जोग थइ गयो छे, तेणे करीने अतिशे तिक्षण कर्म थयां छे ते भुंडा कर्मनो एना चित्त मां पाशलागो छे, माटे सार असारने जाणे, तोपण एने असारनो त्याग करीने परमेश्वरने विषे दृढ प्रीति थाती नथी. ते जेवी रीते भुंडा देशकाळ क्रियाने संगे तेने जोगे करीने भुंडाकर्मनो चितमां पास बेठो छे. तेवी रीते अतिशे पवित्र देश, पवित्र काळ, पवित्र क्रिया, ने पवित्र संग, तेने जोगे करीने अतिशे तिक्षण जो सुकृत कर्म थाय तो तेने जोगे करीने अतिशे तिक्षण जे भुंडां पाप कर्म तेनो नाश थइ जायछे, त्यारे एने भगवानने विषे दृढ प्रीति थायछे. ए प्रश्ननो उत्तर छे. पछे अयोध्या प्रसादीए पुछ्युं जे एकनी तो बुद्धि पण घणी होय ने शास्त्रमां पण बहु दृष्टी पुगतीहोय ने बिजो छे तेने तो बुद्धि पण थोडी होय ने शास्त्रमांपणजाझुं जाणतोन होय, अने घणी बुद्धिवाळो होय ते सत्संगमांथी विमुख थइ जायछे, अने थोडी बुद्धिवाळो होय ते सत्संगमां रहेछे तेनुं शुं कारण छे? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे, आ संसारने विषे दैवीने आसुरी बे प्रकारना जीव छे. तेमां आसुरी जीव होय तेने जाजी

बुद्धि होय तोपण सत्संमांथी विमुखज थाय, ने दैवी जीव होय ने तेने थोडी बुद्धि होय तोपण कोइ काळे सत्संमांथी विमुख न थाय. जेम मरचानुं बिज होय, ने लिंबडानुं बिज होय, ने सिगडीयावच्छनागनुं बिज होय तेने वावीने नित साकरनुं पाणी सिंचिये तोपण मरचां ते तीखांज थाय ने लिंबडो ते कडवोज थाय ने सिगडीयो वच्छनाग ते झेरज थाय शा माटे जे एनुं बिज भुंडुंज छे. ने सेलडीने वावीने लिंबडाना पाननुं खातर नांखीए ने कडवुं पाणी सिंचाकरीए तोपण सेलडीनो रस ते मिठोज थाय तेम दैवी जिव छे, ते भगवानने सनमुख रहे छे ने आसुरी जिव होय ते विमुखज थाय छे. पछे शुक मुनीए पुछयुं जे दैवीने आसुरी जिव होय ते केम जाण्यामां आवे? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे दैवी जिव होय तेने काम, क्रोध, लोभादिक दोष तेभुंडादेश काळादि कनजोगे करीने होयपछेसारा देश काळादिकनो जोग थाय तो थोडेक काळे करीने नाश थइ जाय अने आसुरी जिवने जे काम क्रोध लोभादिक दोष होय ते कोइ काळे नाश थाय नहि अने तेने एक वार जो कांइक कठण वचन कह्युं होय तो जिवे त्यां सुधि भुले नहि अने ते आसुरी जिव जो सत्संगी थयो होय तो सौ करतां सरस हरिभक्त जणाय पण जेम भाळ देशमां मोरे समुद्र हतो ते का

प जमाइने मिठी पृथ्वी थइ छे ते ज्यां सुधी कांप होय त्यांसुधीजो खोदीए तोपाणीमिठुं निसरे अने तेथी जो हेठुं खोदीए तो समुद्रना जेवुं खारूं झेर पाणी निसरे तेम आसुरीजिव होय ते हरिभक्त थयो होय ने एनुं गमतुं मरडीने लगारेक छेडयो होय तो जेटली मोटेसाधुनीसेवा करी होय तेथी लाख घणो द्रोहकरे तोपण मनमांसंताप नथाय.पछेमुक्तानंद स्वामीए पुछयुंजे हे महाराजतमे एम कह्युं जे आसुरी जिव होय ने हरिभक्त थयो होय तो तेनुं ज्यां लगी गमतुं राखीए त्यां सुधी तो सत्संगी रहे ने जो गमतुं नराखीएतोविमुख थाय तेज्यां लगी विमुखनथि थयो तेवामां जो तेनो देह पडी जाय तो आसुरी रहे के दैवी थाय? पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ते आसुरी जिव ज्यां सुधी सारो होय ने जो तेवामां देह पडे तो दैवी थाय, अने भगवाननी भक्ति करीने परमपदने पामेछे.पछे नृसिंहानंद स्वामीए पुछयुं जे नवधा भक्तिमांश्रेष्ट भक्ति ते कइ छे? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे नवधा भक्तिमांथी जेने जे भक्तिए करीने भगवानमां दृढ स्नेह थ.य तज भक्ति तेने श्रेष्ट छे. पछे गोपाळानंद स्वामीए पुछयुं जे, जेने बाळ अवस्था होय अथवा जोबन अवस्था होय तेने केवा पुरूपनो संग राखवो पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे जे वए करीने पण वृद्ध होय ने धर्म ज्ञान ने वैराग्य जेने दृढ होय अने भग

वानने विषे पण दृढ प्रीति होय तेवा पुरुषनो संग प्रितिए करीने ए बे जणाने करवो, पछे ना
जे जोगीए पुछयुं जे एकनुं क्रोधे करीने भगवानमां मन जोडाणुं छे ने एकनुं भयेकरीने भगवा
नमां मन जोडाणुंछुं अने एकनुं तो स्नेहे करीने भगवानमां मन जोडाणुं छे ए त्रणेमां कीयो,
श्रेष्ट छे?, पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेनुं हेते करीने भगवानमां मन जोडाणुं होय तेश्रेष्ट
छे. पछे शिवानंद स्वामीए पछयुं जे भगवाननो भक्त तो होय पण जेने श्रीजीमहाराजे कह्यो
एवो जे सार असारनो विवेक ते न होयं ने वैराग्य पण न होय तेने एवो विवेक तथा भगवान
विना बिजा पदार्थमां वैराग्य ते केम थाय ? पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे जो प्रथमज भग-
वानमां दृढ हेत थइ जाय तो विवेकने वैराग्य ते हेते ने जोगे करीने प्रगट थाय छे; ने जेने
जे पदार्थमां हेत थाय छे तेने हेत कहिए अथवा कामना कहीए ते जे जे पदार्थमां हेत होय
ने तेमां जो कोइक अंतराय करे छे तो ते उपर क्रोधे थइ जाय छ ते माणमना देहनो तो
थाय पण पशुने पण क्रोध थइजायछे जेम पाडोहोयतेकामनाए करीनेभेंश उपरआसक्त थयो
होय ने बिजो पाडो आवे तो तेने मारी नांखे छे एवी रीते पसुं पक्षीमां सर्वत्र देखाय छे. तेम
जेम भगवानने विषे दृढ प्रीति होय तेने जे पदार्थ ते प्रीतिमां अंतराय करवा आवे तो ते उप-

र तुरत क्रोध थइ जाय ने ते पदार्थनो तत्काळ त्याग करे माटे जो भगवानां दृढ हेत होय तो एनी मेळेज वैराग्य, ने विवेक, थइ आवे छे. पछे वळी शिवानंद स्वामीए पुछयुं जे बुद्धिवान तो बेय पुरुषछे तेमां एकतोजेम परमेश्वर कहे तेमज मानीले एवो विश्वासिछे ने बिजो तो परमेश्वरनां वचन होय तेमां पण मानवुं घटे तेटलुंज माने ए बेमां कियो श्रेष्ठछे? पछे श्रीजि महाराज बोल्या जे विश्वासी एज श्रेष्ठछे. ते राम कथामां रामचंद्रजिये कह्युंछे जे जे मारे दृढ विश्वासे रहे तेनि जेम माता बाळकनी रक्षा करेछे तेम हुं रक्षा करुंछुं माटे विश्वासी एज श्रेष्ठछे.. पछे आत्मानंद स्वामीये पुछयुं जे मनमां तो एमज निश्चेछे जे देह पर्यंतपरमेश्वरनांग मतामांज रहेवुंछे तोपण एम जाणियेछीये जे परमेश्वरने ने संतने केम करिये तो आपणो विश्वास आवे. पछे श्रीजि महाराज बोल्या जे विश्वास तो परमेश्वरने ने संतने त्यारे आवे ज्यारे अतिशे मांदो थाय ने ते मंदवाडमां चाकरि पण सारी पेठे न थइ होय तोपण कोइनोअवगुण न ले ने पोते मुजाय पण नहीं तथा वांकविना पण परमेश्वरने संतते पोतानुं अतिशे अपमान करे तोपण कोइनो अवगुण न ले त्यारे एनो परमेश्वरने ने संतने विश्वास आवे. अने त्रिजो प्रकार एछे जे जेटला सत्संगमां नियमछे तेमांथी जो लेशमात्र फेर पडे तो अतिशे दु

खाइ जाय ने तेनुं तत्काळ प्रायश्चित्त करे अने जो मनमां खोटो घाट थाय तो विजाने देहे करीने वर्त्तमानमां फेर पडे तेटलोज दूखायने त्रास पामे त्यारे एनो परमेश्वरने ने संतने परिपूर्ण विश्वास आवे जे आ कोइ काळे सत्संगमांथि डगशे नहि. पछे भगवदानंद स्वामीये पुछयुं जे जे भक्तजनना मनने विषे भगवानने भगवानना भक्तनुं अखंड महात्म होय ते विजाने केम जणाय? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे जेना मनने विषे भगवाननुं ने भगवानना भक्तनुं अखंड महात्म होय ते भगवानने भगवानना भक्तनि निष्कपट भावे प्रितिए करीने सेवा करे ने देहे करिने सर्वे संतने पगेलागेअने कोइक संत मांदा होय तो तेनुं माथुं दाबे,पग दाबे,खाधा पिधानि खबर राखे.अने पोतानी पासे पोताने मन गमती वहाली वस्तु आवे तो ते संतने आपीने पछे पोताना काममां वावरे.एवि रिते मनकर्म वचने करिने जो वर्त्ते तेना अंतरमां तो भगवाननुं नेसंतनुं महात्म अखंडछे एमजाणवुं. पछेश्रीजी महाराजे संतने प्रश्न पुछयुं जे धर्म ज्ञान वैराग्यने भकि ए चारे अति तिव्र पणे करिने वर्त्तता होय तोपण धर्ममां कांइक संकर पणुं थाय ने वैराग्यमां कांइक ठेकाणे रागरहिजाय अनेभकिमां पण कांइक शिथळपणुं थइ जाय अने ज्ञानमां पण कांइक आसकि रहि जाय तेनुं शुं कारण हशे?पछेगोपाळानंदस्वामीने

ब्रह्मानंदस्वामीए कह्युं जे जेने धर्म ज्ञान वैराग्यनेभक्ति ए चार तिव्रवर्त्तेछे एवा जे इश्वरमुर्त्ति स मर्थ तेमां जे कांइक कसर जेवुं जणायछे ते, तो केवळ दयाये करिने रहेछे पण विजि कोइ जातनी कसर नथी अने एवा जे मोटा होय ते वहार दृष्टि राखिने वर्त्ते त्यारे केटलाक जीवुंने जडभरत जेवाने सुकजी जेवा करि मुके माटे एवा अतिशे जे मोटा तेमने जे व्यवहारिक दृष्टिये वरतवुं ते केवळ जिवुं उपर दयाये करिनेछे. पछे श्रीजी महाराजे कह्युं जे एनो उतर एजछे॥इतिवचनामृतम॥ १४ ॥ २४८ ॥

संवत१८८४ना आषाड वदि १३ तेरसने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरवारमां पोताना उतारानी मेडीमां गोख उपर विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. ने कंठने विषे मोगराना पुष्पना हार पेहेर्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने वेठी हती पछेमुक्तानंद स्वामीने श्रीजी महाराजे कह्युं जे आज तोअमेअमारारसोइयाहरिभक्तनी आगळ वहु वात करी. त्यारे मुक्तानंदस्वामी वोल्या जे हे महाराज केइ रीते वात करी? पछे श्रीजी महाराज वोल्या जे वात तो एम करी जे भगवाननो भक्त होय ने ते भगवाननी

मानसी पुजा करवा वेसे तथा भगवाननुं ध्यान करवा वेसे ते समे एनो जिव प्रथम जे जे भुंडा देश काळादिकने जोगे करीने पंचविषय थकी पराभव पाम्यो होय अथवा काम,क्रोध, लोभ, मोहादिकने जोगे करीने पराभव पाम्यो होय. ते सर्वनी एने स्मृति थइ आवे छे. जेम कोइक शूरवीर पुरुष होय ने संग्राममां जइने घाय आव्यो होय ने ते घायल थइने पाछो खाटलामां आवीने सुवे पछे एने ज्यां सुधी पाटो गोठे नहि त्यां सुधी घानी वेदना टळे नहि, ने निद्रा पण आवे नहि ने ज्यारे पाटो गोठे त्यारे घानी पीडा टळी जाय ने निद्रा पणआवे तेम भुंडा देशकाळ, संग ने क्रिया तेने जोगे करीने जिवने पंच विषयना जे घा लाग्याछेते ज्यारे नवधा भक्ति मांहिली जे भक्ति करतां थकां ए पंच विषयना घानी पीडा न रहे ने पंच विषयनुं स्मरण न थाय एज एने पाटो गोठ्यो जाणवो अने एज एने भजन स्मरणनुं अंग दृढ जाणवुं पछे ए अंगमां रहीने मानसी पूजा करवी, नाम स्मरण करवुं, जे करवुं ते ए पोताना अंगमां रहीने करवुं तो एने अतिशे समास थाय अने जो पोताना अंगने ओळखे नहि, तो जेम घायल थइने पाटो गोठेनहि ने सुख न थाय तेम एने भजन स्मरणमां कोइ रीते सुख न थाय ने पंच विषयना जे घा एने लाग्या होय तेनी पीडा टळे नहि. माटे नवधा भक्तिमांथी जे

भक्ति करते थके पोतानुं मन भगवानमां चोटे अने भगवान विना बिजो घाट कर नहि त्यारेते हरिभक्तने एम जाणवुं जे मारुं तो एज अंग छे पछे ते जातनी भक्ति एने प्रधान राखवी ए सिद्धांत वात छे॥ इतिवचनामृतम्॥२५॥२४९॥

संवत १८८४ना असाड वदि अमावाश्या ने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता, ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने कंठने विषे मोगरानां पुष्पना हार पहेर्या हता तथा पाघमां तोरा अतिशे शोभायमान झुकी रह्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे मुनी मंडळ समस्त तथा ग्रहस्थ हरिभक्त समस्त प्रत्ये अमे प्रश्न पुछीए छीए ते जेथी उत्तर थाय ते करजो? ते प्रश्न ए छे जे भगवाननो भक्त होय तेने अवगुण वाळा त्याग करतां कोइ वार लागे नहि पण जेमां अतिशे रूडा गुण होय तेनो केंइ रीते त्याग थाय अने जेमां रूडा गुण होय ते तो पोताना संबंधी होय अथवा बिजो कोइक होय पण गुणवान संघाथे सहेजज प्रीति थाय ने ते गुणने जोगे करीने जे प्रीति थइ होय ते टाळी टळेज नहि. माटे भगवानना

भक्तने भगवान विना बिजे ठेकाणे गमे तेवो गुणवान होय तेने संघाथे प्रीतिज न थाय एवो शो उपाय छे? ए प्रश्न छे. पछे मोटा मोटा ज संत तेमणे जेवो आव्यो तेवो उत्तर कर्यो पण श्रीजी महाराजना प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि पछे श्रीजी महाराजे कह्युं जे ल्यो अमे उत्तर करीए. एनो उत्तर ए छे जे जेम पतिव्रता स्त्री होय तेने पोतानो पति कंगाल होय, ने कुरूप होय, अथवा रोगी के वृद्ध होय तो पण बिजा जे तालेवर ने रूपवान ने जोबनवान पुरुष तेने जोइने लेश मात्र मनमां गुण आवे नहि अने जे पतिव्रता होय ते तो बिजा पुरुष सामुं भावे करीने जुवे अथवा हसीने बोले त्यारे एनुं पतिव्रता पणुं नाश पामे. अने ते पतिव्रताने घेर कोइक परूणा आव्या होय तो तेने अन्न जळ आपे तथा पोताना पतिना जे संबंधी पुरुष तेने पण अन्न जळ आपे ते तो पतिना संबंधी जाणीने आपे पण पोताना पति जेवी बिजा पुरुष मात्र संघाथे लेश मात्र प्रीति न होय अने पोताना पतिना जेवो बिजा पुरुषनो गुण पण न आवे ने पोताना पतिनी मरजी प्रमाणेज वर्ते, एवी रीते पतिव्रता स्त्रीने पोताना पति संघाथे दृढ टेक छे. तेम ज भगवानना भक्तने पण भगवान संघाथे दृढ टेक जोइए. अने जेने रूपे करीने भगवाननुं दर्शन पोताने थयुं छे ने ते संघाथे जेने पतिव्रताना जेवी दृढ प्रीति बंधाणी छे तेने, मोटा मोटा जे

बिजामुक्तसाधु ते संघाथे पण प्रीति थायज नहि. अने पोताना इष्टदेव जे भगवान तेना जे बिजा अवतार होय ते संघाथे पण प्रीति थाय नहि. केवळ जे स्वरूपनी पोताने प्राप्ती थई होय तेने संघाथेज प्रिति रहे ने तेनी मरजी प्रमाणेज वर्ते ने बिजाने जे कांइक माने तो तेना जाणीने माने. एवी जेने पोताना इष्टदेव जे भगवान तेने विषे पतिव्रताना जेवी दृढ भक्ति होय ने ते गमे तेवा बिजा गुणवानने देखे पण तेने विषे हेत थायज नहि. जेम हनुमानजी श्री रघुनाथजीना भक्त छे, ते रामाअवतार पछी बिजा केटलाक भगवानना अवतार थया छे. पण हनुमानजीने, रामचंद्रजीने विषेज पतिव्रताना जेवी भक्ति रही छे. माटे हनुमानजीनी भक्ति ते पतिव्रताना जेवी छे. एवी रीते जे भगवानना भक्तनी टेक होय तेनी पतिव्रताना जेवी भक्ति केहेवाय.अने जेनुं अंग एवुं न होयतो तेनी व्यभिचारणीना जेवीभक्ति केहेवाय.माटेजाणीजोइनेपोतानुंनाक कपाय, एवी भक्ति न करवी. ने भगवानना भक्तने तो समजी विचारीने पतिव्रताना जेवी दृढ भक्ति करवी॥ इति वचनामृतम्॥ १६॥ २५०॥

संवत १८८४ ना श्रावण सुदी ६ छठनेदिवस स्वामी श्री सहजानंदजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमा उगमणे बार ओरडानी ओसरिये विराजमान हता

ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने कंठने विषे पुष्पनो हार पेहेर्यो हतो, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना हरी भक्तनी सभा भराइने बेठीहती. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे श्रीमद्भागवतमां जेवुं भरतजिनुं आख्यान चमत्कारी छे; तेवी तो कोइ कथा चमत्कारी नथी केम जे भरतजी तो ऋषभ देव भगवानना पुत्र हता ते भगवानने अर्थे समग्र पृथ्वीनुं राज त्याग करीनेवनमां गया हता, अनेत्यां भगवाननुं भजनकरतां थकां मृगलीना बच्चाने विषे पोताने हेत थयुं त्यारे ते मृगने आकारे पोताना मननी वृत्ति थइ गइ पछे एवा मोटा हता तोपण ते पापे करीने मृगनो अवतार आव्यो. माटे अनंत प्रकारनां पाप छे, पण ते सर्वे पाप थकी भगवानना भक्तने भगवान विना बिजे ठेकाणे जे हेत करवुं ते अति मोटुं पाप छे, माटे समजु होयने ते जो ए भरतजीनी वात विचारे तो अंतरमां अतिशे बिक लागे जे रखे भगवान विना बिजे ठेकाणे हेत थइ जाय. एवी रीतनी अतिशे बिक लागे अने एभरतजीज्या रे मृगना देहनो त्याग करीने ब्राह्मणने घेर अवतर्या त्यारे भगवान विना बिजे ठेकाणे हेत थइ जाय तेनी बिके करीने संसारनां व्यवहारमां चित्त दीधुंज नहि ने जाणीने गांडानी पेठे वर्त्या अने जे प्रकारे भगवानमां अखंड वृत्ति रहे तेमज रहेता हवा. एटलीवात करीने श्रीजी

महाराज ठाकोरजीनी आर्ति थइ त्यां पधारया ॥ इतिवचनामृतम् ॥ १७ ॥ २५१ ॥

संवत १८८४ ना श्रावण वदी १० दशमीने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओशरीए विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठने विषे पुष्पना हार पहेर्या हता ने पाघने विषे पुष्पना तोरा लटकि रह्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनीतथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती पछे श्रीजीमहाराजना भत्रीजा जे रघुवीरजी तेमणे प्रश्न पुछयुं जे जे जाग्रत अवस्थाने विषे जिवनी स्थिति छे तेवी स्वप्न अवस्थाने विषे केम रहेती नथी? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे जिव जेवो जाग्रत अवस्थामां रहे छे, तेवोज स्वप्न अवस्थाने विषे रहे छे केम जे जाग्रत अवस्थामां जेवी वासना होय तेवीज स्वप्न अवस्थामां स्फुरे छे. पछे निर्लोभानंद स्वामीए पुछयुं जे हे महाराज जाग्रत अवस्थामां तो कोइ दिवस दिठांय न होय ने सांभळ्यां पण न होय तेवां तेवां पदार्थ स्वप्नमां फुरि आवेछे तेनुं शुं कारण हशे? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे न दिठां होय ने न सांभळ्यां होय एवां जे पदार्थ स्फुरेछे ते तो पुर्व जन्मनां जे कर्म तेनी वासनाये करिने स्फुरेछे. पछे अखंडानंद स्वामीए पुछयुं

जे, हे महाराज आ जीवने पुर्व जन्मनां जे कर्म ते कर्मनुं जोर भगवाननो भक्त थाय तोपण
क्यां सुधी रहेछे? पछें श्रीजीमहाराज बोल्या जे ए जीवने ज्यारे संतपुरुषनो संग थायछे त्यारे
जेम जेम समागम करतो जाय तेम तेम पूर्व कर्म संबंधि जें वासना ते जुनि थाति जायछे ए-
ने जन्म मरण भोगवावे एवि ते वासना रहे नहि जेम त्रण वर्षनी तथा चार वर्षनी जे जुनि
डांगर थइ पछे ते जम्यामां तो आवे खरी पण वावे तो उगे नहि. तेम पूर्व कर्मनी वास-
नाछें ते जीर्ण थाय त्यारे जन्म मरणने भोगवावें एवि रहे नहि. त्यारे कोइक एम पुछशे जे
वासना जिर्ण थइ केम जणाय? त्यां दृष्टांत जेम कोइक पुरुष ढालो तरवारो लेइने साम
सामा लडाइ करता होय ते ज्यांसुधि साम सामा एमने एम उभा रहे त्यां सुधि ए बेनुं बळ
बरोबर जणाय अने ज्यारे एक जणानो पग पाछो हठयों त्यारे हारयों कहेवाय तेम भगवाननो
जे भक्त होय तेने भगवान संबंधि ने पंच विषय संबंधि संकल्प ते ज्यां सुधि तुल्य पणें वरतता
होय त्यां सुधि एम जाणवुं जें वासना बळवानछे अने ज्यारे भगवानं संबंधि जे संकल्प ते वि
षय संबंधि जे संकल्पने हठावी दें त्यारे एम जाणवुं जे वासना जिरण थइ गइछे. पछे श्री
जि महाराजे परमहंस प्रत्ये प्रश्न पुछयुं जे जे भगवानना भक्तने देहाभिमाननि निवृती थइ हो

यं ने पंच विषयनो अभाव थइ गयो होय ते बिजा सर्वे भक्तने केम कळयामां आवे छे मु-
क्तानंद स्वामीए कह्युं जे हे महाराज आ तमारा प्रश्ननो उतर अमथि नहि थाय माटे तमे
कृपा करीने कहो, पछे श्रीजि महाराज बोल्या जे भगवाननो भक्त ग्रहस्थाश्रमी होय अथव
त्यागी होय ने तेने देहाभिमान तथा पंच विषयमांथि आसक्ती ते तो निवृति थइ होय पछे प-
मेश्वरनी आज्ञाये करीने जेवी रीते घटे तेवी रीते देहाभिमान पण राख्युं जोइये अने जेम ज
ने योग्यहोय तेमतेने पंचविषय पण भोगव्यां जोइये. त्यां दृष्टांत जेम अतिशे दुबळुं ढोर होय
तेने हेठे लाकडां भरावीने सोंघडे पुछडे झालीने उभुं करे ते ज्यां सुधि ए
माणस झाली रहे त्यां सुधी उभुं रहे अने ज्यारे माणस मुकी दे त्यारे
पृथ्वी उपर पडी जाय तेम जे निर्वासनीक होय तेने तो ज्यां सुधी परमेश्वर आज्ञाए
करीने जेटली क्रियामां जोडे तेटलीज क्रियाने करीने रहेवा दे जेम कोइक पुरुषना हाथमां
तिर कमान होय ते ज्यां सुधी ए पुरुष खेंचे त्यां सुधी ए कमान करडी थाय अने ज्यारे
ए पुरुष कमान खेंचतो आळशी जाय त्यारे ए कमान ढीली थइ जायछे तेम जे निर्वा
सनीक पुरुषछे तेतो जेटली परमेश्वरनी आज्ञा होय तेटलाज व्यवहारमां जोडाय पण आज्ञा-

थि वार कांइ न करे, अने जे सवासनिक होय तेतो जे व्यवहारमां जोडाणो होय ते व्यवहारमांथि पोतानी मेळे छुटि सके नहि अने परमेश्वरनि आज्ञाये करीने पण छुटि सके नहि ए वि रिते निर्वासनीक पुरूपने सवासनीक पुरूपनां लक्षणछे॥ इतिवचनामृतम॥ १८॥ २५२॥

संवत१८८४ श्रावण वदि १३ तेरसने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे वार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर गादितकीया नखावीने विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां अने कंठने विषे मोगराना ने करंकारना पुष्पना हार विराजमान हता, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी मंडळ तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठि हती, पछे श्रीजि महाराज बोल्या जे जेणे संसारनो त्याग कर्यो होय एवा जे हरिभक्त तेने बे कुलक्षणछे ते आ सत्संगने विषे शोभवा देता नथी तेमां एकतो कामना, अने बिजी पोताना कुटंबिने विषे प्रिति अने ए बे कुलक्षण जेमां होय ते तो अमने पसु जेवो जणायछे तेमां पण जेने पोताना संबंधिसां वधु हेत होय तेनो तो अमारे अतिशे अवगुण आवेछे माटेजेणे संसारत्यागकर्यो होय तेने तो लेशमात्र पण पोताना संबंधि साथे हेत न राखवुं जोइये शा माटे जे पंच महा पापछे ते

थकी पण देहना संबंधीमां हेतराखवुं ते वधुं पाप छे. माटे जे भगवाननो त्यागी भक्त होय तेने तो आ देह थकी ने देहना संबंधी थकी पोतानो चैतन्य जुदो जाण्यो जोइए जे हुंतो आत्मा छुं, अने मारे कोइ साथे लेशमात्र संबंध नथी अने देहना संबंधी छे ते तो चोराशी लाख जातनी हारे गण्या जोइए अने ते संबंधीने सत्संगी जाणीने तेनुं महात्म समजवा जाय तो एकतो संबंधनुं हेतज होय ने वळी हरीभक्तपणानुं महात्म समजे, पछे भगवानने भगवानना भक्त थी संबंधीमां वधु हेत बंधाइ जाय छे माटे जेमां स्वभावीक हेतरह्युज छे एवां जे पोतानां संबंधि तेने हरिजन जाणीने जो तेमां हेत करे तो तेनो जन्म खराब थइ जाय छे अने वळी देहनां संबंधी न होय पण जे पोतानी सेवा चाकरी करतो होय तेमां पण स्वाभाविक थइ जाय छे माटे जे समजुं होय. तेने पोतानी सेवा चाकरी करतो होय ने ते हरीभक्त होय तो पण ते ने विषे हेत न राखवुं, जेम दूध ने साकर होय तेमां सरपे मोढुं नांख्युं होय तो ते पण झेर कहेवाय तेमां जेमां सेवा चाकरी रूप स्वार्थ भळ्यो होय ने ते हरीभक्त होय तो पण तेमां पोतानुं स्वार्थ लेइने हेत न राखवुं, शा माटे जे पोताना जिवने एथकी बंधन थाय छे. अने जे भगवाननुं चितवन थाय तेमज जेमां पोतानो स्वार्थ होय तेनुं पण चितवन थावा मांडे ए जे एनेभग

वाननी भजनमां विघ्न कहेवाय. जेम भरतजीने मृगलीनुं बच्चुं तेम अविद्या माया रूप थयुं, एवी रीते ने जे भगवानना भजनमां अंतराय थातो होय तेने भगवानना भक्तने अविद्या रूप जाणवुं अने अतिशे त्याग करवो अने आ प्रकरणनी जे वार्त्ता तेने संत मंडळ तथा सांख्य जोगी हरिभक्त समस्त तेमने नित्य प्रत्ये कहेवी ने सांभळवी तेनी विगत जे तेना मंडळमां जे मोटेरो होय तेने नित्य प्रत्ये आ वात करवी अने बिजाने सांभळवी अने जे मोटेरो होय ने जे दिवस वात न करे तो तेने ते दिवस उपवास करवो अने जे श्रोता होय ने ते श्रद्धाए करी ने आ भगवाननी वात सांभळवामां न आवे तो तेने पण उपवास करवो अने आ वचनने अतिशे दृढ करीने राखजो॥ इतिवचनामृतम्॥ १९॥२५३॥

संवत १८८४ ना श्रावण वदि अमावास्याने दिवस रात्रीने समे स्वामी श्री सहजानंदजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां पोताने उतारे विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे दिनानाथ भटे पुछयुं जे हे महाराज काळतो भगवाननी शक्ति छे अने कर्म तो जिवे कर्यां होय ते छे पण स्वभाव ते वस्तु गते शुं हशे? पछे

श्रीजी महाराज बोल्या जे- जिवे जे पूर्वे जन्मने विषे कर्म कर्या छे ते कर्म परिपक्व अवस्थाने पामीने जिव भेळां एक रस थइ गयां छे, जेम लोढाने विषे अग्नि प्रवेश थइ जाय, जेम परिप क्वपणाने पामीने जिव साथे मळी रह्यां एवां जे कर्म तेजेज स्वभाव कहीए. अने तेनेज वासना तथा प्रकृति कहीए. पछे मुक्तानंद स्वामीए प्रश्न पुछ्युं जे हे महाराज जिव साथे एक रसपणा ने पामी रह्यां एवां जे कर्म एनेज स्वभाव तथा वासना करीने कहो छो ए वासना टाळ्यानो शो उपाय छे? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे ए वासना टाळ्या नो उपाय तो आत्म निष्टाए सहित श्री कृष्ण भगवाननी भक्ति करवी एज भासे छे अने जो आत्मनिष्टा विना एकलीज श्री कृष्ण भगवाननी भक्ति होय तो जेम भगवानमां हेत करे तेम बिजा पदार्थमां पण हेत थइ जाय माटे आत्मनिष्टा सहित भक्ति करवी एज वासना टाळ्या नो उपाय छे. अने आत्मनिष्टा वाळाने पण जो कोइक भुंडा देशकाळादिकने योगे करी ने अज्ञानीनी पेठेने क्षोभ थइ आवे पण झाझीवारटके नहि॥ इतिवचनामृतम्॥ २१॥ २५४॥

संवत १८८४ ना भादरवा सुदि ९ नवमी ने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महा राज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया

उपर गादी तकीया-नखावीने विराजमान हता; ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां, ने कंठने विषे चमेलीना पुष्पना हार विराजमान हता, ने पोतांना मुखारविंदनी आगळ मुनी-मंडळ समस्त तथा-देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी-हती. पछे श्रीजी महाराजे गोपाळानंद स्वामीने ने शुक मुनीने प्रश्न पुछ्युं जे भगवाननी जे भक्ति छे तेणे करीने जिव भगवाननी मायाने तरे-छे ने अक्षरधामने पामे छे-अने जे धर्म छे तेणे करीने तो देवलोकनी प्राप्ति थाय ने ते पुन्यने क्षये पाछो देवलोकमांथी ते पडी जाय छे. अने भगवानना जे अवतार थाय छे तो ते ज्यारे ज्यारे धर्मनी ग्लानी थाय छे त्यारे त्यारे ते-स्वधर्मने स्थापन करवाने अर्थे थाय छे पण भक्तिना स्थापनने अर्थे थाता नथी अने जे प्राप्ती भक्तिथी थाय छे ते प्राप्ति धर्मे करीने जणाती नथी माटे भक्ति सरखी किए प्रकारे धर्ममां मोटाइ आवेए प्रश्न छे. पछे गोपाळानंद स्वामीए ए प्रश्ननो उत्तर करवा मांडयो ने जे जे वात करी तेमां धर्म ते भक्तिनुं अंग रूप थइ जाय पण कोइ रीते भक्ति सरखी धर्ममां गोरता आवे नहि पछे. ए वार्त्ता सांभळीने श्रीजीमहाराज अतिशे हसतां हवा अने एम बोल्या जे ए प्रश्ननो उत्तर घणो कठण छे माटे ल्यो अमे एनो उत्तर करीए जेए धर्म तो बे प्रकारनो छे एक निवृत्ति धर्म छे ने बिजो प्रवृत्ति

धर्मछेतेएवेप्रकारनोधर्मतेभगवान्नासंबंधेसाहितपणछेने भगवाननासबंधेराहितपणछेतेमांभगवाननासं
बंधे सहितजे धर्म छे ते तो नारद, सनकादिक,शुकजी,ध्रु,प्रल्हाद,अंबरीष एआदिक जेभक्त
जन तेनो छे अने ए धर्मनेज भागवत धर्म के एकांतीक धर्म कहे छे. ने ते धर्मने भ-
क्ति तो बे नथि एकजछे अने जे धर्म स्थापनने अर्थे भगवानना अवतार थायछे ते पण एज
धर्मना स्थापनने अर्थे थायछे अने केवळ वर्णा श्रमना धर्मछे ते तो भागवत धर्म थकि अति-
शे गौणछे अने भागवत धर्म करीने तो जीव जेते भगवाननी मायाने तरीने पुरूपोत्तमना धाम
ने पामेछे माटे भागवत धर्मने भक्ति एनुं तो एक सरखुं गौरव पणुंछे अने प्राप्ति पण एक स
रखीजछे.एवी रीते भक्तिने धर्मनी सरखी मोटाइछे. ने केवळ जे वर्णा श्रमना धर्म ते तो ते
थकी अतिशे दुबळाछे ने तेनुं फळ पणनाशवंतछे,अने अमारो पणमत एछे जे भगवान तथा
भगवानना एकांतिक भक्त ते विना कोइ संघाथे हेत करिये तो पण थातुं नथी अने
अमने एम जणायछे जे जडभरत सुकदेव दत्तात्रेय ऋपभदेव भगवान एना सरखो अमारो
ढाळोछे माटे अमने पण वन पर्वत ने जंगल एमांज रेहवुंगमेछे पण मोटां मोटां सेहेर पाटण
होय एमांरहेवुं गमतुं नथी एवो अमारो सहज स्वभावछे तोपण भगवान तथा भगवानना भक्त

ने अर्थे लाखु माणसना भिडामां रहियेछिये तोपण अमारे जेवुं वनमां रहीएने निर्वर्धरेवाय ते वुंज रहेवायछे अने अमे पोताने स्वार्थे करीने लाखु माणसमां नथी रहेता अमे तो भगवान-त था भगवानना भक्तने अर्थे माणसना भिडामां रहीएछियेअने भगवानना भक्तने अर्थे गमे तेट लि प्रवृती करवी पडे तो पण एने अमे निवृती जाणियेछिये अने भगवाननो जे भक्त होय ने ते गमे तेटला वांकमां आव्यो होय तोपण अमारे तेनो अवगुण आवतो नथी अमे तो एम जाणिये छिये जे भगवानना भक्तमां जो कांइक स्वाभाविक अल्प दोश होय तोपण ते जोवा नहि अने ए दोप जो पोतामां होय तो तेने टाळ्यानो उपाय करवो पण भगवानना भक्तमां ए जातनो दोप होय तो पण ए हारिजननो अवगुण लेवो नहि ने हरिभक्तनो तो अवगुण ज्या रे मोटा वर्त्तमानमां चुकिजाय त्यारे लेवो ने बिजा अल्प दोप होय ते सारूं भगवानना भक्त नो अवगुण लेवो नाहि ने भगवानना भक्त होय तेने वाद विवाद करि जीतिने राजी थावुं नाहि ए साथे तो हारिने ज राजि थावुं ने जे वाद करिने भगवानना भक्तने जितेछे ते तो पंच महा पापना जे करनारा तेथी पण वधु पापिछे, अने अम आगळ जे कोइ भगवानना भक्तनुं घसातुं बोले ते तो अमने दिठोज गमे नहि, ने जे भगवानना भक्तनो अ

वगुण लेतो होय तेना हाथनुं तो अन्न जळ पण भावे नहि अने देहनो संबंधि होय पण
जो भगवागना भक्तनो अवगुण लेतो ते साथे पण अतिशे कुहेत थइ जाय. शा माटे जे
आपणतो आत्मा छीए आपणे देहना संबंधी साथे शास्त्र हेत जोइए आपणेतो सत्ता रूप
रहीने भगवान तथा भगवानना भक्त संघाथे हेत कर्युंछे पण देह बुद्धिए करीने हेत कर्युं नथी
ने जे सत्ता रूप रहीन शके तेनेतो काम,क्रोध,लोभ,मोह,मद,मच्छरादिक जे शत्रू तेपिडयावि
ना रहेज नहि माटे जे आत्म सत्ता रूप थइने भक्ति नहि करता होय तेनुं रूपतो आ सत्सं
गमां उघाडुं थया विना रहेज नहि. माटे जे आ सत्संग छे तेतो अलोकिक छे ने जेवा श्वेतद्वि
प वैकुंठ गोलोक तेने विषे भगवानना पार्षदछे ते जेवाज आ सर्वे सत्संगिछे ने अमे तो जेवा
सर्वेथी पर जे दिव्य अक्षरधाम तेने विषे भगवानना पार्षदछे ते जेवा जो आ सत्संगीने न जा
णता होइएतो अमने भगवान तथा भगवानना भक्तना समछे.अने जेने ज्ञान वैराग्य धर्म ने भ
क्ति ए अतिशे दढ नहि होय तो ते अंत्ये जातां ढिलो पडया विना नहिज रहे. जेम मीणे पा-
येल दोरो होय.ने ते शियाळामां ने चोमासामां तो अकड रहे पण ज्यारे उनाळो आवे त्या-
रे जरूर ढीलो थइ जाय, तेम आहियां हरि भक्तने सर्वे प्रकारे सुख रहे ने सत्संगमां पण स

नमान थातुं रहे तेज रूपजे चोमासु ने शियाळो तेमां तो ज्ञान वैराग्यने धर्म ने भक्ति ते सुधां आकारां जणाय पण ज्यारे सत्संगमां अपमान थाय ने देहे करीने पण दुखी-थाय ते रूपजे उनाळो तेमां तो ज्ञान वैराग्य धर्म ने भक्ति ते मीणे पायेल दोरानी पेठे ढीलां थइ जाय तो पण एमेतो तेनो त्याग करता नथी पण एज एनी मेळे मनमां ओशियाळो थइने सत्संगमांथी पाछो हठी जायछे पछेते सत्संगी कहेवातो होय तो पण तेने अंतरे सत्संगसंबंधिसुखन रहेमाटे सत्संग करवो ते तो आत्म सत्ता रूप थइने अति दृढ पणे करवो पण देह तथा देहनां संबंधि ते संघाथे हेत रही जाय एवो सत्संग करवो नहि जेम सोनानो दोरो कर्यो होय ते छए ऋतुमां सरखो रहे पण उनाळाने तापे करी ढीलो थाय नहि तेम जेनो दृढ सत्संग होय तेने गमे तेवां दुख आवी पडे तथा गमे तेटलुं सत्संगमां अपमान थाय पण तेनुं कोइ रीते सत्संगमांथीमन पाछुं हठे नहि एवा जे दृढ सत्संगी वैष्णवछे तेजअमारेतो सगावाहाला छेनेतेज अमारी नात छे ने आ देहे करीने पण एवा वैष्णव भेळुंज-रहेवुं छे ने श्रीकृष्णभगवाना धाममां पण एवा वैष्णव भेळुंज रहेवुंछे एम अमारो निश्चे छे ने तमारे पण एम निश्चे राख्यो जोइये आ माटे जे तमे सर्व अमारे आश्रित थया छो माटे अमारे तमने हेतनी वात होय ते क

जोइयेने मित्र पण तेनेज जाणवो जे पोताना हेतनी वात होय ते दुख लगाडीने पण कहे एम मित्रनुं लक्षण छे ते समजी राखजो॥ इतिवचनामृतम् ॥२१॥२५५॥

संवत१८८४ना भादरवा वदि ४ चोथने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बार ओरडानी ओसरिये विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. अने पाघने विषे धोळा पुष्पना तोरा झुकी रह्या हता अने कंठने विषे धोळा पुष्पना हार विराजमान हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. ने परमहंस दुकड सरोदा लेइने पोतानी आगळ विष्णुपद गावतां हता ते समयमां श्रीजी महाराज अंतर सनमुख दृष्टि करीने विराजमान हता. पछे श्रीजी महाराज एम बोल्या जे जेवुं प्रेम लक्षणा भक्तियें युक्त आ कित्तनने विषे हरिजननुं अंग कह्युं छे एवुं तो झिणाभाइनुं अंग छे तथा पर्वत भाइने मुळजी एनां पण एवां अंग हतां माटे अमे अंतरसनमुख दृष्टि करीने विचारता हता अने बिजा पण सत्संगमां एवा अंग वहाला हशे अने जेने प्रेमलक्षणा भक्तिनुं अंग आवे तेने पंच विषय ने विषे प्रिति टळी जाय छे अने आत्म निष्ठा राख्या विनाज रहे छे, पछे मुक्तानंद स्वामी

ए पुछयुं जे नरसइ मेहेतो तो सखीभावे श्री कृष्णभगवानने भजता ने केटलाक नारदादिक भगवानना भक्त छे ते दासभावे करीने भगवानने भजे छे ए बे प्रकारना भक्तमां केनी भक्ति श्रेष्ठ जाणवी? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे नरसइ मेहेतो गोपियोने नारदसनकादिक एमनी भक्तिमां बे प्रकार नथी एतो एक प्रकारज छे. अने देहतो पुरुषनो ने स्त्रीनो बेयं माइक छे, ने नाशवंत छे, अने भजननो करनारो जे जिवात्मा ते पुरुष पण नथी ने स्त्री पण नथी एतो सता मात्र चैतन्य छे ते देह मुकीने भगवानना धाममां जाय छे त्यारे जेवी भगवाननी मरजी होय तेवो तेनो आकार बंधाय छे अथवा ए भक्तने जेवो सेवानो अवकाश आवे तेवो आकार धरीने भगवाननी सेवा करे छे. अने जे भगवाननो भक्त होय,तेने जेम भगवानमां प्रीति होय तेमज जो स्त्री धनआदिक पदार्थमांप्रीतिथइजायतोएभगवाननोदृढभक्तकहेवायनहिअनेपरमेश्वरनोभक्तथइने भक्ति करतांथकांजेपापकरेछेने सत्संगमांजकुवासनाबांधेछेतेपापतोएनेवज्रलेपथाय छे, अने कुसंगमां जइने परस्त्रीनो संग करे ते थकी पण सत्संगमां भगवानना भक्त उपर कुदृष्टीए जोवाणुं होय तो तेनुं वधु पापछे. मांटे जेने भगवानमां दृढ प्रीति करवी होय तेने तो कोइ जातनुं पण पोतानी बुद्धिमां रहेवा देवुं नहि: शा मांटे जे सत्संगी हरिजन छे तेतो जेवां

पोतानां मा,बेन,दिकरी होय तेवांछे. अने आ संसारने विषे अतिशे पापी होय ते पोताना गोत्र नी स्त्रीयोने विषे कुद्रष्टी राखेछे माटे जे हरिजनने विषे कुद्रष्टीराखेछे ते अतिशें पापीछे ने ते नो कोइ काळे छुटको थाय नहि. माटे जेने रसीक भक्त थावुं होय तेने आवी जातनुं पाप तेनो त्याग करीने पछे रसीकभक्त थावुं.अनेसर्वेपापमांथीमोटुंपापएछेजेभगवाननेभगवानना भक्तने विषे दोष बुद्धिथाय ने ते दोष बुद्धिएकरीने भगवाननेभगवानना भक्तसंघाथे वैर बंधाइ जाय माटे कोटी गौहत्या करी होय तथा मद्य मांसनुं भक्षण कर्युं होय तथा असंख्य गुरु स्त्रीनो संग कर्यो होय ते ए पाप थकी तो कोइ काळे छुटको थाय पण भगवानने भगवानना भक्तनो द्रोही तेनो तो कोइ काळे ए पाप थको छुटको न थाय अने ते पुरूष होय तो राक्षस थइ जाय ने स्त्री होय तो राक्षसी थइ जायछे. पछे ते कोइ जन्ममां असुर मटीने भगवाननो भक्त थातो नथी. अने जेणे भगवानना भक्तनो द्रोह अडथो होय, ने परिपक द्रोही न थयो होय तेनी तो द्रोह बुद्धि मोटा पुरूषने संगे करीने टळेछे. पण जेनी दृष्टी परिपक्व द्रोह बुद्धि जइ थइ होय तेनी तो कोइ काळे करीने द्रोह बुद्धि टळे नहि. अने द्रोह कर्यांनी साधन दशामां होय ने एम जाणे जे भगवानने भगवानना भक्तनो में द्रोह कर्यो ए मोटुं पाप कर्युं. माटे हुंतो अ-

तिशो निचल्लुं. अने भगवानने भगवानना भक्त तेतो बहु मोटा छे. एवी रीते जे भगवान्नो ने भगवानना भक्तनो गुण ले अने पोताने विषे दोष जुवे तो गमे तेवा मोटां पाप कर्यां होय तोपण ते नाश पामे छे. अने भगवान पोताना भक्तना द्रोहना करनारा उपर जेवा कुराजी थाय छे, ने दुखाय छे तेवा कोइ पापे करीने दुखाता नथी. ने ज्यारे वैकुंठलोकमां जयविजये सनकादिकनुं अपमान कर्युं. त्यारे भगवान तत्काळ सनकादिक पासे आव्या ने सनकादिक प्रत्ये एम बोल्या जे तम जेवा ज साधु तेनो जे द्रोह करे तेतो मारा शत्रु छे माटे तमे जयविजयने शाप दीधो ए बहु सारु कर्युं अने तम जेवा भगवदी ब्राह्मण तेनो तो जो माहारो हाथ द्रोह करे तो ते हाथने पण हुं कापी नाखुं तो बिजानि शी वार्त्ता कहेवी. एवी रीते वैकुंठनाथ भगवान सनकादिक प्रत्ये बोल्या जे जयविजय हता ते भगवदिना अपराध रूपी जे पाप तेणे करीने दैत्य थया. एवी रीते जेणे जेणे भगवानना भक्तनो द्रोह कर्यो छे ते सर्वे मोटी पदवीमांथी पडी गया छे ते शास्त्रमां वात प्रसिद्ध छे. माटे जेने पोतानुं रुडुं इच्छवुं तेने भगवानना भक्तनो द्रोह करवो नहि, ने जो जाणे अजाणे कांइक द्रोह थइ गयो होय तो पगे लागी स्तुति करीने जेम ते राजी थाय तेम करवुं ॥ इति वचनामृतम् ॥ २२ ॥ २५६ ॥

संवत १८८५ ना आसो सुदि १५ पुनमने दिवस रात्रीने समे स्वामी श्रीसहजानंद

जी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उताराने विषे फळियानि वच्ये ढोलियो ढळावीने ते उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यांहतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ पर्महंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराज कृपा करीने सर्वे हरीजन प्रत्ये बोल्या जे,जे भगवाननो भक्त होय ते नित्ये भगवाननी मानसीपुजाकरतेमानसीपुजा करवानीएमाविक्तछेजेउनाळो शियाळो नेचोमासुंएत्रणे ऋतुनेविषेनो खी नोखी मानसी पुजा करवी तेमां उनाळाना चार महिना सुधी तो एम पुजा करवी जेसारु टाढुं सुगंधिमान पवित्र जळ होय तेणे करीने भगवानने प्रथम नवरावव‍ाने पछे धोयेलो धोळो खेस सुंदर झिणो ने वाटो होय ते पेहरवा आपवो ने पछे सुंदर आसन उपर विराजमानएवा जे भगवान तेना अंग अंगने विषे सुंदर मळियागर चंदन घसीने वाटयकामां उतारी राख्युं होय ते चरचवुं ते प्रथम तो ललाटने विषे चरचीने ललाटने सारी पेठे निरखवुं तथा हाथने विषेचरचीनेहाथनेसारी पेठे निरखवा तथाहृदय,उदर,साथळ ने पिंडिएआदिक जे जेअंग तेने विषे चंदननुं लेपन करी करीने तेते अंगने निरखवां तथा चरणारविंदनी उपरने तळे सुंदर कं-कु चोपडवुं ने चरणारविंदने निरखवां पछे मोगरा चमेली गुलाब चंपो ए आदिक जे सुगंधीमा

ने पुष्प तेना हार तथा कंकण बाजुबंध टोपी ए आदिक जे आभुषण तेने पुष्पनां पेहेरावनांअ
ने मोगराना पुष्प जेवुं धोळुं ने झीणुं ने बहु भारे नहि एवुं वस्त्र मस्तकने विषे धरावनुं तथा
धोळी झीणी ने हलकी एवीजे सुंदर पछेडी ते ओढाववी. पछे ते भगवानने मळवुं ते एक वा
र मळवुं,बे वार मळवुं जेवुं पोतानुं हेत उपजे तेम मळवुं तथा भगवानना चरणारविंद पोतानी
छातीमां लेवा तथा मस्तक उपरधारवां अने ते मळवे करीने जे भगवानना अंगनुं चंदन पोता
ना अंगमां वळगे तथा भगवानना चरणारविंदने पोतानी छातीमां ने मस्तक उपर धार्यां होय ते
णे करीने जे कंकु वळगे तथा पुष्पना हारनां चित्र इत्यादिक जे जे पोतानां अंगमां वळगे तेने
धारवुं कहेतांएमजाणवुंजेभगवाननुं प्रसादीचंदन,कंकु ने हार ते माहारा अंगमां अडयांछे. अ
ने शियाळाना चार महिना सुधीतो एम पुजाकरवीजेप्रथमतोभगवानने उनेजळेकरीने नवराववाने
पछे धोळो खेस पेहेरवा आपवो पछे ढोलीया उपर मखमलनुं गादलुं पाथरीने ते उपर धोळो
ओछाड ओढाडीने ते उपर भगवानने विराजमानकरवा नेपछेसुरवाळ पेहेराववो तथा डगली पे
हेराववी तथा सोनेरी ताराळो भारे कसुंबी रेंटो मस्तके बंधाववो तथा केहेडे भारे रेंटो बंधाव
वो तथा खभे भारे रेंटो धराववो तथा हीरा मोती सुवर्ण लालनां जे भात भातनां ते घरेणां

अंगअंगने विषे धरावत्रां तथा मोतीनी माळा पेहेरावबी अने वस्त्र पेहेरावीने तथा आभूषणपे-
हेरावीने भगवाननां जे ते ते अंग तेने सारी पेठे निरखवां अने भगवानना ललाटने विषे एक
कंकुनो चांदलो करवो. अने चोमासना चार महिना सुधी एम पुजा करवी जे, जाणीएभगवा
न कोइक गामथी अव्या ते धोळां वस्त्र सर्वे पलळी गयां छे अथवा नदिए पर्महंस सहितना
हावा पधारया हतां, त्यांथी पलळीने आव्या छे. पछे ते पलळेलां जे वस्त्र तेने उत्तरावीने सर्वे
कर्मुबल वस्त्र पेहेरवा आपवां अने ललाटने विषे जे पिळुं केसर चंदन तेनुं लेपन करवुं. अने
उनाळो होय त्यारे चोगान जायगामां तथा फुलवाडीमां भगवान विराजमान छे, एवी रीते भ
गवानने धारवा, अने शियाळो ने चोमासुं होय त्यारे कोइक सारी मेडीने उपर भगवान
विराजमान छे अथवा घरने मांहिली कोरे विराजमान छे एवी रीते भगवानने धारवा. अने
भगवानने जमवा कंइ वस्तु आपवी तो जे भक्ष भोज्यलेह्यचोष्य पोतानामनमांखावानेगमतांहोय
तेवां भगवानने अर्थे चिंतववां अने ते भगवाने भावतां न होय तोपण पोताने गमतांज भोजन
भगवानने अर्थे चिंतववां. अने बिजो जे धुपदिप आरती ए आदिक उपचार ते जथा- जोग्य
भगवानने अर्पण करवां. एवी रीते त्रणे ऋतुमां भिन्न भिन्न पुजा करे तो. ते भ-

क्तने भगवानने विपे हेतनी वृद्धि थाय छे, ने तेना जिवने वहु समास थाय छे. माटे जेणे आ वात सांभळी छे ते राखजो ने नित्ये आवी रीते भगवाननी मानसी पुजा करजो ने आवी वात अमे कोइ दिवस करी नथी. अने वळी श्रीजी महाराजे एक त्रिजी वात करी जे ज्यारे भगवानने भगवानना भक्त ते पोताने उपर राजी थाय त्यारे ते भक्तने एम विचारवुं जे मारां मोटां भाग्य जे मारा उपर भगवान ने भगवानना भक्त राजी थया अने शिक्षाने अर्थे भगवान ने भगवानना भक्त पोताने वढे त्यारे पण एम विचारवुं जे मारां मोटां भाग्य जे मुने भगवान ने भगवानना भक्त वढ्या जेणे करीने मारामां अवगुण हशे ते जाशे. एवी रीते वढे तो पण राजी थावुं पण वढे त्यारे मनमां शोक न करवो ने कचवावुं नहि ने पोताना जिवने अति पापी न मानवो ने राजी रहेवुं आ वात पण राख्या जेवी छे. ॥ इति वचनामृतम् ॥ ॥२३॥२८७॥

संवत १८८५ ना आसो वदि १२ द्वादशीनेदिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां श्री गोपीनाथजीना मंदिरने विपे विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश

देशना हरीभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराजने मुक्तानंद स्वामीए प्रश्न पुछयुं जे भगवानना जे भक्त ते अक्षरधामने विषे भगवाननी सेवामां रहे छे ते सेवानी प्राप्ति नां जे साधन ते शां छे? त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे श्रद्धा स्वधर्म वैराग्य ने सर्वप्रकारनी द्रियोनो निग्रह करवो ने अहिंसा ब्रह्मचर्य व्रत साधुनो समागमआत्म निष्ठा ने महात्मज्ञाने युक्त एवी जे भगवाननी निश्चळ भक्तिने संतोष निर्दंभपणुं दया तप ने पोताथी गुणे करीने मोटा जे भगवानना भक्त तेमने विषे गुरुभाव राखीने तेमने बहु प्रकारे मानवा ने पोताने बरोबरिया जे भगवानना भक्त तेमने विषे मित्रभाव राखवो ने पोताथी उत्तरता जे भगवानना भक्त तेमने विषे शिष्यभाव राखीने तेमनुं हित करवुं एवी रीते आ सोळ साधने करीने भगवानना एकांतिक भक्त थइने अक्षरधामने विषे भगवाननी सेवाने रुडी रीते पामे छे. पछे शुक मुनीए प्रश्न पुछयो जे आपणा सर्व संत वर्त्तमानमां रहे छे तथापि एमने विषे एवुं कियुं लक्षण छे जे जेणे करीने एम जाणीए जे एने आपत काळ पडशे तो पण ए धर्ममांथी नहि डगे? त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे भगवानना जे जे नानां मोटां वचन तेनी उपर निरंतर जेनी दृष्टि रहे पण वचन बाहेर पग देवो पडे तेमां अति कठण पडे अने ते वचनथी आगळ

पग मांडीने अधिक पण न वर्त्तें अने ओछो पण न वर्त्तें तेने जाणीए जे ए धर्ममांथी आपत
काळे पण नहि पडे.पछे श्रीजीमहाराजे कृपा करीने एम वार्त्ता करीजे प्रकृति जे जीनी ते-
जीवने बहु कठण छे तथापि जो सत्संगमां स्वार्थ जणायतो प्रकृति टळवी कठण न पडे जेम
दादाखाचरनाघरना माणसुने अमनेराखवानो स्वार्थ छे तो अमने जेप्रकृतिन गमे ते राखता न
थी. तेम स्वार्थे करीने प्रकृति टळेछे तथा भये करीने पण टळेछे,पण अतिशे नथी टळतो.के
म जे ज्यारे कोइ माणस होय त्यारे तेनो भय राखे ने माणस न होयतो न राखे जेम राजा-
ने भये करीने चोर प्रकृतिनो त्याग करेछे अने जेनो जे स्वभाव होय तेनी उपर वारंवार अमे
कठण वचनना डंक मार्या होय ने कचवाव्यो होय तो पण कोइ रीते पाछो न पडयो होय ते
उपरतो अमारे एवुं हेत रेहेछे ते जाग्रत, स्वप्नमां मार्या विना ते हेत एमनुं एम रह्युं जायछे
ने गमे तेम थाय पण ते हेत टळतुं नथी. अने वळी जे हरीभक्तनेविपेजे अंगहोय तमां एकत्र्यं
ग सरस होय ते कहीए छीए जे दादाखाचरने विश्वासनुं अंग.अने राजबाइने त्यागनुं अंग
अने जेवुं बाइने श्रद्धानुं अंग.अने लाडु बाइने अमारी प्रसन्नता करवी ए अंगअने नित्यानंद
स्वामीने अमारी प्रसन्नता करवी ए अंग.अने ब्रह्मानंद स्वामीने सत्संगनी मर्यादानो कोइ री

ते भंग न थाय एवो आग्रह ए अंग. अने मुक्तानंदस्वामीने अमारी प्रसन्नता करवी तथा अमारो विश्वास ए अंग.अने सोमलाखाचरने सदा एकज रेणी पणुं ए अंग अने चैतन्यानंद स्वामीने एमजे कोइ रीते महाराज प्रसन्न थाय एम आपणी वर्ते थाय तोए ठीक ए अंग अने स्वयं प्रकाशानंद स्वामीने निश्चय तथा माहात्म्य ए अंग. अने ठाकोर जिणाभाइने एम जे भगवान विना बिजा पदार्थमां रखे मारुं मन बंधाइ जाय नहि एवुं अंग. अने मोटा आत्मानंद स्वामीने अमारा वचननुं उलंघन थाय नहि एवुं अंग. एवी रीते घणाक मोटरा पर्महंस तथा हरिभक्त तेनां अंग कह्यां. अने पछे एम बोल्या जे अहिनी मोटेरी त्रण बाइयुं तथा गोपाळानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी, नित्यानंद स्वामी, सुक मुनी, सोमलो खाचर, दादा खाचर ए तमे सर्वे जे हमणां वर्तमानकाळे केवा रुडी रीते वर्तो छो तथापि जो देशकाळ संग क्रिया ए चारने विषे विशमपणुं थाय तो एमनो एम रंग रहे ए वातमां कांइसंशय नथी. अने कदाचित विषयमां बंधाइ गयो होय पण जो जेने विषे जेटलो ज्ञनांश वधारो होय तो ते विषय बंधनने तोडीने निकळे. ते ज्ञानांश ते शुं तो एम समजण होय जे हुं जे जिवते आत्मा छुं तथा देह ते आतो छे तथा देहनां संबंधी ते आवां छे तथा प्रकृति, पुरुष, विराट सुत्रात्माने

आत्याकृत तेना स्वरूप ते आवी रीतनां छे तथा भगवान ते आवी रीतना छे, तथा भगवाननुं धाम ते आवी रीतनुं छे इत्यादिक जे ज्ञानांश तेनी जे अंतर दृष्टीमां दृढतानी ग्रंथी जो पडी होय ने पछे वैराग्य उपजे ते वैराग्य खरो अने ए विना बिजो जे वैराग्य ते तो उपरथी जणाय पण एमां बळ नहि बळतो ज्ञानांशथी उपन्यो जे वैराग्य तेमांज छे जेम दिवांनो अग्नि तेने वायु लागे त्यारे ओलाइ जाय अने वडवानळ अग्नि तथा मेघमां जे विजळीनो अग्नि ते जळ मां रह्यो छे पण ते जळनो पराभव एने थानो नथी प्रज्वलित थको रेहे छे तेम ज्ञानांश विना नो जे वैराग्य तेने विपयनो संबंध थाय त्यारे ए वैराग्य टके नहि अने ज्ञानांशे करीने थयोजे वैराग्य तेने विपयनो संबंध थाय तोपण ए वैराग्य क्षिण पडी वडवानळ अग्निनी पेठे प्रज्वळीत थको वर्त्ते छे. अने एवो जे ज्ञानांश तेनी कोइ रीते करीने तमारा मनमां आंटी पडी जाय ते सारू अमे निरंतर वार्त्ता करीए छीए केमजेजो कोइक वार्त्तानी चुकलागी तो एवी आंटी पडी जाय अने जे एम न समजे ने अमारी जात्य, अमारी मा, अमारो बाप, अमारासंबंधी एवी रीतनी अहंममताए जुक्त जेनी समजण छे तेने तो अति प्राकृत मतिवाळो अणसमजु जाणवो, अने वळी श्रीजी महाराजे कृपा करीने एम वार्त्ता करीने मुमुक्षुने उत्कृष्ट गुणनी प्रा-

ति थाय तेनुं कारण शुं छे? तो भगवाननी कथा वार्त्ता सांभळ्यामां जेने जेटली प्रीति तेने तेट
लो जगतनो अभाव थाय तथा काम, क्रोध, लोभादिक दोषनो नाश थाय. अने जो कथावा
र्त्तामां जेने आळस होय तेनो कोरनो एम अटकळ करवी जे एमां मोटा गुण नहि आवे. अने
शास्त्रमां नव प्रकारनी भक्ति कही छे तेमां श्रवण भक्तिने प्रथम गणी छे. माटे जो श्रवण भ-
क्ति जेने होय तो प्रेमलक्षणा परजंत सर्व भक्तिनां अंग एने प्राप्त थाशे एवी रीते वार्ता करी.
अने तेज दिवस मध्यान समे दादाखाचरना दरबारमां उत्तरादे बार ओरडानी ओसरीनी आ
गळ परमहंस सर्वेनी पंक्ति जमवा सारु बेठी हती. ते समयमां श्रीजी महाराज लिंबडा
ना वृक्ष हेठे ढोलिया उपर विराजमान हता. पछे श्रीजी महाराजे परमहंस आगळ एम वा
त करी जे बाइयुं हरिभक्त छे तेनुं महात्म तो कांडुं समजवुं नहि केम जे ए माहात्मने मीशे
करीने मनमां एनुं मनन थाय एटले स्वप्नमां आवे माटेमहात्म लेवुं तो सौनुं समपणे लेवुंजे ए
सर्वे भगवानना भक्त छे पण अधिक नुन्य पणे महात्म लेवुं नहि अने जो अधिक नुन्यपणे म-
हात्मे समजे तो तेमां मोटुं विघ्न छे तेमज बाइयुं ने भाइनुं महात्म पण समपणे समजवुं अने जो
एम न समजे तो ए बाइयुंने पण मोटुं विघ्न छे॥इतिवचनामृतम् ॥ २४ ॥ २५८ ॥

संवत १८८५ ना कार्तिक सुदी १० दशमीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बारना ओरडानी ओशरीए ढोलियां उपर विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती पछे श्रीजीमाराजे कृपा करीने एम वार्त्ता करी ज भगवान संबंधि भक्ति, उपासना, शेवा, श्रद्धा, धर्मनिष्ठा ए आदिक जे जे करवुं तेमां बीजा फळनी इच्छा न राखवी एम सतशास्त्रमां कह्युंछे ते तो साचुं, प पण एटलीतो इच्छा राखवी जे एणे करीने मारी उपर भगवाननी प्रसन्नता थाय एटली इच्छा राखवी, अने एवी इच्छा राख्या विना अमथुं करे तो तेने तमोगुणी केहेवाय माटे भगवाननी भक्ति आदिक जे गुण तेणे करीने भगवत प्रसन्नता रूप फळने इच्छवुं. अने जो ए विना बीजी इच्छा राखे तो चतुर्धा मुक्ति आदिक फळनी प्राप्ति थाय अने भगवाननि जे प्रसन्नता ते घणा उपचारे करीने जे भक्ति करे तेनीजउपरे थायनेगरीब उपर न थाय एम नथी गरीब होय ते श्रद्धा सहित जळ, फळ, पुष्प, भगवानने अर्पण करे तो एटलामां पण राजी थाय. केमजे भगवानतो अति मोटाछे, के जेम कोइक राजा होय तेना नामनो एक श्लोक जो कोइक

करी जाणे तो तेने गाम आपे तेम भगवान तुरत राजी थायछे. अने वळी भगवाननो खरो भक्त कोण कहेवाय तो पोताना देहमां कोइक दिर्घ रोग आवी पडे तथा अन्न खावा न मळे वस्त्र न मळे इत्यादिक गमे एटलुं दुख अथवा सुख ते आवीपडे तोपण भगवाननी उपासना भक्ति नियमधर्म श्रद्धाए मांथी रंचमात्र पण मोळो न पडे रातिवासरस ते थाय तेने खरो भक्त कहीए. पछे श्रीजी माहाराजने राज वाइये प्रश्न पुछयुं जे हे महाराज किया गुणे करीने तमे राजी थाओ ने किया दोषे करीने कुराजी थाओ? त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे आटला तो वचनमां दोशछे ते किया तो पोताना अंतरमां कांइक विशेष वरतवानुं होय तेनुं अमने एकवार कहि देवुं जे हे महाराज तमे कहो तो हुं आवी रीते वरतुं पण वारमवार न केहेवुं जे हे महाराज हुं आम वरतुं हुं आम वरतुं तमे केम मुने केता नथी, ते न गमे. अने मुने पोतानो इष्टदेव जाणे ने वारे वारे मारा वेण उपर वेण लावे ते न गमे, अने हुं कोइनी आगळ वात करतो हउं ने बोलाव्या विना वचमां बोले ते न गमे, अने भगवाननुं ध्यान करवुं तथा धर्म पाळवो भक्ति करवी इत्यादिक जे जे शुभ क्रिया करवानिछे तेने जे भगवान उपर नांखे जे भगवान करावशे तो थाशे ते न गमे; अने आम हुं करीश आम हुं करीश एम केवळ पोतानुंज बळ राखे पण भ-

गवाननुं बळ न राखे ते न गमे, अने जेने बोल्यामां पोताना अंगनो ठा न होय तेतो अतिः
न गमे, अने बिजां व्यवहारिक काम करवां होय तेमां तो लाज तथा आळस न होय ने भ-
गवाननि वार्त्ता करवी कथा करवी किर्त्तन गाववां तेमा लाज राखे ने आळस रापे ते न ग-
मे, अने त्यागनो अथवा भक्तिनो अथवा कोइ रीतनो जे अहंकार बोलिमां लावे ते न गमे,
अने सभा बेठी होय त्यारे सउथी छेलो आविने बेसे पण पोताने ज्यां घटतुं होय त्यां न बे-
से ते न गमे, तथा कोइक मोटा ते सभामां बेठा होय तेने कुणि मारीने माग करीने पोते बेसे
ते न गमे, ने बाइ माणस होय ने ते पोताना अंगने ढांकिने लज्या सहित वरते ते गमे, तथा
चाले त्यारे निचि दृष्टि राखीने चाले पण फाटी दृष्टि रापे नहि ते गमे, अने अमारां दर्शन
करता होय ने कोइ कवाइ भाइ आवे अथवा कुतरुं निसरे के ढोर निसरे के कांइ खडखडे, ते
सामु वारंवार दर्शन मुकिने जुवे पण एक दृष्टिये दर्शन न करे तेनी उपर तो एवि रिस च-
डे जे शुं करिये साधु थया, नहितो एनुं कोइक ताडन करिये पण तेतो थाय नहि, केमजे सा-
धुने कोइनुं ताडन करवुं ए अति अजोग्य कर्म छे. अने जे कपट राखे पण पोताना मनना
संकल्प ते जे केहेवा जोग्य होय तेनी आगळ पण कहे नहि ते न गमे, अने मान तथा क्रो-

तथा कोइथी दबाइने रहेवुं ते शुं तो पोताना मनमां जेवुं होय तेवुं बिजाथी दबाइने केहवाः नाहि ए जणवानां तो अतिशे भुंडां छे. अने हरिभक्तने मांहो मांहे वरो बरेः पणुं रहे पण एक एकनो भार न आवे ए पण अतिशे भुंडुं छे॥इतिवचनामृतम्॥ २५॥ २५९।

संवत १८८५ना कार्त्तिक सुदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्री सहजानंद जीमहराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री गोपीनाथजीना मंदिरने विषे विराजमानः हता, ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराजे एम वार्त्ता करी जे, भगवाननी पेठे सेवा करवा जोग्य एवा जे संत ते केवा होय, तो इंद्रियुं अंतःकरण आदिक जे मायाना गुण तेनी जे क्रिया तेने पोते दाबीने वर्ते पण एनी क्रियाये करीने पोते दबाय नाहि. ने भगवान संबंधी क्रियानेज करे ने पांच वर्तमानमां दृढ रहेता होय ने पोताने ब्रह्मरुप माने ने पुरुषोत्तम भगवाननी उपासना करे एवा जे संत तेने मनुष्य जेवा न जाणवा, ने देव जेवा पण न जाणवा, केमजे एवी क्रिया देव मनुष्यने विषे होय नाहि. अने एवा संत मनुष्य छे, तो पण भगवाननी पेठे सेवा करवा योग्य छे. माटे जेने कल्याणनो खप होय एवो जे पुरुष तेने एवा सं

तेनी सेवा करवी. ने एवा साधु गुणे जुक्त जे बाइ तेनी सेवा ञादरयुक्ते करवी. पछे श्रीजी
महाराजेने आत्मानंद स्वामीए प्रश्न पुछयो जे, आ सत्संगमां जे वर्तमाननो प्रबंध छे, ते
ज्यां ज्यां सुधी रहेतो होय-त्यां सुधी तो जेवो तेवो होय तेने पण पंच विषए करीने बंधन था
य नहि पण कोइक देशकाळने जोगे करीने सत्संगथी बाहर निसरी जाय तोपण जेने पंचवि
षय बंधन न करी शके, ते पुरुष केवो होय तेनां लक्षण कहो? त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या
जे, जेनी बुद्धिमां धर्मनो विशेषपणे वरततो होय, ने आस्तिकपणुं होय, जे आ लोकमां जे
सारुं नरसुं कर्म करेछे तेनुं जेसारुं नरसुं फळ तेने जरूर परलोकमां भोगवेछे एवि दृढ मति
जेने होय तथा लाज होय जे भुंडु करिशुं तो आ लोकमां माणस आगळ शुं मुख देखाड
शुं, एवो जे होय ते गमे त्यां जाय तोपण एने कोइ पदार्थ तथा स्त्रीयादिक ते बंधन करी
शके नहि. जेम मयाराम भट्टछे तथा मूळजी ब्रह्मचारी तथा निष्कुळानंद स्वामीछे एवा जातन
जे होय तेने स्त्रीधनादिक पदार्थनो जोग थाय तोपण डगे नहि, अने एवो होय तेने जो एक आत्मनिष्ठ
पणुं होय जे हुं आत्मा छुं ब्रह्म छुं ते मारे विषे शुभ अशुभ क्रियानो लागती नथी हुं तो असंग छुं एवुं अंग होय तथा जि
ज्ञासुं एम होय जे भगवाननो माहिमा बहु समजे, ने ते माहिमानी बहु वार्त्ता करे जे कांइक ध

मे विरुद्ध वरताइ जाशे तेनो शोभारं छे.भगवाननो महिमा बहु मोटो छे, ए बे रितनो जे होय
तेमां ए बे रितना दोष ते धर्म मर्यादा पाळवामां मोटो अंतराय रूप छे माटे आवी रीतेसम-
जे तो सारु जे आत्मनिष्ठा पण यथार्थ होय तथा भगवाननुं महात्म सारी पेठे समजे अने नि
ष्कामपणुं, निर्लोभपणुं, निस्वादिपणुं, निस्नेहपणुं, निर्मानिपणुं, ए आदिक जे धर्म तेने भगवा-
नी प्रसन्नताने अर्थे समजीने दृढपणे पाळे. ने, एम समजे जे हुं ए धर्मने पाळीश तो मारिउपर
भगवान बहु राजी थाशे,ने जो मुनेकोइरीतेधर्ममांथी कांइक भंग पडशे, तो भगवाननो मारि
उपर बहु कुराजीपो थाशे.एवी रीते जेना अंतरमां दृढ थयी होय ते भक्त धर्ममांथी कोइदिव
स पडे नही. अने एवो जे होय तेने कोइ माइक पदार्थ बंधन करी शके नहि. ने आवि रित
नी समजण वाळो न होय ने त्रिजो गमे तेवो ज्ञानवाळो होय के भक्तिवान होय तेने पण ध-
र्ममांथी कांइक भंग थइ जाय खरो तथा माइक पदार्थ बंधन करे खरूं ए सिद्धांत वार्त्ता
छे. पछे वळी श्रीजी महाराजे कृपा करीने एम वार्त्ता करी जे अमने अहंकार न गमे.ते अ
हंकार भक्ति पणानो होय, त्याग पणानो होय, वैराग्य पणानो होय, ब्रह्म पणानो होय, समजण
नो होय,वर्त्तमान पाळ्यानो होय,एरीतनो जेजेअहंकारते अमने न गमे.अनेदंभनगमे.तेदंभ ते शु

तो पोताना हृदयमां भगवाननो निश्चय, भक्ति ने धर्म ते थोडां होय ने बिजा आगळ पोतानी मोटप वधर्या सारु उपरथी तेने बहु जणावे ते न गमे. अने पोताने ने भगवानने जे अभेदपणे भजे ते न गमे. तथा जे नियम धार्या होय ते नियमने घडीक मुकी दे ने वळी घडीकमां पाळे एवी रीते शिथल वर्त्ततो होय ते न गमे.अने भगवाननो महिमा तो झाझो मोटो समजे ने पोताने अतिशे तुच्छ समजेपण देहथी जुदो जे आत्मा ते रूप पोताने न माने ते न गमे.अने हवे जे गमे ते कहिये छिये जे भगवाननो महिमा तो यथार्थ समजे ने पोताना देहथी व्यतिरेक जे पोतानो आत्मा तेने ब्रह्म समजे ने धर्ममां दृढ रह्यो होय, अने भगवाननीअचळ भक्ति करतो होय अने आवी रीतनो पोते होय तो पण सत्संगमां कोइक कांइक न समजतो होय ने भगवाननो निश्चय तो होय तेने मोटो जाणे ने तेनि आगळ पोताने अति तुच्छजाणे अने वार्त्ता कर्यामां पोताने मोढे करीने पोतानि समजणनो केफ कोइनी आगळ लगारपण जणवे नाहि एवोजेहोयतेअमनेबहुगमेएविरितेश्रीजीमहाराजवार्त्ताकरी।। इतिवचनामृतम् ।।२६।।२६०।।

संवत १८८५ ना कार्तिक सुदि १५ पुनमने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री गोपीनाथजीना मंदिरने विषे विराजमान

हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ पर्महंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठा हता. पछे श्रीजी महाराजे वार्त्ता करी जे शब्द, स्पर्श रूप, रस ने गंध ए पंच विषय संबंधी जे सुख ते दिव्य मूर्त्ति एवा जे भगवान पुरूषोत्तम तेनी जे सुखमय मूर्त्तिनां जे रूप जे ए स्थळ तेने विषे रह्युंछे तेतो भगवाननी मुर्त्ति दर्शन करता होइये तो रूपनुं सुख प्राप्तथाय. ने बिजा जे स्पर्श आदिक चार विषय तेनुंसुखपणप्राप्त थाय ते एकज समयने विषे थायछे. अने बिजा माइक जे पंच विषयछे तेमां तो एक विषयनो संबंध थाय त्यारे एक विषयनुंज सुख प्राप्त थाय, पण बिजानुं न थाय, माटे माइक विषयमां भिन्न भिन्न पणे सुख रह्युंछे, अने ते सुख तो तुच्छछे ने नाशवंतछे ने अंत्ये अपार दुःखनुं कारणछे, अने भगवानमां तो सर्वे विषयनुं सुख एक काळे प्राप्त थायछे ने ते सुख महा अलोकिकछे ने अखंड अविनाशिछे ते माटे जे मुमुक्षु होय तेने माइक पंच विषयमांथी सर्वे प्रकारे वैराग्य पामीने अलौकीक सुखमय एवी जे भगवाननी दिव्य मूर्त्ति तेने विषे सर्वे प्रकारे जोडावुं, अने वळी श्रीजी महाराजे एम वार्त्ता करी जे जे हरि भक्तने भगवाननी भक्तिनो खप होय तथा संत समागमनो खप होय तो ते गमे तेवो पोतानो स्वभाव होय तो तेने टाळी

ने जेम ते संत कहे ने तेनी मरजी होय तेम वरते अने ते स्वभाव तो एवो होय जे चैतन्य सा
थे जडाइ गयो होय तोपण तेने सत्संगना खपवाळो टाळी नांखे. ते उपर पोतानी वार्त्ता करी
जे अमारो प्रथम त्यागी स्वभाव हतो तोपण रामानंद स्वामीना दर्शननो खप हतो तो मुक्ता
नंद स्वामी आज्ञाने अनुसारे वर्त्तता पण अमारा मननुं गमतुं कांइ न करयुं, अने वळी
जे हरि भक्त होय तेने कोइ जातनी आंटी पाडवी तेना एम विगतछे जे एकतो निष्कामा
दिक वर्त्तमाननी आंटी पाडी होय, ने एके एवी आंटी पाडी होय जे आ ठेकाणे हुं आसन
करुं तो निद्रा आवे ने बिजे ठेकाणे नआवेए आदिक अनेक प्रकारनी जे तुच्छ स्वभावनी
आंटी पाडी होयए बेयने एक रितनी नसमजवी वर्त्तमाननी आंटी तो पोताना जिवनरूपछे
ने तेने विषे बहु माल छे एवी रीते महात्मेसहिततेनी आंटीपाडवीने बिजा स्वभावनीआंटीपाडी
होय तेने विषे तो तुच्छपणुं जाणवुं ने तेने संत मुकावे तो मुकी देवी ने प्रथमनी आंटी मुकवी
नहि अने ए बेयने बरोबर समजे तो एने विषे मूढपणुं जाणवुं जेम बाळक होय तेणे मुठीमां
बदाम झाली होय तेने कोइक मुकावे तो मुकेनहि ने रूपीयानीमुठी वाळी होय ने सोनामोरनी
मुठी वाळी होय ने तेने मुकावे तो तेने मुके नहित्यारेते बाळक बदाम तथा रूपीयो नेमोहोर

तेने विष बराबर मोळ जाण्यो माटे ए बाळकने विषे मूढपणुं छे. अने वळी जेम कोइ कनाहा थमां बदाम होय ने चोर आवीने कहे जे तुं मुको दे नहि तो तरवारथे मारुं कापी नाखीश त्यारे ते डाह्यो होय तो तेने आपी दे ने मुर्ख होय तो न आपे ते ए बे प्रकारनी आंटीमां न्युं न अधिकपणुं जाणवुं ने एम होय नहि ने बेय सामान्यपणुं जाणे तो एनो आंटीदार स्वभाव जाणवो ने तेने मानी जाणवो ने आंटीए करीने ते वर्त्तमान पाळतो होय ने जो मरण पर्यंत एमने एम नभे तो तो ठिक पण तेनो पुरो विश्वास न आवे केम जे जो एने कोइक जारयनां वेण लागे अथवा तेनुं मान न रहे तो एवो ए रहशे नहि. अने जे आंटीए करीने वर्त्तमानपाळतो होय ने भक्ति करतो होय ते तो राजर्षि कहेवाय ने जे भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे भगवाननी भक्ति करतो होय तथा वर्त्तमान पाळतो होय ते तो ब्रह्मर्षि कहेवाय ने ते साधु कहेवाय एवी रीते ए त्रेयमां फळनो भेद पण छे. अने वळी एम वात करी जे मान, इर्षा ने क्रोध ए त्रण दोष ते काम करतां पण अतिशे भुंडा छे, केम जे कामी उपर तो संत दया करे पण मानी उपर न करे ने मनमांथी इर्षा ने क्रोध उपजे छे माटे मान मोटो दोष छे ने माने करीने सत्संगमांथी पडी जाय छे एवो कामे करीने नथी पडतो केम जे आपण सत्संगमां गृह-

न्य हरिभक्त घणा छे ते सत्संगमां पड्या छे माटे ए मांन, इर्षा ने क्रोध ए त्रण उपर अमारे अतिशे अभाव रहे रेहेछे ने अमारां जे जे वचन लखेलां हशे तेमां तेमां पण एमज हशे ते विचारे जुवोतो जणाई आवशे माटे भगवाननुं महात्म समजीने मानने टाळवुं.अने वळोश्री जीमहाराजे एम वार्त्ता करी जे भगवाननो निश्चय ते केने कहीए तो, जेम आ संसामां बाळक पणामांथी मा बाप वर्णाश्रमना धर्म नात जात पशु मनुष्य जळ अग्नि वायु आकाश इत्यादिक जे जे पदार्थनो निश्चय थयोछे ते शास्त्रे करिने थयोछे ने साम्त्र न सांभळां होय तो लोकमां जे शब्द ते शास्त्रथीज प्रवरत्याछे तेणे करिने तेनो निश्चे कर्योछे तेम शास्त्र कह्यां जे निष्कामी निर्लोभी निर्मान निःस्वाद निस्नेह इत्यादिक संतनां लक्षण तेने सांभळीने एवां लक्षण ज्यां देखाय एवा जे संत तेने ने भगवाननें साक्षात संबंध होय माटे एवा संतना वचने करिने भगवाननो निश्चय करवो ने तेना वचनमां दृढ विश्वास करवो तेनो निश्चय कहिये, अने ते पछे वडोदरावाळा नाथ भटे श्रीजि महाराजने प्रश्नपुछयो जे जेने भगवाननोदृढ निश्चय होय एवो जे भगवाननो भक्त तेना जे संबंधी तेनुं कल्याण ते भक्तना संबंधे करिने छे के नथी? त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे जो एना संबंधीने तथा एना पित्रिने एने विषे हेत

होय तो एनुं कल्याण थाय ने हेत न होय तो न थाय ने जो संबंधी पण न होय ने जो तेने ए भक्तने विषे हेत होय तो तेनुं पण सारुं थाय केमजे एने मुवाटाणुं थाय त्यारे ते भक्त तेने सांभरी आवे ने ते भक्तनी वृत्ति तो भगवान साथे निरंतर लागीछे, मेते भक्तनुं तेने स्मर्ण थाय माटे तेनुं कल्याण थाय छे. अने वळी श्रीजी महाराज बोल्या जे अमे आत्माना स्वरूपनी वार्ता करीए छीए, तथा भगवानना स्वरूपनी वार्ता करीए छीए, ते वार्ताए करीने जेवुं एनुं स्वसुख छे तेवुंज सुख तो आवतुं नथी. अने जेवुं एनुं यथार्थ सुखछे तेतो समाधी करीने जाण्यामां आवेछे, तथा देह मुक्या केडे जाण्यामा आवे छे, पण केवळ वार्ताए करीने जाण्यामां आवतुं नथी, जेम रूपनुं सुख ते नेत्रे करीने भोगवाय छे. पछे ते सुखने मुखे करीने वखाण करी जे बहु सारुं रूप दिठुं त्यारे ते सुखनो अनुभव जेवो नेत्रने थयो तेवो मुखने न थयो. तथा श्रवणेने करीने शब्दने सांभळ्यो. नासीकाए करीने गंधने सुंघ्यो त्वचाये करीने स्पर्श लीधो, जिव्हाये करीने रस चाख्यो छे. पछे ते ते सुखनुं वचने करीने वखाण करे जे बहु सारो गंध हाय, बहु सारो रस हतो बहु सारो स्पर्श हतो, बहु सारो शब्द हतो, एम कहुंतो खरुं पण जेवी रीते ते इंद्रियो ने तेने सुखनो अनुभव थयो तो ते वचनने थयो तेम समाधिएकरीनेतथा

देहमुकीनेजेवो भगवानना सुखनो अनुभवथाय छे नेआनंदथायछे तथाआत्मानासुखनो अनुभवने आनंद थाय छे तेवो एनी केवळता करेतेणेकरीने थातो नथीअने जोएबेनीवार्त्ता सांभळीने तेनुं मनन ने निदिध्यास करे तो एनो साक्षातकार थाय.ने साक्षात कार थाय त्यारे समाधिये करी ने जेवो ए बेनो अनुभव ने आनंद थाय तेवोजथाय,माटे ए बेनी वार्ता सांभळीने एनुं मनन ने निदिध्यास करवो ॥इतिवचनामृतम्॥२७॥ २६१ ॥

संवत् १८८५, ना कार्तिक वदि १५ पडवाने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां श्री गोपीनाथजीना मंदिरने विषे विराजमा हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने पोताना मुखारविंदनी आगळपरमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे भगवानमांथी बे प्रकारे जिव पडे छे. एक तो वेदांतना ग्रंथने सांभळीने बिजा आकारने खोटा करे, तेम श्री कृष्णादिक जे भगवानना आकार तेने पण खोटा करे ए वेदांतिने अति पापी जाणवा. अने बिजो ते एम समजतो होय जे भगवानने भजिये तो गोलोक ने वैकुंठलोकमां स्त्री भोग, खान पान आदिक जे पंच विषयनां सुख तेने पामीए,पछे ते सुखनी आशाकिये करीने भगवा

नने पण भुली जाय ने मुळगो कुबुद्धि वाळो थइने एम समजे जे ए-सुख न होय तो ए धाम मां राधीकाजी लक्ष्मी आदिक स्त्रियुं भेळे भगवान पण रमे छे माटे ए सुख पण खरुं छे, पण भगवाननुं पूर्ण काम ने आत्माराम न समजे. अने एवी जे भगवाननी क्रियाउं छे ते तो पोताना भक्तना सुखने अर्थे छे. ते सारुं ज्ञान वैराग्ये सहित भगवाननी भक्ति करवी अने ए भगवानना स्वरूपने जेणे एम जाण्युं होय जे सर्व सुखमय मूर्त्ति तो ए भगवानज छे. बिजा पंच विषयमां जे सुख ते तो तो ए भगवानना सुखनो किंचित लेश छे. एम भगवानने महात्मे सहित जे समज्यो होय ते कोइ पदार्थमां बंधायज नहि. अने ए भगवानना धामना सुख आगळ बिजा लोकनां जे सुख ते तो नर्क जेवां छे एम मोक्ष धर्ममां कह्युं छे. आवी रीते भगवानना भक्ते समजवुं अने एम समजे तो ए बेय प्रकारे करीने भगवानमांथी पडी जाय छे. पछे श्रीजीमहाराजने सूराखाचरे प्रश्न पुछयो जे भगवानेने तथा संतने जेवा छे तेवा निश्चयपणे जाणीने पण कोइनुं अंतर पाछुं पडी जाय छे तेनुं शुं कारण छे? पछे श्रीजी महाराजे उत्तर कर्यो एणे भगवाननो निश्चय कर्यो हतो त्यारे जे एमां काचप रही गइ छे. ते शुं तो कोइकने स्वादे करीने सारुं सारुं खावा जोइतुं होय ने तेने भगवान तथा संत ते खावा दे त्यारे तेनुं अंतर पाछुं पडी जाय, तथा कामनो माट र

हि गयो होय ने तेने खोदे तथा लोभ रह्यो होय ने लोभने मुकावे ने कहे जे आ तारूं धन माल खेतर वाडि ते कोइकने आपि दे, त्यारे ते वचन पळे नहि तेणे करिने पाछो पडीजाय, तथा मान होय ने ते मानने संत तथा भगवान खोदे ने अपमान करे त्यारे तेणे करीने पण पाछो पडी जाय, एवी रीते निश्चय होय ने जे जे पोतामां अवगुण रही गयो होय तेणे करीने पाछो पडी जायछे अने निश्चय कर्यो होय ते समयमांज ए अवगुणने टाळीने कर्यो होय तो ते पाछो पडे नहि अने ए अवगुण हमणां पण जेमां हशे ते जो विचारीने पोताना अंतर सांमुं जुवे तो जणाइ आवे जे आ रीतने अंगे हुं काचोछुं, ते जो एम मुने पाळयानुं कहेशे तो हुं विमुख थाइश एम यथार्थ जाणे. पछे ब्रह्मानंदस्वामी तथा शुक मुनी सूरोखाचर ए त्रणने श्रीजीमाहाराजे पुछ्युं जे तमे जेणे करीने पाछा पडीजाओ एवो तमारामां कीओ अवगुणछे? त्यारे त्रणे जणे कह्युं के हे महाराज मान रूप दोष छे माटे जो कांइक बरोबरिया संत अपमान करे तो कांइक मुंझवण थाय. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे अमे पुछीए छीए जे, द्युपतय एव न ते ययुरंतमनंतया ॥ एवी रीते महात्मे सहित भगवानने जाण्या होय एवा जे भगवान तेना जे संत ते साथे मान, इर्षा, क्रोध, केम थाय ने जो थाय छे तो शुं जाणयामां फेर छे केम जे

गवंदर साहेबने जाण्यो छे जेम समग्र पृथ्वीना पाळया छे ने बळीयो छे ने जो तेनोएकगरीब सरखो-हमेलीयो आव्यो होय तो तेनो हुकम-मोटो राजा होय छे ते प्रण माने ने ते जेमकहे तेम दोरयो दोराय शा माटे जे ते राजाए एम जाण्युं छे जे बळीयो जे गवंदर साहेब तेना ए हमेल्यीयेछि,अने जेथी जे बळीयो तेनी आगळ-मान रहे नहि तेम जेणेभगवानने समग्र ऐश्वर्य-समृद्धिना धणी जाण्या होय तोतेना संतने आगळ मान केम रहे. पछे ब्रह्मानंदस्वमीए कह्युं जे हे-महाराज तमे ठीक कहोछो,जो एम महात्मे सहित भगवानने जाण्या होय तो मान, इर्षा,-क्रोध, ते संतने आगळ थायजनहि.पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे ध्रुवोने उद्धवजी केवा मोटा हता;ने केवा डाह्या हता, पण जो भगवाननी मोटाइने जाणता हता.तोभगवनने विषे हेतवाळी जे व्रजनी गोपियुं तेना चरणनी रजने पाम्या मारुं वनवेलीनो अवतार माग्यो ते कह्युं छे जे।।आसामहो चरण रेणुजुपामहंस्यां ।। तथा ब्रह्माए पण कह्युं छे जे।। अहोभाग्यमहोभाग्यं नंदगोपव्रजौकसां।।यस्मिन्नपरमानंदं-पूर्ण-ब्रह्मसनातनं।। एवीरीते ब्रह्मा पण भगवाननुं माहात्म्य जाणता हता तो एवी रीते बोल्या. ते माटे जो-भगवानना संतनी एवी रीते मोटाइ जाणतो होय तो मान, इर्षा, क्रोध रहेज नहि ने तेने आगळ दासानुदास थइने वर्त्तेने गमे

तेटलुं अपमान करे तो पण तेना संगने मुकिने छेटे जावाने इच्छेजनहि, ने एम मनमां थायन हि जे हवे तो ज्यां सुधी खमीए आपण तो आपणे घेर बेठा थका भजन स्मरण करशुं. ते माटे एममहात्म समजे तो मन टळे एवी रीते वार्त्ता करी. अने वळी श्रीजी महाराजे एमवार्त्ता करी जे भगवानना भक्त होय ने तेने कोइक कर्म जोगे करीने सुळीए चढाव्यो होय ने ते समयमां अमे पण तेनी पासे उभा होइए पण ते भक्तना हृदयमां एम घाट न थाय जे आ भगवान मुंने सुळीना कष्ट थकी मुकावे तो ठिक एवी रीते पोताना देहना सुखनो संकल्प न थाय ने जे कष्ट पडे तेने भोगवी ले एवो जे निष्काम भक्त तेनी उपर भगवानने बहु प्रसन्नता थाय छे. अने वळी श्रीजी महाराजे एम वार्त्ता करी जे भगवान संबंधी सुखने कोण पामे छे तो ते कहीए छीए जे जेम माछलुं होय तेने जळ छे ते जिवन रूप छे ते जळनो जोगज्यां सुधी होय त्यां सुधी ते जळमां माछलुं चाले हाले क्रिया करे ने जळनो जो विजोगथाय त्यारे तेनी चंचळता टळी जाय ने मरी जाय तेम जेने पंच विषए करीने जीवनपणुं ज्यां सुधीसमजुं छे ने तेणे करीने सुख मान्युं छे ने तेनो विजोग थाय त्यारे मुवा जेवो थइ जाय छे, एवो जे होय ते भगवानना सुखने क्यारे पण पामे नहि. अने पंच विषए करीने जेने जीवनपणुं टळी

गयुं छे तेज भगवानना सुखने-अनुभवेछे ने भोगवेछे ने एवानेज भगवानना सुखनी प्राप्ती थाय छे.
॥इति वचनामृतम् ॥ २८ ॥ २६२ ॥

संवत १८८५ ना पोस शुदि २ बिजने दिवस श्रीजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां मेडीने आगळ ओटा उपर ढोलियो ढळावीने रात्रीने समे विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यांहतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइ ने बेठी हती, पछे श्रीजी महाराजे शुक मुनीने प्रश्न पुछयो जे बे सत्संगी छे तेनी अवस्था विस विस वरसनी छे तथा बेयने निश्चय, हेत, भक्ति, वैराग्य, धर्म ते बरोबर छे, अने तेमांथी एकने तो प्रारब्धने जोगे करीने परणीने स्त्रि मळीने एकने न मळी ने सांख्य योगी रह्या ने एने पण परण्यानी तो इच्छा हती पण मळी नहि त्यारे ए बे जणने तिव्र वैराग्य तो प्रथमथीज नहोतो माटे विषय भोगमां बेयने तिक्षण वृति हती ते तिक्षण वृत्ति ओछी ते ए ग्रहस्थ थयो तेनी थाय के सांख्ययोगिनी थाय ते कहो? अने वेदतो एम कहे छे जे जेने तिव्र वैराग्य होय तेने ब्रह्मचर्य पणाथकीज सन्यास करवो ने जेने मंद वैराग्य होय तेने विषय भोगनी तिक्षणता टाळ्याने अर्थे ग्रह

स्थाश्रम करवो ने पछे वानप्रस्थ थावुं ने पछे सन्यास करवो माटे विचारीने उत्तर करजो. पछे शुक मुनीए एनो उत्तर करवा मांडयो पण थयो नहि. पछे श्रीजी महाराजेंएनो उत्तर कर्यो जे ए ग्रहस्थाश्रमी सारो ने त्रिजो जे सांख्य योगी ते भुंडो, केम जे एने तिव्रवैराग्य नथी माटे एणे विषयने तुच्छ ने असत्य जाण्या नथी तेम कांइ पोतामां आत्मनिष्टानी पण दृढता नथी ते सारुं ए सत्संगथी बाहेर जाय ने विषयनो जोग थाय तो बंधाइ जाय ने जो विषयनो जोग न थाय तो सत्संगनी पाछी लालच राखे ने सत्संगमां आवे. अने जे ग्रहस्थ छे तेने छ महिने संतनां दर्शन थाय तो पण समास रहे माटे. मंद वैराग्य वाळाने त्याग करवो ए ठिक नथी त्याग तो तिव्र वैराग्यवाळाने करवो ते ठिक छे अने मंद वैराग्यवाळो त्याग करे तो एनो त्याग देह पर्यंत नभे नहि वर्शे बे वर्शे दश वर्शे तेना त्यागमां विघ्न जरुर पडे. त्यारे शुकमुनीए आशंका करी जे हे महाराज मंद वैराग्यवाळो त्यागी छे ते संत थकी भगवानना महात्मनी वात सांभळे ने पछे पोते मनमां विचार करे तो शुं एने तिव्र वैराग्य न आवे अने प्रथमथीज तिव्र वैराग्य तो कोइकने प्रारब्ध जोगे करीने हशे ने बहुधा तो एम प्रत्यक्ष देखाय छे जे आने वैराग्य नहोतो. ने पछे थयो त्यारे एनुं केम समज

वुं? पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे एनो तो एमउत्तर छे जे पोताने विचारे तथा कोइ रीते तिव्र वैराग्य थाय नहि. अने जो धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति ए चारे गुणे करीने संपन्न एवा जे मोटा साधु तेनी साथे एने अतिशे हेत थाय, जेम भगवान संघाथे हेत थाय छे त्यारे तो ते जुवे, सांभळे, बोले इत्यादिक जे जे क्रियाने करे, ने पोताने जे मोटा संतसाथे हेत छे तेनी मरजी प्रमाणेज करे पण तेनी मरजी न होय तेवी रीते कोइ क्रिया करे नहि अने ते संतनी मरजीथी बाहार वर्त्यामां तेना मनने विषे निरंतर भय वर्ते जे जो हुं एमनी मरजी प्रमाणे नहि वर्तु तो ए मारी साथे हेत नहि राखे ते सारूं निरंतर तेनी मरजी प्रमाणे वरते माटे जो एवुं संत साथे हेत थयुं होय तो वैराग्य न होय तोपण एनो त्याग पार पडे. अने जुवोने आपणा सत्संगमां बाइ भाइ पर्महंस ए सर्वने अमारी उपर हेत छे तो मोटेरी वेत्रण बाइयु छे ते बरोबर बीजी सर्वे बाइयु वर्त्तमान पाळे छे, केमजे एना मनमां ए जाणे छे जे जो अमे खबडदार थइने वर्त्तमान नहि पाळीए तो महाराजनुं हेत अमारी उपर नहि रहे ने कुराजी थाशे! तथा पर्महंसमां पण एम छे तथा बीजा जे सत्संगी तथा ब्रह्मचारी तथा पाळा ए सर्वेमां पण एम छे तथा देश देशना हरीभक्त बाइ भाइ छेटे रह्यां छे ते पण वर्तमानमां खबडदार

वरतेछे ने एम जाणेछे के जो आपण सारी पेठेनहि वरतीए तोमहाराज कुराजीथाशे माटे अ
मारे विषे हेत करीने बंधाणा थका सर्वे धर्ममां दृढ पणे वरतेछे. पण वैराग्य तो कोइकने थो
डो हशे ने कोइकने झाझो हशे तेनोकांइ मेळछे नहि.अने अमे पंचाळामां मोहोरे मांदा थया
ने तेमांथी जो कांइक थयुं होततो जेम हमणे सर्वेनी वृतियुंछे तेवी न रहेतसारे तो जे तिव्र वै
राग्य वाळो होय ते धर्ममां रहे तथा तेनी साथे जेणे पोताना जीवने हेते करीने बांधी राख्यो
होय तोते धर्ममां रहे तथा जे सत्संगनोजागरराखे ने भगवानने अंतरजामीजाणीने गेत गेताना।नेय
म कह्याछे ते प्रमाणे वरततो धर्ममां रहे अने ए विना बिजानुं तो कांइ ठिक रहे नहि.माटेअ
मे जे प्रश्न पुछयो हतो तेनो तो आ अमे कह्यो एज उत्तरछे॥इतिवचनामृतम्॥ २९॥ २६३

संवत १८८५ ना पोस सुदि १५ पुनमने दिवस श्रीजी महाराज
श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री गोपीनाथजीना मंदीरने विषे विराजमानहता,
ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनी तथा देश देशना
हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराज बोल्या जे अमारा मनमां आ
बे वार्त्ता छे ते गमे छे ने त्यां मन अटके छे तेमां एक तो जेने एम होय जे एक चैतन्यना ते

जनोराशी छे ने तेना मध्यने विषे श्री पुरुषोत्तम भगवाननी मुर्त्ति सदा विराजमान छे एवो दृ
ढ निश्चय होय ने ते भगवाननी उपासना भक्ति करतो होय ते वात गमे पण केवळ चैतन्य ते
जने मानतो होय ने तेनी उपासना करतो होय ने भगवानने सदाकारजमानतो होय ने तेनी उ-
पासनानकरतो होय तो ते न गमे. अने बिजुं एम जे एवा जे भगवान तेने अर्थे जे तपने
करतो होय तथा जोगने साधतो होय तथा पंच विषयना अभावने करतो होय तथा वैराग्यवां
न होय इत्यादिक जे जे साधन ते भगवानानि प्रसन्नताने अर्थे नीर्दंभ पणे करे तेगमे अनेएवाने
देखिने अमारु मन राजी थायछे, जे एने शाबाशछे जे एवि रिते वरतेछे अने वळी आ पांच
वार्त्तानुं अमारे नित्ये निरंतर अनुसंधान रहेछे तेमां एकतो एम जे आपणे आ देहने मुकिने
जरूर मरि जानुंछे ने तेनो विलंब नथी जणातो एतो एमज निश्चे जणाय छे जे आघडिआ
क्षणमां आपणे मरवुंछे ने सुख दुख राजीपो कुराजीपो सर्व क्रियामां एवि रिते वरतेछे एवो
वैराग्य कह्यो अने त्रिजुं एम जे आपणे मरशुं तेमां आटलुं काम तो आपणे करयुंछे ने आ
टलुं बाकिछे ते करवुंछे एवुं निरंतर अनुसंधान रहेछे, अने चोजुं एम जे अमारा मन
मां पंच विषयनी वासना टळी गइछे के नथी टळी अने एम जाणुंछुं जे टळी गइ छेत्यारे ते

ते विषयनी जे क्रिया ते केम थायछे त्यारे रखे न टळी होय एम ञ्रण विश्वासनुं निरंतर ञ्रनुसंधान रहेछे, ञ्रने चोथुं एम जे मुक्तानंद स्वामी ञ्रादिक मोटा मोटा साधु तथा बिजा पण मोटा मोटा हरि भक्त ए जे सर्वेछे तेने पंच विषयनी वासना टळी गइछे के नाहि ञ्रने ञ्राने ञ्रांनि वासना टळीछे ने ञ्रांने ञ्रांनि नथी टळी एम सर्वना हृदय सामुं जोया करवुं एम ञ्रनुसधान रहेछे, ञ्रने पांचमुं एम जे जो हुं मारा मनने उदासी करवा लागुं तो कोण जाणे क्यांइ जातुं रेवाय ने देह पडिजाय माटे एम जाणियेछिए जे मनने उदासी न करवुं केम जे भला ञ्रमारे जोगे करिने ञ्रा सर्वे बाइ भाइ परमहंसरा जीपे बेठा भगवद् भक्ति करेछे तो ठिकछे ने भगवद् भक्तिने करता देखिने मनमां बहु राजीपो थायछे जे मारि तो सर्वने जावुंछे पण ञ्रावि रिते भक्ति करवी एज जीव्यानो मोटो लाभछे एम निरंतर ञ्रनुसंधान रहेछे, एवि रिते श्रीजी महाराजे पोताना भक्तनी शिक्षाने ञ्रर्थे पोतानुं वरतन लेइने वार्त्ता करिने पोते तो साक्षात पुरुषोत्तम नारायणछे.॥ इतिवचनामृतम ॥ ३०॥२६३

संवत १८८५ ना माहा सुदी ४ चोथने दिवस सांजने समे श्रीजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां ञ्रायमणे बारना ञ्रोरडानी ञ्रोशरीए ढोलिया उपर

विराजमान थया हता ने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने धोळो खेस पेहर्यो हतो तथा रातिकोरनुं झीलायती धोळुं धोतियुं ओढ्युं हतुं ने पोताना मुखारविंदनी आगळ पर्महंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठीहती ने वाजां वगाडीने कित्तननुं गान पर्महंस करता हता ते ॥ हरी मेरे हालर किल करी॥ए कित्तनगाइ रह्या त्यारे महाराजे कह्युं जे ॥जमुनां के तिर ठाडो॥ए कित्तन गावो पछे ए कित्तन गावालागा त्यारे एवा समयमां श्रीजी महाराज बहुवार विचारी रह्या ने पछे बोल्या जे हवे कित्तन राखो अमे आ एक वार्त्ता करीएछीए, ते छे तो थोडिक पण ध्याननां करनाराने बहु ठीक आवे एविछे ने ए वार्त्ता कोइ दिवस अमे करि नथी. पछे वळी नेत्र कमळने मींचिने विचारी रह्या ने पछे बोल्या जे कोटि चंद्रमा सूर्य अग्नि तेना जेवो तेजनो समूहछे ने ते तेजनो समुह समुद्र जेवो जणायछे एवुं ब्रह्मरूप तेजोमय जे भगवाननुं धाम तेने विषे जे पुरुषोत्तम भगवाननी आकृती रहेछे ने ते आकृतिमांथि ए पोते भगवान अवतार धारेछे ते भगवान केवाछे तो क्षर अक्षर थकि परछे अने सर्व कारणना पण कारणछे ने अक्षररूप एवा जे अनंत कोटि मुक्त तेमणे सेव्यांछे चरणकमळ जेमनाएवाछे अने एवा जे ए भगवान ते पोते दयाये करिजीवोनुं परमकल्याण

करवाने अर्थे हमणां प्रगट प्रमाण थका तमारि. सर्वेनी द्रष्टिने गोचर साक्षात पणे वर्त्तेछे माटे ते जे धाममां रहि मुर्त्तिने आ प्रगट श्री कृष्णानिमुर्त्तितेमां अधिक पणे सादृश्य पणुंछे ते श्री कृष्णनि जे मनुष्य रूप मुर्ति तेनाध्याननोकरतल जेहोय तेनी जे द्रष्टि तेभगवाननारूपविनाबिजा रूप विषय मात्रमां अतिशे वैराग्यने पामीने तेभगवानना स्वरूपमांज लुब्ध थाय त्यारे तेनेतेप्रत्यक्ष भगवाननि मुर्त्तिने धामनि मुर्त्ति ते बेयमां लगारे पण भेद न जणाय ने ते मुर्त्तिने आ मुर्त्तिना रूप अवस्था ते बरोबर जणाय तथा ते मुर्त्ति जेटली उंचिछे ने जेटलि पुष्टछे तेविने,ते विज आ मुर्त्ति पण जणायछे पण तेमां ने आमां एकरोमनो पणफेर न जणाय, अतिशे एकपणुं जणाय. एवी रीते तेमां ने आ मूर्त्तिमां फेर लगार पण नथी ते मुर्त्तिने आ मूर्त्ति एकज छे एवी जे प्रत्यक्ष मुर्त्ति तेनुं ध्यान नेत्रने आगळ बाहेर करे त्यारे तो तेमां ने एमां लगार फेर नथी ने तेज मुर्त्ति ने ध्याननो करतळ प्रतिलोम पणे पोताना नेत्रमां जुवे त्यारे तेज मूर्त्ति प्रथम जणाति तेवि न जाणाय ने नेत्रनि किकिमां जेवडि मूर्त्तिछे तेवडि जणाय. पछे वळी ए ध्याननो करतल प्रतिलोम पणे कंठथी हेठे सुधि गांहिलि कोरे ध्याने करिने जुवे त्यारे एज मूर्त्तिने मोरे बे प्रकारे देखतो ते मने देखे,ने तेज मूर्त्तिने बहु मोटी बहुज उंची

वहु जाडी नें वहुज भयंकर एवीने देखे जेम मध्यानकाळनो सूर्य होय त्यारे छाया पुरूषना शरिर बरोबर होय ने तेज सुर्यने आथम्या टांणुं थाय त्यारे छाया मोटि लांबी थाय, पण पुरूपना शरिर प्रमाणे नथीरहेती तेमतेमुर्त्तिगणपूर्वेकही तेवी मोटीजणायछे थायछेपछे ए मुर्त्तिने हदयने विपे रहि जे वुद्धि ते वुद्धिने विपे जुवे तथा ते वुद्धिमां रह्यो जे पोतानो जीव तेने विषे जुवे त्यारे तेज मूर्त्तिने अंगुष्ट मात्र परिमाणे जुवे अने द्विभुज जणाय के चतुर्भुज जणाय पण मोरे त्रण प्रकारे देखि तेवि न देखाय अने पछी वळी ए ध्याननां करतलने प्रतिलोम पणे पोताना जिवथी पर कोटी कोटी सूर्य चंद्र अग्निना तेजना समूहने विपे ए मूर्त्ति जणायछे ते जेवि द्रष्टि आगळ जणाती हति तेवीज रीतेनी जणायछे पण लगारे फेर नथी जणातो माटे गुणातित एवुं जे अक्षरधाम तेने विपे जे मूर्त्तिछे तेज मूर्त्ति प्रत्यक्षछे ए बेमां फेर नथी जेम धामनी मूर्त्ति गुणातितछे तेमें मनुष्य मूर्त्ति पण गुणातितछे अने पूर्वे जे मूर्त्तिमां फेर पड्यो तेतो गुणमय एवा जे स्थानक तेणे करीने पड्यो ते नेत्रमां सत्वगुण ने कंठमां रजोगुण ने वुद्धिमां रह्यो जे जीव ते पण गुणमयछे एम वार्ता करीने पछे बोल्या जे मोरे गाता हता ते कीर्तन गावो, एवी रीते श्रीजी महाराजे पोताना पुरूपोतम स्वरूपना निरूपणनी वार्ता

परोक्ष पणे करीने कहीं. ॥इतिवचनामृतम ॥ ३१॥ २६५॥

संवत १८८५ ना महा सुदि ५ पंचमी ने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बार ओरडानी ओसरिये ढोलीया उपर विराजमान हता ने सर्व वसंती वस्त्र धारण कर्या हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ पमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी होत ने गवैया परमहंस वसंतना किरतन गावता हता, पछे श्रीजी महाराजे मुक्तानंद स्वामी आदिक साधुने कह्युं जे ॥विषया विनिवर्तते॥ ए श्लोकनो अर्थ करो॥त्यारे तेमणे रामानुज भाष्ये सहित अर्थ कर्यो, त्यार पछे श्रीजि महाराज बोल्या जे एनो तो अमे एम निश्चे कर्यो जे जवान अवस्था जेने होय तेने आहार क्षिण करवो ने युक्तहार विहार पणे रहेवुं ने आहार क्षिण थाय त्यारे देहनुं बळ क्षिण थाय ने त्यारेज इंद्रियुं जिताय ते विना इंद्रियो जिताय नहि. ने एवो थको पोताना मनने भगवाननी नवप्रकारनी भक्ति तेने विषे रूचीसहित राखे ने भक्तिमां प्रीति राखे ए बे प्रकारे ए वर्ते तो एनो सत्संग पार पडे, ने एम न होय तो ए ज्यारे त्यारे जरुर इंद्रियुंने वश थइने विमुख थाय ते गोवर्धन जेवो समाधिनिष्टहो

य तो पण एनो एने भय छे तो बिजानी शि वार्त्ता. अने आहार नियममांकरवो तुंघणाक उप
वास ठामुका करवा मांडे तेणे करीने न थाय पण एमतो कांजी तृश्ना थाय ने मुळगोआहार
वधे ने उपवासनो खांगो खाये त्यारे बमणो वाळे. माटे ए धिरे धिरे आहारने घटाडवामांडे
तो नियममां आवे. जेम मेघघणी झिणी झिणी बुंद वरसे छे पण बहु पाणी थायछे.तेम धिरे
धिरे आहारने नियममां करवो ने एम करे त्यारे इंद्रियु नियममां आवे ने भक्तिमां प्रिति होय
तो ए पार पडे ए निश्चित्त वार्त्ता छे. अने वळी श्रीजीमहाराजे एम वार्त्ता करी जे भगवाननो
जे साचो भक्त तेने भगवाननुं माहात्म समज्यानी केवी रीत छे तो जेम भगवान छे ते तेजोमय
एवुं जे पोतानुं अक्षरधाम तेने विषे सदा साकार मूर्त्तिथका विराजमान छे ने सर्वना कारणछे
सर्वना नियंता छे सर्वना अंतरजामी अने अनेक कोटि ब्रह्मांडना राजाधिराजछे ने अलौकि
दिव्य सुखमय मूर्त्ति छे ने मायाना गुण थकी रहित छे, एवी रीते प्रत्यक्ष भगवानने जाणीने
ते भगवान विना जे बिजा सर्व माइक पदार्थ मात्र तेने अतिशे तुच्छ ने नाशवंत समजे ने एक
भगवानने विषेज प्रीति करे ने नव प्रकारनी भक्तिने करे. अने वळि एम समजे जे एवा अति-
शे मोटा जे भगवान तेनी मरयादाने विषे काळ, माया, ब्रह्मा, शिव, सूर्य, चंद्रमा, इत्यादिक

गज एवो छे जेम आ आपणे सर्वे बेठा छीए ते केवाडाह्याछीए पण जो दारुना शिसानुं पान
कर्युं होय तो कोइ ठार रहे नहि तेम ए पदार्थनो संग जरुर लाग्या विना रहेज नहि माटे ए
पदार्थनो जोगज न थावा दे तोए एथी बचे ने एनो जोग थया मोर एनो भय राखे जे रखे
मुने एनो जोगथायअने ए वार्ताशास्त्रमां प्रसिद्धछे जे एनो संगतोएक भगवाननेनलागेतेकहुंछे
जे ॥रूपीनारायणमूर्तेः॥तथा॥ येन्वेस्तत:परिद्रुतादपिबिभ्यतिस्म॥ ॥अनेपछेश्रीजीमहाराजएमबो
ल्या जे वासुदेवभगवाननो एकांतिक भक्त केने कहीए तो जेने विषे स्वधर्म ज्ञान वैराग्य ने मा
हात्म्ये जुक्त एवी वासुदेवभगवाननी अनन्य भक्ति एटलां वानां होय तेने एकांतिक भक्त कहि
ए.नेएनी गति एम कहिछे जे एनो वासुदेवभगवानमां प्रवेश थायते प्रवेश ते शुं तो तेजनां मंड
ळने विषे दिव्यमुर्त्ति एवा जे वासुदेवभगवान तेने विषे ए भक्तने स्नेह होय ते स्नेहे करीने वा-
सुदेवभगवाननी मूर्त्ति ने विषे एनामननुं निरंतर अनुंसंधान रहे.ने आसक्त थको वरते ने ए-
वी रीते रह्यो थको,एवा वासुदेव भगवाननी सेवाने विषे पण बाहेर थको रहे जेमलक्ष्मीजी छे,ते
वासुदेव भगवानना हृदयने विषे चिन्हरूप स्नेहना आधिक्यपणे करीने रह्यां छे ने बाहेर थकी
स्त्री रूपे करीने सेवामां पण रह्यां छे तेम ए एकांतिक भक्तनो वासुदेव भगवानने विषे प्रवेश

जाणवो. अने हमणां पण जे भक्तने भगवाननी कथा किर्त्तन नाम स्मर्ण इत्यादिक जे दर्श
प्रकारनी भक्ति तथा भगवाननुं माहात्म तथा स्वधर्म तथा वैराग्य तथा आत्म निष्ठा तथा संतनो
समागम एनुं बंधाण ते एवुं होय जे ते विना कोइ रीते चालेजनहि. जैम अफिण आदिकनो
बंधाणी होय. तेने ते विना चाले नहि ने ते अफिणतो कडवुं झेरछे तो पण अफिणना बंधाणि ने
अफिण विना चाले नहि. तथा दारुनुं बंधाण होय तो ते दारू पण पिये त्यारे गळुं बळे ए
वोछे तोपण ते विना चाले नहि ते एने घणाक रूपैया आपे तोपण ते बंधाणथी ते वाहालो
न थाय ने न ले केमजे ए व्यसन एना जिव संघाथे जडाइ गयुंछे तेम जेने भगवद् भक्ति
आदिक क्रियानुं बंधाण थयुं होय ते गमे तेवो कुसंग थाय तोपण ते विना एने चालेज नहि
ने ए विना बिजा कारजमां एनुं मन राजी थायज नहि ने भगवद् भक्ति आदिक क्रियामां
एनो जीव जडाइ गयो होय ने एनोज एने अति इसक होय एवो जे भगवाननो भक्त तेनो प
ण वासुदेव भगवानने विषे प्रवेशछे एम जाणवुं अने ते भगवद् भक्त केवो होयतो भगवाननी से
वा विना चतुर्धा मुक्तिने पण न इच्छे तो बिजानी शी वार्त्ता कहेवी, एवो होयते भगवानन्ो
एकांतिक भक्त जाणवो ने एने कोइ प्रदार्थमां इसक न होय अने एवो न होय ने क्यारेक भ

वच. गवाननी भक्तिमांथि सुवाण थाय ने जो कुसंगनो जोग थाय तो भक्तिने मुलि जाय ने ते चाळे चढी जाय एने प्राकृत देहाभिमानी कहिये पण ए भक्त खरो नहि ने एनो विश्वास नहि अने वळी श्रीजि महाराजे एम वार्ता करी जे,जे भगवानना भक्तने स्त्री धन देहाभिमान ने स्वभाव ए चारवानांमां काचप होय ने ते भगवाननी भक्ति करतो होय तोपण एनी भक्तिनो विश्वास नहि एनी भक्तिमां जरुर विघ्न आवे. केमजे क्यारेक एने स्त्री धननो जोग थाय तो भक्तिनो ठा रहे नहि ने तेमां आसक्त थै जाय तथा देहाध्यास होय तो ज्यारे देहमां रोगादिक कष्ट प्राप्त थाय तथा अन्न वस्त्रादिक न मळे अथवा कोइक कठण वर्त्तमान पाळवानी आज्ञा थाय त्यारे पण तेने भक्तिमां भंग थाय ने विकल थइ जाय ने कांइ विचार न रहे ने चाळा चुंथवा लागे. तथा कोइकं रीतनो स्वभाव होय तेने संत टोकवा मांडे ने ते स्वभाव प्रमाणे वर्तवा न दे ने बिजी रीते वर्तावे त्यारे पण ए मुंजाय ने एने संतना समाजमां रहेवाय नहि त्यारे तो भक्ती ते क्यांथी रहे.माटे जेने दृढ भक्ति इच्छवी होय तेने ए चारवानांमां काचप राखवी नहि ने ए चारनी काचप होय तोपण समजीने धीरे धीरे त्याग करवी तो वासुदेव भगवाननी निश्चळभक्तीथायआवार्त्ताआमजछेपणएमांकांइसंशयनथी ॥इतिवचनामृतम्.॥३३॥ २६७॥

संवत १८८५ ना चैत्र शुदि ३ त्रिजने दिवस श्रीजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री गोपीनाथजीना मंदिरने विषे विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यांहतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराजने शुक मुनिए प्रश्न पुछयो जे भगवान विना बिजा माइक पदार्थ मात्रने विषे वासना न रहे ने एक भगवानने विषेज वासना रहे तेना बे साधन जणायछे एक तो भगवानने विषे प्रीति ने बिजो ज्ञाने सहीत वैराग्य ए बे साधनछे ते ए बे साधन तो जेने अतिशे पणे वर्ततां होय ने भगवाननो निश्चय ने विश्वास तो होय एवाने पण एक भगवाननीज वासना रहेने बिजा पदार्थनी वासना न रहे एवो कोइए त्रिजो उपायछे? त्यारे श्रीजि महाराज बोल्या जे ए प्रश्न खरो ने ए बे साधने करीनेज एक भगवाननी वासना रहे ने बिजा पदार्थनी न रहे ते खरुं अने ए बे साधन न होय एने भगवान विना अन्य पदार्थनी वासना न टळे माटे ते जीव ते दुखियो वर्ते ने भगवाननो निश्चय छे माटे मरे त्यारे एनुं कल्याण भगवान करे अने भगवान विना बिजा अन्य पदार्थनी वासना टाळ्यानां जेम ए बे साधनछे तेम त्रीजुं पण एकछे. तेशुं तो जेना जेवा नियमकर्याछे ते

मां सावधान पणे वर्ते.ते नियम किया एकतो तो स्वधर्म संबंधि नियम ते, केम, तोजेम आत्मनी
वेदी साधु.ब्रह्मचारीना नियम छे तेमज आत्मनी वेदी, न होय तो पण स्त्रीने न जोवानो नियम
राखे तथा स्त्रीनी वार्ता न सांभळवानो नियम राखे एवी रीते पंच विषयना त्याग संबंधि निय
मने दृढ पणे सावधान थको पाळे तथा भगवानने भगवानना भक्त तेनी देहे करीने. परिचर्या
करे तथा भगवाननी कथा सांभळे इत्यादिक नव प्रकारनी भक्ति संबंधि जे नियम तेने पाळे
त्यारे एना मनमां पण शुभ संकल्प थावा लागे.एवी रीते त्रेप्रकारना नियममां जे वरते तो तेने
वैराग्यने भगवानने विषे प्रीति एवे न होय तो पण ते थायने अतिशे बळीओ थइ जाय ने एने
पदर्थमां अशुभ वासना टळीने एक भगवाननी वासना दिवसे दिवसे वृद्धि पामाते जायछे.पछेव
ळी श्रीजीमाहाराजने शुकमुनीए प्रश्न पुछयोजे हे महराज जे क्रोधछे ते शामांथी उत्पन्न था
यछे तो पोताने जे पदार्थनी कामना होय तथा जेमां पोते मतलबांध्यो होयने तेनो भंगकोइ करे
त्यारे तेने तेमांथी क्रोध उपजेछे ने कामना जे इच्छा तेनो भंग थयो त्यारे ते कामहतो ते क्रो
ध रूपे परिणामने पामेछे, माटे एनो तो एवो स्वभावज थयो जे एमां, क्रोध, उपजे अने. एम था
य तोपण क्रोध न उपजे एमछे के नही? त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे जे मोटा साधुछे ते

मणे भगवाननी आज्ञाये करीने. अथवा शास्त्र दृष्टिये करीने महात्म जाणिने पोतानी इच्छाए करीने अनेक जीवुंने धर्म मर्यादामां रखाववा ने भगवानने मार्गे चढाववा एवो सुभ संकल्प मन मांइच्छयो होय ने तेमां प्रवर्त्या होय अने कोइक जीव धर्म मर्यादानो भंग करीने अधर्ममां प्रवर्ते त्यारे, ते मोटा पुरुषने ते जीवनी उपर क्रोध उपजी आवे. केमजे पोतानो जे शुभसंकल्प तेनो तेणे भंग कर्यो माटे धर्म मर्यादामां राखवानी शिक्षाने अर्थे तेनी उपर क्रोध करीने तेने शिखामणनदे तो धर्ममर्यादानो भंग थइ जाय नेते जीवनुं सारु न थायमाटेएवीरीतेतोक्रोधथायते ठिकनेएमांकांइबाधनहिकेमजेएवामार्गमांजेमोटासाधु प्रवर्त्यातेनेआशरिनेहजारोमाणसरह्यांहोय तेनेकांइकरीसकरीनेकह्याविनानुकेम चाले? अने क्रोध तो त्यारेनथायजेनेमांथीक्रोध थाय तेनो त्यागकरी दे, अने एका एकी वनमां फरतो रहे त्यारे क्रोध न थाय.पण एम तोएमनाथीकेम कराय? केम जे एमणे तो अनेक जिवने वार्ता करी ने भगवान सनमुख करवाने तेनुं जेकल्याण थाय तेनुं जे महाफळ ते शास्त्र दृष्टिये करीने समज्युं छे तथा एवी रीतनी जे भगवाननी आज्ञा तेनुं महात्म जाण्युं छे माटे क्रोध थाय तोय पण ए जे पोताना शूभ संकल्प तेनो. त्याग करेज नहि. अने वळी जेने कोइक मोटा साधु संघाथे हेत थयुं होय ने तेने विषे पोतानो

कल्याण थाना रुप स्वार्थ मान्यो होय ने एम जाणतो होय जे आ साधुथीज मारूं कल्याण
थाशे एवो जे होय तेने क्रोधनो स्वभाव थाय छे तो पण ते मोटा साधु उपर एने कोइ दि-
स क्रोध न थाय ने ए क्रोधने मुकीज दे एम पण क्रोध जायछे, अने पदार्थना लेणदेणसारं
तुच्छ पदार्थने अर्थे जे साधु संगाथे क्रोध करे छे तेने तो साधुनुं महात्म तथा साधुनो जे
नी रीतनो मार्ग ते समजाणोज नथी ने समजाणो होय तो तुच्छ पदार्थ सारु क्रोध करे
ने बुधिवान होय समजुं होय ने तुच्छ पदार्थ सारु साधु संघाथे क्रोध करे तो तेनी बुद्धि रा
ना कामदारना जेवी व्यवहारीक जाणवी पण साधु पणानी बुद्धि एने आवीजनथी एम सम
॥इति वचनामृतम् ॥ ३४ ॥ २६८ ॥

संवत १८८५ ना चइत्र सुदि ९ नवमीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महारा
श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री गोपीनाथजीना मंदीरने विषे विराजमान
ता,ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां, ने पोताना मुखार्विंदनी आगळ साधु तथा देश दे
शना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराजने शुक मुनीए प्रश्न पुछ
जे हे महाराज जेना हृदयमां भगवान ने भगवानना भक्तनो दृढ आश्रय होय जे आश्रयगो

तेवो आपत काळ आवी पडे ने देहने सुख,दुख,मान अपमान देशकाळनुं विषमपणुं इत्यादि के करीने जाय नहि ते केम जणाय जे एने एवो आश्रयछे? ने तेना मननो अभिप्राय तथा देहनो आचार केवो होय ते कहो? त्यारें श्रीजी महाराज बोल्या जे जे भक्तने एक भगवानने विषेज मोटप होय. ने भगवानथी बिजुं कोइ पदार्थ अधिक न जाणतो होय ने भगवान विना बिजा सर्वने तुच्छ जाणतो होय तथा पोतानी जे प्रकृति होय तेने भगवान तथा साधु ते मरोडे ने प्रकृति प्रमाणे न चालवा दे ने प्रकृति होय तेथी बीजी रीते वर्त्तावे त्यारे जे मुंझाय नहि ने प्रकृति मरोडे तेमां कपवाइ जाय नहि ने पोतानी प्रकृति गमे तेवी कठण होय, तेने मुकीने जेम भगवान तथा साधु ते कहे तेमज सरळपणे वर्त्ते एवी बे प्रकारे लक्षणमां होय तेने गमे तेवो आपत काळ पडे तोपण भगवाननो आश्रय न टळे. त्यारें वळी शुक मुनीए पुछयुं जे मुंझातो तो होय केम जे प्रकृतिने मरोडे त्यारे जीवने मुंझवण थाय पण ते मुंझवणमां पण कांइक फेर छे के नाहि? त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे प्रकृतिने मरोडे ने मुंझाय त्यारे जे पोतानोज अवगुण ले पण भगवाननो ने साधुनो अवगुण न ले ए सारो ने जे पोतानो अवगुण न ले ने भगवाननो ने साधुनो अवगुण ले तो एनो विश्वास नहि. ने एनो ये

होय तेना आश्रयनो पण ठा नहि. त्यारे वळी शुकमुनीए पुछयुं जे जेनीजे प्रकृति होय तेने भ
गवान तथा साधुए कोइ दिवस मरोडी न होय त्यारे ते पोताना मनमां केम समजे जे मारी
प्रकृतिने मरोडशे त्यारे मारु ठिक नहि रहे,केम जे पोते जे अजमावेल वार्त्ता न होय तेनो वि
श्वास केम आवे?त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्याजेएतोपोताना मननाजे संकल्पतेनी सामीदृष्टिराखे
जे मारा मनमां भगवान विना बिजा पंच विषय संबंधी भोग छे तेमां शानी वासना वळवानछे
ने बळवान पणे किया विषय भोगनो संकल्प थायछे?एम विचारे तो जेवो पोते होय तेम माल
म पडे पण बिजी रीते न पडे. ने ज्यारे ए विचारे त्यारे एम विचारे जे आ पदार्थनो मारे ब
ळवानछे घाटछे ने तेमां हुं प्रवर्तुंछुं ने तेमांथी ज्यारे मुने साधुं मरोडशे त्यारे मारे ठिक न
हि रहे एम एने पोतानो निश्चय थाय अने बळवान प्रकृति होय ने तदापि जो एनी प्रकृतीने
भगवान तथा साधु कोइ दिवस मरोडे नहि तो तो ए पार पाडे जाय ने जो मरोडे तो तो ए
नो ठा रहे नहि अने अति मुझाइने विमुख थइ जाय, अने वळी श्रीजी महाराजे एम वार्त्ता
करी जे साधुना द्रोहनुं शास्त्रमां सर्व कर्त्ता अधिक पाप कह्युंछे तेनुं शुं कारणछे तो•र साधु
ना हृदयनेविषेसाक्षात श्रीकृष्ण भगवान रह्याछे माटेसाधुनोद्रोह करेत्यारेभगवाननोद्रोह थायछे

केमजे ते साधुनो द्रोह करे त्यारे तेना हृदयमां रह्या जे भगवान ते दुखायछे,त्यारे ए भगवान
ना द्रोहनुं अधिक पापछे,माटे संतना द्रोहनुं सर्वकरतां अधिकपाप कह्युंछे.अने कंस,शिशुपा
ळ,पुतना ए आदिक जे दैत्य तेमणे भगवाननो द्रोह कर्यो ने तेनुं पण भक्तनी पेठे भगवाने
कल्याण कर्युं तेनो शो अभिप्राय छे जे ए दैत्ये वैर बुद्धिए करीने पण भगवाननुं चिंतवन
कर्युं, त्यारे भगवाने एम जाण्युं जे वैरबुद्धिए करीने पण ए दैत्ये मारूं चिंतवन कर्युं ने मारा
संबंधने पाम्या माटे मारे एनुं कल्याण करवुं एवी रीते एने विषे भगवाननी दयानुं अधिकपणुं
जाणवुं, अने वळी एम जाणवुं जे ए वैरबुद्धिए करीने आशरया तेनुं पण भगवाने कल्याण
कर्युंतोजेभक्त भक्तिए करीने एनो आशरो लेशे ने भगवानने भक्तिए करीने राजी करशे तेनुं
भगवान केम कल्याण नहि करे? करशेज. एवी रीते भगवाननी दयानुंअधिकपणुं जणावीने मनु
ष्यने भगवाननी भक्तिमां प्रवर्त्ताववा एवो अभिप्राय शास्त्रना करनारानो छे.पण एम नथी जे दै
त्यनी पेठे भगवाननुं अणगमतुं करवुं माटे भगवाननी उपर वैरभाव राखीने जे भगवाननो द्रोह
करे ने अणगमतुं करे तेने तो दैत्यज जाणवा ने ए पक्ष तो दैत्यनो छे. अने जेम भगवाननुं
गमतुं होय ते प्रमाणेज वर्त्तवुं ने भक्ति करवी ने भगवानने भगवानना भक्तने राजी करवाएवो

भगवानना भक्तनो पक्ष छे. पछे शुकमुनीए श्रीजीमहाराजने पुछ्युं जे हे महाराज जे साधुनां हृदयमां भगवान रह्या होय ने तेना द्रोहथी भगवाननो द्रोह थाय ने तेनी सेवा करीए तो भगवाननी सेवा थाय ते साधुनां लक्षण शां छे ते कहो? त्यारे श्रीजीमहाराज थोडी वारविचारीने कृपा करीने बोल्या जे प्रथम तो मोटुं लक्षण छे ए छे जे भगवानने क्यारेय पण निराकार न समजे सदा दिव्य साकार मुर्त्ति समजे, अने गमे एटलां पुराण, उपनिषद, वेद इत्यादिक ग्रंथनुं श्रवण थाय ने तेमां निराकारपणा जेवुं सांभळ्यामां आवे तोपण एम जाणे जे एतो आपणने ए शास्त्रनो अर्थ समजातो नथी, ने केहेतो एमां केम कह्युं हशे, पण भगवानतो सदा साकारजछे. अने जो साकार न समजे तो तेनी उपासना दृढ न कहेवाय ने साकार नहोय तेने विषे आकाशनी पेठे कर्त्तापणुं न कहेवाय तथा एक देशने विशे रहेवापणुं न कहेवाय. माटे भगवान तो सदा साकारज छे ने अनेक ब्रह्मांडनी उत्पत्ति, स्थिति, प्रलयना कर्त्ता छे ने सदा पोताना अक्षरधामने विषे विराजमान छे ने राजाधिराज छे, ने ते जे आ प्रत्यक्षछे एवी रीते जे आ समजण ते कोइ रीते कोइ काळे डगी न जाय सदा एम समजे एकतो ए लक्षण होय॥१॥तथा ए भगवाननी जे एकांतिक भक्ति तेने पोते करतो होय

ने ए भगवाननुं जे नाम स्मर्ण ने कथा किर्त्तनादिक तेने कोइ करतुं होय तेने देखीने मनमां बहु राजी थाय ॥२॥तथा ए भगवानना भक्तमां रहेवुं होय तेमां कोइ स्वभाव आडो आवे नहि ने ते स्वभावने मुके पण भगवद्भक्तना संगनो त्यागनकरे ने ते पोताना स्वभावने साधु खोदे तो ए साधुनो अभाव न ले ने पोताना स्वभावनो अवगुण लेतो रहे पण कचवाइने भक्तना समुह मांथी छेटे रहेवानो कोइ दिवस मन घाट पण न करे,एमने एम भक्तना समुहमां पडयो रहे एवो होय ॥३॥तथा सारुं वस्त्र सारुं भोजन सारुं जळ जे जे कांइ सारुं पदार्थ पोताने प्राप्त थाय तो मन एम घाट करे जे आ पदार्थ हुं भगवानना भक्तने आपुं तो ठीक ने ते पदार्थ तेने आपे ने राजी थाय एवो होय ॥४॥तथा भक्तना समुहमां रेहेतो होय ने तेनी कोरनुं एम न थाय जे आतो केटलाय वरस भेगो रह्यो पण एना अंतरनो तो कांइ ताग आव्यो नहि ने आते कोण जाणे केवोय हशे एनुं तो कांइ कळातुं नथी एवो न होय ने जेवो एमांहिजेवोबहार होय तेने सर्व जाणेजे आतो आवोछे एवो जेसरळस्वभाव वाळो होय॥५॥अने शांत स्वभाव वाळो होय तो पण कुसंगीनो सोबत न गमे ने ते थायतो तपी जाय एवी रीते निमुखना संगनी स्भाविक अरूची वर्तति होय॥६॥ने आवे छ लक्षणे जुक्त जे साधु होय तेना

हृदयमां साक्षात भगवान विराजमान छे एम जाणवुं. अने एवा साधुनो द्रोह करतो भगवान-नो द्रोह कर्या बरोबर पाप लागे अने एवा साधुनी शेवा करे तो भगवाननी शेवा कर्या तुल्य फळ थायछे॥इतिवचनामृतम्॥३५॥२६९॥

संवत १८८५ ना वैशाख सुदि १ पडवाने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमांथी घोडीए चढीने श्री लक्ष्मी वाडीए पधार्या हता ने ते वाडीने मध्ये जे ओटो ते उपर विराजमानथया हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यांहतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळपर्महंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती पछे श्रीजी महाराजे सर्वे परमहंस तथा हरिभक्त प्रत्ये प्रश्न कर्यो जे आ जिवने कल्याणनुं असाधारण साधन शुं छे जे जेने विषे ए प्रवर्ते तो तेनुं निश्चे कल्याण थाय ने तेमां बिजां कोइ विघ्न प्रतिबंध करे नहि ते कहो? तथा एवा कल्याणना साधनमां मोटुं विघ्न शुंछे जे जेणे करीने तेमांथी निश्चे पडी जाय ते पण कहो पछे सर्वे ए पोतानी बुद्धि प्रमाणे उत्तर कर्यो पण प्रश्ननुं समाधान न थयुं त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे कल्याणनुं असाधारण साधनछे एछे जे पुरुषोत्तम भगवान ने ब्रह्मज्योतिना समुहने विषे अनादि साकार मुर्त्ति समजवा

ने तेनाज सर्वे अवतारछे एम समजिने ते प्रत्यक्ष भगवानना जे ते भावे करीनें आश्रय करवो नेधर्मसहिततेभगवाननीभक्तिकरवीनेतेनीभक्तियेयुक्तजेसाधुतेनोसंगकरवो,एकल्याणनुंअसाधारणसाधनछे अने एमां बिजो कोइ विघ्न प्रतिबंध करतां नथी अने ए साधननें विपे मोटुंविघ्नएछेजशुष्क वेदांतिनो संग करवो. ने जो एनो संग करे तो एने शुं विघ्न थाय ?तो तेनो संग करनारो जे पुरुष तेने विषे हेत थाय ने जे हेत थाय ते गुणे करीने थायछे, जेम कोइके काळमां अन्न आपीने जीवाडयो होय तेनी उपर हेत थाय एवी रीते जे जेणे गुण कर्यो होय तेनी उपर हेत थाय तेम ते वेदांती ते एने एम गुणदेखाडेजेआत्माछे तेने जन्म मर्ण नथी ने ते निराकार छे ने गमे एटलुं पाप करे तोपण तेने दोप न लागे एवो एने गुण बतावीने भगवाननी मुत्तिना आकारनुं खंडन करीनांखे,त्यारे एनेए मोटुं विघ्न थयुं, केमजे भगवाननी मुर्त्तिमांथी पडी गयो माटे ए वेदांतिनो संग क्यारेयनकरवो. ने ए वेदांती तो महा दुष्टछे ने भगवाननी भक्ति मार्गमां एनुं कोइ मोटुं विघ्न नथी. एटली वार्त्ता करीने श्रीजी महाराज पाछा दादाखाचरना दरबारमां पधार्या ने उगमणा बारनाओरडानीओसरिये ढोलिया उपरबेसीनेएम वार्त्ताकरी जेअमे सर्व शास्त्रने सांभळीने ए सिद्धांत कर्योछे अने अमेआ पृथ्वीमां सर्वे ठेकाणे फर्या नेतेने विषे

घणाक सिद्ध दिठाछे एम कहिने गोपाळदासजी आदिक साधुनी वार्त्ता करी देखाडीने पछे एम बोल्या जे हुं तो एम जाणुंछू जे भगवाननी मुर्त्तिनी जे उपासना ने ध्यान ते विना जे आत्माने देखवो ने ब्रह्म ने देखवो ते तो थायज नहि. ने उपासनाए करीनेज आत्मा देखाय,ब्रह्म देखाय,पण ते विना तो देखायज नहि. ने उपासना विना आत्मा ब्रह्मने देखानइ कहेवुं ते केमछे तो जेम आकाशने जीभे करीने सो वरस सुधि चाटिये तो पण क्यारेय खाटो खारो स्वाद आवेज नहि तेम भगवाननी मुर्त्तिनी उपासना विना आत्मा ब्रह्म देखायज नहि. ते गमे एटलुं जतन करे तोपण न देखाय अने निर्विज एवा जे सांख्य ने योग तेणे करीने जे आत्मानुं दर्शन सास्त्रमां कहुंछे ते भले कहुंछे पण अमे एवो कोइ दिठो नथी ने अनुभवमां पण ए वार्त्ता मळती आवती नथी माटे एवार्त्ता खोटीछे॥इतिवचनामृतम्॥३६॥२७०॥

संवत १८८५॥ना वैशाख सुदी ३ त्रिजने दिवसे स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादा खाचरना दरबारमां उत्तरादे बार ओरडानी ओशरीए चाकळाउपर विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ पर्महंस तथा देश देशना हरीभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.पछे श्रीजी महाराजे साधु तथा

सर्वे हरिभक्त प्रत्ये एम वार्त्ता करी जे जेने भगवानना स्वरूपनुं यथार्थ ज्ञान एकवार थयुं हो
ने पछे तेने देश, काळ, क्रिया, संग विशमे थइ जाय तोपण ते ज्ञाननो लेश जाय नहि
त्यां दृष्टांत छे! जेम कोइक मोटो राजा होय, अथवा मोटो लखेशरी साहुकार होय ने
ने प्रारब्धानुसारे ते अधिकार छुटी गयो ने दारिद्रपणुं आवी गयुं तेणे करीने खडं धान ख
वा मळे, अथवा दाडीनी भाजी मळे, तथा कोठां, बोरां, बाफेला पीपरथो इत्यादिक जे
खावा मळे त्यारे तेने खाय, पण मोरे जे पोते भारे भारे मेवा खाधा होय तथा भारे मूल्य
ली चिजुं कोइने न मळे एवी मगावीने खाधी होय ते सर्वे सांभरी आवे ने मनमां एम वाट
रे जे एवी एवी भारे चिजुं ने हुं मोरे खातो ने हवे हुं आवुं जेवुं तेवुं अन्न खाउं छउं एवी री
ज्यारे ज्यारे खाय त्यारे ते सांभरी आवे ने जे प्रथम थीज जेवुं तेवुं अन्न खातो होय ने तेने
दारिद्र पणुं वधुं आवे त्यारे पण तेज खाय, त्यारे तेने शुं सांभरे? तेम जेणे भगवानना स्वरूप
नुं सुख तथा भगवानना भजननुं सुख पोताना मनमां एकवार यथार्थ पणे जाण्युं छे, ने तेने प
छे समागमनो जोग न रह्यो ने बाहेर निकळी गयो तो पण ते सुखने संभारतो थको ज सुख
दुखने प्रारब्धानुसारे भोगवे पण ते सुखने भुली न जाय अने जेणे भगवाननुं सुख जाण्युं नथी

नें तेनो अनुभव थयो नथी तेने शुं मांभरे एतो पशुं जेवो छे. हवे ते भगवाननुं जे स्वरूप तेनुं
ज्ञानकाहियेछीएजेभगवाननोजेआकार छेतेवोआकारविज्ञा देवमनुष्यादिकजेप्रकृतिमांथीआकार
थयाछे ते कोइनो नथी ने भगवान विना बिजा सर्वने काळ भक्षण करी जाय छे ने भग
वानना स्वरूपमां काळनुं सामर्थ पण नथी चालतुं एवा भगवान छे.ने भगवान जेवातोएक भगवा
नजछे पण बीजो कोइ नथी अने भगवानना साधर्म पणाने पाम्या एवा जे भगवानना धाममां
भक्त छे तेनो आकार पण भगवान जेवोछे तो पण ते पुरूषछे ने भगवानपुरूषोत्तमछे ने ते सर्व
मां श्रेष्ट छे ने एमने उपास्यछे ने ए सर्वना स्वामिछे ने ए भगवानना महिमानो कोइ पार पा-
मता नथी. एवा दिव्य मूर्त्ति जे भगवान ते निर्गुणछे ने ध्येयछे ने एनुं जे ध्यान करेछे ते नि-
र्गुण थइ जायछे एवुं भगवाननुं स्वरूपछे. अने ए भगवानछे ते पोताना धाम रूप एक देशने
विषे रह्या थकाज अन्वय पणे अनेक ब्रह्मांडने विषे रह्या जे सर्व जीवना समूह तेमने विषे ते
मना यथा योग्य कर्म फळ प्रदाता पणे अंतर्यामी रूपे करीने रह्याछे, अने सर्व जीवुना जीव-
नछे ने ए विना ए जीव कांइ करवाने ने भोगववाने समर्थ नथि थातो, अने ए जे भगवान ते
सीद्धेश्वरछे जेम कोइक सिद्धिवाळो पुरुष होय ते अहियां बेठो थको ब्रह्माना लोकमां पदा-

र्थ होय तेने आ हाथे करीने ग्रहण करी ले तेम भगवान एक देशमां रह्या थकाज पोतानी योग कळाना सामर्थे करीने सर्व क्रियाने करेछे, अने जेम अग्नि जे ते काष्टने विषे ने पाषाणने विषे रह्योछे ते अग्निनुं स्वरुप विजि रितनुंछे ने काष्ट पाषाणनुं स्वरुप त्रिजी रितनुंछे तेम भगवान सर्व जीवने विषे रह्याछे ते भगवाननुं स्वरूप त्रिजी रीतनुंछे. अने एवी रीतना अनंत एश्वर्ये जुक्त एवा जे ए भगवान तेज पोते जीवुंना कल्याणने अर्थे मनुष्य जेवा थायछे ते भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान जेते आवी रीते थयुं होय ने ते भगवाननी भक्ति करी होय ने ते ज्ञान भक्तिना सुखनो पोताना जिवमां अनुभव एकवार यथार्थ थयो होय तो तेनी विस्मृति क्यारेय थाय नहि. ने गमे तेवुं सुख दुख पडे तोपण तेने विषे ते भगवानना स्वरूपना सुखनो जे अनुभव ते विसरी जाय नहि; जेम ते राजाने प्रथमनुं पोतानुं सुख ते दारिद्र पणामां पण विसरतुं नथी. अने आ वार्त्ताशा सारु करियेछीए तो आवो सत्संगनो जोग हमणां तो छे पणकदाचित देशकाळ प्रारब्धना विशमपणा थकी एवो जोग न रहे तो जो आवी वार्त्ता समजी राखि होय तो तेना जिवनुं कल्याण थाय ने एने एवो दृढ निश्चे होय तो एने क्यारेय एम न समजाय जे मारूं क्यारेय अकल्याण थाशे, अनेआवो जोग रहेवो

तो दूर्लभछे आवी रीते देहे वर्तवुं पण दूर्लभछे केमजे कोइदिवस बाहेर निकळी जवाय त्यारे आ देहे न वर्ताय तो पण आ वार्ता समजी राखी होय तो एना जीवनुं बहुं सारुं थाय माटे आ वार्ता करी छे. इतिवचनामृतम्॥३७॥२७१

संवत १८८५ना वैशाख शुदि १४ चउदशने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री गोपीनाथजीना मंदिरने विषे विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्रधारण करयांहतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछे श्रीजी महाराज बोल्या अमे संख्यादिक शास्त्रना विचारे करीने एम निश्चे करयोछे जे मायाना कारजमांथी उत्पन्न थयाजे आकार मात्र ते सर्वे मिथ्या छे केमजे ए सर्वे आकार काळे करीने नाश पामेछे अने भगवानना अक्षरधामने विषे जे भगवाननो आकार छे तथा ते भगवानना पार्षद जे मुक्त तेमना जे आकारछे ते सर्वे सत्यछे ने सर्वे दिव्यछेने अतिशे प्रकाशे जुक्तछे अने ते भगवाननो नेते मुक्तनो जे आकार ते पुरुषना जेवो द्विभुजछे ने सच्चिदानंदरूपछे अने ते अक्षरधामने विषे रह्या जे ए भगवान ते जे ते मुक्त पुरुष तेमणे दिव्य एवा जे नाना प्रकारना उपचार तेणे करीने सेव्या

थका तें मुक पुरूष नें पर्म आनंदने उपजावता थका विराजमान छे. अने एवा सर्वोपरि जे पुरुषोत्तम भगवान तेज दयाये करीने जीवना कल्याणने अर्थे आ पृथ्विने विपे प्रगट थया थका सर्वे जनना नयन गोचर वर्त्तेछे ने तमारा इष्टदेवछे ने तमारी शेवाने अंगीकार करे छे ने एवाजे प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम भगवान तेना स्वरुपमां ने अक्षरधामने विपे रह्या एवाजे भगवान ते स्वरुपमां कांइ पण भेद नथी ए बे एकज छे अने एवा जे आ प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम भगवान ते अक्षरादिक सर्वना नियंता छे ने इश्वरना पण इश्वर छे ने सर्व कारणना पण कारण छे ने सर्वो परि वर्त्ते छे ने सर्व अवतारना अवतारीछे ते तमारे सर्वेने एकांतिक भावे करीने उपासना करवा योग्यछे,अने आ भगवानना जे पूर्वे घणाक अवतार थयाछे ते पण नमस्कार करवा योग्यछे ने पूजवा योग्यछे अने वळी श्री जी महाराजे एम वार्त्ता करी जे एक द्रव्यादिकनो लोभ तथा स्त्रीने विपे बेठा उठ्यानि वासना तथा रसने विपे जिव्हानि आसक्ति तथा देहाभिमान, तथा कुसंगीमां हेत रहिजाय तथा संबंधिमां हेत होय ए छ वानां जेने होय तेने कोइ दिवस जीव तेने मरीने पण सुखतो क्यारेय थायज- नाहि माटे जेने सुख इच्छवुं होय तेने एवा

स्वभाव होय तो टाळवाने निवृति पर थावुं ने अरोबरियानी सोबत न राखवी ने, देहाभिमाने रहितने वैराग्ये जुक्त ने भगवाननुं अल्प वचन न होय तेमां फेर पडेतो ते महतवचनमां फेर पड्यो होय तेम मानतो होय एवा जे भगवानना भक्त मोटा साधु ते संघाथे पोताना जीवने जडी देवोने तेना वचनमां मन क्रम वचने वर्तवुं ने विषयना संबंधी तो छेटेज रहेवुं पण एनो संबंध पोतना नियमनो त्याग करीने थावा देवो नहि ने जो विषयनो संबंध करवा मांडेतो एनो ठारहेज नहि ए सिद्धांत वार्त्ता छे ॥इति वचनामृतम्॥ ३८ ॥ २७२ ॥

संवत १८८६ ना अशाड वदि १० दशमीने दिवस श्रीजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरिये विराजमान ता, ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ पर्महंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, पछे श्रीजी महाराजे सर्वे पर्महंस तथा सत्संगी आगळ वार्त्ता करी जे भगवाननी माया ते केइ छे तो देहने विषे अहंबुद्धि ने देहना संबंधि पदार्थने विषे ममत्व बुद्धि एज माया छे ते ए मायाने टाळवी ने ए मायाने जेणे टाळी ते मायाने तर्यो केवाय ने ए मायाने मेलीने भगवानमां प्रीति करवी एटलुं सर्व शास्त्रनुं सिद्धांत छे तेने आज समजो

के घणे दिवसे करीने समजो, अने हनुमान नारद प्रह्लादे ए जे मोटा मोटा भगवानना भ-
क्त तेमणे पण भगवान पासे एमज माग्युंछे जे अहं ममत्व रूप माया थकी रक्षा करजो ने
तमारे विषे प्रिति थाजो ने ए मायाने तर्या होय ने तमारे विषे प्रितिवाळा होय एवा जे साधु
तेनो संग थाजो ने ए साधुने विषे हेत ने ममत्व थाजो माटे आपणे पण एम करवुं ने एम
मागवुं ने एनो श्रवण मनन निदीध्यास करवो अने ए भगवाननो जे भक्त होय तेने आत्मनिष्टा
नुं वळ तथा भगवानना महात्मनुं बळ ए वे बळ जोइये ते आत्मनिष्टा ते शूं तो पोताना आ
त्माने देहथी प्रथक जाणवो अने साधुभेळा रहेता होइये तेमां परस्पर कोइक निमित्ते बोला
चालीथाय तथा कोइक जातनोअंहममत्व थायतथा मान क्रोधस्वाद लोभकाममच्छरइर्षाएआ
दिकजेअवगुणनीप्रवृतीथायत्यारेजोआत्मापोतानेनजाणतोहोइयेतोसाधुनोअवगुणआवेतेमांथिएनुंब
हु भुंडुंथायमाटे पोताने देहथी प्रथक आत्मा जाणवोनितेआत्माछेतेब्राह्मणनथी, क्षत्रीनथी, कणबी
नथी, कोइनो दिकरो नथी, कोइनो बाप नथी, एनी कोइ जात नथी; नात नथी, एवो छे
अने ए आत्मा तो सूर्य तथा अग्नि जेवो तेजस्वी छे ने जाणपणे जुक्त छे ने अग्निनी ज्वा
ळा तथा सूर्यना किरण ते तो जड छे केमजे तेने आंगळी अडाडीएतोखसे नाहे ने किडीहोय

ने तेने आंगळी अडाडीए तो खसीने अवळी चाले माटे आत्मा ते जाणपणे डुक्त छे ने एने सूर्य अग्नि जेवो काहिए छीए ते तो एनो आकार एवो तेजस्वी छे ते माटे काहिए छीए. अने ए आत्मा अनेक योनीने पाम्यो छे, अने एम कहेवायछे जे जेटलुं समुद्रनुं पाणीछे, तेटलुं ए जिव पोतानी मातानुं दुध धाव्योछेअनेत्यांत्यांतो अनेक प्रकारे मरणो छे तोपण मर्यो नथी, जेवो छे तेवोने तेवोज छे-ने ए अज्ञान अवस्थामां पोताने देह रूपे मानतो हतो त्यारे पण नम र्यो तो हवे आपणे एनुं ज्ञान थयुं त्यारे तो ए केम मरशे एवो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप मानवुं. अने भगवाननुं माहात्म केम जाणवुं तो भगवान छे ते अनेक ब्रह्मांडना राजाधिराज छे अने जे ब्रह्मांडना ए राजा छे ते ब्रह्मांडनी पण गणती नथी ते कह्युं छे जे.॥ धृपतयएवने तेययुरंतमनंततया॥ अने तेएकएकब्रह्मांडमां ब्रह्मा विष्णुं शिवछे तथा सात द्विपतथा सातसमुद्र मेरु लोकालोक आदिक पर्वत तेणे जुक्त पृथ्वीनी रचनाछे तथा चौद लोकनी रचना छे. तथा अष्ट आवरणनी रचनाछे इत्यादिक सांमग्रियो सोतां जे अनेक ब्रह्मांड तेना राजा भगवानछे जेम आ पृथ्वीनो चक्रवर्त्ति राजा होय ने ते राजानां जे गांमडां ते तो गणाय एवां होय तोपण एनी केटली मोटप जाण्यामां आवेछे ने भगवानने तो एवा ब्रह्मांडनी पण गणती

नथि माटे भगवाननी तो बहुज मोटपछे अने ते ब्रह्मांडने विषे आ जीवछे ते भगवाननी आगळ शा लेखामांछे कांइ नथी अतितुच्छछे. अनेते भगवाने ए ब्रह्मांडने विषे पंच विषय संबंधि जीवने आप्युंछे ते सुख केवुंछे तो ए सुखने सारु केटलाक पोतानां माथां कपावेछे एवुं महा दुर्लभ जेवुं जणायछे त्यारे पोतानां मुक्तिमां तथा पोताना धाममां जे सुखछे ते तो बहु भारेछे अने प्राकृत विषय सुखछे तेतो अन्य पदार्थने आशरीने रह्युंछे तथा प्रथक प्रथकछे अने जे भगवानछेतेसर्वसुखमात्रना राशिछेनेएभगवानसंबंधिजे सुखछेतेअविनाशिछेने महाअलौकिक छे,अने जेम कोइक भारे धनढय गृहस्थ होय ते पोतानां घरमां अनेक प्रकारनां भोजन जमतो होय ने ते जमीने उछिष्ट कांइक बटकुं रोटलो वधे ते कुतराने नांखे त्यारे ते अतिशे तुच्छ केहेवाय ने पोते जमतो होय ते महा सुखमय केहेवाय तेम भगवाने ब्रह्मांडने विषे अनेक जीवने पंच विषय संबंधि सुख आप्युंछे तेतोकुतराने नाख्यो जे बटकुं रोटलो तेनी पेठे अति तुच्छछे ने पोताने विषे जे सुखछे ते तो माहा मोटुंछे.अने वळी सुषुप्ती अवस्थाने विषे ए जीवने भगवान मोटुं सुख पमाडेछे ने गमे तेवी वेदना थे होय ते सुषुप्तिमां जाय त्यारे सुखियो थइ जाय छे अने वळी ए भगवानना चरण कमळनी रजने ब्रह्मा, शिव, लक्ष्मीजी, राधिकाजी, नारद

सुक सनकादिक नव जोगेश्वर एवा एवा मोटाछे ते पण पोताना मस्तक उपर चढावेछे ने
मानने मुकीने ए भगवाननी निरंतर भक्ति कर्या करेछे, अने वळी ए भगवाने जगतमां विचि
त्र सृष्टि केवी करी छे ने तेमां केवुं डापण कर्युंछे जे जुवो ने माणसमांथी माणस थायछे प-
शुमांथी पशु थाय छे, झाडमांथी झाड थाय छे किडामांथी किडो थाय छे ने माणसना अं
गमांथी कोइक अंगनो भंग थइ गयो होय ने गमे तेवो डाह्यो होय तो ते अंगने तेवं करवाने
समर्थ कोइ रीते नज थाय, इत्यादिक अनेक कळा भगवानमां रहि छे. एवी रीते भगवाननुं
माहात्म जाणीने तथा भगवानने सुखमय मुर्त्ति जाणीने बिजां सर्वे पदार्थमां वैराग्य थाय छे,
ने एक भगवानमांज प्रीति थाय छे. अने एवी रीते प्रथम कह्युं जे पोताना जिवात्मानुंज्ञानतथा
भगवानना माहात्मनुं ज्ञान ए बे जेने सिद्ध थयां होय ने ते जो गमे तेवां पंच विषय संबंधी
सुखमां कदाचित बंधाइ गयो होय तोपण तेमां बंधाइ रहे नहि तेने तोडीने निकळेज रहे छे.
अने जे विषयना सुखनो त्याग करीने वर्ततो होय ने ते न बंधाय एमां ते शुं केहेवुं, माटे ए
बे प्रकारना ज्ञानने सांभळीने एनो पोताना मनमां वेग लगाडी देवो जेम कोइक सूरवीरने
आकरो माणस होय ने तेनो कांइ प्रतिपक्षी होय तेणे तेनो बाप मारी नाख्यो होय तो तेनी

तेने बहु दाझथाय ने तेदाझथातीहोय ने वळीतेनोदीकरो मारी नांखे ने वळी भाइने मारी नाखे
ने वळी बायडीने लेइ जाय ने वळी माने लेइने मसलमानने आपने वळी गामगरास लुंटीले
एवी रीते जेम जेम एनो पराभवकरे तेम एनेबहु मनमां दाझथाय ने जाग्रत स्वप्नमांसर्वकाळेएने
ए वातनोज आलोच रहे. तेम जेने आ बे वातनो निरंतर आलोच रहे त्यारे एने ए ज्ञान सि
द्ध थाय, अने एने गमे तेवोआपतकाळ पडे तोतेनेविषे एनी सहाय करेअनेजेम विशल्यकराणि
ऊषधि लावीने हनुमानजिये रामचंद्रने पीवाड्यो त्यारे जे देहमां शल्य लागां हतां ते सर्वे एनी
गळे देहथी बाहेर निकळी गयां. तेम जेने आ बे वात मनमां लागी गइहोय तेने इंद्रियोने वि-
षय भोगनी इछा रहिछे ए शल्यछे ते सर्वे निकळी जाय केतां विषय भोगमांथी एनी इंद्रियो
नि वृती निकळीनेएक भगवानमां वळगे अने सत्संगी पण एनेज कहिये. केमजे सत्यस्वरूप एवो
जे पोतानो आत्मा तथा सत्यस्वरूप एवा जे भगवान तेनो जेने आवी रीते संग थयो तेने सत्सं
गी कहिये. अने आ बे प्रकारे जे वार्त्ताछे तेने दैवी जीव सांभळे त्यारे तेना हृदयमां लागीने
रग रगमां प्रवर्ते जाय ने जे आसुरी जीव होय ने ते सांभळे त्यारे तेने तो कानथी बाहेरज
निकळी जाय पण हृदयमां उतरे नहि जेम श्वान होय ने ते खिर खाय ते तेना पेटमां रहेज

नहि वमन थइ जाय ने खिर जेवुं कोइ भोजन सरस न केवाय. तोपण ते श्वानंना पेटमां र-
हिने रगरगमां प्रवर्ते नहि ने ते खिरने माणस खाय त्यारे तेने पेटमां रहे ने रग रगमां प्र-
वर्ते ने बहु सुख थाय. तेम श्वान जेवो जे आसुरी जीव तेना हृदयमांतो आ वात
पेसेज नहि ने माणस जेवा दैवी जिव तेना हृदयमां उतरे ने रग रगमां व्या
पी जाय, अने वळी जे भगवानछे ते जेवो तो ए एकजछे ने भगवानने भजि भजीने घणाक भ
गवानना साधर्म पणाने पाम्याछे तोपण ते भगवान जेवा तो थाताज नथी ने जो ए भगवान
जेवाज थाय तो तो भगवान घणाक थाय त्यारे तो जगतनी स्थिति ते एक जातनी न रहे
केमजे एक भगवान कहेशे हुं जगतनी उत्पति करीश ने बिजो केहेशे हुं जगतनो प्रलय करी
श, अने वळी एक भगवान कहेशे हुं वरसात करीश ने बिजो कहेशे हुं नहि करुं,ने एक
कहेशे हुं माणसना धर्म पशुमां करीश ने बिजो कहेशे हुं पशुना धर्म माणसमां करिश,
एवी रीते स्थिति न रहे. अने आतो जुवोने जगतमां केवी रीते बराबर अदल प्रमाणे
सर्व क्रियानी प्रवर्ति थायछे पण तलभार पण फेर पडतो नथी. माटे सर्व क्रियानां
प्रवर्तावनाराने सर्वना स्वामी एकज भगवानछे, तथा भगवान संघाथे बिजाने दाव बंधाय

उपाद्‌घात.

स्वामीनारायणना धर्ममां बीजा, प्राकृत ग्रंथो करतां आ ग्रंथ वधारे मानवा अने भरुसो लाववा लायक गणाय छे तेथी तेने मेळववाने मने घणा वर्शथी उत्कंठा हती अने तेज प्रमाणे ते धर्मना बीजा घणाओने थती अने थाय छे, पण मंदीरमांथी घणु करी ग्रहस्थोने तेमोनां दश वचनामृत आपवां एवी आज्ञा छे. एम कही वधारे आपता नहो. पण ए बाबत माहारी जाज्ञासा तेथी शांत थवाने बदले ते मेळववाने वधारे थवाथी माहारो उद्योग चलाव्यो अने तेम करतां तेमां हुं फते पाम्यो. मैं जे प्रत मेळवी हती ते वडतालना साधु शुकमुनी वापरता हताते परनी हती. परतु अमदावादमां जे वपराय छे तेनाथी तेमां केटलाक तफावत अने वधघट पाछळथी मने मालम पडी, ते परथी वधारे तपास करतां मने मालम पडयुं के ए धर्मना मुख्य पुरुष सहजानंदजीए ए अने भक्त चींतामणी ए बे पुस्तकोनी प्रथम एक एक प्रत करावी रघुवीरजी अने अयोध्याप्रसादजीने आपी हती, अने ते उपरथी बीजी प्रतो साधु अने ब्रह्मचारीओने करावीने आपळी हती. आवी रीतनी एकज माणस बे प्रतो बनावे, तेमां वचनामृतनी संख्यामां अने वचनामृतनी मतलबमां मने फेर लागवाथी माहारा मनने एम निश्चय थयो के ए मूळ प्रतनी अंदर वडताळवाळाए घटारो कीधो हशे, अथवा अमदावादवाळाए वधारो कीधो हशे. अमदावादनी प्रतमां कुल २७३ वचनामृत छे, अने तेमां अमदावादनां ८, अशलालीनुं १ अने जेतलपूरनां ५ वचनामृत छे तेना बदलामां वडतालनी प्रतमां फकत अमदावादनां ३ छे अने अशलाली तथा जेतलपुरनु एक पण नथी. के जे फेरफार गा वचनामृत पछीथी छे. आम थवानुं कारण शुं छे ए समजातुं नथी. खानगीमां तपास करतां अमदावादवाळा

कहे छे के ते मूळ प्रतमां हतां पण वडताळ वाळाए ते कहाडी नाख्यांछे.तेम वडताळ वाळाथी अन्योअन्य पुछपरछ करतां कहे छे के मूळमांज ते नहोता, पण अमदावाद वाळाए ते नवां बनावी दाखल कीधां छे. आ बेमां कोनी तरफ वधारे सचाइछे ए शोधवानु काम घणु कठण छे तो पण तेमां तेम थयुं छे एतो ए फेरफारने लीधे नक्की छे.

दुनियानी स्वाभाविक रीत प्रमाणे ज्यां द्रव्यनी बाबत आवी त्यां धणी धणियाणी,भाइओ भाइ, अने बाप दिकरानी वचे लोभनी खातर द्वेश थया वगर रहेतो नथी. कनक अने कांता रूपी सूत्रथी आखुं जक्त विंटोएलुछे,अने तेनु जीवन आशा छे; तेथीज आ जक्तमां लोको पोतपोतानो उदयोग करेछे.केटलाक माणस पोतानी लोभ रूपीआशा पुरी पाडवाने धर्म अने इश्वरनो पण डर राखता नथी. तेथीज खून दुराचरी थइ घणा महोटा गुनाह देशमां बने छे.

मा वचनामृतथी ते मा वचनामृतमा जोता तेमांकेवळ"नरनारायणनुज नाम प्रधानपणे करीने आवे छे के जे अमदवादनी प्रतमांना छे, अने बाकीनामां श्री कृष्णनु नाम प्रधानपणे छे. अमदावादमां नरनारायणनी मूर्ति छे अने वडताळमा श्री कृष्णनी अथवा रणछोडजीनी मूर्ति छे.स्वाभाविक रीते जोतां मनुष्य पोतानो लोभ पुरो पाडवानी वातने वधारे फेलावे, एमां नवाइ नथी. अने ते कारणने लीधे आमां आ मुजबनो फेरफार थएलो हशे एम धारी शकायछे.

आ ठेकाणे घणी दिलगीरताथी जणावुं पडे छे के एक पुरुषे चलावेला धर्ममां आ प्रमाणनो थोडाक वखतमां धर्माचार्य जेवा गणाता पुरूषोमा फेरफार एक लोभ जेवा नीचा गुणथी जणाय ए बेशक देशमां कुसपना जबरा मूळनी निशानी बतावे छे. हिंदुस्तान कुसंपथीज पायमाल थयो छे अने थतो जाय छे, तेवो नाशकारक बनाव धर्माचार्यनी पक्तीमां गणता अने भाइ तेमां वळी भाइमां आवा प्रकारनी योजना थाय ए अतिशय दुखदायक छे. आ कटाळा भरेली दुःख दायक हकीकतने वधारे नाहे जणावतां ते आटलेथी बंध करूं छुं.

मने एक प्रत मेळवतां जे खरच अने मुशकेल पडी ते उपरथी मे एवो निश्चयकीधो के ए प्रत जेम बने